॥ अथ श्रीविश्वनाथदैवज्ञकृतव्रतराजः प्रारभ्यते ॥

उपोद्घातः ।

इह खलु सदाचारसंपन्नानामैहिकामुष्मिकसुखसंपत्त्याद्यपवर्गान्ताभीष्टसाधकानि नित्यनैमित्तिककाम्यानि बहूनि [illegible]दसाधनानि संति तेषु व्रतानां संग्रहरूपोऽयं व्रतराजाख्यो ग्रंथः सर्वत्र वरीवर्ति । स च वाराणसीपुरनिवासिना संगमेश्वर[illegible]–(जोशी) इत्युपनामकेन भट्टविश्वनाथदैवज्ञेन विरचित इति प्रसिद्धमेव । सोऽयं पूर्वमस्यां मोहमय्यां नगर्यां ग्रामांतरे च शिलाक्षरैः कीलकाक्षरैश्च मुद्रितो वर्तते तथापि लेखकप्रमादाद्दृष्टिदोषाद्वा प्रायो ऽशुद्धप्रचुर एवोपलभ्यते ऽतः क्वचननिर्णये संशय आपद्यते तद्दूरीकरणाय तच्छोधनं कार्यमिति मनसि निधाय संप्रति साधले इत्युपाभिख्य-शंभुतनय-गजाननशर्मद्वारा तस्य प्राचीनानि हस्तलिखितानि मुद्रितानि च प्रत्यंतराणि मेलयित्वा तेभ्य एकं समीचीनं पाठमङ्गीकृत्य व्रतार्क-निर्णयाब्धि-व्रतोद्यापनकौमुद्यादिग्रंथावलोकनपूर्वकं संशोधितः । सुखबोधार्थं तत्तत्प्रत्युपलब्धपाठांतरैः क्वचिद्दुर्बोधार्थदर्शिन्या टिप्पण्या संकलितश्च । सोऽयं ग्रंथः सपदच्छेदो ऽधुना जगदीश्वरसंज्ञकमुद्रायंत्रालये मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीतस्तस्येयं द्वितीयावृत्तिः । यदस्मिन्संशोधितेऽपि ग्रंथे प्रमादाद्दृष्टिदोषाद्वोर्वरितमशुद्धादि तत्सारासारविवेकनिपुणैर्विद्वद्भिर्गुणग्राहिभिर्दयार्द्रदृष्ट्या समीकृत्य संशोधनीयमित्येवाशासे ।

मुद्रयिता ।

ख्रिस्ताब्देऽभून्मुनिषड्धृति (१८६७) संख्ये यः शराक्षि-(२५) मितनियमः । तेनामुं सयोज्य स्ववशे स्वाम्यं ह्यरक्षदंकयिता ॥ १ ॥


विघ्ननाथदैवत

उपोद्घातः ।

इह खलु सदाचारसंपन्नानामैहिकामुष्मिकसुखसंपत्त्याद्यपवर्गान्ताभीष्टसाधकानि नित्यनैमित्तिककाम्यानि बहूनि ...दसाधनानि संति तेषु व्रतानां संग्रहरूपोऽयं व्रतराजाख्यो ग्रंथः सर्वत्र वरीवर्ति । स च वाराणसीपुरनिवासिना रंगनाथ—(जोशी) इत्युपनामकेन भट्टविश्वनाथदैवज्ञेन विरचित इति प्रसिद्धमेव । सोऽयं पूर्वमस्यां मोहमय्यां नगर्यां ग्रामांतरे च शिलाक्षरैः कीलकाक्षरैश्च मुद्रितो वर्तते तथापि लेखकप्रमादाद्दृष्टिदोषाद्वा प्रायो ऽशुद्धप्रचुर एवोपलभ्यते ऽतः क्वचनिर्णये संशय आपद्यते तद्दूरीकरणाय तच्छोधनं कार्यमिति मनसि निधाय संप्रति साधले इत्युपाभिख्य-शंभुतनय-गजाननशर्मद्वारा तस्य प्राचीनानि हस्तलिखितानि मुद्रितानि च प्रत्यंतराणि मेलयित्वा तेभ्य एकं समीचीनं पाठमङ्गीकृत्य व्रतार्क-निर्णयाब्धि-व्रतोद्यापनकौमुद्यादिग्रंथावलोकनपूर्वकं संशोधितः । सुखबोधार्थं तत्तत्प्रत्युपलब्धपाठांतरैः क्वचिद्दुर्बोधार्थदर्शिन्या टिप्पण्या संकलितश्च । सोऽयं ग्रंथः सपदच्छेदो ऽधुना जगदीश्वरसंज्ञकमुद्रायंत्रालये मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीतस्तस्येयं द्वितीयावृत्तिः । यदस्मिन्संशोधितेऽपि ग्रंथे प्रमादाद्दृष्टिदोषाद्वोर्वरितमशुद्धादि तत्सारासारविवेकनिपुणैर्विद्वद्भिर्गुणग्राहिभिर्दयार्द्रदृष्ट्या समीकृत्य संशोधनीयमित्येवाशासे ।

मुद्रयिता ।

ख्रिस्ताब्देऽभून्मुनिषड्धृति (१८६७) संख्ये यः शराक्षि-(२५) मितनियमः । तेनामुं संयोज्य स्ववशे स्वाम्यं द्यरक्षदंकयिता ॥ १ ॥

॥ अथेयं विश्वनाथदैवज्ञकृतव्रतराजस्यानुक्रमणिका प्रारभ्यते ॥

जाहिरात.

वेदान्तदर्शन अथवा ब्रह्मसूत्र.

शारीरकभाष्यानुसार सूत्रभावार्थप्रकाशिका भाषाटीकासहित.

महाशयो!

इस असार संसारमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चार पदार्थोंमें मोक्षही सर्वोत्तम सार है. क्योंकि त्रिविधतापनिवृत्तिपूर्वक निरतिशयानन्दरूपात्मक, नित्य तथा अनावृत्तिरूप पदार्थको मोक्ष कहते हैं, परंतु देह व इन्द्रियादिकोंविषे अहंता, ममतारूप अभिनिवेशसे कर्तृत्व भोक्तृत्वादि अनात्मधर्मोंको आत्मधर्म माननेवाले तथा इसी प्रकारके अनेक कुतर्कोंसे व्यग्रचित्तवाले पुरुषोंको मोक्षलाभ होना शशशृंगवत् सर्वथा असम्भव है. क्योंकि उनको तर्कचतुर, श्रुत्यर्थविवेचक सद्गुरुकी शरण गये विना उपनिषत्सहस्रभी यथावत् आत्मतत्वबोध नहीं करा सक्ते. अतएव ऐसे पामर पुरुषोंका भलीप्रकार उद्धार करनेकी कामनासे महर्षि भगवान् वेदव्यासमुनिने अद्वैतब्रह्मात्मक श्रुतियोंके अर्थका निर्णय करनेके लिये अनेकन्यायोपबृंहित सूत्रोंसे अध्यायचतुष्टयात्मक "उत्तरमीमांसा" अर्थात् "वेदान्तदर्शन" नामक यह सर्वोत्तम प्रबन्ध रचा तहां प्रथम अध्यायमें संपूर्ण श्रुतियोंका ब्रह्मविषे तात्पर्य, दूसरेमें वादियोंकी यावत् शंकाओंका निराकरण. तीसरेमें साधनोंका विचार और चौथेमें दो प्रकारके फलका विचार भलीभांति दर्शाया है. तथापि व्यासजीकी वाणी "लघ्वी गुर्वर्थगहरा" अर्थात् अल्प अक्षरा, अर्थबहुला होनेके कारण दुर्विज्ञेय जानकर भगवत्पाद श्रीशंकराचार्य स्वामीने अपनी कुशाग्रबुद्धिसे इस (वेदान्तदर्शन) पर "शारीरकभाष्य" बनाया. वहभी अत्यन्त गूढ गम्भीरार्थ होनेके कारण उसके द्वाराभी कतिपय विद्वानोंको यथार्थ अर्थ समझनेमें बडी कठिनता पडतीथी. यह देख हमने सर्व साधारणके उपकारार्थ एक विद्वद्द्वारा शांकरभाष्यके अनुकूल "सूत्रभावार्थप्रकाशिका" नामक सुललित शुद्ध सरल हिन्दी भाषाटीका बनवायी, और प्रत्येक अध्यायके प्रत्येक पादमें कितने व कौन २ से अधिकरणसूत्र हैं तथा कितने व कौन २ से गुणसूत्र हैं और उनमें प्रसंग क्या है यह जाननेके लिये प्रत्येक अध्यायके प्रत्येक पादके आरंभमें अधिकरणसूत्र, गुणसूत्र, तथा उन सूत्रोंका प्रसंग सूचित करनेवाली अनुक्रमणिकाभी लिखवा दी है. तथा पाठकोंको अधिकतर सुगमता सम्पादन करनेके लिये अकारादि वर्णसमाम्नायक्रमानुसार "सूत्रावलोकनप्रकार" अर्थात् सूत्रसूचीभी संयुक्त

करता ही है, इसके द्वारा पाठकोंको जो सुख देखना हो उसके भाविका एक मास-मात्र ज्ञात इससे वह सुख तत्काल मिल जायगा देखनेका कुछभी परिश्रम न पड़ेगा. ऐसे २ अनूठ मन्त्रोंसे संयुक्त होनेके कारण सर्व साधारणको इस टीकाद्वारा इस ग्रंथका गूढ सार समझना सुगम हो गया है अब हम इसकी उत्तमताके विषयमें विशेष नहीं लिखना चाहते, क्योंकि दृष्टिगोचर होनेसे मर्मज्ञ महाशय स्वयं अनुभव कर लेंगे परंतु उपसंहारमें वेदान्तशास्त्रका परिशीलन करनेवाले महात्माओंकी सेवामें सविनय निवेदन है कि इस ग्रंथके अवलोकनद्वारा वेदान्तके सत्यसिद्धान्तको जान कर पूर्ण लाभ उठावें और हमारे अपार परिश्रमको सफल करें यद्यपि ऐसे रत्नरूप अमूल्य ग्रंथका मूल्य अधिक रखना उचित था तथापि सर्व साधारणके सुभीतेके लिये अतिअल्प अर्थात् केवल १) रक्खा है डांकमहसूल माफ.

सन्तानगोपालगौतमीयतन्त्रान्तर्गतविधानम् ।

इसमें सन्तानगोपालमन्त्र मंत्रराजका न्यास ध्यानादि सर्वोत्तम जपप्रकार भाषणादिवर्णक्रमानुसार सविस्तर वर्णित है और अद्यावधि अमात्र सर्वोत्कृष्ट श्रीगोपालकवचभी इसके अंतमें संस्थापित किया गया है हमने ऐसे सर्वसाधारणोपयोगी गुप्तविषय इन सारों पुस्तकोंको अपार परिश्रमसे प्राप्त कर अपने अनुग्राहक ग्राहकोंकी सेवामें यथोचित मूल्य लेकर निवेदन करनेके उद्देशसे प्रकाशित किया है जिससे सर्व साधारणका बहुत कुछ उपकार होना सम्भव है अतएव जिनको ऐहिक तथा आमुष्मिक सौख्यविधायिनी उत्तम सन्ततिकी कामना हो वे इसके संग्रह करनेमें कदापि न चूकें. कीमत ४ आ० ड० ॥ आ०

दैवज्ञ हरिभद्रसूरिविरचित ।

ताजिकसार सटीक ।

इसमें ग्रंथकर्तानि जन्मकुण्डली वर्षकुण्डली आदिमें अधिक उपयोगी मुद्दस्सहीकर आदि गणितविषयका सविस्तर निरूपण करके ग्रहोंका भावफलादि उपयुक्त फलित विषयकामी व्यष्टिरूपसे वर्णन किया है और अन्तमें गणितके आधारसे चमत्कारकारक, त्रिकालज्ञताविधायक, मूकप्रश्न, मुष्टिप्रश्न आदि उत्कृष्ट प्रश्नविषयका विस्तारपूर्वक स्पष्ट विवरण करके ग्रंथको पूर्ण किया है ज्योतिर्विन्महाशयो ! यहां जो ग्रंथका विषय लिखा गया है, सो दिग्दर्शनमात्र है किन्तु समस्त गुण आद्योपान्त अवलोकन करनेपरही विदित होंगे. इसपर जो संस्कृतटीका है वहभी अत्युत्तम तथा सोदाहरण है. जिससे पाठकोंको ग्रंथका मर्म अनायास अवगत हो सकता है ऐसे उत्तम और पुरातन ग्रंथका आजतक कहींभी मुद्रण न होनेसे अभावसा भासित होता था. यहांतक कि अधिकांश ज्योतिषी इसका नामभी न जानते थे, ऐसी अवस्थामें हमने बड़े परिश्रमके साथ अधिकतर अन्वेषणाद्वारा प्राप्त करके सुवाच्य

टाईपके अक्षरोंसे स्निग्ध व पुष्ट कागजपर छापके प्रसिद्ध किया है. मू. ८ आ० डा० म० २ आ०

लक्ष्मीपञ्चाङ्ग ।

इसमें लक्ष्मीपटल, लक्ष्मीनित्यपूजापद्धति, लक्ष्मीकवच, लक्ष्म्यष्टोत्तरसहस्रनाम-स्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र यह पांच विषय मुख्य हैं और तन्त्रोक्तलक्ष्मीकवच, सिद्धिलक्ष्मी स्तोत्र तथा अनुपम वागीश्वरीस्तोत्रभी ग्रंथान्तमें सम्मिलित है. यह ग्रंथ दुष्प्राप्य होनेके कारण आजतक कहीं मुद्रित नहीं हुआ था, परंतु कई प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकालयोंमें अन्वेषण करनेपर सर्व साधारणके सौभाग्यसे हमको प्राप्त हुआ अतएव इससे सर्व साधारणका उपकार और पुस्तकका जीर्णोद्धार तथा भली प्रकार प्रचार होनेके विचारसे मुद्रण कर कई हजार प्रतियोंका अविष्कार किया है. यदि आपलोगोंको लक्ष्मीजीके प्रसन्न करनेकी इच्छा हो तो इसे मँगाकर प्रयोग कीजिये. मूल्य. ६ आ. डा. १ आ.

प्रियारसिकविनोद.

इसमें आनन्दकन्दश्रीकृष्णचन्द्र तथा सर्वसुखसाधिक श्रीराधिका महाराणीकी अभिनव सुखमय लीलाओंका सरस राग रागिनियों तथा रसमय कवित्तोंमें सविस्तर वर्णन है. अंतमें वेदान्तसिद्धान्तके मंजुल पद और सुहावनी चेतवनीके पदोंकाभी संग्रह है. अतएव मुमुक्षु तथा कृष्णकथारसिक महानुभावोंको यही परमोपयोगी है मू. १ रुपया ट. २ आ.

प्रश्नप्रदीप-भाषाटीकासहित.

यह ग्रंथभी ज्योतिषशास्त्रान्तर्गत प्रश्नविद्यामें आपने ढँगका एकही है. क्योंकि इसमें प्रश्नकी रीति अत्यन्त विलक्षण और सुगम है. इस ग्रंथके द्वारा, कहे हुये प्रश्न कभी मिथ्या नहीं हो सक्ते; अतएव यह ग्रंथ ज्योतिर्वित्महाशयोंको अत्युपयोगी है. हमारे कहनेसे क्या है! एकवार देखनेसे इसके गुण स्वयंविदित हो जायँगे. हमने सर्व साधारणके सुभीतेके लिये इसका मूल्यभी बहुत स्वल्प अर्थात् केवल ४ आना रक्खा है. ट. १ आ.

प्रश्नसिन्धु-भाषाटीकासहित.

यह ग्रंथभी प्रश्नविद्यामें अपूर्वही है. इसमें प्रायः सब प्रश्नविषय यथार्थ रीतिसे वर्णन किये गये हैं. बस एक यही ग्रंथ पासमें रखनेसे ज्योतिषी लोग सब प्रश्नोंका भलीभांति उत्तर दे सक्ते हैं. यों तो बहुतसे प्रश्नग्रंथ छपे हैं और छपते जाते हैं परंतु इसकी समान कोई ग्रंथ आजतक कहीं छपा नहीं है. हम अपने मुख अपनी प्रशंसा नहीं करते किन्तु एकवार अवलोकन करनेसे आप लोगोंको स्वयं निश्चय होजायगा. की. ४ आना डा. म. १ आना.

करना भी है, इसके द्वारा पाठकोंको जो भ्रम होता हो उसके मालिका एक अक्षर मात्र प्राप्त होनेसे वह भ्रम तत्काल मिटजायगा. ऐसेभी कुछभी परिश्रम न पड़ेगा उसे २ अनूठे प्रकारोंसे संयुक्त होनेके कारण सर्व साधारणको इस टीकाद्वारा इस ग्रंथका गूढ़ तत्व समझना सुगम हो गया है अब हम इसकी उत्तमताके विषयमें विशेष नहीं लिखना चाहते, क्योंकि दृष्टिगोचर होनेसे मर्मज्ञ महाशय स्वयं अनुभव कर लेंगे परंतु उपसंहारमें वेदान्तशास्त्रका परिशीलन करनेवाले महाशयोंकी सेवामें सविनय निवेदन है कि इस ग्रंथके अवलोकनद्वारा वेदान्तके सत्यसिद्धान्तको जान कर पूर्ण लाभ उठावें और हमारे अपार परिश्रमको सफल करें यद्यपि ऐसे रत्नरूप अमूल्य ग्रंथका मूल्य अधिक रखना उचित था तथापि सर्व साधारणके सुभीतेके लिये अतिअल्प अर्थात् केवल १॥) रक्खा है डांकखर्च माफ.

सन्तानगोपालगौतमीयतन्त्रान्तर्गतविधानस ।

इसमें सन्तानगोपालमन्त्र ग्रंथप्रयोगका न्यास ध्यानादि सर्वोत्तम जपप्रकार ब्राह्मणा-निवर्तकक्रमानुसार सविस्तर वर्णित है और यथास्थल अनाव सर्वोत्कृष्ट श्रीगोपाल-स्तवभी इसके अंतमें संग्रहित किया गया है हमने ऐसे सर्वसाधारणोपयोगी शुद्ध विशुद्ध इन दोनों पुस्तकोंको अपार परिश्रमसे प्राप्त कर अपने अनुग्राहक ग्राहकोंकी सेवामें यथोचित मूल्य लेकर निवेदन करनेके उद्देशसे प्रकाशित किया है जिससे सर्व साधारणका बहुत कुछ उपकार होना सम्भव है अतएव जिनको ऐहिक तथा आमुष्मिक सौख्यविधायिनी उत्तम सन्ततिकी कामना हो वे इसके संग्रह करनेमें व्याप्ति न चूकें. कीमत ४ आ० डा० ॥ आ०

दैवज्ञ हरिभद्रसूरिविरचित ।

ताजिकसार सटीक ।

इसमें ग्रंथकर्त्ताने जन्मकुण्डली वर्षकुण्डली आदिमें अधिक उपयोगी ग्रहस्पष्टीकरणादि गणितविषयका सविस्तर निरूपण करके ग्रहोंका भावफलादि उपयुक्त फलित विषयकोभी व्यक्तिरूपसे वर्णन किया है और अन्तमें गणितके आधारसे चमत्कृतिकारक, निष्फलताविधायक, मूकप्रश्न, मुष्टिप्रश्न आदि उत्कृष्ट प्रश्नविषयका विस्तारपूर्वक स्पष्ट विवरण करके ग्रंथको पूर्ण किया है ज्योतिर्विन्महाशयो ! यहां जो ग्रंथका विषय लिखा गया है, सो दिग्दर्शनमात्र है किन्तु समस्त गुण आद्योपान्त अवलोकन करनेपरही विदित होंगे. इसपर जो संस्कृतटीका है वहभी अत्युत्तम तथा सोदाहरण है. जिससे पाठकोंको ग्रंथका मर्म अनायास अवगत हो सकता है ऐसे उत्तम और पुरातन ग्रंथका आजतक कहींभी मुद्रण न होनेसे अभावसा भासित होता था. यहांतक कि अधिकांश ज्योतिषी इसका नामभी न जानते थे, ऐसी अवस्थामें हमने बड़े परिश्रमके साथ अतिविस्तृत अन्वेषणाद्वारा प्राप्त करके सुगम्य

अथ नवमीव्रतानि ।

अथ दशमीव्रतानि ।

अथैकादशीव्रतानि ।

अथ द्वादशीव्रतानि ।

अथ त्रयोदशीव्रतानि ।

अथ चतुर्दशीव्रतानि ।

अथ पौर्णमासीव्रतानि ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ ॥ ॐकारविघ्नेशगुरून्सरस्वतीं गौरीशसूर्यौ च हरिं च भैरवम् । प्रणम्य देवान्कुरुते हि ग्रंथं दैवज्ञशर्मा जगतो हिताय ॥ १ ॥ विष्णवर्चनं दानशिवार्चनं च उत्सर्गधर्मव्रतनिर्णयं च । वेदात्पुराणात्स्मृतितश्च तद्वद्व्रतोक्तसिद्धांतविधिं विधत्ते ॥ २ ॥ संगृह्य सर्वस्य मतं पुराणं सिद्धांतवाक्यं मुनिभिः प्रणीतम् ॥ लोकोपकाराय कृतो निबंधो व्रतप्रकाशः सुधियां मुदे स्यात् ॥ ३ ॥ यावंतो ब्राह्मणा लोके धर्मशास्त्रविशारदाः ॥ तावंतः कृपया युक्ताः कुर्वंतु ग्रंथशोधनम् ॥ ४ ॥ विज्ञाप्यंते मया सर्वे पंडिता गुणमंडिताः ॥ प्रचारणीयो ग्रंथोऽयं बालवद्बालकस्य मे॥ ५॥ रामांकमुनिभूसंख्ये [१७९३] वस्विष्वंगेन्दुसंख्यके [१५८] । वर्षे शाके शुक्लपक्षे पंचम्यां तपसः शुभे ॥ ६ ॥ विलोक्य विविधान्ग्रंथाँल्लिख्यतेऽज्ञजनाय वै ॥ तन्निमितो मयाऽऽरंभः किमज्ञातं मनीषिणः ॥७॥ चित्तपावनजातीयः शांडिल्यकुलमंडनः ॥ गोपालात्मजदैवज्ञः संगमेश्वरसंज्ञितः ॥ ८ ॥ दुर्गाघाटे वसन्काश्यां नत्वा पितृपितामहान् ॥ कुर्वे वै विश्वनाथोऽहं व्रतराजं सुविस्तरम् ॥ ९ ॥ ॥ अथ व्रतराजप्रारंभः ॥ ॥ अथ व्रतलक्षणम्-स्वकर्तव्यविषयो नियतः संकल्पो व्रतमिति । तत्र अग्निहोत्रसंध्यावंदनादिविषये संकल्पेऽतिप्रसक्ते किंत्वभियुक्तव्रतप्रसिद्धिविषयः संकल्पविशेषः स एव व्रतम् । न च व्रतं संकल्पयेदित्यनन्वय इति वाच्यम् । पाकं पचति,दानं दद्यादितिवत्प्रत्ययानुग्रहार्थं प्रयोगोत्पत्तिरिति वक्तव्या ॥ ॥ अथ व्रतकालमाह ॥ ॥ हेमाद्रौ गार्ग्यः—अस्तगे च गुरौ शुक्रे बाल्ये वृद्धे मलिम्लुचे ॥ उद्यापनमुपारंभं व्रतानां नैव कारयेत् ॥ तत्रैव, वृद्धमनुबृहस्पती--अग्न्याधानं प्रतिष्ठां च यज्ञदानव्रतानि च ॥ मांगल्यमभिषेकं च मलमासे विवर्जयेत् ॥ बाले वा यदि वा वृद्धे शुक्रे चास्तंगते गुरौ ॥ मलमासे च एतानि वर्जयेद्देवदर्शनम् ॥ लल्लः—नीचस्थे वक्रसंस्थेऽप्य-

१ क्रियत इत्यध्याहार

॥ इति व्रतराजस्यानुक्रमणिका समाप्ता ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ ॥ ॐकारविघ्नेशगुरून्सरस्वतीं गौरीशसूर्यौ च हरिं च भैरवम् । प्रणम्य देवान्कुरुते हि ग्रंथं दैवज्ञशर्मा जगतो हिताय ॥ १ ॥ विष्णवर्चनं दानशिवार्चनं च उत्सर्गधर्मव्रतनिर्णयं च । वेदात्पुराणात्स्मृतितश्च तद्वद्गतोक्तसिद्धांतविधिं विधत्ते ॥ २ ॥ संगृह्य सर्वस्य मतं पुराणं सिद्धांतवाक्यं मुनिभिः प्रणीतम् ॥ लोकोपकाराय कृतो निबंधो व्रतप्रकाशः सुधियां मुदे स्यात् ॥ ३ ॥ यावंतो ब्राह्मणा लोके धर्मशास्त्रविशारदाः ॥ तावंतः कृपया युक्ताः कुर्वंतु ग्रंथशोधनम् ॥ ४ ॥ विज्ञाप्यंते मया सर्वे पंडिता गुणमंडिताः ॥ प्रचारणीयो ग्रंथोऽयं बालवद्बालकस्य मे॥ ५॥ रामांकमुनिभूसंख्ये[१७९३] वस्विष्वंगेन्दुसंख्यके[१६५८] । वर्षे शाके शुक्लपक्षे पंचम्यां तपसः शुभे ॥ ६ ॥ विलोक्य विविधान्ग्रंथाँल्लिख्यतेऽज्ञजनाय वै ॥ तन्निमितो मयाऽऽरंभः किमज्ञातं मनीषिणः ॥७॥ चित्तपावनजातीयः शांडिल्यकुलमंडनः ॥ गोपालात्मजदैवज्ञः संगमेश्वरसंज्ञितः ॥ ८ ॥ दुर्गाघाटे वसन्काश्यां नत्वा पितृपितामहान् ॥ कुर्वे वै विश्वनाथोऽहं व्रतराजं सुविस्तरम् ॥ ९ ॥ ॥ अथ व्रतराजप्रारंभः ॥ ॥ अथ व्रतलक्षणम्-स्वकर्तव्यविषयो नियतः संकल्पो व्रतमिति । तत्र अग्निहोत्रसंध्यावंदनादिविषये संकल्पेऽतिप्रसक्ते किंत्वभियुक्तव्रतप्रसिद्धिविषयः संकल्पविशेषः स एव व्रतम् । न च व्रतं संकल्पयेदित्यनन्वय इति वाच्यम् । पाकं पचति,दानं दद्यादितिवत्प्रत्ययानुग्रहार्थं प्रयोगोत्पत्तिरिति वक्तव्या ॥ ॥ अथ व्रतकालमाह ॥ ॥ हेमाद्रौ गार्ग्यः—अस्तगे च गुरौ शुक्रे बाल्ये वृद्धे मलिम्लुचे ॥ उद्यापनमुपारंभं व्रतानां नैव कारयेत् ॥ तत्रैव, वृद्धमनुबृहस्पती—अग्न्याधानं प्रतिष्ठां च यज्ञदानव्रतानि च ॥ मांगल्यमभिषेकं च मलमासे विवर्जयेत् ॥ बाले वा यदि वा वृद्धे शुक्रे चास्तंगते गुरौ ॥ मलमासे च एतानि वर्जयेद्देवदर्शनम् ॥ लल्लः—नीचस्थे वक्रसंस्थेऽप्य-

१ क्रियत इत्यध्याहारः

विचरणगते वाऽस्तदास्तगे वा संन्यासो देवयात्रा व्रतनियमविधिः कर्णवेधस्तु दीक्षा ॥ मौंजीबन्धोऽथ चूडापरिणयनविधिर्वास्तुदेवप्रतिष्ठा वर्ज्याः सद्भिः प्रयत्नात्त्रिदशपतिगुरौ सिंहराशिस्थिते च-इति ॥- नीचस्थो मकरस्थः । कल्पतरौ देवीपुराणे - सिंहसस्थ गुरु शुक्र सर्वारम्भेषु वर्जयेत् ॥ प्रारब्ध न च सिद्ध्येत महाभयकर भवेत् ॥ पुत्रमित्रकलत्राणि हन्याच्छीघ्र न संशयः ॥ देवारामतडागेषु व्रतोद्यानप्रहेषु च ॥ सिंहस्थ मकरस्थ च गुरु यत्नेन वर्जयेत् ॥ वसिष्ठः— सिंहस्थे तु मघासंस्थं गुरुं यत्नेन वर्जयेत् ॥ अन्यत्र सिंहभागे तु सिंहस्थोऽपि न दुष्यति ॥ सिंहस्थगुरोर्वर्जनीयत्वं नर्मदोत्तरभाग एव । अन्यत्र तु सिंहांश एव वर्ज्य । तथा च, मदनरत्नादिधृतकालविधाने—सिंहस्थितः सुरगुरुर्यदि नर्मदायास्त वर्जयेत्सकलकर्मसु सौम्यभागे ॥ विन्ध्यस्य दक्षिणदिशि भवदंति चार्या सिंहांशके मृगपतावपि वर्जनीय ॥-सिंहांशस्तु पूर्वाफल्गुन्याः प्रथमः पादः, मृगपतौ मकरस्थे । गुरौ मकरगे देशविशेषमाह लल्लः— नर्मदापूर्वभागे तु शोणस्योत्तरदक्षिणे ॥ गण्डक्याः पश्चिमे भागे मकरस्थो न दोषभाक् ॥ केषांचित्स्त्रीकर्तृकाणामन्येषां च व्रतानामगस्त्योदयेऽप्यारम्भनिषेध इति । हेमाद्रौ लौगाक्षिः—उद्यानिकाशिवपवित्रकमेघपूजादूर्वाष्टमी फलविरूढकजागराणि ॥ स्त्रीणां व्रतानि निखिलान्यपि वार्षिकाणि कुर्यादगस्त्य उदिते न शुभानि लिप्सुः-इति ॥ उद्यानिका व्रतविशेष, शिवपवित्रक आषाढ्यामथवा माघ्यां विहित शिवपवित्रारोपणम्, मेघपूजा व्रतविशेषः,दूर्वाष्टमी भाद्रशुक्लाष्टमी, फलविरूढक भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां पालीव्रतं कदलीव्रतापरनामकम्, जागर आश्विनपौर्णमास्यां कोजागरव्रत कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां विहितं जागरव्रत वा ॥ अत्रोभयत्रागस्त्योदयस्यावश्यंभावित्वेन विधेरनवकाशापत्तेर्विकल्पो ज्ञेयः । वार्षिकाणीत्यत्र वर्षासु भवानि वार्षिकाणीत्येव व्युत्पत्तिः,। न तु वर्षे भवानीति। तथासति शरदादिग्रीष्मपर्यंतमगस्त्योदयानुवृत्तेस्तन्मध्ये विहितानां स्त्रीव्रतानां सर्वथाऽनारम्भ एवाऽऽपद्यत इति। अगस्त्योदयकालश्च द्वि-

वोदासीये– उदेति याम्यां हरिसंक्रमाद्रवेरेकाधिके विंशतिमे ह्यगस्त्यः ॥ स सप्तमेऽस्तं वृषसंक्रमाच्च प्रयाति गर्गादिभिरित्यभाणि ॥ व्रतारंभस-
मास्पोस्तिथिं विशिनष्टि हेमाद्रौ सत्यव्रतः–उदयस्था तिथिर्या हि न भवेद्दिनमध्यभाक् ॥ सा खंडा न व्रतानां स्यादारंभश्च समापनम् ॥ एत-
द्व्यतिरिक्तायामखंडायां प्रारंभमाह तत्रैव वृद्धवसिष्ठः– अखंडव्यापिमार्तंडा यद्यखंडा भवेत्तिथिः ॥ व्रतप्रारंभणं तस्यामनस्तगुरुशुक्रयुक्-इति ॥
-अनस्तमितगुरुशुक्रायां तिथौ व्रतमारंभणीयमित्यर्थः ॥ रत्नमालायाम्–सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवंति सिद्धिदाः ॥ भानुभौम-
शनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति ॥ विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ॥ स वैधृतिस्तु व्यतिपातनामा
सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे सवज्रे, व्याघातसंज्ञे नव, पंच शूले ॥ गंडेऽतिगंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्ज-
नीयाः ॥ दर्शं संक्रांतिपातौ परिघमुखदलं वैधृतिं पातयोगं विष्कंभाद्यत्रिनाडीः शुभकृतिषु च षड्गंडयोः पंच शूले ॥ व्याघाते वज्रकेऽङ्काः पितृमृ-
तिदिवसोनाधिमासान्कुहोरां जह्याजन्मोत्थमासोडुतिथिखलुतिथिं व्युद्गमांद्यचुन्द्रमां च ॥ ब्रह्मयामले–दिनभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा ॥
न त्याज्या शुभकार्येषु प्राहुरेवं पुरातनाः-इति ॥ ॥ अथ व्रतदेशः ॥ वेदव्यासः-सर्वे शिलोच्चयाः पुण्याः सागराः सरितस्तथा ॥ अरण्यानि च पुण्यानि
विशेषान्नैमिषं तथा ॥ देवीपुराणे– देशो नदीगयाशैलगंगानर्मदपुष्करम् ॥ वाराणसी कुरुक्षेत्रं प्रयागं जंबुकेश्वरम् ॥ केदारं वामपादं च कुडवं
पुष्कराह्वयम् ॥ सोमेश्वरं महापुण्यं तथा चामरकंटकम् ॥ कालंजरं तथा विंध्यं यत्र वासो गुहस्य च ॥ – गुहः स्वामिकार्तिकेयः ॥ मनुः–
सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदंतरम् ॥ तं ब्रह्मनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥ यस्मिन्देशे य आचारः पारंपर्यक्रमागतः ॥ वर्णानां सांतराला-
नां स सदाचार उच्यते ॥ कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पांचालाः शूरसैनिकाः ॥ एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनंतरः ॥ –मत्स्याः विराटाः, पांचालाः

तिचरणगते बालवृद्धास्तगे वा सन्यासो देवयात्रा व्रतनियमविधिः कर्णवेधस्तु दीक्षा ॥ मौंजीबन्धोऽथ चूडापरिणयनविधिर्वास्तुदेवप्रतिष्ठा वर्ज्याः प्रदि मयनात्रिदशपतिगुरौ सिंहराशिस्थिते च-इति ॥- नीचस्थो मकरस्थः । कल्पतरौ देवीपुराणे सिंहसस्थ गुरु शुक सर्वारंभेषु वर्जयेत् ॥ प्रारब्ध न च सिद्ध्येत महाभयकर भवेत् ॥ पुत्रमित्रकलत्राणि हन्याच्छीघ्र न संशयः ॥ देवारामतडागेषु व्रतोद्यानग्रहेषु च ॥ सिंहस्थ मकरस्थ च गुरु यत्नेन वर्जयेत् ॥ वसिष्ठः— सिंहस्थे तु मघासंस्थं गुरुं यत्नेन वर्जयेत् ॥ अन्यत्र सिंहभागे तु सिंहस्थोऽपि न दुष्यति ॥ सिंहस्थगुरोर्वर्जनीयत्व नर्मदोत्तरभाग एव । अन्यत्र तु सिंहांश एव वर्ज्य । तथा च, मदनरत्नादिघृतकालविधाने—सिंहस्थितः सुरगुरुर्यदि नर्मदायास्तं वर्जयेत्सकलकर्मसु सौम्यभागे ॥ विंध्यस्य दक्षिणदिशि भवदवि चार्याः सिंहांशके मृगपतावपि वर्जनीयः ॥-सिंहांशस्तु पूर्वाफल्गुन्याः प्रथमः पादः, मृगपतौ मकरस्थे । गुरौ मकरगे देशविशेषमाह लल्लः— नर्मदापूर्वभागे तु शोणस्योत्तरदक्षिणे ॥ गडक्याः पश्चिमे भागे मकरस्थो न दोषभाक् ॥ केषांचित्स्त्रीव्रतानामन्येषां च व्रतानामगस्त्योदयेऽप्यारंभनिषेध इति । हेमाद्रौ लौगाक्षिः—उद्यानिकाशिवपवित्रकमेघपूजादूर्वाष्टमीफलविस्तक जागराणि ॥ स्त्रीणां व्रतानि निखिलान्यपि वार्षिकाणि कुर्यादगस्त्य उदिते न शुभानि लिप्सुः-इति ॥ उद्यानिका व्रतविशेषः, शिवपवित्रक आषाढ्यामथवा माघ्यां विहितं शिवपवित्रारोपणम्, मेघपूजा व्रतविशेषः,दूर्वाष्टमी भाद्रशुक्लाष्टमी, फलविस्तक भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां पालीव्रत कदलीव्रतापरनामकम्, जागरं आश्विनपौर्णमास्यां कोजागरव्रतं कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां विहित जागरव्रत वा ॥ अत्रोभयत्रागस्त्योदयस्यावश्यंभावित्वेन विधेरनवकाशापत्तेर्विकल्पो ज्ञेयः । वार्षिकाणीत्यत्र वर्षासु भवानि वार्षिकाणीत्येव व्युत्पत्तिः,। न तु वर्षे भवानीति।तथासति शरदादिग्रीष्मपर्यंतमगस्त्योदयानुवृत्तेस्तन्मध्ये विहितानां स्त्रीव्रतानां सर्वथाऽनारंभ एवाऽऽपद्यत इति। अगस्त्योदयकालश्च दि-

वोदासीये— उदेति याम्यां हरिसंक्रमाद्रवेरेकाधिके विंशतिमे ह्यगस्त्यः ॥ स सप्तमेऽस्तं वृषसंक्रमाच्च प्रयाति गर्गादिभिरित्यभाणि ॥ व्रतारंभस-
मास्योस्तिथिं विशिनष्टि हेमाद्रौ सत्यव्रतः--उदयस्था तिथिर्या हि न भवेद्दिनमध्यभाक्॥ सा खंडा न व्रतानां स्यादारंभश्च समापनम् ॥ एत-
द्व्यतिरिक्तायामखंडायां प्रारंभमाह तत्रैव वृद्धवसिष्ठः— अखंडव्यापिमार्तंडा यद्यखंडा भवेत्तिथिः ॥ व्रतप्रारंभणं तस्यामनस्तगुरुशुक्रयुक्-इति ॥
-अनस्तमितगुरुशुक्रायां तिथौ व्रतमारंभणीयमित्यर्थः ॥ रत्नमालायाम्—सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवंति सिद्धिदाः ॥ भानुभौम-
शनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति ॥ विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ॥ स वैधृतिस्तु व्यतिपातनामा
सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे सवज्रे, व्याघातसंज्ञे नव, पंच शूले ॥ गंडेऽतिगंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्ज-
नीयाः ॥ दर्शं संक्रांतिपातौ परिघमुखदलं वैधृतिं पातयोगं विष्कंभाद्यत्रिनाडीः शुभकृतिषु च षड्गंडयोः पंच शूले ॥ व्याघाते वज्रकेऽङ्काः पितृमृ-
तिदिवसोनाधिमासान्कुहोरां जन्माज्जन्मोत्थमासोडुतिथिखलुतिथिं व्युद्गमांद्यचुद्रमां च ॥ ब्रह्मयामले—दिनभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा॥
न त्याज्या शुभकार्येषु प्राहुरेवं पुरातनाः-इति॥ ॥ अथ व्रतदेशः ॥ वेदव्यासः-सर्वे शिलोच्चयाः पुण्याः सागराः सरितस्तथा॥अरण्यानि च पुण्यानि
विशेषान्नैमिषं तथा ॥ देवीपुराणे— देशो नदीगयाशैलगंगानर्मदपुष्करम् ॥ वाराणसी कुरुक्षेत्रं प्रयागं जंबुकेश्वरम् ॥ केदारं वामपादं च कुडवं
पुष्कराह्वयम् ॥ सोमेश्वरं महापुण्यं तथा चामरकंटकम् ॥ कालंजरं तथा विंध्यं यत्र वासो गुहस्य च ॥ — गुहः स्वामिकार्तिकेयः ॥ मनुः—
सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदंतरम् ॥ तं ब्रह्मनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥ यस्मिन्देशे य आचारः पारंपर्यक्रमागतः ॥ वर्णानां सांतराला-
नां स सदाचार उच्यते ॥ कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पांचालाः शूरसैनिकाः ॥ एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनंतरः ॥ —मत्स्याः विराटाः, पांचालाः

कान्यकुब्जाः, शूरसेनिकाः मथुरादेशाः, अनतरः समः । हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि ॥ प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेश उदाहृतः ॥ विनशनं कुरुक्षेत्रम् । आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ॥ तयोरेवातरगी तु ह्यार्यावर्तं विदुर्बुधाः ॥ सिंधुनदीपश्चिमतीरव्याप्त्यर्थमित्या ह । कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः ॥ स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्ततः परः ॥ एतान्द्विजातयो देशान् संश्रयेरन्प्रयत्नतः ॥ याज्ञवल्क्योऽपि—यस्मिन्देशे मृगः कृष्णस्तस्मिन्धर्मान्निबोधत -इति ॥॥ अथ व्रताधिकारिण ॥॥ स्कांदे—निजवर्णाश्रमाचारनिरतः शुद्धमा नस ॥ अलुब्धः सत्यवादी च सर्वभूतहिते रतः ॥ व्रतेष्वधिकृतो राजन्नन्यथा विफल श्रमः ॥ श्रद्धावान्पापभीरुश्च मददंभविवर्जित ॥ पूर्वं नि-श्चयमाश्रित्य यथावत्कर्मकारकाः ॥ अवेदनिंदको धीमानधिकारी व्रतादिषु ॥ -निजवर्णाश्रमाचारेत्यनेन चतुर्वर्णानामधिकारो गम्यते । अतएव कौर्मे— ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव द्विजोत्तम ॥ अर्चयंति महादेवं यज्ञदानसमाधिभि ॥ व्रतोपवासनियमैर्होमस्वाध्यायतर्पणैः ॥ तेषां वै रुद्रसायुज्य सामीप्यं यातिनिर्मलम् ॥ सलोकता च सारूप्य जायते तत्प्रसादतः ॥ देवलोपि—व्रतोपवासनियमैः शरीरोत्तापनैस्तथा ॥ व र्णाः सर्वे विमुच्यंति पातकेभ्यो न संशयः ॥ अत्राधिकारिविशेषणस्य पुंस्त्वस्याविवक्षितत्वास्त्रीणामप्यधिकारः । भारते—मामुपाश्रित्य कौंतेय येऽपि स्युः पापयोनयः॥स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यांति परां गतिम् ॥ क्वचिन्म्लेच्छानामप्यधिकारः, हेमाद्रौ देवीपुराणे—स्नातैः प्रमुदितै र्हृष्टैर्ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृभिः ॥ वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः ॥ स्त्रीभिश्च कुरुशार्दूल तद्विधानमिद शृणु ॥ वैश्यशूद्रयोस्तु द्विरात्रा-धिकोपवासो न भवति । वैश्याः शूद्राश्च ये मोहादुपवासं प्रकुर्वते ॥ त्रिरात्र पचरात्र वा तेषा व्युष्टिर्न विद्यते-इति माध्यलिखितनिषेधात् ॥

१ क्वचित् 'तयोरेवांतरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः' इति पाठो दृश्यते । २ विना । ३ व्युष्टि फलम् ।

सभर्तृकाणां स्त्रीणां भर्त्राज्ञां विना नाधिकारः । तथा च, मदनरत्ने मार्कंडेयपुराणे-- या नारी ह्यननुज्ञाता भर्त्रा पित्रा सुतेन वा ॥ निष्फलं तु भवेत्तस्या यत्करोति व्रतादिकम् ॥ भर्त्राज्ञया सर्वव्रतेष्वधिकारः । भार्या भर्तुर्मतेनैव व्रतादीन्याचरेत्सदा --इति कात्यायनोक्तेः ॥ तथा च--पत्यौ जीवति या नारी ह्युपवासव्रतं चरेत् ॥ आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत्--इति विष्णुवचनात् तद्भर्तुरननुज्ञापरं यत्तु कश्चित्-- नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् ॥ भर्तुः शुश्रूषयैवैताँल्लोकानिष्टान्व्रजंति ताः ॥ यद्देवेभ्यो यच्च पित्रादिकेभ्यः कुर्याद्भर्ताभ्यर्चनं सत्क्रियां च ॥ तस्य ह्यर्द्धं सा फलं नान्यचित्ता नारी भुंक्ते भर्तृशुश्रूषयैव-- इति स्कांदात् । तस्मात्सभर्तृकाणामेकादश्याद्युपवासादावनधिकार इति । तन्न, तस्यापि पृथक्स्वातंत्र्येण भर्त्रननुज्ञापरत्वात् । अत एव व्यासः-- कामं भर्तुरनुज्ञाता व्रतादिष्वधिकारिणी -इति ॥ शंखोऽपि-- कामं भर्तुरनुज्ञया व्रतोपवासनियमाः स्त्रीधर्माः-इति । न चानुज्ञया व्रतेष्विव यज्ञेऽपि पृथगधिकारापत्तिरिति शंक्यम्,तस्याः श्रुत्यध्ययनानधिकारात् । यद्वा स्कांदे-- भर्तुः शुश्रुषायास्तावकत्वेनाप्युपपन्नत्वादिति । न च भर्तुरनुज्ञयैवाधिकारसिद्धेर्विधवाया व्रतेऽधिकारापत्तिरिति वाच्यम् । नारी खल्वननुज्ञाता भर्त्रा पित्रा सुतेन वा ॥ विफलं तद्भवेत्तस्य यत्करोत्यौर्ध्वदेहिकम्-- इति मार्कंडेयोक्तेः ॥ पित्राद्याज्ञया तस्य अधिकारः-इति हेमाद्रिः ॥ स्त्रीणां व्रतग्रहणे विशेषः, हेमाद्रौ हरिवंशे--स्नानं च कार्यं शिरसस्ततः फलमवाप्नुयात् ॥ स्नात्वा स्त्री प्रातरुत्थाय पतिं विज्ञापयेत्सती ॥॥ अथ व्रतधर्माः ॥ ॥व्रतसंकल्पविधिः भारते-- गृहीत्वौदुंबरं पात्रं वारिपूर्णमुदङ्मुखः॥ उपवासं तु गृह्णीयाद्यद्वा संकल्पयेद्बुधः॥-औदुंबरं ताम्रमयम्,औदुबरं स्मृतं ताम्रम्-इति विश्वोक्तेः॥यद्वाऽन्यन्नक्तव्रतादिकं कल्पयेदिति कल्पतरुः । श्रीदत्तस्तु कल्पतरुमते वाकारश्चार्थे तेनायमर्थः ॥ यस्तु नक्तादिकर्त्तुमिच्छेत्तदप्युक्तविधिनैव गृह्णीयादिति तन्मतं परिष्कृत्य वाकारस्योपवासपदस्य च वै-

पर्य्यापत्ते, यत्सकल्पयेत्तृतीयादिग्रन्थेनैवोपपत्तेरित्यवधेयम् । ताम्रपात्राद्यभावे हस्तेनापि जलं गृहीत्वा सकल्पयेदित्युक्तम् । अतएव अनन्तभट्टः—वर्षेवधारयेदिति पाठः । मदनरत्ने देवलवाक्ये तु— यथासंकल्पयेदिति पाठः, यथाकामं फलमुद्दिशेदित्यर्थः । अतएव मार्कण्डेयः—संकल्पं च यथा कुर्यात्स्नानदानव्रतादिके ॥ अनन्तरं कृत्यमाह, मदनरत्ने देवलः—अभुक्त्वा प्रातराहारं स्नात्वाऽऽचम्य समाहितः ॥ सूर्याय देवताभ्यश्च निवेद्य व्रतमाचरेत् ॥–अत्र प्रातर्व्रतमाचरेदित्येवान्वयः, प्रधानक्रियान्वयस्याभ्यर्हितत्वात् । अभुक्त्वेति तु अशक्तस्याभ्यनुज्ञातेक्ष्वादिभक्षणापवादः ॥ केचित्तु व्रतदिने प्रातराहारमभुक्त्वा व्रतमाचरेदित्याहुः । अत्र उपवासो व्रते कार्य इत्यनेनैवाभुक्तवतोऽधिकारस्य प्राप्तत्वादेतस्य वैयर्थ्यापत्तेः । अन्ये तु पूर्वदिने प्रातराहारमभुक्त्वा, अर्थादेकभुक्तं कृत्वा, स्नात्वाऽऽचम्य व्रतादिकं कुर्यादित्याहुः । परे तु सर्वत्र पूर्वेद्युरेव सायं सप्योत्तरव्रतं ग्राह्यं वारव्रतादौ बहुशस्तथा दृष्टत्वात्, प्रातः स्नात्वेति चान्वय इत्याहुः ॥ ॥ सामान्यधर्मा हेमाद्रौ भविष्ये—क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ देवपूजाऽग्निहवनं संतोषः स्तेयवर्जनम् ॥ सर्वव्रतेष्वयं धर्मः सामान्यो दशधा स्थितः ॥ देवपूजा यद्दैवत्यं व्रतं तस्य पूजा, अग्निहवनं पूज्यदेवतोद्देशेन होमः, उपक्रमादेतच्च सप्तमीव्रते सूर्यपूजाऽग्निहवनम्, नवमीव्रते दुर्गापूजा, अनुक्तदेवताव्रते इष्टदेवतापूजा । हवनं व्याहृतिहोमः—इति केचित् । अत्र क्षमादीनां स्वतन्त्रतया चतुर्वर्गसाधनत्वेन विहितानां व्रताङ्गतया विधानम् । खादिरं वीर्यकामस्य यूपं कुर्यादितिवत्संयोगपृथक्त्वादुपपन्नमिति —हेमाद्रिः । सर्वव्रतेष्वित्यत्र सर्वव्रतपदं भविष्यपुराणोक्तम् । सर्वव्रतपरमते व्रतांतरे विध्यंतरं स एव होमादीनामङ्गत्वं नान्यथा । अतएवैकादशीव्रतादौ शिष्टानां होमाद्यनाचरणमिति केचित् । येष्वेव पुराणांतरोक्तव्रतेषु होमादिविधिरस्ति तद्विषयकमेव सर्वपदम् । अन्यथा तदितरपरत्वेन संकोचापत्तेरिति । पृथ्वीचंद्रोदयेऽग्निपुराणे—स्नात्वा व्रतवता सर्वव्रतेषु व्रतमूर्तयः ॥ पूज्याः

सुवर्णमय्याद्याः शक्त्या वै भूमिशायिना॥ जपो होमश्च सामान्यं व्रतांते दानमेव च ॥चतुर्विंशद्द्वादश वा पंच वा त्रय एव वा ॥विप्राः पूज्या यथा शक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम् ॥-व्रतमूर्तयः तद्देवप्रतिमाः । देवलः— ब्रह्मचर्यमहिंसा च सत्यमामिषवर्जनम् ॥ व्रतेष्वेतानि चत्वारि चरितव्यानि नित्यशः ॥ स्त्रीणां तु प्रेक्षणात्स्पर्शात्ताभिः संकथनादपि ॥ नश्यते ब्रह्मचर्यं च न दारेष्वृतुसङ्गमात् ॥ स्वदारेष्वृतुसंगमात् इति क्वचित् पाठः । आमिषं मांसम् । आमिषं चातिपानीयं गोवर्ज्यक्षीरमामिषम् ॥ मसूरमामिषं सस्ये फले जंबीरमामिषम्। आमिषं शुक्तिकाचूर्णमारनालं तथाऽऽमिषम्—इति स्मृत्यंतरोक्तम् । व्रताद्यारंभे वृद्धिश्राद्धं कार्यम् । तदाह शातातपः—नानिष्ट्वा तु पितॄञ्छ्राद्धे कर्म किंञ्चित्समारभेत् ॥ गृहीतव्रतानाचरणे मदनरत्ने छागलेयः—पूर्वव्रतं गृहीत्वा यो नाचरेत्काममोहितः ॥ जीवन्भवति चाण्डालो मृते च श्वाऽभिजायते ॥- काममोहित इति विशेषणाद्व्याध्यादिना नाचरणे न दोषः । तथा च हेमाद्रौ स्कांदे—सर्वभूतभयं व्याधिप्रमादो गुरुशासनम् ॥ अव्रतघ्नानि पठ्यंते सकृदेतानि शास्त्रतः ॥ सर्वेभ्यो भूतेभ्यः सकाशाद्व्रतकर्तुर्भयादिति हेमाद्रिः । मदनरत्ने तु-सर्वभूतभयं व्याधिरपरिचितत्वाद्व्याख्यातः। सर्वभूतभयं भूतेभ्यः सर्पादिभयाच्च व्रतांगं वैकल्यते, व्रतहा निर्भवतीत्यर्थः ।-गुरुशासनं गुरोराज्ञा । सकृदुक्तिसकृत्त्यागे प्रायश्चित्तम् । तदुक्तं स्कांदगारुडयोः—क्रोधात्प्रमादाल्लोभाद्वा व्रतभंगो भवेद्यदि ॥ दिनत्रयं न भुंजीत मुंडनं शिरसोऽथवा ॥ न चात्र प्रायश्चित्तोक्तेः अतिक्रांतव्रतानाचरणमिति वाच्यम् । प्रायश्चित्तमिदं कृत्वा पुनरेव व्रती भवेत्—इति स्कांदात् ॥

॥ अथोपवासधर्माः ॥

॥ तत्रोपवासस्वरूपं कात्यायनवृद्धवसिष्ठाभ्यां दर्शितम्— उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासो गुणैः सह ॥ उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः ॥ - गुणैरिति तज्जाप्ययजनध्यानतत्कथाश्रवणादयः ॥ उपवासकृतामेते गुणाः प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ दया च सर्वभूतेषु क्षांतिरनसूया शौचमनायासो ऽकार्पण्यं च मांगल्यमस्पृहा -इति

विष्णुधर्मोत्तरगौतमादिप्रतिपादिताः । तच्छब्देनोपास्या देवता व्रतदेवता वा । एवं च पापानिवृत्त्यागुणानुष्ठानसहितो निराहारस्य वासोवस्थानमुपवास इत्युक्तं भवति । एवं च फलसाधनस्योपवासस्य स्वरूपमुक्तम् । उपवासपदार्थस्तु स्मृतिपुराणे व्यवहारे रूढ्या निराहारावस्थानमात्रम् । वृद्धवासिष्ठः—उपवासे तथा श्राद्धे न कुर्याद्दन्तधावनम् ॥—काष्ठेनेति शेषः । अतएव तन्निंदति—दन्तानां काष्ठसंयोगो हन्ति सप्तकुलानि च—इति वाक्यशेषाद्विधेरिव निषेधस्यापि विशेषपरता युक्तैव,तेन—अलाभे वा निषेधे वा काष्ठानां दन्तधावने ॥ पर्णादिना विशुद्ध्येत जिह्वोल्लेखः सदैव हि—इति पैठीनसिवचनात् । अलाभे दन्तकाष्ठानां निषिद्धायां तथा तिथौ ॥ अपां द्वादशगंडूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम्—इति व्यासवचनम् । देवलः—असकृज्जलपानाच्च सकृत्तांबूलचर्वणात् ॥ उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ अशक्तौ तु तेनैव जलपानाभ्यनुज्ञातम् । अत्यये चांबुपानेन नोपवासः प्रणश्यति ॥ अत्यये जलपानं विना प्राणात्यये विष्णुधर्मे—असकृज्जलपानं च दिवास्वापं च मैथुनम् । तांबूलचर्वणं मांसं वर्जयेद्व्रतवासरे ॥ असकृदुक्त्या सकृज्जलपाने न दोषः । अत्र,—पारणांतं व्रतं ज्ञेयं व्रतांते विप्रभोजनम् ॥ असमाप्ते व्रते पूर्वे कुर्यान्नैव व्रतांतरम्—इति ॥ तस्यापि व्रतवासरत्वान्मांसनिषेधः, पारणादिन एव उपवासप्रसक्त्यभावात् । अतएव निर्णयामृते व्यासः—वर्जयेत्पारणे मांसं व्रताहेऽप्यौषधं सदा ॥ अष्टतान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः ॥ हविर्ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्—इति स्कांदवचनात् ॥—प्रसक्तमौषधरूपमपि मांसं व्रताहे वर्जयेदित्यर्थः । विष्णुपुराणे—स्मृत्यालोकनगंधादिस्वादनं परिकीर्तनम् ॥ अन्नस्य वर्जयेत्सर्वं ग्रासानां चाभिकांक्षणम् ॥ गात्राभ्यंगं शिरोभ्यंगं तांबूलं चानुलेपनम् ॥ व्रतस्थो वर्जयेत्सर्वं यच्चान्यद्बलरागकृत्—इति । हारितः पतितपाखण्डादिनास्तिकादिसंभाषणानृताश्लीलादिकमुपवासादिषु वर्जयेत् । अन्नादिपदेन यत्पुरुषार्थतया सर्वदा निषिद्धं तदपि क्रत्वर्थतया संगृह्यते । अतएव व्रताधिकारे सुमन्तुः—

विहितस्याननुष्ठानमिंद्रियाणामनिग्रहः ॥ निषिद्धे सेवनं नित्यं वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ पतितादेर्दर्शनं तु विष्णुपुराणे–तस्यावलोकनात्सूर्यं पश्येत मतिमान्नरः ॥ स्पर्शादौ विष्णुधर्मे–संस्पर्शे च नरः स्नात्वा शुचिरादित्यदर्शनात्॥ संभाष्य ताँञ्छुचिपदं चिंतयेदयुतं बुधः॥ योगयाज्ञवल्क्यः–यदि वाग्यमलोपः स्याद्व्रतदानक्रियादिषु ॥ व्याहरेद्वैष्णवं मंत्रं स्मरेद्वा विष्णुमव्ययम् ॥ यमः–मानसे नियमे लुप्ते स्मरेद्विष्णुमनामयम् ॥ बृहन्नारदीये–रजस्वलां च चांडालं महापातकिनं तथा ॥ सूतिकां पतितं चैव उच्छिष्टं रजकादिकम् ॥ व्रतादिमध्ये शृणुयाद्यद्येषां ध्वनिमुत्तमः ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु जपेद्वै वेदमातरम् ॥ - वेदमाता गायत्री । मिताक्षरायां दक्षः–संध्याहीनो शुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ॥ यदन्यत्कुरुते किञ्चिन्न तस्य फलमश्नुते ॥ अत्र प्रातःसंध्यैव अन्यांगमित्याहुः । अविशेषात्तत्संध्योत्तरभाविनि कर्मादौ सांगमिति युक्तमाहुः प्राज्ञाः । प्रातःकालीनव्रतादिसंकल्पस्तु प्रातःसंध्यां कृत्वैव कार्यः । संध्यामादौ बुधः कृत्वा संकल्पं तत आचरेत्-इति गौडनिबंधे ध्रुवस्मृतेः ॥ मार्कंडेयपुराणे–सूर्योदयं विना नैव व्रतदानादिकक्रम-इति ॥-क्रम इति उपक्रमः । स्नानदानादिकाः क्रिया इति पाठः । सूर्योदयशब्देन उषःकालो प्रशस्यते । तं विना रात्रौ स्नानादिकं न कार्यमिति–कल्पतरौ । छंदोगपरिशिष्टे–सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च ॥ विशिखो व्युपवीती च यत्करोति न तत्कृतम् ॥ पित्र्यमंत्रानुद्रवणे आत्मालंभे अवेक्षणे ॥ अधोवायुसमुत्सर्गे प्रहारेऽनृतभाषणे ॥ मार्जारमूषकस्पर्श आक्रोशे क्रोधसंभवे ॥ निमित्तेष्वेषु सर्वत्र कर्म कुर्वन्नपः स्पृशेत् ॥ मार्कंडेयपुराणे–शिरःस्नातश्च कुर्वीत दैवं पित्र्यमथापि वा ॥ वराहपुराणे–स्नानसंध्यातर्पणादि जपो होमः सुरार्चनम् ॥ उपवासवता कार्यं सायंसंध्याहुतीर्विना ॥ भगवद्गीतायाम्–तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः ॥ प्रवर्तंते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ तैत्तिरीये–त्रिमात्रस्तु प्रयोक्तव्यः कर्मारंभेषु सर्वशः ॥ इति सामान्यप-

रिभाषा । विस्तृता चेय सामान्यपरिभाषा आचारमयूखे द्रष्टव्या ॥ अत्र स्त्रीणां विशेषो हेमाद्रौ पाद्मे– गर्भिणी सूतिकादिश्च कुमारी वाथ रोगिणी ॥ यदाऽशुद्धा तदाऽन्येन कारयेत्प्रयता स्वयम् ॥ प्रयता शुद्धा स्वयं कुर्यादित्यर्थः । पुंसोऽप्येष विधिर्लिंगस्याविवक्षितत्वादिति हेमाद्रिः । एवं स्त्रीभी रजोदर्शनेऽपि कार्यम् । तथा च सत्यव्रतः– प्रारब्धदीर्घतपसां नारीणां चेद्रजो भवेत् ॥ न च तत्र व्रतस्य स्यादुपरोधः कथंचन । - व्रतस्य उपवासस्येत्यर्थः । पूजादिकं तु अन्येन कारयेत् । तथा च मदनरत्ने मात्स्ये–अंतरा तु रजःस्पर्शे पूजामन्येन कारयेत् ॥ सूतकेऽप्येवम् । तथा च तत्रैव, पूर्वं संकल्पितं यच्च व्रतं सुनियतव्रतैः ॥ तत्कर्तव्यं नरैः शुद्धं दानार्चनविवर्जितम् ॥ अन्येन कारयेदित्यपेक्षायां तत्रैव पैठीनसिः–भार्या पत्युर्व्रतं कुर्याद्भार्यायाश्च पतिर्व्रतम् ॥ असामर्थ्येऽपरस्ताभ्यां व्रतभंगो न जायते ॥ तत्रैव, वायुपुराणे– उपवासे त्वशक्तस्तु आहिताग्निरथापि वा ॥ पुत्रान्वा कारयेदन्यान्ब्राह्मणान्वाऽपि कारयेत् ॥ उपवासं प्रकुर्वाणः पुण्यं शतगुणं भवेत् ॥ नारी च पतिमुद्दिश्य एकादश्यामुपोषिता ॥ पुण्यं शतगुणं प्रोक्तमित्याह गालवो मुनिः ॥ मातामहादीनुद्दिश्य एकादश्यामुपोषणे ॥ कृते च भक्तितो विप्राः समग्रं फलमाप्नुयुः ॥ मोक्षव्रते प्रतिनिधिः, न काम्ये । तथा च मदनः–काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्यनैमित्तिके च सः ॥ काम्येऽप्युपक्रमादूर्ध्वं केचित्प्रतिनिधिं विदुः ॥ न स्यात्प्रतिनिधिर्मंत्रस्वामिदेवाग्निकर्मसु ॥ स देशकालयोः शब्दे नारणेः पुत्रभार्ययोः ॥ नापि प्रतिनिधातव्यं निषिद्धं वस्तु कुत्रचित् ॥ ॥ अथ व्रते हविष्याणि ॥ ॥ हेमाद्रौ छंदोगपरिशिष्टे कात्यायनः– हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः ॥ माषकोद्रवगौरादीन्सर्वाभावेऽपि वर्जयेत् ॥ तत्रैव, अग्निपुराणे– व्रीहिषष्टिकमुद्गाश्च कलायाः सलिलं पयः ॥

१ देशकालस्याभावे शब्दे स प्रतिनिधिर्नास्तीत्यर्थः । २ नारणेरग्निरेवसेति पाठो निर्णयसिंधौ ।

श्यामाकाश्चैव नीवारा गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥ कूष्माडालाबुवृंताकपालक्यज्योत्स्नकास्त्यजव् ॥ मधुमांसं विहातव्यं सर्वैश्च व्रतिभिस्तथा ॥
धु ॥ श्यामाकाः शालिनीवारा यावकं मूलतंडुलम् ॥ हविष्यं व्रतनक्तादावग्निकार्यादिके हितम् ॥ कालायकंगुनीवारा वास्तुकं हि-
-पालकी पाथरी, ज्योत्स्निका कोशातकी । तत्रैव भविष्ये– हैमंतिकं सितास्विन्नं धान्यं मुद्रा यवास्तिलाः ॥ पयो दधि घृतं चैव पनसाम्रहरीतकी ॥
लमोचिका ॥ षष्टिका कालशाकं च मूलकं केमुकेतरम् ॥ कंदः सैंधवसामुद्रे गव्ये च दधिसर्पिषी ॥ अतैलपक्कं मुनयो हविष्याणि प्रचक्षते ॥ लवणे
पिप्पली जीरकं चैव नागरंगकतितिणी ॥ कदलीलवलीधात्रीफलान्यगुडमैक्षवम् ॥ –हैमंतिकं धान्यं कलमाः, तदपि सितं श्वेतं, अस्विन्नं हविष्यं, कलायाः सतीनकपर्यायाः 'मटर' इति प्रसिद्धाः
मधुसर्पिषी इति क्वचित्पाठः । -हैमंतिकं धान्यं कलमाः, तदपि सितं श्वेतं, अस्विन्नं हविष्यं, कलायाः सतीनकपर्यायाः 'मटर' इति प्रसिद्धाः
'वाटाणे' इति दक्षिणप्रसिद्धाः, वास्तुकं 'बथुवा' इति ख्यातः, हिलं शुकं मोचयति– इति क्षीरस्वामी। - शुकासारो हिलसार इति प्रसिद्धः।
शाकः जलोद्भवः गौडदेशे 'हेलांचले' इति प्रसिद्धा, कालशाक उत्तरदेशे 'कालिका' इति प्रसिद्धम्, 'केमुकं केमुत्रा' इति पूर्वदेशे प्रसिद्धम्,नाग-
रंगकं नारिंगं, ऐरावतो नागरंगो नादेयी भूमिजंबुका – इत्यमरात् ॥ - नागरं चैवेति पाठे नागरं शुंठी, लवली 'राय आंवळी' इति महारा-
ष्ट्रभाषयोच्यमानं फलम् 'हरफरेवडी' इति मध्यदेशभाषया । -अतैलपक्कमित्येतत्कथितहविष्याणामेव विशेषणम् । मनुः--मुन्यन्नानि पयः सो-
मो मांसं यच्चानुपस्कृतम् ॥ अक्षारलवणं चैव प्रकृत्या हविरुच्यते ॥ - अनुपस्कृतं अपक्कम् ॥ ॥ अथ व्रताद्युपयुक्तानि वस्तूनि ॥ ॥ तत्र
पंचरत्नानि ॥ आदित्यपुराणे – सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम् ॥ रत्नपंचकमाख्यातं शेषं वस्तु ब्रवीम्यहम् ॥ कनकं कुलिशं
नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ॥ एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः– इति । मेघप्रदीपधृतकालिकापुराणोक्तानि वा । - कुलिशं हीरकम् ।

स्मृत्यंतरे-अभावे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत् । विष्णुधर्मोत्तरे- मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकम् ॥ पुष्परागं च गोमेदं नीलं मारकतं तथा॥ प्रवालयुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै नव ॥ हेमाद्रौ ब्रह्मांडपुराणे- अश्वत्थोदुंबरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः ॥ पंचभंगा इति ख्याता सर्वकर्मसु शोभना ॥-पंचभंगाः पंचपल्लवाः ॥ पंचगव्यं च तत्रैव स्कांदे-गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिर्यथाक्रमम् ॥ विष्णुधर्मे- गोमूत्रं माषकमार्द्धं शकृत्क्षीरस्य च त्रयम् ॥ द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुशवारिजं ॥ गोमूत्रप्रमाणं तु प्रायश्चित्तमयूखे ज्ञेयम् । विष्णुधर्मे-गायत्र्याऽऽदाय गोमूत्रं गंधद्वारेति गोमयम् ॥ आप्यायस्वेति क्षीरं च दधिक्राव्णोऽथ वै दधि ॥ शुक्रमसीति आज्यं च देवस्यत्वाकुशोदकम् ॥ एभिस्तु मंत्रराजैस्तु पंचगव्यं प्रचक्षते ॥ ॥ पंचामृतं तु हेमाद्रौ शिवधर्मे- पंचामृतं दधि क्षीरं सिता मधु घृतं स्मृतम् । अन्यत्र पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम् ॥ पंचामृतमिति ख्यातं भाषितं मुनयो विदुः ॥ मदनरत्ने कात्यायनः- आज्यं क्षीरं मधु तथा मधुरत्रयमुच्यते ॥ ॥ (तत्रैव,-) मधुरोऽम्लश्च लवणः कषायस्तिक्त एव च ॥ कटुकश्चेति राजेंद्र रसषट्कमुदाहृतम् ॥ यक्षकर्दमं तु गारुडे- कस्तूरिकाया द्वौ भागौ चत्वारश्चंदनस्य च ॥ कुंकुमस्य त्रयश्चैव शशिनः स्याच्चतुस्समम् ॥ -कुंकुमं केशरं, शशी कर्पूरः । कर्पूरश्चंदनं दर्पः कुंकुमं च समांशकम् ॥ सर्वगंधमिति प्रोक्तं समस्तसुरभूषणम् ॥ दर्पः कस्तूरिका । तथा- कस्तूरी ह्यगुरुश्चैव कर्पूरश्चंदनं तथा ॥ कक्कोलं,च भवेदेभिः पंचभिर्यक्षकर्दमः ॥ ॥ अथ सर्वौषधीः ॥ ॥ कुष्ठं मांसी हरिद्रे द्वे[१] मुरा शैलेयचंदने ॥ वचा चंपकमुस्ते च सर्वौषध्यो दश स्मृताः ॥ ॥ पाद्मे- इक्षवस्तृणराजं च निष्पावाजाजिधान्यकम् ॥ विकारवच्च गोक्षीरं कुसुमं कुंकुमं तथा ॥ लवणं चाष्ट-

१ हरिद्रा दारुहरिद्रा चेति व्याचिख्यासम् ।

मं तत्र सौभाग्याष्टकमुच्यते ॥ - तृणराजस्तालः, अजाजि जीरकम् ॥ ॥ आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा ॥ यवाः सिद्धार्थकाश्चेति ह्यर्घोऽष्टागः प्रकीर्तितः ॥ ॥ पंचरात्रे—रजांसि पंचवर्णानि मंडलार्थं हि कारयेत् ॥ शालितंडुलचूर्णेन शुक्लं वा यवसंभवम् ॥ रक्तं कुसुंभसिंदूरगैरिकादिसमुद्भवम् ॥ हरितालोद्भवं पीतं रजनीसंभवं तथा ॥ कृष्णं दग्धं च हरितं पीतकृष्णविमिश्रितम् ॥ - रजनी हरिद्रा ॥ कौतुकसंज्ञानि भविष्ये—दूर्वा यवांकुराश्चैव वालकं चूतपल्लवाः ॥ हरिद्राद्वयसिद्धार्थशिखिपत्रोरगत्वचः ॥ कंकणौषधयश्चैताः कौतुकाख्या दश स्मृताः ॥ अथ सप्तमृदः ॥ ॥ मात्स्ये—गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रदगोकुलात् ॥ मृदमानीय कुंभेषु प्रक्षिपेच्चत्वरात्तथा ॥ गोकुलावधि सप्त चत्वरेण सहाष्टौ मृदो भवेयुः इति ॥ ॥ हेमाद्रौ भविष्ये—सुवर्णं रजतं ताम्रमारकूटं तथैव च ॥ लोहं त्रपु तथा सीसं धातवः सप्त कीर्तिताः॥आरकूटं पित्तलम् । तत्रैव,षट्त्रिंशन्मते—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंगुश्च मुद्गकाः ॥ श्यामाकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ ॥ सप्तदशधान्यानि मार्कंडेयपुराणे—व्रीहयश्च यवाश्चैव गोधूमाः कंगुकास्तिलाः ॥ प्रियंगवः कोविदाराः कोरदूषाः सतीनकाः ॥ माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः सकुलित्थकाः ॥ आढक्यश्चणकाश्चैव यावनालास्तथा स्मृतः । क्रमादेवं विजानीयाद्धान्याः सप्तदश स्मृताः ॥ - कोरदूषाः कोद्रवाः, सतीनकाः कलायाः 'मटर' इति गौडभाषायां प्रसिद्धाः ॥ ॥ अष्टादश धान्यानि स्कांदे—व्रीहिर्यवास्तिलाश्चैव यावनालास्तथैव च ॥ सतीनकाः कुलित्थाश्च कंगुकाः कोरदूषकाः ॥ माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः श्यामसर्षपाः ॥ गोधूमाश्चणकाश्चैव नीवाराढक्य एव च ॥ एवं क्रमेण जानीयाद्धान्यान्यष्टादशानि च ॥ ॥ हेमाद्रौ क्षीरस्वामी—मूलपत्रकरीराग्रफलकांडादिरूढकाः ॥ त्वक्पुष्पं कवचं चेति शाकं दशविधं स्मृतम् ॥ - करीरं वंशांकुरः, अग्रं पल्लवः, काण्डं नालं, कवचं छत्राकम् ॥ ॥ कलशा उक्ता विष्णुधर्मे—

हेमराजतताम्राश्च मृन्मया लक्षणान्विताः ॥ यात्रोद्वाहप्रतिष्ठादौ कुंभाः स्युरभिषेचने ॥ पंचाशांगुलवैपुल्या उत्सेधे षोडशांगुलाः ॥ द्वादशांगुलमूलाः स्युर्मुखमष्टांगुलं भवेत् ॥ पच च आशाश्च पंचाशाः, आशाः दश, पचाशदंगुलानि वैपुल्यमित्यर्थः । केचित्तु पंचदशांगुलवैपुल्यमित्याहुः ॥ ॥ प्रतिमाद्रव्ययोः परिमाणम् ॥ ॥ हेमाद्रौ भविष्ये—अनुक्तद्रव्यतत्सख्या देवताप्रतिमा नृप ॥ सौवर्णी राजती ताम्री वृक्षजा मार्त्तिकी तथा ॥ चित्रजा पिष्टलेपोत्था निजवित्तानुरूपतः ॥ आमापात्पलपर्यंता कर्तव्या शक्तिसंभवे ॥ अंगुष्ठपर्वमारभ्य वितस्त्यवधिका स्मृता ॥ मात्स्ये तु विशेषः—अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्त्यवधि देवता ॥ गृहे तु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः ॥ आषोडशात्तु प्रासादे कर्तव्या नाधिका ततः—इति ॥ अधिकं कल्पतरौ प्रतिष्ठाकांडे ज्ञेयम् ॥ ॥ तथा, अनुक्तसंख्या होमे स्याच्छतमष्टोत्तरं स्मृतम् । मात्स्ये—होमो ग्रहादिपूजायां शतमष्टोत्तरं भवेत् ॥ अष्टाविंशतिरष्टौ वा यथाशक्ति विधीयते ॥ ॥ मदनरत्ने ब्राह्मे—यथोक्तवस्त्वसंपत्तौ ग्राह्यं तदनुकारि यत् ॥ यवाभावे च गोधूमा व्रीह्यभावे च तंडुलाः ॥ ॥ आज्यं द्रव्यमनादेशे जुहुयाच्च यथाविधि ॥ मंत्रस्य देवतायाश्च प्रजापतिरिति स्थितिः ॥ मंत्रस्य देवतायाश्च विधाने प्रजापतिर्देवता । समस्तव्याहृतिर्मंत्रः ॥ स्मृत्यंतरेऽपि—न व्याहृत्या समं हुत इति ॥ गारुडे—प्रणवादिनमोंतं च चतुर्थ्यंतं च सत्तम ॥ देवतायाः स्वकं नाम मूलमंत्रः प्रकीर्तितः[1] ॥ ॥ द्रव्याभावे प्रतिनिधिः ॥ ॥ दध्यलाभे पयो ग्राह्यं मध्वलाभे तथा गुडः ॥ घृते प्रतिनिधिः कार्यः पयो वा दधि वा नृप ॥ तत्रैव मैत्रायणीयपरिशिष्टे—दर्भाभावे काशाः । पैठीनसिः—सर्वाभावे यवाः । आज्यहोमेषु सर्वेषु गव्यमेव भवेद्धृतम् ॥ तदभावे माहिष्यास्तु आज्यमाविकमेव तु ॥ त-

१ पंचशिर्षिका भाषा ।

दभावे तु तैलं स्यात्तदभावे तु जार्तिलम् ॥ तदभावे तु कौसुंभं तदभावे तु सार्षपम् ॥ ॥ अथ पवित्रम् ॥ ॥ अनंतर्गर्भितं साग्रं कौशं द्विदलमेव च । प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्रकुत्रचित् ॥ ॥ अथेध्माः ॥ ॥ पलाशाश्वत्थखदिरवटोदुंबराणां तदभावे कंटकवर्जसर्ववनस्पतीनाम् ॥ ॥ अथ धूपाः ॥ अगरुश्चंदनं मुस्ता सिल्हकं वृषणं तथा ॥ समभागं तु कर्तव्यं धूपोऽयममृताह्वयः ॥-सिह्लकं 'सिह्लाद' इति प्रसिद्धः, वृषणं कस्तूरी।षड्भागकुष्ठं द्विगुणोऽगरुश्च लाक्षायत्रं पंच नखस्य भागाः ॥ हरीतकी सर्जरसाः समांसी भागैकमेकं त्रिलवं शिलाजम् ॥ घनस्य चत्वारि पुरस्य चैको धूपो दशांगः कथितो मुनींद्रैः ॥ सर्जरसः 'राळ'इति प्रसिद्धः, मांसी जटामांसी, त्रिलवं त्रिभागं, घनः कर्पूरः, पुरो गुग्गुलः ॥ ॥ सुवर्णमानमाह याज्ञवल्क्यः—जालसूर्यमरीचिस्थं त्रसरेणू रजः स्मृतम् ॥ तेऽष्टौ लीक्षास्तु तास्तिस्रो राजसर्षप उच्यते ॥ गौरस्तु ते त्रयः षट् ते यवो मध्यस्तु ते त्रयः ॥ कृष्णलः पंच ते माषस्ते सुवर्णस्तु षोडश ॥ पलं सुवर्णाश्चत्वारः पंच वाऽपि प्रकीर्तितम् ॥ ॥ रजतमानमाह—द्वे कृष्णले रूप्यमाषो धरणं षोडशैव ते ॥ शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव तु ॥ निष्कं सुवर्णाश्चत्वारः—इति॥ ॥ ताम्रमानमाह—कार्षिकः ताम्रिकः पण-इति पलचतुर्थांशेन कर्षेणोन्मितः कार्षिकस्ताम्रसंबंधी पणो भवति। कर्षसंज्ञा च निघंटौ—ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम्-इति ॥ ते षोडश माषा अक्षः । हेमाद्रौ नारदः अक्षः स च कर्ष इत्यर्थः । धरणस्यैव पुराणसंज्ञांतरम्—ते षोडश स्याद्धरणं पुराणश्चैव राजतम्—इति मिताक्षरायां स्मृतेः ॥ शतमाने पले पर्याये सुवर्णचतुष्टयसमतोलितं रूप्यं राजतो निष्क इत्यर्थः । सुवर्णनिष्कस्तु—चतुःसौवर्णिको निष्को विज्ञेयस्तु प्रमाणतः-इति ।-स च पलसमान एव ॥ कोऽत्र कार्षापण इत्यपेक्षायां देशभेदेन कार्षापणो भिन्न इत्याह, हेमाद्रौ नारदः—कार्षापणो दक्षिणस्यां दिशि रौप्यः प्रवर्तते ॥ पणैर्निबद्धः पूर्वस्यां षोडशैव प-

णाः स स्तु ॥-अष्टौ ढब्बूका कार्षापणः पूर्वस्यामित्यर्थः । तावता रूप्यं रूप्यं दक्षिणस्यां स इति द्वैतनिर्णये पितामहचरणाः । लीलावत्यां—व राटकानां दशकद्वय यत्सा काकिणी ताश्च पणश्चतस्रः ॥ ते षोडश द्रम्म इहावगम्यो द्रम्मैस्तथा षोडशभिश्च निष्कः ॥ ॥ अथ धान्यमानम् ॥ ॥ भविष्ये—पलद्वय तु प्रसृतं द्विगुणं कुडव मतम् ॥ चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थः प्रस्थाश्चत्वार आढकः ॥ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्च द्रोणस्तु कथितो बुधैः ॥ कुम्भो द्रोणद्वय शूर्प खारी द्रोणास्तु षोडश ॥ -द्रोणद्वयस्यैव शूर्प इति संज्ञा । फल च कुडवः प्रस्थ आढको द्रोण एव च ॥ धान्यमानेषु बोद्धव्याः क्रमशोऽमी चतुर्गुणाः ॥ द्रोणैः षोडशभिः खारी विंशत्या कुंभ उच्यते ॥ कुंभैस्तु दशभिर्वाहो धान्यसंख्याः प्रकीर्तिताः ॥-विंशतीत्यत्रापि द्रोणैरिति संबध्यते ।- तथा च कुंभो द्रोणद्वयमिति पक्षाद्विंशतिद्रोणमित कुंभ इति पक्षांतरम् । द्रोणाढकयोः परिमाणांतरमुक्त पराशरेण—वेदवेदांगविद्भिर्मैर्धर्मशास्त्रानुपालकैः ॥ प्रस्थाद्द्वात्रिंशतिर्द्रोणमितो द्विप्रस्य आढक -इति ॥ एतेषु न्यूनाधिकपक्षाणां शक्तिदेशकालाद्यपेक्षया व्यवस्था ज्ञेया ॥ ॥ अथ होमद्रव्यमानम् ॥ ॥ सिद्धांतशेखरे— होमद्रव्यप्रमाणानि वक्ष्यते तु यथाक्रमम् ॥ कर्षप्रमाणमाज्यं स्यान्मधुक्षीरं च तत्समम् ॥ तण्डुलानां शुक्तिमात्र पायस प्रसृतेः समम् ॥ कर्षमात्राणि भक्ष्याणि लाजा मुष्टिमिता मता ॥ अन्न ग्राससम ग्राह्य शाकं ग्रासार्धमानकम् ॥ मूलानां तु त्रिभाग स्यात्कंदानामष्टमोंऽशकः ॥ इक्षुपर्वप्रमाणं स्यादंगुलद्वितयं लता ॥ प्रादेशमात्रा समिधो व्रीहीणां चांजलिः समः ॥ तिलसक्तुकणादीनां मृगीमुद्राप्रमाणतः ॥ पत्रपुष्पफलादीनां प्रमाणाद्धृतिरिष्यते ॥ चंद्रश्रीखंडकस्तूरीकुंकुमागरुकर्दमाः ॥ हरिमंथसमाः प्रोक्ता गुग्गुलर्बदरोपमः ॥ -आहुती

१ चंद्रः कर्पूरः २ चणकप्रमाणा इत्यर्थः ।

नामिदं मानं कथितं वेदवेदिभिः ॥ स्यात्रिमुद्रा मृगीमुद्रा होमे सर्वफलप्रदा ॥ मानांतरं शारदातिलकटीकायांपदार्थादर्शे— कर्षप्रमाणमाज्यं स्याच्छुक्तिमात्रं पयः स्मृतम् ॥ उक्तानि पंचगव्यानि शुक्तिमात्राणि साधुभिः ॥ तत्समं मधुदुग्धान्नं ग्रासमात्रमुदाहृतम् ॥ दधिप्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टिसंमिताः ॥ पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः सक्तवोऽपि तथाविधाः ॥ पलार्द्धं गुडमानं च शर्कराऽपि तथाविधा ॥ ग्रासार्द्धमात्रमन्नानामिक्षुः पर्वप्रमाणतः ॥ एकं स्यात्पत्रपुष्पं च तथा धूपादि कल्पयेत् ॥ मातुलिंगं चतुःखंडं पनसं दशधा कृतम् ॥ अष्टधा नारिकेलं च चतुर्धा कदलीफलम् ॥ त्रिधा कृतं फलं बैल्वं कपित्थं खंडितं द्विधा ॥ व्रीहयो मुष्टिमानाः स्युर्मुद्गा माषा यवास्तथा ॥ तण्डुलाः स्युस्तदर्धांशाः कोद्रवा मुष्टिसंमिताः ॥ लवणं शुक्तिमात्रं स्यान्मरीचान्येकविंशतिः ॥ घृतस्य कार्षिको होमः क्षीरस्य मधुनस्तथा ॥ शुक्तिमात्राहुतिर्दध्नः प्रसृतिः पायसस्य च ॥ खण्डत्रयं तु मूलानां फलानां स्वप्रमाणतः ॥ ग्रासमात्रं तु होतव्या इतरेषां च तण्डुलाः ॥ अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ता अभावे व्रीहयः स्मृताः ॥ तदभावे च गोधूमा न तु खण्डिततण्डुलाः ॥ येषां केषांचिदन्येषां द्रव्याणामप्यसंभवे ॥ सर्वत्राज्यमुपादेयं भरद्वाजमुनेर्मतात् ॥ सर्वप्रमाणमाहुत्या पंचांगुलगृहीतया -इति ॥ संपूर्णानि च सर्वत्र सूक्ष्माणि पंच पंच च ॥ इक्षूणां पर्वकं मानं लतानामंगुलद्वयम् ॥ चंद्रचंदनकाश्मीरकस्तूरीयक्षकर्दमान् ॥ कलायसंमितानेतान् गुग्गुलुं बदरास्थिवत् ॥ द्रवः स्रुवेण होतव्यः पाणिना कठिनं हविः ॥ स्रुवपूर्णा द्रवाः प्रोक्ताः कठिना ग्रासमात्रकाः ॥ व्रीहयो यवगोधूमप्रियंगुतिलशालयः ॥ स्वरूपेणैव होतव्या इतरेषां च तण्डुलाः ॥

॥ अथ ऋत्विग्वरणम् ॥

॥ हेमाद्रौ पाद्मे— बालाग्निहोत्रिणं विप्रं सुरूपं च गुणान्वितम् ॥ सपत्नीकं च संपूज्य भूषयित्वा च भूषणैः ॥ पुरोहितं मुख्यतमं कृत्वाऽन्यांश्च तथर्त्विजः ॥ चतुर्विंशद्गुणोपे-

तान्सपत्नीकानिमंनितान् ॥ अहतावरसछन्नान्स्रग्विण शुचिभूपितान् ॥ अगुलीयकानि च तथा कर्णभूपान्प्रदापयेत् ॥ ॥ तत्रैव लगे-
वस्त्रयुग्म तथोष्णीप कुण्डले कण्ठभूपणम् ॥ अगुलीभूपणं चैव मणिबधस्य भूपणम् ॥ एतानि चैव सर्वाणि प्रारभे धर्मकर्मणाम् ॥ पु
रोहिताय दत्त्वाऽथ ऋत्विग्भ्यः समदापयेत् ॥ पूर्वोक्तं भूपण सर्वं सोष्णीप वस्त्रसयुतम् ॥ दद्यादेतत्प्रयोक्तृभ्य आच्छादनपट तथा ॥ ॥
वृताना मधुपर्कमाह विश्वामित्रः- सपूज्य मधुपर्केण ऋत्विजं कर्म कारयेत् ॥ अपूज्य कारयन्कर्म किल्बिपेणैव युज्यते ॥ ॥ ऋत्वि
जा सख्यामाह मात्स्ये-हेमालंकारिणः कार्याः पचविंशति ऋत्विजः ॥ तोपयेत्स सम सर्वानाचार्ये द्विगुण भवेत् ॥-दक्षिणया तोपयेदि
त्यर्थः ॥ ॥ अथ सर्वतोभद्रमडलम् ॥ ॥ हेमाद्रौ स्कांदे-प्रागुदीच्या गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम् ॥ खण्डेंदुस्त्रिपदः कोणे शृं
खला पचभिः पदैः ॥ एकादशपदा वल्ली भद्र तु नवभिः पदैः ॥ चतुर्विंशत्पदा वापी विंशत्या परिधिः पदैः ॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः
पद्ममष्टदल स्मृतम् ॥ श्वेतेंदुः शृखलाः कृष्णा वल्लीर्नीलेन पूरयेत् ॥ भद्र रक्त सिता वापी परिधिः पीतवर्णकः ॥ बाह्यांतरदलश्वेता
कर्णिका पीतवर्णका ॥ परिध्या वेष्टित पद्मं बाह्ये सत्व रजस्तमः ॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान्ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ इति सर्वतोभद्रपीठम् ॥
॥ अथ लिंगतोभद्रम् ॥ ॥ चतुर्विंशतिरालेख्या रेखाः प्राग्दक्षिणायताः ॥ कोणेषु शृखला पच पदा वल्यस्तु पार्श्वत ॥ पदैर्नवभिराले
ख्याश्चतुर्भिर्लघुशृंखलाः ॥ ॥ लघुवल्यः पदैः पङ्क्तिस्ततोऽष्टादशभि पदै ॥ कृत्वा लिंगानि वाप्यः स्युस्त्रयोदशभिरतरा ॥ ततो वी
थीद्वयेनैव पीठ कुर्याद्विचक्षणः ॥ तस्य पादाः पचपदा द्वाराण्यपि तथैव च ॥ एकादशीतिपद मध्ये पद्म स्वस्तिकमुच्यते ॥ कोणेषु शृ
खलाः कार्या पदैस्त्रिभिस्ततः परम् ॥ पदैश्चतुर्भिर्दिक्षु स्युर्भद्राण्येषा समंततः ॥ एकादशपदा वल्यो मध्येऽष्टदलमालिखेत् ॥ पद्म न

वपदं ह्येवं लिंगतोभद्रमुच्यते ॥ शृंखलाः कृष्णवर्णेन वल्लीर्नीलेन पूरयेत् ॥ रक्तेन शृंखला लक्ष्मीर्वल्लीः पीतेन पूरयेत् ॥ लिंगानि कृष्णवर्णानि श्वेतेनाप्यथ वापिकाः ॥ पीठं सपादं श्वेतेन पीतेन द्वारपूरणम् ॥ मध्ये स्युः शृंखला रक्ता वल्लीर्नीलेन पूरयेत् ॥ भद्राणि पीतवर्णानि पीता पंकजकर्णिका ॥ दलानि श्वेतवर्णानि यद्वा चित्राणि कल्पयेत् ॥ तिस्रो रेखा बहिः कार्याः सितरक्ताऽसिताः क्रमात् ॥ ॥ अथ चतुर्लिंगोद्भवं लैंगे– रेखास्त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिंगसमुद्भवे ॥ कोणेंदुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्णशृंखलाः ॥ वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ॥ भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ॥ शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात्पंचपदां सिताम् ॥ पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ॥ शिरसि शृंखलायाश्च कुर्यात्पीतं पदत्रयम् ॥ लिंगानां स्कंधतः कोष्ठा विंशती रक्तवर्णकाः ॥ परिधिः पीतवर्णैस्तु पदैः षोडशभिः स्मृतः ॥ पदैस्तु नवभिः पश्चाद्रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ ॥ अथ द्वादशलिंगोद्भवम् ॥ तत्रैव, प्रागुदीच्यायता रेखाःषट्त्रिंशद्धि प्रकल्पयेत्॥पदानि द्वादशशतं पंचविंशतिरेव च॥खंडेंदुस्त्रिपदःकोणे शृंखलाः षट्पदैः स्मृताः ॥ त्रयोदशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः॥ त्रयोदशपदा वापी लिंगमष्टादशं स्मृतम्॥लिंगत्रयस्य पंक्तौ तु शोभा कोष्ठाश्चतुर्दश ॥ तेषामुपरि पंक्तौ तु कोष्ठाः सप्तदशैव तु । पूजापंक्तिस्तु विज्ञेयो परितः परिकीर्तिता ॥ पूजापंक्त्यंतरा पंक्तौ कोष्ठाद्व्यशीतिसंख्यया॥ परिधिः स च विज्ञेयो मंडले ह्यंतरा द्वयोः॥ परिध्यंतरकोष्ठेषु सर्वतोभद्रमालिखेत् ॥ विशेषश्चात्र विज्ञेयो शृंखला षट्पदा भवेत् ॥ त्रयोदशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः॥पंचविंशत्पदा वापी परिधिः षोडशात्मकः ॥ मध्ये नवपदं पद्मं कर्णिका केसरान्वितम् ॥ सत्वं रजस्तमो वर्णाः परितो मंडलस्य तु ॥ त्रयः परिधयः कार्यास्तत्र द्वाराणि कारयेत् ॥ सितेंदुः शृंखला कृष्णा वल्ली नीला प्रकीर्तिता ॥ भद्रं चैवारुणं ज्ञेयं वापी स्याच्छ्वेतकर्णिका ॥ लिंगानि कृष्णवर्णानि पार्श्वतो द्वादशैव तु ॥

परिधिः पीतवर्णः स्यात्कमर्ळ पञ्चवर्णकम् ॥ ॥ इति सर्वतोभद्रलिंगतोभद्रादिमण्डलानि॥ ॥ अथ सर्वतोभद्रमण्डलविधिरुच्यते ॥ ॥ शिव व्रतं विना सर्वव्रतोद्यापनेषु सर्वतोभद्रमण्डलं कारयेत् ॥ तत्र कारिका—वह्निमात्रा पदा वेदीं कुर्याच्छुद्धमृदा बुधः ॥ तद्वेद्यां सर्वतोभद्र मण्डल विलिखेत्ततः ॥ विलिखेत्सर्वतोभद्र वेदिकायां सु सुंदरम् ॥ तत्रैव शिवव्रतेषु लिंगतो भद्र लिखेत् ॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ ॥ अथ मण्डलदेवताः ॥ तन्मध्ये ब्रह्माणम् । ब्रह्मजज्ञानगोतमोवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् । मध्ये, ब्रह्मावाहने विनियोग । ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवः ॥ सबुध्निया उपमा अस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदो भव । इत्येव प्रकारेण सर्वत्र देवतानामावाहनं ज्ञेयम् । ततःउदीचीमारभ्य वायवीपर्यंत सोमादयो वायव्ताष्टौ लोकपालाः स्थापनीयाः ॥१॥तत्र,आप्यायस्वराहूगणोगौतमःसोमोगायत्री । उत्तरे, सोमावाहने विनियोग । ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवावाजस्यसंगथे ॥ २ ॥ अभित्वादेवसवितरीशानोगायत्री । ईशान्यां,ईशानावाहने वि० । ॐ अभित्वादेवसवितरीशानं वार्याणाम् ॥ सदावन्भागमीमहे ॥ ३ ॥ इन्द्रवोमधुच्छंदाइन्द्रोगायत्री । पूर्वे, इन्द्रावा० । ॐ इन्द्रंवोविश्वतस्परिहवामहेजनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवलः ॥४॥अग्निंदूतकाण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्री । आग्नेय्यां, अग्न्यावा० । ॐ अग्निंदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसम् ॥ अस्ययज्ञस्यसुक्रतुम् ॥ ॥ ५ ॥ यमायसोमंवैवस्वतोयमोऽनुष्टुप् । दक्षिणे, यमावा० । ॐ यमायसोमंसुनुतयमायजुहुताहविः ॥यमंहयज्ञोगच्छत्यग्निदूतोऽअरं

कृतः ॥ ६ ॥ मोषुणोघोरःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री । नैर्ऋत्यां, नैर्ऋत्यावा० । ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत् ॥ पदीष्टतृष्णयासह
॥ ७ ॥ तत्त्वायामिशुनः शेपोवरुणस्त्रिष्टुप् । पश्चिमे, वरुणावा० । ॐ तत्त्वांयामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशांस्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेळमानो
वरुणेहबोध्युरुशंसमानआयुःप्रमोषीः ॥ ८ ॥ वायोशतंवामदेवोवायुरनुष्टुप् । वायव्यां, वाय्वावा० । ॐ वायोशतंहरीणांयुवस्वपोष्याणा-
म् ॥ उतवांतेसहस्त्रिणोरथआयांतुपाजसा ॥ ९ ॥ वायुसोमयोर्मध्ये, अष्टौ वसवः ॥ ज्मयाअत्रमैत्रावरुणोवसवस्त्रिष्टुप् । वायुसोमयोर्मध्ये,
वस्वावाहने वि० । ॐ ज्मयाअत्रवसवोरंतदेवाउरावंतरिक्षेमर्जयंतशुभ्राः ॥ अर्वाक्पथउरुज्रयःकृणुध्वंश्रोतादूतस्यजग्मुषोनोऽअस्य ॥ १० ॥
आरुद्रासःश्यावाश्वएकादशरुद्राजगती ॥ सोमेशानयोर्मध्ये, एकादशरुद्रावा० । ॐ आरुद्रासइंद्रवंतःसजोषसोहिरण्यरथाःसुवितायगंतन ॥
इयंवोअस्मत्प्रतिहर्यतेमतिस्तृष्णजेनदिवउत्साउदन्यवे ॥ ११ ॥ त्यांनुमत्स्यःसांमदोद्वादशादित्यागायत्री । ईशानेंद्रयोर्मध्ये, द्वादशादित्या-
वा० । ॐ त्यांनुक्षत्रियाँऽअवआदित्यान्याचिषामहे ॥ सुमृळीकाँऽअभिष्टये ॥ १२ ॥ अश्विनावर्तिराहूगणोगोतमोश्विनावुष्णिक् । इन्द्राग्न्योर्म-
ध्ये, अश्विनावा० । ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत् ॥ अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतम् ॥ १३ ॥ ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवागाय-
त्री । अग्नियमयोर्मध्ये, विश्वेदेवावा० । ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवासआगत ॥ दाश्वांसोदाशुषःसुतम् ॥ १४ ॥ अभित्यंदेवंगोतमोवा-
मदेवःसप्तयक्षाअष्टी । यमनिर्ऋत्योर्मध्ये, सप्तयक्षावा० ।ॐ अभित्यंदेवंसवितारमोण्योःकविक्रतुमर्चामिसत्यसवंरत्नधामभिप्रियंमतिंकविम् ॥

ऊर्ध्वायस्यामतिर्भाअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतुःकृपास्वः ॥ १५ ॥ आयगौःसार्पराज्ञीसर्पोगायत्री । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये,
सर्पोवा० । ॐ आयगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ १६ ॥ अप्सरसामेतशत्रऋष्यशृंगोगंधर्वाप्सरसोऽनुष्टुप् । वरुण
वाय्वोर्मध्ये, गंधर्वाप्सरसामावा० । ॐ अप्सरसांगन्धर्वाणांमृगाणांचरणेचरन् ॥ केशीकेतस्यविद्वान्सखास्वादुर्मदितमः ॥ १७ ॥ यदक्रंदो
वाय्योदीर्घतमास्कन्दस्त्रिष्टुप् । ब्रह्मसोमयोर्मध्ये, स्कन्दावा० । ॐयदक्रंदःप्रथमंजायमानउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबा
हूउपस्तुत्यंमहिजातंतेअर्वन् ॥ १८ ॥ तत्रैव, ऋषभमृषभोवैराजोनदीश्वरोनुष्टुप् । ब्रह्मसोमयोर्मध्ये, नदीश्वरावा० । ॐ ऋषभंमासमानानां
सपत्नानांविषासहिम् ॥ हंतारंशत्रूणांकृधिविराजंगोपतिंगवाम् ॥ १९ ॥ कद्रुद्रायघोरःकण्वःशूलोगायत्री । तत्रैव, शूलावा० । ॐ कद्रुद्रा
यप्रचेतसेमीढुष्टमायतव्यसे । वोचेमशंतमंहृदे ॥ २० ॥ कुमारंकुमारोमहाकालस्त्रिष्टुप् । तत्रैव, महाकालावा० । ॐ कुमारंमाता
युवतिःसमुब्धंगुहाबिभर्तिनददातिपित्रे ॥ अनीकमस्यनमिनज्जनासःपुरःपश्यंतिनिहितमरतौ ॥ २१ ॥ अदितिर्लौक्योबृहस्पतिर्दक्षोनुष्टु
प् । ब्रह्मेशानयोर्मध्ये, दक्षावा० । अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव ॥ तांदेवाअन्वजायतभद्राअमृतबंधवः ॥ २२ ॥ तामग्निवर्णांसोभरि
दुर्गात्रिष्टुप् । ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये, दुर्गावा० । ॐ तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतींवैरोचनींकर्मफलेषुजुष्टाम् ॥ दुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरसितरसेनमः
॥ २३ ॥ इदंविष्णुःकाण्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री । ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये, विष्णवावा० । ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपांसुरे

॥ २४ ॥ उदीरतांशंखःपितरःस्वधात्रिष्टुप् । ब्रह्माऽग्न्योर्मध्ये, स्वधावा० । ॐ उदीरतामवरउत्परासउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः ॥ असुं-
यईयुरवृकाऋतज्ञास्तेनोवंतुपितरोहवेषु ॥ २५ ॥ परंमृत्योसंकुसुकोमृत्युरोगा त्रिष्टुप् । ब्रह्मयमयोर्मध्ये, मृत्युरोगावा० । ॐ परंमृ-
त्योअनुपरेहिपंथांयस्तेस्वइतरोदेवयानात् । चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानःप्रजांरीरिषोमोतवीरान् ॥ २६ ॥ गणानांत्वाशौनकोगृत्समदो-
गणपतिर्जगती । ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये, गणपत्यावा० । ॐ गणानांत्वागणपतिंहवामहेकविंकवीनामुपमश्रवस्तमम् ॥ ज्येष्ठराजंब्रह्मणांब्रह्मणस्प
तआनःशृण्वन्नूतिभिःसीदसादनम् ॥ २७ ॥ शन्नोदेवीरांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री । ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये, अबावा० । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय
आपोभवंतुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवंतुनः ॥ २८ ॥ मरुतोयस्यराहूगणोगोतमोमरुतोगायत्री । ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये, मरुदावा० । ॐ मरुतोयस्यहिक्षये
पाथादिवोविमहसः ॥ ससुगोपातमोजनः ॥ २९ ॥ स्योनापृथिवीकाण्वोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री । ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः, पृथिव्या-
वा० । ॐ स्योनापृथिवीभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्मसप्रथः ॥ ३० ॥ इमंमेगंगेसिंधुक्षित्प्रयमेधोगंगादिनद्योजगती । तत्रैव, गंगा-
दिनद्यावा० । ॐ इमंमेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमंसचतापरुष्ण्या ॥ असिक्न्यामरुद्वृधेवितस्तयार्जीकीयेशृणुह्यासुषोमया ॥ ३१ ॥ धा
म्नोगौतमोवामदेवःसप्तसागराअनुष्टुप् । तत्रैव, सप्तसागरावा० । ॐ धाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणनोमुंच ॥ यदापोअघ्न्याइतिवरुणेतिशपामहेत
तोवरुणनोमुंच ॥ मयिवापोमोषधीर्हिंसीरतोविश्वव्यचाभूस्त्वेतोवरुणनोमुंच ॥ ३२ ॥ तदुपरि मेरुं नाममंत्रेण पूजयेत् । मेरवे नमः मे-

स्मावाहयामि ॥ ततो मण्डलाद्बहिः सोमादिसन्निधावुदक्क्रमेणाऽऽयुधान्यावाहयेत् । सोमसमीपे गदाम् । ईशानसमीपे त्रिशूलम् । इन्द्रस मीपे वज्रम् । अग्निसमीपे शक्तिम् । यमसमीपे दण्डम् । निर्ऋतिसमीपे खड्गम् । वरुणसमीपे पाशम् । वायुसमीपे अंकुशं (इत्यष्टौ आ युधानि ८)॥ तद्बाह्ये उत्तरे गौतमाय नमः गौतममावा० । ईशान्या भरद्वाजम् । पूर्वे विश्वामित्रम् । आग्नेय्यां कश्यपम् । दक्षिणे जमदग्निम् । नैर्ऋत्यां वसिष्ठम् । पश्चिमेऽत्रिम् । वायव्यामरुन्धतीम् । तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण-ऐन्द्रीं कौमारीं ब्राह्मीं वाराहीं चामुण्डां वैष्णवीं माहेश्वरीं वैना यकीं इत्यष्टौशक्तीः प्रतिष्ठाप्य प्रत्येक सह वाऽऽवाहयेत्पूजयेच्च॥ ॥इति मण्डलदेवताः॥ ॥अथ लक्षपूजनोद्यापनविधिरुच्यते॥ ॥अद्येत्या दिपूर्वोच्चरित एवगुणविशेषणविशिष्टायांपुण्यतिथौ०मयाकृतस्याऽमुकदेवताप्रीत्यर्थममुकलक्षसंख्याऽमुकपूजनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तदुद्या- पनं करिष्ये । तदगत्वेन स्वस्तिवाचनमाचार्यादिवरण च करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजन करिष्ये । ततो विघ्नहर्तारं सपूज्य स्वस्तिवाचनं कुर्यात् । तदेवम् । अस्य लक्षपूजनोद्यापनकर्मणः पुण्याह भवतो ब्रुवन्तु (इति यजमानेनोक्ते । विप्रवचन तु-) अस्तु पुण्याहम् । एव स्वस्ति भवतो ब्रुवन्तु, आयुष्मते स्वस्ति । ऋद्धिं भवंतो ब्रुवन्तु, कर्म ऋध्यताम् । श्रीरस्त्विति भवतो ब्रुवन्तु, अस्तु- श्रीः । लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेताम् । तत्र गोत्रनामोच्चारणपूर्वकममुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं यजमानः अमुकगोत्रममुकशर्माणं स्वशाखाध्यायिनं ब्रा ह्मणमस्मिन् लक्षपूजनोद्यापनाख्ये कर्मण्याचार्यं त्वामहं वृणे । आचार्यत्वेन वृतोऽस्मि यथाज्ञानं कर्म करिष्यामि ॥ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥ तथा त्व मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत । गन्धादिना आचार्यपूजनम् ॥ तथैव ब्रह्माणं वृणुयात् । यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गलोके पितामहः ॥ तथा त्व मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवतोऽभ्यर्थितो मया ॥

सुप्रसन्नैश्च कर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥आचार्यःआचम्य प्राणानायम्य अमुककर्म करिष्ये।कर्माधिकारार्थं आत्मनः शुद्ध्यर्थं च पुरुषसूक्तजपम
हंक०।पृथिवीत्यस्य मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः।कूर्मोदेवता।सुतलंछंदः। आसनोपवेशने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं०॥ पुरुष-
सूक्तजपांते कलशपूजनं सर्वतोभद्रे लिंगतोभद्रे वा ब्रह्मादीनावाहयेत् ॥ ॥ ततः मूर्तावग्न्युत्तारणम्॥ ॥ अस्यां मूर्तावघातादिदोषपरिहा-
रार्थमग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं प्राणप्रतिष्ठां च करिष्ये। अग्निः सप्तिमिति सूक्तमग्निपदरहितं सहितं च पठन्प्रतिमायां जलं पातयेत्॥ॐ
अग्निःसप्तिंवाजंभरंददात्यग्निर्वीरंश्रुत्यंकर्मनिष्ठाम्॥अग्नीरोदसीविचरत्समंजन्नग्निर्नारींवीरकुक्षिपुरंधिम् ॥ अग्नेरप्नसःसमिदस्तुभद्राग्निर्महीरोदसीआ
विवेश ॥ अग्निरेकंचोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणिदयतेपुरूणि ॥ अग्निर्हत्यंजरतःकर्णमावाग्निरद्भ्योनिरदहज्जरूथम् ॥ अग्निरत्रिंघर्मउरुष्यदंतरग्निर्नृमे
धंप्रजयासृजत्सम् ॥ अग्निर्दाद्द्रविणंवीरपेशाऽअग्निर्ऋषिंयःसहस्रासनोति ॥ अग्निर्दिविहव्यमाततानाग्नेर्धामानिविभृतापुरुत्रा ॥ अग्निमुक्थैर्ऋ
षयोविह्वयंतेग्निंनरोयामनिबाधितासः ॥ अग्निंवयोअंतरिक्षेपतंतोग्निःसहस्रापरियातिगोनाम् ॥ अग्निंविशईळतेमानुषीर्याअग्निंमनुषोनहुषोविजा
ताः ॥ अग्निर्गांधर्वींपथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृतआनिषत्ता ॥ अग्नयेब्रह्मऋभवस्ततक्षुरग्निंमहामवोचामासुवृक्तिम् ॥ अग्नेप्रावजरितारंयविष्ठाग्नेम
हिद्रविणमायजस्व ॥ इत्यग्न्युत्तारणम् ॥ ॥ ततः देवे प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा। अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः॥ऋ-
ग्यजुःसामाथर्वाणिच्छंदांसि। क्रियामयवपुः। प्राणाख्यादेवता॥ आंबीजम्। ह्रींशक्तिः। क्रौंकीलकम्॥ अस्यां मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने वि-
नि०।ॐ आंह्रींक्रौं अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं अः। क्रौंह्रींआंहंसःसोहं। अस्यां मूर्तौ प्राणा इह प्राणास्तिष्ठंतु॥ ॐ आंह्रीमित्यादि पुनः प-

ठित्वा अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः । पुनः आँर्हींक्रौमित्यादि पठित्वा अस्यां मूर्तौ सर्वेंद्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानीहागत्य स्वस्ति सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा ॥ ॐ असुनीतेपु० थानस्वस्ति ॥ गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पंचदशप्रणवावृत्तिं करिष्ये । प्रणवं पंचदशवारं जप्त्वा ॥ रक्तांभोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढाकराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंचबाणान् ॥ बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ व्रीह्यादिधान्यपवतिळै त्रिकूटं कृत्वा, तत्र महीद्यौरित्यादिना अव्रणं कलशं संस्थाप्य, कलशोपरि उपपात्रं संस्थाप्य, तस्योपरि त्र्यंबकमंत्रेण उमया सह त्र्यंबकं वा विष्णुमंत्रेण लक्ष्म्या सह विष्णुं सिद्धिबुद्धिसहितं गणेशं अथवा पत्न्या सहितं सूर्यं वा भवानीं तत्तन्मंत्रेणाऽऽवाह्य शिवस्य दक्षिणे लक्ष्म्या सह विष्णुमावाहयेत् । शिवस्य उत्तरे सावित्र्या सह ब्रह्माणम् । एवं विष्ण्वादीनामपि ॥ ॥ अथ षोडशोपचारपूजनम् ॥ ॥ सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् । पुरुषएवेदमित्यासनम् । एतावानस्येति पाद्यम् । त्रिपादूर्ध्वं इत्यर्घ्यम् । तस्माद्विराळित्याचमनीयम् । यत्पुरुषेणेति स्नानम् । तंयज्ञमिति वस्त्रम् । तस्माद्यज्ञादित्युपवीतम् । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचइति गंधम् । तस्मादश्वेति पुष्पम् । यत्पुरुषंव्यदधुरिति धूपः । ब्राह्मणोस्येति दीपम् । चंद्रमामनस इति नैवेद्यम् । नाभ्याआसीदिति प्रदक्षिणा । सप्तास्येति नमस्कारान् । यज्ञेनयज्ञमिति मंत्रपुष्पांजलिमिति षोडशोपचारपूजा ॥ ॥ षोडशोपचारैः पंचामृतैश्च वैदिकमंत्रैः पुराणोक्तमंत्रैः स्थापितदेवताः संपूज्य रात्रौ जागरणं कुर्यात् । प्रातः नित्यकृत्यं विधाय तस्य लक्षपूजनस्य वा आचरितव्रतस्य सांगतासिद्ध्यर्थं पूजनदशांशेनतिलयवव्रीहिभिः पायसादिभिर्वा होमं करिष्ये । होमस्तु वेदोक्तेन मूलमंत्रेण पौराणोक्तेन वा कुर्यात् ॥ ॥ अथाभिमुखम् ॥ ॥ आचम्य प्राणानायम्य तिथ्यादि संकीर्त्य, एवं गुणविशेषणविशिष्टायां पुण्यतिथौ

वमुककर्मांगतया विहितममुकहवनमहं करिष्ये। शुद्धमृदा ईशानीमारभ्य उदक्संस्थं चतुरंगुलोन्नतं चतुर्दिक्षु मिलितं कृत्वा द्विसप्तत्यं-गुलपरिधिकं फलितमष्टादशांगुलविस्तृतं होमानुसारेण तदधिकं वा, न तु ततो न्यूनं, मध्योन्नतं स्थंडिलं गोमयादिलिप्ते शुद्धे देशे कुर्यात्। तदंगं स्थंडिले उल्लेपनोल्लेखनाग्निप्रतिष्ठापनं करिष्ये। स्थंडिलं तद्गोमयेन प्रदक्षिणमुपलिप्य। दक्षिणेऽष्टावुदीच्यां द्वे प्रतीच्यां चतुः प्राच्याम-र्धमित्यंगुलानि त्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमामुदक्संस्थां प्रादेशमात्रामेकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया ऽसंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परमसंसृष्टा उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेशसंमितास्तिस्र इति षड्लेखा यज्ञियशकलमूलेन दक्षिणहस्तेनोल्लिख्य लेखासु तच्छकलमुदगग्रं निधाय स्थंडिलमद्भिरभ्युक्ष्य शकलमाग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतो भवेत् ॥ सुवासिन्या श्रोत्रिया-गारात्स्वगृहाद्वा तैजसादिपात्रे पिधानसहितं समृद्धं निर्धूममाहृतमग्निं स्थंडिलादाग्नेय्यां दिशि निधाय। जुष्टोदमूनाआत्रेयोवसुश्रुतोऽग्नि-स्त्रिष्टुप्। अग्न्यावाहनेविनि०। ॐ जुष्टोदमूनाअतिथिर्दुरोणइमंनोयज्ञमुपयाहिविद्वान् ॥ विश्वाअग्नेऽअभियुजोविहत्याशत्रूयतामाभराभोज-नानि ॥ एह्यग्नइत्यस्यमंत्रस्यराहूगणोगौतमऋषिः। अग्निर्देवता। त्रिष्टुप्छंदः। अग्न्यावाहने वि० ॐ एह्यग्नऽइहहोतानिषीदादब्धःसुपुरएता-भवानः ॥ अवतांत्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहेसौमनसायदेवान् - इत्यक्षतैरावाह्य आच्छादनं दूरीकृत्य ॥ समस्तव्याहृतीनांपरमेष्ठीप्र-जापतिःप्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनि०। ॐ भूर्भुवःस्वः। - इत्यात्माभिमुखं पाणिभ्यां षड्लेखासु तत्तत्कर्मविहितनामकममु-कनामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ चत्वारिश्रृंगागौतमोवामदेवोऽग्निस्त्रिष्टुप्। अग्निमूर्तिध्याने वि०। ॐ चत्वारिश्रृंगात्रयोअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्ता-

सोऽअस्य । त्रिधांबद्धोवृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्याँ३आविवेश ॥ सप्तहस्तश्चतुःशृंगःसप्तजिव्हो द्विशीर्षकः ॥ त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मित ॥ स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा ॥ बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्न स्रुचं स्रुवम् ॥ तोमर व्यजन वामैर्घृतपात्र च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवरूपो हुताशनः ॥ एषाहिदेवःप्रदिशोनुसर्वाः पूर्वोहिजातःसउगर्भेअतः ॥ सविजायमानः सजनिष्यमाण प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठतिविश्वतोमुख ॥ अग्ने वैश्वानर शांडिल्यगोत्र मेषध्वज प्राङ्मुखो मम सम्मुखो वरदो भव ॥ ततोऽन्वाधानम् ॥ देशकालौ सकीर्त्य । श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं क्रियमाणेऽमुकव्रतोद्यापनहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधान करिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहितेऽग्नौ जातवेदसमग्निमिध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येनाग्नीषोमौ चक्षुषी आज्येनात्र प्रधानदेवताः अमुकहोमद्रव्येण प्रत्येकममुकसख्याकाभिराहुतिभिर्ब्रह्माद्यावाहितदेवताश्च नाममन्त्रेण प्रत्येकमेकैकयाज्याहुत्या यक्ष्ये ॥ शेषेण स्विष्टकृतमग्निमिध्मसन्नहनेन रुद्रमयासमग्निं देवान् विष्णुमग्निं वायु सूर्यं प्रजापतिं चैताः प्रायश्चित्तदेवता आज्यद्रव्येण ज्ञाताज्ञातदोषनिबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं सकृन्मस्तश्चाज्येन विश्वान्देवान्सस्रावेणांग देवताः प्रधानदेवता सर्वाः सन्निहिताः सन्तु । एव सांगोपांगेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये ॥ व्याहृतीनांप्रजापति प्रजापतिरग्निर्वायु सूर्यःप्रजापतिर्देवता । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहत्यश्छंदांसि । अन्वाधानसमिद्धोमे वि० । ॐ भूर्भुवःस्व स्वाहा प्रजापतयइदनमम । तत इध्माबर्हिषोश्च सन्नहन कृत्वाऽग्निपरिसमूह्य । अग्ने षोडशभिर्दर्भैः प्राच्यादिषु परिस्तृतिः । परिस्तरण पर्युक्षणम् । पवित्रकरण पात्रासादनम् । अग्नेरीशानतश्चिरभसा परिषिच्योत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरुस्थालीप्रोक्षण्यौ, दर्वीस्रुवौ, प्रणीताऽऽज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी, एतानासादयामि । प्रोक्षणीपात्रमुत्तानं कृत्वा प्रादेशमात्रे द्वे पवित्रे निधाय, अग्निस्तत्पात्रपूरयित्वा गंधपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य, अगुष्ठोपक

निष्ठिकाभ्यामुदगग्रे पृथक् पवित्रे धृत्वाऽपस्त्रिरुत्पूय, पात्राण्युत्तानानि कृत्वा, इध्मं च विस्रस्य सर्वाणि पात्राणि त्रिः प्रोक्षयेत् । ता आपः किंचित्कमंडलौ क्षिपेदित्येके ॥ प्रणीतापात्रमग्नेःप्रत्यङ् निधाय, तत्र ते पवित्रे निधाय, उदकेन पूरयित्वा, गंधपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य, अस्मिन्कर्मणि ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति पाणिना पाणि स्पृष्ट्वा । ततो ब्रह्मा वृतोऽस्मीत्युक्त्वा । आचम्याग्नेर्दक्षिणतस्तिष्ठेत् । ततो ब्रह्मण इदमासनम् ॥ निरस्तःपरावसुःइदमहमर्वावसोःसदनेसीदामि इत्युक्त्वा ॥ ॐ ब्रह्मन्नपःप्रणेष्यामि । बृहस्पतिर्ब्रह्माब्रह्मसदनआशिष्यते बृहस्पतेयज्ञंगोपायसयज्ञंपाहिसयज्ञपतिंपाहिसमांपाहीति जपित्वा । ॐ भूर्भुवःस्वर्बृहस्पतिप्रसूतः । ॐ प्रणय । यदि ब्रह्मा न भवेत्तदा स्वयमेव तत्प्रणीतापात्रं नासिकासमीपं नीत्वोत्तरतोऽग्नेर्निधायान्यैर्दर्भैराच्छादयेत् । तत्पवित्रमाज्यपात्रे निधाय, ततो परिस्तरणाद्बहिरुत्तरतोऽङ्गारानपोह्य तदुपर्याज्यपात्रं निधाय, विलीनाज्यं निक्षिप्य, वामहस्ते दर्भाग्रद्वयं धृत्वा, एकेनैवोल्मुकेनावज्वल्य दर्भाग्रद्वयं निक्षिप्य उल्मुकेन प्रधानद्रव्यसहितं त्रिःपर्यग्निकृत्वा उल्मुकं निरस्य अंगारानग्नौ क्षिपेत् । अंगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा ॥ सवितुष्ट्वेति मंत्रस्यहिरण्यगर्भस्तूपकऋषिः । सवितादेवता । पुरउष्णिक्छंदः । आज्यस्योत्पवने विनियोगः । ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेणवसोःसूर्यस्यरश्मिभिः ॥ प्रागुत्पुनाति । सकृन्मंत्रेण द्विस्तूष्णीं ते पवित्रेऽद्भिः प्रोक्ष्याग्नौ प्रहरेत् । ॐ स्कंदायस्वाहा स्कंदायेदंनमम ॥ तत आत्मनोऽग्रतोभूमिं प्रोक्ष्य, तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुमुदगग्रां प्रसार्य । ततो बर्हिरास्तरणम् । तदुपर्याज्यपात्रं निधाय, कुशान्स्रुक्स्रुवौ च दक्षिणहस्ते वामहस्ते च गृहीत्वा, अग्नौ प्रताप्य, दर्वीं निधाय, स्रुवं वामहस्ते गृहीत्वा, स्रुवबलं दर्भाग्रेण त्रिः संमृज्य, तथैव स्रुवपृष्ठं दर्भाग्रेणात्माभिमुखं त्रिः संमृज्य, कुशमूलेन पृष्ठादारभ्य बिलपर्यंतं त्रिस्त्रिः संमृज्य, प्रोक्ष्य, प्रताप्य घृतादुत्तरतः स्थापयेत् । पुनस्तथैव

स्रुचं संमृज्य, प्रोक्ष्य, प्रताप्य स्रुवोत्तरतः स्थापयेत् । दर्भान्संस्पृश्याऽग्नौ प्रहरेत् । स्रुवेणाज्यं गृहीत्वा, होमद्रव्यमभिघार्य, उदगुद्वास्य, अग्न्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा, आज्यादक्षिणतो बर्हिषि सांतरमासाद्य, तन्मध्ये एकपात्रं निधाय अग्निमलंकृत्य ॥ विश्वानिनइत्यनयोर्वसुश्रुतोऽत्रिस्त्रिष्टुप् । द्वाभ्यामर्चने अथोपस्थाने वि० । ॐ विश्वानिनोदुर्गहाजातवेदः । ॐ सिंधुंननावादुरितातिपर्षि ॥ ॐ अग्नेअत्रिवन्नमसागृणानः । ॐ अस्माकंबोध्यविताऽतनूनाम् ॥ ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः ॥ ॐ अमर्त्यंमर्त्योजोहवीमि । ॐ जातवेदोयशोऽअस्मासुधेहि । ॐ प्रजाभिरग्नेअमृतत्वमश्याम् ॥ ॐ यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदउलोकमग्नेकृणवःस्योनम् । अश्विनंसपुत्रिणंवीरवन्तंगोमन्तंरयिंनशतेस्वस्ति ॥ इत्यष्टदिक्षु गंधपुष्पादिभिरग्निंसमभ्यर्च्य, आत्मानं पाककृत्य एकयोपस्थाय, ततः पाणिनेध्ममादाय, मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरभिघार्य ॥ अयंतइध्मेत्यस्यमंत्रस्यवामदेवऋषिः । जातवेदोऽग्निर्देवता । त्रिष्टुप् छंदः । इध्महवने विनियोगः । ॐ अयंतइध्मआत्माजातवेदस्तेनेध्यस्ववर्द्धस्वचेद्धवर्द्धयचास्मान्प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येनसमेधयस्वाहा । अग्नये जातवेदसइदंनमम । स्रुवेणाज्यंगृहीत्वा वायवीदिशमारभ्याऽऽग्नेयीदिक्पर्यंतमाज्यधारां जुहुयात् प्रजापतयइति मनसा ध्यायन् स्वाहेति मुखेनवदञ्जुहुयात् तथैव निर्ऋतिदिशमारभ्यैशानदिक्पर्यंतंजुहुयात् उभयत्र प्रजापतय इदं न ममेति त्यागः उत्तरे, अग्नयेस्वाहा अग्नयइ० दक्षिणे, सोमाय० सोमायेदं० अथ प्रधानहोमं कुर्यात् ॥ तत ब्रह्मादिदेवतानाममंत्रेणैकैकयाज्याहुत्या जुहुयात् ॥ ब्रह्मणेस्वा० सोमाय० ईशानायस्वा० इंद्रायस्वा० अग्नयेस्वा० यमायस्वा० निर्ऋतयेस्वा० वरुणायस्वा० वायवेस्वा० अष्टौवसुभ्य स्वा० एकादशरुद्रेभ्यः ० द्वादशादित्येभ्यःस्वा० अश्विभ्यां० विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वा० सप्तयक्षेभ्यःस्वा० भूतनागेभ्यः

स्वा० गंधर्वाप्सरोभ्यःस्वा० स्कंदायस्वा० नंदीश्वरायस्वा० शूलायस्वा० महाकालायस्वा० दक्षादिसप्तगणेभ्यःस्वा० दुर्गायैस्वा० विष्णवेस्वा० स्वधायैस्वा० मृत्युरोगेभ्यःस्वा० गणपतयेस्वा० अद्भ्यस्वा० मरुद्भ्यस्वा० पृथिव्यैस्वा० गंगादिनदीभ्यःस्वा० सप्तसागरेभ्यःस्वा० मेरवेस्वा० गदायैस्वा० त्रिशूलायस्वा० वज्रायस्वा० शक्तयेस्वा० दंडायस्वा० खड्गायस्वा० पाशायस्वा० अंकुशायस्वा० गौतमायस्वा० भरद्वाजायस्वा० विश्वामित्रायस्वा० कश्यपायस्वा० जमदग्नयेस्वा० वसिष्ठायस्वा० अत्रयेस्वा० अरुंधत्यैस्वा० ऐंद्र्यैस्वा० कौमार्यैस्वा० ब्राह्म्यैस्वा० वाराह्यैस्वा० चामुंडायैस्वा० वैष्णव्यैस्वाहा माहेश्वर्यै० वैनायक्यैस्वा० ॥ अथ स्विष्टकृद्धोमः ॥ यदस्यकर्मणोइत्यस्यमंत्रस्यहिरण्यगर्भऋपिः । अग्निःस्विष्टकृद्देवता । अतिधृतिच्छंदः । स्विष्टकृद्धोमे वि० । ॐ यदस्यकर्मणोत्यरीरिचंयद्वान्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्सर्वंस्विष्टंसुहुतंकरोतुमे॥अग्नयेस्विष्टकृतेसुहुतहुतेसर्वप्रायश्चित्ताहुतीनांकामानांसमर्द्धयित्रेसर्वान्नः कामान्समर्धयस्वा० । अग्नयेस्विष्टकृतइदं० ॥ त्रिसंधानेन रुद्रम् ॥ ॐ रुद्राय पशुपतये स्वा० । पशुपतयेरुद्रायेदंनमम ॥ अप उपस्पृश्य । स्रुवेण प्रायश्चित्ताज्याहुतीः सप्त जुहुयात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ अयाश्चेत्यस्यमंत्रस्यविमदऋपिः । अयाव्यग्निर्देवता । पंक्तिच्छंदः सर्वप्रायश्चित्ताज्यहोमेवि० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयासावयसाकृतोयासन्हव्यमूहिषेयानोधेहिभेषजंस्वा० । अयसेग्नयइ० ॥ अतोदेवाइतिद्वयोःकाण्वोमेधातिथिर्ऋपिः । आद्यायादेवादेवताःद्वितीयायाविष्णुर्देवता । गायत्रीछंदः । प्रायश्चित्ताज्याहुतिहोमे वि० ॐ अतोदेवाअवंतुनोयतोविष्णुर्विचक्रमे ॥ पृथिव्याःसप्तधामभिःस्वा० देवेभ्यइदं० । इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपांसुरे स्वा०

विष्णवइद॰ ॥ व्यस्तसमस्तव्याहृतीनाविश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजभृगवऋषयः । अग्निवायुसूर्यप्रजापतयोदेवताः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहत्यश्छ
दांसि । सर्वप्रायश्चित्ताज्यहोमेवि॰ । ॐ भूःस्वा॰ अग्नयइ॰ । भुवःस्वा॰ वायवइ॰ । ॐ स्वःस्वा॰ सूर्यायेद॰ । ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा प्रजापतयइ॰ ।
ततोब्रह्माकर्तारं परीत्याग्नेर्वायव्यदेशे तिष्ठन्नेता एव सप्ताहुतीर्जुहुयात् । त्यागयजमानोऽत्र कुर्यात् ॥ अनाज्ञातमितिमन्त्रद्वयस्यहिरण्यगर्भऋषिः ।
अग्निर्देवता । त्रिष्टुप्छदः । ज्ञाताज्ञातदोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्ताज्यहोमे वि॰ । ॐ अनाज्ञातयदाज्ञातंयज्ञस्यक्रियतेमिथु । अग्नेतदस्यकल्प
यत्वꣳहिवेत्थयथातथꣳस्वाहा । अग्नयइ॰ ॥ ॐ पुरुषसमितोयज्ञोयज्ञःपुरुषसमितः ॥ अग्नेतदस्यकल्पयत्वꣳहिवेत्थयथातथꣳस्वा॰ ।
अग्नयइ॰ ॥ यत्पाकत्रेत्यस्यमन्त्रस्यआप्तस्रितऋषिः । अग्निर्देवता । त्रिष्टुप्छद । न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्ताज्यहोमे वि॰ । ॐ य
त्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्यमन्वतेमर्तास ॥ अग्निष्टद्धोताक्रतुविद्विजानन्यजिष्ठोदेवाꣳ ऋतुशोयजातिःस्वाहा । अग्नयइ॰ । यद्वोदेवाइत्य
स्यअभितपाऋषिः । मरुतोदेवताः ॥ त्रिष्टुप्छदः । मन्त्रतन्त्रविपर्यासादिनिमित्तकप्रायश्चित्ताज्यहोमे वि॰ । ॐ यद्वोदेवाअतिपातयानिवाचाच
प्रयुतीदेवहेळनम् ॥ अरायोअस्माꣳअभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मिन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा । मरुद्भ्यइद॰ ॥ पूजास्विष्ट नवाहुत्या बलिं पूर्णाहुतिं
चरेत् ॥ श्रेयः सपाय दान च अभिषेको विसर्जनम् ॥ पूर्णाहुतिमुत्तमाञ्जुहोति । सर्ववैपूर्णाहुति । सर्वमेवाप्नोति । अथोइयवैपूर्णाहुति ।
अस्यामेवप्रतितिष्ठति । इदममयेवैश्वानरायशतक्रतवेसप्तवतेअश्वश्वनमम ॥ वसोर्धाराकुर्यात् ॥ धामंतेवामदेवआपोजगती । पूर्णाहुतिहोमे
वि॰ । ॐ धामतेविश्वभुवनमधिश्रितमंत समुद्रेहृद्य १ तरायुषि ॥ अपामनीकेसमिथेयआभृतस्तमश्यामम्मधुमततऊर्मिस्वाहा ॥ अद्भ्यइ

दंनममेति त्यक्त्वा विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहेति संस्रावं हुत्वा बर्हिषि पूर्णपात्रं निनयेत् । ॐ पूर्णमसिपूर्णमेभूयाः सुपूर्णमसिसुपूर्णमेभूयाः॥ सदंसिसन्मेभूयाः । सर्वमसिसर्वमेभूयाः । अक्षितिरसिमामेक्षेष्ठाः इति जपित्वा कुशाग्रैः प्रागादिपंचदिक्षु मंत्रैर्जलं यथालिंगंसिञ्चेत् । ते च मन्त्राः । ॐ प्राच्यांदिशिदेवाऋत्विजोमार्जयंताम् ॥ दक्षिणस्यांदिशिमासाःपितरोमार्जयंताम् ॥ अपउपस्पृश्य । प्रतीच्यांदिशिग्रहाःपशवोमार्जयंताम् । उदीच्यांदिश्यापओषधयोवनस्पतयोमार्जयंताम् । ऊर्ध्वायांदिशियज्ञःसंवत्सरःप्रजापतिर्मार्जयताम् । इत्येकश्रुत्यापठन्प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः स्वशिरसि मार्जयेत् । ते च मंत्राः—आपोअस्मानित्यस्यदेवश्रवाआपस्त्रिष्टुप् । मार्जनेवि० । ॐ आपोअस्मान्मातरः शुंधयंतुघृतेननोघृतप्वः पुनंतु ॥ विश्वंहिरिप्रंप्रवहंतिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि॥इदमापः प्रवहतयत्किंचदुरितंमयि॥यद्वाहमभिदुद्रोहयद्वाशेपउतानृतम्॥सुमित्र्यानआपओषधयःसंतु॥दुर्मित्र्यास्तस्मैसंतु॥योस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मस्तंहन्मि इतिनिर्ऋतिदेशे कुशाग्रैरपःसिंचेत् ॥ ॐ माहंप्रजापरासिचंयानःसयावरीस्थन ॥ समुद्रेवोनिनयानिस्वंपाथोअपीथ ॥ शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ ततः कर्ताआग्नेय्याभिमुखस्तिष्ठन्नभिमुपतिष्ठेत् । तद्यथा । ॐ अग्नेनयसुपथारायोअस्मान्विश्वानिदेववयुनानिविद्वान् ॥ युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमउक्तिविधेम ॥ बाधानोअस्यवचसोयविष्ठमंहिष्ठस्यप्रभृतस्यस्वधावः ॥ पीयतिस्त्वोअनुत्वोगृणातिवंदारुस्तेतनुवंवंदेअग्ने ॥ इति नमस्कारः ॐ च मेस्वरश्चमेयज्ञोपचतेनमश्च ॥ यत्तेन्यूनंतस्मैतउपयत्तेतिरिक्तंतस्मैतेनमः ॥ अग्नयेनमः ॐ स्वस्ति । श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् ॥ आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ मानस्तोकेतिमंत्रस्यकुत्सऋषिः । रुद्रोदेवता । जगतीछंदः । विभूतिग्रहणे वि०।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानआयोमानोगोषुमानोअश्वेषुरीरिषः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामितोवधीर्हविष्मंतस्सदमित्वाहवामहे ॥ त्र्यायुषजमदग्नेरिति ललाटे । कश्यपस्यत्र्यायुषमिति कंठे । अगस्त्यस्यत्र्यायुषमिति नाभौ । यद्देवानांत्र्यायुषमिति दक्षिणस्कन्धे । तन्मेअस्तुत्र्यायुषमिति वामस्कन्धे । सर्वमस्तुशतायुषमिति शिरसि । इति विभूतिं धृत्वा परिस्तरणान्युत्तरे विसृजेत् । परिसमूह्य २ । पर्युक्ष्य २ । पुष्पादिभिरलंकृत्य नैवेद्यं तांबूलं च निवेद्य । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यून संपूर्णतां याति सद्यो वंदेतमच्युतम् ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः-इति विष्णुं नत्वा स्मृत्वा चाऽनेन कर्मणा श्रीपरमेश्वर प्रीयताम् ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ होमं संपाद्य, उत्तरपूजां कृत्वा, आचार्यं संपूज्य गां दद्यात् । यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी ॥ विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥ ततः ब्राह्मणभोजनं संकल्प्य । यांतु देवगणाः सर्वे पूजामादाय पार्थिवीम् ॥ इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च-इति स्थापितदेवता विसृज्य पीठमाचार्याय दद्यात् ॥ इत्यग्निमुखम् ॥ ॥ अथ मुद्रालक्षणम् ॥ ॥ हेमाद्रौ-संमुखीकृत्य हस्तौ द्वौ किंचित्संकुचितांगुली ॥ मुकुली तु समाख्याता पंकजप्रसवेव सा ॥ पूर्वोक्ता मुकुली या च प्रादस्यो निःसृतांगुलिः ॥ व्याकोशमुद्रा मुकुला पद्ममुद्रा प्रदर्शयेत् ॥ अंगुष्ठौ कुंचितांतौ तु स्वकीयांगुलिवेष्टितौ ॥ ऊर्ध्ववाभिमुखौ हस्तौ योजयित्वा तु निष्ठुरा ॥ तर्जन्यौ कुंचिते कृत्वा तथैव च कनीयसी ॥ अधोमुखी दृष्टनखा स्थिता मध्ये करस्य तु ॥ चतस्रोऽस्थिताः स्पृष्टे अंगुष्ठावेकतः कुरु ॥ नाल व्यवस्थितौ द्वौ तु व्योममुद्रा प्रकीर्तिता ॥ ॥ त-

त्रांतरे सर्वदेवतापूजनसाधारणेन षण्मुद्रा उच्यंते– । देवताननसंतुष्टा सर्वदा संमुखी भवेत् ॥ अंगुष्ठो निक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहनी
मता ॥ संग्रंथ्य निक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वासनसंज्ञिका ॥ अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनीमुद्रिका मता ॥ उच्छ्रितावुच्छ्रितौ कुर्या-
त्संमुखीकरणी भवेत् ॥ प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथःश्लिष्टौ तु संमुखौ ॥ कुर्यात्स्वहृदयं सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका ॥ इत्येवं स-
र्वदेवानां पूजने षट् प्रदर्शयेत् ॥ शिवपूजने लिंगमुद्रा ॥ उच्छ्रितं दक्षिणांगुष्ठं वामांगुष्ठेन बंधयेत् ॥ वामांगुली दक्षिणाभिरंगु-
लीभिश्च वेष्टयेत् ॥ लिंगमुद्रेति विख्याता शिवसान्निध्यकारिणी ॥ श्रीकामः शीर्ष्णि कुर्वीत राज्यकामस्तु नेत्रयोः ॥ मुखे त्वन्नादिकामस्तु
ग्रीवायां रोगशांतिकृत् ॥ हृदये सर्वकामी च ज्ञानार्थी नाभिमंडले ॥ राज्यकामस्तु गुह्ये च राष्ट्रकामस्तु पादयोः ॥ रामपूजने सप्तदशमुद्राः ॥ तथा-
च रामार्चनचंद्रिकायामगस्त्यः–आवाहनी स्थापनी च सन्निधीकरणी तथा ॥ सुसंनिरोधिनी मुद्रा संमुखीकरणी तथा ॥ संकलीकरणी चैव म-
हामुद्रा तथैव च ॥ शंखचक्रगदापद्मधेनुकौस्तुभगारुडाः ॥ श्रीवत्सवनमाले च योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ एताभिः सप्तदशभिर्मुद्राभिस्तु वि
चक्षणः ॥ यो राममर्चयेन्नित्यं मोदयेत्स सुरेश्वरम् ॥ द्रावयेदपि विप्रेंद्र ततः प्रार्थितमाप्नुयात् ॥ मूलाधाराद्द्वादशांतमानीतः कुसुमांजलिः ॥
त्रिस्थानगततेजोभिर्विनीतः प्रतिमादिषु ॥ आवाहनी च मुद्रा स्याद्देवार्चनविधौ मुने ॥ एषैवाधोमुखी मुद्रा स्थापने शस्यते पुनः ॥ उन्न-
तांगुष्ठयोगेन मुष्टीकृतकरद्वया ॥ सन्निधीकरणी मुद्रा देवार्चनविधौ मुने ॥ अंगुष्ठगर्भिणी सैव मुद्रा स्यात्सन्निरोधिनी ॥ उत्तानमुष्टियुगु-
ला संमुखीकरणी मता ॥ अंगैरेवांगविन्यासः संकलीकरणी भवेत् ॥ अन्योन्यांगुष्ठसंलग्नविस्तारितकरद्वयम् ॥ महामुद्रेयमाख्याता न्यू-
नाधिकसमापनी ॥ कनिष्ठाऽनामिकामध्यांतस्थांगुष्ठात्तदग्रतः ॥ गोपितांगुष्ठमूलेन सन्निधा मुकुलीकृता ॥ करद्वयेन मुद्रा स्याच्छंखाख्येयं सुरा-

र्चने ॥ अन्योन्याभिमुखस्पर्शव्यत्ययेन तु वेष्टयेत् ॥ अंगुलीभिः प्रयत्नेन मण्डलीकरणं मुने ॥ चक्रमुद्रेयमाख्याता महामुद्रा ततःपरम् ॥
अन्योन्याभिमुखाश्लिष्टा ततः कौस्तुभसंज्ञका ॥ कनिष्ठेऽन्यो पर्संलग्नेऽभिमुखं हि परस्परम् ॥ वामस्य तर्जनीमध्ये मध्यानामिकयोरपि ॥
वामानामिकसंसृष्टा तर्जनीमध्यशोभिता ॥ पर्यायेण नतांगुष्ठद्वयी कौस्तुभलक्षणा ॥ कनिष्ठाऽन्योन्यसंलग्नविपरीत तु योजिता ॥ अधस्ता
त्स्थापितांगुष्ठा मुद्रा गरुडसंज्ञिता ॥ तर्जन्यंगुष्ठमध्यस्था मध्यमाऽनामिकाद्वयी ॥ कनिष्ठाऽनामिकामध्यतर्जन्यग्रकरद्वयी ॥ मुद्रा श्रीवत्समुद्रेय
वनमाला भवेत्ततः ॥ कनिष्ठानामिकामध्या मुष्टिस्थततर्जनी ॥ परिभ्रांतशिरस्युच्चैस्तर्जनीभ्यां दिवौकसः ॥ योनिमुद्रा समाख्याता
द्योतत्करद्वयाश्रिता ॥ तर्जन्याकृष्टमध्यांतो स्थितानामिकयुग्मिका ॥ मध्यस्थलस्थितांगुष्ठा सेय शस्ता मुनेऽर्चने ॥ इति मुद्रालक्षणम् ॥
॥ अथोपचारः ॥ ॥ पदार्थादर्शे ज्ञानमालायां—अष्टत्रिंशत्षोडश वा दश पचोपचारकाः ॥ तान्विभज्य प्रवक्ष्यामि के ते तैश्च कृतैश्च किम् ॥
अर्घ्यं पाद्यमाचमन मधुपर्कमुपस्पृशम् ॥ स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचम चोपवर्तिकम् ॥ पुनराचमभूषे च दर्पणालोकन तत ॥ गंधपुष्पे
धूपदीपौ नैवेद्य च तत क्रमात् ॥ पानीयं तोयमाचामं हस्तवासस्ततःपरम् ॥ हस्तवासः करोद्वर्तनम् । तांबूलमनुलेप च पुष्पदान
ततः पुनः ॥ गीत वाद्य तथा नृत्य स्तुति चैव प्रदक्षिणाः ॥ पुष्पांजलिनमस्कारावष्टत्रिंशत्समीरिताः ॥ इत्यष्टत्रिंशदुपचाराः ॥ अन्यच्च—आ
सनं स्वागत चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम् ॥ मधुपर्कासनस्नानवसनाभरणानि च ॥ सुगंधः सुमनो धूपो दीपमन्नेन भोजनम् ॥ माल्यानु-
लेपने चैव नमस्कारविसर्जने ॥ इति षोडशउपचारा ॥ ॥ अर्घ्यं पाद्य चाऽऽचमन स्नान वस्त्रनिवेदनम् ॥ गंधादयो नैवेद्यांता उपचारा
दश क्रमात् ॥ शारदातिलके षोडशोपचारा उक्ता । ते च—। आसनस्नानवस्त्राणि भूषण च विवर्जयेत् ॥ रात्रौ देवार्चने तैश्च पदार्थैर्द्रादशै

॥ गंधतैलमथो दद्याद्देवस्याप्रतिमं ततः ॥ दूर्वा च विष्णुक्रांता च श्यामाकं पद्ममेव
क्रमात् ॥ पूजनं कपिलेनोक्तं तत्सर्वं च विसर्जयेत् ॥ गंधतैलमथो दद्याद्देवस्याप्रतिमं ततः ॥ दूर्वा च विष्णुक्रांता च श्यामाकं पद्ममेव
च ॥ पाद्यांगानि च चत्वारि कथितानि समासतः ॥ कर्पूरमगरुं पुष्पं द्रव्याण्याचमनीयकम् ॥ सिद्धार्थमक्षतं चैव दूर्वा च तिलमेव च ॥
यवगंधफलं पुष्पं अष्टांगं त्वर्घ्यमुच्यते ॥ स्नाने वस्त्रे तथा भक्षे दद्यादाचमनीयकम् ॥ ॥ उद्वर्तनमपि तत्रैव—रजनी सहदेवी च शिरीषं
लक्ष्मणापि च ॥ सहा भद्रा कुशाग्राणि उद्वर्तनमिहोच्यते ॥ ॥ मंत्रतंत्रप्रकाशे—अक्षतागंधपुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम् ॥ ॥ तत्रैव ।
द्रव्याभावे प्रदातव्याः क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः ॥ तत्रैवोक्तमगस्त्यसंहितायां—तथाऽऽचमनपात्रेऽपि दद्याज्जातीफलं मुने ॥ लवंगमपि
कंकोलं शस्तमाचमनीयकम् ॥ ॥ द्रव्याभावे तंत्रांतरे उक्तम् । तण्डुलान् प्रक्षिपेत्तेषु द्रव्याभावे तु तत्स्मरन् ॥ ॥ प्रयोगपारिजाते
व्यासः—प्रतिमापटयंत्राणां नित्यं स्नानं न कारयेत् ॥ कारयेत्पर्वदिवसे यदा वा मलधारणम् ॥ ॥ ज्ञानमालायाम्—नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं
न तुलस्या गणाधिपम् ॥ न दूर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैश्च भास्करम् ॥ उन्मत्तमर्कपुष्पं च विष्णोर्वर्ज्यं सदा बुधैः ॥ अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ता
—इति पदार्थादर्शे उक्तत्वाद्यवानामेवायं प्रतिषेधो न तंडुलानाम् ॥ तंत्रांतरे—महाभिषेकं सर्वत्र शंखेनैव प्रकल्पयेत् ॥ सर्वत्रैव प्रशस्तोऽब्जः
शिवसूर्यार्चनं विना ॥ ॥ अथ व्रतोद्यापनानुक्तौ पृथ्वीचंद्रोदये नंदिपुराणे—कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम् ॥ उद्यापनं विना
यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत् ॥ यत्र चोद्यापनं नोक्तं व्रतानुगुणतश्चरेत् ॥ वित्तानुसारतो दद्यादनुक्तोद्यापने व्रते ॥ गां चैव कांचनं दद्याद्व्रत-
स्य परिपूर्तये ॥ इति समाप्तावुद्यापनमनुक्तोद्यापनविषयम् ॥ उक्तोद्यापने तु—आदौ मध्ये तथाऽप्यंते व्रतस्योद्यापनं भवेत् ॥ तद्व्रतोद्यापनं

१ धवलसर्षपम् । २ रजनी हरिद्रा । ३ उन्मत्तं धुत्तूरपुष्पम् । ४ अब्जः शंखः ।

कार्यं संपूर्णफलमाप्नुयात् ॥ ॥ अथ व्रतभंगे संपूर्णताया विधिः ॥ ॥ हेमाद्रौ भविष्ये—युधिष्ठिर उवाच । संपूर्णतामनुष्ठानं व्रतानां नंदनंदन ॥ कुरु प्रसादं गुह्यार्थमेतन्मे वक्तुमर्हसि ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ साधु साधु महाबाहो कुरुराज युधिष्ठिर ॥ रहस्यानां रहस्यं ते कथयामि व्रते तव ॥ संपूर्णता कृता यत्र तत्र सम्यक् फलप्रदम् ॥ यच्चीर्णं नरनारीभिर्भवेत्संपूर्णकारकम् ॥ अवश्यं तच्च कर्तव्यं संपूर्णफलकांक्षिभिः ॥ किंचिद्भ्रमप्रमादेन यद्व्रतं व्रतिना स्थितम् ॥ तत्संपूर्णं भवेत्सर्वं व्रतेनानेन पांडव ॥ उपद्रवैर्बहुविधैर्महामोहाच्च पांडव ॥ यद्भग्नं किंचिदेव स्याद्व्रतं विघ्नविनाशनम् ॥ तत्संपूर्णं भवेत्पार्थ सत्यं सत्यं न संशयः ॥ कांचनं रूप्यकं रूपं शिल्पिना तु घटापयेत् ॥ ममव्रतस्य यो देवस्तस्य रूपं विनिर्दिशेत् ॥ स्त्रीपुंसोश्च व्रतं पार्थ प्रारब्धं यद्व्रतं किल ॥ न च निष्पादितं किंचिद्दैवात्सर्वं तथा स्थितम् ॥ द्विभुजं पंकजारूढं सौम्यं प्रहसिताननम् ॥ निष्पादितं शिल्पिना च तस्मिन्नेव दिने पुनः ॥ तन्माने तु मनः प्राप्ते ब्राह्मणैर्विधिना गृहे ॥ स्नापयेत्पयसा दध्ना घृतक्षौद्ररसांबुभिः ॥ वस्त्रचंदनपुष्पैश्च पूजां कुर्यात्समाहितः ॥ तोयपूर्णस्य कुंभस्य मुखे विन्यस्य देवताम् ॥ धूपदीपाक्षतैर्वस्त्रैर्नैवेद्यैर्बहुप्रकारकैः ॥ अर्घ्यं प्रदद्यात्तं नाम्ना मंत्रेणानेन पांडव ॥ उपासनस्य दानस्य प्रायश्चित्तं कृतं जले ॥ शरणं वः प्रपन्नाः स्मः कुरुष्वाद्य दयां मम ॥ व्रतच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं व्रतकर्मणि ॥ तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन संपूर्णं जायतां मम ॥ प्रसन्नो भवमीतस्य मित्रपर्यव्रतस्य च ॥ कुरु प्रसादं संपूर्णव्रतं संजायतां मम ॥ पूर्वदक्षिणपश्चात्तु उत्तरे च बलिं हरेत् ॥ उपर्यधस्तात्सर्वेभ्यो दिक्पालेभ्यो नमो नमः ॥ इदमर्घ्यमिदं पाद्यं तेभ्यस्तेभ्यो नमो नमः ॥ पादौ च जानुनी चैव कटी शीर्षकवक्षसी ॥ कुक्षिं तु हृदयं पृष्ठं बाहू चक्षुश्च शिरोस्थानं ॥ पूजयित्वा तु देवस्य ततः पश्चात् समापयेत् ॥ पूजितस्त्वं यथा शक्त्या नमस्तेऽस्तु सुरोत्तम ॥ देविकामु-

ष्मिकीं देव कार्यसिद्धिं दिशस्व मे ॥ एवं क्षमापयित्वा तु प्रणमेच्च प्रयत्नतः ॥ तन्मूर्तिं च द्विजातिभ्यो विधिवत्प्रतिपादयेत् ॥ स्थित्वा पूर्वमुखो विप्रो गृह्णीयाद्दर्भपाणिना ॥ विप्रहस्ते प्रयच्छेच्च दाता चैवोत्तरामुखः ॥ मंत्रेणानेन कौंतेय सोपवासः प्रयत्नतः ॥ इदं व्रतं मया खंडं कृतमासीत्पुरा द्विज ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु तव मूर्तिप्रदानतः ॥ ब्राह्मणोऽपि प्रयच्छेत मंत्रेणानेन तद्व्रतम् ॥ वाक्यं पूर्णमतः पूजा व्रतेनानेन ते पुरा ॥ संपूर्णं स्यात्प्रदानेन तव पूर्णा मनोरथाः ॥ ब्राह्मणा यत्प्रभाषंते तन्मन्यंते दिवौकसः ॥ सर्वदेवमया विप्रा न तद्वचनमन्यथा ॥ जलधिः क्षारतां नीतः पावकः सर्वभक्षताम् ॥ सहस्रनेत्रः शक्रोऽपि कृतो विप्रैर्महात्मभिः ॥ ब्राह्मणानां तु वचनाद्ब्रह्महत्या विनश्यति ॥ अश्वमेधफलं साग्रं लभते नात्र संशयः ॥ व्यासवाल्मीकिवचनात्पराशरवसिष्ठयोः ॥ गर्गगोतमधौम्यात्रिवामदेवपुलस्त्ययोः ॥ वचनान्नारदादीनां पूर्णं भवतु मे व्रतम् ॥ एवं विधिविधानेन गृहीत्वा ब्राह्मणो व्रजेत् ॥ दाता तत्प्रेषयेत्सर्वं ब्राह्मणस्य गृहं स्वयम् ॥ ततः पंच महायज्ञान् कृत्वा वै भोजनादिकम् ॥ एवं यः कुरुते भक्त्या व्रतमेतन्नरोत्तम ॥ तस्य संपूर्णतां याति तद्व्रतं यत्पुरा कृतम् ॥ खंडं संपूर्णतां याति प्रसन्ने व्रतदैवते ॥ भग्नानि यानि मदमोहवशाद्गृहीत्वा जन्मांतरेष्वपि नरेण सवत्सरेण ॥ संपूर्णपूजनपरस्य पुरो भवंति सर्वत्र तानि परिपूर्णफलप्रदानि ॥ ॥ अथ सर्वव्रतेषु सामान्यतः पूजाविधिः ॥ ॥ सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् । आगच्छागच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते ॥ क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥ पुरुषएवेदमित्यासनम् । नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम् ॥ आसनं देव देवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ एतावानस्येति पाद्यम् । गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम् ॥ तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ त्रिपादूर्ध्व इत्यर्घ्यम् ॥ नमस्ते देव देवेश नमस्ते धरणीधर ॥ नमस्ते कमलाकांत गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ तस्माद्विराळित्याच-

मनीयम् । कर्पूरवासितं तोयं मंदाकिन्याः समाहृतम् ॥ आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥ यत्पुरुषेणेति स्नानम् । गंगा च
यमुना चैव नर्मदा च सरस्वती । कृष्णा च गौतमी वेणी क्षिप्रा सिंधुस्तथैव च ॥ तापी पयोष्णी रेवा च ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पंचामृतस्नानं पंचमंत्रैः पृथक् महाभिषेकस्नानं च कुर्यात् ॥ तयज्ञमिति वस्त्रम् । सर्वभूषादि-
के सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयोपपादितं तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ वस्त्रं च सोमदेवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ॥ मयोपपादि
तं तुभ्यं वाससी० ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसमिति यज्ञोपवीतम् । दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात् ॥ ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण पु
रुषोत्तम ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋच इति गंधम् । श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ तस्मादश्वेति पुष्पम् । माल्यादीनि सुगंधीनि
मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयाऽऽहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ यत्पुरुषंव्यदधुरिति धूपम् । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गन्ध उ
त्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृ० ॥ ब्राह्मणोस्येति दीपम् । साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलो-
क्यतिमिरापह ॥ चन्द्रमामनसइति नैवेद्यम् । अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
नाभ्याआसी० पूगीफलमिति तांबूलम् ॥ सप्तास्या० हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ।
इति दक्षिणा ॥ इदंफलमिति फलम् ॥ चंद्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् । इति नी
राजनम् ॥ यज्ञेनयज्ञमिति मंत्रपुष्पांजलिम् ॥ नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते भ्रमरप्रिय ॥ नमस्ते कमलाकांत वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ यानि

कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदे पदे - इति प्रदक्षिणाः ॥ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ॥
साष्टांगोऽयं प्रणामोऽस्तु प्रणयेन मया कृतः - इति नमस्कारम् ॥ इति सामान्यपूजाविधिः ॥ इति श्रीव्रतराजे परिभाषा समाप्ता ॥ ॥

॥ अथादौ प्रतिपदादितिथिव्रतानि लिख्यंते ॥

॥ मात्स्ये– वर्जयित्वा मधौ यस्तु दधिक्षीरघृतैक्षवम् ॥ दद्याद्वस्त्राणि सूक्ष्माणि रसपात्रैर्युतानि च ॥ - रसपात्रैर्दध्यादिपात्रैः । संपूज्य विप्रमिथुनं गौरी मे प्रीयतामिति ॥ हेमाद्रौ पाद्मे च– अर्चयेच्चैत्रमासे तु यस्तु गंधानुलेपनैः ॥ शुक्तिं गंधभृतां दद्याद्विप्राय श्वेतवाससी ॥ भक्त्या तु दक्षिणां दद्यात्सर्वकामार्थसिद्धये ॥ गंधवस्त्रदानमंत्रः–चंदनावासगंधानां सखे वृंदारकार्चित । चंदन त्वं प्रसादेन सांद्रानंदप्रदो भव ॥ शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् । सुवेषधारी त्वं यस्माद्वासः शांतिं प्रयच्छ मे - इति मंत्राभ्यां गंधवाससी दद्यात् ॥

॥ अथ चैत्रशुक्लप्रतिपदि संवत्सरारंभविधिर्ब्राह्मे ॥ अत्र प्रतिपत्सूर्योदयव्यापिनी ग्राह्या ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ॥ शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति - इति वचनाद्दिनद्वये व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वैव ॥ वत्सरादौ वसंतादौ बलिराज्ये तथैव च ॥ पूर्वविद्धैव कर्तव्या प्रतिपत्सर्वदा बुधैः–इति वृद्धवसिष्ठवचनादिति बहवः ॥ युक्तं तु दिनद्वयेऽप्युदयसंबंधाभावे संवत्सरारंभप्रयुक्तकार्यलोपप्रसक्तौ यद्वचनं पूर्वयुताग्राह्यताविधायकं, दिनद्वये तत्संबंधे तु संपूर्णत्वादेव पूर्वाप्राप्ते कदा कार्यमित्याकांक्षाविरहात्पूर्वयुतत्वविरहाच्चैवैतद्वचनाऽपूर्वेति । ब्राह्मे–प्रवर्तयामास तथा कालस्य गणनामपि ॥ ग्रहानब्दानृतून्मासान्पक्षान्संवत्सराधिपान् ॥ ददौ स भगवान्ब्रह्मा सर्वदेवसमागमे ॥ ब्राह्म्यां सभायां ब्रह्माणमनिर्देश्यतनुं ततः ॥ यथोक्तास्ते नमस्यंतः स्तुवंतश्चाप्युपासते ॥ ततस्ते कृतशुश्रूषा गत्वा चैव हिमालयम् ॥ स्वानि स्वान्यथ कर्माणि तेन युक्ताश्च चक्रिरे ॥ ब्राह्मी सभा काम-

मनीयम् । कर्पूरवासितं तोयं मंदाकिन्याः समाहृतम् ॥ आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥ यत्पुरुषेणेति स्नानम् । गंगा च
यमुना चैव नर्मदा च सरस्वती । कृष्णा च गौतमी वेणी क्षिप्रा सिंधुस्तथैव च ॥ तापी पयोष्णी रेवा च ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पंचामृतस्नानं पंचमंत्रैः पृथक् महाभिषेकस्नानं च कुर्यात् ॥ तंयज्ञमिति वस्त्रम् । सर्वभूषादि-
के सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ वस्त्रं च सोमदेवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ॥ मयोपपादि-
तं तुभ्य वाससी० ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसमिति यज्ञोपवीतम् । दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात् ॥ ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण पु
रुषोत्तम ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋच इति गंधम् । श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ तस्मादश्वेति पुष्पम् । माल्यादीनि सुगंधीनि
मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयाऽऽहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ यत्पुरुषंव्यदधुरिति धूपम् । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गन्ध उ-
त्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृ० ॥ ब्राह्मणोस्येति दीपम् । साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलो
क्यतिमिरापह ॥ चंद्रमामनसइति नैवेद्यम् । अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
नाभ्याआसी•पुगीफलमिति तांबूलम् ॥ सप्तास्या० हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ।
इति दक्षिणा ॥ इदंफलमिति फलम् ॥ चंद्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् । इति नी
राजनम् ॥ यज्ञेनयज्ञमिति मंत्रपुष्पांजलिम् ॥ नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते मधुसूदन ॥ नमस्ते कमलाकांत वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ यानि

कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदे पदे - इति प्रदक्षिणाः ॥ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ॥
साष्टांगोऽयं प्रणामोऽस्तु प्रणयेन मया कृतः- इति नमस्कारम् ॥ इति सामान्यपूजाविधिः ॥ इति श्रीव्रतराजे परिभाषा समाप्ता ॥ ॥
॥ अथादौ प्रतिपदादितिथिव्रतानि लिख्यंते ॥ ॥ मात्स्ये— वर्जयित्वा मधौ यस्तु दधिक्षीरघृतैक्षवम् ॥ दद्याद्वस्त्राणि सूक्ष्माणि रसपात्रै-
र्युतानि च ॥ - रसपात्रैर्दध्यादिपात्रैः । संपूज्य विप्रमिथुनं गौरी मे प्रीयतामिति ॥ हेमाद्रौ पाद्मे च— अर्चयेच्चैत्रमासे तु यस्तु गंधानुलेप-
नैः ॥ शुक्तिं गंधभृतां दद्याद्विप्राय श्वेतवाससी ॥ भक्त्या तु दक्षिणां दद्यात्सर्वकामार्थसिद्धये ॥ गंधवस्त्रदानमंत्रः—चंदनावासगंधानां सखे
वृंदारकार्चित । चंदन त्वं प्रसादेन सांद्रानंदप्रदो भव ॥ शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् । सुवेषधारी त्वं यस्माद्वासः शांतिं
प्रयच्छ मे - इति मंत्राभ्यां गंधवाससी दद्यात् ॥ ॥ अथ चैत्रशुक्लप्रतिपदि संवत्सरारंभविधिर्ब्राह्मे ॥ अत्र प्रतिपत्सूर्योदयव्यापिनी ग्राह्या ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ॥ शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति - इति वचनाद्दिनद्वये व्याप्तावव्याप्तौ
वा पूर्वैव ॥ वत्सरादौ वसंतादौ बलिराज्ये तथैव च ॥ पूर्वविद्धैव कर्तव्या प्रतिपत्सर्वदा बुधैः—इति वृद्धवसिष्ठवचनादिति बहवः ॥ युक्तं तु दिन-
द्वयेऽप्युदयसंबंधाभावे संवत्सरारंभप्रयुक्तकार्यलोपप्रसक्तौ यद्वचनं पूर्वयुताग्राह्यताविधायकं, दिनद्वये तत्संबंधे तु संपूर्णत्वादेव पूर्वाप्राप्ते
कदा कार्यमित्याकांक्षाविरहात्पूर्वयुतत्वविरहाच्चैवैतद्वचनाऽपूर्वेति । ब्राह्मे—प्रवर्तयामास तथा कालस्य गणनामपि ॥ ग्रहानब्दानृतून्मा-
सान्पक्षान्संवत्सराधिपान् ॥ ददौ स भगवान्ब्रह्मा सर्वदेवसमागमे ॥ ब्राह्म्यां सभायां ब्रह्माणमनिर्देश्यतनुं ततः ॥ यथोक्तास्ते नमस्यंतः
स्तुवंतश्चाप्युपासते ॥ ततस्ते कृतशुश्रूषा गत्वा चैव हिमालयम् ॥ स्वानि स्वान्यथ कर्माणि तेन युक्ताश्च चक्रिरे ॥ ब्राह्मी सभा काम-

रूपा विशेषेण तदाऽनघ ॥ धारयत्यमलं रूपमनिर्देश्य मनोहरम् ॥ ततःप्रभृति यो धर्मः पूर्वैः पूर्वतरैः कृत ॥ अद्यापि रूढ सुतरां स कर्तव्यः प्रयत्नत ॥ तत्र कार्या महाशांति सर्वकल्मषनाशिनी ॥ सर्वोत्पातप्रशमनी कलिदुःस्वप्ननाशिनी ॥ आयुःप्रदा वृद्धिकरी धनसौभाग्यवर्धिनी ॥ मंगल्या च पवित्रा च लोकद्वयसुखावहा ॥ तस्यामादौ तु संपूज्यो ब्रह्मा कमलसंभव ॥ पाद्यार्घ्यपुष्पधूपैश्च वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ होमैर्बल्युपहारैश्च तथा ब्राह्मणभोजनैः ॥ ततः क्रमेण देवेभ्यः पूजा कार्या पृथक्पृथक् ॥ कृत्वोंकारवषट्कारौ कुशोदकतिलाक्षतैः ॥ पुष्पधूपप्रदीपाद्यैर्भाजनैश्च यथाक्रमम् ॥ मंत्र संपूजनार्थे तु बहुरूप परिस्पृशेत् ॥ - मंत्रमिति जातावित्येकवचनम् ॥ बहुरूप मंत्र नानारूपान्मंत्रान्परिस्पृशेत्परिगृह्णीयादित्यर्थः । तेन, ॐ नमो ब्रह्मण इत्यादि विष्णवे परमात्मने नम इत्येव मंत्रवाक्य यदे तत्र देवताशब्दाश्चतुर्थ्यंताः प्रणवादयो नमोंता मंत्रत्वेन ग्राह्याः । प्रार्थनामंत्रा – ॐ नमो ब्रह्मणे तुभ्य कामाय च महात्मने ॥ नमस्तेऽस्तु निमेषाय त्रुट्ये च नमो ऽस्तु ते ॥ लवाय च नमस्तुभ्य नमस्ते ऽस्तु क्षणाय च ॥ नमो नमस्ते काष्ठायै कलायै ते नमोऽस्तु ते ॥ नाडिकायै सुसूक्ष्मायै मुहूर्तायै नमो नमः ॥ नमो निशाभ्यः पुण्येभ्यो दिवसेभ्यश्च नित्यशः ॥ पक्षाभ्यां चाथ मासेभ्यो ऋतुभ्यश्च नमो नम ॥ अयनाभ्यां च पक्षेभ्यो वत्सरेभ्यश्च सर्वदा ॥ नमः कृतयुगादिभ्यो ग्रहेभ्यश्च नमोनमः ॥ अष्टाविंशतिसंख्येभ्यो नक्षत्रेभ्यो नमो नमः ॥ राशिभ्यः करणेभ्यश्च व्यतीपातेभ्य एव च ॥ प्रतिवर्षाधिपेभ्यश्च विज्ञातेभ्यो नमः सदा ॥ नमोऽस्तु कुलनागेभ्यो सानुयात्रेभ्य एव च ॥ सानुयात्रेभ्यः सानुचरेभ्य । नमोऽस्तु सर्वदिग्भ्यश्च दिक्पालेभ्यो नमो नमः ॥ नमश्चतुर्दशेभ्यश्च मनुभ्यश्च नमो नमः ॥ नमः पुरंदरेभ्यश्च वत्सरल्येभ्यो नमो नम ॥ पंचाशते नमो नित्य दक्षकन्याभ्य एव च ॥ नमो देव्यै सुभद्रायै जयायै चाऽप सर्वदा ॥ सुशा

स्त्राय नमस्तुभ्यं सर्वास्त्रजनकाय च ॥ नमस्ते बहुपुत्राय पत्नीभिः सहिताय च ॥ नमो बुद्ध्यै तथा वृद्ध्यै निद्रायै धनदाय च ॥ नमः कुबेरपुत्राय गुह्यकस्वामिने नमः ॥ नमोऽस्तु शंखपद्माभ्यां निधिभ्यामथ नित्यशः ॥ भद्रकाल्यै नमस्तुभ्यं सुरभ्यै च नमो नमः ॥ वेदवेदांगवेदांतविद्यासंस्थेभ्य एव च ॥ नागयक्षसुपर्णेभ्यो नमोऽस्तु गरुडाय च ॥ सप्तभ्यश्च समुद्रेभ्यः सागरेभ्यश्च सर्वदा ॥ उत्तरेभ्यः कुरुभ्यश्च नमो मेरुगताय च ॥ भद्राश्वकेतुमालेभ्यो नमः सर्वत्र सर्वदा ॥ इलावृताय च नमो हरिवर्षाय चैव हि ॥ नमः किंपुरुषेभ्यश्च भारताय नमो नमः ॥ नमो भारतभेदेभ्यो महद्भ्यश्चाथ सर्वदा ॥ पातालेभ्यश्च सप्तेभ्यो नरकेभ्यो नमो नमः ॥ कालाग्निरुद्रशैवेभ्यो हरये क्रोधरूपिणे ॥ सप्तभ्यस्त्वथ लोकेभ्यो महाभूतेभ्य एव च ॥ नमः संबुद्धये चैव नमः प्रकृतये तथा ॥ पुरुषायाभिमानाय नमोऽस्तु व्यक्तमूर्तये ॥ हिमवत्प्रमुखेभ्यश्च पर्वतेभ्यो नमस्त्वथ ॥ पौराणीभ्यश्च गंगाभ्यः सप्तभ्यश्च नमो नमः ॥ नमोऽस्त्वादिमुनिभ्यश्च सप्तभ्यश्चाथ सर्वदा ॥ नमोऽस्तु पुष्करादिभ्यस्तीर्थेभ्यश्च पुनः पुनः ॥ निम्नगाभ्यो नमो नित्यं वितस्तादिभ्य एव च ॥ चतुर्दशेभ्यो दीर्घेभ्यो धरणीभ्यो नमो नमः ॥ नमो धात्रे विधात्रे च छंदोभ्यश्च नमो नमः ॥ सुरभ्यैरावणाभ्यां च नमो भूयो नमो नमः ॥ नमस्तथोच्चैःश्रवसे ध्रुवाय च नमो नमः ॥ नमोस्तु धन्वंतरये शस्त्रास्त्राभ्यां नमो नमः ॥ विनायककुमाराभ्यां विघ्नेभ्यश्च नमः सदा ॥ शाखाय च विशाखाय नैगमेयाय वै नमः ॥ नमः स्कंदग्रहेभ्यश्च स्कंदमातृभ्य एव च ॥ ज्वराय रोगपतये भस्मप्रहरणाय च ॥ ऋषिभ्यो वालखिल्येभ्यः केशवाय नमः सदा ॥ अगस्तये नारदाय व्यासादिभ्यो नमो नमः ॥ अप्सरोभ्यः सोमपेभ्यो देवेभ्यश्च नमो नमः ॥ असोमपेभ्यश्च नमस्तुषितेभ्यो नमः सदा ॥ आदित्येभ्यो नमो नित्यं द्वादशभ्यश्च सर्वदा ॥ एकादशभ्यो

शेभ्यस्तपस्विभ्यो नमो नमः ॥ नमो नासत्यदस्राभ्यामश्विभ्यां नित्यमेव हि॥ साध्येभ्यो द्वादशाभ्यश्च पौराणेभ्यो नमः सदा ।एकोनपचा-
शद्भ्यश्च मरुद्भ्यश्च नमो नमः ॥ शिल्पाचार्याय देवाय नमस्ते विश्वकर्मणे ॥ अष्टभ्यो लोकपालेभ्यः सानुगेभ्यश्च सर्वदा ॥ आयुधेभ्यो वाह
नेभ्यो चर्मभ्यश्च नम सदा ॥ आसनेभ्यो दुन्दुभिभ्यो देवेभ्यश्च नमः सदा ॥ दैत्यराक्षसगंधर्वपिशाचेभ्यश्च नित्यशः ॥ पितृभ्यः सप्तभेदे
भ्यः प्रेतेभ्यश्च नमः सदा ॥ सुसूक्ष्मेभ्यश्च देवेभ्यो भावगम्येभ्य एव च ॥ नमस्ते बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने ॥ अथ किं बहुनोक्तेन मंत्रे-
णानेन वार्चयेव॥प्राङ्मुखोदङ्मुखो विप्रान्देवानुद्दिश्यपूर्ववत्॥-अथवा किमत्र विस्तरेण ब्राह्मणानेव देवतोद्देशेन पूजयेदित्यर्थः । पूर्ववन्मंत्रो
क्तक्रमेण । अर्घैःपुष्पैश्च धूपैश्च वस्त्रमाल्यैः सुवष्टकम्॥सरोमांच हृष्टरोमा समर्चयेदित्यर्थः। धनधान्यानुविभवैर्दक्षिणाभिश्च सर्वदा॥इतिहासपुरा-
णाना प्रवक्तृंश्च द्विजोत्तमान्॥कालज्ञान्वेदवेदज्ञान्भृत्यान्संबंधिबांधवान्॥अनेनैव तु मन्त्रेण स्वाहांतेन पृथक्पृथक्॥ प्रतिष्ठापाग्नये होमःकर्त
व्यः सर्वतृप्तये ॥ वेदविच्चक्षुपी दत्त्वा स्थाने प्राधानिके सदा ॥ प्रतिष्ठाप्य श्रेष्ठाय, वेदविद्वेदोक्तविधिज्ञः ।मदनरत्ने तु वेदवदिति पठित्वा वेदो-
क्तविधिनेति व्याख्यातम् । चक्षुपी आज्यभागौ, प्रधानिके स्थाने प्रधानहोमारंभे ॥ होमारंभे तत' कुर्यान्मंगलारंभण नरः ॥ मदनरत्ने—
शालाशोभा ततः कुर्यान्मंगलालभन तत इति पाठः ॥ भोजयित्वा द्विजान्सर्वान्सुहृत्सर्वबंधिबांधवान् ॥ विशेषेण च भोक्तव्य कार्यश्चापि
महोत्सवः ॥ नवसंवत्सरारंभः सर्वसिद्धिप्रवर्तकः ॥ इति संवत्सरारंभविधिः ॥ ॥ अथ अत्रैव विष्णुधर्मोत्तरोक्तमारोग्यप्रतिपद्व्रतम् ॥ पुष्क-
र उवाच ॥ संवत्सरावसाने तु पंचदश्यामुपोषितः॥ प्रातः प्रतिपदि स्नातःकुर्याद्व्रतमनन्यधीः॥पूजयेद्भास्कर देव वर्णके कमले कृते ॥-वर्णकै
रक्तनीलश्वेतपीतादिभिः । शुक्लेन गंधमाल्येन चंदनेन सितेन चातथा कुदुरुधूपेन घृतदीपेन भार्गव। कुदरुः शल्लकीनिर्यासः॥अपूपैः सैकतैर्दध्ना

परमान्नेन भूरिणा ॥-सैकतैः शर्कराविकारैः । ओदनेन च भक्तेन सता लवणसर्पिषा ॥ -सता उत्तमेन । क्षीरेण च फलैः शुक्लैर्बहुब्राह्मणतर्प-
णैः ॥ पूजयित्वा जगद्धाम दिनभागे चतुर्थके ॥ आहारं प्रथमं कुर्यात्सघृतं मनुजोत्तम ॥ सर्वं च मनुजश्रेष्ठ घृतहीनं विवर्जयेत् ॥ भुक्त्वा
सकलदेवान्नमाहारं च समाचरेत् ॥ पानीयपानं कुर्वीत ब्राह्मणानुमते पुनः ॥- प्रथममाहारं प्रथमग्रासम्, सर्वं प्रथमं अप्रथमं च आहारम् ।
एकमेव ग्रासं भक्षयित्वाऽवशिष्टमन्नं त्यजेत् ॥ ब्राह्मणानुमत्या भुंजानोऽपि घृतहीनं न भुंजीत;घृतहीनं विवर्जयेदिति निषेधात् ॥ संवत्सरमि-
दं कृत्वा ततश्च सत्रयोदशम् ॥ पूजनं देवदेवस्य तस्मिन्नहनि भार्गव ॥-संवत्सरं शुक्लप्रतिपत्, सत्रयोदशमिति लिंगदर्शनात् । सवस्त्रं सहि-
रण्यं च ततो दद्याद्द्विजातये ॥ -पूजनंपूजोपकरणं प्रतिमादि । व्रतेनानेन धर्मज्ञो रोगमेवं व्यपोहति ॥ आरोग्यमाप्नोति गतिं तथाऽग्र्यां यश-
स्तथाऽग्र्यान्विपुलांश्च भोगान् ॥ व्रतेन सम्यक् पुरुषोऽथ नारी संपूजयेद्यस्तु जगत्प्रधानम् ॥ -जगत्प्रधानं सूर्यम् ॥ इति चैत्रशुक्लप्रतिप-
दारोग्यदायकव्रतम् ॥ ॥ अस्यामेवोक्तं विद्याव्रतम् ॥ ॥ मदनरत्ने विष्णुधर्मे-- मार्कंडेय उवाच । अष्टपत्रं तु कमलं विन्यसेद्वर्णकैः
शुभैः ॥ ब्रह्माणं कर्णिकायां तु तस्य संपूजयेद्विभुम् ॥ ऋग्वेदं पूर्वपत्रे तु यजुर्वेदं तु दक्षिणे ॥ पश्चिमे सामवेदं तु उदक् चाथर्वणं
तथा ॥ आग्नेये च तथांऽगानि धर्मशास्त्राणि नैर्ऋते ॥ पुराणं चैव वायव्यामीशान्यां न्यायविस्तरम् ॥ एवं विन्यस्य धर्मज्ञः सोपवासस्तु
पूजयेत् ॥ चैत्रशुक्लमथारभ्य सोपवासो जितेंद्रियः ॥ सदा प्रतिपदं प्राप्य शुक्लपक्षस्य यादव ॥ संवत्सरं महाराज शुक्लगंधानुलेपनैः ॥ भू-
षणैः परमान्नेन धूपदीपैरतंद्रितः ॥ संवत्सरांते गां दद्याद्व्रते चीर्णे नरोत्तम ॥ इदं व्रतं यस्तु करोति राजन्स वेदवित्स्याद्भुवि धर्मनिष्ठः ॥
कृत्वा सदा द्वादशवत्सराणि विरिंचिलोकं पुरुषः प्रयाति ॥ इति विद्याप्रतिपद्व्रतम् ॥ ॥ अथात्रैव भविष्योक्तं तिलकव्रतम् ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ।

वसंते किंशुकाऽशोकशोभिते प्रतिपत्तिथिः ॥ शुक्ला तस्यां प्रकुर्वीत स्नानं नियममाश्रितः ॥ नारी नरो वा राजेंद्र संतर्प्य पितृदेवता ॥नद्यास्तीरे तडागे वा गृहे वा तदलाभतः॥पिष्टातकेन विलिखेद्वत्सरं पुरुषाकृतिम् । पिष्टातकः पटवासको गंधद्रव्यचूर्णविशेषः ॥ ततश्चंदनचूर्णेन पुष्पधूपादिनाऽर्चयेत ॥ मासर्तुनामभिः पश्चान्नमस्कारैस्तथाऽर्चितैः ॥मासर्तुनामभिश्चैत्रवसंताद्यैश्च नामभिः ॥ पूजयेद्ब्राह्मणो विद्वान्मन्त्रैर्वेदोदितैः शुभैः॥ संवत्सर पठन्मंत्रं तथा वेदोदित द्विजः ॥ नमस्कारेण मन्त्रेण शूद्रोऽपीत्थं प्रपूजयेत् ॥-शूद्रोऽपी अनेनें स्त्रीणां परिग्रहः, तासा विशेषविध्यभावे वैदिकमन्त्रानधिकारात् ॥ संवत्सरोसिपरिवत्सरोसीत्यादियजुर्वेदप्रसिद्धामन्त्राः ॥ नमस्कारेणमन्त्रेणसंवत्सरायतेनमइत्यादिना ॥ एवमभ्यर्च्य वासोभिः पश्चात्तमभिवेष्टयेत् ॥ कालोद्भवैर्मूलफलैर्नैवेद्यैर्मोदकादिभिः ॥ ततस्त पूजयेत्पार्थ पुरः स्थित्वा कृतांजलिः ॥ भगवस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे ॥ संवत्सरोपसर्गा मे विलय यांत्वशेषतः ॥ एवमुक्त्वा यथाशक्त्या दत्त्वा विप्राय दक्षिणाम् ॥ ललाटपट्टे तिलकं कुर्याच्चंदनपङ्कजम् ॥ ततप्रभृत्यनुदिने तिलकालंकृत मुखम् ॥ धार्यं सवत्सरं यावच्छशिनेव नभस्तलम् ॥ एव नरो वा नारी वा व्रतमेतत्समाचरेत् ॥ सदैव पुरुषव्याघ्र भोगान्भुवि भुनक्त्यसौ ॥ भूतप्रेतपिशाचा ये दुर्वारा वैरिणो ग्रहाः ॥ निरर्थका भवत्येते तिलकवीक्ष्य तत्क्षणात् ॥ निरर्थकाः प्रयोजनशून्याः, अनिष्टकरणे असमर्था इत्यर्थः । अत्र वसते प्रतिपत्तिथिः शुक्ला तस्यां प्रकुर्वीतेति वसतशुक्लप्रतिपल्लभ्या ॥ तया व्रतमिदं चैत्रे गृहीतं द्विजसंनिधावित्यग्रेऽनेन चैत्रस्यैवेति विज्ञायते ॥ पूर्वमासीन्महीपालो नाम्ना शत्रुंजयो जयी ॥ चित्रलेखेति तस्याभूद्भार्या चातिविभूषणा ॥ तया व्रतमिदं भक्त्या गृहीतं द्विजसंनिधौ ॥ वत्सरं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवं जनार्दनम् ॥ हृष्टं वा क्षेमकामो वा समागच्छति यः पुनः ॥ प्रयाति स प्रियं कृत्वा दृष्ट्वा तु तिलकं नरः ॥ सपत्नीदर्पापहरा वशीकृतमहीतला ॥

भर्तुर्दृष्ट्वा प्रहृष्टा सा सुखमास्ते निराकुला ॥ पावकेनाभिभूतस्तु भर्ता पुत्रः सवेदनः ॥ शिरोर्तिना संप्रयातः सुहृदां सुखदायकः ॥- शिरो-
र्तिना शिरोवदनायुक्तः । धर्मराजपुरीं प्राप्तः सर्वतापकरीं ततः ॥ तस्मिन्क्षणे महाराज धर्मराजस्य किंकराः ॥ तस्या द्वारमनुप्राप्ताः प्रविष्टा
गृहमंजसा ॥ शत्रुंजयं समानेतुं कालमृत्युपुरःसराः॥पार्श्वे स्थितां चित्रलेखां तिलकालंकृताननाम् ॥ दृष्ट्वा प्रनष्टसंकल्पाः परावृत्य गताः
पुनः ॥ गतेषु तेषु स नृपः पुत्रेण सह भारत ॥ भूभुजां बुभुजे भोगान्पूर्वकर्मार्जिताञ्छुभान् ॥ अक्रूरेण समाख्यातं मम पूर्वं युधिष्ठिर ॥
एतत्त्रिलोकतिलकाख्यविभूषितं च पुण्यव्रतं सकलदुष्टहरं परं च ॥ इत्थं समाचरति यः स सुखं विहृत्य मर्त्यः प्रयाति पदमच्युतमिंदु-
मौलेः ॥ इति तिलकव्रतम् ॥ ॥ अस्यामेव नवरात्रारंभः ॥ तत्र परयुता ग्राह्या । अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चंडिकार्चने ॥ मुहूर्तमात्रा
कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता ॥ अत्रैव प्रपादानमुक्तम् ॥ अतीते फाल्गुने मासि प्राप्ते चैव महोत्सवे ॥ पुण्येऽह्नि विप्रकथितं प्रपादानं
समारभेत् ॥ ततश्चोत्सर्जयेद्विद्वान्मंत्रेणानेन मानवः ॥ प्रपेयं सर्वसामान्यभूतेभ्यः प्रतिपादिता ॥ अस्याः प्रदानात्पितरस्तृप्यंतु हि पिता-
महाः ॥ अनिवार्यं ततो देयं जलं मासचतुष्टयम् ॥ प्रपां दातुमशक्तेन विशेषाद्धर्ममीप्सुना ॥ प्रत्यहं धर्मघटको वस्त्रसंवेष्टिताननः ॥ ब्रा-
ह्मणस्य गृहे देयः शीतामलजलः शुचिः ॥ एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्सकला मम संतु मनोरथाः ॥ अ-
नेन विधिना यस्तु धर्मकुंभं प्रयच्छति ॥ प्रपादानफलं सोऽपि प्राप्नोतीह न संशयः ॥ इति प्रपादानम् ॥ ॥ अथश्रावणशुक्लप्रतिपदि
सोमवारमारभ्याऽऽचारप्राप्तं रोटकव्रतम् ॥ ॥ अथ सर्वशिवव्रतेषु पूजाविधिः ॥ ममेह जन्मनि समस्तसौभाग्यप्राप्त्यर्थं धनपुत्रप्राप्ति-
कामः सार्द्धमासत्रयात्मकं रोटकासोमेश्वरप्रीत्यर्थं बिल्वव्रतं करिष्ये । तत्र सोमेश्वरपूजनं कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां उद्यापन ॥ मया अनुष्ठित-

स्य सार्द्धमासत्रयात्मकबिल्वव्रताख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं बिल्वरोटकव्रतोद्यापनं करिष्ये ॥ तन्दुलैरष्टदलं कृत्वा । तत्र सप्तमातृर्लो
कपालांश्च पूजयेत् ॥ मध्ये सोमेश्वरं पूजयेत् ॥ तदित्थम्— ॥ आयाहि भगवन्शंभो शर्व त्वं गिरिजापते ॥ प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्य
हि शंकर ॥ त्रिपुरांतकरं देवं चंद्रचूडं महाद्युतिम् ॥ गजचर्मपरीधानं सोममावाहयाम्यहम् ॥ आवाहनम् ॥ बंधूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ॥
त्रिशूलधारिणं देवं चारुहासं सुनिर्मलम् ॥ कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम् ॥ उमया सहितं शंभुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा । ध्यानम् ॥
विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरप्रिय ॥ आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं तुभ्यमीश्वर । आसनम् ॥ महादेव महेशान महादेव परात्पर ॥
पाद्यं गृहाण मद्दत्तं पार्वतीसहितेश्वर । पाद्यम् ॥ त्र्यंबकेश सदाचार जगदादिविधायक ॥ अर्घ्यं गृहाण देवेश सांब सर्वार्थदायक ॥ अ
र्घ्यम् ॥ त्रिपुरांतकदीनार्तिनाशश्रीकंठ शाश्वत ॥ गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदककल्पितम् । आचमनीयम् ॥ क्षीरमाज्यं दधि मधु सितेत्य
मृतपंचकम् ॥ प्रकल्पितं मयोमेश गृहाणेदं जगत्पते । पंचामृतम् ॥ गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा ॥ सरस्वत्यादितीर्थानि
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । स्नानम् ॥ वस्त्राणि पट्टकूलानि विचित्राणि नवानि च ॥ मयाऽऽनीतानि देवेश प्रसन्नो भव शंकर । वस्त्रम् ॥ सौ
वर्णं राजतं ताम्रं कार्पासस्य तथैव च ॥ उपवीतं मया दत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । उपवीतम् ॥ सर्वेश्वर जगद्वंद्य दिव्यासनसमास्थित ॥ मल
याचलसंभूतं चंदनं प्रतिगृह्यताम् । गंधम् ॥ गंधोपरि शुक्लाक्षतान् ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः शुभ्रा धृताश्च निर्मलाः ॥ मया निवेदिता भक्त्या
गृहाण परमेश्वर । अक्षतान् ॥ माल्यादीनि सुगंधीनीति पुष्पाणि ॥ वनस्पतीति धूपम् ॥ साज्यंचेति दीपम् ॥ अपूपानि च पक्वानि मंड
का वटकानि च ॥ पायसं सूपमन्नं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ नैवेद्यम् ॥ मध्ये पानीयम् । करोद्वर्तनम् । कूष्मांडं मातुलिंगं च नारीकेर-

फलानि च । गृहाण पार्वतीकांत सोमेश प्रतिगृह्यताम् । फलम् ॥ पूगीफलमिति तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् ॥ अग्निर्ज्योती रविर्ज्योतिर्ज्योतिर्नारायणो विभुः ॥ नीराजयामि देवेशं पंचदीपैः सुरेश्वरम् । नीराजनम् ॥ हेतवे जगतामेव संसारार्णवसेतवे । प्रभवे सर्वविद्यानां शंभवे गुरवे नमः । नमस्कारम् ॥ यानि कानि चेति प्रदक्षिणाः ॥ हरविश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय । पुष्पांजलिं गृहाणेश सोमेश्वर नमोऽस्तु ते । पुष्पांजलिम् ॥ विनिर्मितं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च ॥ मयाऽर्पितं तु तच्छंभो बिल्वपत्रं गृहाण मे । बिल्वपत्रार्पणम् ॥ इति पूजा ॥ ॥ अथ कथा ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच । हृषीकेश मयाऽकारि व्रतदानान्यनेकधा । श्रोतुमिच्छामि देवेश व्रतं संपत्तिदायकम् १ येन व्रतेन देवेश पुरा राज्यं लभामहे । तथा व्रतं तु मे ब्रूहि यादवानां कृपाकर २ श्रीभगवानुवाच । वदामि शुभदं पार्थ लक्ष्मीवृद्धिप्रदायकम् । धर्मार्थकाममोक्षाणां निदानं परमं व्रतम् ३ युधिष्ठिर उवाच । येन चादौ पुरा चीर्णं मर्त्ये केन प्रकाशितम् । विधिना केन कर्तव्यं तत्सर्वं ब्रूहि केशव ४ श्रीभगवानुवाच । आसीत्सौम्यपुरे राजा सोमनामेति विश्रुतः । क्षात्रधर्मेऽतिकुशलः प्रजापालनतत्परः ५ तस्य राज्ये प्रजाः सौम्याः सर्वधर्मपरायणाः । तस्य राज्ञस्तु चामात्यः सोऽपि सौम्यः शुभावहः ६ तस्मिन्सरस्तु सौम्यं च सदा सौम्यांऽबुनाप्लुतम् । अभूत्सोमेश्वरो देवो लोकानां पालनाय च ७ तत्राभवत्सोमशर्मा ब्राह्मणो वेदपारगः । वेदार्थविच्छास्त्रविच्च शुद्धाचारोऽतिदुर्लभः ८ तस्य भार्या शुभाचारा पुरंध्री चारुभाषिणी । भर्तृशुश्रूषणरता कल्याणी प्रियवादिनी ९ सोऽकरोच्च कुटुंबार्थं कणयज्ञं दिने दिने । न लेभे चाधिकं तेन धनं धान्यं तथैव च १० अतीव खेदखिन्नस्तु विचार्य च पुनः पुनः । किं करोमि क्व गच्छामि सभार्योऽहं महीतले ११ केन कर्मविपाकेन कीदृशं लभ्यते फलम् । अथवाऽर्थकरं धर्मदेवपूजादिकं शुभम् १२ स सोमेशेऽकरोद्भक्ति

दैन्यनाशाय पार्थिव । कदाचिदतिखिन्नः सन्स जगाम सरोवरम् १३ अभूत्सोमेशः प्रत्यक्षस्तस्मिन्सौम्यसरोवरे । वृद्धब्राह्मणरूपेण कृपया
परया युतः १४ तेनासौ दुःखितो दृष्टः सोमशर्मा द्विजोत्तमः ॥ श्रीभगवानुवाच । किमर्थं क्रियते दुःखं त्वया विप्रावरेण च १५
किञ्चिद्वृत नास्ति पूर्वं तदर्थमीदृशी दशा । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा ब्राह्मणस्त्विदमब्रवीत् १६ श्रीभगवानुवाच । भो भो विप्रवरश्रेष्ठ
व्रतमेकं वदामि ते । तेनादिष्टं व्रतं चेद् पूर्णसंपत्तिदायकम् । १७ सोमशर्मोवाच । भो भो ब्राह्मणशार्दूल व्रतं तद्वद मे प्रभो । यस्यानुष्ठानमा
त्रेण लक्ष्मीवृद्धिः प्रजायते १८ कस्मिन्मासे च कर्तव्यं किं दानं कस्य भोजनम् । धनलाभाय कर्तव्यं कस्य देवस्य पूजनम् १९ कैस्तु
पुष्पैः प्रकर्तव्या पूजा चास्तरा शुभा । नैवेद्यं कीदृशं देयमर्घ्यं कैस्तु फलैर्भवेत् २० यदि तुष्टोऽसि विप्रेंद्र तत्सर्वं ब्रूहि मे प्रभो ॥ ब्राह्म-
ण उवाच । साधु त्वया विप्र पृष्टं व्रतं वृद्धिप्रदायकम् २१ विधानं तस्य वक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रदायकम् । श्रावणे च सिते पक्षे प्रथमे सोम
वासरे २२ प्रकर्तव्यं व्रतं विप्र शुभं नियमपूर्वकम् । सार्द्धमासत्रयं विप्र कर्तव्यं विधिपूर्वकम् २३ बिल्वपत्रैरखंडैश्च पूजनं च दिने दिने । प-
चसप्तत्रिभिश्चैव पूजनं विधिपूर्वकम् २४ परिपूर्णं तु कर्तव्यं चतुर्दश्यां तु कार्तिके । व्रतारंभे तु कर्तव्यो नियमस्तु विचक्षणैः २५ अद्यारभ्य व्रतं
देव रोटकाख्यं मनोहरम् । करोमि परया भक्त्या पाहि मां जगतां गुरो २६ दिने दिने प्रकर्तव्या पूजा देवस्य शूलिनः । कथा विना न भोक्तव्यं
प्रत्यहं च पुनः पुनः २७ उपोषणं चतुर्दश्यां कर्तव्यं विधिपूर्वकम् । शुचिर्भूत्वा दिने तस्मिन्कर्तव्यं रोटकव्रतम् २८ ॥ उपोषणप्रार्थनामंत्रः—
चतुर्दश्यां निराहारः स्थित्वा चैव परेहनि । भोक्ष्यामि पार्वतीनाथ सर्वसिद्धिप्रदायक २९ कृत्वा माध्याह्निकं कर्म स्थापयेदव्रणं घटम् । पञ्चरत्न
समायुक्तं पवित्रोदकपूरितम् ३० सर्वौषधिसमायुक्तं पुष्पादिभिरलंकृतम् । वेष्टितं श्वेतवस्त्रेण सर्वाभरणभूषितम् ३१ तस्योपरि न्यसेत्पात्रं ताम्रं

चैवाथ वैणवम् । विरच्याष्टदलं तत्र पूजयेदुमया शिवम् ३२ कृत्वा सायाह्निकं कर्म नित्यपूजादिकं तथा । तस्या रात्रौ तु कर्तव्या पूजा देवस्य शूलिनः ३३ शुभे चैव प्रदेशे तु कर्तव्यः पुष्पमंडपः । पूज्यस्तत्र शिवो देवो धर्मकामार्थसिद्धये ३४ क्षीरादिस्नापनं कुर्याच्चंदनादिविलेपनम् । कृष्णागरुं च कर्पूरमृगनाभिविमिश्रितम् ३५ पुष्पैर्नानाविधै रम्यैः पूज्यो देवो महेश्वरः । धनकामेन कर्तव्या पूजा देवस्य शूलिनः ३६ बिल्वपत्रैरखंडैश्च तुलसीपत्रकैस्तथा । नीलोत्पलैश्चारुतरैः कर्तव्या पुण्यवर्धिनी ३७ कल्हारकमलैश्चैव कुमुदैश्चातिशोभनैः । चंपकैर्मालतीपुष्पैर्मुचकुंदैः शुभावहैः ३८ मंदारैश्चार्कपुष्पैश्च पूजार्हैश्च शिवप्रियैः । अन्यैर्नानाविधैः पुष्पैर्ऋतुकालोद्भवैस्तथा ३९ धूपैर्नानाविधैः पार्थ पुण्यवर्धनसाधकैः । दीपास्तत्र प्रकर्तव्या घृतपूर्णा मनोरमाः ४० लेह्यपेयैस्तथा भोज्यैः स्वादुभिश्च शिवप्रियैः । अन्यैर्नानाविधरम्यैस्तथा विप्रवरैस्ततः ४१ नैवेद्यं तु प्रकुर्वीत रोटकानां विशेषतः । कर्तव्या रोटकाः पंच पुरुषाहारमानतः ४२ शालितण्डुलपिष्टेन समभागेन वा पुनः । द्वौ तु विप्राय दातव्यौ द्वाभ्यां वै भोजनं शुभम् ४३ एको देवाय दातव्यो नैवेद्यार्थं सदा बुधैः । महेशाय च दातव्यं तांबूलं सुमनोहरम् ४४ अर्घ्यदानं प्रकर्तव्यं धनसंपत्तिदायकम् । पनसं नारिकेरं च पूगीजंबीरपूरकम् ४५ खर्जूरी च शुभा द्राक्षा मातुलिंगं मनोहरम् । अक्रोडानि च दाडिंबं नारिंगाणि शुभानि च ४६ कर्कटी च शुभा प्रोक्ता ह्यर्घ्यदाने मनोहरा । अन्यैर्नानाविधैः पार्थ ऋतुकालोद्भवैः शुभैः ४७ यः करोत्यर्घ्यदानं च तस्य पुण्यं वदाम्यहम् । इलां च सागरैर्युक्तां रत्नैश्चान्यैर्मनोहरैः ४८ दत्त्वा यत्फलमाप्नोति तेन तत्फलमाप्नुयात् । अनेनैव विधानेन तत्कार्यं व्रतसिद्धये ४९ पंचवर्षं तु कर्तव्यमतुलं धनमीप्सुभिः । पश्चादुद्यापनं कुर्याद्रोटकाख्यव्रतस्य च ५० उद्यापने तु कर्तव्यौ हेमरूप्यौ तु रोटकौ । बिल्वपत्रं सुवर्णस्य सोमेशप्रीतये शुभम् ५१ रात्रौ जागरणं कुर्यात्पूज्यो देवो

महेश्वरः । पूर्णेन विधिना विप्र कर्तव्यं च शिवप्रियम् ५२ दारिद्र्यनाशनं पुण्यं लक्ष्मीवृद्धिप्रदायकम् । कर्तव्यं विधिवद्भक्त्या श्रोतव्यं तु कथानकम् ५३ गीतवाद्यादिसहितं कुर्याज्जागरणं निशि । ततः प्रभाते विमले स्नात्वा पूजां समापयेत् ५४ पूर्वोक्तविधिना तेन कर्तव्यं शिवपूजनम् । तत्सर्वं दापयेद्भक्त्या ब्राह्मणाय कुटुंबिने ५५ विप्राय वेदविदुषे यथाऽलंकारभोजनैः । गुरुं सपत्निकं पूज्य ततो भक्त्या क्षमापयेत् ५६ यन्मया कृतसंकल्पे व्रतेऽस्मिन्ब्राह्मण प्रभो । तत्सर्वं पूर्णतां यातु युष्मदृष्टिविलोकनात् ५७ एवं यः कुरुते पार्थ शास्त्रोक्तं रोटकव्रतम् । अनायासेन सिध्यन्ति ह्यस्य सर्वे मनोरथाः ५८ सभर्तृका महानारी करोति विधिवद्व्रतम् । पतिव्रता सा कल्याणी जायते नाऽत्र संशयः ५९॥ मयाऽनुष्ठितस्य सार्धमासत्रयात्मकस्य बिल्वव्रताख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धये ब्राह्मणायैतद्वायनप्रदानं करिष्ये । ब्राह्मणं संपूज्य ॥ विप्राय वेदविदुषे श्रोत्रियाय कुटुंबिने । नरकोद्धारणार्थाय शंकरः प्रीयतां नमः ।-इति दानमंत्रः ॥ ॥ इति शिवपुराणे बिल्वरोटकसोमनाथव्रतकथोद्यापनम् ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लप्रतिपदि दौहित्रेण मातामहश्राद्धं कार्यम् ॥ ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ-जातमात्रोऽपि दौहित्रो जीवत्यपि च मातुले ॥ कुर्यान्मातामहश्राद्धं प्रतिपद्याश्विने सिते ॥ इयं च संगवव्यापिनी ग्राह्येति निर्णयदीपे उक्तम्- प्रतिपद्याश्विने शुक्ले दौहित्रस्त्वेकपार्वणम् ॥ श्राद्धं मातामहं कुर्यात्सपिता संभवे सति ॥ जातमात्रोऽपि दौहित्रो जीवत्यपि हि मातुले ॥ मातृसंगवयोर्मध्ये या स्यात्युक्ता प्रतिपत्सैव ॥ अत्र सपिता इति विशेषणाज्जीवत्पितृक एवाधिकारी । अत एव पिंडरहितं कुर्यात् । मुंडनं पिंडदानं च प्रेतकर्म च सर्वशः ॥ न जीवत्पितृकः कुर्याद्गुर्विणीपतिरेव च इति निषेधात् ॥ ॥ अत्रैव नवरात्रारंभः ॥ तत्र परविद्धा

ग्राह्या ॥ तदुक्तं गोविंदार्णवे मार्कंडेयपुराणदेवीपुराणयोः—पूर्वविद्धा तु या शुक्ला भवेत्प्रतिपदाश्विनी ॥ नवरात्रव्रतं तस्यां न कार्यं शुभमिच्छता ॥ देशभंगो भवेत्तत्र दुर्भिक्षं चोपजायते ॥ नंदायां दर्शयुक्तायां यत्र स्यान्मंत्रपूजनम् ॥ तथा, देवीपुराणे—न दर्शकलया युक्ता प्रतिपच्चंडिकार्चने । उदये द्विमुहूर्ताऽपि ग्राह्या सोदयकारिणी ॥ यदा पूर्वदिने शुद्धा भूत्वा परदिनेऽपि च । वर्धते च तदा भूत्वा संपूर्णत्वादमतां विना ॥ यानि तु द्वितीयायोगनिषेधपराणि वचनानि श्रुतानि तानि श्राद्धादिपराण्येव । परदिने प्रतिपदसत्वे त्वमायुक्तापि ग्राह्या । तिथिः शरीरं तिथिरेव कारणं तिथिः प्रमाणं तिथिरेव साधनं—इति वचनात् ॥अमायुक्ता प्रकर्तव्येति नृसिंहप्रसादोदाहृतवचनान्यप्येतद्विषयाण्येव । अत्र देवीपूजा प्रधानम् ॥अष्टम्यां च नवम्यां च जगन्मातरमंबिकाम् ॥ पूजयित्वाश्विने मासि विशोको जायते नरः ॥ यती च ब्रह्मचारी च विधवा च रजस्वला ॥ नवरात्रं चोपवासमेकभुक्तमयाचितम् । चित्रावैधृतियोगनिषेधो देवीपुराणे—चित्रावैधृतियुक्ता चेत्प्रतिपच्चंडिकार्चने ॥ तयोरंते विधातव्यं कलशस्थापनं ध्रुवम् ॥ प्रतिपद्याश्विने मासि भवेद्वैधृतिचित्रयोः ॥ आद्यपादौ परित्यज्य प्रारभेन्नवरात्रकम् ॥ संपूर्णा प्रतिपद्देव चित्रायुक्ता यदा भवेत् ॥ वैधृत्या वाऽपि युक्ता स्यात्तदा मध्यंदिने रवौ ॥ चित्रावैधृतिसंपूर्णा प्रतिपच्चेद्भवेन्नृप ॥ त्याज्या अंशास्त्रयस्त्वाद्यास्तुरीयांशे तु पूजनम् ॥ न रात्रौ स्थापनं कार्यं न च कुंभाभिषेचनम् ॥ भास्करोदयमारभ्य यावत्तु दश नाडिकाः ॥ प्रातःकाल इति प्रोक्तः स्थापनारोपणादिषु ॥ आद्याः षोडश नाडीस्तु त्यक्त्वा यः कुरुते नरः ॥ कलशस्थापनं तत्र अरिष्टं जायते ध्रुवम् ॥ वृद्धौ समाप्तिरष्टम्यां ह्रासेन प्रतिपन्निशि ॥ प्रारंभो नवचंड्यास्तु नवरात्रमतोऽर्थवत् ॥ तिथिवृद्धौ तिथिह्रासं नवरात्रं यथार्थकम् ॥ ॥ घटस्थापनविधिः ॥ ॥ प्रतिपदि प्रातरभ्यंगं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छांतिपूर्वकदी-

महेश्वरः । पूर्णेन विधिना विप्र कर्तव्य च शिवप्रियम् ५२ दारिद्यनाशनं पुण्य लक्ष्मीवृद्धिप्रदायकम् । कर्तव्य विधिवद्भक्त्या श्रोतव्यं तु क
थानकम् ५३ गीतवाद्यादिसहित कुर्याज्जागरण निशि । ततः प्रभाते विमले स्नात्वा पूजां समापयेत् ५४ पूर्वोक्तविधिना तेन कर्तव्य शि
वपूजनम् । तत्सर्वं दापयेद्भक्त्या ब्राह्मणाय कुटुंबिने ५५ विप्राय वेदविदुषे पक्वान्नकारभोजनैः । गुरु सपत्निक पूज्य ततो भक्त्या क्षमापयेत
५६ यन्मया कृतसकल्पे व्रतेऽस्मिन्ब्राह्मण प्रभो । तत्सर्वं पूर्णतां यातु युष्मद्दृष्टिविलोकनात् ५७ एव यः कुरुते पार्थ शास्त्रोक्त रोटकव्रतम् ।
अनायासेन सिद्ध्यति ह्यथाः सर्वे मनोरथाः ५८ सभर्तृका महानारी करोति विधिवद्व्रतम् । पतिव्रता सा कल्याणी जायते नाऽत्र सशयः ५९॥
मयाऽनुष्ठितस्य सार्धमासत्रयात्मकस्य बिल्वव्रताख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धये ब्राह्मणायेतद्वायनप्रदान करिष्ये । ब्राह्मण सपूज्य ॥ वि
प्राय वेदविदुषे श्रोत्रियाय कुटुंबिने । नरकोत्तारणार्थाय शंकरः प्रीयतां नमः ।–इति दानमत्रः ॥ ॥ इति शिवपुराणे बिल्वरोटकसोमना
थव्रतकथोद्यापनम् ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लप्रतिपदि दौहित्रेण मातामहश्राद्ध कार्यम्॥ ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ–जातमात्रोऽपि दौहित्रो जीवत्यपि च मा
तुले ॥ कुर्यान्मातामहश्राद्ध प्रतिपद्याश्विने सिते ॥ इयं च सगवव्यापिनी ग्राह्येति निर्णयदीपे उक्तम्– प्रतिपद्याश्विने शुक्ले दौहित्र
स्त्वेकपार्वणम् ॥ श्राद्ध मातामह कुर्यात्सपिता संगवे सति ॥ जातमात्रोऽपि दौहित्रो जीवत्यपि हि मातुले ॥ प्रातस्संगवयोर्मध्ये या
स्वयुक् प्रतिपद्भवेत् ॥ अत्र सपिता इति विशेषणाज्जीवत्पितृक एवाधिकारी । अत एव पिंडरहित कुर्यात् । मुंडन पिंडदानं च
प्रेतकर्म च सर्वशः ॥ न जीवत्पितृकः कुर्याद्गुर्विणीपतिरेव च –इति निषेधात् ॥ ॥ अत्रैव नवरात्रारंभः ॥ तत्र परविद्धा

१ आश्विनमासपूजा ।

त्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । श्रुतिमंत्राः–आप्यायस्व० । दधिक्राव्णोअ० । घृतमिम० । मधुवाता० ... नारायणि नमो ऽस्तु ते । यत्पुरुषेण० आद-
पंचामृतस्नानम् ॥ ज्ञानमूर्ते भद्रकालि दिव्यमूर्ते सुरेश्वरि । स्नानं गृहाण देवि त्वं प्रीत्यर्थं प्रतिगृ० । तस्माद्यज्ञा० क्षुत्पिपासा० उत्तरी-
त्यवर्णं० स्नानम् । सूक्ष्मतंतुविनिर्मीतं नानावर्णविचित्रितम् । वस्त्रं गृहाण मे देवि प्रीत्यर्थं प्रतिगृ० । तस्माद्यज्ञा० क्षुत्पिपासा० उत्तरी-
यम् ॥ अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान् । गृहाण देवदेवि त्वं प्रसीद परमेश्वरि । अलंकारान् ॥ मलयाद्रिसमुद्भूतं कर्पूरागरुवा-
सितम् । मया निवेदितं भक्त्या चंदनं प्रतिगृह्यताम् । तस्माद्यज्ञा० गंधद्वारां० गंधम् । अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमेन समन्विताः । मया
निवेदिता भक्त्या प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । अक्षतान् ॥ मंदारपारिजाताश्च पाटली केतकी तथा । मारुतं मोगरं चैव शतपत्राणि चंपकम् ॥
तस्मादश्वा० मनसःकाम० पुष्पाणि ॥ अहिरिवभोगैः ऋक्० परिमलद्रव्याणि ॥ अथांगपूजा ॥ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि । महाकाल्यै०
गुल्फौ पू० । मंगलायै० जानुनी० । कात्यायिन्यै० ऊरू० । भद्रकाल्यै० कटी० । कमलायै० नाभिं० । शिवायै० उदरं० । क्षमायै०
हृदयं० । स्कंदायै० कंठं० । महिषासुरमर्दिन्यै० नेत्रे० । उमायै० शिरः पू० । विंध्यवासिन्यै० सर्वांगं पूजयामि ॥ दशांगं गुग्गुलं
धूपं चंदनागरुसंयुतम् ॥ मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि । यत्पुरुषं व्य० कर्दमेनप्रजाभू० धूपम् ॥ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निः
ना योजितं मया । दीपं गृहाण देवि त्वं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । ब्राह्मणोस्य० आपस्रजंतु० दीपम् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भि-
समन्वितम् । भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । चंद्रमा० आर्द्रांपुष्क० नैवेद्यम् ॥ आचमनीयम् ॥ मलयाचलसंभूतं कस्तु-
र्या च समन्वितम् । करोद्वर्तनकं देवि गृहाण परमेश्वरि । करोद्वर्तनम् ॥ इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्ति-

र्थायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसंततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्ध्यर्थं शारदनवरात्रे प्रतिपदि विहित कलशस्थापन दुर्गापूजां कुमारी पूजादि करिष्ये इति संकल्प्य । तदङ्गं गणपतिपूजनं, पुण्याहवाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध,ऋत्विग्वरणं च करिष्ये।ततो महीद्यौरितिभूमिं स्पृष्ट्वा । ओषधयस्समवदन्त इति यवान्निक्षिप्य । आकलशेष्विति कुंभं संस्थाप्य । इमंमेगंगे इति जलेनापूर्य । गंधद्वारामिति गंधम् । ओषधय इति सर्वौषधीः । कांडात्कांडादिति दूर्वा । अश्वत्थेव इति पंचपल्लवान् । स्योनापृथिवीति सप्तमृदः । याः फलिनीरिति फलम् । सहिरत्नानीति पंचरत्नानि । हिरण्यरूप इति हिरण्य क्षिप्त्वा, युवासुवासा इति वस्त्रेण सूत्रेण वा वेष्ट्य, पूर्णादर्वीति पूर्णपात्र कलशोपरि निधाय, तत्र वरुणं संपूज्य, जीर्णायां नूतनायां वा प्रतिमायां दुर्गामावाह्य पूजयेत् ॥ नूतनमूर्तिकरणेऽग्न्युत्तारण कुर्यात् ॥ अथ पूजा ॥ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ॥ पूजां गृहाण सुमुखी नमस्ते शंकरप्रिये ॥ सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितम् ॥ इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवि गणैः सह ॥ दुर्गादेवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ बलिं पूजां गृहाण त्वमष्टभिः शक्तिभिः सह ॥ शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभासने ॥ मम देवि वरं देहि सर्वैश्वर्यप्रदायिनि । सहस्रशीर्षा० हिरण्यवर्णा० इत्यावाहनम् ॥ नानाप्रभा समाकीर्णं नानावर्णविचित्रितम् । आसन कल्पित देवि प्रीत्यर्थं तव गृह्यताम् । पुरुष ए० तांमआ० इत्यासनम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीत तोयमुत्तमम् । पाद्य तेऽहं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि । एतावानस्य० अश्वपूर्वां० पाद्यम् ॥ गंधाक्षतैश्च संयुक्तं फलपुष्पयुत तव । अर्घ्यं गृहाण दत्त मे प्रसीद परमेश्वरी। त्रिपादूर्ध्व० कांसोस्मितां० अर्घ्यम् ॥ गंगा गोदावरी चैव यमुना च सरस्वती । ताभ्य आचमनीयार्थमानीत तोयमुत्तमम् । तस्माद्विरा० चन्द्रांप्र० आचमनीयम् ॥ पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधिसमन्वितम् । घृतं मधुशर्करया मी-

त्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । श्रुतिमंत्राः–आप्यायस्व० । दधिक्राव्णोअ० । घृतंमिमि० । मधुवाताऋ० । स्वादुःपवस्व० । एभिः पंचभिर्मंत्रैः
पंचामृतस्नानम् ॥ ज्ञानमूर्ते भद्रकालि दिव्यमूर्ते सुरेश्वरि । स्नानं गृहाण देवि त्वं नारायणि नमोऽस्तु ते । यत्पुरुषेण० आदि-
त्यवर्णे० स्नानम् । सूक्ष्मतंतुविनिर्मीतं नानावर्णविचित्रितम् । वस्त्रं गृहाण मे देवि प्रीत्यर्थं प्रतिगृ० । तस्माद्यज्ञा० क्षुत्पिपासा० उत्तरी-
यम् ॥ अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान् । गृहाण देवदेवि त्वं प्रसीद परमेश्वरि । अलंकारान् ॥ मलयाद्रिसमुद्भूतं कर्पूरागरुवा-
सितम् । मया निवेदितं भक्त्या चंदनं प्रतिगृह्यताम् । तस्माद्यज्ञा० गंधद्वारां० गंधम् । अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमेन समन्विताः । मया
निवेदिता भक्त्या प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । अक्षतान् ॥ मंदारपारिजाताश्च पाटली केतकी तथा । मारुतं मोगरं चैव शतपत्राणि चंपकम् ॥
तस्मादश्वा० मनसःकाम० पुष्पाणि ॥ अहिरिवभोगैः ऋक्० परिमलद्रव्याणि ॥ अथांगपूजा ॥ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि । महाकाल्यै०
गुल्फौ पू० । मंगलायै० जानुनी० । कात्यायिन्यै० उरू० । भद्रकाल्यै० कटी० । कमलायै० नाभिं० । शिवायै० उदरं० । क्षमायै०
हृदयं० । स्कंदायै० कंठं० । महिषासुरमर्दिन्यै० नेत्रे० । उमायै० शिरः पू० । विंध्यवासिन्यै० सर्वांगं पूजयामि ॥ दशांगं गुग्गुलं
धूपं चंदनागरुसंयुतम् ॥ मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि । यत्पुरुषंव्य० कर्दमेनप्रजाभू० धूपम् ॥ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निः
ना योजितं मया । दीपं गृहाण देवि त्वं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । ब्राह्मणोस्य० आपस्रजंतु० दीपम् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भि-
समन्वितम् । भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । चंद्रमा० आर्द्रांपुष्क० नैवेद्यम् ॥ आचमनीयम् ॥ मलयाचलसंभूतं कस्तु-
र्या च समन्वितम् । करोद्वर्तनकं देवि गृहाण परमेश्वरि । करोद्वर्तनम् ॥ इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्ति-

भवेज्जन्मनि जन्मनि। नाम्याआ॰ आद्रांयःकरि॰ फलम्।पूगीफल महद्दिव्यं नागवल्या दलैर्युतम्। कर्पूरेलासमायुक्तं तांबूलं प्र॰।तांबूलम्॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् ॥ यज्ञेनयज्ञ॰ यश्शुचिःप्र॰ मंत्रपुष्पांजलिम् ॥ अश्वदायेगोदाये इत्यादि प्रार्थयेत् ॥ ॐ श्रियेजातः॰नीराजनम्॥ श्रीसूक्त सपूर्ण पठित्वा पुष्पांजलिम्॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीन सुरेश्वरि । यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे । महिषघ्नि महामाये चामुंडे मुंडमालिनी । यशो देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे। नमस्कारम् ॥ ततो ऋग्विग्वरणम् ॥ अथ कुमारीपूजा ॥ सामान्यपूजामंत्रः– मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम्।नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहमिति ॥ एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थे तां विवर्जयेत् ॥ गंधपुष्पफलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते॥ द्विवर्षकन्यामारभ्य दशवर्षांतविग्रहाम् ॥ पूजयेत्सर्वकार्येषु यथाविध्युक्तमार्गतः ॥ कुमारिका द्विवर्षा तु त्रिवर्षा तु त्रिमूर्तिका।चतुर्वर्षा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी।षष्ठवर्षा तु काली स्यात्सप्तवर्षा तु चंडिका।अष्टवर्षा शांभवी च दुर्गा च नवमे स्मृता।दशवर्षा सुभद्रेति नामतःपरिपूजयेत्।प्रातःकाले विशेषेण कृत्वाभ्यंगं समाहिताः।आवाहयेत्ततःकन्यांमंत्रैरेभिः पृथक्पृथक्।प्रतिपदमारभ्य दशमीपर्यंतं कन्यां पूजयेत्। तत्र प्रतिपदि पूजामंत्रः-।जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजांगृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।१। द्वितीयायाम्–त्रिपुरां त्रिगुणाधारां त्रिमार्गज्ञानरूपिणीम् । त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ।२।तृतीयायाम्–कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।कल्याणजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।३। चतुर्थ्याम्–अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् । अनंतशक्तिभेदां तां रोहिणीं पूजयाम्यहम्।४।पंचम्यां, कामचारीं कामरात्रिं कालचक्रस्वरूपिणीम् । कामदां

करुणाधारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ षष्ठयाम्–उग्रैध्यातां चोग्ररूपां दुष्टासुरनिबर्हिणीम् । चार्वंगीं चंडिकां लोके पूजितां पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥ सप्तम्यां–सदानंदकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ।७। अष्टम्यां–दुर्गे मे दुस्तरे युद्धे भयदुःखविनाशिनीम् । पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ ८ ॥ नवम्याम्–सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सर्वसौभाग्यदायिनीम् । सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ९ ॥ इति कुमारीपूजनम् ॥ ॥ अष्टरात्रे न दोषोऽयं नवरात्रे तिथिक्षये ॥ सूतके पूजनं प्रोक्तं जपदानं विशेषतः ॥ देवीमुद्दिश्य कर्तव्यं तत्र दोषो न विद्यते ॥ रजस्वलां तथाऽऽशौचे ब्राह्मणैश्च सुपूजयेत् ॥ सभर्तृकाणां स्त्रीणां नवरात्रे गंधादिसेवनं न दोषाय । तदुक्तं हेमाद्रौ–गंधालंकारतांबूलपुष्पमालानुलेपनैः ॥ उपवासं न दुष्यंति दंतधावनमंजनम् ॥ इत्याश्विनशुक्लप्रतिपत्कृत्यम् ॥ ॥ अथ कार्तिकशुक्लप्रतिपत् ॥ सा पूर्वा ग्राह्या । पूर्वविद्धा प्रकर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्–इति पाद्मोक्तेः ॥वत्सरादौ वसंतादौ बलिराज्ये तथैव च ॥ तैलाभ्यंगमकुर्वाणो नरकं प्रतिपद्यते ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो द्यूतं चापि समाचरेत् । पूजनीयास्तथा गावस्त्याज्यं दोहनमंजसा ॥ ॥ अथ कथा ॥ ॥ वालखिल्या ऊचुः । प्रतिपद्युदयेऽभ्यंगं कृत्वा नीराजनं ततः । सुवेषः सत्कथागीतैर्दानैश्च दिवसं नयेत् १ शंकरस्तु तदा द्यूतं ससर्ज सुमनोहरम् । कार्तिके शुक्लपक्षे तु प्रथमेऽहनि सत्यवत् २ । प्रत्युवाच । वचश्चेदं देवीं प्रति सदाशिवः । कालक्षेपाय केषांचित् केषांचिद्धनहेतवे ३ केषांचिद्धननाशाय पश्य द्यूतं कृतं मया । तस्य त्वं कौतुकं पश्य भुवनं लापयाम्यहम् ४ ऊचेत्थं क्रीडितं ताभ्यां भवान्या च जितं तदा । पुनर्द्वितीयं भुवनं लापितं निर्जितं तया ५ पुनस्तृतीयं भुवनं लापितं निर्जितं त-

१ उग्रैः पुरुषैर्ध्यातां । अत्र, उग्रध्यानामिति उग्रहासामिति च पाठावन्यत्र दृश्येते ।

या । पुनर्द्यूतं पुनश्चर्मं पुनः पन्नगबंधनम् ६ शशिलेखां डमरुकं सर्वं तस्याऽप्यजीजयत् । निर्गतस्तु हरो गेहाच्चीरवल्कलधारकः ७ गंगातीर
समागत्य तस्थौ चिंतासमन्वितः । तस्मिन्क्षणे कार्तिकेयः खेलितुं च गतः क्वचित् ८ गंगातीराद्ययौ गेहमपश्यत्पथि शंकरम् । ईषत्क्रुद्ध वि
रक्तं च ननाम चरणौ पितुः ९ तेनापि मूर्ध्नि चाऽऽघ्रातः पुत्र याहि गृहं सुखम् । तव मात्रा जितश्चाऽहं गच्छामि गहनं वनम् १० स्कंद उवाच ।
कथं मात्रा शिवो देवो वनं कस्माच्च गच्छति । अहमप्यागमिष्यामि त्वत्पादौ सेवयाम्यहम् ११ शिव उवाच । विजित्य तव मात्रा तु क्षणं न स्थे
यमत्र वै । मम लोके तथेत्युक्त्वा क्वचिद्गच्छाम्यहं ततः १२ स्कंद उवाच । मा गच्छ त्वं महादेव द्यूतमार्गं प्रदर्शय । आनीयते मया जित्वा
सर्वं तव धनादिकम् १३ शिवेनापि तथेत्युक्त्वा द्यूतमार्गः प्रदर्शितः । स्कंदोऽपि गृहमागत्य पार्वतीं वाक्यमब्रवीत् १४ स्कंद उवाच । देवि
देवो गतः क्वासौ वृषभोऽत्रैव संस्थितः । शीर्षे च न विधुः कस्मान्मातः सत्यं वदाद्य मे १५ देव्युवाच । स्वयमेव कृतं द्यूतं स्वयमेव पराजितः ।
स्वयमेव गतः क्रोधात्माऽऽर्यावां स कथं मया १६ स्कंद उवाच । मया सह क्रीडितव्यं कथं तत्क्रीडनं त्विति । देव्यक्रीडत्तेन सार्द्धं ततः स्कंदेन नि-
र्जितम् १७ मयूरेण वृषस्तस्याः शक्त्या पन्नगबंधनम् । चर्पणेंदुस्ततोऽर्धीमं तत्सर्वं तेन निर्जितम् १८ कौपीनं निर्जितं चर्म गृहीत्वा वटुपाययौ ।
गंगातीरे यत्र शिवस्तत्रागत्य न्यवेदयत् १९ ततो देवी समीपे तु विघ्नराजः समाययौ । किमर्थं म्लानवदना देवि जाताऽसि तद्वद २०
देव्युवाच । मया जितो महादेवः स तु गेहाद्विनिर्गतः । आयास्यति वृषाद्यर्थमिति संचित्य संस्थितम् २१ तव भ्रात्रा तु वञ्चित्वा सर्वं
तस्मै निवेदितम् । नायास्यत्यधुना देव इति चिंतापराऽस्म्यहम् २२ गणेश उवाच । देवि शिक्षय मां द्यूतं जेष्यामि भ्रातरं हरम् । आनयि
ष्यामि सामग्रीं यथाहं स्यां सुतस्तव २३ इति पुत्रवचः श्रुत्वा तस्मै द्यूतमशिक्षयत् । स गृहीत्वा पाशयुगं सारिकाः शीघ्रमाययौ २४

पृष्ट्वा पृष्ट्वा यत्र देवः स्कंदो यत्र व्यवस्थितः ॥ गणेश उवाच । मयाऽऽनीताविमौ पाशौ सारिकाः पट एव च २५ क्रीड त्वं तु मया सार्द्धं
देवस्याग्रे ममाग्रज । इति भ्रातृवचः श्रुत्वा ह्युभाभ्यां क्रीडितं तदा २६ मूषकेण बलीवर्दं मयूरं चाप्यजीजयत् । शिवस्य सर्वविषयं स्कंदस्य च
तथैव च २७ गृहीत्वा स तु विघ्नेशस्तत्काले पार्वतीं ययौ । पार्वत्यपि च संतुष्टा गणेशं वाक्यमब्रवीत् २८ सम्यक्कृतं त्वया पुत्र नानीतोऽसौ
महेश्वरः । सामदानादिकं कृत्वा ह्यानयात्र महेश्वरम् २९ तथेत्युक्त्वा गणेशोऽसौ समारुह्य च मूषकम् । त्वरितं चाययौ तत्र गृहे नेतुं महेश्वरम्
३० ईश्वरस्तु समुत्थाय हरिद्वारं समागतः । नारदेरितवृत्तांतो विष्णुस्तत्र समागतः ३१ विष्णुरुवाच । त्र्यक्षां विद्यां कुरु शिव एकाक्षोऽहं भवा-
म्यहम् ॥ -एकश्चासावक्षः पाशक इति विग्रहेऽपि परिनिष्ठितरूपत्वात्काणो भवेति शब्दच्छलम् ॥ रावणेन तथेत्युक्तं काणो भव जनार्दन
३२ विष्णुरुवाच । ओतुंवत्पश्यसे मां त्वं तस्मादोतुर्भविष्यसि ॥ नारद उवाच । देव सिद्धं महत्कार्यमायाति स गणेश्वरः ३३ ज्ञातुमत्र भ-
वद्वृत्तं मूषकस्तस्य धर्षताम् । इति श्रुत्वा नारदस्य वचनं रावणोऽग्रतः ३४ कुर्वन्मार्जारवच्छब्दं मूषकोऽसौ पलायितः । मूषकं त्यज्य गण-
पः शनैः शनैरुपाययौ ३५ जातो विष्णुः पाश इति दूरतस्तद्विलोकितम् । प्रणिपत्य महादेवं विनयानतकंधरः ३६ गणेश उवाच । आगम्यतां दे-
व गेहं देवी मानपुरःसरम् । यदि नायासि गेहं त्वं प्राणांस्त्यक्ष्यति चांबिका ३७ त्वय्यागते मया सर्वं कार्यमेतदुपायनम् ॥ महादेव उवाच ।
एषा त्र्यक्षा महाविद्याऽधुना गणप निर्मिता ३८ अनया क्रीडते देवी ह्यागमिष्ये गृहं तदा ॥ गणेश उवाच । सर्वथैव क्रीडितव्यं देव्या
नास्त्यत्र संशयः ३९ आगम्यतां गृहं देव भ्रात्रा सह हि मा व्रज । इति तस्य वचः श्रुत्वा ईश्वरः सगणो ययौ ४० नारदोऽपि गतस्तत्र

१ मार्जारवत् । २ अग्रतोजगाम इत्यध्याहारेणाग्रिमश्लोकेनान्वयः । ३ आहूयतीति शेषः ।

या । पुनर्द्दप पुनश्चर्म पुनः पन्नगबंधनम् ६ शशिलेखां डमरुकं सर्वं तस्याऽप्यजीनयत् । निर्गतस्तु हरो गेहाच्चीरवल्कलधारकः ७ गंगातीर
समागत्य तस्थौ चिंतासमन्वितः । तस्मिन्क्षणे कार्तिकेयः खेलितुं च गतः क्वचित् ८ गंगातीराययौ गेहमपश्यत्पापि शंकरम् । ईषत्क्रुद्ध वि
रमं च ननाम चरणौ पितुः ९ तेनापि मूर्ध्नि चाऽऽघ्रातः पुत्र याहि गृह सुखम् । तव मात्रा जितश्चाऽहं गच्छामि गहन वनम् १० स्कंद उवाच ।
कथ मात्रा जितो देवो वन कस्माच्च गच्छति । अहमप्यागमिष्यामि त्वत्पादौ सेवयाम्यहम् ११ शिव उवाच । विजित्य तव मात्रा तु क्षण न स्थे
यमत्र वै । मम लोके तथेत्युक्त्वा क्वचिद्गच्छाम्यहं ततः १२ स्कंद उवाच । मा गच्छ त्व महादेव द्यूतमार्गं प्रदर्शय । आनीयते मया जित्वा
सर्वं तव धनादिकम् १३ शिवेनापि तथेत्युक्त्वा द्यूतमार्गः प्रदर्शितः । स्कंदोऽपि गृहमागत्य पार्वतीं वाक्यमब्रवीत् १४ स्कंद उवाच । देवि
देवो गतः क्वासौ वृषभोऽत्रैव संस्थितः । शीर्षे च न विधुः कस्मान्मातः सत्य वदाद्य मे १५ देव्युवाच । स्वयमेव कृत द्यूत स्वयमेव पराजितः ।
स्वयमेव गतः क्रोधात्प्रार्थितो स कथ मया १६ स्कंद उवाच । मया सह क्रीडितव्यं कथं तत्क्रीडन त्विति । देव्यक्रीडत्तेन सार्द्धं तत स्कंदेन नि-
र्जितम् १७ मयूरेण वृषस्तस्याः शक्त्या पन्नगबंधनम् । धूपेणेंदुस्ततोऽर्धीमे तत्सर्वं तेन निर्जितम् १८ कौपीन निर्जितं चर्म गृहीत्वा तदुपाययौ ।
गंगातीरे यत्र शिवस्तत्रागत्य न्यवेदयत् १९ ततो देवी समीपे तु विघ्नराजः समाययौ । किमर्थं म्लानवदना देवि जाताऽसि तद्वद २०
देव्युवाच । मया जितो महादेवः स तु गेहाद्विनिर्गतः । आयास्यति वृषाद्यर्थमिति संचिन्त्य संस्थितम् २१ तव भ्रात्रा तु तज्जित्वा सर्वं
तस्मै निवेदितम् । नायास्यत्यधुना देव इति चिंतापराऽस्म्यहम् २२ गणेश उवाच । देवि शिक्षय मां द्यूत जेष्यामि भ्रातर हरम् । आनयि
ष्यामि सामग्रीं यथाहं स्या सुतस्तव २३ इति पुत्रवचः श्रुत्वा तस्मै द्यूतमशिक्षयत् । स गृहीत्वा पाशयुगं सारिकाः शीघ्रमाययौ २४

कृतं विघ्नं शपेनं राक्षसाधमम् ५७ देव्युवाच । यस्माद्विघ्नं त्वया दुष्ट कृतं मद्दालकस्य तु । तस्मादयं तव रिपुर्विष्णुस्त्वां घातयिष्यति ५८ इति देव्या वचः श्रुत्वा सर्वे संक्षुब्धमानसाः । देवीशापे मनश्चक्रुर्नारदो वाक्यमब्रवीत् ५९ नारद उवाच । कोपं कुर्वंतु मा देवा नेयं शप्या कदाचन । सर्वेषामादिमायेयं यथायोग्यफलप्रदा । नायं शाप इयं देवी स्मर्तव्या तु विचक्षणैः ६० गंगा सदा तिष्ठतु रुद्रमस्तके बलाद्रमां वा नयतु क्षपाचरः । जायाहरस्याथ यथोचितास्मृतिश्चानंगतृष्णारहितः कुमारः ६१ अहं भ्रमामि धरणीं न स्थातव्यं तपोधनैः । सम्यग्देवि त्वया प्रोक्तं शृण्विदानीं वचो मम ६२ सर्वक्रोधापनुत्यर्थं ननर्त मुनिपुंगवः । कक्षानादं चकारोच्चैर्हाहाहीहीति चाब्रवीत् ६३ तस्य चेष्टां विलोक्याथ सर्वे हर्षमवाप्नुयुः ६४ देव्युवाच । भो भो विदूषकश्रेष्ठ कृतकृत्योऽसि नारद ।-विदूषको विनोदकृत् ॥ वरं वरय भद्रं ते यद्यन्मनसि रोचते ६५ नारद उवाच । याचयंतु वरं सर्वे को वा किं याचयिष्यति । सर्वे ते याचयिष्यंति यथाश्रेष्ठं ब्रुवंतु तत् ६६ शिव उवाच । सर्वं संक्षम्य तां देवि जितं यद्वृषभादिकम् । तन्मया तु द्यूतशतैर्न ग्राह्यं जगदंबिके ६७ देव्युवाच । माऽस्तु त्वया समं नाथ स्वप्नेऽपि मम चांतरम् । एतदेव वरं मन्ये क्रोधो माऽभून्ममोपरि ६८ कार्तिके शुक्लपक्षे तु प्रथमेऽहनि सत्यवत् । जयो लब्धो मया त्वत्तः सत्येनैव महेश्वर ६९ तस्माद्द्यूतं प्रकर्तव्यं प्रभाते तत्र मानवैः । तस्मिन्द्यूते जयो यस्य तस्य संवत्सरं जयः ७० विष्णुरुवाच । अहं यं यं करिष्यामि श्रेष्ठं वा लघुमेव वा । तथा तथा भवतु तद्धरमेनं वदाम्यहम् ७१ स्कंद उवाच । सदा मनस्तपस्यायां मम तिष्ठतु देवताः । कदापि विषये माऽस्तु देय एष वरो मम ७२ गणेश उवाच । संसारे यानि कार्याणि तदादौ मम पूजनम् । यांतु सिद्धिं मम कृपां विना सिद्ध्यंतु मा क्वचित् ७३ रावण उवाच । वेदव्याख्यानसामर्थ्यं मम शीघ्रं भवत्विति । सदाशिवे सदा चास्तु भक्तिर्मेऽव्यभिचारिणी ७४ नारद उवाच । क्रुद्धाक्रुद्धाश्च ये केचिन्मूर्खामूर्खाश्च ये

महोदरपिधाऽग्रतः । उपविष्टास्तु कैलासे देवारतत्र समागताः ४१ दृष्ट्वा देवीं महस्यादौ महेशो वाक्यमब्रवीत् । त्र्यक्षविद्या महादेवि गंगाद्वारे विनिर्मिता ४२ अनया जयसे त्वं च तदा त्वं सत्यभाषिणी ॥ देव्युवाच । वृषादि तव सामग्री मयेय छापिता शिव ४३ त्वया किं लाप्यते ब्रूहि दर्शयस्व सदोगतान् । इति श्रुत्वा वचस्तस्याः प्रेक्षताऽधोमुख हरः ४४ तस्मिन्क्षणे नारदेन स्वकौपीन समर्पितम् । वीणादंडमोपवीतमनेन प्रीयतामिति ४५ सदाशिवः मसन्नोऽभूत् क्रीडनं समचक्रतुः । यद्यथाचयते रुद्रस्तथा विष्णु प्रजायते ४६ यथथा- चयते देवी विपरीतः पतत्यसौ । स्वकीयाभरणाद्य च महादेवेन निर्जितम् ४७ स्कंदाळकारिकं सर्वं पुनराप्त हरेण च । ततो गणेश प्रोवाच वाक्यं सदसि गर्वितः ४८ न क्रीडितव्यं हे मातः पाशो लक्ष्मीपतिः स्वयम् । कृतो हरेण सर्वस्व ते हरिष्यति मत्पिता ४९ इति पुत्रवचः श्रुत्वा पार्वती क्रोधमूर्च्छिता । तथाविधां तामालोक्य रावणो वाक्यमब्रवीत् ५० रावण उवाच । पापिष्ठेनाऽद्य शप्तोस्मि दुर्बुद्धेन विष्णुना । अ धर्मोऽयं न कर्तव्य इत्युक्तं ते मया यतः ५१ देव्युवाच । सर्वान् शपिष्ये मत्साऽद्य धूर्तानितान्महाबलान् । सामर्थ्यं पश्य मे पुत्र धर्मत्या- गच्छ तथा ५२ देवं यस्मादबलया कपटं च कृतं त्वया । तस्मात्सदास्तु ते मूर्धा गगाभारप्रपीडितः ५३ इतस्ततः कुचेष्टां त्वं यतः शिक्षयसे मुने । स्वप्नेऽपि ते सुखं स्त्रीणां न कदाऽपि भविष्यसि ५४ यतः कृता त्वबलया सह माया त्वया हरे । एष वैरी रावणोऽयं तव भार्यां नयिष्यति ५५ । एष वैरी भविता य अथ पुनस्तव भार्यां नयिष्यतीति सम्बद्धयादेतदिद प्रयोगो दुष्टः ॥ हित्वा मां मातर पुत्र बालक त्व त्वया कृतम् । अतस्त्वं न युवा वृद्धो बाल एव भविष्यसि ५६ गणेश उवाच । अनेन चोरुरूपेण मूषकोऽयं पलायित । मध्ये मार्गे

१ भम,सदेव घयपतिस्याशेक्रमनमवस्पिविरिति श्लोकार्थं कश्चित्पुस्तकेषु दृश्यते । अर्द्ध भमामीत्येमे मारशोकवचनासदेव पुस्तकम्० भमत्वं स्वमेपीत्यर्धं स्कंदापकाशीनमित्यवगम्यते ॥

कृतं विघ्नं शपेनं राक्षसाधमम् ५७ देव्युवाच । यस्माद्विघ्नं त्वया दुष्ट कृतं मद्वाक्यस्य तु । तस्मादयं तव रिपुर्विष्णुस्त्वां घातयिष्यति ५८ इति देव्या वचः श्रुत्वा सर्वे संक्रुद्धमानसाः । देवीशापे मनश्चक्रुर्नारदो वाक्यमब्रवीत् ५९ नारद उवाच । कोपं कुर्वंतु मा देवा नेयं शप्या कदाचन । सर्वेषामादिमायेयं यथायोग्यफलप्रदा । नायं शाप इयं देवी स्मर्तव्या तु विचक्षणैः ६० गंगा सदा तिष्ठतु रुद्रमस्तके बलादिमां वा नयतु क्षपाचरः । जायाहरस्याथ यथोचितास्मृतिश्चानंगतृष्णारहितः कुमारः ६१ अहं भ्रमामि धरणीं न स्थातव्यं तपोधनैः । सम्यग्देवि त्वया प्रोक्तं शृण्विदानीं वचो मम ६२ सर्वक्रोधापनुत्यर्थं ननर्त मुनिपुंगवः । कक्षानादं चकारोच्चैर्हाहाहीहीति चाब्रवीत् ६३ तस्य चेष्टां विलोक्याथ सर्वे हर्षमवाप्नुयुः ६४ देव्युवाच । भो भो विदूषकश्रेष्ठ कृतकृत्योऽसि नारद ।-विदूषको विनोदकृत् ॥ वरं वरय भद्रं ते यद्यन्मनसि रोचते ६५ नारद उवाच । याचयंतु वरं सर्वे को वा किं याचयिष्यति । सर्वे ते याचयिष्यंति यथाश्रेष्ठं ब्रुवंतु तत् ६६ शिव उवाच । सर्वं संक्षम्य तां देवि जितं यद्वृषभादिकम् । तन्मया तु द्यूतशतैर्न ग्राह्यं जगदंबिके ६७ देव्युवाच । माऽस्तु त्वया समं नाथ स्वप्नेऽपि मम चांतरम् । एतदेव वरं मन्ये क्रोधो माऽभून्ममोपरि ६८ कार्तिके शुक्लपक्षे तु प्रथमेऽहनि सत्यवत् । जयो लब्धो मया त्वत्तः सत्येनैव महेश्वर ६९ तस्माद्द्यूतं प्रकर्तव्यं प्रभाते तच्च मानवैः । तस्मिन्द्यूते जयो यस्य तस्य संवत्सरं जयः ७० विष्णुरुवाच । अहं यं यं करिष्यामि श्रेष्ठं वा लघुमेव वा । तथा तथा भवतु तद्वरमेनं वदाम्यहम् ७१ स्कंद उवाच । सदा मनस्तपस्यायां मम तिष्ठतु देवताः । कदापि विषये माऽस्तु देय एष वरो मम ७२ गणेश उवाच । संसारे यानि कार्याणि तदादौ मम पूजनम् । यांतु सिद्धिं मम कृपां विना सिद्ध्यंतु मा क्वचित् ७३ रावण उवाच । वेदव्याख्यानसामर्थ्यं मम शीघ्रं भवत्विति । सदाशिवे सदा चास्तु भक्तिर्मेऽव्यभिचारिणी ७४ नारद उवाच । क्रुद्धाक्रुद्धाश्च ये केचिन्मूर्खामूर्खाश्च ये

जना । मद्वाक्य सत्यमित्येव मानयंतु सदा सुराः ७५ इत्युक्त्वांतर्हिताः सर्वे देवा रुद्रपुरोगमाः । तस्मात्प्रतिपदि द्यूतं कुर्या-
त्सर्वोऽपि वै जनः ७६ द्यूतं निषिद्धं सर्वत्र हित्वा प्रतिपदं बुधाः । तस्योत्थमादिज्ञानाय कुर्याद्द्यूतमतंद्रितः ७७ विशेषवत्त्व
मोक्तव्यं सुहृद्भिर्ब्राह्मणैः सह । पक्वान्नादिविशेषमित्यर्थः ॥ योषिताभिश्च सहितं नेया सा च भवेन्निशा ७८ ततः संपूजयेन्मानैरंतः
पुरसुवासिनीः । पदातिजनसंघातान् ग्रैवेयैः कटकैः शुभैः ७९ स्वनामांकैः स्वयं राजा तोषयेत्स्वजनान्पृथक् । वृषभान्महिषांश्चैव
युद्ध्यमानान्परैः सह ८० गजानश्वांश्च योधांश्च पदातीन्समलंकृतान् । मंचारूढः स्वयं पश्येन्नटनर्तकचारणान् ८१ योधयेच्च त्रास-
येच्च गोमहिष्यादिकं तथा । ततो परार्द्धसमये पूर्वस्यां दिशि काश्यप ८२ मार्गपाली प्रबध्नीयाद्दुर्गस्तंभे ऽपि पादपे । पाली कु
शमयीं दिव्यां लंबकैर्बहुभिर्नयेत् ८३ दर्शयित्वा गजानश्वान्सायमस्यास्तले नयेत् । कृतहोमैर्द्विजेंद्रैश्च बध्नीयान्मार्गपालिकाम् ८४
नमस्कारं ततः कुर्यान्मंत्रेणानेन सुव्रत ८५ मार्गपालि नमस्तेऽस्तु सर्वलोकसुखप्रदे । विधेयैः पुत्रदाराद्यैः पुनरेहि व्रतस्य मे ८६
नीराजनं च तत्रैव कार्यं राष्ट्रजयप्रदम् । मार्गपाली समुल्लिख्य नीरुजास्तु सुखान्विताः । तस्मादेतत्प्रकुर्वीत द्यूताद्य विधिपूर्वकम् ८७
॥ इति सनत्कुमारसंहितायां द्यूतविधिः ॥ ॥ तत्रैव । वालखिल्या ऊचुः । पूर्वविद्धा प्रकर्तव्या प्रतिपद्बलिपूजने । वर्धमा-
नतिथिर्नंदा यदा सार्द्धत्रयात्मिका १ द्वितीया वृद्धगामित्वादुत्तरा तत्र चोच्यते । बलिमालिख्य दैत्येंद्रं वर्णकैः पंचरंगकैः २ गृहम
ध्यमशालायां विंध्यावल्या सहाऽसितम् । जिह्वा चार्वक्षिणीप्रांते करयोः पादयोस्तले ३ रक्तवर्णेनास्यकेशान् कृष्णेनैव समालिखेत् ।
सर्वांगं पीतवर्णेन शस्त्राद्य नीलवर्णकैः ४ वस्त्रं च श्वेतवर्णेन यथाशोभं प्रकल्पयेत् । सर्वाभरणशोभाढ्यं द्विभुजं नृपचिह्नयुक् ५ कोको

लिखेद्गृहस्यांतः शय्यायां शुक्लतण्डुलैः । मंत्रेणाऽनेन संपूज्य षोडशैरुपचारकैः ६ बलिराज नमस्तुभ्यं दैत्यदानवपूजित । इंद्रप्रभो ऽम-
राराते विष्णुसान्निध्यदो भव ७ बलिमुद्दिश्य दीयंते दानानि मुनिपुंगवाः । यान्यहान्यक्षयान्याहुर्मयैतत्संप्रदर्शितम् ८ कौमुत्प्रीतिर्बले
यस्माद्धियतेऽस्यां युधिष्ठिर । पार्थिवैंद्रैर्मुनिवरास्तेनेयं कौमुदी स्मृता ९ यो यादृशेन भावेन तिष्ठत्यस्यां युधिष्ठिर । हर्षदैन्यादिरूपेण
तस्य वर्षं प्रयाति वै १० बलिपूजा विधायैव पश्चाद्गोक्रीडनं चरेत् । गवां क्रीडादिने यत्र रात्रौ दृश्येत चंद्रमाः ११ सोमो राजा पशून्हं-
ति सुरभीः पूजकांस्तथा । प्रतिपद्दर्शसंयोगे क्रीडनं च गवां मतम् १२ परविद्धेषु यः कुर्यात्पुत्रदारधनक्षयः । अलंकार्यास्तदा गावो ग्रा-
साद्यैश्च स्युरर्चिताः १३ गीतवादित्रनिर्घोषैर्नयेन्नगरबाह्यतः । आनीय च गृहं पश्चात्कुर्यान्नीराजनाविधिम् १४ अथ चेत्प्रतिपत्स्वल्पा
नारी नीराजनं चरेत् । द्वितीयायां तदा कुर्यात्सायं मंगलमालिकाम् १५ एवं नीराजनं कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते । प्रतिपत्पूर्वविद्धैव व-
ष्टिकाकर्षणे भवेत् १६ कुशकाशमयीं कुर्याद्वष्टिकां सुदृढां नवाम् । देवद्वारे नृपद्वारेऽथवा नेया चतुष्पथे १७ तामेकतो राजपुत्रा हीन-
वर्णास्तथैकतः । गृहीत्वाऽऽकर्षयेयुस्तां यथाचारं मुहुर्मुहुः १८ समसंख्या द्वयोः कार्याः सर्वेपि बलवत्तराः । जयोऽत्र हीनजातीनां जयो
राज्ञस्तु वत्सरम् १९ उभयोः पृष्ठतः कार्या रेखा स्वाकर्षकोपरि । रेखांते यो नयेत्तस्य जयो भवति नान्यथा २० जयचिह्नमिदं राजा
विदधीत प्रयत्नतः २१ ॥ ॥अथान्नकूटं गोवर्द्धनोत्सवश्च ॥ ॥ सनत्कुमारसंहितायां— वालखिल्या ऊचुः । कार्तिकस्य सिते पक्षे
अन्नकूटं समाचरेत् । गोवर्द्धनोत्सवश्चैव श्रीविष्णुः प्रीयतामिति १ ऋषय ऊचुः । कोऽसौ गोवर्द्धनो नाम कस्मात्तं परिपूजयेत् । कस्मात्त-
दुत्सवः कार्यः कृते किं च फलं भवेत् २ वालखिल्या ऊचुः । एकदा भगवान्कृष्णो गतो गोपालकैः सह । गृहीत्वा गाः प्रतिपदि का-

तिक्स्य सिते धने ३ तत्र नानाविधा लोका गोप्यश्चापि सहस्रशः। गोवर्द्धनसमीपे तु कुर्वंत्युत्सवमादरात् ४ खाद्य लेह्य च चोष्य च पेयं नानाविध कृतम्। कृता नगास्तथा नाना दृश्यति च पुरे जना ५ नाना पताकाः संगृह्य केचिद्धावंति चाग्रतः। केचिद्गोपाः प्रनृत्यंति स्तुवंति च तथापरे ६ इतस्ततो वितानानि तोरणानि सहस्रशः। दृष्ट्वेतत्कौतुकं कृष्णो वाक्यमेतदुवाच ह ७ कृष्ण उवाच। उत्सवः क्रियते कस्य देवता का च पूज्यते। पक्वान्नसादनार्थाय कल्पितो वोत्सवोऽधुना ८ न भक्षयंति ये देवास्तेभ्योऽन्न तु प्रदीयते। प्रत्यक्षभोजिनो देवास्तेभ्योऽन्नं नैव दीयते ९ ईदृशी भवद्बुद्धि गोपाला वेधसा कृताः १० गोपाला ऊचुः। एव मा वद कृष्ण त्व शक्रस्तुमहोत्सवः। वार्षिकः क्रियतेऽस्माभिर्देवेंद्रस्य च तुष्टये ११ इन्द्र पूजय भद्र ते भविष्यति न संशयः। अथ कुर्वेति देवेंद्रमहोत्सवमिम नरः १२। कुर्वे इति प्रतिजानातीति शेषः। इलोप आर्षः। नर इति राज्ञो लक्षणम्॥ दुर्भिक्ष च तथावृष्टिर्देशे तस्य न जायते। तस्मात्त्वमपि कृष्णात्र कुरूत्सवमनेकधा १३ कृष्ण उवाच। अय गोवर्द्धनः साक्षात्कृषिसौभिक्ष्यकारकः। मथुरास्थैर्व्रजस्थैश्च पूर्वं चा य प्रपूजितः १४ हित्वैनमधुना लोके दृश्येंद्रः पूज्यते कथम्। उत्सव क्रियमाण च प्रत्यक्षोयं भुनक्ति च। करिष्यति कृपिं सम्यगुपसर्गान्हनिष्यति १५ यदा यदा सकष्टं मे महदागत्य जायते। तदा तदा पूजयामि ह्यस्य गोवर्द्धन गिरिम् १६ श्रवणे श्रवणे गोपा वार्ता कुर्वंति किंस्विदम्। तेषां मध्ये कैश्चिदुक्तं कृष्णोक्त क्रियतामिति १७ यदा खादति चान्न चेन्नेगो गोवर्धनस्तया। तदा कृष्णोक्तमखिल सत्यमेव भविष्यति १८ सर्व एव तदा गोपा विनिश्चित्य च नदजम्। वचन प्राहुरित्यं चेन्निश्चयोऽस्ति तदा कुरु। सर्वेषामग्रणीर्भूत्वा गोवर्द्धनमहोत्सवम् १९ ततः कृष्णस्तथेत्युक्त्वा उत्सवे कृतनिश्चयः। नाना सामग्रिकं चक्रुर्यथोक्तं नदसूनना २० नाना वस्त्राणि पात्राणि विस्तृतानि नगाग्रतः। तत्र दत्तोऽन्नपुजस्तु यथा गोवर्द्धनो महान् २१

भक्तं सूपानि शाकाश्च कांजिकं वटकास्तथा । राटकाः पूरिकाद्य च [illegible]
पम् । कथिकाद्यं सर्वमपि तत्र दत्त्वा वचोऽब्रवीत् २३ कृष्ण उवाच । मंत्रं पठित्वा गोपाला नेत्रे संमीलयंतु च । गोवर्द्धनेन भोक्तव्यं सर्व-
मन्नं न संशयः २४ गोवर्द्धन धराधार गोकुलत्राणकारक । बहुबाहु कृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव २५ लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण
संस्थिता । घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु २६ पठंत्विदं मंत्रयुगं सर्वे मुद्रितलोचनाः । कृष्णो गोवर्द्धनं विश्य सर्वमन्नमभक्षयत् २७ अ-
क्षणावसरे कैश्चिज्जनैर्दृष्टो गिरिस्तदा । अतीवाऽभूत्तदाश्चर्यं तच्चेतसि मुनीश्वराः २८ ततो नाडीद्वयात्कृष्णो गोपान्वाक्यमुवाच सः । अहो
गोवर्द्धनेनात्र क्षणाद्भुक्तमिदं स्फुटम् २९ पश्यंतु सर्वे गोपालाः प्रत्यक्षोऽयं न संशयः । यद्यस्ति सुखवांच्छा वः कुर्वंत्वस्य महोत्सवम् ३०
इति श्रुत्वा वचस्तस्य सर्वे विस्मितमानसाः । गोवर्द्धनोत्सवं चक्रुरिंद्राच्छतगुणं ततः ३१ इंद्रोत्सवं द्रष्टुकामः समागच्छत नारदः । गोवर्द्धनो-
त्सवं दृष्ट्वा देवेंद्रस्य सभां ययौ ३२ देवेंद्रेण कृतातिथ्यो वारंवारं प्रणोदितः । नोवाच वचनं किंचिद्देवेंद्रः प्रत्यभाषत ३३ इंद्र उवाच ।
युष्माकं कुशलं विप्र वर्तते वा न वेति वा । मदग्रे कथ्यतां दुःखं मुनीश्वर हराम्यहम् ३४ नारद उवाच । अस्माकं किं मुनींद्राणामिंद्र
दुःखस्य कारणम् । परं गोवर्द्धनः शैलः शक्रो जातो विलोक्यते ३५ त्वदुत्सवे पूज्यतेऽसौ गोपालैर्गोकुले गिरिः । अतःपरं यज्ञभागान्ग्रहि-
ष्यति स एव हि ३६ इंद्रासनं तथेंद्राणी क्रमात्स च ग्रहिष्यति । यस्य वीर्यं च शस्त्रं च तस्य राज्यं प्रजायते ३७ किमस्माकं मुनींद्राणां
य एवेंद्रासने वसेत् । वर्षाद्वा मासषट्काद्वा द्रष्टव्योऽसौ सभागतः ३८ इत्थमुक्त्वा च देवेंद्रं प्रययौ नारदो भुवि । इत्थं नारदवाक्यं च
श्रुत्वा शक्रोऽभ्यभाषत ३९ अहो आवर्तसंवर्ता द्रोणनीलकपुष्कराः । सर्वे मेघा जलं गृह्य करकाभिः समन्वितम् ४० प्रयांतु गोकुले

शीघ्रं मारयतु च गोपकान् । गोवर्द्धनं स्फोटयतु वज्रपातैरनेकशः ४१ पातयतु च गाश्चापि गृहाण्युच्चाटयतु च ४२ ततो घनघटाघो
पो गोकुलेऽभून्मुनीश्वराः । जात आरादन्धकारो मध्याह्नसमये तदा ४३ कंपितास्तु तदा गोपाः किमकांडमुपस्थितम् । ववर्षुर्बहु पानीयं
करकाभिस्तदा घनाः ४४ गोपा ऊचुः । हा कृष्ण कृष्ण हे कृष्ण किमिदानीं विधीयताम् । मृताः स्म सर्वे गोपालाः कुपितोऽद्य हि वासवः
४५ कृष्ण उवाच । निमील्याक्षीणि भो गोपा ध्येयो गोवर्द्धनो गिरिः । रक्षाकर्ता स एवास्ति नान्योस्ति जगतीतले ४६ इत्युक्त्वोत्पाट्य
त शैलं तत्तले स्थापितास्तु ते । ततः प्रोवाच वचनं गोपान्प्रति बलाग्रजः ४७ श्रीकृष्ण उवाच । अहो गोवर्द्धनेनैतत्स्थलं दत्तं व्रज त्विह । अन्यः
कोऽस्ति स्थलं दातुं प्रत्यक्षोऽयं नगोत्तम ४८ एवं सप्तदिनं तोयं वृष्टं मुसलधारया । नाना देशा ययुर्नाशं न गोपाः शरणं ययुः ४९ गोवर्द्धनस्य
नाम्नैव कृष्णो नित्यं प्रयच्छति । पक्वान्नानि च गोप्येभ्यस्तत्र ते सुखमावसन् ५० इत्येवं कौतुकं दृष्ट्वा सत्यलोकं ययौ मुनिः ५१ ना-
रद उवाच । ब्रह्मंस्त्वं किं प्रसुप्तोऽसि जायते सृष्टिनाशनम् । तस्माच्छीघ्रं गोकुले त्वं गत्वा वृष्टिं निवारय ५२ ब्रह्मोवाच । किमर्थं जा
यते वृष्टिः कथं सृष्टिविनाशनम् । कश्चिद्दैत्यः समुत्पन्नः सर्वमाख्याहि मे मुने ५३ नारद उवाच । नोत्पन्नो दैत्यराट् कश्चिदयत्नः शक्रो
त्सवो भुवि । यादवैरिति संक्रुद्ध इंद्र एव प्रवर्षति ५४ इति तस्य वचः श्रुत्वा हंसमारुह्य वै विधिः । आगतो यत्र शक्रोऽस्ति क्रोधाद्देवः
प्रवर्षति ५५ ब्रह्मोवाच । कथं व्यवसिता बुद्धिरीदृशी ते सुरेश्वर । त्रैलोक्यनाथो भगवान्निर्जेतव्यः कथं त्वया ५६ एकयैव करांगुल्या
यस्य गोवर्द्धनो धृतः । ईर्ष्या कथं तेन साकं त्वया शक्र विधीयते ५७ इति ब्रह्मवचः श्रुत्वा मेघान्संस्तभ्य वासवः । प्रणिपत्य च त
कृष्णं शक्रो वचनमब्रवीत् ५८ क्षंतव्या मत्कृतिर्विष्णो दासोऽहं शरणागतः । यद्रोचते तदस्मदेयमपराधापनुत्तये ५९ कृष्ण उवाच ।

अज्ञात्वा तव सामर्थ्यं गोपालैरचितं त्विदम् । एषां दंडस्तु योग्योऽयं सम्यगेव त्वया कृतः ६० अहं कनीयाँस्ते भ्राता तवाज्ञापरिपालकः । शरणागतजातीनां रक्षणं तु मया कृतम् ६१ यदि प्रसन्नो देवेश उत्सवोऽयं प्रदीयताम् । गोवर्द्धनाय गिरये गोकुलं रक्षितं यतः ६२ वालखिल्या ऊचुः । शक्रोऽपि च तथेत्युक्त्वा तत्रैवांतरधीयत । गते शक्रे गिरींद्रं तं संस्थाप्य हरिरब्रवीत् ६३ कृष्ण उवाच । गोपाः पश्यंतु माहात्म्यमद्भुतं शैलजं तु यत् । अद्यारभ्य प्रकर्तव्यो महान्गोवर्द्धनोत्सवः ६४ गोवर्द्धनेन शैलेन निखिला तु धरा धृता । एतत्सारमजानद्भिः कथं संक्रीडितं पुरा ६५ अद्य पर्वतराजस्तु सर्वं ब्रूते ममाग्रतः । एतत्सेवाप्रभावेन बलं लब्धं मया महत् ६६ प्रतिसंवत्सरं तस्मादन्नकूटं विधीयताम् । गवां भवति कल्याणं पुत्रपौत्रादिसंततिः ६७ ऐश्वर्यं च सदा सौख्यं भवेद्गोवर्द्धनोत्सवात् । कृतं यत्कार्तिके स्नानं जपहोमार्चनादिकम् । सर्वं निष्फलतां याति नो कृते पर्वतोत्सवे ६८ एवमुक्तास्तु ते गोपाः सत्यं सर्वममन्यत । ययुः कृष्णादयः सर्वे नवमेऽहनि गोकुले ६९ वालखिल्या ऊचुः । इत्येतत्सर्वमाख्यातमस्माभिस्तु मुनीश्वराः । श्रीकृष्णस्य तु संतुष्ट्यै ह्यन्नकूटं विधीयताम् ७० नानाप्रकारशाकादिदेशकालोचितानि च । पक्वान्नानि विचित्राणि कुर्याच्छक्त्यनुसारतः ७१ सर्वान्नपर्वतं कुर्याच्छ्रीकृष्णाय निवेदयेत् । गोवर्द्धनस्वरूपाय मंत्रौ कृष्णोदितौ पठन् ७२ ॥-यत्कृष्णोरूपंकृत्वेति मंत्रौ ॥ एवं यः कुरुते मर्त्यो विष्णुलोके महीयते ७३ इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां प्रतिपत्कृत्यम् ॥ ॥छ॥ ॥ अथ द्वितीयाव्रतानि ॥ ॥ कार्तिकशुक्लद्वितीया यमद्वितीया । साऽपराह्णव्यापिनी ग्राह्या । ऊर्जे शुक्लद्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद्यमम् । स्नानं कृत्वा भानुजन्यां यमलोकं न पश्यति ॥ ऊर्जे शुक्लद्वितीयायां पूजितस्तर्पितो यमः ॥ वेष्टितः किन्नरैर्हृष्टैस्तस्मै यच्छति वांछितम् । -इति स्कांदात् ॥ - दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्तौ वा परैवेति

युग्मवाक्यात् ॥ प्रथमा श्रावणे मासि तथा भाद्रपदे परा । तृतीयाऽश्वयुजे मासि चतुर्थी कार्तिकी भवेत् ॥ श्रावणे कलुषानाम्नी तथा
भाद्रे च निर्मला ॥ आश्विने प्रेतसंचारा कार्तिके याम्यता मता —इति ॥ चतस्रो द्वितीया उपक्रम्य प्रथमायां किञ्चित्प्रायश्चित्तम्, द्वि
तीयायां सरस्वतीपूजा, तृतीयायां श्राद्ध, चतुर्थ्यां यमपूजन कर्तव्यम् ॥ कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां युधिष्ठिर ॥ यमो यमुनया
पूर्वं भोजित स्वगृहेऽर्चितः । अतो यमद्वितीयेयं त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥ अस्यां निजगृहे पार्थ न भोक्तव्यमतो नरैः ॥ यत्नेन
भगिनीहस्ताद्भोक्तव्य पुष्टिवर्द्धनम् ॥ दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विशेषतः ॥ स्वर्णालंकारवस्त्रान्नपूजासत्कारभोजनैः ॥ स-
र्वा भगिन्यः संपूज्या अभावे प्रतिपन्नकाः । तत्स्थानेन माता ॥ पितृव्यभगिनीहस्तात्प्रथमायां युधिष्ठिर ॥ मातुलस्य सुताहस्ताद्विती
यायां युधिष्ठिर ॥ पितुर्मातुः स्वसुश्चैव तृतीयायां तयोः करात् ॥ भोक्तव्य सहजायाश्च भगिन्याहस्ततः परम् ॥ सर्वासु भगिनीहस्ता
द्भोक्तव्य बलवर्धनम् ॥ धन्य यशस्यमायुष्य धर्मकामार्थसाधकम् ॥ यस्यां तिथौ यमुनया यमराजदेव संभोजितो निजकरात्स्वसृसौह
देन ॥ तस्यां स्वसु॰ करतलादिह यो भुनक्ति प्राप्नोति रत्नधनधान्यमनुत्तम सः ॥ इति हेमाद्रौ भविष्ये यमद्वितीयाविधिः ॥ ॥ अथ
कथा ॥ वालखिल्या ऊचु । कार्तिकस्य सिते पक्षे द्वितीया यमसंज्ञिता । तत्रापराह्णे कर्तव्य सर्वथैव यमार्चनम् १ प्रत्यह यमुनाऽऽगत्य
यममभ्यर्थयत्पुरा । भ्रातर्मम गृहे याहि भोजनार्थं गणावृत २ अद्य श्वो वा परश्वो वा प्रत्यह वदते यमः । कार्यव्याकुलचित्तत्वादवका-
शो न जायते ३ तदैकदा यमुनया बलात्कारान्निमंत्रितः । स गत कार्तिके मासि द्वितीयायां मुनीश्वरा । नारकीयजनान्मुक्त्वा गणैः सह रवेः
सुत ४ कृतातिथ्यो यमुनया नानापाका कृतास्तथा । कृताभ्यगो यमुनया तैलैर्गंधमनोहरैः ५ उद्वर्तन लापयित्वा स्नापितः सूर्यनंदनः

ततो ऽलंकारिकं दत्तं नानावस्त्राणि चंदनम् ६ मा[illegible]नि च प्रदत्तानि मंचोपरि ह्युपाविशत् । पक्वान्नानि विचित्राणि कृत्वा सा स्वर्णभाजने ७ यमं च भोजयामास यमुना प्रीतमानसा । भुक्त्वा यमोपि भगिनीमलंकारैः समर्चयत् ८ नानावस्त्रैस्ततः प्राह वरं वरय भामिनि । इति तद्वचनं श्रुत्वा यमुना वाक्यमब्रवीत् ९ [illegible]मुनोवाच । प्रतिवर्षं समागच्छ भोजनार्थं तु मद्गृहे । अद्य सर्वे मोचनीयाः पापिनो नरकाद्यम १० ये चैव भगिनीहस्तात्करिष्यंति च भोजनम् । तेषां सौख्यप्रदो हि त्वमेतदेव वृणोम्यहम् ११ यम उवाच । यमुनायां तु यः स्नात्वा संतर्प्य पितृदेवताः । भुनक्ति भगिनीगेहे भगिनीं पूजयेदपि १२ कदाचिदपि मद्द्वारं न स पश्यति भानुजे । वीरेशैशानदिग्भागे यमतीर्थं प्रकीर्तितम् १३ तत्र स्नात्वा च विधिवत्संतर्प्य पितृदेवताः । पठेदेतानि नामानि आमध्याह्नं नरोत्तमः । सूर्यस्याभिमुखो मौनी दृढचित्तः स्थिरासनः १४ यमो निहंता पितृधर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः । भूताधिपो दत्तकृतानुसारी कृतांतमेतद्दशभिर्जपंति १५ ।-एतानि च तानि दश च तैः, नामदशकेनेत्यर्थः॥ ततो यमेश्वरं पूज्य भगिनीगृहमाव्रजेत् । मंत्रेणानेन च यथा भोजितः पूर्णमादरात् १६ भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुंक्ष्व भक्ष्यमिदं शुभम् । प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः १७ ततः संतोष्य भगिनीं वस्त्रालंकरणादिभिः । स्वप्नेपि यमलोकस्य भविष्यति न दर्शनम् १८ नृपैः कारागृहे ये च स्थापिता मम वासरे । अवश्यं ते प्रेषणीया भोजनार्थं स्वसुर्गृहे १९ विमोक्तव्या मया पापा नरकेभ्यो ऽद्य वासरे । यद्येवं धिक्करिष्यंति ते दंड्या मम सर्वथा २० कनीयसी स्वसा नास्ति तदा ज्येष्ठागृहं व्रजेत् । तदभावे सपत्नायाः पैतृव्यास्तदभावतः २१ तदभावे मातृशील्या मातुलस्याथवा तथा । सापत्नगोत्र संबंधैः कल्पयेदथाक्रमम् २२ । मातृशील्याः मातृसमशीलायाः, मातुर्भगिन्या वा ॥ सर्वाभावे माननीया भगिनीकाचिदेव हि । गोनद्याद्य-

थवा तस्या ह्यभावे सति कारयेत् २३ तदभावेऽप्यरण्यादि कल्पयित्वा सहोदराम् । अस्यां निजगृहे देवि न भोक्तव्य कदाचन २४ ये मुं-
जंति दुराचारा नरके ते पतंति च । स्नेहेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्य पुष्टिवर्धनम् २५ दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विशेषतः । श्रावणे
तु पितृव्यस्य कन्याहस्तेन भोजयेत् २६ मातुलस्य सुताहस्ताद्द्वितीयाद्वयमासके । पितुर्मातु स्वसुः कन्ये आश्विने तु तयोः करात् २७
पितृष्वसेयी मातृष्वसेयी च ॥ अवश्यं कार्तिके मासि भोक्तव्यं भगिनीकरात् । एवमुक्त्वा धर्मराजो ययौ संयमिनीं ततः २८ तस्माद्यपि-
वराः सर्वे कार्तिकव्रतकारकाः । भुंजतु भगिनीहस्तात्सत्यं सत्य न संशयः । २९ यमद्वितीयां य प्राप्य भगिनीगृहभोजनम् । न कुर्या
द्वर्षजं पुण्य नश्यतीति रवे सुताम् ३० या तु भोजयते नारी भ्रातरं युग्मके तिथौ । अर्चयेच्चापि तांबूलैर्न सा वैधव्यमाप्नुयात् ३१
भ्रातुरायुःक्षयो नून न भवेत्तर्हि कर्हिचित् । अपराह्णव्यापिनी सा द्वितीया भ्रातृभोजने ३२ अज्ञानाद्यदि वा मोहान्न भुक्त भगिनीगृहे ।
प्रवासिना वाऽभावाद्वा ज्वरितेनाऽथ बंदिना ३३ एतदाख्यानक श्रुत्वा भोजनस्य फलं लभेत् ॥ ३४ ॥ इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां यम-
द्वितीयाख्यानक संपूर्णम् ॥ ॥ अत्रैव भ्रातृद्वितीयाविधिस्तिथितत्त्वे—यमं च चित्रगुप्तं च यमदूतांश्च पूजयेत्॥अर्घ्यश्चात्र प्रकर्तव्यो यमाय
सहजद्वयैः ॥ भ्रातृभगिनीभिः सह अर्घनमन्त्रस्तु—एह्येहि मार्तंडज पाशहस्त यमांतकालोकधराऽमरेश ॥ भ्रातृद्वितीयाकृतदेवपूजां गृहाण
चार्घ्यं भगवन्नमस्ते । १ । धर्मराज नमस्तुभ्य नमस्ते यमुनाग्रज । त्राहि मां किंकरैः सार्द्धं सूर्यपुत्र नमोऽस्तु ते । २ । लैंगे—या तु भो-
जयते नारी भ्रातरं युग्मके तिथौ ॥ अर्चयेच्चापि तांबूलैर्न सा वैधव्यमाप्नुयात् ॥ स्कांदे— कार्तिके तु द्वितीयायां शुक्लायां भ्रातृपूजनम् ॥
या न कुर्याद्विनश्यति भ्रातरः सप्तजन्मसु ॥ पाद्मे उत्तरखंडे— भद्रे भामिनि भो भामे त्वदभिसरसीरुहम् ॥ श्रेयसेथ नमस्तुभ्यमागतो

ऽहं तवालयम् ॥ मृदुवाक्यं ततः श्रुत्वा सत्वरं क्रियते तदा ॥ अथ भ्रातृमती भ्रातस्त्वया धन्याऽस्मि मानद ॥ भोक्तव्यं तेऽद्य मद्गेहे स्वायुषे मम मानद ॥ कार्तिके शुक्लपक्षस्य द्वितीयायां सहोदरः ॥ यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहेऽर्चितः ॥ यस्मिन्दिने यमेनात्र नारी वा पुरुषोऽपि वा ॥ अपविद्धा कर्मपाशैः स्वेच्छया ये पचंति हि ॥ पापेभ्यो विप्रमुख्यास्ते मुक्ताः कर्मनिबंधनात् ॥ तेषां महोत्सवो वृत्तो यमराष्ट्रे सुखावहः ॥ तस्माद्बंधोऽत्र मद्गेहे भोजनं कुरु कार्तिके ॥ आशिषः प्रतिगृह्याऽथ नमस्कृत्य समर्चयेत् ॥ सर्वा भगिन्यः संपूज्या ज्येष्ठा उभयतः स्मृताः ॥ वस्त्रादिना नमस्कुर्यान्निजवित्तानुसारतः ॥ भ्रातुरायुष्यवृद्ध्यर्थं भगिनीभिर्यमस्य वै ॥ पूजनीयाः प्रयत्नेन प्रतिमाश्च विधानतः ॥ मार्कंडेयो बलिर्व्यासो हनूमांश्च बिभीषणः ॥ कृपो द्रौणिः परशुरामश्चाष्टौ ते चिरजीविनः । मार्कंडेय महाभाग सप्तकल्पांतजीवित ॥ चिरंजीवी यथा त्वं हि तथा मे भ्रातरं कुरु ॥ इति भ्रातृद्वितीया ॥ ॥ ॥ अथ तृतीयाव्रतानि ॥ तत्र चैत्रशुक्लतृतीयायां सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ मात्स्ये— मत्स्य उवाच । वसंतमासमासाद्य तृतीयायां जनप्रिय ॥ सौभाग्याय सदा स्त्रीभिः कार्यं पुत्रसुखेप्सुभिः ॥ शुक्लपक्षस्य पूर्वाह्णे तिलैः स्नानं समाचरेत् ॥ तस्मिन्नहनि सा देवी किल विश्वात्मिका सती ॥ पाणिग्रहणके मेरुमारूढा वरवर्णिनी ॥ तया सहैव देवेशं तृतीयायां समर्चयेत् ॥ फलैर्नानाविधैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्यसंयुतैः ॥ प्रतिमां पंचगव्येन तथा गंगोदकेन च ॥ पंचामृतैः स्नापयित्वा गौरीं शंकरसंयुताम् ॥ नमोऽस्तु पाटलायै च पादौ देव्याः शिवस्य तु ॥ शिवायेति च संकीर्त्य जयायै गुल्फयोस्तथा ॥ त्रिगुणायेति रुद्रस्य भवान्यै जंघयोर्युगम् ॥ शिवं रुद्रं शिवायेति जयायै इति जानुनी ॥ संकीर्त्य हरिकेशाय तथोरू वरदे नमः ॥ ईशायेति कटिं रत्यै शंकरायेति शंकरम् ॥ कुक्षिद्वये च कोटव्यै शूलिनः शूलपाणये ॥ मंगलायै नमस्तुभ्यमुदरं चापि-

पूजयेत् ॥ सर्वात्मने नमो रुद्रमीशान्यै च कुचद्वयम् ॥ शिवे वेदात्मने तद्वद्रिद्राण्यै कंठमर्चयेत् ॥ त्रिपुरघ्नाय विश्वेशमनताय करद्वयम् ॥ त्रिलोचनायेति हर बाहू कालानलप्रिये ॥ सौभाग्यभुवनायेति भूषणादि समर्चयेत् ॥ नमोऽर्द्धनारीश हरमसितांगीति नासिकाम् ॥ नम उग्राय लोकेश ललितेति पुनर्भुवौ ॥ शर्वाय पुरहतार वसुदेव्यै तथालकम् ॥ नमः श्रीकंठनाथाय शिव केशाँस्तथाऽर्चयेत् ॥ भीमोग्र सौम्यरूपिण्यै शिरः सर्वात्मने नमः ॥ शिवमभ्यर्च्य विधिवत्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ स्थापयेद्घृतनिष्पावं कुसुंभं क्षीरजीरकम् ॥ तृणराजे क्षुलवण कुस्तुंबुरुमथाष्टमम् ॥ दत्त सौभाग्यकृद्यस्मात्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ एव निवेद्य तत्सर्वं मद्भत शिवयो पुरः ॥ चैत्रे शृंगोदक प्राश्य स्वपेद्भूमावरिंदम ॥ पुनः प्रभाते च तथा कृतस्नानजपः शुचिः ॥ सपूज्य द्विजदांपत्य माल्यवस्त्रविभूषणैः सौभाग्याष्टकसयुक्त सुवर्णप्रतिमाद्वयम् ॥ प्रीयतामत्र ललिता ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ एव सवत्सरं यावत्तृतीयायां सदा मुने ॥ प्राशने दानमंत्रे च विशेष हि निबोध मे ॥ गोशृंगोदकमाद्ये स्याद्वैशाखे गोमय पुन ॥ ज्येष्ठे मंदारकुसुमं बिल्वपत्रं शुचौ स्मृतम् ॥ माघे कृष्णतिलास्तद्वत्पचगव्यं च फाल्गुने ॥ ललिता विजया भद्रा भवानी कुमुदा शिवा ॥ वासुदेवी तथा गौरी मगला कमला सती ॥ उमा च दानकाले तु प्रीय तामिति कीर्तनात् ॥ मल्लिकाशोककमलकुसुमोत्पलमालती ॥ कुब्जक करवीर च बाणमम्लानकुंकुमम् ॥ - बाण नीलकुरंटः ॥ सिंदुवारं च सर्वेषु मासेषु क्रमशः स्मृतम् ॥ जपाकुसुमकौसुंभमालतीशतपत्रिका ॥ यथालाभप्रशस्तानि करवीर च सर्वदा ॥ एव सवत्सर यावदु पोष्य विधिवन्नरः । स्त्री वा भक्त्या कुमारी वा शिवामभ्यर्च्य शक्तित । व्रतांते शयन दद्यात्सर्वोपस्कारसयुतम् ॥ उमामहेश्वरं हैम वृषभं च गवा सह ॥ स्थापयित्वा च शयने ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ अन्यान्यपि यथाशक्त्या मिथुनान्यवरादिभिः ॥ धान्यालकारगोदाने

रभ्यर्च्य धनसंचयैः ॥ वित्तशाठ्येन रहितः पूजयेद्गतविस्मयः ॥ एवं करोति या सम्यक्सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति पदमानंत्यमश्नुते ॥ फलकस्य च सर्वांगमेतत्कुर्वन्समाचरेत् ॥ यत्र कीर्तिं समाप्नोति प्रतिमासं नराधिप ॥ सौभाग्यारोग्यरूपायुर्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ न वियुक्ता भवेद्राजन्नब्दानां च शतत्रयम् ॥ यस्तु द्वादश वर्षाणि सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ करोति सप्त चाष्टौ वा श्रीकंठभवने ऽमरैः ॥ पूज्यमानो वसेत्सम्यग्यावत्कल्पायुतत्रयम् ॥ नारी वा कुरुते भक्त्या कुमारी वा नरेश्वर ॥ सापि तत्फलमाप्नोति देव्यनुग्रहलालिता ॥ इति मत्स्यपुराणे सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ ॥ अत्रैव गौर्या दोलोत्सवः ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ देवीपुराणे—चैत्रशुक्लतृतीयायां गौरीमीश्वरसंयुताम् ॥ संपूज्य दोलोत्सवकं कुर्यान्नारी शुभेप्सुका ॥ तथा च निर्णयामृते—तृतीयायां यजेद्देवीं शंकरेण समन्विताम् ॥ कुंकुमागरुकर्पूरमणिवस्त्रैरगर्हिताम् ॥ सुगंधिपुष्पधूपैश्च दमनेन विशेषतः ॥ आंदोलं दोलयेद्वत्स शिवोमातुष्ट्यै सदा ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्प्रातर्देया तु दक्षिणा ॥ सौभाग्याय सदा स्त्रीभिः कार्या पुत्रसुखेप्सुभिः ॥ इयं च परा ग्राह्या । मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे—इति माधवोक्तेः ॥ इयं च मन्वादिः । कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु ॥ हायनादिद्विसाहस्रं पितॄणां तृप्तिदं भवेत् ॥ अधिमासेऽपीदं कर्तव्यम् । अत्र पिंडदानं नास्ति ॥

॥ अथ चैत्रशुक्लतृतीयायां मनोरथतृतीयाव्रतम् ॥ ॥ ईश्वर उवाच । साधु कृतं त्वया देवि कृतवत्या परिग्रहम् । अस्येह धर्मपीठस्य मनोरथकृतः[१] संति त एव विश्वभोक्तारो विश्वमान्यास्त एव हि । ये त्वां विश्वभुजामत्र पूजयिष्यंति मानवाः[२] विश्वे विश्वभुजे विश्वस्थित्युत्पत्तिलयप्रदे ॥ नरास्त्वदर्चकाश्चात्र भविष्यंत्यमलात्मकाः ३ मनोरथतृतीयायां यस्ते भक्तिं विधास्यति ॥ तन्मनोरथसंसिद्धिर्भवित्री मदनु-

१ मनोरथकृतः इत्येतत्षष्ठ्यंतं धर्मपीठशब्दस्य विशेषणम् । २ सतीति पार्वत्याः संबोधनम् ।

सर्वात्मने नमो रुद्रमीशान्यै च कुचद्वयम् ॥ शिवे वेदात्मने तद्वद्रिद्राण्यै कंठमर्चयेत् ॥ त्रिपुरघ्नाय विश्वेशमनताय करद्वयम् ॥
येति हरं बाहू कालानलप्रिये ॥ सौभाग्यभुवनायेति भूषणादि समर्चयेत् ॥ नमोऽर्द्धनारीश हरमसितांगीति नासिकाम् ॥ नम
केश ललितेति पुनर्भुवौ ॥ शर्वाय पुरहतार वसुदेव्यै तथालकम् ॥ नमः श्रीकंठनाथाय शिव केशांस्तथाऽर्चयेत् ॥ भीमोग्र
ण्यै शिरः सर्वात्मने नमः ॥ शिवमभ्यर्च्य विधिवत्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ स्थापयेद्घृतनिष्पावं कुसुभं क्षीरजीरकम् ॥ तृणराजे
कुस्तुंबुरुमथाष्टमम् ॥ दत्त सौभाग्यकृद्यस्मात्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ एव निवेद्य तत्सर्वं मद्रूत शिवयो पुरः ॥ चैत्रे शृंगोदकं
स्वपेद्भूमावरिंदम ॥ पुनः प्रभाते च तथा कृतस्नानजपः शुचिः ॥ सपूज्य द्विजदांपत्य माल्यवस्त्रविभूषणैः सौभाग्याष्टकसंयुक्त
तिमाद्यपम् ॥ प्रीयतामत्र ललिता ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ एव सवत्सरं यावत्तृतीयायां सदा मुने ॥ प्राशने दानमंत्रे च विशेषं हि
धि मे ॥ गोशृंगोदकमाद्ये स्याद्वैशाखे गोमय पुन ॥ ज्येष्ठे मंदारकुसुम बिल्वपत्रं शुचौ स्मृतम् ॥ माघे कृष्णतिलास्तद्वत्पंचगव्य
च फाल्गुने ॥ ललिता विजया भद्रा भवानी कुमुदा शिवा ॥ वासुदेवी तथा गौरी मगला कमला सती ॥ उमा च दानकाले तु प्रीय
तामिति कीर्तनात् ॥ मल्लिकाशोककमलकुसुमोत्पलमालती ॥ कुमक करवीरं च बाणमम्लानकुंकुमम् ॥ - बाण नीलकुरंट ॥ सिंदुवारं च
सर्वेषु मासेषु क्रमशः स्मृतम् ॥ जपाकुसुमकौसुममालतीशतपत्रिका ॥ यथालाभप्रशस्तानि करवीर च सर्वदा ॥ एव सवत्सरं यावदु
पोष्य विधिवन्नरः । स्त्री वा भक्त्या कुमारी वा शिवामभ्यर्च्य शक्तितः । व्रतांते वायन दद्यात्सर्वोपस्कारसंयुतम् ॥ उमामहेश्वरं हैम
वृषभं च गवा सह ॥ स्थापयित्वा च शयने ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ अन्यान्यपि यथाशक्त्या मिथुनान्यवरादिभिः ॥ धान्यालंकारगोदाने

रभ्यर्च्य धनसंचयैः ॥ वित्तशाठ्येन रहितः पूजयेद्गतविस्मयः ॥ एवं करोति या सम्यक्सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति पदमानंत्यमश्नुते ॥ फलकस्य च सर्वांगमेतत्कुर्वन्समाचरेत् ॥ यत्र कीर्तिं समाप्नोति प्रतिमासं नराधिप ॥ सौभाग्यारोग्यरूपायुर्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ न वियुक्ता भवेद्राजन्नब्दानां च शतत्रयम् ॥ यस्तु द्वादश वर्षाणि सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ करोति सप्त चाष्टौ वा श्रीकंठभवनेऽमरैः ॥ पूज्यमानो वसेत्सम्यग्यावत्कल्पायुतत्रयम् ॥ नारी वा कुरुते भक्त्या कुमारी वा नरेश्वर ॥ सापि तत्फलमाप्नोति देव्यनुग्रहलालिता ॥ इति मत्स्यपुराणे सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ ॥ अत्रैव गौर्या दोलोत्सवः ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ देवीपुराणे—चैत्रशुक्लतृतीयायां गौरीमीश्वरसंयुताम् ॥ संपूज्य दोलोत्सवकं कुर्यान्नारी शुभेप्सुका ॥ तथा च निर्णयामृते—तृतीयायां यजेद्देवीं शंकरेण समन्विताम् ॥ कुंकुमागरुकर्पूरमणिवस्त्ररगर्हिताम् ॥ सुगंधिपुष्पधूपैश्च दमनेन विशेषतः ॥ आंदोलं दोलयेद्वत्स शिवोमातुष्टये सदा ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्प्रातर्देया तु दक्षिणा ॥ सौभाग्याय सदा स्त्रीभिः कार्या पुत्रसुखेप्सुभिः ॥ इयं च परा ग्राह्या । मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे—इति माधवोक्तेः ॥ इयं च मन्वादिः । कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु ॥ हायनादिद्विसाहस्रं पितॄणां तृप्तिदं भवेत् ॥ अधिमासेऽपीदं कर्तव्यम् । अत्र पिंडदानं नास्ति ॥ ॥ अथ चैत्रशुक्लतृतीयायां मनोरथतृतीयाव्रतम् ॥ ॥ ईश्वर उवाच । साधु कृतं त्वया देवि कृतवत्या परिग्रहम् । अस्येह धर्मपीठस्य मनोरथकृतः संति१ त एव विश्वभोक्तारो विश्वमान्यास्त एव हि । ये त्वां विश्वभुजामत्र पूजयिष्यंति मानवाः २ विश्वे विश्वभुजे विश्वस्थित्युत्पत्तिलयप्रदे ॥ नरास्त्वदर्चकाश्चात्र भविष्यंत्यमलात्मकाः ३ मनोरथतृतीयायां यस्ते भक्तिं विधास्यति ॥ तन्मनोरथसंसिद्धिर्भवित्री मदनु-

१ मनोरथकृतः इत्येतत्पष्ठ्यंत धर्मपीठशब्दस्य विशेषणम् । २ सतीति पार्वत्याः संबोधनम् ।

पूजयेत ॥ सर्वात्मने नमो रुद्रमीशान्ये च कुचद्वयम् ॥ शिवे वेदात्मने तद्वद्विप्राण्ये कंठमर्चयेत् ॥ त्रिपुरघ्नाय विश्वेशमनताय करद्वयम् ॥ त्रिलोचनायेति हर बाहू कालानलप्रिये ॥ सौभाग्यभुवनायेति भूषणादि समर्चयेत् ॥ नमोऽर्धनारीश हरमसितांगीति नासिकाम् ॥ नम उग्राय लोकेश ललितेति पुनर्भ्रुवौ ॥ शर्वाय पुरहतार षष्ठ्देव्यै तथालकम् ॥ नमः श्रीकंठनाथाय शिव केशांस्तथाऽर्चयेत् ॥ भीमोग्र सौम्यरूपिण्यै शिरः सर्वात्मने नमः ॥ शिवमभ्यर्च्य विधिवत्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ स्थापयेद्घृतनिष्पाव कुसुमं क्षीरजीरकम् ॥ तृणराजे क्षुलवण कुस्तुंबुरुमथाष्टमम् ॥ दत्त सौभाग्यकृद्यस्मात्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ एव निवेद्य तत्सर्वं मद्भत शिवयोः पुरः ॥ चैत्रे शृंगोदक माश्य स्वपेद्भूसावरिंदम ॥ पुनः प्रभाते च तथा कृतस्नानजपः शुचिः ॥ सपूज्य द्विजदांपत्य माल्यवस्त्रविभूषणैः सौभाग्याष्टकसयुक्तं सुवर्णप्रतिमाद्वयम् ॥ प्रीयतामत्र ललिता ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ एव संवत्सरं यावत्तृतीयायां सदा मुने ॥ प्राशने दानमंत्रे च विशेष हि निबोध मे ॥ गोशृंगोदकमाद्ये स्याद्वैशाखे गोमयं पुन ॥ ज्येष्ठे मंदारकुसुमं बिल्वपत्र शुचौ स्मृतम् ॥ माघे कृष्णतिलास्तद्वत्पचगव्य च फाल्गुने ॥ ललिता विजया भद्रा भवानी कुमुदा शिवा ॥ वासुदेवी तथा गौरी मगला कमला सती ॥ उमा च दानकाले तु प्रीय तामिति कीर्तनात् ॥ मल्लिकाशोककमलकुसुमोत्पलमालती ॥ कुब्जक करवीरं च बाणमम्लानकुंकुमम् ॥ - बाण नीलकुरंटः ॥ सिंदुवारं च सर्वेषु मासेषु क्रमशः स्मृतम् ॥ जपाकुसमकौसुंभमालतीशतपत्रिका ॥ यथालाभप्रशस्तानि करवीर च सर्वदा ॥ एवं सवत्सरं यावदु पोष्य विधिवन्नरः । स्त्री वा भक्त्या कुमारी वा शिवामभ्यर्च्य शक्तितः । व्रतांते वायन दद्यात्सर्वोपस्कारसयुतम् ॥ उमामहेश्वर हैम वृषभं च गवा सह ॥ स्थापयित्वा च शयने ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ अन्यान्यपि यथाशक्त्या मिथुनान्यवरादिभिः ॥ धान्यालंकारगोदाने

रभ्यर्च्य धनसंचयैः ॥ वित्तशाठ्येन रहितः पूजयेद्गतविस्मयः ॥ एवं करोति या सम्यक्सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति पदमानंत्यमश्नुते ॥ फलकस्य च सर्वांगमेतत्कुर्वन्समाचरेत् ॥ यत्र कीर्तिं समाप्नोति प्रतिमासं नराधिप ॥ सौभाग्यारोग्यरूपायुर्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ न वियुक्ता भवेद्राजन्नब्दानां च शतत्रयम् ॥ यस्तु द्वादश वर्षाणि सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ करोति सप्त चाष्टौ वा श्रीकंठभवने ऽमरैः ॥ पूज्यमानो वसेत्सम्यग्यावत्कल्पायुतत्रयम् ॥ नारी वा कुरुते भक्त्या कुमारी वा नरेश्वर ॥ सापि तत्फलमाप्नोति देव्यनुग्रहलालिता ॥ इति मत्स्यपुराणे सौभाग्यशयनव्रतम् ॥ ॥ अत्रैव गौर्या दोलोत्सवः ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ देवीपुराणे—चैत्रशुक्लतृतीयायां गौरीमीश्वरसंयुताम् ॥ संपूज्य दोलोत्सवकं कुर्यान्नारी शुभेप्सुका ॥ तथा च निर्णयामृते—तृतीयायां यजेद्देवीं शंकरेण समन्विताम् ॥ कुंकुमागरुकर्पूरमणिवस्त्रैरगर्हिताम् ॥ सुगंधिपुष्पधूपैश्च दमनेन विशेषतः ॥ आंदोलं दोलयेद्वत्स शिवोमातुष्ट्यै सदा ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्प्रातर्देया तु दक्षिणा ॥ सौभाग्याय सदा स्त्रीभिः कार्या पुत्रसुखेप्सुभिः ॥ इयं च परा ग्राह्या । मुहूर्तमात्रसत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे—इति माधवोक्तेः ॥ इयं च मन्वादिः । कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु ॥ हायनादिद्विसाहस्रं पितॄणां तृप्तिदं भवेत् ॥ अधिमासेऽपीदं कर्तव्यम् । अत्र पिंडदानं नास्ति ॥

॥ अथ चैत्रशुक्लतृतीयायां मनोरथतृतीयाव्रतम् ॥ ॥ ईश्वर उवाच । साधु कृतं त्वया देवि कृतवत्या परिग्रहम् । अस्येह धर्मपीठस्य मनोरथकृतः संति१ त एव विश्वभोक्तारो विश्वमान्यास्त एव हि । ये त्वां विश्वभुजामत्र पूजयिष्यंति मानवाः २ विश्वे विश्वभुजे विश्वस्थित्युत्पत्तिलयप्रदे ॥ नरास्त्वदर्चकाश्चात्र भविष्यंत्यमलात्मकाः २ मनोरथतृतीयायां यस्ते भक्तिं विधास्यति ॥ तन्मनोरथसंसिद्धिर्भवित्री मदनु-

१ मनोरथकृतः इत्येतत्षष्ठ्यंतं धर्मपीठशब्दस्य विशेषणम् । २ सतीति पार्वत्याः संबोधनम् ।

ग्रहात् ४ नारी वा पुरुषो वाऽपि त्वद्व्रताचरणात्प्रिये । मनोरथानिह प्राप्य ज्ञानमते च लभ्यते ५ देव्युवाच । मनोरथतृतीयायां व्रत कीदृक्
कथानकम् । किं फलं किं कृतं नाथ कथयैतत्कृपां कुरु६ ईश्वर उवाच । शृणु देवि यथा पृष्टं भवत्या भवतारणम् । मनोरथव्रतं चैतद्गुह्याद्गुह्यतर
परम् ७ पुलोमतनया पूर्वं तताप परमं तपः । कश्चिन्मनोरथं प्राप्तुं न चाप तपसः फलम् ८ अपूपुजत्ततो मासं भक्त्या गौरीमहेश्वरम् ।
गीतेन सरहस्येन कलकण्ठीरवेण हि ९ तद्गानेनातिसंतुष्टो मृदुना मधुरेण च । सुतालेन सुरागेण धातुमात्रकलावता १० प्रोवाच च वरं
शूली प्रसन्नोऽस्मि पुलोमजे । अनेन च सुगीतेन त्वनया लिंगपूजया ११ पुलोमजोवाच । यदि प्रसन्नो देवेश तदा यो मे मनोरथः । तं
पूरय महादेव महादेव्याः प्रियंवद १२ सर्वदेवेषु यो मान्यः सर्वदेवेषु सुंदरः । याज्ञिकेषु सर्वेषु यः श्रेष्ठः सोऽस्तु मे पति ॥ १३॥ यथाऽभिल
षित रूपं यथाभिलषित सुखम् । यथाभिलषित चायुः प्रसन्नो देहि मे भव १४ यदा यदा च पत्या मे संगः स्यात्तु सुखेच्छया । तदा तदा च त
देहं त्यक्त्वाऽन्य देहमाप्नुयाम् १५सदा च देवपूजायां मम भक्तिरनुत्तमा । मम पूजा भगवति जरामरणहारिणी १६भर्तुर्व्ययेपि वैधव्यं क्षणमात्रम
पीह न । मम भावि महादेव पातिव्रत्यं च यातु मा १७ ईश्वर उवाच । पुलोमकन्ये यच्चैव त्वया ऽकारि मनोरथः । लप्स्यसे व्रतचर्या
यां तत्कुरुष्व जितेंद्रिया १८ मनोरथतृतीयायाश्चरणेन भविष्यति । तत्प्राप्तये व्रतं वक्ष्ये तद्विधेहि यथोदितम् १९ तेन व्रतेन चीर्णेन महा-
सौभाग्यदेन तु । अवश्यं भविता बाले तव चैव मनोरथ २० पुलोमकन्योवाच । कारुण्यवारिधे शंभो प्रणतार्तिहर प्रिय । किं नाम
चाप का भक्तिः का पूज्या तत्र देवता २१ कदा च सा विधातव्या इतिकर्तव्यता च का । इत्याकर्ण्य शिवो वाक्यं तां तु प्रीत्या जगा
द ह २२ ईश्वर उवाच । मनोरथतृतीयायां व्रतं पौलोमि तच्छृणु । पूज्या विश्वभुजा गौरी चतुर्भुजविशालिनी २३ वरदो ऽभयहस्तश्च

साक्षसूत्रः समोदकः । देव्याः पुरस्ताद्व्रतिना पूज्य आशाविनायकः २४ चतुर्भुजश्चारुनेत्रः सर्वसिद्धिकरः प्रभुः । चैत्रशुक्लतृतीयायां कृत्वा वै दंतधावनम् २५ सायंतनीं च निर्वर्त्य नातितृप्त्यां भुजिक्रियाम् । नियमं चेति गृह्णीयाज्जितक्रोधो जितेंद्रियः २६ संत्यज्यास्पृश्य संसारं शुचिस्तद्व्रतमानसः । प्रातर्व्रतं चरिष्यामि मातर्विश्वभुजे ऽनघे २७ विधेहि तत्र सान्निध्यं मन्मनोरथसिद्धये । नियमं चेति संगृह्य स्वपेद्रात्रौ शुभं स्मरन् २८ प्रातरुत्थाय मेधावी विधायावश्यकं विधिम् । शौचमाचमनं कृत्वा दंतकाष्ठं समाहरेत् २९ अशोकवृक्षस्य शुभं सर्वशोकविनाशनम् । नित्यंतनं च संपाद्य विधिं विधिविदां वरः ३० स्नात्वा शुद्धांबरः सायं गौरीपूजां समाचरेत् । आदौ विनायकं पूज्य घृतपूपान्निवेदयेत् ३१ ततो ऽर्चयेद्विश्वभुजामशोककुसुमैः शुभैः । अशोकवर्तिनैवेद्यं धूपैश्चागरुसंभवैः ३२ कुसुमेनानुलिम्प्यादावेकभुक्तं ततश्चरेत् । अशोकवर्तिसहितैर्घृतपूरैर्मनोहरैः ३३ एवं चैत्रतृतीयायां व्यतीतायां पुलोमजे । चैत्रादिफाल्गुनांतासु तृतीयासु व्रतं चरेत् ३४ क्रमेण दंतकाष्ठानि कथयामि तवाऽनघे । अनुलेपनवस्तूनि कुसुमानि तथैव च ३५ नैवेद्यादि गजास्यस्य देव्याश्चापि शुभव्रते । अन्नानि चैकभक्तस्य शृणु तानि फलाप्तये ३६ जंब्वपामार्गखदिरजातीचूतकदंबकाः । प्लक्षो दुंबरखर्जूरी बदरी दाडिमी तथा ३७ दंतकाष्ठद्रुमा एते व्रतिनः समुदाहृताः । सिंदूरागरुकस्तूरी चंदनं रक्तचंदनम् ३८ गोरोचनं देवदारु पद्माक्षं च निशाद्वयम्[१] । प्रीत्यानुलेपनं बाले यक्षकर्दमसंभवम् ३९ सर्वेषामप्यलाभे च प्रशस्तो यक्षकर्दमः । कस्तूरिकाया द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुंकुमस्य च ४० चंदनस्य त्रयो भागाः शशिनस्त्वेक[२] एव हि । यक्षकर्दम इत्येष समस्तसुरवल्लभः ४१ अनुलिम्प्याथ कुसुमैरर्चयेद्रुच्मि तान्यपि । पाटलीमल्लिकापद्मकेतकीकरवीरकैः ४२ उत्प-

१ हरिद्राद्वयम् । हरिद्रा दारुहरिद्रा चेत्यर्थः । २ कर्पूरस्य ।

छे राजचंपैश्च नद्यावर्तैश्च राजभि । कुमारीभिः कर्णिकारैरलाभे तच्छदैः सह ४३ सुगंधिभिः प्रसूनाद्यैः सर्वालाभेऽपि पूजयेत् । करंभो द-
धि भक्तं च सघृतरसमंडकं ४४ फेणिका वटकाश्चैव पायसं च सशर्करम् । समुद्गं सघृतं भक्तं कार्तिके विनिवेदयेत् ४५ उदेरिकाश्च कंधूका
मावे लंपसिका शुभा । मुष्टिकाः शर्करागर्भाः सर्पिषा परिसाधिताः ४६ निवेद्य फाल्गुने देव्यै सार्द्धं विघ्नजितामुदा । निवेदयेद्यदन्नं हि एकभक्तेपि
तत्स्मृतम् ४७ अनिवेद्येन संमूढो भुजानो न्यपतेदधः । प्रतिमासं तृतीयायामेकमाराध्य वत्सरम् ४८ व्रतसंपूर्तये कुर्यात्स्थंडिलेग्निसमर्चनम् ।
जातवेदसमंत्रेण तिलाज्यद्रविणेन च ४९ शतमष्टाधिकं होमं कारयेद्विधिना व्रती । सदैव नक्ते पूजोक्ता तदा नक्ते तु भोजनम् ५० नक्त
एव हि होमोऽयं नक्त एव क्षमापनम् । गृहाण पूजां मे भक्त्या मातर्विघ्नजिता सह ५१ नमोऽस्तु ते विश्वभुजे पूरयाशु मनोरथम् । नमोवि
घ्नकृते तुभ्यं नम आशाविनायक ५२ त्वं विश्वभुजया सार्द्धं मम देहि मनोरथम् । एतौ मंत्रौ समुच्चार्य पूज्यौ गौरीविनायकौ ५३ व्रत
क्षमापने देयं पर्यंकस्तूलिकान्वितः । आचार्यं च सपत्नीकं पर्यंके उपवेश्य च ५४ व्रती समर्चयेद्वस्त्रैः करकर्णविभूषणैः । दद्यात्पयस्वि
नीं गां च व्रतस्य परिपूर्तये ५५ मनोरथतृतीयायां व्रतमेतन्मया कृतम् । न्यूनातिरिक्तं संपूर्णमेतदस्तु भवद्गिरा ५६ इत्याचार्यं समागच्छे
त्तथेत्युक्तश्च तेन वै । प्रातश्चतुर्थ्यां संपूज्य चतुरश्च कुमारकान् ५७ एवं संपूर्णतां याति व्रतमेतत्सुनिर्मलम् । चिंतितं लभते कामं व्रतस्यास्य
निषेवणात् ५८ इति श्रीस्कंदपुराणे चैत्रशुक्लतृतीयायां मनोरथव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ चैत्रशुक्लप्रतिपदमारभ्य त्रिरात्रपूर्वकं तृती
यायामरुंधतीव्रतम् ॥ तत्र स्त्रीणामेवाधिकारः । अवैधव्यादिफलश्रवणात् । तत्रादौ संकल्पः । ममेह जन्मनि जन्मांतरे च बालवैधव्यनाशा
र्थमनेकसौभाग्यपुत्ररूपसंपत्तिसमृद्ध्यर्थमरुंधतीव्रतमहं करिष्ये । निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूज० । स्वस्तिवाचनमाचार्यवरणं च करिष्ये ।

पश्चात्पूजादि आचार्येण कारयेत् । वैशाखे श्रावणे मासि माघे वा कार्तिके तथा ॥ प्रतिपत्प्रातरुत्थाय स्नात्वा शुक्लतिलाम्बुकैः ॥ प्रतिपदि
दिने नक्तं द्वितीयायामयाचितम् । तृतीयायामुपोष्यं च आचार्येण ततः सह ॥ रात्रावधिवासनम् । सुवर्णनिर्मितां दिव्यां द्विभुजां
प्रतिमात्रयम् । अरुंधतीं वसिष्ठं च ध्रुवं चैव पृथङ्न्यसेत् ॥ शिलोपरि सर्वतोभद्रस्थापनम् । कलशं धातुमयं तदुपरि ताम्रपात्रं प्र-
तिमायां अग्न्युत्तारणं कृत्वा तदुपर्यरुंधतीं वसिष्ठं ध्रुवं च स्थापयेत्कुंकुमाक्षतैः पूजयेच्च ॥ ॥ अथ पूजा ॥ अष्टकर्णिकया युक्ते
मंडले पूजयेत्तु ताम् । अरुंधतीं महादेवीं वसिष्ठसहितां सतीम् । आवाहनम् ॥ अरुंधति महादेवि सर्वसौभाग्यदायिनि । दिव्यं
सुचारुवेषं च आसनं प्रतिगृह्यताम् । आसनम् ॥ सुचारु शीतलं दिव्यं नानागंधसुवासितम् । पाद्यं गृहाण देवेशि अरुंधति नमो-
ऽस्तु ते । पाद्यम् ॥ अरुंधति महाभागे वसिष्ठप्रियवादिनि । अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते । अर्घ्यम् ॥ गंगातोयं समानीतं सुव-
र्णकलशे स्थितम् । आचम्यतां महाभागे वसिष्ठसहिते ऽनघे । आचमनीयम् ॥ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः । स्नापिता ऽसि मया
देवि तथा शांतिं कुरुष्व मे । स्नानम् ॥ नानारंगसमुद्भूतं दिव्यं चारु मनोहरम् । वस्त्रं गृहाण देवेशि अरुंधति नमोऽस्तु ते । वस्त्रम् ॥ कं-
चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् । गृहाण त्वं मया दत्तमरुंधति नमो ऽस्तु ते । उपवस्त्रम् ॥ कर्पूरकुंकुमैर्युक्तं हरिद्रादिसमन्वितम् ॥
कस्तूरिकासमायुक्तं चंदनं प्रतिगृह्यताम् । चंदनम् ॥ हरिद्राकुंकुमं चैव सिंदूरं कज्जलान्वितम् । मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।
सौभाग्यद्रव्यम् ॥ माल्यादीनिसुगं० । पुष्पम् ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो० । धूपम् ॥ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं० । दीपम् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु
रसैः षड्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं गृह्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि । नैवेद्यम् ॥ पूगीफलं महद्दिव्यं० । तांबूलम् ॥ इदं फलं मया देवि० ।

फलम् ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थ० । दक्षिणाम् ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते । अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ प्रार्थनाम् ॥
अरुन्धति महाभागे वसिष्ठप्रियवादिनि । सौभाग्यं देहि मे देवि धनं पुत्रांश्च सर्वदा । उत्तरार्घ्यम् ॥ द्विभुजां चारुसर्वांगीं साक्षसूत्रकमण्ड
लुम् । प्रतिमां कांचनीं कृत्वा नामभिः परिपूजयेत् ॥ ॐ देववधायै नमः, पादौ पूजयामि । लोकवद्यायै न० जानुनी पूज० । सपत्नि
दायिन्यै० कटी० । गभीरनाम्न्यै० नाभिं० । लोकधात्र्यै० स्तनौ० । जगद्धात्र्यै० कंठं० । शान्त्यै न० बाहू पू० । वरप्रदायै० हस्तौ० ।
धृत्यै० मुखं० । अरुन्धत्यै० शिरः । सकलप्रियायै० शिखां० । वसिष्ठप्रियायै० वसिष्ठयुक्तसहितं सर्वांगं पू० ॥ नमो देव्यै इति नीराजनम् ॥ पु
ष्पांजलिं वायनं दद्यात् । वंशपात्रे स्थितं पूर्णं वायनं घृतसंयुतम् ॥ अरुन्धती प्रीयतां च ब्राह्मणाय ददाम्यहम् । वायनम् ॥ सुवर्णमू
र्तिसंयुक्तां वसिष्ठयुक्तसंयुताम् । अरुन्धतीं सोपचारां ब्राह्मणाय ददाम्यहम् — मूर्तिदानमंत्रः ॥ गच्छ देवि यथा स्थानं सर्वालंकारभूषिते ॥
अरुन्धति नमस्तुभ्यं देहि सौभाग्यमुत्तमम् । इति विसर्जनम् ॥ ॥ इति पूजनम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ ॥ स्कंद उवाच । पुरा वृत्तमिदं
विप्राः शृणुध्वं व्रतमुत्तमम् । आसीत्कश्चित्पुरा विप्रः सर्वशास्त्रविशारदः १ तस्यैका कन्यका जाता रूपेणाऽप्रतिमा भुवि । ततो विवाहं स
म्यग्वै पिता तस्याकरोद्द्विजः २ कुलशीलयुते दत्ता सा कन्या वरवर्णिनी । अचिरेणैव कालेन भर्ता तस्या मृतो द्विजः ३ बालरंडा तु सा
जाता निर्वेदादगमद्गृहात् । यमुनातीरमासाद्य चकार विपुलं तपः ४ एकभुक्त्यादिकैश्चैव कृच्छ्रचांद्रायणैस्तथा । मासोपवासनियमैरात्मानं
पावयेत्सती ५ कदाचिदागतस्तत्र भ्रमन् गौर्या सदाशिवः । यमुनातीरमासाद्य वनितां तां ददर्श सः । कृपया च शिवा गौरी महादेवमुवाच
ह ६ देव केनेदृशी प्राप्ता बालवैधव्यतादृशा । वद मां कृपया देव कृपां कुरु दयानिधे ७ महादेव उवाच । अयं विप्रः पुरा गौरि

कुलशीलयुतो भुवि । तेन कन्या पतीणीता सुरूपा युवती सती ८ स तां विवाह्य तरुणीं विदेशमगमद्द्विजः । ततो बहुतिथं कालं साऽपश्यद्भ-
र्तुरागमम् ९ नागतस्तु तदा विप्रो यावज्जीवं गतो द्विजः । तस्या जन्म गतं सर्वं विफलं पतिना विना १० तेन पापेन विप्रो ऽसौ नारीत्वं
प्राप्तवान् शिवे ११ स्वनारीं यः परित्यज्य निर्दोषां कुलसंभवाम् । याति देशांतरं चाऽथ अंधा इव महार्णवे १२ परदाररतो वा स्यादन्यां
वा कुरुते स्त्रियम् । सो ऽन्यजन्मनि देवेशि स्त्री भूत्वा विधवा भवेत् १३ या नारी तु पतिं त्यक्त्वा मनोवाक्कायकर्मभिः । रहः करोति वै
जारं गत्वा वा पुरुषांतरम् १४ भोगान् भुक्त्वा च या योषिन्मदेन प्रमदा ऽसती । तेन कर्मविपाकेन सा नारी विधवा भवेत् १५ स्वप-
त्नीं कुलसंभूतां पतिव्रतरतां सतीम् । अनुकूलां परित्यज्य परां यो याति स्वेच्छया १६ स पापी जायतेऽन्यस्मिन्स्त्रीहीनो विप्रजन्मनि ।
अनेन सदृशं देवि लोके ऽस्मिन्नास्ति पातकम् १७ न वैधव्यात्परो व्याधिर्न वैधव्यात्परो ज्वरः । न वैधव्यात्परः शोको न वैधव्यात्प-
रोऽकुशः १८ निरयो न च वैधव्यात्कष्टं वैधव्यता नृषु । तेन पापेन बहुना जायते बालरंडका १९ इति तस्य वचः श्रुत्वा सा गौरी वि-
स्मिता ऽभवत् । पप्रच्छ तं महादेवं गौरी सा करुणान्विता २० केनेदृशं महत्पापं बालवैधव्यदायकम् । नश्यते कर्मणा देव तन्मां वद
कृपां कुरु २१ महादेव उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि बालवैधव्यनाशनम् । अरुंधतीव्रतं पुण्यं नारीसौभाग्यदायकम् २२ यत्कृत्वा
बालवैधव्यान्मुच्यते नात्र संशयः । श्रुतमेतत्तदा विप्रा गौर्या शंकरतो व्रतम् २३ यमुनातीरमासाद्य उपविष्टं तदा द्विजाः । तस्यै नार्यै मं-
हादेव्या कारितं व्रतमुत्तमम् २४ तेन पुण्येन महता व्रतजेन मुनीश्वराः । सा नारी चागमत्स्वर्गं मुक्त्वा वैधव्यतां तदा २५ इत्थं व्रतं श्रुतं
सम्यगुपदिष्टं मुनीश्वराः । कृतमन्यैश्च बहुभिस्ते ऽपि मुक्ता मुनीश्वराः २६ अरुंधतीव्रतमिदं सदा कार्यं मुनीश्वराः । नारी वैधव्यतो मुच्ये-

त्सौभाग्यं प्राप्नुयात्परम् २७ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे अरुंधतीव्रतम् ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच । उद्यापनविधिं ब्रूहि ह्यरुधत्याः सुरेश्वर ॥ भक्तिस्त श्रोतुमिच्छामि व्रतसंपूर्णहेतवे ॥ कृष्ण उवाच । अरुंधतीव्रतं वक्ष्ये नारीसौभाग्यदायकम् । येन चीर्णेन वै सम्यक् नारी सौभाग्यमाप्नुयात् । जायते रूपसंपन्ना पुत्रपौत्रसमन्विता । वसंते तु समासाद्य तृतीयायां युधिष्ठिर ॥ माघे वा माधवे चैव श्रावणे कार्तिके ऽथवा । स्नान कृत्वा तु वै सम्यक् त्रिरात्रोपोषिता सती ॥ मिथुनानि च चत्वारि समाहूय पतिव्रता । पूजयेत्पुष्प तांबूलैश्चदनैश्च तथाऽक्षतैः । कुंकुमागरुकस्तूरीकर्पूरमृगनाभिभिः । शिलापट्टे च संस्थाप्य जीरकं लवणान्वितम् ॥ लोष्ठकेन समायुक्तं वस्त्रयुग्मेन वेष्टितम् । आवाहयेदरुंधतीं वसिष्ठप्राणसंमिताम् ॥ पतिव्रतानां सर्वासां मुख्यां वै देवमामिनीम् । द्विभुजां चारुसर्वांगीं सा क्षसूत्रकमंडलुम् । प्रतिमां कांचनीं कृत्वा नामभिः परिपूजयेत् । वसिष्ठं च ध्रुवं चैव प्रतिमां पूजयेद्व्रती ॥ देववध्वै नमः पादौ जानुनी लोकवंदिते । कटिं संपूजयेत्तस्याः सर्वसंपत्तिदायिनीम् ॥ नाभिं गंभीरनाभ्यै तु लोकधात्र्यै तथा स्तनौ । जगद्धात्र्यै तथा स्कंधौ बाहू शान्त्यै नमस्तथा ॥ हस्तौ तु वरदायै तु मुखं धृत्यै नमः पुनः । अरुंधत्यै तथा पूज्यं शिरस्तु सकलप्रियम् । एवं संपूज्य तां देवीं गंधपुष्पोपचारकैः । पूजयित्वा सतीं देवीं ततश्चार्घ्यं प्रदापयेत् ॥ अरुंधति महाभागे वसिष्ठप्रियवादिनि । सौभाग्यं देहि मे देवि धनपुत्रांश्च सर्वदा ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते । अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमो ऽस्तु ते ॥ सुवासिन्यो ऽथ संपूज्याः समाप्तिदिवसे तदा । शुभगंधाक्षतैः पुष्पैर्दद्याच्चूर्णेन भक्षकान् ॥ होमं चैव तदा कुर्यात्समिद्भिश्च तिलैः पृथक् । अष्टोत्तरशतं संख्या प्रार्थनामंत्रतः शुभाः ॥ मिथुनानि च संपूज्य भूषणाच्छदनादिभिः । नानाविधोपचारैश्च चतुर्विंशतिसंख्यया ॥ आचार्यं च

गां दद्याद्वस्त्राण्याभरणानि च । शय्यां सोपस्करां दद्यात्कांस्यपात्रं सदीपकम् ॥ आदर्शं चामरं चैव अश्वं दद्यात्सुशोभनम् । यथावद्भोजयित्वा ऽथ स्त्रियः शूर्पान्समोदकान्॥मोदकान्कांचनं चैव तथा वस्त्रं यथाविधि।पोलिका घृतपूपांश्च पूरिकाश्च विशेषतः। सोहालिकाश्च दातव्या एकैकं द्विगुणं तथा। भोजनद्वयपर्याप्तं दीनानाथांश्च पूजयेत् । अनेनैव विधानेन भामिनी कुरुते व्रतम्। अवैधव्यत्वमाप्नोति तथा जन्मसहस्रकम् ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्ता धनधान्यसमावृता। जीवेद्वर्षशतं साग्रं सह भर्त्रा महाव्रता ॥ एवमभ्यर्चयित्वा तु पदं गच्छेदनामयम् । देवभार्या यथा स्वर्गे ऋषिभार्या तथैव च ॥ राजते च महाभागा सर्वकामसमृद्धिभिः ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे अरुंधतीव्रतोद्यापनम् ॥ ॥ अथ वैशाखशुक्लतृतीयायां भविष्योत्तरोक्तमक्षय्यतृतीयाव्रतम् ॥ तीर्थे वै तद्दिने स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम् । दानं धर्मघटादीनां मधुसूदनपूजनम् ॥ माधवे मासि कुर्वीत मधुसूदनतुष्टिदम् । तुलामकरमेषेषु प्रातःस्नानं विधियते॥हविष्यं ब्रह्मचर्यं च महापातकनाशनम् । वैशाखस्नाननियमं ब्राह्मणानामनुज्ञया। मधुसूदनमभ्यर्च्य कुर्यात्संकल्पपूर्वकम् । वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणं रवेः । प्रातः सनियमः स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदनः ॥ मधुसूदनसंतोषाद्ब्राह्मणानामनुग्रहात् ॥ निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम् ॥ माधवे मेषगे भानौ मुरारिर्मधुसूदनः । प्रातःस्नानेन मे नाथ फलदः पापहा भव ॥ यदा न ज्ञायते नाम तस्य तीर्थस्य भो द्विजाः। तत्र चोच्चारणं कार्यं विष्णुतीर्थमिदं त्विति ॥ अपि सम्यग्विधानेन नारी वा पुरुषो ऽपि वा। प्रातः स्नातः सनियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ वैशाखे विधिवत्स्नात्वा भोजयेद्ब्राह्मणान्दश । कृत्स्नशः सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥ इति वैशाखस्नानविधिर्भविष्ये ॥ इयमेव तृतीया परशुरामजयंती ॥ सा च प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। तदुक्तं भार्गवार्चनदीपिकायां स्कंदभविष्ययोः—वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां पुनर्वसौ ॥ निशायाः प्रथमे यामे रामाख्यः सम-

थे हरिः ॥ रेणुकायास्तु यो गर्भादवतीर्णो विभुः स्वयम् ॥ दिनद्वये तथा व्याप्तावंशतः समव्याप्तौ च परा ॥ अन्यथा पूर्वैव । तत्रैवोक्तम्—
शुक्लतृतीया वैशाखे शुद्धोपोष्या दिनद्वये ॥ निशायां पूर्वयामे चेदुत्तराऽन्यत्र पूर्विका ॥ तत्रैव, वैशाखतृतीया अक्षय्यतृतीया । सा च
पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या । दिनद्वये तव्याप्तौ तु पूर्वेवेति । इयं युगादिरपि ॥ या मन्वाद्या युगाद्याश्च तिथयस्तासु मानवः ॥ स्नात्वा हुत्वा
च जप्त्वा च दत्त्वाऽनंतफलं लभेत् ॥ श्राद्धेऽपि पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या । पूर्वाह्णे तु सदा कार्याः शुक्ला मनुयुगादयः ॥ दैवे कर्मणि पैत्र्ये
च कृष्णे चैवाऽपराह्णिकाः ॥ वैशाखस्य तृतीयां च पूर्वविद्धां करोति वै ॥ हव्यं देवा न गृह्णन्ति कव्यं च पितरस्तथा—इति ॥ वैशाखस्य
तृतीयायां श्रीसमेतं जगद्गुरुम् ॥ नारायणं पूजयेच्च पुष्पधूपविलेपनैः ॥ योऽस्यां ददाति करकान् वारिव्यजनसंयुतान् ॥ स याति पुरुषो
वीर लोकान्वै हेममालिनः ॥ वैशाखशुक्लपक्षे तु तृतीयायां तथैव च ॥ गंगातोये नरः स्नात्वा मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ श्रीकृष्ण उवाच ।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन किं बह्वक्षरमालया ॥ वैशाखस्य सितामेकां तृतीयामक्षयां शृणु ॥ तस्यां स्नानं तपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्पणम् ॥
दानं च क्रियते यस्यां तत्सर्वं स्यादिहाक्षयम् ॥ आदिः कृतयुगस्येयं युगादिस्तेन कथ्यते ॥ सर्वपापप्रशमनी सर्वसौख्यप्रदायिनी ॥ पुरा
महोदये पार्थ वणिगासीत्सुनिर्धनः ॥ प्रियंवदः सत्यव्रतो देवब्राह्मणपूजकः । पुण्याख्यानैकचित्तोऽभूत्कुटुंबव्याकुलोऽपि सन् । तेन श्रुता
वाच्यमाना तृतीया रोहिणीयुता ॥ यदा स्याद्बुधसंयुक्ता तदा सा तु महत्फला ॥ तस्यां यद्दीयते किंचिदक्षयं स्यात्तदेव हि ॥ इति श्रुत्वा
च गंगायां संतर्प्य पितृदेवताः ॥ गृहमागत्य करकान् सान्नानुदकसंयुतान् । अन्नपूर्णान्बृहत्कुम्भान् जलेन विमलेन च ॥ यवगोधूमलवणा
न्सक्तुदध्योदनं तथा ॥ इक्षुक्षीरविकारांश्च सहिरण्यांश्च शक्तितः ॥ शुचिः शुद्धेन मनसा ब्राह्मणेभ्यो ददौ वणिक् ॥ भार्यया वार्यमाणोऽपि

कुटुंबासक्तचित्तया ॥ यावत्तस्थौ स्थिरे सत्वे मत्वा सर्वं विनश्वरम् ॥ धर्मासक्तमतिः पार्थ कालेन बहुना ततः ॥ जगाम पंचत्वमसौ
वासुदेवमनुस्मरन् ॥ ततः स क्षत्रियो जातः कुशावत्यां युधिष्ठिर ॥ बभूव चाक्षया तस्य समृद्धिर्धर्मसंयुता ॥ ईजे स च महायज्ञैः समा-
प्तवरदक्षिणैः ॥ स ददौ गोहिरण्यानि दानान्यन्यान्यहर्निशम् ॥ बुभुजे कामतो भोगान्दीनांधांस्तर्पयञ्छनैः ॥ तथाऽप्यक्षयमेवास्यां क्षयं
याति न तद्धनम् ॥ श्रद्धापूर्वं तृतीयायां यद्दत्तं विभवं विना ॥ इत्येतच्च समाख्यातं श्रूयतामत्र यो विधिः ॥ तृतीयायां समाख्यातः स्नात्वा
संतर्प्य देवताः ॥ एकभुक्तं तदा कुर्याद्वासुदेवं प्रपूजयेत् ॥ तस्यां कार्यो यवैर्होमो यवैर्विष्णुं समर्चयेत् ॥ यवान्दद्याद्द्विजातिभ्यः प्रयतः
पार्थिव द्विजान् ॥ उदकुंभान्सकरकान्सान्नान्सर्वरसैः सह ॥ यवगोधूमचणकान्सक्तुदध्योदनं तथा ॥ ग्रैष्मकं सर्वमेवात्र सम्यक् दाने प्रशस्य-
ते ॥ तृतीयायां तु वैशाखे रोहिण्यृक्षे प्रपूज्य च ॥ उदकुंभप्रदानेन शिवलोके महीयते ॥ तत्र मंत्रः--एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवा-
त्मकः ॥ अस्य प्रदानात्तृप्यंतु पितरोऽपि पितामहाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुंभं सदक्षिणम् ॥ पितृभ्यः संप्रदास्यामि ह्यक्षय्यमुपति-
ष्ठतु ॥ छत्रोपानत्प्रदानं च गोभूकांचनवाससाम् ॥ यद्यदिष्टं केशवस्य तद्देयमविशंकया ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥
अनाख्येयं न मे किंचिदस्ति स्वल्पं तु तेऽनघ ॥ नास्यां तिथौ क्षयमुपैति हुतं च दत्तं तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया ॥ उद्दिश्य दै-
वतपितॄन्क्रियते मनुष्यैस्तच्चाक्षयं भवति भारत सर्वमेव ॥ इति श्रीभविष्ये अक्षय्यतृतीयाव्रतम् ॥ अस्यामेव विष्णुधर्मोत्तरेऽपि उक्तम्--॥
॥ वैशाखशुक्लपक्षे तु तृतीयायामुपोषितः ॥ रात्रौ भुंक्ते वत्सरे तु मन्वादिषु युगादिषु ॥ अभिरवष्टिं मंत्रं च अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ कृतो-
पवासाः सलिलं ये युगादिदिनेषु च ॥ दास्यंत्यन्नादिसहितं तेषां लोका महोदयाः ॥ अक्षय्यं फलमाप्नोति सर्वस्य सुकृतस्य च ॥ तथा सा कृत्ति-

क्रोपेता विशेषेण च पूजिता ॥ तत्र जप्तं हुतं दत्तं सर्वमक्षय्यमुच्यते ॥ अक्षय्या सा तिथिस्तस्मात्तस्यां सुकृतमक्षयम् ॥ अक्षतैः पूज्यते विष्णुस्तेन साऽप्यक्षया स्मृता ॥ अक्षतैस्तु नरः स्नातो विष्णोर्दत्त्वा तथाऽक्षतान् ॥ सक्तूंश्च संस्कृतांश्चैव हुत्वा च भृगुनंदन ॥ एकाक्षय्यतृतीयायां सर्वासां तु फलं लभेत् ॥ ॥ अत्रैव परशुरामजयंती दोलोत्सवश्च हेमाद्रौ भविष्ये ॥ इति अक्षय्यतृतीयाव्रत संपूर्णम् ॥ ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां रंभाव्रतम् ॥ तदुक्तं माधवीये भविष्ये—कृष्ण उवाच । भद्रे कुरुष्व यत्नेन रंभाख्यं व्रतमुत्तमम् ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां स्नात्वा नियमतत्परा ॥ पूर्वविद्धा तिथिर्ग्राह्या तत्रैव व्रतमाचरेत् ॥ बृहत्तपा तथा रंभा सावित्री वटपैतृकी ॥ कृष्णाष्टमी च भूता च कर्तव्या संमुखी तिथि । इति रंभाव्रतनिर्णयः ॥ अथ श्रावणशुक्लतृतीयायां मधुस्रवाख्या गुर्जरेषु प्रसिद्धा । सा परयुता ग्राह्या । अथाचारमाप्तं श्रावणशुक्लतृतीयायांस्वर्णगौरीव्रतम् तच्च कर्नाटकदेशे भाद्रपदशुक्लतृतीयायां प्रसिद्धम् । तत्र संकल्पः । मम इह जन्मनि जन्मांतरे चाक्षय्यसौभाग्यप्राप्तिकामायाः पुत्रपौत्रादिधनधान्यैश्वर्यप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं स्वर्णगौरीव्रतमहं करिष्ये ॥ तत्र पूजा ॥ देवदेवि समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगत्पते ॥ इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तमे । आवाहनम् ॥ भवानि त्वं महादेवि सर्वसौभाग्यदायिके । अनेकरत्नसंयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम् । आसनम् ॥ सुचारुशीतलं दिव्यं नानागंधसुवासितम् । पाद्यं गृहाण देवेशि महादेवि नमोऽस्तु ते । पाद्यम् ॥ श्रीपार्वति महाभागे शंकरप्रियवादिनि । अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते । अर्घ्यम् ॥ गंगातोयं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् । आचम्यतां महाभागे भवेन सहिते ऽनघे । आचमनीयम् ॥ गंगासरस्वतीरेवाकावेरीनर्मदाजलैः । स्नापिताऽसि मया देवि तथा शांतिं कुरुष्व मे । स्नानम् ॥ सर्वभूषादिके० । वस्त्रम् ॥ कं

१ भूता चतुर्दशी । २ इदं व्रतमस्मद्देशेऽप्रसिद्धत्वात्तत्र क्वचनत्वा वाप्तिर्निर्णीतः ।

चुकीम् । आचमनीयम् ॥ कर्पूरकुंकुमैर्युक्तं हरिद्रादिसमन्वितम् । कस्तूरिकासमायुक्तं चंदनं प्रति० । चंदनम् ॥ हरिद्रा कुंकुमं चैव सिंदूरं कज्जलं तथा । सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वरि । सौभाग्यद्रव्यम् ॥ माल्यादीनि० । पुष्पम् । देवद्रुमरसोद्भूतः कालागरुसमन्वितः । आघ्रेयतामयं धूपो भवानि घ्राणतर्पणः । धूपम् ॥ साज्यंचेति दीपम् ॥ अन्नंचतुर्विधंस्वादु० । नैवेद्यम् ॥ आचमनीयम् ॥ कर्पूरैलालवंगादितांबूलीदलसंयुतम् । क्रमुकादिफलं चैव तांबूलं प्रतिगृ० । तांबूलम् ॥ इदंफलंमयादेवि० । फलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ नीराजनम् ॥ नमस्कारम् ॥ यानि कानि च पापानि० । प्रदक्षिणाः ॥ पुष्पांजलिम् ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते । अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमो ऽस्तु ते । प्रार्थना ॥ भवान्याश्च महादेव्या व्रतसंपूर्णहेतवे । प्रीतये द्विजवर्याय वाणकं प्रददाम्यहम् ॥ स्वलंकृताः सुवासिन्यः पातिव्रत्येन भूषिताः ॥ मम कामसमृद्ध्यर्थं प्रतिगृह्णंतु वाणकम् । वायनम् ॥ इति स्वर्णगौरीपूजा ॥ ॥ अथ कथा ॥ ॥ पुरा कैलासशिखरे सिद्धगंधर्वसेविते । उमया सहितं स्कंदः पप्रच्छ शिवमव्ययम् १ स्कंद उवाच । करुणासागरेशान लोकानां हितकाम्यया । व्रतं कथय देवेश पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम् २ शंकर उवाच । साधु पृष्टं महाभाग कथयामि षडानन । स्वर्णगौरीव्रतं नाम सर्वसंपत्करं नृणाम् ३ पुरा सरस्वतीतीरे विमलाख्या महापुरी । तत्र चंद्रप्रभो नाम राजा ऽभूद्धनदोपमः ४ महादेवी विशालाक्षी भार्ये बालमृगेक्षणे । तयोः प्रियतरा ज्येष्ठा तस्याऽऽसीन्नृपतेर्मता ५ स कदाचिद्वनं भेजे मृगयासक्तमानसः । तत्र शार्दूलवाराहवनमाहिषकुंजरान् ६ हत्वा बभ्राम तृष्णार्तो ददर्श सुमहत्सरः । चकोरचक्रकारंडखंजरीटशताकुलम् ७ उत्फुल्लकल्हारोद्दामकुमुदोत्पलमंडितम् । अपूर्वमवनीशोऽसौ ददर्शाप्सरसां गणम् ८ समासाद्य सरस्तीरं पीत्वा जलमनुत्तमम् । भक्त्या गौरीमर्चयंतं ददर्शाप्सरसां गणम् ९ किमेतदिति पप्रच्छ

कोपेता विशेषेण च पूजिता ॥ तत्र यत् हुतं दत्तं सर्वमक्षय्यमुच्यते ॥ अक्षय्या सा तिथिस्तस्मात्तस्यां सुकृतमक्षयम् ॥ अक्षतैः पूज्यते विष्णुस्तेन साऽप्यक्षया स्मृता ॥ अक्षतैस्तु नरः स्नातो विष्णोर्दत्त्वा तथाऽक्षतान् ॥ सक्तूंश्च संस्कृतांश्चैव हुत्वा च भृगुनंदन ॥ एकाक्षय्यतृतीयायां सर्वासां तु फलं लभेत् ॥ ॥ अत्रैव परशुरामजयंती दोळोत्सवश्च हेमाद्रौ भविष्ये ॥ इति अक्षय्यतृतीयाव्रत संपूर्णम् ॥ ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां रंभाव्रतम् ॥ तदुक्तं माधवीये भविष्ये—कृष्ण उवाच। भद्रे कुरुष्व यत्नेन रंभाख्यं व्रतमुत्तमम् ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां स्नात्वा नियमतत्परा ॥ पूर्वविद्धा तिथिर्ग्राह्या तत्रैव व्रतमाचरेत् ॥ बृहत्तपा तथा रंभा सावित्री वटपैतृकी ॥ कृष्णाष्टमी च भूता च कर्तव्या संमुखी तिथि । इति रंभाव्रतनिर्णयः ॥ अथ श्रावणशुक्लतृतीयायां मधुस्रवाख्या गुर्जरेषु प्रसिद्धा । सा परयुता ग्राह्या । अथाचारमात्रे श्रावणशुक्लतृतीयायां स्वर्णगौरीव्रतम् ॥ तच्च कर्नाटकदेशे भाद्रपदशुक्लतृतीयायां प्रसिद्धम् । तत्र संकल्पः । मम इह जन्मनि जन्मांतरे चाक्षय्यसौभाग्यप्राप्तिकामायाः पुत्रपौत्रादिधनधान्यैश्वर्यप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं स्वर्णगौरीव्रतमहं करिष्ये ॥ तत्र पूजा ॥ देवदेवि समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगत्पते ॥ इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तमे । आवाहनम् ॥ भवानि त्वं महादेवि सर्वसौभाग्यदायिके । अनेकरत्नसंयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम् । आसनम् ॥ सुचारुशीतलं दिव्यं नानागंधसुवासितम् । पाद्यं गृहाण देवेशि महादेवि नमोऽस्तु ते । पाद्यम् ॥ श्रीपार्वति महाभागे शंकरप्रियवादिनि । अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते । अर्घ्यम् ॥ गंगातोयं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् । आचम्यतां महाभागे भवेन सहिते ऽनघे । आचमनीयम् ॥ गंगासरस्वतीरेवाकावेरीनर्मदाजलैः । स्नापिताऽसि मया देवि तथा शांतिं कुरुष्व मे । स्नानम् ॥ सर्वभूषादिके० । वस्त्रम् ॥ कं

१ भूता चतुर्दशी । २ इदं व्रतमस्मदेशेऽप्रसिद्धत्वात् ग्रंथकर्त्रा संक्षिप्तोक्तम् ।

ताभिः सहितो नृपः २९ यच्छोभनं व्रतमिदं कथितं शिवायाः कुर्यान्मम प्रियतरो भविता च गौर्याः । प्राप्य श्रियश्च सततं भुवि शत्रुसंघान्निर्जित्य निर्मलपदं सहसा प्रयाति ३० ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे गौरीखंडे स्वर्णगौरीव्रतकथा ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिर उवाच । उद्यापनविधिं ब्रूहि तृतीयायाः सुरेश्वर । भक्तितः श्रोतुमिच्छामि व्रतसंपूर्तिहेतवे ॥ कृष्ण उवाच । उद्यापनविधिं वक्ष्ये सावधानेन वै शृणु । त्रिंशद्दंडप्रमाणेन प्रमितं दक्षिणोत्तरे ॥ प्रत्यग् प्रागपि राजेंद्र नव गोचर्म इष्यते । गोचर्ममात्रं संलिप्य गोमयेन विचक्षणः ॥ मंडपं कारयेत्तत्र नानावर्णं सुशोभनम् । ग्रहमंडलपार्श्वे तु पद्ममष्टदलं लिखेत् ॥ तन्मध्ये स्थापयेत्कुंभमव्रणं मृन्मयं शुभम् । ताम्रपात्रं प्रकुर्वीत पलैः षोडशभिस्तथा ॥ तदर्धार्धेन वा कुर्याद्वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् । कर्षमात्रसुवर्णेन प्रतिमां कारयेद्बुधः ॥ तदर्धं मध्यमं प्रोक्तं तदर्धं तु कनिष्ठकम् । कृत्वा रूपं प्रयत्नेन पार्वत्याश्च हरस्य च ॥ अथ ताम्रमये पात्रे प्रतिमां तत्र विन्यसेत् । श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नं श्वेतयज्ञोपवीतिनम् ॥ भाजनं च तिलैः पूर्णं कलशोपरि विन्यसेत् । पार्वत्यास्तु युगं दद्यात्स्थापयित्वा विधानतः ॥ वेदोक्तेन प्रतिष्ठा च कर्तव्या तु यथाविधि । पंचामृतेन स्नपनं कृत्वा देवस्य चोत्तमम् ॥ स्नानं च कारयेत्पश्चात्ततः पूजां समाचरेत् । चंदनेन सुगंधेन सुपुष्पैश्च प्रपूजयेत् । धूपं च कल्पयेद्गंधं चंदनागरुसंयुतम् । नानाप्रकारैर्नैवेद्यं तथा दीपं च कारयेत् ॥ अर्चयेत्पूजयेद्भक्त्या गंधपुष्पैः फलाक्षतैः । आवाहनादि कर्तव्यं पुराणागमसंभवैः ॥ कार्या विधानतः पूजा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ देवदेव समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगत्पते । इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥ एवं पूजा प्रकर्तव्या रात्रौ जागरणं ततः । गीतनृत्यादिसंयुक्तं कथाश्रवणपूर्वकम् ॥ अर्चयेत्पूर्ववद्देवं पश्चाद्धोमं समाचरेत् । स्वगृह्योक्तविधानेन कृत्वाऽग्निस्थापनं ततः ॥ प्रारभेच्च ततो होमं नवग्रहपुरःसरम् । तिलांश्च यवसंमिश्रा-

राजा राजीवलोचनः १० अप्सरस उवाच । स्वर्णगौरीव्रतमिदं क्रियतेऽस्माभिरुत्तमम् । सर्वसंपत्करं नृणां तत्कुरुष्व नृपोत्तम ११ राजो
वाच । विधानं कीदृशं ब्रूत किं फलं व्रतधारणात् । ता ऊचुर्योषितः सर्वा नभे मासि तृतीयके १२ प्रारब्धव्यं व्रतमिदं गौर्याः षोडश वत्स-
रान् । तच्छ्रुत्वा सो ऽपि जग्राह व्रतं नियतमानसः १३गुणैः षोडशसंयुक्तं दोरकं दक्षिणे करे।वक्ष्यमाणेन मन्त्रेण भक्त्या गौरीं प्रपूज्य च १४ दो
रकं षोडशगुणं बध्नामि दक्षिणे करे । त्वत्प्रीतये महेशानि करिष्ये ऽहं व्रतं तव १५ ततः कृत्वा व्रतं देव्या अगमन्निजमंदिरे । विशालाक्ष्या
ततो दृष्टो राजा गौर्याः प्रपूजकः १६ बद्धं तं दोरकं हस्ते दृष्ट्वा च पतिकोपना । न कर्तव्यं न कर्तव्यमिति राज्ञि वदत्यपि १७त्रुटित्वा सा च
निक्षेप चाप्यशुष्कतरूपरि । तेन सस्पृष्टमात्रेण तरुः पल्लवतां गतः १८ तद्द्वितीया ततो दृष्ट्वा विस्मयाल्लज्जिता ऽभवत् । तन्मूले दोरकं छिन्नं
गृहीत्वा सा बबंध ह १९ ततस्तद्व्रतमाहात्म्यात्पतिप्रियतरा ऽभवत् । देवी व्रतापचारेण सा त्यक्ता दुःखिता वने २० प्रययौ सा महादेवीं
ध्यायती नित्यमन्विता । मुनीनामाश्रमे पुण्ये निवसती सती क्वचित् २१ निवारिता मुनिवरैर्गच्छ पापे यथासुखम् । धावती विपिनं
घोरं गणाध्यक्षं ददर्श ह २२ तेन दृष्टापि सा गौरीं द्रष्टुमभ्यर्हसुपोषिता । इति निश्चित्य मनसा गन्तुं प्रवर्ततेऽन्यतः २३ ततो ददर्शाग्रे
तरुं गच्छंती च सरोवरम् । ततो वनप्रियं चाऽग्रे सर्वाभरणभूषिता २४ पश्यंती शनैस्तद्धञ्जती चैव मानुषी । तैस्तैर्निराकृता दृष्ट्वा नि
र्विण्णा निपसाद ह २५ ततस्तत्कृपया गौरी प्रादुरासीन्महासती । तां दृष्ट्वा दंडवद्भूमौ नत्वा स्तुत्वा नृपप्रिया २६ जय देवि नमस्तुभ्यं
जयभक्तवरप्रदे । जयशंकरसर्वांगे प्रगल्भे सर्वमंगले २७ ततो लब्ध्वा वरं भक्त्या गौरीमभ्यर्च्य तद्व्रतम् । चक्रे देवी पदं तस्यै ददौ सौ
भाग्यसंपदः २८ इति तस्याः प्रसादेन सर्वान्भोगानवाप्य च । विशालाक्षी प्रिया राज्ञो भूत्वा च मुमुदे भृशम् ॥ अंते शिवपुरं प्राप्तः का

ताभिः सहितो नृपः २९ यच्छोभनं व्रतमिदं कथितं शिवायाः कुर्यान्मम प्रियतरो भविता च गौर्याः । प्राप्य श्रियश्च सततं भुवि शत्रुसंघान्निर्जित्य निर्मलपदं सहसा प्रयाति ३० ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे गौरीखंडे स्वर्णगौरीव्रतकथा ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिर उवाच । उद्यापनविधिं ब्रूहि तृतीयायाः सुरेश्वर । भक्तितः श्रोतुमिच्छामि व्रतसंपूर्तिहेतवे ॥ कृष्ण उवाच । उद्यापनविधिं वक्ष्ये सावधानेन वै शृणु । त्रिंशद्दंडप्रमाणेन प्रमितं दक्षिणोत्तरे ॥ प्रत्यग् प्रागपि राजेंद्र नव गोचर्म इष्यते । गोचर्ममात्रं संलिप्य गोमयेन विचक्षणः ॥ मंडपं कारयेत्तत्र नानावर्णं सुशोभनम् । ग्रहमंडलपार्श्वे तु पद्ममष्टदलं लिखेत् ॥ तन्मध्ये स्थापयेत्कुंभमव्रणं मृन्मयं शुभम् । ताम्रपात्रं प्रकुर्वीत पलैः षोडशभिस्तथा ॥ तदर्धार्धेन वा कुर्याद्वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् । कर्षमात्रसुवर्णेन प्रतिमां कारयेद्बुधः ॥ तदर्धं मध्यमं प्रोक्तं तदर्धं तु कनिष्ठकम् । कृत्वा रूपं प्रयत्नेन पार्वत्याश्च हरस्य च ॥ अथ ताम्रमये पात्रे प्रतिमां तत्र विन्यसेत् । श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नं श्वेतयज्ञोपवीतिनम् ॥ भाजनं च तिलैः पूर्णं कलशोपरि विन्यसेत् । पार्वत्यास्तु युगं दद्यात्स्थापयित्वा विधानतः ॥ वेदोक्तेन प्रतिष्ठा च कर्तव्या तु यथाविधि । पंचामृतेन स्नपनं कृत्वा देवस्य चोत्तमम् ॥ स्नानं च कारयेत्पश्चात्ततः पूजां समाचरेत् । चंदनेन सुगंधेन सुपुष्पैश्च प्रपूजयेत् । धूपं च कल्पयेद्गंधं चंदनागरुसंयुतम् । नानाप्रकारैर्नैवेद्यं तथा दीपं च कारयेत् ॥ अर्चयेत्पूजयेद्भक्त्या गंधपुष्पैः फलाक्षतैः । आवाहनादि कर्तव्यं पुराणागमसंभवैः ॥ कार्या विधानतः पूजा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ देवदेव समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगत्पते । इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥ एवं पूजा प्रकर्तव्या रात्रौ जागरणं ततः । गीतनृत्यादिसंयुक्तं कथाश्रवणपूर्वकम् ॥ अर्चयेत्पूर्ववद्देवं पश्चाद्धोमं समाचरेत् । स्वगृह्योक्तविधानेन कृत्वाऽग्निस्थापनं ततः ॥ प्रारभेच्च ततो होमं नवग्रहपुरःसरम् । तिलांश्च यवसंमिश्रा-

नाग्येन च परिक्षुवान् ॥ सुदुंयाद्गुमन्त्रेण गौरीमन्त्रेण वा शिवम् ॥ एव समाप्य होम तु तत्राचार्यं प्रपूजयेत् ॥ अर्घ्यपुष्पप्रदानैश्च वस्त्रालंकारभूषणै । शक्त्या सदक्षिणां दद्यात्प्रचारैर्गोपिकां मताम् ॥ धेनु सदक्षिणां दत्त्वा सुशीलां च पयस्विनीम् । स्वर्णशृंगीं रौप्यखुरां कांस्यदोहनसंयुताम् ॥ रत्नपुच्छां मन्नयुतां ताम्रपृष्ठामलंकृताम् । सवत्सामव्रणां मद्रां धेनुं दद्यात्प्रयत्नतः । सुवर्णेन समोपेतामाचार्याय च साधवे । षोडशभि प्रकारैश्च पक्वान्नै प्रीणयेत्सदा ॥ षोडशप्रमितैर्दद्याद्ब्राह्मणेभ्य प्रयत्नत । वंशपात्रस्थिते पक्वान्नपक्वान्नवायने शुभे ॥ अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणां च प्रयत्नतः । बन्धुभि सह भुंजीत नियतश्च परेऽहनि ॥ एवं कृत्वा भवेत्पार्थ परिपूर्णव्रती यतः ॥ इति श्रीस्कंदपु० कृ० युधि० सं० स्वर्णगौरीव्रतोद्यापनम् ॥ ॥ अथ सुकृततृतीयाविधिरुच्यते ॥ ॥ श्रावणशुक्लतृतीयायां सुकृतव्रतम् । सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या ॥ ॥ अथ कथा ॥ शौनक उवाच । सर्वकामप्रदानानि व्रतानि कथितानि वै । व्रत कथय यत्नेन येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् १ सूत उवाच । साधु साधु महाभाग लोकानां हितकारक । कथयामि व्रतं दिव्य योषितां फलदायकम् २ कृष्णस्यावरजा साध्वी सुभद्रानामविश्रुता । रूपलावण्यसंपन्ना सुभगा चारुहासिनी ३ गांडीवधन्वनश्चासौ योषिता च वरप्रिया । त्रैलोक्याधिपतिः कृष्णस्तस्याऽहं भगिनी प्रिया ४ इति गर्वसमाविष्टा न किंचिदकरोच्छुभम् । कालोऽपि यस्य त्वाज्ञां वै शिरसा धारयेत्सदा ५ स मे भ्राता सखा कृष्णो दनुजानां निकृंतन । इति संचिंत्य मनसि न किंचित्सा ऽकरोत्तदा ६ सर्व ज्ञात तदा तेन देवदेवेन शार्ङ्गिणा । इति संचिंत्य मनसि भ्रातृत्वान्मम गौरवात् ७ भवाब्धितारण किञ्चिन्मूढत्वान्न करिष्यति । ध्यात्वा मुहूर्तं मनसि श्रीकृ-

१ भद्रोत्तरायताद्यार्दैसविभिर्वाऽऽहुतिभिर्ङ्गुपासिवि प्रवोचापनकोमुत्ताम् ।

नाद्येन च परिस्तुतान् ॥ उद्बुध्यस्वेतिमंत्रेण गौरीमंत्रेण वा शिवम् ॥ एव समाप्य होम तु तत्राचार्यं प्रपूजयेत् ॥ अर्घ्यपुष्पप्रदानैश्च वस्त्रालंकारभूषणैः । शक्त्या सदक्षिणां दद्यात्पयारेगोंषिकां मताम् ॥ धेनु सदक्षिणां दत्त्वा सुशीलां च पयस्विनीम् । स्वर्णशृंगीं रौप्यखुरां कांस्यदोहनसंयुताम् ॥ रत्नपुच्छां वस्त्रयुतां ताम्रपृष्ठामलंकृताम् । सवत्सामव्रणां भद्रां धेनु दद्यात्प्रयत्नतः । सुवर्णेन समोपेतामाचार्याय च साधवे । षोडशभिः प्रकारैश्च पक्वान्नैः प्रीणयेत्सदा ॥ षोडशप्रमितैर्दद्याद्ब्राह्मणेभ्यः प्रयत्नत । वंशपात्रस्थितैः पश्चात्पक्वान्नवायनैः शुभैः ॥ अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणां च प्रयत्नतः । बंधुभि सह भुंजीत नियतश्च परेऽहनि ॥ एव कृत्वा भवेत्पार्थ परिपूर्णव्रती यतः ॥ इति श्रीस्कंदपु० कृ० युधि० सं० स्वर्णगौरीव्रतोद्यापनम् ॥ ॥ अथ सुकृततृतीयाविधिरुच्यते ॥ ॥ श्रावणशुक्लतृतीयायां सुकृतव्रतम् । सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या ॥ ॥ अथ कथा ॥ शौनक उवाच । सर्वकामप्रदानानि व्रतानि कथितानि वै । व्रत कथय यत्नेन येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् १ सूत उवाच । साधु साधु महाभाग लोकानां हितकारक । कथयामि व्रतं दिव्यं योषितां फलदायकम् २ कृष्णस्यावरजा साध्वी सुभद्रानामविश्रुता । रूपलावण्यसपन्ना सुभगा चारुहासिनी ३ गांडीवधन्वनश्चासौ योषिता च वरप्रिया । त्रैलोक्याधिपतिः कृष्णस्तस्याऽहं भगिनी प्रिया ४ इति गर्वसमाविष्टा न किंचिदकरोच्छुभम् । कालोऽपि यस्य त्वाज्ञां वै शिरसा धारयेत्सदा ५ स मे भ्राता सखा कृष्णो दनुजानां निकृंतनः । इति संचिंत्य मनसि न किंचित्सा ऽकरोत्तदा ६ सर्वं ज्ञात तदा तेन देवदेवेन शार्ङ्गिणा । इति संचिंत्य मनसि भ्रातृत्वान्मम गौरवात् ७ भवाब्धितारणं किंचिन्मूढत्वान्न करिष्यति । ध्यात्वा मुहूर्तं मनसि श्रीकृ-

१ महोत्तरयवात्यार्थैसमिभिर्वाऽऽहुतिभिर्जुहुयादिति व्रतोद्यापनकौमुदाम् ।

ष्णो भक्तवत्सलः ८ सुभद्रानिकटे गत्वा वचनं चेदमब्रवीत् । परलोकजिगीषार्थं न किंचिदपि ते कृतम् ९ व्रतं कुरुष्व मनसा सर्वान्कामानवाप्स्यसि । सुकृतं तारकं लोके लोकानां हितकारकम् १० यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः । भुक्तिमुक्तिप्रदं चापि सर्वसौभाग्यदायकम् ११ व्रतं कुरुष्व चाद्यैव सुकृतस्य फलाप्तये । कालोऽहं सर्वलोकेषु वृक्षरूपेण संस्थितः १२ धर्मस्तस्य च मूलं हि ऋतवः स्कंध एव च । मासा द्वादशसंख्याकाश्चोपशाखा ह्यनुक्रमात् १३ षष्ट्याधिकं च त्रिशतं फलानि वासरास्तथा । पर्णानि घटिकाः प्रोक्ताः कालोऽहं वृक्षरूपकः १४ तस्मात्फलानां प्राप्त्यर्थं व्रतं कुरुष्व शोभने । नभसि मासे संप्राप्ते शुक्लपक्षे च भामिनि १५ तृतीया हस्तसंयुक्तां[1] व्रतं कार्यमिदं शुभम् । प्रातश्चैव समुत्थाय दंतधावनपूर्वकम् १६ स्नानं कुर्याद्यथान्यायं हरिद्राभिः समन्वितम् । मध्याह्ने चैव संप्राप्ते कृत्वा गोमयमंडलम् १७ चतुर्द्वारेण सहितं मंडपं तत्र कारयेत् । वेदिं विरच्य धवलां हस्तमात्रां विशेषतः १८ तन्मध्येऽष्टदलं पद्ममक्षतैः परिकल्पयेत् । पीठे मां[2] चोपरि स्थाप्य क्षीराब्धितनया सह १९ उपचारैः षोडशभिः पूजयेद्भक्तिसंयुतः । षष्ट्याधिकं च त्रिशतं सुकृतस्य फलानि वै २० गोधूमचूर्णेन फलं शर्कराभिः समन्वितम् । औदुंबरस्य वृक्षस्य फलकारं च कारयेत् २१ वेणुपात्रे च संस्थाप्य वाणकं च द्विजातये । सहिरण्यं सतांबूलं दद्याच्चैव यथाविधि २२ वायनमंत्रः—। पुत्रपौत्रसमृद्ध्यर्थं सौभाग्यावाप्तये तथा । वाणकं वै प्रदास्यामि व्रतसंपूर्तिहेतवे २३ पिष्टस्य च फलानां वै पायसं परिकल्पयेत् । भ्रातृस्वरूपिणं मां च भोजयित्वा यथाविधि २४ इति कृत्वा च विधिवत्समाप्य च ततः परम् । तृतीये वत्सरे प्राप्ते उद्यापनविधिं चरेत् २५ आचार्यं वरयेद्भक्त्या वेदवेदांगपारगम् । सुशीलं सर्वधर्मज्ञं शान्तं दान्तं कुटुंबिनम्

१ तस्यां तृतीयायां व्रतं कार्यमित्यर्थः । २ विष्णुरूपं मां कृष्णमित्यर्थः ।

२६ स्वस्ति वाच्य द्विजैः साकं नांदीश्राद्धं विधाय च । हैमीं च प्रतिमां कुर्यान्निष्कनिष्कार्धसंख्यया २७ क्षीराब्धितनया साकं मां प्रतिष्ठाप्य भक्तितः । नवीनं कलशं ताम्रं पिधानेन समन्वितम् २८ पञ्चवैश्च हिरण्यैश्च वस्त्रयुग्मेन वेष्टितम् । तन्मध्ये मां प्रतिष्ठाप्य उपचारैः प्रपूजयेत् २९ ततः पुष्पांजलिं दद्यात्क्षमाप्य च पुनः पुनः । वायनं हि प्रदद्याच्च व्रतसंपूर्तिहेतवे ३० लक्ष्मीनारायणो देवो ह्यस्मात्संसारसागरात् । रक्षेद्वै सकलात्पापादिह सर्वं ददातु मे ३१ अच्युतः प्रतिगृह्णाति अच्युतो वै ददाति च । अच्युतस्तारकोभाभ्यामच्युताय नमो नमः ३२ रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवादित्रमंगलैः । पुराणश्रवणेनैव रात्रिशेषं ततो नयेत् ३३ प्रभाते विमले स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य च । विष्णोर्युक्तं-सकृमिव-होममन्त्रद्वय स्मृतम् ३४ अष्टाधिकद्विशतं च तिलैर्होमं तु कारयेत् । कलशं प्रतिमायुक्तमाचार्याय निवेदयेत् ३५ गां दद्यात्कपिलां चैव सालंकारां सदक्षिणाम् । आचार्यं पूजयेद्भक्त्या वस्त्रैराभरणैरपि ३६ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्वतुर्विंशतिसंख्यकान् । आशिषो वै गृहीत्वाऽथ स्वयं भुंजीत वाग्यतः ३७ इति तस्य वचः श्रुत्वा तत्सर्वं हि चकार सा । भुक्त्वा भोगान्यथाकाममन्ते स्वर्गं जगाम सा ३८ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे सुकृतव्रतकथा उद्यानं च ॥ ॥ अथ भाद्रपदशुक्लतृतीयायां शिष्टपरिगृहीतं हरितालिकाव्रतम् ॥ ॥ तच्च परविद्धायां कार्यम् । मुहूर्तमात्रसत्त्वेपि दिने गौरीव्रतं परे—इति माधवोक्तेः ॥ हरितालिकाव्रतसत्त्वे पुरस्कारेणापि परविद्धाग्रहणवचनाद्दिवोदासीये उदाहृतत्वाच्च । तत्र व्रतविधिः ॥ भाद्रपदशुक्लतृतीयायां प्रातस्तिलामलककल्केन स्नात्वा, पट्टवस्त्रं परिधाय मासपक्षाद्युल्लिख्य, मम समस्तपापक्षयपूर्वकसप्तजन्मराज्याखंडितसौभाग्यादिविवृद्धये उमामहेश्वरप्रीत्यर्थं हरितालिकाव्रतमहं करिष्ये । तत्रादौ गणपतिपूजनं करिष्ये इति संकल्प्य गौरीयुक्तं महेश्वरं पूजयेत् ॥ ॥ अथ पूजा ॥ पीतकौशेयवसनां हेमाभां कमलासनाम् ॥ भक्ता

नां वरदां नित्यं पार्वतीं चिंतयाम्यहम्। मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालांकितशेखराय। दिव्यांबरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमः
शिवाय। उमामहेश्वराभ्यांनमः। ध्यायामि॥ देवदेव समागच्छ प्रार्थयेहं जगन्मये॥ इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम। उमामहे-
श्वराभ्यां नमः। आवाहनम्॥ भवानि त्वं महादेवि सर्वसौभाग्यदायिके॥ अनेकरत्नसंयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम्। आसनम्। सुचारुशी-
तलं दिव्यं नानागंधसमन्वितम्॥ पाद्यं गृहाण देवेशि महादेवि नमोऽस्तु ते। पाद्यम्। श्रीपार्वति महाभागे शंकरप्रियवादिनि॥ अ-
र्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते। अर्घ्यम्॥ गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्॥ आचम्यतां महाभागे रुद्रेण सहितेऽनघे
आचमनीयम्॥ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः॥ स्नापितासि मया देवि तथा शांतिं कुरुष्व मे। स्नानम्॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करा-
मधुसंयुतम्॥ पंचामृतेन स्नपनं प्रीत्यर्थं प्र०॥ पंचामृतस्नानम्। किरणाधूतपापा च पुण्यतोया सरस्वती॥ मणिकर्णिजलं शुद्धं स्नानार्थं
प्र०। स्नानम्॥ सर्वभूषाधि० वस्त्रम्॥ उपवीतम्॥ कंचुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्॥ गृहाण त्वं मया दत्तं पार्वति च
नमोऽस्तु ते। कंचुकीम्॥ कुंकुमागरुकर्पूरं चंदनं कस्तुरीयुतम्। विलेपनं महादेवि गंधं दास्यामि भक्तितः। गंधम्॥ रंजिताः कुंकुमौघेन
ह्यक्षताश्चातिशोभनाः॥ भक्त्या समर्पितास्तुभ्यं प्रसन्ना भव पार्वति। अक्षतान्॥ हरिद्रा कुंकुमं चैव सिंदूरं कज्जलान्वितम्॥ सौभाग्य-
द्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वरि। सौभाग्यद्रव्याणि॥ सेवंतिकाबकुलचंपकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः॥ बिल्वप्रवालतुल-
सीदलमालतीभिस्त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद। पुष्पम्॥ अथांगपूजा॥ उमायैनमः पादौपूजयामि गौर्यै० जंघे० पार्वत्यै० जानुनी०
जगद्धात्र्यै० ऊरू० जगत्प्रतिष्ठायै० कटी० शांतिरूपिण्यै०नाभिं० देव्यै० उदरं०लोकवंदितायै० स्तनौ० काल्यै० कंठं०शिवायै० मुखं० भ-

वान्यै०नेत्रे०रुद्राण्यै० कर्णौ•शर्वाण्यै०ललाटं० मंगलदात्र्यै० शिरःपू•। देवद्रुमरसोद्भूत कृष्णागरुसमन्वितः।आनीतो ऽय मया धूपो भवानि प्रतिगृ•।धूपम्॥त्वं ज्योतिः सर्वदेवानां तेजसां तेज उत्तमम्॥आत्मज्योतिः परं धाम दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । दीपम्॥अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् । भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रति० । नैवेद्यम् । आचमनीयम् । मलयाचलसंभूतं कर्पूरेण समन्वितम् ॥ करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते । करोद्वर्तनम् ॥ इदं फलं मया देवि० फलम् ॥ पूगीफलं महद्दिव्यं० । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं० । दक्षिणाम् वज्रमाणिक्यवैडूर्यमुक्ताविद्रुममंडितम् ॥ पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् । भूषणम् ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्त्वमेव च । त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृ०।नीराजनम्॥नामपूजा॥उमायै० नमः गौर्यै० पार्वत्यै० जगद्धात्र्यै० जगत्प्रतिष्ठायै० शान्तिरूपिण्यै० ॥ हरायनमः, महेश्वराय० शंभवे० शूलपाणये० पिनाकधृषे० शिवाय० पशुपतये०महादेवाय०॥मंदारमालेति पुष्पांजलिम्॥यानिकानिचेति प्रदक्षिणा॥अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि । नमस्कारम्॥पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते । अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमोस्तु ते । इति प्रार्थना ॥ ततो वैणवपात्राणि सौभाग्यद्रव्यसहितानि वायनानि दद्यात् ॥ अत्र सुवर्णपात्रस्थं सवस्त्रफलदक्षिणम् । वायनं गौरि विप्राय ददामि प्रीतये तव । सौभाग्यारोग्यकामाय सर्वसंपत्समृद्धये । गौरि गौरीशतुष्ट्यर्थं वायनं ते ददाम्यहम्—इति मंत्राभ्यां वायनम् ॥ तस्मिन्नहनि कर्तव्यं पूजनं रजनीमुखे । अर्धरात्रे उमाकांते अर्चनं जागरं चरेत् ॥ इति पूजा ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच । मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालांकितशेखराय । दिव्यांबरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमः शिवा-
य १ कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् । गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं कथयस्व महेश्वर २ सर्वेषां सर्वधर्माणामल्पायासं महत्फलम् । प्रसन्नो

सि यदा नाथ तथ्यं ब्रूहि ममाग्रतः ३ केन त्वं हि मया प्राप्तस्तपोदानव्रतादिना । अनादिमध्यनिधनो भर्ता चैव जगत्प्रभुः ४ ईश्वर उ-
वाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तावग्रे व्रतमुत्तमम् । यद्गोप्यं मम सर्वस्वं कथयामि, तव प्रिये ५ यथा चोडुगणे चंद्रो ग्रहाणां भानुरेव च ।
वर्णानां च यथा विप्रो देवानां विष्णुरेव च ६ नदीनां च यथा गंगा पुराणानां च भारतम् । वेदानां च यथा साम इंद्रियाणां मनो यथा
७ पुराणवेदसर्वस्वमागमेन यथोदितम् । एकाग्रेण शृणुष्वैतद्यथा दृष्टं पुरातनम् ८ येन व्रतप्रभावेण प्राप्तमर्धासनं मम । तत्सर्वं कथ-
यिष्येऽहं त्वं मम प्रेयसी यतः ९ भाद्रे मासि सिते पक्षे तृतीया हस्तसंयुता । तदनुष्ठानमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते १० शृणु देवि त्वया
पूर्वं यद्व्रतं चरितं महत् । तत्सर्वं कथयिष्यामि यथा वृत्तं हिमालये ११ पार्वत्युवाच । कथं कृतं मया नाथ व्रतानामुत्तमं व्रतम् । तत्सर्वं
श्रोतुमिच्छामि त्वत्सकाशान्महेश्वर १२ शिव उवाच । अस्ति तत्र महान्दिव्यो मिमवान्नग उत्तमः । नानाभूमिसमाकीर्णो नानाद्रुमसमा-
कुलः १३ नानापक्षिसमायुक्तो नानामृगविचित्रकः । यत्र देवाः सगंधर्वाः सिद्धचारणगुह्यकाः १४ विचरंति सदा हृष्टा गंधर्वा गीततत्पराः ।
स्फाटिकैः कांचनैः शृंगैर्मणिवैडूर्यभूषितैः १५ भुजैर्लिखन्निवाकाशं सुहृदो मंदिरं यथा । हिमेन पूरितो नित्यं गंगाध्वनिनिनादतः १६ पार्वति त्वं
यथा बाल्ये परमाचरती तपः । अब्दद्वादशकं देवि धूम्रपानमधोमुखी १७ संवत्सरचतुःषष्टिं पक्वपर्णाशनं कृतम् । माघमासे जले मग्ना वैशाखे
चाग्निसेवनम् १८ श्रावणे च बहिर्वासा अन्नपानविवर्जिता । दृष्ट्वा तातेन तत्कष्टं चिंतया दुःखितोऽभवत् १९ कस्मै देया मया कन्या एवं
चिंतातुरोऽभवत् । तदैवावसरे प्राप्तो ब्रह्मपुत्रस्तु धर्मवत् २० नारदो मुनिशार्दूलः शैलपुत्रीं दिदृक्षया । दत्त्वाऽर्घ्यं विष्टरं पाद्यं नारदं प्रोक्तवान्
गिरिः २१ हिमवानुवाच । किमर्थमागतः स्वामिन् वदस्व मुनिसत्तम । महाभाग्येन संप्राप्तं त्वदागमनमुत्तमम् ॥२२॥ नारद उवाच । शृणु

शैलेंद्र मद्वाक्य विष्णुना प्रेषितोऽस्म्यहम् । योग्यं योग्याय दातव्य कन्यारत्नमिदं त्वया २३ वासुदेवसमो नास्ति ब्रह्मविष्णुशिवादिषु । तस्मै देया त्वया कन्या अत्रार्थे संमतं मम २४ ॥ हिमवानुवाच । वासुदेवः स्वय देवः कन्यां प्रार्थयते यदि । तदा मया प्रदातव्या त्वदागमनगौरवात् २५ इत्येव गदितं श्रुत्वा नमस्यतर्दधे मुनिः । ययौ पीतांबरघर शंखचक्रगदाधरम् २६ कृतांजलिपुटो भूत्वा मुनींद्रस्तम माघव २७ नारद उवाच । शृणु देव मयत्कार्यं विवाहो निश्चितस्तव । हिमवांस्तु तदा गौरीमुवाच वचन मुदा २८ दत्तासि त्व मया पुत्रि देवाय गरुडध्वजे । श्रुत्वा वाक्यं पितुर्देवी गता सा सखिमंदिरम् २९ भूमौ पतित्वा सा देवी विललापातिदुःखिता । विलपतीं तदा दृष्ट्वा सखी वचनमब्रवीत् ३० सख्युवाच । किमर्थं दुःखिता देवि कथयस्व ममाग्रतः । यद्भवत्याऽभिलषितं करिष्येऽहं न संशय ३१ पार्वत्युवाच । सखि शृणु मम प्रीत्या मनोभिलषित मम । महादेवं च भर्तारं करिष्येऽहं न संशयः ३२ एतन्मे चिंतितं कार्यं तातेन कृत मन्यथा । तस्माद्देहपरित्यागं करिष्येऽहं सखि प्रिये ३३ पार्वत्या वचनं श्रुत्वा सखी वचनमब्रवीत् ३४ सख्युवाच । पिता यत्र न जानाति गमिष्यावो हि तद्वनम् । इत्येवं संमतं कृत्वा नीताऽसि त्वं महद्वनम् ३५ पिता निरीक्षयामास हिमवांस्तु गृहे गृहे । केन नीताऽसि मे पुत्रि देवदानवकिंनरैः ३६ नारदाग्रे कृतं सत्यं किं दास्ये गरुडध्वजे । इत्येव चिंतयाविष्टो मूर्च्छितो निपपात ह ३७ हा हा कृत्वा प्रधावन्ति लोकास्ते गिरिपुंगवम् । ऊचुर्गिरिवर सर्वे मूर्च्छाहेतुं गिरे वद ३८ गिरिरुवाच । दुःखस्य हेतुं शृणुत कन्यारत्न हृतं मम । दष्टा वा कालसर्पेण सिंहव्याघ्रेण वा हता । न जाने क्व गता पुत्री केन दुष्टेन वा हृता ३९ चकंपे शोकसंतप्तो वातेनेव महातरुः । गिरिर्वनाद्वनं यात

१ मम पतुर्थ्यर्थे सप्तमी । २ गरुडध्वजायेत्यर्थः ।

स्त्वदालोकनकारणात् ४० सिंहव्याघ्रैश्च भल्लैश्च रोहिभिश्च महावनम्। त्वं चापि विपिने घोरे व्रजंती सखिभिः सह४१तत्र दृष्ट्वा नदीं रम्यां तत्तीरे च महागुहाम्। तां प्रविश्य सखीसार्द्धमन्नभोगविवर्जिता ४२ संस्थाप्य वालुकालिंगं पार्वत्या सहितं मम। भाद्रशुक्लतृतीयायामर्चयंती तु हस्तभे ४३ तत्र वाद्येन गीतेन रात्रौ जागरणं कृतम्। व्रतराजप्रभावेण आसनं चलितं मम ४४ संप्राप्तो ऽहं तदा तत्र यत्र त्वं सखिभिः सह। प्रसन्नो ऽस्मि मया प्रोक्तं वरं ब्रूहि वरानने ४५ पार्वत्युवाच। यदि देव प्रसन्नो ऽसि भर्ता भव महेश्वर। तथेत्युक्त्वा तु संप्राप्तः कैलासं पुनरेव च ४६ ततः प्रभाते संप्राप्ते नद्यां कृत्वा विसर्जनम्। पारणं तु कृतं तत्र सख्या सार्द्धं त्वया शुभे ४७ हिमवानपि तं देशमाजगाम घनं वनम्। चतुराशा निरीक्षंस्तु विह्वलः पतितो भुवि ४८ दृष्ट्वा तत्र नदीतीरे प्रसुप्तं कन्यकाद्वयम्। उत्थाप्योत्संगमारोप्य रोदनं कृतवान्गिरिः ४९ गिरिरुवाच। सिंहव्याघ्राहिभल्लूकैर्वने दुष्टे कुतः स्थिता ५० पार्वत्युवाच। शृणु तात मया ज्ञातं त्वं दास्यसीश्वराय माम्। तदन्यथा कृतं तात तेनाहं वनमागता ५१ ददासि तात यदि मामीश्वराय तदा गृहम्। आगमिष्यामि नैवं चेदिह स्थास्यामि निश्चितम् ५२ तथेत्युक्त्वा हिमवता नीतासि त्वं गृहं प्रति। पश्चाद्दत्ता त्वमस्माकं कृत्वा वैवाहिकीं क्रियाम् ५३ तेन व्रतप्रभावेण सौभाग्यं साधितं त्वया। अद्यापि व्रतराजस्तु न कस्यापि निवेदितः ५४ नामास्य व्रतराजस्य शृणु देवि यथाऽभवत्। आलिभिर्हरिता यस्मात्तस्मात्सा हरितालिका ५५ देव्युवाच। नामेदं कथितं देव विधिं वद मम प्रभो। किं पुण्यं किं फलं चास्य केन च क्रियते व्रतम् ५६ ईश्वर उवाच। शृणु देवि विधिं वक्ष्ये नारी सौभाग्यहेतुकम्। करिष्यति प्रयत्नेन यदि सौभाग्यमिच्छति ५७ तोरणादि प्रकर्तव्यं कदलीस्तंभमंडितम्। आच्छाद्य पट्टवस्त्रैस्तु नानावर्णविचित्रितैः ५८ चंदनेन सुगंधेन लेपयेद्गृहमंडपम्। शंख-

भेरीमृदंगैस्तु कारयेद्बहुनिस्वनैः ५९ नाना मंगलगीतं च कर्तव्यं मम सद्मनि । स्थापयेद्वालुकालिंगं पार्वत्या सहित मम ६० पूजये
द्बहुपुष्पैश्च गंधधूपादिभिर्नवैः । नानाप्रकारैर्नैवेद्यैः पूजयेज्जागरं चरेत् ६१ नारीकेलैः पूगफलैर्जंबीरैर्बहुभिस्तथा । बीजपूरैः सनारिंगैः
फलैश्चान्यैश्च भूरिशः ६२ ऋतुकालोद्भवैर्भूरिप्रकारैः कंदमूलकैः । गंधपुष्पैर्धूपदीपैर्मंत्रेणानेन पूजयेत् ६३ ॐनमः शिवाय शांताय प
चवक्राय शूलिने । नंदिभृंगिमहाकालगणयुक्ताय शम्भवे ६४ शिवायै हरकांतायै प्रकृत्यै सृष्टिहेतवे । शिवायै सर्वमांगल्यै शिवरूपे जगन्मये६५
शिवे कल्याणदे नित्यं शिवरूपे नमोऽस्तु ते । शिवरूपे नमस्तुभ्यं शिवायै सततं नमः ६६ नमस्ते ब्रह्मचारिण्यै जगद्धात्र्यै नमो नमः ।
संसारभयसंतापात्त्राहि मां सिंहवाहिनि ६७ येन कामेन देवि त्वं पूजितासि महेश्वरि । राज्यसौभाग्यसंपत्तिं देहि मामथ पार्वति ६८ म
त्रेणानेन देवि त्वां पूजयित्वा मया सह । कथां श्रुत्वा विधानेन दद्यादन्नं च भूरिशः ६९ ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति देयं वस्त्रहिरण्यगाः ।
अन्येषां भूयसी देया स्त्रीणां वै भूषणादिकम् ७० भर्त्रा सह कथां श्रुत्वा भक्तियुक्तेन चेतसा । कृत्वा व्रतेश्वरं देवि सर्वपापैः प्रमुच्यते
७१ सप्तजन्म भवेद्राज्यं सौभाग्यं चैव वर्द्धते । तृतीयायां तु या नारी आहारं कुरुते यदि ७२ सप्तजन्म भवेद्वन्ध्या वैधव्यं जन्मजन्मनि ।
दारिद्र्यं पुत्रशोकं च कर्कशा दुःखभागिनी ७३ पच्यते नरके घोरे नोपवासं करोति या । राजते कांचने ताम्रे वैणवे चाथ मृन्मये ७४
भाजने विन्यसेदन्नं स वस्त्रफलदक्षिणम् । दानं च द्विजवर्याय दद्यादंते च पारणा ७५ एवं विधिं या कुरुते च नारी त्वया समाना रमते
च भर्त्रा । भोगाननेकान्भुवि भुज्यमाना सायुज्यमंते लभते हरेण ७६ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । कथाश्रवणमात्रेण त
त्फलं प्राप्यते नरैः ७७ एतत्ते कथितं देवि तवाग्रे व्रतमुत्तमम् । कोटियज्ञकृतं पुण्यमस्यानुष्ठानमात्रतः ७८ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे

हरगौरीसंवादे हरितालिकाव्रतकथा संपूर्णा॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ पार्वत्युवाच । उद्यापनविधिं ब्रूहि तृतीयायाः सुरेश्वर । भक्तितः श्रोतुमिच्छामि व्रतसंपूर्णहेतवे ॥ महादेव उवाच । उद्यापनविधिं वक्ष्ये व्रतराजस्य शोभने । यस्यानुष्ठानमात्रेण संपूर्णं हि व्रतं भवेत् ॥ चतुस्तंभं चतुर्द्वारं कदलीस्तंभमंडितम् । घंटिकाचामरयुतं कमलैरुपशोभितम् ॥ चंदनागरुकर्पूरैर्लेपितं मंडपं शुभम् । मध्ये वितानं बध्नीयात्पंचवर्णैरलंकृतम् । तन्मध्ये कारयेत्पद्मं पंचवर्णैः सुशोभनैः । तस्योपरि न्यसेद्व्रीहीन् द्रोणेन परिसंमितान् ॥ सौवर्णं राजतं ताम्रं कलशं विन्यसेद्बुधः । पंचरत्नानि निक्षिप्य सर्वौषधिसमन्वितम् ॥ तस्योपरि न्यसेत्पात्रं सौवर्णं राजतं च वा । वृषारूढं महादेवं रजतेन विनिर्मितम् ॥ सर्वावयवसंयुक्तां गौरीं हेम्ना विनिर्मिताम् । पूजयेत्तत्र गंधाद्यैः पुष्पैर्नानाविधैः शुभैः ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्कथावाचनपूर्वकम् । ततः प्रभातसमये कृत्वा स्नानादि कर्म च ॥ पूर्ववच्चार्चयेद्देवीं पश्चाद्धोमं समाचरेत् । स्वगृह्योक्तविधानेन कृत्वाऽग्निस्थापनं ततः ॥ प्रारभेच्च ततो होमं नवग्रहपुरःसरम् । तिलांश्च यवसंमिश्रानाज्येन च परिप्लुतान् ॥ जुहुयाद्रुद्रमंत्रेण गौरीमंत्रेण वेदवित् । अष्टोत्तरशतं चापि ह्यष्टाविंशतिमेव वा ॥ एवं समाप्य होमं तु तत्राचार्यं प्रपूजयेत् । सुवर्णरत्नवासोभिर्गां दद्याच्च यथाविधि ॥ शय्यां सोपस्करां दद्यादाचार्याय प्रयत्नतः । षोडश द्विजयुग्मानि सुपक्वान्नैश्च भोजयेत् ॥ सौभाग्यद्रव्यवस्त्राणि वंशपात्राणि षोडश ॥ दातव्यानि प्रयत्नेन ब्राह्मणेभ्यो यथाविधि ॥ अन्येभ्यो द्विजवर्येभ्यो दक्षिणां च प्रयत्नतः । भूयसी परया भक्त्या प्रदद्याच्छिवतुष्टये ॥ उद्दिश्य पार्वतीशं च सर्वं कुर्यादतंद्रितः । बंधुभिः सह भुंजीत नियतश्च परेऽहनि ॥ एवं या कुरुते नारी व्रतराजं मनोहरम् । सौभाग्यमखिलं तस्याः सप्तजन्म न संशयः ॥ इति श्रीहरितालिका व्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ अथाश्विनकृष्णतृतीयायां बृहद्गौरीव्रतम् ॥ डोर्लीति देशभाषायाम् ।

शाखामूलफलैः सह रिंगिणी इति प्रसिद्धां बृहतीं गृहे आनीय सिकता वेद्यां निक्षिप्य उदकेनासिच्य तत्र तां न्यसेव ॥ चद्रोदय दृष्ट्वा सु-
स्नात्वा पयसखीमि सह अलकृत्य पूजयेत् । तद्यथा– मम इह जन्मनि जन्मांतरे चाक्षय्यसौभाग्यप्राप्तिकामा पुत्रपौत्रादिधनधान्यै-
श्वर्यप्राप्त्यर्थं श्रीगौरीप्रीत्यर्थं बृहद्गौरीव्रत करिष्ये इति सङ्कल्प्य कलशे वरुण संपूज्य बृहद्गौरीं पूजयेत् ॥ चतुर्भुजा सुवर्णाभां नानालकार
भूषिताम् । हिमेंदुतुहिनाभासा मुक्तामणिविभूषिताम् ॥ पाशांकुशधरां देवीं ध्यायेत्सर्वार्थसिद्धिदाम् । कमडलुधरा सूक्ष्मां पानपात्र च
बिभ्रतीम् । ध्यायामि ॥ एहि मातर्विशुद्धे त्व त्रिगुणे परमेश्वरि । आवाहयामि भक्त्या त्वा प्रसन्ना भव सर्वदा । आवाहनम् ॥ हेमरत्नकु-
तं देवि आसन ते विनिर्मितम् । पाशांकुशधरां देवीमासने स्थापयाम्यहम् । आसनम् ॥ अक्षमालाङ्कुशधरे वीणापुस्तकधारिणि । भक्त्या
दत्त मया तोय पाद्यार्थ प्रतिगृह्यताम् । पाद्यम् ॥ अर्घ्यं ददामि ते मातर्भक्तानामभयकरे । गृहाण त्व बृहद्गौरि गधाक्षतसमन्वितम् ।
अर्घ्यम् ॥ भक्तानामिष्टदे मातः सर्वालकारसयुते । आचम्यतां जगन्मातर्बृहद्गौरि नमोऽस्तु ते । आचमनम् ॥ तत पचामृतस्नानम् ॥ स्नापया-
मि जगन्मातस्त्वां सुतीर्थजलेन वै। प्रार्थयित्वा मया देवि सद्यस्तापविनाशिनि । स्नानम् ॥ वस्त्रं धौत मया देवि दुकूलं तव निर्मितम् । भक्त्या
समर्पित मातर्गृह्यता जगदबिके । वस्त्रम् ॥ हरिद्राकुकुम चैव सिंदूर कज्जलान्वितम् । सौभाग्यद्रव्यसयुक्त गृहाण परमेश्वरि । सौभाग्यद्र
व्यम् ॥ पचसूत्रविनिर्मितं दोरक अर्पयेत् ॥ मलयाचलसभूतं घनसारं मनोहरम् । गध गृहाण देवि त्व बृहद्गौरि नमोस्तु ते । गधम् ॥
करवीरैर्जातिकुसुमैश्चपकैर्बकुलैः शुभैः । शतपत्रैश्च कल्हारैरर्चयेत्परमेश्वरीम् । पुष्पम् ॥ धूपो ऽय गृह्यतां देवि कालागरुसमन्वित । आ
घ्रेयः सर्वदेवानां देवद्रुमरसोद्भवः । धूपम् ॥ दीप गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहे । वह्निना योजित मातर्बृहद्गौरि नमो नमः । दीपम् ॥

नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् । नैवेद्यम् ॥ मध्येपानीयं ॥ इदंफलमिति नारिकेलफलम् ॥ पूगीफलमिति तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् ॥ नीराजनम् ॥ पुष्पांजलिम् ॥ अथ कंठे दोरकं बध्नीयात् ॥ धारयिष्यामि भद्रे त्वां त्वद्भक्ता त्वत्परायणा । आयुर्देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे शिवे । दोरकबंधनम् ॥ क्षेमसंपत्करे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि । सर्वकामप्रदे देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते —इति विशेषार्घ्यम् ॥ ततश्चंद्रार्घ्यम् — क्षीरोदार्णवसंभूत लक्ष्मीबंधो निशाकर । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितः शशिन् । प्रार्थना— गगनांगणसंदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव । भाभासितदिगंतांत रमानुज नमो ऽस्तु ते । आनीताऽसि मया देवि पूजिता ऽसि मया शुभे । सौभाग्यं मम देहि त्वं यत्रस्था तत्र गम्यताम् । इति विसर्जनम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ विजयोवाच । अथान्यच्च बृहद्गौरीव्रतं वक्ष्यामि कन्यके । मासि भाद्रपदे कृष्णे तृतीयायां च तद्व्रतम् १ आनयेद्बृहतीं गौरीं शाखामूलफलैः सह । -रिंगिणीवृक्षं समूलमानयेत् ॥ निक्षिप्य गृहवेद्यां तु तदधः सिकतां शुभाम् २ न्यसेच्चंद्रोदयं दृष्ट्वा स्नात्वा धौतांबरावृता । सखीभिः सहिता सम्यगलंकृत्य प्रपूजयेत् ३ गौरीमावाह्य विधिवत्सिकतामंडले शुभे । गंधपुष्पाक्षतैर्दिव्यैर्धूपदीपैरनेकशः ४ सर्वोपचारैर्बृहतीं पंचपंचभिरर्चयेत् । एवं पूज्य यथाशक्ति कृत्वा चैव प्रदक्षिणाम् ५ बध्नीयाद्दोरकं पश्चात्तंतुपंचकनिर्मितम् । बध्नामि दोरकं कंठे त्वद्भक्ता त्वत्परायणा ६ आयुर्देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे शुभे । अनेन दोरकं बध्वा चंद्रायार्घ्यं समर्पयेत् ७ क्षेमसंपत्करे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि । सर्वकामप्रदे देवि गृहाणार्घ्यं नमो ऽस्तु ते ८ गगनांगणसंदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव । भाभासितदिगंतांत सोमराज नमोऽस्तु ते ९ कथामेतां च शृणुयाद्गौर्यग्रे तन्मनाः सदा । ततो गोधूमचूर्णेन पंचभिः कुडवैर्युतम् १० पक्वान्नमर्धं विप्राय दत्त्वा भुंजीत च स्वयम् । एवं वै पंचवर्षाणि

कृत्वा व्रतमनुत्तमम् । सर्वान्कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ११ ऋषिकन्योवाच । केन चादौ पुरा चीर्णं व्रतमेतत्त्वयोदितम् । ईप्सि-
तं को ऽपि लेभे वा व्रतस्यास्य प्रभावतः १२ विजयोवाच । शृणु कन्ये यथा प्राह पार्वत्या कथितं पुरा १३ सूत उवाच । शृणुध्वमृ
षयः सर्वे नैमिषारण्यवासिनः । पुरा कृतयुगस्यादौ सर्वभूतहितैषिणा १४ शंभुना कथितं गौर्यै तद्व्रतं कथयाम्यहम् । कदाचिदुपविष्टं तं पा
र्वती पर्यपृच्छत १५ पार्वत्युवाच । शंभो त्वां प्रष्टुमिच्छामि करुणाकर शंकर । सर्वबाधोपशमनं सर्वकामफलप्रदम् १६ व्रतानां सर्वदानाना
मुत्तमं ब्रूहि तत्त्वतः । आयुरारोग्यदं देव पुत्रपौत्रप्रदायकम् । तद्व्रतं ब्रूहि देवेश यद्यहं तव वल्लभा १७ ईश्वर उवाच । शृणु देवि परं गुह्यं
व्रतं परमदुर्लभम् । पुरा ऽभूद्द्वापरस्यान्ते पंडोः प्रियवरांगना १८ वर्षषोडशसंपूर्णा संपन्नवयौवना । अनपत्या तु सा कुंती भर्तारमिद
मब्रवीत् १९ कुंत्युवाच । केन कर्मविपाकेन पुत्रहीना ऽस्मि दुःखिता । अनपत्यप्रतीकारमिदानीं ब्रूहि तत्त्वतः २० पंडुरुवाच । ऋषिशा
पो ऽस्ति मे भद्रे यतस्ते न भविष्यति । भर्तुस्तद्वचनं श्रुत्वा पितृगेहे ऽभ्यगात्स्वयम् २१ पितुर्गेहे वर्तमाना कुंती व्यासं ददर्श ह । नमस्कृत्य
च तं प्राह कुंती मुकुलितांजलिः २२ कुंत्युवाच । व्रतं मे कथयाशु त्वं पुत्रसंतानकारकम् । सर्वसंपत्करं नृणां व्रतमेकं महामुने २३
व्यास उवाच । शृणु त्वं बृहतीगौर्या व्रतं संतानदायकम् । भाद्रकृष्णतृतीयायां निशि चंद्रोदये शुभे २४ स्नानं कृत्वा च विधिवन्मौनी
भूत्वा व्रतं चरेत् । सर्वसंपत्करं चैव स्त्रीणां पुत्राप्तसौख्यकृत् २५ भूहिरण्यादिदानानां सर्वेषामधिकं व्रतम् । पंचवर्षं विधातव्यं ततं उद्याप
नं चरेत् २६ उद्यापनविधानेन संपूर्णं फलमश्नुते । अंते तु कारयेद्भक्त्या सौवर्णं बृहतीफलम् २७ पट्टसूत्रचतुर्भिश्च शुभैर्वीजैर्युतं तु तत् ।
देव्याः पुरस्तु संस्थाप्य पूर्ववत्प्रतिपूजयेत् २८ आचार्यं पूजयेद्भक्त्या विप्रान्पंच तथैव च । सुवासिन्यः पंच पूज्या वस्त्रालंकारभूषणैः २९

कंचुकैश्चैव ताटंकैः कंठसूत्रैर्हरप्रियाम् । वंशपात्राणि पंचैव सूत्रैः संवेष्टितानि च ३० सिंदूरं जीरकं चैव सौभाग्यद्रव्यसंयुतम् । गोधूमपिष्टजातं च बृहतीफलपंचकम् ३१ वायनानि च पंचैव ताभ्यो दद्यात्तु भोजनम् । अर्घ्यं दत्त्वा वायनानि दत्त्वा भुंजीत वाग्यता ३२ तत्फलं धारयेत्कंठे सर्वकामसमृद्धये । ततः प्रातः समुत्थाय सालंकारा सखीजनैः ३३ गीतवाद्ययुता नद्यां गौरीं तां तु विसर्जयेत् ३४ आनीतासि मया देवि पूजितासि मया शुभे । मम सौभाग्यदानाय यथेष्टं गम्यतां त्वया ३५ एतद्व्रतप्रभावेण काचिद्ब्राह्मणकन्यका । पतिं संजीवयामास निर्भर्त्स्य यमकिंकरान् ३६ तस्माच्चर त्वं व्रतमेतदाद्यमायुःप्रदं पुत्रसमृद्धिदं च । पुत्रैश्च पौत्रैश्च युता च पत्या गौरीप्रसादाद्व जीववत्सा ३७ य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहित· । स भुक्त्वा विपुलान्भोगानंते शिवपदं व्रजेत् ३८ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे बृहद्गौरीव्रतपूजाकथोद्यापनं संपूर्णम् । इदं कर्णाटके प्रसिद्धम् ॥ ॥ अथ मार्गशीर्षे माघे वा कृष्णतृतीयायां सौभाग्यसुंदरीव्रतम् ॥ तच्चतुर्थीयुतायां कार्यम् । न द्वितीयाविद्धायाम् ॥ द्वितीयावेधरहिता तृतीया याऽसिता भवेत् । चतुर्थीयोगिनी किञ्चिच्छुद्धा वापि यदा भवेत् –इति कथायामुक्तत्वात् ॥ ॥ अथ कथा ॥ नारद उवाच । भगवंस्ते प्रजाः सृष्टा नानावर्णास्तथा गुणाः । स्वेदजा अंडजाश्चैव उद्भिज्जाश्च जरायुजाः १ देवासुराः सगंधर्वाः सयक्षोरगराक्षसाः । एके सुरूपाः सुभगा बलिनश्चापरे तथा २ तथाऽन्ये दुःखसंयुक्ताः काणा मूकाश्च पंगवः । दुःशीला दुर्भगा दीना पापकर्मकराः सदा । एवं मे हृदि संतापः संशयं छेत्तुमर्हसि ३ ब्रह्मोवाच । शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि त्वं भक्तोऽसि प्रियोऽसि मे । कर्मबीजप्ररूढं हि शरीरं पांचभौतिकम् ४ ये दत्तदाना जायंते सुरूपाः सुखिनो जनाः । तपःप्रभावाज्जायंते बलिनः सुभगास्तथा ५ अदत्तदाना जायंते परकर्मकराः सदा । परापवादवक्तारः परद्रव्यापहारकाः ६ हंतारः प्राणिनां चैव अभक्ष्याणां च भक्ष-

का। । क्रमशो नरकान्भुक्त्वा जायते कुत्सिता नराः ७ दरिद्राः पशवो मूकाः काणाद्या दुर्भगास्तथा । नारदैव स्वकर्मोत्था नरा नार्यश्च दुः
खिताः ८ नारद उवाच । उपाय ब्रूहि भगवन्येन कर्मक्षयो भवेत् । तपो दानं व्रत तीर्थं शरीरस्य च शोषणम् ९ दुःखसतापतप्ताना जीवितान्म-
रणं वरम् ॥ ब्रह्मोवाच । शृणु नारद यत्नेन व्रतानामुत्तमं व्रतम् १० सर्वदुःखप्रशमन व्याधिदारिद्र्यनाशनम् । सुखसौभाग्यजनन पुत्रपौत्र
प्रदायकम् ११ वसिष्ठाय पुरा प्रोक्तमृषीणां च समागमे । कैलासशिखरे रम्ये शंकरेण महात्मना १२ नारद उवाच । कस्मात्प्रोवाच
भगवान्कृपा कस्माच्च जायते १३ ब्रह्मोवाच । दृष्ट्वाद्भुतं च सौभाग्यमरुंधत्या जगत्प्रभुः । तया रूप च शील च सौभाग्यमतुलं तथा १४
कृत्वा शिरःप्रकंप च जहास मृदु शंकरः । दृष्ट्वाऽब्रुकर देव वसिष्ठः स्मितकारणम् १५ ईश्वर उवाच । अहो व्रतस्य माहात्म्य श्रूयतामृषि
सत्तमाः । पुरा जन्मनि शूद्रस्य दासकर्मकरा सदा १६ उच्छिष्टभोजना नित्यं उच्छिष्टशयना सदा । कुरूपा दुर्भगा दीना रुक्षा मन्ददयापि
णी १७ नाम्ना मेघवती ख्याता दुर्दर्शवदना क्षमा । एकदा प्रेषणार्थं सा गता ब्राह्मणसंनिधौ १८ श्रुत व्रत च नारीणां धार्यमान द्विज
न्मना । सौभाग्यसुंदरीनामतृतीया सर्वकामदा १९ ज्ञात्वाचारगमे शास्त्रे सर्वकामफलप्रदा । हविष्य च तपोच्छिष्ट पारण च तथा कृतम् २०
केवल च व्रत चीर्णं श्रद्धापूतेन चेतसा।श्रद्धया धार्यते धर्मो बहुभिर्नार्थराशिभिः२१ अपयश्चक्रिरे धर्म श्रद्धया भावितात्मना। तेन धर्मविपाकेन
निषादाधिपतेः सुता. २२ सुरूपा च सुशीला च सर्वलक्षणसयुता । सपूर्णावयवा जाता तस्या देव्या प्रसादतः२३उच्छिष्टभोजना जाता निषादा-
नां च योनिषु। अदत्तदानात्संजाता तपसा भोगवर्जिता २४ व्रतप्रभावात्संजाता सुरूपा च पतिव्रता।महासौभाग्यसयुक्ता साक्षाल्लक्ष्मीरिवापरा
२५ सर्वकर्मप्रदा देवी नदिनी वसते गृहे।सद्भूत चास्ति देवर्षे सर्वकामफलप्रदं२६नारद उवाचाव्रतस्यास्य विधिं ब्रूहि को विधिः किंच पूजनमाक-

स्मिन्मासे प्रकर्तव्यं देवता का प्रकीर्तिता । किं पुण्यं किं च नैवेद्यं ध्यानं कस्य च पूजनं २७ब्रह्मोवाच । व्रतस्यारंभणं चादौ मार्गशीर्षे ऽथ माघके ।
द्वितीयावेधरहिता तृतीया या याऽसिता भवेत् २८चतुर्थीयोगिनी किञ्चिच्छुद्धा वापि यदा भवेत् ।उपवासं प्रकुर्वीत दंतधावनपूर्वकं २९अपामार्गेण
कुर्वीत दंतशुद्धिं तदा व्रती । उमे देवि नमस्तुभ्यं शंकरस्यार्धधारिणी३०प्रसीद श्रीमहेशानि करिष्ये व्रतमुत्तमम् । सान्निध्यं कुरु मे देवि व्रते
ऽस्मिन्हरवल्लभे ३१ नियममंत्रः—सौभाग्यसुंदरीनामवशिनी सा प्रकीर्तिता । सर्वकामप्रदा देवी सर्वसंपद्धशंकरी ३२ तस्या दर्शनमात्रेण
दासवज्जायते जगत् । द्रोणपुष्पैश्च संपूज्या दाडिमं चार्घ्यहेतवे३३नैवेद्यं मोदकान्दद्यात्कर्पूरं प्राशयेत्ततः । वत्स पौषासिते पक्षे तृतीयायां व्रतं
भवेत् ३४ बिल्वकाद्दंतकाष्ठं च मरुकेण च पूजनम् । राज्यसौभाग्यदां नाम सुंदरीं पूजयेत्ततः ३५ धात्रीफलं तदेवार्घ्यं कंकोलं प्राशयेन्निशि ।
नैवेद्ये वटकाः कार्या घृतशर्करयान्विताः ३६ कंकोलांबु तथा प्राश्य राज्यसौभाग्यहेतवे । घृतेन बोधयेद्दीपं रात्रौ जागरणं तथा ३७ सर्व-
कामप्रदा देवी सर्वदुःखहरा परा । सर्वैश्वर्यप्रदा देवी सर्वपापहरा शुभा ३८ एकाऽपि बहुधाऽऽत्मानं नामरूपप्रभेदतः । माघमासे च सं-
प्राप्ते बदर्या दंतधावनम् ३९ प्रातः कुर्वीत नियमं रूपसौभाग्यहेतवे । अपराह्णे ततः स्नात्वा सर्वाभरणभूषिता ४० चूतपुष्पैश्च संपूज्या
रूपसौभाग्यसुंदरी । नारीकेलार्घ्यदानं च नैवेद्ये शष्कुली स्मृता ४१ प्राशनं चैव कस्तूर्या रूपसौभाग्यसंयुता । पूजयेत्तत्र या सर्वकाम-
सौभाग्यसुंदरीम्४२फाल्गुनस्य सिते पक्षे प्रातर्नियमसंयुता । सौभाग्यसुंदरी बिल्वदंतकाष्ठं तु कारयेत्४३स्नानं कृत्वा तथा नारी कांचनारैश्च
पूजयेत् । नैवेद्यं सक्तवस्तत्र घृतशर्करयाऽन्विताः४४यक्षकर्दमजो लेपो धूपश्चागरुसंभवः । सर्वासु च तृतीयासु विधिरेष उदाहृतः ४५ बीज-
पूरार्घ्यदानं च प्राशनं चंदनोदकम् । प्राशनस्य प्रभावेण सर्वान्कामानवाप्नुयात् ४६पारणं च प्रकर्तव्यं सह सर्वैश्च बांधवैः । चैत्रे मासि

का । क्रमशो नरकान्भुक्त्वा जायते कुत्सिता नराः ७ दरिद्राः पमवो मूकाः काणाथा दुर्भगास्तथा । नारदैव स्वकर्मोत्था नरा नार्यश्च दुः
खिताः ८ नारद उवाच । उपायं ब्रूहि भगवन्येन कर्मक्षयो भवेत् । तपो दानं व्रत तीर्थं शरीरस्य च शोषणम् ९ दुःखसतापतप्तानां जीवितान्म-
रणं वरम् ॥ ब्रह्मोवाच । शृणु नारद यत्नेन व्रतानामुत्तमं व्रतम् १० सर्वदुःखप्रशमन व्याधिदारिद्र्यनाशनम् । सुखसौभाग्यजनन पुत्रपौत्र
प्रदायकम् ११ वसिष्ठाय पुरा प्रोक्तमृषीणां च समागमे । कैलासशिखरे रम्ये शङ्करेण महात्मना १२ नारद उवाच । कस्मात्प्रोवाच
भगवान्कृपा कस्माच्च जायते १३ ब्रह्मोवाच । दृष्ट्वाश्रुत च सौभाग्यमरुन्धत्या जगत्प्रभुः । तथा रूप च शील च सौभाग्यमतुल तथा १४
कृत्वा शिरःप्रकंप च जहास मृदु शंकरः । पृष्टवाञ्छकर देव वसिष्ठः स्मितकारणम् १५ ईश्वर उवाच । अहो व्रतस्य माहात्म्य श्रूयतामृषि
सत्तमाः । पुरा जन्मनि शूद्रस्य दासकर्मकरा सदा १६ उच्छिष्टभोजना नित्य उच्छिष्टशयना सदा । कुरूपा दुर्भगा दीना रूक्षा गद्गदभापि
णी १७ नाम्ना मेघवती ख्याता दुर्दर्शवदना शुभा । एकदा प्रेषणार्थं सा मता ब्राह्मणसन्निधौ १८ श्रुतं व्रत च नारीणा वाच्यमान द्विज
न्मना । सौभाग्यसुंदरीनामतृतीया सर्वकामदा १९ ज्ञात्वाचारगमे शास्त्रे सर्वकामफलप्रदा । हविष्य च तयोच्छिष्ट पारण च तथा कृतम् २०
केवल च व्रत चीर्णं श्रद्धापूतेन चेतसा।श्रद्धया धार्यते धर्मो बहुभिर्नार्थराशिभिः २१ ऋषयश्चक्रिरे धर्मं श्रद्धया भावितात्मना । तेन धर्मविपाकेन
निषादाधिपतेः सुता २२ सुरूपा च सुशीला च सर्वलक्षणसंयुता । संपूर्णावयवा जाता तस्या देव्या प्रसादतः २३ उच्छिष्टभोजना जाता निषादा-
नां च योनिषु । अदत्तदानात्संजाता तपसा भोगवर्जिता २४ व्रतप्रभावात्संजाता सुरूपा च पतिव्रता।महासौभाग्यसंयुक्ता साक्षाल्लक्ष्मीरिवापरा
२५ सर्वकर्मप्रदा देवी नंदिनी वसते गृहे।तद्व्रत चास्ति देवर्षे सर्वकामफलप्रद२६नारद उवाच।व्रतस्यास्य विधिं ब्रूहि को विधिः किंच पूजनम्।क-

क्यजं पयः ६५ कर्पूरागरुकस्तूरीमुखदेशेसुगंधिना ६६ आश्वयुज्यासिते पक्षे तृतीयायां व्रतं चरेत् । दंतकाष्ठं प्रकर्तव्यं प्लक्षवृक्षसमुद्भवम् ६७पूजयेत्परया भक्त्या पुत्रसौभाग्यसुंदरीम् । उत्पलैः शतपत्रैश्च पूजा कार्या प्रयत्नतः ६८ नारिंगमर्घ्यदानार्थं कूष्मांडं वाऽपि कल्पयेत् । नैवेद्ये गणकान् शुभ्रान् शर्कराघृतपाचितान् ६९ औदुंबरं पयः प्राश्य सुंदरी प्रीयतां मम । पुत्रपौत्रसमायुक्ता सुखसौभाग्यसुंदरी ७० कार्तिके मासि संप्राप्ते तृतीयायामुपोषिता । औदुंबरं दंतकाष्ठं कृत्वा व्रतमुपाचरेत् ७१ केतकीभिश्च सौभाग्यं नाम्ना संयोगसुंदरीम् । निवेदयेदपूपाँश्च सुगंधाञ्छालिसंभवान् ७२ आखोटं चार्घ्यदाने च लवंगं प्राशयेत्ततः । सा वियोगं न चाप्नोति पितृभ्रातृसुतादिभिः ७३ एवं चीर्णे व्रते कुर्यादुद्यापनविधिं ततः । सर्वशास्त्रमधीयानमागमेषु विशारदम् ७४ आचार्यं प्रार्थयेत्प्रातर्मार्गशीर्षे यथाविधि । चीर्णं व्रतं मयाचार्य उद्यापनविधिं मम ७५ व्रतवैकल्यनाशाय यथाशास्त्रं समाहितः । सुंदरीमंडलं कार्यं गौरीतिलकमेव वा ७६ उमामहेश्वरं देवं सुवर्णेन तु कारयेत् । व्रतारंभे यथाशक्त्या राजतं वा ऽपि कारयेत् । ७७ वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं सति द्रव्ये फलार्थिना । वर्षे प्रपूज्य तां मूर्तिं तामेवं मंडलेऽर्चयेत् ७८ सर्वोपहारैर्गंधैश्च पुष्पैर्नानाविधैरपि । एकैव सा जगन्माता बहुरूपैर्व्यवस्थिता ७९ रूपैर्द्वादशभिश्चैव पूज्या सौभाग्यसुंदरी । ततः पद्मनिभां देवीं रक्तवस्त्रोपशोभिताम् ८० रक्ताभरणशोभाढ्यां रक्तकुंकुमचर्चिताम् । ध्यात्वा चैवंविधां देवीं पूजयेदेकमानसा ८१ रात्रौ जागरणं कार्यं गीतवादित्रनिःस्वनैः । ततः सर्वाणि पुष्पाणि नैवेद्यादिफलानि च ८२अर्घ्यार्थं परिकल्प्यानि सर्वकामार्थसिद्धये । ततः प्रभाते विमले स्नानं कृत्वा विधानतः ८३ कुसुंभकुसुमैर्होमं किंशुकैर्वापि कारयेत् । अष्टोत्तरशतं पूर्णं मध्वान्नं पयसान्वितम् ८४ तदभावे तु कर्तव्यः शतपत्रै-

१ चीर्णव्रता महाचार्येत्यपि पाठः । २ कुर्विंति शेषः । ३ मधुत्रयसमन्वितमिति पाठो व्रतार्के ।

प्रकर्तव्या तृतीया पापनाशिनी ४७ प्रयत्नेन प्रकर्तव्या सुखसौभाग्यसुंदरी । दंतकाष्ठ समुद्दिष्टं जम्बुवृक्षसमुद्भवम् ४८ पूजा दमनकैर्नाम ह्यर्घ्यं
बिल्वफलं स्मृतम् । नैवेद्यं मण्डकाः प्रोक्ता शर्कराघृतसंयुताः ४९ सुखसौभाग्यप्राप्त्यर्थं प्राशनं वज्रवारिणः । वैशाखस्य सिते पक्षे तृती-
यायामुपोषयेत् ५० मालती दंतकाष्ठं च नियमग्रहणं ततः । पतिसौभाग्यदां देवीं सुंदरीं पूजयेत्ततः ५१ पक्षे सिते सुरश्रेष्ठ मल्लिका
मिश्र पूजयेत् । दधिभक्तं सकर्पूरं शर्कराघृतसंयुतम् ५२ नैवेद्य कल्पयेद्देव्या अर्घ्यं चाम्रफलं भवेत् । हेमोदकं च संप्राश्य पुष्टिसौभाग्यमाप्नु
यात् ५३ ज्येष्ठे मासि तृतीयायामुपवासपरा भवेत् । यूथिकादंतकाष्ठं च लावण्यसुभगार्थिनी ५४ मल्लिकाकुसुमैः पूज्या यक्षकर्दमच
र्चिता । लावण्यसुभगां देवीं सुंदरीं पूजयेत्ततः ५५ कदलीफलार्घ्यदानं च नैवेद्यं घृतपूरिका । मौक्तिकांबु ततः पीत्वा लावण्यसुभगा
भवेत् ५६ आषाढे च ततो मासि पतिसौभाग्यसुंदरी । प्रातरुत्थाय कर्तव्यं दंतकाष्ठमशोकजम् ५७ नियमं तत्र कुर्वीत तृतीयायां प्रय-
त्नतः । बिल्वपत्रैः कोमलैश्च पतिसौभाग्यसुंदरी ५८ जंबूफलार्घ्यदानं च नैवेद्यं पायसं स्मृतम् । शर्कराघृतसंयुक्तं सुंदरी प्रीयतां मम ५९
विष्णुमांबु निशि प्राश्य हविषा पारणं स्मृतम् । सपत्नीनां पुरं नैव सा पश्यति कदाचन ६० श्रावणे मासि संप्राप्ते तृतीयायामुपोषिता । बेल्व
वा बादरं काष्ठं जातिपुष्पैश्च पूजनम् ६१ सर्वैश्वर्यं च सौभाग्यं सुंदरीं पूजयेत्ततः । नैवेद्यं श्वेतपक्वान्नं धूपदीपादिकं तथा ६२ कदलीफ
लदानं च प्राशयेद्राजतं पयः । गजाश्वपश्वदासीनां हेमरत्नादिवाससाम् । ईश्वरी सर्वलोकानां भगवत्याः प्रसादतः ६३ मासि भाद्रपदे प्राप्ते
पूज्या सौभाग्यसुंदरी । दंतकाष्ठं तु कर्तव्यं मातुलिंगीसमुद्भवम् ६४ उत्पलैः पूजयेद्देवीमर्घ्यं कर्कटिकाफलम् । नैवेद्यं शोकवर्तिन्या पिबेन्माणि-

१ पतिसौभाग्यसुंदरीति आषाढमासदेवता तां विल्वपत्रादिभिः पूजयेदित्यर्थः ।

क्यजं पयः ६५ कर्पूरागरुकस्तूरीमुखदेशेसुगंधिना ६६ आश्वयुज्यासिते पक्षे तृतीयायां व्रतं चरेत् । दंतकाष्ठं प्रकर्तव्यं प्लक्षवृक्षसमुद्भवम् ६७पूजयेत्परया भक्त्या पुत्रसौभाग्यसुंदरीम् । उत्पलैः शतपत्रैश्च पूजा कार्या प्रयत्नतः ६८ नारिंगमर्घ्यदानार्थं कूष्मांडं वाऽपि कल्पयेत् । नैवेद्ये गणकान् शुभ्रान् शर्कराघृतपाचितान् ६९ औदुंबरं पयः प्राश्य सुंदरी प्रीयतां मम । पुत्रपौत्रसमायुक्ता सुखसौभाग्यसुंदरी ७० कार्तिके मासि संप्राप्ते तृतीयायामुपोषिता । औदुंबरं दंतकाष्ठं कृत्वा व्रतमुपाचरेत् ७१ केतकीभिश्च सौभाग्यं नाम्ना संयोगसुंदरीम् । निवेदयेदपूपाँश्च सुगंधाञ्छालिसंभवान् ७२ आखोटं चार्घ्यदाने च लवंगं प्राशयेत्ततः । सा वियोगं न चाप्नोति पितृभ्रातृसुतादिभिः ७३ एवं चीर्णे व्रते कुर्यादुद्यापनविधिं ततः । सर्वशास्त्रमधीयानमागमेषु विशारदम् ७४ आचार्यं प्रार्थयेत्प्रातर्मार्गशीर्षे यथाविधि । चीर्णं व्रतं मयाचार्य उद्यापनेविधिं मम ७५ व्रतवैकल्यनाशाय यथाशास्त्रं समाहितः । सुंदरीमंडलं कार्यं गौरीतिलकमेव वा ७६ उमामहेश्वरं देवं सुवर्णेन तु कारयेत् । व्रतारंभे यथाशक्त्या राजतं वा ऽपि कारयेत् । ७७ वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं सति द्रव्ये फलार्थिना । वर्षे प्रपूज्य तां मूर्तिं तामेवं मंडलेऽर्चयेत् ७८ सर्वोपहारैर्गंधैश्च पुष्पैर्नानाविधैरपि । एकैव सा जगन्माता बहुरूपैर्व्यवस्थिता ७९ रूपैर्द्वादशभिश्चैव पूज्या सौभाग्यसुंदरी । ततः पद्मनिभां देवीं रक्तवस्त्रोपशोभिताम् ८० रक्ताभरणशोभाढ्यां रक्तकुंकुमचर्चिताम् । ध्यात्वा चैवंविधां देवीं पूजयेदेकमानसा ८१ रात्रौ जागरणं कार्यं गीतवादित्रनिःस्वनैः । ततः सर्वाणि पुष्पाणि नैवेद्यादिफलानि च ८२अर्घ्यार्थं परिकल्प्यानि सर्वकामार्थसिद्धये । ततः प्रभाते विमले स्नानं कृत्वा विधानतः ८३ कुसुंभकुसुमैर्होमं किंशुकैर्वापि कारयेत् । अष्टोत्तरशतं पूर्णं मध्वान्नं पयसान्वितम् ८४ तदभावे तु कर्तव्यः शतपत्रै-

१ चीर्णव्रता महाचार्येत्यपि पाठः । २ कुर्विति शेषः । ३ मधुत्रयसमन्वितमिति पाठो व्रतार्के ।

विधानतः। आचरेण च मंत्रेण मौनं मुक्त्य समाचरेत् ८५ भोजयेच्च प्रयत्नेन चत्वारिंशो विधानतः। मिष्टान्नेन सपत्नीकान्भक्त्या वै परितो
षयेत् ८६ वस्त्रालंकरणैश्चैव यथाशक्ति प्रपूजयेत्। सौभाग्यवस्त्रं चैकैकं नारीणां चैव दापयेत् ८७ ततो हस्ते प्रदातव्यं कुंकुमं लवणं गुडम्।
नारिकेलं तथा वल्ली दूर्वा सिंदूरकज्जलम् ८८ मंगलाष्टकमेतद्वै दत्त्वा सौभाग्यमाप्नुयात्। आचार्यं च सपत्नीकं वस्त्रालंकरणैः शुभैः ८९ परिधा-
य यथाशक्ति मंडलं तत्समर्पयेत्। प्रार्थयेच्च ततो देवीं सर्वसौभाग्यसुंदरीम् ९० पूजितासि मया देवि सर्वसौभाग्यसुंदरि। दत्त्वा मत्प्रार्थिता
न्कामान्गच्छ देवि यथासुखम् ९१ मूर्तिं च मंगलं देव्या उपहारांश्च सर्वशः। गुरो गृहाण सर्वं त्वं सुंदरी प्रीयतामिति ९२ त्वत्प्रसादान्मया
चीर्णं व्रतमेतत्सुदुर्लभम्। समस्तं विप्रशार्दूल प्रसादसुमुखो भव ९३ एवं चीर्णव्रता नारी कृतकृत्या भवेत्सदा। येनेदं च कृतं वर्षं तमास जन्मनः
फलम् ९४ नातःपरतरं किंचिद्व्रतं सौभाग्यकारकम्। देहांते शिवलोके तु भोगान्भुक्त्वा यथेप्सितान् ९५ ॥ इति श्रीभवि०पु०सौभाग्यसुंद
रीव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अथ चतुर्थीव्रतानि लिख्यते ॥ ॥ तत्र श्रावणकृष्णचतुर्थी संकष्टचतुर्थीव्रतम्। तच्च चंद्रोदयव्यापिन्यां
कार्यम्। श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां तु विधूदये ॥ गणेशं पूजयित्वा तु चंद्रायार्घ्यं प्रदापयेत् ॥—इति कथायां तत्र च पूजाविधानात् ॥ दिनद्वये
तद्व्याप्तौ पूर्वैव, मातृविद्धा गणेश्वर—इति वचनात्। दिनद्वयेऽव्याप्तौ परैव। हेमाद्रौ। चंद्रोदयाभावे चतुर्थी। निशि षड्घटिव्यापिन्यां परैव व्रते
इति ॥ अथ व्रतविधिः ॥ मासपक्षाद्युल्लिख्य तिथौ मम विद्याधनपुत्रपौत्रप्राप्त्यर्थं समस्तरोगमुक्तिकामः श्रीगणेशप्रीत्यर्थं संकष्टचतुर्थीव्रतमहं
करिष्ये। तत्रादौ स्वस्तिवाचनं गणपतिपूजनं कलशार्चनं च करिष्ये। सौवर्णरौप्यताम्रमृन्मयाद्यन्यतमां गणपतिमूर्तिं कृत्वा जलपूर्णपूर्णपात्र
वस्त्रयुतकुंभोपरि स्थापयित्वा षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ आदौ ध्यानम् ॥ तद्यथा—लंबोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम्। नानारत्नैः सुवेषा

न्वं प्रसन्नास्यं विचिंतयेत् ॥ ध्यायेद्गजाननं देवं तप्तकांचनसुप्रभम् । चतुर्बाहुं महाकायं सूर्यकोटिसमप्रभम् । ध्यानम् ॥ आगच्छ त्वं ज-
गन्नाथ सुरासुरनमस्कृत । अनाथनाथ सर्वज्ञ विघ्नराज कृपां कुरु । सहस्रशीर्षा० । गजास्यायनमः, नमोगजास्यमावाहयामीत्यावाह्य ॥
गोप्ता त्वं सर्वलोकानामिंद्रादीनां विशेषतः । भक्तदारिद्र्यविच्छेत्ता एकदंत नमो ऽस्तु ते। पुरुषएवेदं० । विघ्नराजाय० आसनम् ॥ मोदका-
न्धारयन्हस्ते भक्तानां वरदायक । देवदेव नमस्ते ऽस्तु भक्तानां फलदो भव । एतावानस्य० । लंबोदराय० पाद्यम् ॥ महाकाय महारूप
अनंतफलदो भव । देवदेव नमस्ते ऽस्तु सर्वेषां पापनाशन । त्रिपादूर्ध्व० । शंकरसूनवे० अर्घ्यम् ॥ कुरुष्वाचमनं देव सुरवंद्य सुवाहन ।
सर्वाघदलन स्वामिन्नीलकंठ नमोऽस्तु ते । तस्माद्विराळ० । उमासुताय० आचमनीयम् ॥ स्नानं पंचामृतेनैव गृहाण गणनायक । अनाथ-
नाथ सर्वज्ञ नमो मूषकवाहन । पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम् । पंचामृतेन स्नपनं प्रीयतां गणनायकः । वक्रतुंडाय० पंचामृतस्नानम् ।
गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती । नर्मदासिंधुकावेरीजलं स्नानाय कल्पितम् । यत्पुरुषेण० । हेरंबाय० स्नानम् ॥ रक्तवस्त्रं सुयुग्मं
च देवानामपि दुर्लभम् । गृहाण मंगलं देव लंबोदर हरात्मज । तंयज्ञं० । शूर्पकर्णाय० वस्त्रम् ॥ ब्रह्मसूत्रं सोतरीयं गृहाण गणनायक ।
आरक्तं ब्रह्मसूत्रं च कनकस्योत्तरीयकम् । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसं० । कुब्जाय० यज्ञोपवीतम् ॥ गृहाणेश्वर सर्वज्ञ दिव्यचंदनमुत्तमम् । करु-
णाकर अब्जाक्ष गौरीसुत नमो ऽस्तु ते । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचःसा० । गणेश्वराय० गंधम् ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठः कुंकुमोक्ताः सुशोभिताः ॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण गणनायक । अक्षतान् ॥ सुगंधिदिव्यमालां च गृहाण गणनायक । विनायक नमस्तुभ्यं शिवसूनो नमोस्तु
ते । मालाम् ॥ माल्यादीनि सुगंधी० । तस्मादश्वा० । विघ्नाशिनेनमः पुष्पाणि ॥ अथांगपूजा ॥ गणेश्वराय० पादौपूजयामि । वि-

घ्नराजाय॰ जानुनीपू॰ । अखुवाहनाय॰ ऊरूपू॰ । हेरंबाय॰ कटीपू॰ । कामहारिसूनवे॰ नाभिंपू॰ । लंबोदराय॰ उदरपू॰ । गौरीसु
ताय॰ स्तनौपू॰ । गणनायकाय॰ हृदयं । स्थूलकंठाय॰ कंठं॰ । स्कंदाग्रजाय॰ स्कंधौ॰ । पाशहस्ताय॰ हस्तौ॰ । गजवक्त्राय॰ वक्त्रं॰ ।
विघ्नहर्त्रे॰ ललाटं॰ । सर्वेश्वराय॰ शिरः॰ । श्रीगणाधिपाय॰ सर्वांगपू॰ । दशांगं गुग्गुलं धूपमुत्तमं गणनायक । गृहाण देव देवेश उमासुत
नमोऽस्तु ते । यस्तु॰ । विकटाय॰ धूपम् ॥ सर्वज्ञ सर्वरत्नाढ्य सर्वेश विबुधप्रिय । गृहाण मंगलं दीपं घृतवर्तिसमन्वितम् । ब्राह्म॰ । वामना
य॰ दीपम् ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देव नानामोदकसंयुतम् । पक्वान्नफलसंयुक्तं पायसेन समन्वितम् । चंद्रमा॰ । सर्वाय॰ नैवेद्यम् । कृष्णावेण्यागौतमी
नां पयोष्णीनर्मदाजलैः । आचम्यतां विघ्नराज प्रसन्नो भव सर्वदा । आचमनम् । फलान्यमृतकल्पानि सुगंधीन्यघनाशन । आनीतानि यथाशक्त्या
गृहाण गणनायक । सर्वार्तिनाशिने फलम् । तांबूलं गृह्यतां देव नागवल्या दलैर्युतम् । कर्पूरेण समायुक्तं सुगंधं मुखभूषणम् । विघ्नहर्त्रेन॰ तांबूलम् ॥
सर्वदेवाधिदेव त्वं सर्वसिद्धिप्रदायक । भक्त्या दत्तां मया देव गृहाण जगदीश्वर । सर्वेश्वराय॰ दक्षिणां । पंचवर्तिसमायुक्तं वह्निना योजितं मया । गृ-
हाण मंगलं दीपं विघ्नराज नमोऽस्तु ते । नीराजनम् ॥ यानिकानिचपा॰ नाभ्याआसीति प्रदक्षिणाः ॥ नमोस्त्वन॰ । सप्तास्येति नमस्का
रम् ॥ यज्ञेनयज्ञमिति मंत्रपुष्पांजलिम् ॥ एवं पूजा प्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः । मोदकान्कारयेद्देवमेकविंशतिसंख्यया ॥ तेषां मध्ये प्र
दातव्या दशसंख्याश्च पार्वति । देवाग्रे स्थापयेत्पंच पंच विप्राय कल्पयेत् ॥ पूजयित्वा तु तं विप्रं भक्तिभावेन देववत् । दक्षिणां च य
थाशक्त्या दत्वा वै पंच मोदकान् ॥ पूजयेन्निशि चंद्रं च अर्घ्यं दत्वा यथाविधि ॥ क्षीरसागरसंभूत सुधारूप निशाकर । गृहाणार्घ्यं मया
दत्तं गणेश प्रीतिवर्धन । रोहिणीसहितचंद्रमसे नमः इदमर्घ्यंस॰ ॥ क्षीरोदार्णवसंभूत सुधारूप निशाकर । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या

सहितः शशिन्। रोहिणीसहितचंद्राय० इदमर्घ्यं० ॥ गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदायक । संकष्टं हर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते । कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु पूजितोसि विधूदये । क्षिप्रप्रसादितो देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ संकष्टहरगणेशाय० इदमर्घ्यं० ॥ तिथीनामुत्तमे देवि गणेशप्रियवल्लभे । सर्वसंकष्टनाशाय चतुर्थ्यर्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ वायनमंत्रः— विप्रवर्य नमस्तुभ्यं मोदकान्वै ददाम्यहम् । मोदकान्सफलान्पंच दक्षिणाभिः समन्वितान् । आपदुद्धरणार्थाय गृहाण द्विजसत्तम ॥ प्रार्थना— अबुद्धमतिरिक्तं वा द्रव्यहीनं मया कृतम् । तत्सर्वं पूर्णतां यातु विप्ररूपगणेश्वर ॥ ब्राह्मणान्भोजयेदेवं यथातथ्यं यथासुखम् ॥ स्वयं भुंजीत मौनेन मोदकान्ब्राह्मणैः सह ॥ अशक्तश्चैकमन्नं च भुंजीत दधिसंयुतम् । अथवा भोजनं कार्यमेकवारं हिमाद्रिजे ॥ प्रतिमा गुरवे दद्यादाचार्याय सदक्षिणाम् । वस्त्रकुंभसमायुक्तामादौ मंत्रमिमं जपेत् ॐ नमोहेरंबमदमोहितसंकष्टान्निवारयनिवारय।इति मूलमंत्रंएकविंशतिवारं जपेत्॥विसर्जनमंत्रः—गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने त्वं गणेश्वर॥ व्रतेनानेन देवेश यथोक्तफलदो भव॥ इति पूजा ॥ ॥ अथ कथा ॥ हेमाद्रौ स्कांदे— ऋषय ऊचुः । दारिद्र्यशोककष्टाद्यैः पीडितानां च वैरिभिः । राजश्रेष्ठैर्नृपैः सर्वैः क्रियते किं शुभार्थिभिः १ धनहीनैर्नरैः स्कंद सर्वोपद्रवपीडितैः । विद्यापुत्रगृहभ्रष्टैरोगयुक्तैः शुभार्थिभिः २ कर्तव्यं किं वदोपायं पुनः क्षेमार्थसिद्धये ॥ स्कंद उवाच । शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतानामुत्तमं व्रतम् ३ संकष्टतरणं नाम संपत्तिसुखदायकम् । येनोपायेन संकष्टं तरंति भुवि देहिनः ४ यद्व्रतं देवकीपुत्रः कृष्णो धर्माय दत्तवान् । अरण्ये क्लिश्यमानाय पुनः क्षेमाय सिद्धये ५ यथा कथितवान्पूर्वं गणशो मातरं प्रति । तथा कथितवान् श्रीशो द्वापरे पांडवान्प्रति ६ ऋषय ऊचुः । यथा कथितवानंबां पार्वतीं श्रीगणेश्वरः । तथा पृच्छंति मुनयो लोकानुग्रहकांक्षिणः ७ स्कंद उवाच । पुरा कृतयुगे पुण्ये हिमाचलसुता

सती । तपस्तप्तवती भूरि तेनाऽलब्धः शिवः पतिः ८ तदाऽस्मरत्सा हेरंबं गणेश पूर्वज सुतम् । तत्क्षणादागतं दृष्ट्वा गणेशं परिपृच्छति ९ पार्वत्युवाच । तपस्तप्तं मया घोरं दुश्चरं लोमहर्षणम् । न प्राप्तः स मया कांतो गिरिशो मम वल्लभः १० सकष्टतरणं दिव्यं व्रतं नारद उक्तवान् । त्वदीयं यद्व्रतं तावत्कथयस्व पुरातनम् ११ तच्छ्रुत्वा पार्वतीवाक्यं सकष्टतरणव्रतम् । प्रीत्या कथितवान्देवो गणेशो ज्ञानसिद्धिदः १२ गणेश उवाच । श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां तु विधूदये । गणेशं पूजयित्वा तु चंद्रायार्घ्यं प्रदापयेत् १३ पार्वत्युवाच । क्रियते केन विधिना किं कार्यं किं च पूजनम् । उद्यापनं कदा कार्यं मन्त्राः के स्युस्तु पूजने १४ किं ध्यानं श्रीगणेशस्य गणेश वद विस्तरात् ॥ गणेश उवाच । चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय दंतधावनपूर्वकम् १५ ग्राह्यं व्रतमिदं पुण्यं सकष्टतरणं शुभम् । कर्तव्यमिति संकल्प्य व्रतेऽस्मिन्गणपं स्मरेत् १६ स्वीकारमन्त्रः—निराहारो अस्मि देवेश यावच्चंद्रोदयो भवेत् । भोक्ष्यामि पूजयित्वा ऽहं सकष्टात्तारयस्व माम् १७ एवं संकल्प्य राजेंद्र कृत्वा कृष्णतिलैः शुभैः । आह्निकं तु विधायैव पश्चात्पूज्यो गणाधिपः १८ त्रिभिर्माषैस्तदर्धेन तृतीयांशेन वा पुनः । यथाशक्त्या तु वा हैमि प्रतिमा क्रियते मम १९ माषमात्रात्तदर्धस्यतृतीयांशेन वा पुनः । हेमाभावे तु रौप्यस्य ताम्रस्यापि यथासुखम् २० सर्वथैव दरिद्रेण क्रियते मृन्मयी शुभा । वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं कृते कार्यं विनश्यति २१ जलपूर्णं वस्त्रयुतं कुंभं तस्याग्रतो न्यसेत् । पद्ममष्टदलैः कार्यं गंधपुष्पैः प्रपूजयेत् २२ गणेश उवाच । एवं व्रतं तु कर्तव्यं प्रतिमासं त्वयाऽद्रिजे । यावज्जीवं तु वा वर्षाण्येकविंशति पार्वति ॥ अशक्त्याप्येकवर्षं वा प्रतिमासमथापि वा २३ उद्यापनं प्रकर्तव्यं चतुर्थ्यां श्रावणेऽसिते । स्वीकार्यश्च

१ ग छ॰ शंकरः पतिरिति पाठः साधुः । २ ग माधः पूर्वकांतो मे इति पाठः । ३ पक्षे वेबतां विम्यस्य गंधपुष्पैः पूजयेदिरपर्थः ।

तथाचार्यः संकष्टहरणे तिथौ २४ गणाधीशं तथाचार्यं सर्वशास्त्रविशारदम्। श्रद्धया प्रार्थयेदादौ तेनोक्तं विधिमाचरेत् २५ एकविंशतिवि-
प्राँश्च वस्त्रालंकारभूषणैः । पूजयेद्गोहिरण्याद्यैर्हुत्वाऽसौ विधिपूर्वकम् २६ होमद्रव्यं मोदकाश्च तिलयुक्ता घृतप्लुताः । अष्टोत्तरसहस्रं वा नो-
चेदष्टोत्तरंशतम् २७ अष्टाविंशतिसंख्याकैर्मोदकैर्वा सशर्करैः । अशक्तोऽष्टौ शुभान् स्थूलान् जुहुयाज्जातवेदसि २८ वैदिकेन च मंत्रेण आ-
गमोक्तेन वा तथा। अथवा नाममंत्रेण होमं कुर्याद्यथाविधि २९ पुष्पमंडपिका कार्या गणेशाह्लादकारिणी । पूजयेत्तत्र गणपं भक्तसंकष्टना-
शनम् ३० गीतवादित्रनिनदैर्भक्तिभावपुरस्कृतैः । पुराणवेदनिर्घोषैस्तोषयेच्च गणेश्वरम् ३१ एवं जागरणं कार्यं शक्त्या दानादिकं तथा ।
सपत्नीकमथाचार्यं तोषयेद्वस्त्रभूषणैः ३२ उपानच्छत्रगोदानकमंडलुजलादिभिः । शय्यावाहनभूदानधनधान्यगृहादिभिः ३३ यथाशक्त्या
प्रकर्तव्यं दारिद्याभावमिच्छता । एकविंशतिविप्राँश्च भोजयेन्नामभिर्मम ३४ गजास्यो विघ्नराजश्च लंबोदरशिवात्मजौ । वक्रतुंडः शूर्पकर्णः
कुब्जश्चैव विनायकः ३५ विघ्ननाशो हि विकटो वामनः सर्वदैवतः । सर्वार्तिनाशी भगवान्विघ्नहर्ता च धूम्रकः ३६ सर्वदेवाधिदेवश्च सर्वे
षोडश वै स्मृताः । एकदंतः शूर्पकर्णो भालचंद्रो गणेश्वरः ३७ गणपश्चैकविंशश्च सर्वे एते गणेश्वराः। दुर्गोपेंद्रश्च रुद्रश्च कुलदेव्याधिकं
भवेत् ३८ विशेषेणाष्टसंख्याकैर्मोदकैर्हवनं स्मृतम् । एवं कृते विधानेन प्रसन्नो ऽहं न संशयः । ददामि वांछितान्कामाँस्तद्व्रतं मत्प्रियं कु-
रु ३९ श्रीकृष्ण उवाच । एवं तु कथितं सर्वं गणेशेन स्वयं नृप । पार्वत्या तत्कृतं राजन्व्रतं संकष्टनाशनम् ४० व्रतेनानेन सार्धाब्दे प्राप
शंभुं पतिं स्वकम् । तत्कुरुष्व महाराज व्रतं संकष्टनाशनम् ४० चतुर्थी संकटानाम स्कंदेन कथिता ऋषीन् । ऋषिभिर्लोककामैस्तैर्लोके
ततमिदं व्रतम् ४२ सूत उवाच । कृतं युधिष्ठिरेणैतद्राज्यकामेन वै द्विज । तेन शत्रून्निहत्याजौ स्वराज्यं प्राप्तवान् स्वयम् ४३ तस्मात्स-

सती । तपस्तसवती भूरि तेनाऽऽब्धः शिवः पतिः ८ तदाऽस्मरत्सा हेरंबं गणेशं पूर्वजं सुतम् । तत्क्षणादागतं दृष्ट्वा गणेशं परिपृच्छ
ति ९ पार्वत्युवाच । तपस्तप्तं मया घोरं दुश्चरं लोमहर्षणम् । न प्राप्तः स मया कांतो गिरिशो मम वल्लभः १० संकष्टतरणं दि
व्यं व्रतं नारद उक्तवान् । त्वदीयं यद्व्रतं तावत्कथयस्व पुरातनम् ११ तच्छ्रुत्वा पार्वतीवाक्यं संकष्टतरणव्रतम् । प्रीत्या कथितवा
न्देवो गणेशो ज्ञानसिद्धिदः १२ गणेश उवाच । श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां तु विधूदये । गणेशं पूजयित्वा तु चंद्रायार्घ्यं प्रदापयेत् १३
पार्वत्युवाच । क्रियते केन विधिना किं कार्यं किं च पूजनम् । उद्यापनं कदा कार्यं मंत्राः के स्युस्तु पूजने १४ किं ध्यानं श्रीगणेशस्य
गणेश वद विस्तरात् ॥ गणेश उवाच । चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय दंतधावनपूर्वकम् १५ ग्राह्यं व्रतमिदं पुण्यं संकष्टतरणं शुभम् । कर्तव्यमि
ति संकल्प्य व्रतेऽस्मिन्गणपं स्मरेत् १६ स्वीकारमंत्रः—निराहारो ऽस्मि देवेश यावच्चंद्रोदयो भवेत् । भोक्ष्यामि पूजयित्वा ऽहं संकष्टात्ता
रयस्व माम् १७ एवं संकल्प्य राजेंद्र कृत्वा कृष्णतिलैः शुभैः । आह्निकं तु विधायैव पश्चात्पूज्यो गणाधिपः १८ त्रिभिर्माषैस्तद
र्धेन तृतीयांशेन वा पुनः । यथाशक्त्या तु वा हैमी प्रतिमा क्रियते मम १९ माषमात्राथवाऽर्धस्य तृतीयांशेन वा पुनः । हेमाभावे तु रौप्यस्य
ताम्रस्यापि यथासुखम् २० सर्वथैव दरिद्रेण क्रियते मृन्मयी शुभा । वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं कृते कार्यं विनश्यति २१ जलपूर्णं वस्त्रयुतं कु
म्भस्तस्याग्रतो न्यसेत् । पद्ममष्टदलैः कार्यं गंधपुष्पैः प्रपूजयेत् २२ गणेश उवाच । एवं व्रतं तु कर्तव्यं प्रतिमासं त्वयाऽद्रिजे । यावज्जी
वं तु वा वर्षाण्येकविंशति पार्वति ॥ अशक्त्याप्येकवर्षं वा प्रतिमासमथापि वा २३ उद्यापनं प्रकर्तव्यं चतुर्थ्यां श्रावणेऽसिते । स्वीकार्यश्च

१ न ख्यः संकष्टः पतिरिति पाठः साधुः । २ न प्राप्तः पूर्वकांतो मे इति पाठः । ३ पद्मे देवतां बिम्बस्य गंधपुष्पैः पूजयेदित्यर्थः ।

पूजयेद्रक्तकुसुमैः पत्रिकाभिश्च पंचभिः ॥ बिल्वपत्रमपामार्गः शमी दूर्वा हरिप्रिया । गंधपुष्पैश्च धूपैश्च यथालभ्यैः सुगंधिभिः ॥
डले । पूजयेद्रक्तकुसुमैः पत्रिकाभिश्च पंचभिः ॥ बिल्वपत्रमपामार्गः शमी दूर्वा हरिप्रिया । उमासुत नमस्तुभ्यं विश्वव्यापिन्सना-
फलैश्च मोदकैः पश्चादुपहारं प्रकल्पयेत् । उपहारैस्तु विधिना पूजयेद्गिरिजासुतम् ॥ पूजामंत्राः— उमासुत नमस्तुभ्यं विश्वव्यापिन्सना-
तन । विघ्नौघाँश्छिंधि सकलान्सर्वमाद्यं वदामि ते ॥ गणेश्वराय देवाय उमापुत्राय वेधसे ॥ पूजामद्य प्रयच्छामि गृहाण भगवन्मम ॥
विनायकाय शूराय वरदाय गजानन । उमासुताय देवाय सर्वविघ्नौघहारिणे ॥ उमांगमलसंभूतो दानवानां वधाय वै । अनुग्रहाय लोका-
नां स देवः पातु विश्वधृक् ॥ परंज्योतिः प्रकाशाय सर्वसिद्धिप्रदायक । दीपं तुभ्यं प्रदास्यामि महादेवात्मने नमः ॥ गणेश्वर गणाध्यक्ष
गौरीपुत्र गजानन । व्रतं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादिभानन ॥ —इति पूजामंत्राः ॥ एवं संपूज्य विघ्नेशं यथा विभवविस्तरैः । सोपस्करं
गणाध्यक्षमाचार्याय निवेदयेत् ॥ दानमन्त्रः—गृहाण भगवन्ब्रह्मन्गणराजं सदक्षिणम् । व्रतं त्वद्वचनादद्य पूर्णतां यातु सुव्रत ॥ श्रावणे
शुक्लपक्षस्य चतुर्थ्यां तु जितेंद्रियः । कुर्याद्वर्षत्रयं त्वेवं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ एवं यः पंचवर्षाणि कृत्वोद्यापनमाचरेत् । ईप्सिताँ-
ल्लभते कामान्देहांते शांकरं पदम् ॥ उद्यापनं विना यस्तु करोति व्रतमुत्तमम् । तेन शुक्लतिलैः कार्यं प्रातःस्नानं षडानन ॥ हेम्ना वा
राजतेनापि कृत्वा गणपतिं बुधः ॥ पंचगव्यैस्तु संस्नाप्य दूर्वाभिः संप्रपूजयेत् ॥ मंत्रैस्तु दशभिर्भक्त्या दूर्वायुक्तैः शिखिध्वज । दूर्वा-
युग्मैः पंचगव्यैः पूजनं दशमंत्रकैः ॥ गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन । एकदंतेभवक्त्रेति तथा मूषकवाहन ॥ विनायकेशपुत्रेति
सर्वसिद्धिप्रदायक । कुमारगुरवे तुभ्यमेतैर्नामपदैः पृथक् ॥ इत्येवं कथितं सम्यक्सर्वसिद्धिप्रदं शुभम् ॥ व्रतं दूर्वागणपतेः किमन्य-
च्छ्रोतुमिच्छसि ॥ इति सौरपुराणोक्तं दूर्वागणपतिव्रतोद्यापनम् ॥ ॥ अथैकविंशतिदिनगणपतिपूजनम् ॥ तत्र श्रावणशुक्लचतुर्थी-

र्वप्रयत्नेन व्रत कार्यं विचक्षणैः । येन धर्मार्थकामाश्च मोक्षश्चापि भवेत्किल ४४ य करोति व्रतं विप्रा सर्वकामार्थसिद्धिदम् । स वांछि
तफल प्राप्य पश्चाद्ब्रह्मपदं व्रजेत् ४५ यदा यदाऽऽपद विप्रा नर प्राप्नोति संकटम् । तदा तदा प्रकर्तव्यं व्रत संकष्टनाशनम् ४६ त्रि
पुर हंतुकामेन कृतं देवेन शूलिना । त्रैलोक्यप्राप्तिकामेन महेंद्रेण तथा कृतम् ४७ रावणेन कृत पूर्वं वालिबंधनसंकटे । स्वकीयं प्राप्त-
वान्राज्यं गणेशस्य प्रसादतः ४८ सीतान्वेषणकामेन कृत वायुसुतेन च । संकल्प्य दृष्टवान्सो ऽपि सीतां रामप्रियां पुरा ४९ दमयंत्या
कृतं पूर्वं नलान्वेषणकारणात् । सा पतिं नैषधं लेभे पुण्यश्लोकं द्विजोत्तमाः ५० अहल्यापि पतिं लेभे गौतमं प्राणवल्लभम् । विद्यार्थी
लभते विद्यां धनार्थी धनमाप्नुयात् ५१ पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति रोगी रोगात्प्रमुच्यते ५२ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे संकष्टचतुर्थीव्रतोद्यापन संपू
र्णम् ॥ ॥ अथ श्रावणे कार्तिके वा शुक्लचतुर्थ्यां दूर्वागणपतिव्रतम् ॥ मदनरत्ने सौरपुराणे– स्कंद उवाच ॥ केन व्रतेन भगवन्सौ
भाग्यमतुलं भवेत् । पुत्रपौत्रधनैश्वर्यैर्मनुजः सुखमेधते ॥ तन्मे वद महादेव व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ महादेव उवाच । अस्ति दूर्वागणपते
र्व्रतं त्रैलोक्यविश्रुतम् । भगवत्या पुरा चीर्णं पार्वत्या श्रद्धया सह ॥ सरस्वत्या च इंद्रेण विष्णुना धनदेन च । अन्यैश्च देवैर्मुनिभि
र्गंधर्वैः किन्नरैस्तथा ॥ चीर्णमेतद्व्रतं सर्वैः पुराकल्पे षडानन । चतुर्थी या भवेच्छुक्ला नभोमासस्य पुण्यदा ॥ तस्यां व्रतमिदं कुर्यात्का-
र्तिक्यां वा षडानन । कार्तिके शुक्लपक्षे तु चतुर्थ्यामुत्तमं व्रतम् ॥ गजाननं चतुर्बाहुमेकदंतविपाटितम् । विधाय हेम्ना विघ्नेशं हेमपी
ठासनस्थितम् ॥ तथा हेममयीं दूर्वां तदाधारे[१] न्यवस्थिताम् । संस्थाप्य विघ्नकर्तारं कलशे ताम्रभाजने ॥ वेष्टितं रक्तवस्त्रेण सर्वतोभद्रम

१ तस्य हेमपीठस्य आधारे ।

ज्ञोप० ॥ अनेकरत्नयुक्तानि भूषणानि बहूनि च । तत्तदंगे कांचनानि योजयामि तवाज्ञया । भूषणम् ॥ पूर्वादिक्रमेण अष्टौ दिक्पालाना-
वाहयेत् । इष्टगंधसमायुक्तं रक्तचंदनमिश्रितम् । द्वादशांगेषु ते देव लिंपयामि कृपां कुरु । चंदनम् ॥ रक्तचंदनसंमिश्राँस्तण्डुलाँस्तिल-
कोपरि । शोभायै संप्रदास्यामि गृहाण जगदीश्वर । अक्षतान् ॥ पाटलं कर्णिकारं च बंधूकं रक्तपंकजम् । मोगरं मालतीपुष्पं गृह्यतां
नेश्वर । पुष्पाणि ॥ नानापंकजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि । बिल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम् । मालाम् ॥ अथांगपूजा ॥
नमः पादौपू० । गौरीपुत्राय० गुल्फौ० । विश्वेश्वराय० जानुनी० । गजाननाय० ऊरू० । लंबोदराय० वक्षःस्थलं० । गणना-
ानौ० । द्वैमातुराय० कंठं० । वक्रतुंडाय० शिरःपूजयामि ॥ अथैकविंशतिपत्रपूजा ॥ गणाधिपाय० भृंगिराजपत्रंसमर्पयामि । उमा-
ल्वपत्रंस० । गजाननाय० दूर्वापत्रं० । लंबोदराय० बदरीपत्रं० । हरसूनवे० मधुपत्रं गजवक्राय० तुलसीपत्रं० । गुहाग्र-
० अपामार्गप० । एकदंताय० बृहतीप० । इभवक्राय० शमीप० । विकटाय० करवीरप० । विनायकाय० अश्वत्थपत्रं० । कपि-
र्कपत्रं० । बटवे० चंपकपत्रं० । अभयप्रदाय० अर्जुनपत्रं० । पत्नीहिताय० विष्णुक्रांतप० । सुराधिपतये० देवदारुप० । भा-
ागरुपत्रं । हेरंबाय० श्वेतदूर्वापत्रं० शूर्पकर्णाय० जातीपत्रं० । सुरनाथाय० धत्तूरपत्रं० । एकदंताय० केतकीपत्रं० ॥ अ-
थैकावि... पूजा ॥ गजाननाय० विघ्नराजाय० लंबोदराय० शिवात्मजाय० वक्रतुंडाय० शूर्पकर्णाय० कुब्जाय० विनायकाय०
शनाय० विकटाय० वामनाय० सर्वार्तिनाशिने० भगवतेन० विघ्नहर्त्रे० धूम्रकाय० सर्वदेवाधिदेवाय० एकदंताय० कृष्ण-
०० भालचंद्राय० गणेश्वराय० गणपाय० पुष्पंस० २१ ॥ दशांगं गुग्गुलं धूपं सर्वसौगंधिकारकम् । सर्वपापक्षयकरं गृहाण

मारभ्य श्रावणकृष्णदशमीपर्यंतं गणपतिपूजनम् । सा मध्याह्नव्यापिनी कार्या ॥ अथ पूजा ॥ एकदंतं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं च चतुर्भुजम् । पाशांकुशधरं देव मोदकं बिभ्रतं करे । ध्यानम् ॥ आगच्छ जगदाधार सुरासुरवरार्चित । अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणपरिपूजित । आवाहनम् ॥ स्वर्णसिंहासनं दिव्यं नानारत्नसमन्वितम् ॥ समर्पितं मया देव तत्र त्वं समुपाविश । आसनम् ॥ देव देवेश सर्वेश सर्वतीर्थाहृतं जलम् । पाद्यं गृहाण गणप गंधपुष्पाक्षतैर्युतम् । पाद्यम् ॥ प्रवालमुक्ताफलपूगरत्नताम्बूलजांबूनदमष्टगंधम् । पुष्पाक्षतैर्युक्तममोघशक्ते दत्तं मयाऽर्घ्यं सफलीकुरुष्व । अर्घ्यम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्यः प्रार्थितं तोयमुत्तमम् । कर्पूरैलालवंगैश्च युक्तमाचम्यतां विभो । आचमनम् ॥ चंपकाशोकवकुलमालतीमोगरादिभिः । वासितं स्निग्धताहेतुस्तैलं चारु प्रगृह्यताम् । अभ्यंगस्नानम् ॥ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् । पयःस्नानम् ॥ पयसस्तु समुद्भूतं हिमादिस्रव्ययोगतः । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्र० । दधि स्नानम् ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् । यज्ञाग देवताहेतोर्घृतं स्नानार्थमर्पितम् । घृतस्नानम् ॥ पुष्पसारसमुद्भूतं मक्षिकैराहृतं च यत् । सर्वपुष्टिकरं देव मधु स्नानार्थमर्पितम् । मधुस्नानम् ॥ इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां सुमनोहराम् । मलापहरणस्नाने गृहाण त्वं मयार्पिताम् । शर्करास्नानम् ॥ सर्वमाधुर्यताहेतुः स्वादुः सर्वप्रियंकरः । पुष्टिकृत्स्वादुमानीत इक्षुसारभवो गुडः । गुडस्नानम् ॥ कांस्ये कांस्येन पिहितं दधि मधु घृतं पयः । मधुपर्कोऽयमानीतः पूजार्थं प्र० । मधुपर्कस्ना० ॥ सर्वतीर्थाहृतं तोयं मया प्रार्थनया विभो । सुवासितं गृहाणेदं सम्यक् स्नातुं सुरेश्वर । स्नानम् । रक्तवस्त्रयुगं देव लोकलज्जानिवारणम् । अनर्घ्यमतिसूक्ष्मं च गृहाणेदं मयार्पितम् । वस्त्रम् ॥ राजतं ब्रह्मसूत्रं च कांचनं रत्नसंयुतम् । भक्त्योपपादितं देव गृहाण परमेश्वर । य

विद्याप्रदाय० इति ॥ गणेशं हृदये ध्यात्वा सर्वसंकष्टनाशनम् । एकविंशतिसंख्याकाः करोमि च प्रदक्षिणाः । प्रदक्षिणाः ॥ औदुंबरे राजते
वा कांस्ये कांचनसंभवे । पात्रे प्रकल्पितान्दीपान्गृहाण चक्षुरर्पितान् । पंचार्तिक्यं पंचदीपैर्दीपितां परमेश्वर । चारुचंद्रप्रभं दीपं
गृहाण परमेश्वर । पंचार्तिक्यम् ॥ कर्पूरस्य मया देव दीपस्ते च निवेदितः । यथास्य नेक्षते भस्म तथा पापं विनाशय । कर्पूरदी०॥स्तो-
त्रैर्नानाविधैः सूत्रैः सहस्रनामभिस्ततः । उपविश्य स्तुवीतैनं कृत्वा स्थिरतरं मनः । दीनानाथ दयानिधे सुरगणैः संसेव्यमान द्विजैर्ब्र-
ह्मेशानमहेंद्रशेषगिरिजागंधर्वसिद्धैः स्तुत ॥ सर्वारिष्टनिवारणैकनिपुण त्रैलोक्यनाथ प्रभो भक्तिं मे सफलां कुरुष्व सकलान्क्षंत्वा ऽपरा-
धान्मम । आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् । विसर्जनं न जानामि क्षम्यतां जगदीश्वर । क्षमापनम् ॥ गौरीसुत नमस्ते
ऽस्तु सर्वसिद्धिप्रदायक । सर्वसंकष्टनाशार्थमर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् । अनेन एकविंशति अर्घ्याणि दद्यात् ॥ कृतपूजायाः सांगतासिद्ध्यर्थं
ब्राह्मणाय वायनप्रदानं करिष्ये ॥ ब्राह्मणपूजनं कृत्वा । दशमोदकसंयुक्तं वाणकं च फलप्रदम् । गणेशप्रीणनार्थाय गृहाण त्वं द्विजोत्तम
–इति वाणकं दत्त्वा सांगतासिद्धये ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ इति पूजा ॥ अथ कथा ॥ ॥ शौनक उवाच । सूत सूत महाप्राज्ञ व्यास-
विद्याविशारद । संकष्टे च समुत्पन्ने कार्यसिद्धिः कथं नृणाम् १ सूत उवाच । शृणुध्वं मुनयः सर्वे शौनकप्रमुखानघाः । संकष्टनाशनं पुण्यं
व्रतं वच्मि यथाश्रुतम् २ यत्कृत्वा सर्वकार्याणि सिद्धिं यांति न संशयः । पूजयित्वा गणेशं हि एकविंशद्दिनावधि ३ शौनक उवाच । कथं
पूज्यो गणाध्यक्षो विघ्नहर्ता गणाधिपः । केन चादौ पुरा चीर्णं व्रतं विघ्नहरस्य च ४ वद सर्वं महाप्राज्ञ ह्यस्माकं विधि-

१ शौनकप्रमुखाश्च ते अनघाश्चेति कर्मधारयः समासः ।

त्वं मयार्पितम् । धूपम् ॥ सर्वज्ञ सर्वलोकेश तमोनाशनमुत्तमम् । गृहाण मंगलं दीपं देवदेव नमोऽस्तु ते । दीपम् ॥ नानापक्वान्नसंयुक्तं पायसं शर्करान्वितम् । राजिकाधान्यसंयुक्तं मेथीपिष्टं सतक्रकम् ॥ हिंगुजीरककूष्मांडैर्मरीचीमाषपिष्टकैः । सवादितैः सुपक्वैश्च भर्जितैर्वटकैर्युतम् ॥ मोदकापूपलड्डुकशष्कुलीवटकादिभिः । पर्पटै रससंयुक्तं नैवेद्यमसृतान्वितम् ॥ हरिद्राहिंगुलवणसहितं सूपमुत्तमम् ॥ ससाज्यं गृहाणेदं भोजनं कुरु सादरम् । मया निवेदितं शुभ्यं गृहाण जगदीश्वर ॥ नैवेद्यम् ॥ अतितृप्तिकरं तोयं सुगंधि च पिबेच्छया । त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि । मध्ये पानीयम् ॥ उत्तरापोशनार्थं ते दद्मि तोयं सुवासितम् ॥ मुखपाणिविशुद्ध्यर्थं पुनस्तोयं ददामि ते । दाडिमं मधुरं निंबुजंब्वाम्रपनसादिकम् । द्राक्षारंभाफलं पक्वं कर्कंधु खार्जुरं फलम् । नारीकेलं च नारिंगं कलिंगं मांजिरं तथा । उर्वारुकं च देवेश फलान्येतानि गृह्यताम् । फलानि ॥ गृहाण चंदनं चारु करांगोद्वर्तनं शुभम् । नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् । अबीरनामकं पुण्यं गंधि चारु प्रगृह्यताम् । चारु चालरसंभूतं वंशसारसमुद्भवम् । सचप्रपूगचूर्णाढ्यं खादिरेण च संयुतम् । एलालवंगसमिश्रं तांबूलं प्र० । तांबूलम् ॥ न्यूनातिरिक्तपूजायां संपूर्णफलहेतवे । दक्षिणां कांचनीं देव स्थापयामि तवाग्रत । दक्षिणाम् ॥ सितपीतैस्तथा रक्तैर्जलजैः कुसुमैः शुभैः । ग्रथितां सुंदरां मालां गृहाण परमेश्वर । मालाम् ॥ हरिताः श्वेतवर्णा वा पंचत्रिपत्रसंयुताः । दूर्वांकुरा मया दत्ता एकविंशतिसंमिताः— ॥ गणाधिपायनं० दूर्वांकुरान्स० । उमापुत्राय० अभयप्रदाय० एकदंताय० मूषकवाहनाय० विनायकाय० ईशपुत्राय० इभवक्त्राय० सर्वसिद्धिप्रदायकाय० लंबोदराय० विघ्नराजाय० विकटाय० मोदकप्रियाय० विघ्नविध्वंसकर्त्रे० विश्ववंद्याय० अमरेशाय० राजकर्णकाय० नागयज्ञोपवीतिने० भालचंद्राय० विद्याधिपाय०

सेन तु पूर्णे द्वे भक्ष्ये भोज्येन संयुते २२ संस्थाप्य चैव पीठाग्रे घृतेन सितयान्विते । पात्रद्वयं समालोक्य अवदत्पार्वतीं शिवः २३ शं-
भुरुवाच । दिव्यकांचनसंभूतं दर्वियुक्तं सुलोचने । भोज्यपात्रं तु कस्येदं स्थापितं च द्वितीयकम् २४ भोजनार्थं द्वितीयो ऽद्य कोयाति
वद वल्लभे । नायाति त्वरया चात्र विलंबे कारणं वद २५ इति श्रुत्वा वचः शंभोः सर्वेशस्य महासती । भीतिहर्षसमायुक्ता सर्वज्ञमवद-
त्तदा २६ पार्वत्युवाच । ममाद्य स्नानसमये उद्वर्तनमलोद्भवम् । पुत्रं विरच्य च दृढो देहल्यां स्थापितो मया २७ तदर्थं च द्वितीयं वै भा-
जनं स्थापितं ध्रुवम् । इति श्रुत्वा वचस्तस्याश्चकंपे प्राकृतो यथा २८ शिव उवाच । प्रविशंतं च मां द्वारे तव पुत्रो न्यवारयत् । कोऽसि
त्वं च मया पृष्टस्तेन नोक्ता तवाभिधा २९ कोपेन च ततस्तस्य शिरश्छित्वा निपातितम् । इति श्रुत्वा ततो देवी विह्वला पतिता भुवि-
३० पार्वत्युवाच । पुत्रं जीवयसे देव तर्हि भोक्ष्ये महेश्वर । तथैव च मम प्राणा गमिष्यंति न संशयः ३१ इत्युक्त्वा च ततो देवी हा
कष्टमित्यवीवदत् । पुनः पपात सा भूमौ वातेन कदली यथा ३२ शिव उवाच । उत्तिष्ठ भद्रे किं दुःखं पुत्रार्थे मा कुरु प्रिये । अधुना
तव पुत्रं हि जीवयामि शिरो विना ३३ प्रियामेवं समाश्वास्य गतो द्वारं स्वयं विभुः । इतस्ततो ऽवलोक्याथ गजो दृष्टो मृतस्तदा ३४
निकृत्य तन्नागशिरो बल्वं योजयद्विभुः । संजीव्य बल्वं पुत्रं पार्वतीं विनिवेदयत् ३५ दृष्ट्वा गजशिरं पुत्रं पार्वती हर्षनिर्भरा । भोजयि-
त्वा पतिं पुत्रं स्वर्णपात्रे सुशोभने ३६ नमस्कृत्य ततो देवं पतिपात्र उपाविशत् । बुभुजे तु ततो देवी पतिशेषं तु भोजनम् ३७ कैला-
सभुवने रम्ये पार्वत्या निवसन्बहु- । अटन्विभुः कदाचित्सद्वृषभेण बलीयसा ३८ पार्वत्या सहितो देवः प्राप्तवान्नर्मदातटम् । रम्यं रेवा-

१ द्वे पात्रे पीठाग्रे सस्थाप्य तत्रैवातिष्ठदित्यर्थः । २ अत्र आर्षत्वादाकारलोपः ।

पूर्वकम् । मासो ऽसि त्व महाभागयादरण्ये सत्रमंडपे ५ सूत उवाच । एवमेव पुरा पृष्टः षण्मुखो वदतांवरः । सनत्कुमारमुनिना ब्रह्मपु-
त्रेण योगिना६ सनत्कुमार उवाच । कार्तिकेय महाप्राज्ञ देवसेनाधिप प्रभो । संकटात्तु कथं मुच्येज्जनो वै ज्ञानदुर्बलः ७ श्रुत्वा वाक्य
ब्रह्मसूनोः सर्वेषां कार्यगौरवम् । सेनानीस्तु तदा हर्षान्नमस्कृत्य महामुनिम् ८ स्कंद उवाच । विप्रवर्य महायोगिन्पार्वत्या मुखत श्रुत
म् । वदामि तद्व तुभ्य शृणु सर्व समासतः ९ कैलासभवने रम्ये वसमानो महेश्वरः । सार्द्धं जगाम भगवान्भोगवत्यां यथासुखम् १०
तस्मिन्नेव दिने अंबा ह्यभ्यंगस्नानमारभत् । स्वशरीरान्मलं गृह्य तस्य मूर्तिमकल्पयत् ११ सजीवां च पुनः कृत्वा एहि पुत्रेत्यचोदयत् ।
अवदद्वै ततो नाम वल्लवस्त्व विनायक' १२ पुत्र गच्छ बहिर्द्वारे तिष्ठ तत्र ह्युदायुधः । आयास्यति कदाचिद्वै पुरुषो भवनांतरे १३ तं नि
वारयितुं शक्तो यावत्स्नान करोम्यहम् । ममाज्ञां गृह्य पश्चात्त्वं प्रवेशयितुमर्हसि १ मात्राज्ञां गृह्य शिरसि ह्यगमद्द्वारदेहलीम् । सुत्र
रं तु समादाय हस्ते वल्लवनामक' १५ अरक्षद्द्वारदेशं स पार्वत्याज्ञां स्मरन्बलात् । तदानीमेव आयातो विभूत्या चर्चितो विभुः १६ स-
मासो भवनद्वारे शंभुः सर्वेश्वरो हर । देहलीं प्रविशेधावद्द्वारपद्वारपो वली१७ द्वारपाल उवाच । कोसि त्वं च किमर्थं हि गम्यते भवने
शुभे । मात्राज्ञाऽऽयाति यावत्त्व स्थातव्य तावदेव हि१८स्कंद उवाच । द्वारपालवचः श्रुत्वा शंभुः कोपमथाकरोत् ।।शंभुरुवाच । कस्याज्ञा
च मया ग्राह्या को ऽसि त्व भाषसे कथम् १९ गृहीत्वा डमरुं हस्ते द्वारपालशिरोऽहनत् । प्रविशच्च ततस्तूर्णं स्वगृहं पार्वतीपतिः २०
दृष्ट्वा नाथ सकोपं सा ऽर्चितपत्पार्वती हृदि । बहुधा बाधते क्षुद्रे शंकरे कोपकारणम् २१ अलंकृता च सुस्नाता पार्वती जगदंबिका । पाय

१ स्वपतीति पञ्चमपस्याप्याहारः)

सेन तु पूर्णे द्वे भक्ष्ये भोज्येन संयुते २२ संस्थाप्य चैव पीठाग्रे घृतेन सितयान्विते । पात्रद्वयं समालोक्य अवदत्पार्वतीं शिवः २३ शंभुरुवाच । दिव्यकांचनसंभूतं दर्वियुक्तं सुलोचने । भोज्यपात्रं तु कस्येदं स्थापितं च द्वितीयकम् २४ भोजनार्थं द्वितीयो ऽद्य कोयाति वद वल्लभे । नायाति त्वरया चात्र विलंबे कारणं वद २५ इति श्रुत्वा वचः शंभोः सर्वेशस्य महासती । भीतिहर्षसमायुक्ता सर्वज्ञमवदत्तदा २६ पार्वत्युवाच । ममाद्य स्नानसमये उद्वर्तनमलोद्भवम् । पुत्रं विरच्य च दृढो देहल्यां स्थापितो मया २७ तदर्थं च द्वितीयं वै भाजनं स्थापितं ध्रुवम् । इति श्रुत्वा वचस्तस्याश्चकंपे प्राकृतो यथा २८ शिव उवाच । प्रविशंतं च मां द्वारे तव पुत्रो न्यवारयत् । को ऽसि त्वं च मया पृष्टस्तेन नोक्ता तवाभिधा २९ कोपेन च ततस्तस्य शिरश्छित्वा निपातितम् । इति श्रुत्वा ततो देवी विह्वला पतिता भुवि- ३० पार्वत्युवाच । पुत्रं जीवयसे देव तर्हि भोक्ष्ये महेश्वर । तथैव च मम प्राणा गमिष्यंति न संशयः ३१ इत्युक्त्वा च ततो देवी हा कष्टमित्यवीवदत् । पुनः पपात सा भूमौ वातेन कदली यथा ३२ शिव उवाच । उत्तिष्ठ भद्रे किं दुःखं पुत्रार्थे मा कुरु प्रिये । अधुना तव पुत्रं हि जीवयामि शिरो विना ३३ प्रियामेवं समाश्वास्य गतो द्वारं स्वयं विभुः । इतस्ततो ऽवलोक्याथ गजो दृष्टो मृतस्तदा ३४ निकृत्य तन्नागशिरो बल्वं योजयद्विभुः । संजीव्य बल्वं पुत्रं पार्वतीं विनिवेदयत् ३५ दृष्ट्वा गजशिरं पुत्रं पार्वती हर्षनिर्भरा । भोजयित्वा पतिं पुत्रं स्वर्णपात्रे सुशोभने ३६ नमस्कृत्य ततो देवं पतिपात्र उपाविशत् । बुभुजे तु ततो देवी पतिशेषं तु भोजनम् ३७ कैलासभुवने रम्ये पार्वत्या निवसन्बहु- । अटन्विभुः कदाचित्सद्वृषभेण बलीयसा ३८ पार्वत्या सहितो देवः प्राप्तवान्नर्मदातटम् । रम्यं रेवा-

१ द्वे पात्रे पीठाग्रे सस्थाप्य तत्रैवातिष्ठदित्यर्थः । २ अत्र आर्षत्वादाकारलोपः ।

तटं दृष्ट्वा पार्वती प्रावदच्छिवम् ३९ पार्वत्युवाच । देव देव महादेव शंकर प्राणवल्लभ । अक्षक्रीडनकामा ऽहं त्वया सार्द्धं सुरेश्वर ४० शं कर उवाच । अक्षक्रीडनकामा त्वमासने ऽस्मिन् स्थिरा भव । जये पराजये चात्र साक्ष्यर्थं योजय प्रिये ४१ स्वामिवाक्यं च सा श्रुत्वा परका गृह्य मुष्टिना । नराकृतिमथाकल्प्य प्राणान्सा समयोजयत् ४२ देहं तस्य च सा स्पृश्य पाणिपद्मेन शोभना । तमुवाच ततो बा लमक्षक्रीडां विलोकय ४३ आवाभ्यां क्रीडमानाभ्यां को जयीति वद ध्रुवम् । इति मातुर्वचः श्रुत्वा बालको वै तथेति भोः ४४ अक्षक्री डा समारब्धा पार्वत्या शंकरेण च । जयो जातश्च पार्वत्याः शंकरस्तु पराजितः ४५ शंकरस्तु तदा ऽपृच्छत्को जितो वद बालक । अवद- द्बालकस्तत्र जितं देवेन शूलिना ४६ पुनः क्रीडा प्रवृत्ता सा साक्षी कृत्वा तु बालकम् । पुनर्जितं तु पार्वत्या शंकरस्तु पराजितः ४७ वार्त्तं पप्रच्छ सा देवी जितं केन वदाधुना । पुनरप्याह बालो ऽसौ जितं देवेन शूलिना ४८ हर्षेण च समायुक्तः पार्वतीं प्राह शंकरः । क्रीडां कुरु महादेवि रोषं त्यज शुभानने ४९ क्रीडती सा पुनर्देवी जितो देव्या स शंकरः । लज्जितः शंकरो बालं को जितो वद निश्चि तम् ५० शंकरं प्राह बालो ऽस्यो जितस्त्वं भुवनाधिप । बालवाक्यं समाकर्ण्य पार्वती कोपनिर्भरा ५१ मिथ्या वदसि दुष्टात्मन्पादहीनो ऽत्र कर्दमे । पच्यमानो ऽतिदुःखेन भविष्यसि न संशयः ५२ बाल उवाच । विशापं कुरु मां मातर्बालभावान्मयेरितम् । इति श्रुत्वा वचस्तस्य मातृभावाद्दयान्विता ५३ पार्वत्युवाच । नागकन्या यदा पुत्र पूजार्थं च तटे शुभे । गणेशं पूजयत्यार्या दृष्ट्वा पूजाविधिं शिवम् ५४ तासां श्रुत्वा वचो दिव्यं तव मुक्तिर्भविष्यति । गणेशं पूजयित्वा तु मम सान्निध्यमेष्यसि ५५ इत्युक्त्वा सा ततो देवी हिमाचल- मगात्तपा । व्यतीते वत्सरे पूर्णे श्रावणे मासि चागते ५६ गणेशपूजनार्थं ता नागकन्याः समागता । दृष्टवान्नर्मदातीरे स्त्रीवृंदं बहुरूपितम् ।

५७ बाल उवाच । किमर्थं चागता बालाः किं चात्र क्रियते ऽधुना । भवतीभिः पूज्यते कः किं फलं वदताद्य मे ५८ नागकन्या ऊचुः । वत्स पूजा गणेशस्य क्रियते ऽस्माभिरुत्तमा । पूजिते तु जगन्नाथे लभते वाञ्छितं ध्रुवम् ५९ बाल उवाच । कथं पूज्यो गणाध्यक्षः कियत्कालं वदंतु भोः । को विधिः के च संभाराः कदा पूज्यो गणेश्वरः ६० नागकन्या ऊचुः । श्रावणे मासि संप्राप्ते चतुर्थ्यां च खगोदये । तिलामलककल्केन स्नानं कुर्याज्जलाशये ६१ शुक्लपक्षे समारभ्य या कृष्णदशमी भवेत् । मध्याह्ने पूजयेत्तावदेकविंशद्दिनावधि ६२ एकविंशतिदूर्वाभिस्तावत्पुष्पैः शुभैः सदा । मोदकैरेकविंशैश्च पूजयेत्प्रत्यहं जनः ६३ मोदका दश विप्राय दातव्याश्च सदक्षिणाः । एकं गणाधिपे दत्त्वा स्वयं चाद्यादृशैव तु ६४ पूजा मौनेन कर्तव्या भोजनं च तथाऽनघ । ब्रह्मचारी भूमिशायी शूद्रभाषणवर्जितः ६५ हविष्याशी तथा भूयाच्छुचिरंतर्बहिः सदा । एवं नियममास्थाय पूजां कुर्यात्सदा व्रती ६६ ताम्रपात्रे जलं गृह्य गंधपुष्पसमन्वितम् । फलरत्नसमायुक्तमर्घ्यं दद्याद्गणाधिपे ६७ गणेशाय नमस्ते ऽस्तु पार्वतीनंदनाय च । गंधपुष्पसमायुक्तं गृहाणार्घ्यं नमो ऽस्तु ते ६८ प्रदक्षिणाः सदा वत्स एकविंशन्निवेदयेत् । पूजासमाप्तौ विप्राय वायनं च समर्पयेत् ६९ गणेश प्रीतये तुभ्यं वायनं दशमोदकम् । दक्षिणाफलसंयुक्तं वंशपात्रे सुकल्पितम् ७० गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च । गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः ७१ एवं पूज्यो गणाध्यक्षो नार्मदो भक्तितः शुभः । गणेशे पूजिते वत्स तव सिद्धिर्भविष्यति ७२ एवमुक्त्वा गता देव्यो नागकन्याः शुचिस्मिताः । बालकेन कृतं पश्चादन्यस्मिन्वसरे ततः ७३ श्रावणे मासि संप्राप्ते शुक्लपक्षे तिथौ शुभे । चतुर्थ्यां कृतसंभारो व्रतं जग्राह बालकः ७४

१ खगोदये सूर्योदये । २ अत्रार्षः संधिः । तारकः उभाभ्यामिति पदद्वयं ज्ञेयम् ।

गणेश नार्मद तत्र एकविंशद्दिनावधि । विधिवत्पूजयामास नमस्कृत्य गणेश्वरम् ७५ गणेशो वरदो जातो याचयस्व यदीप्सितम् । श्रुत्वा वाक्यं गणेशस्य हर्पनिर्भरमानसः ७६ बाल उवाच । नमस्कृत्य गणेशानं वर देहि नमो ऽस्तु ते । पादयोर्मे बलं देहि वास शंकरसन्निधौ ७७ गणेश उवाच । यथेच्छसि तथैवास्तु पार्वत्याः प्रीतिरस्तु ते । इत्युक्त्वा तु गणेशो ऽसौ तत्रैवांतर्दधे विभुः ७८ दृढपादश्च बालो ऽसौ कैलासमगमत्तत । दृष्ट्वा हरस्य चरणौ शिरसा जगृहे शुभौ ७९ शिव उवाच । उत्तिष्ठ वत्स ते पादौ कथ जातौ दृढौ वद । कस्य प्रसादात्त्वमिह ह्यागतो ऽसि ममालयम् ८० बाल उवाच । कृतं मया गणेशस्य एकविंशद्दिनात्मकम् । श्रुत च नागकन्याभ्यस्तद्व्रतं पूजन मया ८१ तेन पुण्यप्रभावेण प्राप्तो ऽह तव सन्निधौ । गणेशस्य प्रसादेन शरीर दृढतां गतम् ८२ शिव उवाच । कीदृशं तद्व्रतं ब्रूहि करिष्ये ऽह च तद्व्रतम् । वल्लभाया दर्शनार्थं पार्वत्या रोषशांतये ८३ बाल उवाच । श्रावणे शुक्लपक्षे तु चतुर्थ्यां च समारभेत् । श्रावणे बहुले पक्षे दशम्या च समापयेत् ८४ गणेशं पूजयेन्नित्यमेकविंशद्दिनावधि । एकविंशतिदूर्वाभिः पुष्पैरपि तथैव च ८५ कर्तव्या मोदकास्तत्र एकविंशतिसंख्यकाः । दश विप्राय दत्त्वा तु एक देवे नियोजयेत् ८६ अवशिष्टाः स्वयं भक्ष्याः श्रुतमेव मया विभो । किं मया ऽद्य त्वयाऽज्ञप्तं कर्तव्य वर्तते विभो ८७ आचरच्छंभुरप्येव गणेशस्य व्रतं शुभम् । पूजनात्तु गणेशस्य पार्वत्याश्चलितं मनः ८८ हिमाचल नमस्कृत्य वचन चेदमब्रवीत् ॥ पार्वत्युवाच । गम्यते ऽद्य मया तात कैलास निजमंदिरम् ८९ शिवस्य चरणौ द्रष्टुमुत्सुकं मे मनो ऽभवत् । शीघ्र देहि ममाज्ञां भो क्षण स्थातुं न शक्यते ९० हिमाचल उवाच । प्रेषयिष्ये क्षणं तिष्ठ विमानेनार्कवर्चसा । सैन्यं ददामि रक्षार्थं तव मार्गे शुचिस्मिते ९१ पितृवाक्य समाकर्ण्य विमानं चाऽऽरुरोह सा । क्षणमात्रेण सा याता कैलासम

वनोत्तमम् ९२ दृष्ट्वा महेश्वरं देवं प्रणनाम विहस्य च । किं कृतं भो न जाने ऽहं मनो मे चाहृतं त्वया ९३ वाक्यं श्रुत्वा प्रियायाश्च मनसा चालिलिंग ताम् । अवदत्कारणं तस्या हरणे मनसो ध्रुवम् ९४ शिव उवाच । कृतं मया गणेशस्य पूजनं तव हेतवे । तेन पुण्यप्रभावेण आगता त्वं ममांतिकम् ९५ पार्वत्युवाच । कथं पूज्यो गणाध्यक्षो वद मह्यं जगत्प्रभो । अहमद्य करिष्यामि सेनानीदर्शनाय च ९६ शंकर उवाच । कुरु देवि गणेशस्य पूजनं च यथाविधि । एकविंशतिदूर्वाभिः पुष्पैर्नानाविधैः शुभैः ९७ मोदकैरेकविंशैश्च एकविंशद्दिनानि च । अर्घ्यैस्तावतिसंख्याकैस्तथा ब्राह्मणतर्पणैः ९८ त्रिलोचनमुखाच्छ्रुत्वा गणेशः पूजितस्तया । एकविंशद्दिनात्पश्चात्कुमारोऽभ्यगमत्स्वयम् ९९ स्कंदं दृष्ट्वा तदा देव्याः स्तनाभ्यां निर्झरा ववुः । सुतमालिंग्य सा देवी चुचुंबे च मुखं पुनः १०० वत्साद्य च मुखं दृष्टं गणेशस्य प्रसादतः । बहुकालं च मां त्यक्त्वा गतः षण्मुखबालक १०१ कृतकृत्या ऽद्य जाता ऽस्मि दर्शनात्ते न संशयः । शेषं त्यज महाबुद्धे शपथं ते वदाम्यहम् १०२ स्कंद उवाच । मातर्वद गणेशस्य पूजनं च यथा श्रुतम् । विश्वामित्रं च राजानं मम मित्रं वदाम्यहम् ३ पार्वत्युवाच । वद मित्रं गणेशस्थ पूजनं कुरु भक्तितः । एकविंशतिदूर्वाभिः पुष्पैरप्येकविंशतिः ४ कर्तव्या मोदकास्तत्र एकविंशतिसंख्यकाः । दश विप्राय दातव्याः स्वयं चाद्याद्दशैव तु ५ एकं गणाधिपे दत्त्वा अर्घ्याण्यपि तथैव च । पूजयस्व गणाध्यक्षमेकविंशद्दिनावधि ६ इदं व्रतं गणेशस्य भक्तितो यः करिष्यति । तस्य कार्याणि सिद्ध्यंति मनसा चिंतितानि च ७ व्रतराजविधिं श्रुत्वा सेनानीश्च तथा ऽकरोत् । सेनानीनामग्रणीत्वं समवाप्य शुचिव्रतः ८ कथयामास विप्रं तं विश्वामित्रं नराधिपम् । सो ऽपि राजा नमस्कृत्य व्रतं तत्स्वयमाचरत् ९ गणेशो वरदो जातो विश्वामित्राय तत्क्षणात् ॥ गणेश उवाच । वद राजन्किमिच्छा ऽस्ति ददामि तव याचितम् ११०

गणेश नार्मद तत्र एकविंशद्दिनावधि । विधिवत्पूजयामास नमस्कृत्य गणेश्वरम् ७५ गणेशो वरदो जातो याचयस्व यदीप्सितम् । श्रुत्वा
वाक्यं गणेशस्य हर्षनिर्भरमानसः ७६ बाल उवाच । नमस्कृत्य गणेशानं वरं देहि नमो ऽस्तु ते । पादयोर्मे बलं देहि वास शंकरसंनि-
धौ ७७ गणेश उवाच । यथेच्छसि तथैवास्तु पार्वत्याः प्रीतिरस्तु ते । इत्युक्त्वा तु गणेशो ऽसौ तत्रैवांतर्दधे विभुः ७८ दृढपादश्च बा
लो ऽसौ कैलासमगमत्ततः । दृष्ट्वा हरस्य चरणौ शिरसा जगृहे शुभौ ७९ शिव उवाच । उत्तिष्ठ वत्स ते पादौ कथं जातौ दृढौ वद । क
स्य प्रसादात्त्वमिह द्यागतो ऽसि ममालयम् ८० बाल उवाच । कृतं मया गणेशस्य एकविंशद्दिनात्मकम् । श्रुत च नागकन्याभ्यस्तद्व्र
तं पूजनं मया ८१ तेन पुण्यप्रभावेण प्राप्तो ऽहं तव संनिधौ । गणेशस्य प्रसादेन शरीरं दृढतां गतम् ८२ शिव उवाच । कीदृशं तद्व्र-
तं ब्रूहि करिष्ये ऽहं च तद्व्रतम् । वल्लभाया दर्शनार्थं पार्वत्या रोषशांतये ८३ बाल उवाच । श्रावणे शुक्लपक्षे तु चतुर्थ्यां च समारभे
त् । श्रावणे बहुले पक्षे दशम्यां च समापयेत् ८४ गणेशं पूजयेन्नित्यमेकविंशद्दिनावधि । एकविंशतिदूर्वाभिः पुष्पैरपि तथैव च ८५
कर्तव्या मोदकास्तत्र एकविंशतिसंख्यकाः । दश विप्राय दत्त्वा तु एकं देवे नियोजयेत् ८६ अवशिष्टाः स्वयं भक्ष्याः श्रुतमेवं मया वि
भो । किं मया ऽद्य त्वया ऽऽज्ञप्तं कर्तव्यं वर्तते विभो ८७ आचरच्छंभुरप्येवं गणेशस्य व्रतं शुभम् । पूजनात्तु गणेशस्य पार्वत्याश्चलित
मनः ८८ हिमाचलं नमस्कृत्य वचनं चेदमब्रवीत् ॥ पार्वत्युवाच । गम्यते ऽद्य मया तात कैलासं निजमंदिरम् ८९ शिवस्य चरणौ
द्रष्टुमुत्सुकं मे मनो ऽभवत् । शीघ्रं देहि ममाज्ञां भोः क्षणं स्थातुं न शक्यते ९० हिमाचल उवाच । मेघपिण्डे क्षणं तिष्ठ विमानेनार्कव
र्चसा । सैन्यं ददामि रक्षार्थं तव मार्गं शुचिस्मिते ९१ पितृवाक्यं समाकर्ण्य विमानं चाऽऽरुरोह सा । क्षणमात्रेण सा याता कैलासम

अथ कथा ॥ ॥ सूत उवाच । कैलासशिखरे रम्ये सर्वदेवनिषेविते । सिद्धसंघसमाकीर्णे गंधर्वगणसेविते १ देव्या सह महादेवो दीव्यँरुयक्षैर्विनो
दितः । जितोऽसि त्वं जितेत्याह पार्वतीं परमेश्वरः २ साऽपि त्वं जित इत्याह स विवादस्तयोरभूत् । चित्रनेमिस्तदा पृष्टो मृषावादमभाषत ३
तदा क्रोधसमाविष्टा गौरी शापं ददौ ततः । प्रसादिता ततस्तेन विशापं कुरु पार्वति ४ पार्वत्युवाच । यदा सरोवरे रम्ये चरिष्यति भ-
वान्भुवि । तदा स्वर्गणिकाः सर्वा वीक्ष्यंति त्वां समागताः ५ तदा भव विशापस्त्वमित्युक्तः स पपात ह । ततः कतिपयाहोभिः कृष्णो-
नंतसरोवरे ६ कृष्णो भूत्वा वसंस्तत्र ददर्श स्वर्विलासिनीः । ततस्तु सादरं गत्वा पप्रच्छ प्रणिपत्य ताः ७ चित्रनेमिरुवाच । क्रियते किं महा-
भागाः पूजायां वांछितं च किम् । ततस्ता अब्रुवँस्तस्मै दूर्वाविघ्नेश्वरव्रतम् ८ क्रियतेऽस्माभिरिह च परत्राभीष्टसिद्धये । ततो
ऽब्रवीच्चित्रनेमिर्व्रतं मे दातुमर्हथ ९ येनाहं गिरिजाशापान्मुच्येयं चिरदुःखितः । ततस्ता अब्रुवन्सर्वा व्रतमेतदनुत्तमम् १० दू
र्वाविघ्नेश्वरो यत्र पूज्यते सर्वसिद्धिदः । शुक्लपक्षे चतुर्थी या भानुवारेण संयुता ११ तस्यां तिथौ समारभ्य षण्मासं व्रतमा-
चरेत् । प्रत्यहं षण्नमस्काराः षट् दूर्वाः षट् प्रदक्षिणाः १२ शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां च प्रत्येकं चैकविंशतिः । एकभक्तं च कर्त-
व्यं कथां च शृणुयादिमाम् १३ ध्यायेद्विनायकं देवं समाहितमनाः सदा । तरुणारुणसंकाशं सर्वाभरणभूषितम् १४ जटाकला-
पसुभगं कुंकुमेनोपराजितम् । गजाननं प्रसन्नास्यं सिंदूरतिलकांकितम् १५ विशालवक्षसं भानुमुक्तामणिविभूषितम् । चतुर्भुजमुदारांगं किं-
किणीकंकणैर्युतम् १६ पाशांकुशधरं देवं दंतमोदकधारिणम् । महोदरं महानागं बद्धकुक्षि मुदान्वितम् १७ सुंदरांशुकसंवीतमिभास्यम-
पराजितम् । प्रणतामरसंदोहमौलिमाणिक्यरश्मिभिः १८ विराजितांघ्रिकमलं सर्वदेवनमस्कृतम् । अभीष्टफलदं देवं सर्वभूतोपकारकम् १९

विश्वामित्र उवाच । देहि देव प्रसन्नश्चेत्प्राग्विप्रर्षित्वमस्त्विति । प्राप्तेन विप्रर्षित्वेन सर्वे प्राप्ता मनोरथाः ११११ गणेश उवाच । विप्रर्षित्वं च राजेंद्र प्राप्स्यसि ब्रह्मपुत्रतः । वसिष्ठाद्ब्राह्मणश्रेष्ठान्मम वाक्यं न संशयः १२ एवमुक्त्वा गणेशो ऽसौ पूजितो भूमिपेन सः । पुनरन्य वर चादात्पूजकानां हिताय वै १३ यदा यदा च राजेंद्र संकट च कलौ भुवि । भविष्यति जनानां हि कर्तव्यं पूजनं मम १४ स्मरिष्यंति च मां भक्त्या नमस्कृत्य पुन पुनः । तेषां दुःखानि सर्वाणि नाशयामि न संशयः १५ एव दत्त्वा वरान्सम्यक्तत्रैवांतर्हितो ऽभवत् । सनत्कुमार योगींद्र पार्वत्या मुखपद्मतः १६ श्रुत मया च त्रेतायां गणेशस्य व्रत महत् । निवेदित च तत्सर्वं कुरु विप्र तपोनिधे १७ सनत्कुमार उवाच । महदाख्यानकं श्रुत्वा मुनो ऽह तत्र संशयः । एवमुक्त्वा गतो योगी नमस्कृत्य षडाननम् १८ सनत्कुमारसेनानीसंवाद च यथाश्रुतम् । व्यासप्रसादाच्छ्रुतवांस्तथा तुभ्य निवेदित १९ इदं व्रत गणेशस्य करिष्यति च मानव । तस्य कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यास्यति सत्वरम् १२० किमन्यद्वो जनश्रेष्ठाः श्रोतुकामास्तपोधनाः । तत्सर्वं कथयिष्यामि वक्तव्य यदि वेच्छथ २१ य इदं शृणुयाद्भक्त्या त्वाख्यानं च समाहितः । तदीप्सितानि कार्याणि स लभेन्निश्चित भुवि २२ शौनकाद्यो ऋषिगण श्रुत्वा सूतवचोद्धतम् । पौराणिक नमस्कृत्य विरराम सने शुभे १२३ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे स्कंदसनत्कुमारसंवादे तृतीयोल्लासे एकविंशतिदिनगणपतिव्रतकथा संपूर्णा ॥ ॥ अन्यच्च भानुवासरयुतायां यस्यां कस्याञ्चिच्छुक्लषष्ठीमारभ्य दूर्वागणपतिव्रत स्कांदे ॥ शिष्टाचारे तु श्रावणशुक्लचतुर्थीमारभ्य माघशुक्लचतुर्थीपर्यंतम् ॥ तत्र विधिः— ॥ मासपक्षाद्युल्लिख्य समस्तपापक्षयपूर्वकसप्तजन्मराज्यसौभाग्यादिविवृद्धये उमामहेश्वरसायुज्यवासिद्ध्यर्थं षण्मासपर्यंत, गणपतिप्रीत्यर्थं दूर्वागणपतिव्रत करिष्ये इति संकल्प्य षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

ख्य ममेहजन्मनि जन्मांतरे च पुत्रपौत्रधनविद्याजययशःश्रीकामायुष्याभिवृद्ध्यर्थं सिद्धिविनायकप्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन पुरुषसूक्तपुराणोक्तमंत्रै- र्ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः पंचामृतैः सहपार्थिवगणपतिपूजनं करिष्ये। तथा च मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठादिकमासनादिकरि० कलशाराधनं पुरुषसूक्तन्यासं च करिष्ये ॥ पार्थिवमूर्तौ देवस्थापनम् ॥ हेरंबायन० मृदाहरणम् । सुमुखाय० संघट्टनम् । गौरीसुताय० स्थापनम् । ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुः सामाथर्वच्छंदांसि । क्रियामयवपुः । प्राणाख्या देवता। आंबीजं ह्रींशक्तिः क्रौंकीलकं । अस्यां मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं अः । अस्यां मूर्तौ प्राणास्तिष्ठंतु ॥ पुनः आंह्रींक्रौं अं० अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः। पुनश्च ॐआं०अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ असुनीतेपुनरिति ऋचं पठित्वा गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पंचदश प्रणवावृत्तीः करिष्ये। ओमिति प्रणवं पञ्चदशवारं जपित्वा तच्चक्षुर्देवहितमिति मंत्रेण देवस्याज्येन नेत्रोन्मीलनं कृत्वा पंचोपचारैः पूजनं कुर्यात् ॥ आसनादि कृत्वा पूजनमारभेत् ॥ एकदंतं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्। पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम् । ध्यायेद्देवं महाकायं तप्तकांचनसन्निभम् । दंताक्षमालापरशुपूर्णमोदकहस्तकम् । मोदकासक्तशुंडाग्रमेकदंतं विनायकम् । ध्यानम् ॥ आवाहयामि विघ्नेश सुरराजार्चितेश्वर। अनाथनाथ सर्वज्ञ पूजार्थं गणनायक । ॐ सहस्रशीर्षा० आवाहनम् ॥ विचित्ररत्नरचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृहाण सुरपूजित । ॐ पुरुषएवेदं० । आसनम् ॥ सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गंधादिसंयुतम् । विघ्नराज गृहाणेदं भगवन्भक्तवत्सल। ॐ एतावा० । पाद्यम् ॥ अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गंधपुष्पाक्षतैर्युतम्। गणाध्यक्ष नमस्ते ऽस्तु गृहाण करुणा-

एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं विनायकमतंद्रितः । एवं चरित्वा षण्मासान् शुचिः सत्यपरायणः २० पश्चाद्व्रतादिदूर्वाभिरर्चयेत्तु सदा पुनः । उद्यापनं प्रकर्तव्यं देशकालानुसारतः २१ ततो मगधदेशस्य मानेन यवपिष्टकम् । दशमोनकमादाय दशाष्टावपि मोदकान् २२ कृत्वा घृतप्लुतान्सम्यक् पदं देवाय पद्मात्मने । पदं च विप्राय दातव्या श्रोत्रियाय कुटुंबिने २३ विनायको गणाध्यक्षो विघ्नेशः श्रीगणाधिपः । वरदः सुमुखश्चैव दूर्वापदैः प्रपूजयेत् २४ पदं दूर्वाश्च तथा दद्यान्महापूजां प्रकल्पयेत् । एवं कुरु महेशानप्रीत्यर्थमभिवांछितम् २५ तथेत्युक्त्वा चित्रनेमिः प्रीणयित्वा विनायकम् । शापान्मुक्तस्ततः शंभुमभ्यगात्महसन्निव २६ शंकरेण ततः पृष्टश्चित्रनेमिस्तथा जगौ । व्रतं श्रुत्वा ततः शंभुर्गणेशस्य कुतूहलात् २७ गौरीकोपप्रसादाय शिवो ऽपि कृतवानथ । सा ऽपि देवी शिवेनोक्तं चक्रे व्रतमनुत्तमम् २८ कार्तिकेयो ऽपि मात्रोक्तः स्वसख्युर्दर्शनेच्छया । व्रतं चकार नदी च कार्तिकेयोक्तमादरात् २९ सो ऽपि राजा प्रसादाय पुत्रार्थी च चकार ह । ततः क्रमेण लोके ऽस्मिन्प्रचुरीभूतमुत्तमम् ३० व्रतं दूर्वागणेशस्य सर्वसिद्धिकरं परम् । शोकव्याधिभयोद्वेगवधव्यसनदुःखतः ३१ विमुक्तः पुत्रपौत्रादिधनधान्यसमावृतः । इहलोके सुखी भूत्वा पश्चाच्छिवपुरं व्रजेत् ३२ व्रतेनानेन दूर्वास्यविघ्नेशस्य प्रसादतः । यः पठेत्परया भक्त्या कथामेतां दिने दिने ३३ शृणुयाद्वा ऽपि सततं सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ३४ ॥ इति स्कंदपुराणे दूर्वागणपतिव्रतोद्यापनम् ॥ ॥ अथ भाद्रपदशुक्लचतुर्थ्यां सिद्धिविनायकव्रतं हेमाद्रौ स्कांदे ॥ तच्च मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यम् । प्रातः शुक्लतिलैः स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेन्नृप । पार्थिवस्य गणेशस्य तत्रैव पूजनं चरेदिति वचनात् ॥ दिनद्वये तद्व्याप्तावेकदेशव्याप्तौ वा पूर्वा ऽन्यथा परा ॥ चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते । मध्याह्नव्यापिनी सा तु परतश्चेत्परे ऽहनि –इति बृहस्पत्युक्तेः ॥ अथ व्रतविधिः ॥ मासपक्षाद्युल्लि

प० । गुहाग्रजाय० अपामार्गप० । एकदंताय० बृहतीप० । विकटाय० करवीरप० । कपिलाय० अर्कप० । गजदंताय० अर्जुनप० ।
विघ्नराजाय० विष्णुक्रांतप० । वटवे० दाडिमीप० । सुराग्रजाय० देवदारुप० । भालचंद्राय० मरुप० । हेरंबाय० अश्वत्थप० । चतु-
र्भुजाय० जातीप० । विनायकाय० केतकीप० । सर्वेश्वराय० अगस्तिप० । २१ ॥ दशांगं गुग्गुलं धूपं सुगंधं च मनोहरम् । गृहाण
सर्वदेवेश उमापुत्र नमो ऽस्तु ते । ॐ यत्पुरुषं० । धूपम् ॥ सर्वज्ञ सर्वलोकेश त्रैलोक्यतिमिरापह । गृहाण मंगलं दीपं रुद्रप्रिय नमो
ऽस्तु ते । ॐ ब्राह्मणोऽस्य० । दीपम् ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देव० । नानाखाद्यमयं दिव्यं तुष्ट्यर्थं ते निवेदितम् । मया भक्त्या शिवापुत्र गृ-
हाण गणनायक । ॐ चंद्रमामन० । नैवेद्यम् ॥ एलोशीरलवंगादिकर्पूरपरिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं, तोयं, गृहाण गणनायक । मध्ये-
पा० ॥ उत्तरापो० ॥ मुखप्रक्षा० ॥ मलयाचलसंभूतं कर्पूरेण समन्वितम् । करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते । करोद्वर्तनम् ॥ बी-
जपूराम्रपनसखर्जूरीकदलीफलम् । नारीकेलफलं दिव्यं गृहाण गणनायक । इदं फलं मया० । फलम् ॥ एकविंशतिसंख्याकान्मोदकान्घृ-
तपाचितान् । नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने । गणेशाय० मोदकार्पणं० ॥ पूगीफलमिति तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् ॥ व-
ज्रमाणिक्यवैडूर्यमुक्ताविद्रुममंडितम् । पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् । भूषणानि ॥ दूर्वायुग्मं गृहाणेदं गंधपुष्पाक्षतैर्युतम् । पू-
जयेत्सिद्धिविघ्नेशं प्रत्येकं पूर्वनामभिः । गणाधिप नमस्ते ऽस्तु उमापुत्राघनाशन । एकदंतेभवक्त्रेति तथा मूषकवाहन १ विनायकेशपु-
त्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक । कुमारगुरवे तुभ्यं पूजनीयः प्रयत्नतः २ - इति दूर्वार्पणम् ॥ चंद्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव
सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृ० । नीराजनम् ॥ विघ्नेश्वर विशालाक्ष सर्वाभीष्टफलप्रद । प्रदक्षिणां करोमि त्वां सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे । ॐना-

निवे। ॐ त्रिपादूर्ध्व०। अर्घ्यम् ॥ दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाहृतम्। गृहाण सर्वलोकेश गणनाथ नमोऽस्तु ते। मधुपर्कम् ॥ विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवंदित। गंगोदकेन तोयेन शीघ्रमाचमनं कुरु। ॐ तस्माद्वि०। आचमनम् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्। पंचामृतेन स्नपनात्प्रीयतां गणनायक। पंचामृतस्नानम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम् ॥ भक्त्या समर्पितं तुभ्यं गृह्यताभीष्टदायक। ॐ यत्पुरुषेण०। स्नानम् ॥ रक्तवस्त्रद्वयं देव दिव्यं कांचनसंभवम्। सर्वप्रद गृहाणेदं लंबोदर हरात्मज। ॐ तंयज्ञं०। वस्त्रम् ॥ राजतं ब्रह्मसूत्रं च कांचनं चोत्तरीयकम्। गृहाण चारु सर्वज्ञ भक्तानां वरदो भव। ॐ तस्माद्य०। यज्ञोपवीतम् ॥ उद्यद्भास्करसंकाशं संध्यावदरुण प्रभो। वीरालंकरणं दिव्यं सिंदूरं प्रतिगृह्यताम्। सिंदूरम् ॥ नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोज्ज्वलानि च। भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनंदन। आभरणानि ॥ कस्तूरी चंदनं चैव कुंकुमेन समन्वितम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋ०। गंधम् ॥ रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन। ललाटपटले चंद्रस्तस्योपर्यवधार्यताम्। अक्षतान्। माल्यादीनि० करवीरजाति० ॐ तस्मादश्वा०। पुष्पाणि ॥ अथांगपूजा ॥ गणेश्वरायनमः पादौपूजयामि। विघ्नराजाय० जानुनीपू०। आखुवाहनाय० ऊरू०। हेरंबाय० कटी०। कामारिसूनवे० नाभिं०। लंबोदराय० उदरं०। गौरीसुताय० स्तनौ०। गणनायकाय० हृदयं०। स्थूलकर्णाय० कंठं०। स्कंदाग्रजाय० स्कंधौ०। पाशहस्ताय० हस्तौ०। गजवक्त्राय० वक्त्रं०। विघ्नहर्त्रे० ललाटं०। सर्वेश्वराय० शिरः०। गणाधिपाय० सर्वांगंपू० ॥ अथ पत्रपूजा। सुमुखाय० मालतीपत्रम्। गणाधिपाय० भृंगराजप०। उमापुत्राय० बिल्वप०। गजाननाय० श्वेतदूर्वाप०। लंबोदराय० बदरीप०। हरसूनवे० धत्तूरप०। गजकर्णकाय० तुलसीप०। वक्रतुंडाय० शमी-

जयेन्नृप । यदा चोद्भवते भक्तिस्तदा पूज्यो गणाधिपः १० प्रातः शुक्लतिलैः स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेन्नृप । निष्कमात्रसुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः ११ स्वशक्त्या गणनाथस्य स्वर्णरौप्यमयाकृतिम् । अथवा मृण्मयीं कुर्याद्वित्तशाठ्यं न कारयेत् १२ एकदंतं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् । पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम् १३ ध्यात्वा चानेन मंत्रेण स्नाप्य पंचामृतैः पृथक् । गणाध्यक्षेति नाम्ना वै गंधं दद्याच्च भक्तितः १४ आवाहनार्घ्यं पाद्यं च दत्त्वा पश्चात्प्रयत्नतः । रक्तं सर्वप्रदे वस्त्रयुग्मं दद्याच्च भक्तितः १५ विनायकेति पुष्पाणि धूपं चोमासुताय च । दीपं रुद्रप्रियायेति नैवेद्यं विघ्ननाशिने १६ किंचित्सुवर्णपूजां च तांबूलं च समर्पयेत् । ततो दूर्वांकुरान्गृह्य विंशतिं चैकमेव हि १७ पूजनीयः प्रयत्नेन एभिर्नामपदैः सह । गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन १८ विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक। एकदंतेभवक्त्रेति तथा मूषकवाहन १९ कुमारगुरवे तुभ्यं पूजनीयः प्रयत्नतः । दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गंधपुष्पाक्षतैर्युतम् २० एकैकेन तु नाम्ना वै दत्त्वैकं सर्वनामभिः । अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान्घृतपाचितान् २१ स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनंदन । दश विप्राय दातव्याः स्वयं ग्राह्यास्तथा दश २२ एकं गणाधिपे दद्यात्सनैवेद्यं नृपोत्तमम् । विनायकस्य प्रतिमां ब्राह्मणाय निवेदयेत् २३ विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम् । तुभ्यं संप्रददे देव प्रीयतां मे गजाननः २४ विनायक गणेश त्वं सर्वदेवनमस्कृत । पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नं विनाशय २५ गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च । गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः २६ कृत्वा नैमित्तिकं कर्म पूजयेदिष्टदेवताम् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्भुञ्जीयात्तैलवर्जितम् २७ एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने । विजयस्ते भवेन्नूनं सत्यं सत्यं मयोदितम् २८ वैष्णवाद्यासु दीक्षासु आदौ पूज्यो गणाधिपः । तस्मिन्संपूजिते विष्णुरीशो भानुस्तथा ह्युमा २९ हव्यवाहमुखा देवाः

म्याआसी० मदक्षिणाम् ॥ नमस्ते विघ्नसंहर्त्रे नमस्ते ईप्सितप्रद । नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक । ॐसप्तास्यासन्परि० । नमस्कारा
न् ॥ विनायकेशपुत्रेति गणराज सुरोत्तम । देहि मे सकलान्कामान्वदे सिद्धिविनायक । ॐयज्ञेनय० । मंत्रपुष्पाञ्जलिम् ॥ विनायक ग
णेशान सर्वदेवनमस्कृत । पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नं विनाशय –इति प्रार्थना ॥ अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान्घृतपाचितान् ।
स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनंदन ॥ दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद्दश आत्मनि । एकं गणाधिपे दद्यात्सघृतं मोदकं शुभम् ॥ द-
शानां मोदकानां च फलदक्षिणया युतम् । विप्राय फलतुष्ट्यर्थं वायनं ते ददाम्यहम् –इति वायनमंत्रः ॥ विनायकस्य प्रतिमा वस्त्रयुग्मे
न वेष्टिताम् । तुभ्यं संप्रददे विप्र प्रीयतां मे गजाननः ॥ गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च ॥ गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय न
मो नमः –इति प्रतिमादानमंत्रः ॥ ॥ अथ कथा ॥ शौनकाद्या ऋषिगणा नैमिषारण्यवासिनः । सूतं पौराणिकं श्रेष्ठमिदमूचुर्वचस्तदा १ ऋ-
षय ऊचुः । निर्विघ्नेन तु कार्याणि कथं सिद्ध्यंति सूतज । अर्थसिद्धिः कथं नृणां पुत्रसौभाग्यसंपदः २ दंपत्योः कलहे चैव बंधुभेदे त
था नृणाम् । उदासीनेषु लोकेषु कथं सुमुखता भवेत् ३ विद्यारंभे तथा नृणां वाणिज्ये च कृषौ तथा। नृपतेः परचक्रे च जयसिद्धिः कथं
भवेत् ४ कां देवतां नमस्कृत्य कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम् । एतत्समस्तं विस्तार्य ब्रूहि नः सूत पृच्छताम् ५ सूत उवाच । सन्नद्धयोः पुरा
विप्राः कुरुपांडवसेनयोः । पृष्टवान्देवकीपुत्रं कुंतीपुत्रो युधिष्ठिरः ६ युधिष्ठिर उवाच । निर्विघ्नेन जयं मह्यं वद त्वं देवकीसुत । कां दे-
वतां नमस्कृत्य सम्यक् राज्यं लभेमहि ७ कृष्ण उवाच । पूजयस्व गणाध्यक्षमुमामलसमुद्भवम् । तस्मिन्संपूजिते वीर ध्रुवं राज्यमवा-
प्स्यसि ८ मासि भाद्रपदे शुक्ले चतुर्थ्यां पूजयेन्नृप । मासि माघे श्रावणे वा मार्गशीर्षे तथा भवेत् ९ गजचक्रे तु शुक्लायां चतुर्थ्यां पू-

स्त्रीणां चैव शताधिकम् ११ भवनानि मनोज्ञानि तेषां मध्ये व्यकल्पयत् । पारिजाततरुं मध्ये तासां भोगाय कल्पयत् १२ यादवानां
गृहास्तत्र षट्पंचाशद्धि कोटयः । अन्ये ऽपि बहवो लोका वसंति विगतज्वराः १३ यत्किञ्चित्रिषु लोकेषु सुंदरं तत्र दृश्यते । सत्राजित-
प्रसेनाख्यौ पुत्रावुग्रस्य विश्रुतौ १४ अंभोधितीरमासाद्य तन्मनस्कतया च सः । सत्राजितस्तपस्तेपे सूर्यमुद्दिश्य बुद्धिमान् १५ व्रतं नि-
रशनं गृह्य सूर्यसंबद्धलोचनः । ततः प्रसन्नो भगवान्सत्राजितपुरःस्थितः १६ सत्राजितो ऽपि तुष्टाव दृष्ट्वा देवं दिवाकरम् । तेजोराशे नम-
स्ते ऽस्तु नमस्ते सर्वतोमुख १७ विश्वव्यापिन्नमस्ते ऽस्तु हरिदश्व नमो ऽस्तु ते । ग्रहराज नमस्ते ऽस्तु नमस्ते चंडरोचिषे १८ वेदत्रय न-
मस्ते ऽस्तु सर्वदेव नमो ऽस्तु ते । प्रसीद पाहि देवेश सुदृष्ट्या मां दिवाकर १९ इत्थं संस्तूयमानो ऽसौ देवदेवो दिवाकरः । स्निग्धगंभी-
रमधुरं सत्राजितमुवाच ह २० सूर्य उवाच । वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते । सत्राजित महाभाग तुष्टो ऽहं तव निश्चयात् २१
सत्राजित उवाच । स्यमंतकमणिं देहि यदि तुष्टो ऽसि भास्कर । ददौ तस्य च तद्रत्नं स्वकंठादवतार्य सः २२ भास्कर उवाच । भारा-
ष्टकं शातकुंभं स्रवते ऽसौ महामणिः । शुचिष्मता सदा धार्यं रत्नमेतन्महोत्तमम् २३ सत्राजित क्षणं नैतद्धंति ह्यंशुमानसम्[1] । इत्युक्त्वां-
ऽतर्दधे देवस्तेजोराशिर्दिवाकरः २४ तत्कंठरत्नज्वलमानरूपी पुरीं स कृष्णस्य विवेश सत्वरम् । दृष्ट्वा तु लोका मनसा दिवाकरं संचित-
यंतो ह विनष्टदृष्टयः २५ समागतो ऽयं हरिदश्वदीधितिर्जनार्दनं द्रष्टुमसंशयेन ॥ श्रीकृष्ण उवाच । नायं सहस्रांशुरितीह लोकाः सत्रा-
जितो ऽयं मणिकंठभास्वान् २६ स्यमंतकं महारत्नं दृष्ट्वा तत्कंठमंडले । स्पृहां चक्रे जगन्नाथो न जहार मणिं ततः २७ सत्राजितो जात-

१ अशुचिं हति मानवमिति पा.ठ. ।

पूजिताः स्युर्न संशयः । चण्डिकाद्या मातृगणाः परितुष्टा भवंति च २० तस्मिन्संपूजिते विप्रा भक्त्या सिद्धिविनायके २१ य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः । सिद्ध्यंति सर्वकार्याणि विनायकप्रसादतः २२ ॥ इति सिद्धिविनायकव्रतं भविष्योक्तं संपूर्णम् ॥ ॥ मासि भाद्रपदे शुक्ले शिवलोके प्रपूजिता ॥ तस्यां स्नानं तथा दानमुपवासोऽर्चनं तथा ॥ क्रियमाणं शतगुणं प्रसादाद्दंतिनो नृप । चतुर्थीत्यनुषंगः ॥ अस्यामेव चन्द्रदर्शने दोषमाह, पराशरः—कन्यादित्ये चतुर्थ्यां च शुक्ले चन्द्रस्य दर्शनम् ॥ मिथ्याभिदूषणं कुर्यात्तस्मात्पश्येन्न तं सदा ॥ तद्दोषशांतये जाप्यं विष्णुनोक्तं च मन्त्रकम् ॥ सिंहः प्रसेनमवधीत्सिंहो जांबवता हतः । सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमंतकः ॥ ॥ अथ स्यमंतकोपाख्यानम् ॥ नंदिकेश्वर उवाच । शृणुष्वेकाग्रचित्तः सन् व्रतं गाणेश्वरं महत् । चतुर्थ्यां शुक्लपक्षे तु सदा कार्यं प्रयत्नतः १ सनत्कुमार योगींद्र यदीच्छेच्छुभमात्मनः । नारी वा पुरुषो वाऽपि यः कुर्याद्विधिवद्व्रतम् २ मोचयत्याशु विघ्नेंद्र संकष्टाद्व्रतिनं नरम् । अपवादहरं चैव सर्वविघ्नप्रणाशनम् ३ कांतारे विषमे वाऽपि रणे राजकुले ऽथवा । सर्वसिद्धिकरं विद्धि व्रतानामुत्तमं व्रतम् ४ गजाननप्रियं चाथ त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् । अतो न विद्यते ब्रह्मन् सर्वसंकष्टनाशनम् ५ सनत्कुमार उवाच । केन चादौ पुरा चीर्णं मर्त्यलोके कथं गतम् । एतत्समस्तं विस्तार्य ब्रूहि गाणेश्वरं व्रतम् ६ नंदिकेश्वर उवाच । चक्रे व्रतं जगन्नाथो वासुदेवः प्रतापवान् । आदिष्टो नारदेनैव वृथालांछनमुक्तये ७ सनत्कुमार उवाच । षड्गुणैश्वर्यसंपन्नः सृष्टिसंहारकारकः । वासुदेवो जगद्व्यापी प्राप्तवान् लांछनं कथम् ८ एतदाश्चर्यमाख्यानं ब्रूहि त्वं नंदिकेश्वर ॥ नंदिकेश्वर उवाच । भूमिभारनिवृत्त्यर्थं वसुदेवसुतावुभौ ९ रामकृष्णौ समुत्पन्नौ पन्नगनामफणीश्वरौ । जरासंधभयात्कृष्णो द्वारकां समकल्पयत् १० विश्वकर्माणमाहूय पुरीं हाटकनिर्मिताम् । तत्र षोडश साहस्रं

ऽहं देवेश देवस्त्वमसि निश्चितम् ४६ जाने त्वा वैष्णवं तेजो नान्यथा बलमीदृशम् । इति प्रसाद्य देवेशं ददौ माणिक्यमुत्तमम् ४७
सुतां जांबवतीं नाम भार्यार्थे वरवर्णिनीम् । पाणिं वै ग्राहयामास देवदेवं च जांबवान् ४८ मणिमादाय देवोऽपि जांबवत्यापि संयुतः ।
तद्वृत्तांतं समाचष्टे द्वारकावासिनां स्वयम् ४९ सत्राजितस्य माणिक्यं दत्तवान्संसदिस्थितः । मिथ्यापवादसंशुद्धिं प्राप्तवान्मधुसूदनः ५०
सत्राजितोपि संत्रस्तः कृष्णाय प्रददौ सुताम् । सत्यभामां महाबुद्धिर्ददौ सर्वगुणान्विताम् ५१ शतधन्वाऽक्रूरमुखा यादवा दुष्टमानसाः ।
सत्राजितेन ते वैरं चक्रू रत्नाभिलाषिणः ५२ दुरात्मा शतधन्वा ऽपि गते कृष्णे च पांडवान्[१] । सत्राजितं निहत्याशु मणिं जग्राह पापधीः
५३ कृष्णस्य पुरतः सत्या समाचष्टे विचेष्टितम् । अंतर्हृष्टो बहिः कोपी कृष्णः कपटिनायकः ५४ बलदेवपुरो वाक्यमुवाच धरणीध-
रः । हत्वा सत्राजितं दुष्टो मणिमादाय गच्छति ५५ निहत्य शतधन्वानं गृहीत्वा रत्नमावयोः । मम भोग्यं च तद्रत्नं भविष्यति सुनि-
श्चितम् ५६ एतच्छ्रुत्वा भयात्रस्तः शतधन्वापि यादवः । आहूयाक्रूरनामानं माणिक्यं प्रददौ च सः ५७ आरुह्य वडवां[२] वेगान्निर्गतो द-
क्षिणां दिशम् । रथस्थावनुगच्छेतां तदा रामजनार्दनौ ५८ शतयोजनमात्रेण ममार वडवा तदा । पलायमानो निहतः कृष्णेन च पदा-
तिना[३] ५९ रथस्थे बलदेवे तु हरिणा रत्नलोभिना । न दृष्टं तत्र तद्रत्नं बलदेवपुरो ऽवदत्[४] ६० तदाकर्ण्य महारोषादुवाच वचनं बली । क
पटी त्वं सदा कृष्ण लोभी पापी सुनिश्चितम् ६१ अर्थाय स्वजनं हंसि कस्त्वां बंधुं समाश्रयेत् । अनेकशपथैः कृष्णो बलदेवं प्रसादयत्
६२ सो ऽपि धिक्कष्टमित्युक्त्वा ययौ वैदर्भमंडलम् । कृष्णोपि रथमारुह्य द्वारकां प्रययौ पुनः ६३ तथैवोचुर्जनाः सर्वे न साधीयानयं हरिः ।

१ पाण्डवानित्यत्र कुत्रचिदिति पाठः । २ वाडवां अश्वाम् । ३ पदातिस्तु पदातिनेत्यपरः पाठः । ४ रत्नं न दृष्टमित्येव कृष्णो बलदेवास्याग्रे ऽवददित्यर्थः ।

भयो याचयिष्यति मां हरिः । प्रसेनाय ददौ भ्रात्रे धार्यो ऽयं शुचिना त्वया २८ एकदा कण्ठदेशे ऽसौ क्षिप्त्वा तं मणिमुत्तमम् । मृगया,
क्रीडनार्थाय ययौ कृष्णेन संयुतः २९ अश्वारूढो ऽशुचिर्भासौ हतः सिंहेन तत्क्षणात् । रत्नमादाय सिंहोऽपि गच्छन् जांबवता हतः ३०
नीला स विवरे रत्नं ददौ पुत्राय जांबवान् । पुरीं विवेश कृष्णो ऽपि स्वकैः सर्वैः समावृतः ३१ प्रसेनोऽद्यापि नायाति हतः कृष्णेन
निश्चितम् । मणिलोभेन हा कष्टं बांधवः पापिना हतः ३२ द्वारकावासिनः सर्वे जना ऊचुः परस्परम् । श्रुत्वापवादसतस्तः कृष्णो ऽपि
निरगाच्छनैः ३३ सहैव तैर्यथा ऽरण्ये दृष्ट्वा सिंहेन पातितम् । प्रसेनं वाहनयुतं तत्पदानुचराः शनैः ३४ ऋक्षेण निहतं दृष्ट्वा कृष्णश्चर्क्ष
विलं गतः । विवेश योजनशतमधकारं स्वतेजसा ३५ निवारयन्ददर्शाग्रे प्रासादं बद्धभूमिकम् । तं कुमारं जांबवतो दोलायामसितद्यु-
तिम् ३६ माणिक्यं लम्बमानं च ददर्श भगवान्हरिः । रूपयौवनसंपन्नां कन्यां जांबवतीं पुनः ३७ दोलां दोलयमानां च ददर्श कम
लेक्षणः । महांतं विस्मयं चक्रे दृष्ट्वा तां चारुहासिनीम् । दोलां दोलयमानां च जगौ गीतमिदं मुहुः ३८ सिंहः प्रसेनमवधीत्सिंहो जां-
बवता हतः । सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येषः स्यमंतकः ३९ मदनज्वरदाहार्ता दृष्ट्वा तं कमलेक्षणम् ॥ उवाच ललितं बाला गम्यतां ग-
म्यतामिति ४० रत्नं गृहीत्वा वेगेन यावच्छेते तु जांबवान् । इत्याकर्ण्य वचः शौरिः शंखं दध्मौ प्रतापवान् ४१ आकर्ण्य सहसोत्था-
य युयुधे ऋक्षराट् ततः । तयोर्युद्धमभूद्घोरं हरिजांबवतोस्तदा ४२ द्वारकावासिनः सर्वे गतास्ते सप्तमे दिने । मृतः कृष्णो निरीक्षतो
निःसंदिग्धं विचार्य च ४३ परलोकक्रियां चक्रुः परेतस्य तु ते तदा । एकविंशद्दिनं यावद्बाहुप्रहरणो विभुः ४४ युयुधे तेन ऋक्षेण युद्ध
कर्मणि तोषितः । जांबवान् प्राक्तनं स्मृत्वा दृष्ट्वा देववरं महत ४५ जांबवानमाह ।

ऽहं देवेश देवस्त्वमसि निश्चितम् ४६ जाने त्वा वैष्णवं तेजो नान्यथा बलमीदृशम् । इति प्रसाद्य देवेशं ददौ माणिक्यमुत्तमम् ४७
सुतां जांबवतीं नाम भार्यार्थे वरवर्णिनीम् । पाणिं वै ग्राहयामास देवदेवं च जांबवान् ४८ मणिमादाय देवोऽपि जांबवत्यापि संयुतः ।
तद्वृत्तांतं समाचष्टे द्वारकावासिनां स्वयम् ४९ सत्राजितस्य माणिक्यं दत्तवान्संसदिस्थितः । मिथ्यापवादसंशुद्धिं प्राप्तवान्मधुसूदनः ५०
सत्राजितोपि संत्रस्तः कृष्णाय प्रददौ सुताम् । सत्यभामां महाबुद्धिर्ददौ सर्वगुणान्विताम् ५१ शतधन्वाऽक्रूरमुखा यादवा दुष्टमानसाः ।
सत्राजितेन ते वैरं चक्रू रत्नाभिलाषिणः ५२ दुरात्मा शतधन्वा ऽपि गते कृष्णे च पांडवान्[१] । सत्राजितं निहत्याशु मणिं जग्राह पापधीः
५३ कृष्णस्य पुरतः सत्या समाचष्टे विचेष्टितम् । अंतर्हृष्टो बहिः कोपी कृष्णः कपटिनायकः ५४ बलदेवपुरो वाक्यमुवाच धरणीध-
रः । हत्वा सत्राजितं दुष्टा मणिमादाय गच्छति ५५ निहत्य शतधन्वानं गृहीत्वा रत्नमावयोः । मम भोग्यं च तद्रत्नं भविष्यति सुनि-
श्चितम् ५६ एतच्छ्रुत्वा भयात्रस्तः शतधन्वापि यादवः । आहूयाक्रूरनामानं माणिक्यं प्रददौ च सः ५७ आरुह्य वडवां[२] वेगान्निर्गतो द-
क्षिणां दिशम् । रथस्थावनुगच्छेतां तदा रामजनार्दनौ ५८ शतयोजनमात्रेण ममार वडवा तदा । पलायमानो निहतः कृष्णेन च पदा-
तिना[३] ५९ रथस्थे बलदेवे तु हरिणा रत्नलोभिना । न दृष्टं तत्र तद्रत्नं बलदेवपुरो ऽवदत्[४] ६० तदाकर्ण्य महारोषादुवाच वचनं बली । क
पटी त्वं सदा कृष्ण लोभी पापी सुनिश्चितम् ६१ अर्थाय स्वजनं हंसि कस्त्वां बंधुं समाश्रयेत् । अनेकशपथैः कृष्णो बलदेवं प्रसादयत्
६२ सो ऽपि धिक्कष्टमित्युक्त्वा ययौ वैदर्भमंडलम् । कृष्णोपि रथमारुह्य द्वारकां प्रययौ पुनः ६३ तथैवोचुर्जनाः सर्वे न साधीयानयं हरिः ।

१ पाण्डवानित्यत्र कुत्रचिदिति पाठः । २ वाडवां अश्वाम् । ३ पदातिस्तु पदातिनेत्यपरः पाठः । ४ रत्नं न दृष्टमित्येव कृष्णो बलदेवस्याग्रे ऽवददित्यर्थः ।

निष्कासितो रत्नलोभाच्येशो भ्राता बलो बली ६४ तच्छ्रुत्वा दीनवदनः पापीयानिव संस्थितः । वृथाभिशापात्ततो बभूव स
जगत्पतिः ६५ अक्रूरोपि विनिष्क्रम्य तीर्थयात्रानिमित्ततः । काशीं गत्वा सुसेनासौ यजन्यज्ञपतिं प्रभुम् ६६ तोषमुत्पादयामास तेन द्र-
व्येण बुद्धिमान् । सुराळयगृहैश्चित्रैर्नगरं समकल्पयत् ६७ न दुर्भिक्ष न वै रोगा ईतयो न च विड्वरम् । शुचिना धार्यते तत्र मणिः सूर्यस्य
निश्चितम् ६८ जानन्नपि हि तत्सर्वं मानुषं भावमाश्रितः । लोकाचारं तथा मायामज्ञानं च समाश्रितः ६९ वैधुर्वैरं समुत्पन्नं लांछनं स-
मुपस्थितम् । वृथापवादमतुलं जायमानं कथं सहे ७० इति चिंतातुरं कृष्णं नारदः समुपस्थितः । गृहीत्वा तत्कृतां पूजां सुखासन-
गतो ऽब्रवीत् ७१ नारद उवाच । किमर्थं खिद्यसे देव किं वा ते शोककारणम् । यथावृत्तं समाचष्टे नारदाय च केशव ७२ जानामि
कारणं देव यदर्थं लांछनं तव । त्वया भाद्रपदे शुक्ले चतुर्थ्यां चंद्रदर्शनम् । कृतं तेन समुत्पन्नं लांछनं तु वृथैव हि ७३ श्रीकृष्ण उवा-
च । वद नारद मे शीघ्रं को दोषश्चंद्रदर्शने । किमर्थं तु द्वितीयायां तस्य कुर्वंति दर्शनम् ७४ नारद उवाच । गणनाथेन सशप्तश्चंद्रमा रू-
पगर्वतः । तद्दर्शने नराणां हि वृथा निंदा भविष्यति ७५ श्रीकृष्ण उवाच । किमर्थं गणनाथेन शप्तश्चंद्रः सुधामयः । इदमाख्यानकं श्रे-
ष्ठ यथावद्वक्तुमर्हसि ७६ नारद उवाच । गणनामाधिपत्ये च रुद्रेण विहितः पुरा ७७ अणिमा महिमा चैव लघिमा गरिमा तथा । प्रा-
प्तिः प्राकाम्यमीशत्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ७८ भार्यार्थं प्रददौ देवो गणेशस्य प्रजापतिः । पूजयित्वा गणाध्यक्षं स्तुतिं कर्तुं प्रचक्रमे ७९
ब्रह्मोवाच । गजवक्त्र गणाध्यक्ष लंबोदर वरप्रद । विघ्नराजाधिदेवेश सृष्टिसंहारकारक ८० संपूजयेद्गणाध्यक्षं मोदकाद्यैः प्रयत्नतः । तस्य
प्रजायते सिद्धिर्निर्विघ्नेन न संशयः ८१ असंपूज्य गणाध्यक्षं ये वांछंति सुरासुराः । न तेषां जायते सिद्धिः कल्पकोटिशतैरपि ८२ त्वद्भ

त्त्या तु गणाध्यक्ष विष्णुः पालयते सदा। रुद्रो ऽपि संहरत्याशु त्वद्भक्त्यैव करोम्यहम् ८३ इत्थं संस्तूयमानो ऽसौ देवदेवो गजाननः। उवाच परमप्रीतो ब्रह्माणं जगतां पतिम् ८४ श्रीगणेश उवाच। वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते ॥ ब्रह्मोवाच। क्रियमाणस्य मे सृष्टिर्निर्विघ्नं जायतां प्रभो ८५ एवमस्त्विति देवो ऽसौ गृहीत्वा मोदकान्करे। सत्यलोकात्समागत्य स्वेच्छया गगने शनैः ८६ चंद्रलोकं समासाद्य चलितो गणनायकः। उपहासं तदा चक्रे सोमो रूपमदान्वितः ८७ तं दृष्ट्वा कोपताम्राक्षो गणनाथः शशाप ह। दर्शनीयः सुरूपो ऽहं सुंदरश्चाहमित्यथ ८८ गर्वितो ऽसि शशांक त्वं फलं प्राप्स्यसि सत्वरम्। अद्यप्रभृति लोकास्त्वां नहि पश्यंति पापिनम् ८९ ये पश्यंति प्रमादेन त्वां नरा मृगलांछनम्। मिथ्याभिशापसंयुक्ता भविष्यंतीह ते ध्रुवम् ९० हाहाकारो महाञ्जातः श्रुत्वा शापं च भीषणम्। अत्यंतम्लानवदनश्चंद्रो जलमथाविशत् ९१ कुमुदं कौमुदीनाथः स्थितस्तत्र कृतालयः। ततो देवर्षिगंधर्वा निराशोद्विग्नमानसाः ९२ तुराषाहं पुरोधाय जग्मुस्ते तं पितामहम्। देवं शशंसुश्चंद्रस्य गणेशस्य च चेष्टितम् ९३ दत्तः शापो गणेशेन कथयामासुरादरात्। विचार्य भगवान्ब्रह्मा तान्सुरानिदमब्रवीत् ९४ गणेशशापो देवेंद्र शक्यते केन वा ऽन्यथा। कर्तुं रुद्रेण न मया विष्णुना चापि निश्चितम् ९५ तमेव देवदेवेशं व्रजध्वं शरणं सुराः। स एव शापमोक्षं च करिष्यति न संशयः ९६ देवा ऊचुः। केनोपायेन वरदो गजवक्त्रो गणेश्वरः। पितामह महाप्राज्ञ तदस्माकं वद प्रभो ९७ पितामह उवाच। चतुर्थ्यां देवदेवो ऽसौ पूजनीयः सदैव हि। कृष्णपक्षे विशेषेण नक्तं कुर्याच्च तद्व्रतम् ९८ अपूपैर्घृतसंयुक्तैर्मोदकैः परितोषयेत्। मधुरान्नं हविष्यं च स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः ९९ स्वर्णरूपं गणेशस्य दातव्यं द्विजसत्तमे। शक्त्या च दक्षिणां दद्याद्वित्तशाठ्यं न कारयेत् १०० एवं समेतैस्तैः सर्वैर्गीष्पतिः प्रेषितस्तदा। स गत्वा कथयामास चंद्राय ब्र-

ब्रह्मणोदितम् १ व्रत चक्रे ततश्चंद्रो यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा। आविर्बभूव भगवान्गणेशो व्रततोषितः २ तं क्रीडमान गणनायकं च तुष्टाव दृष्ट्वा तु कलानिधानः। त्वं कारणं कारणकारणानां वेत्ताऽसि वेद्य च विभो प्रसीद ३ प्रसीद देवेश जगन्निवास गणेश लंबोदर वक्रतुंड। विरिंचिनारायणपूज्यमान क्षमस्व मे गर्वकृतं च हास्यम् ४ ये त्वामसंपूज्य गणेश नूनं वाञ्छंति मूढाः सुकृतार्थसिद्धिम्। ते दैवनष्टा विश्रुत च लोके ज्ञातो मया ते सकलः प्रभावः ५ ये चाप्युदासीनतरास्तु पापास्ते यांति वासं नरके सदैव। हेरंब लंबोदर मे क्षमस्व दुश्चेष्टितं तत्करुणासमुद्र ६ एवं संस्तूयमानोऽसौ चंद्रेणाह गजाननः। तुष्टोऽहं तव दास्यामि वरं ब्रूहि निशाकर ७ चंद्र उवाच। लोकानां दर्शनीयोऽहं भवामि पुनरेव हि। विपापोऽहं विशापोऽहं त्वत्प्रसादाद्गणेश्वर ८ गणेश उवाच। वरमन्यत्प्रदास्यामि नैतद्देयं मया तव। ततो ब्रह्मादयः सर्वे समाजग्मुर्भयार्दिताः ९ विशापं कुरु देवेश प्रार्थयामो वयं तव॥नंदिकेश्वर उ०।विशापमकरोच्चंद्रं कमलासनगौरवात् १०ग०उ०। शुक्लपक्षे च। तुर्थ्यां तु ये पश्यंति सदैव हि। मिथ्यापवादमावर्षं प्राप्स्यतीह न संशयः ११ मासादौ पूर्वमेव त्वां ये पश्यंति सदा जनाः। भद्रायां शुक्लपक्षस्य तेषां दोषो न जायते १२ न०उ०। तदाप्रभृति लोकोऽयं द्वितीयायां कृतादरः। पुनरेव तु पप्रच्छ कलावान्गणनायकम् १३केनोपायेन देवेश तुष्टो भवसि सद्वद १४ गणेश उवाच। सदा कृष्णचतुर्थ्यां तु मोदकाद्यैः प्रपूज्य माम्। रोहिण्या सहितं त्वां च समभ्यर्च्य विधानतः १५ यथाशक्त्या च मद्रूपं स्वर्णेन परिकल्पितम्। दत्त्वा द्विजाय भुक्त्वाथ कथां श्रुत्वा विधानतः १६ सदा तस्य करिष्यामि संकटस्य निवारणम्। भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु मृण्मयी प्रतिमा शुभा १७ हेमाभावे तु कर्तव्या नानापुष्पैः प्रपूज्य माम्। ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाज्ज्ञाग

१ सर्वं च भयेषु सुकृतार्थो तपो सिद्धिरिति संज्ञा समास।

रं च विशेषतः १८ स्थापयेदव्रणं कुंभं धान्यस्योपरि शोभितम् । यथाशक्त्या च मद्रूपं शातकुंभेन निर्मितम् १९ वस्त्रद्वयसमाच्छन्नं मोदकाद्यैः प्रपूज्य माम् । रक्तांबरधरो मर्त्यो ब्रह्मचर्यव्रतः शुचिः १२० रोहिणीसहितं त्वां तु पूजयेत्स्थाप्य मत्पुरः । राजतस्य तु रूपं मे यथाशक्त्या विनिर्मितम् २१ वस्त्रं शिवप्रियायेति उपवस्त्रं गणाधिपे । गंधं लंबोदरायेति पुष्पं सिद्धिप्रदायके २२ धूपं गजमुखायेति दीपं मूषकवाहने । विघ्ननाथाय नैवेद्यं फलं सर्वार्थसिद्धिदे २३ तांबूलं कामरूपाय दक्षिणां धनदाय च । इक्षुदंडैर्मोदकैश्च होमं कुर्याच्च नामभिः २४ विसर्जनं ततः कुर्यात्सर्वसिद्धिप्रदायकम् । एवं संपूज्य विघ्नेशं कथां श्रुत्वा विधानतः । मंत्रेणानेन तत्सर्वं ब्राह्मणाय निवेदयेत् २५ दानेनानेन देवेश प्रीतो भव गणेश्वर । सर्वत्र सर्वदा देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा । मानोन्नतिं च राज्यं च पुत्रपौत्रान्प्रदेहि मे २६ गाश्च धान्यं च वासांसि दद्यात्सर्वं स्वशक्तितः २७ दत्त्वा तु ब्राह्मणं सर्वं स्वयं भुंजीत वाग्यतः । मोदकापूपमधुरं लवणं क्षारवर्जितम् २८ एवं करोति यश्चंद्र तस्याहं सर्वदा जयम् । सिद्धिं च धनधान्ये च ददामि विपुलां प्रजाम् २९ इत्युक्त्वांऽतर्दधे देवो विघ्नराजो विनायकः । तद्व्रतं कुरु कृष्ण त्वं ततः सिद्धिमवाप्स्यसि १३० नारदेनैवमुक्तश्च व्रतं चक्रे हरिः स्वयम् । मिथ्यापवादं निर्मृज्य ततः कृष्णो ऽभवच्छुचिः ३१ ये शृण्वंति तवाख्यानं स्यमंतकमणीयकम् । चंद्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते ३२ भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु कश्चिच्चंद्रस्य दर्शनम् । जातं तत्परिहारार्थं श्रोतव्यं सर्वमेव हि ३३ यदा यदा मनः कष्टं संदेह उपजायते । तदा तदा च श्रोतव्यमाख्यानं कष्टनाशनम् । एवमुक्त्वा गतो देवो गणेशः कृष्णतोषितः ३४ यदा यदा पश्यति कार्यमुत्थितं नारी नरश्चाथ करोति तद्व्रतम् । सिद्ध्यंति कार्याणि समीप्सितानि किं दुर्लभं विघ्नहरे प्रसन्ने ३५ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे नंदिकेश्वरसनत्कुमारसंवादे स्यमंतकोपाख्यानं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ कपर्दिविनायकव्रत-

म् ॥ ॥ श्रावणस्य सिते पक्षे चतुर्थ्यामेकभुग्व्रती ॥ व्रतं कुर्याद्गणेशस्य मासमेकं व्रतं चरेत् ॥ सर्वसिद्धिकरं नृणां सुखं चैव सुरेश्वर ॥ तद्विधिः–तिथ्यादि स्मृत्वा । मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं कपर्दिगणेशव्रतमहं करिष्ये । मूलमंत्रेण षडंगन्यासं कृत्वा पूजां समारभेत् ॥ तत्रादौ पीठपूजा ॥ ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुतानंतयोगपीठाय नमः । अष्टदलं कारयेत् । ॐ तीव्रायै० ज्वालिन्यै० नंदायै० नर्मदायै० कामरूपिण्यै० उग्रायै० तेजोवत्यै० सत्यायै० मध्ये, विघ्नविनाशिन्यै० ॥ अथ ध्यानम् ॥ एकदंतं महाकायं लंबोदरं गजाननम् । विघ्ननाशकरं देवं गणेशं प्रणमाम्यहम् । इमां पूजां गृहाणेश कपर्दिगणनायक । ध्यानम् ॥ आगच्छ इति त्रिवारं पठेत् ॥ विनायक नमस्तुभ्यमुमामलसमुद्भव । इमां मया कृतां पूजां प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् ॥ अलंकारसमायुक्तं मुक्तामणिविभूषितम् । स्वर्णसिंहासनं चारु प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । पुरुषएवेदमित्यासनम् ॥ गौरीसुत नमस्ते ऽस्तु शंकरप्रियकारक । भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण गणनायक । एतावानस्येति पाद्यम् ॥ व्रतमुद्दिश्य विघ्नेश गंधपुष्पादिसंयुतम् । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदायक । त्रिपादूर्ध्वइत्यर्घ्यम् ॥ गणाधिप नमस्तुभ्य गौरीसुत गजानन । गृहाणाचमनीयं त्वं सर्वसिद्धिप्रदायक ॥ तस्माद्विराळेत्याचमनीयम् ॥ अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणपरिपूजित । स्नानं पंचामृतं देव गृहाण गणनायक ॥ आप्यायस्वेति दुग्धम् । दधिक्राव्णोइति दधि । घृतमिमिक्षेइति घृतम् । मधुवातेति मधु । स्वादुः पवस्वेति शर्करा । इति पंचामृतस्नानम् ॥ गंगाजलं समानीतं हेमांभोरुहवासितम् । स्नाने स्वीकुरु विघ्नेश कपर्दिगणनायक । यत्पुरुषेणेति स्नानम् ॥ हरिद्रावद्वयं देव देवांगवसनोपमम् । भक्त्या दत्तं गृहाणेश लंबोदर हरात्मज । तयज्ञमिति वस्त्रम् ॥ नानालंकारसंयुक्तं नानारत्नविभूषितम् । अनेकदिव्याभरणं प्रीत्यर्थं प्रति० । आभरणानि ॥ राजतं ब्रह्मसू

त्रं च कांचनं चोत्तरीयकम् । भालचंद्र नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः समिति यज्ञोपवीतम् ॥ श्रीखंडं चंदनं ०।तस्माद्यज्ञा-
त्सर्वहुतऋचेति गंधम् ॥ अक्षतान्धवलान्देव सिद्धगंधर्वपूजित । भक्त्या दत्तान्गृहाणेमान्सर्वसिद्धिप्रदायक । अक्षतान् ॥ सुगंधीनि च पु-
ष्पाणि ऋद्धिसिद्धिप्रदायक । कपर्दिगणनाथेश श्वेतपुष्पं ददाम्यहम् । तस्मादश्वेति पुष्पम् ॥ अथांगपूजा ॥ कपर्दिगणनाथायन० पादौ-
पू० । गणेशाय० जानुनी० । गणनाथाय० ऊरू० । गणक्रीडाय० कटी० । वक्रतुंडाय० हृदयं० । लंबोदराय० कंठं० । गजाननाय०
स्कंधौ० । हेरंबाय० हस्तौ० । विकटाय० मुखं० । विघ्नराजाय० नेत्रे० । धूम्रवर्णाय० शिरः । कपर्दिनेन० सर्वांगंपू० ॥ अथावरणपू-
जा ॥ ईशानाय० अघोराय० तत्पुरुषाय० वामदेवाय० सद्योजाताय० इति प्रथमावरणम् १ । वक्रतुंडायन० एकदंताय० महोदराय० ग-
जाननाय० विकटाय० विघ्नराजाय० धूम्रवर्णाय० विनायकाय० इति द्वितीयावरणम् २ । ब्राह्म्यैन० माहेश्वर्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० वा-
राह्यै० इंद्राण्यै० चामुंडायै० महालक्ष्म्यै० इति तृतीयावरणम् ३ । इंद्रायन० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० सोमाय०
ईशानाय० । वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये, अनंताय० । इंद्रेशानयोर्मध्ये, ब्रह्मणेन० इति चतुर्थावरणम् ४ । वज्रायन० शक्तये० दंडाय० खड्गाय०
पाशाय० अंकुशाय० गदायै० त्रिशूलाय० चक्राय० अब्जाय० इति पंचमावरणम् ५ ॥ दशांगं गुग्गुलं धूपं चंदनागरुसंयुतम् । उमासु-
त नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव । यत्पुरुषमिति धूपम् ॥ गृहाण मंगलं देव घृतवर्तिसमन्वितम् । दीपं ज्ञानप्रदं चारु रुद्रप्रिय नमोऽस्तु
ते । ब्राह्मणोस्येति दीपम् ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देव० । चंद्रमामनसेति नैवेद्यम् ॥ आचमनीयम् ॥ इदंफलमिति फलम् ॥ पूगीफलमिति ता-
म्बूलम् ॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् ॥ अग्निर्ज्योती रविर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निर्विभावसुः । ज्योतिस्त्वं सर्वदेवानां गणाधिप नमोऽस्तु ते । नी-

राजनम् ॥ यानिकानिच० । नाभ्याआसीदिति प्रदक्षिणाम् ॥ नमो ऽस्त्वनताय० । सप्तास्यासन्निति नमस्कारम् ॥ गणाधिप नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु गजानन । लंबोदर नमस्तेऽस्तु नमस्ते त्वविकाछत । एकदंत नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु भवभिय । स्कंदाग्रज नमस्तेऽस्तु नमस्ते त्वीप्सितप्रद । कपर्दिगणनाथेश सर्वसंपत्प्रदायक । यज्ञेनयज्ञमिति मन्त्रपुष्पांजलिम् ॥ अथ ब्रह्मचारिपूजा ॥ आकणान्मुष्टिगणकान् विंशि-त्यष्टौ वराटकान् । विप्राय बटवे दद्यात्सवपुष्पार्चिताय च । तडुलान्वै ततो दद्यात्पाके घाले च शोभनान् । कपर्दिगणनाथो ऽसौ प्रीयतां तण्डुलैः सदा ॥ कथां श्रुत्वा विधानेन देवमुद्वासयेत्ततः ॥ इति कपर्दिगणपतिपूजा ॥ ॥ अथ कथा ॥ कदाचिदुपविष्टश्च पार्वत्या सह शं-करः । इति प्राह प्रियां तां किं द्यूतेच्छास्तिरस्ति ते ॥ दुरोदरमिषाज्जेतुं वाञ्छित प्रत्युवाच सा १ शिव उवाच । ममाप्यस्ति च सा ऽपेक्षा दी यते चेत्पणो मम । तव किं किमभीष्टं तु दास्यामि परमेश्वरि २ लोकत्रयं वा पृच्छस्व किमन्यैर्वचनैर्हृपा । पृच्छामि त्वां वचो देवि दातव्यं किं किमिच्छसि ३ विश्वासो येन जायेत तद्वदाथ शुभानने । वाक्यमेवं विध श्रुत्वा शर्वाणी च शिवांतिके ४ न विश्वासो ऽस्ति ते वाक्ये जित्वा दास्यसि मत्पणः । इति श्रुत्वा वचो देव्याः शंकरः प्राह निर्भयम् ५ पणः प्रकल्प्यतां देवि दीयते ऽसौ न संशयः । भाव संचिंत्य देवस्य सत्वरा क्रीडितु ययौ ६ आयुधानि ततो देवः पणे योजितवान्हरः । त्रिशूलं त्रिदशाञ्छर्वाञ्जितवत्येव वल्लभा ७ तस्मिन्कर्मणि त जित्वा पणमन्यं शिवा ऽग्रहीव् । एवं डमरुकादीनि तान्यन्यान्यजयत्पृथक् ८ दीनो भूत्वा महादेवो भवानीमब्रवीदिति । शार्दूलचर्म त न्मध्ये देहि मे गिरिजे शुभे ९ देव्युवाच । न चैवं वक्तुमुचित महादेव पणे गते । पणे जिते न दास्यामि, पूर्वमुक्तो ऽसि तत्स्मर १० अ विचिंत्य ब्रवीषि त्वं जगदीश कृपानिधे । इति श्रुत्वा वचो देव्या कुपितो ऽसौ महेश्वरः ११ आद्वादशादिनं देवि न करिष्यामि भाषणम् ।

इत्युक्त्वा च महादेवस्तत्रैवांतरधीयत १२ रक्ष रक्ष क्व गच्छामि किं जीवनमतः परम् । इति संचिंत्य सा द्रष्टुमुद्यानं प्रत्यपद्यत १३ गिरिजा तत्र
वनितावृंदं दृष्ट्वाऽब्रवीदिति । किमर्थमागताः सर्वाः किमेतक्रियते ऽधुना १४ नार्य ऊचुः । कपर्दिगणनाथस्य व्रतं कर्तुमिहागताः । तस्य
पूजां विधायादौ इदानीं श्रूयते कथा १५ पार्वत्युवाच । किमर्थं तद्व्रतं नार्यो युष्माभिः क्रियते वने । फलमस्य किमस्तीति पार्वती प्राह
ताः प्रति १६ नार्य ऊचुः । पृच्छते किं त्वया देवि नरैर्नारीभिरंबिके । अभीष्टसिद्धिरस्मात्तु वर्तते भुवनत्रये १७ इति श्रुत्वा वचस्तासां पा-
र्वती प्राह ता भुवि । मत्तः कुपित्वा भगवान्निर्गतस्तु महेश्वरः १८ तस्य संदर्शनायैव करिष्ये व्रतमुत्तमम् १९ व्रतस्यैतस्य किं दानं वि-
धानं कीदृशं मम । सर्वं विचिंत्य मनसा कथयंतु सुरांगनाः २० स्त्रिय ऊचुः । कालो विधानं दानं च व्रतस्यास्य फलं तथा । तत्सर्वं
सावधानेन वक्ष्यामः शृणु पार्वति २१ पातादिदोषरहिते सचतुर्भानुवासरे । मासे कार्यं व्रतं सम्यग्गणेशार्पितमानसैः २२ तैलतांबूलभो-
गादीन्वर्जयित्वा शिवप्रिये । मंदवारे तु भुंजीयादेकवारं मितं यथा २३ प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा स्नानं कुर्याद्विधानतः । वापीकूपतडागेषु
नद्यां शुक्लतिलैः सह २४ संध्यादिकं यथान्यायं सर्वं निर्वर्त्य यत्नतः । अर्चनागारमासाद्य गोमयेनोपलिप्य च २५ गोचर्ममात्रं तन्मध्ये
कुर्याद्गंधेन मंडलम् । तन्मध्ये ऽष्टदलं पद्मं तन्मध्ये गणनायकम् २६ पूजयेत्स्वच्छकुसुमैर्हरिद्रामिश्रिताक्षतैः । गां गीं गूं गैं गौं गश्च न्यासं
कृत्वा ततःपरम् २७ मंत्रेणानेन कुसुमैर्देवमावाह्य निक्षिपेत् । अथवा गणनाथस्य प्रतिमामथ पूजयेत् २८ ततस्तद्गतचित्तः सन्ध्यानं कु-
र्याद्विधानतः । एकदंतं महाकायं लंबोदरं गजाननम् २९ विघ्ननाशकरं देवं हेरंबं प्रणमाम्यहम् । इमां पूजां गृहाणेश कपर्दिगणनायक
३० आगच्छेति त्रिरुच्चार्य कुर्यादावाहनादिकम् । पुराणमंत्रैरथवा वेदमंत्रैश्च षोडशैः ३१ पूजयेदुपचारैश्च मूलमंत्रेण पार्वति । तत्तत्प्रका-

शवैर्मैत्रैर्गंधपुष्पाक्षतादिभिः ३२ ब्रह्मादिलोकपालाँश्च पूजयेद्देवसन्निधौ । लंबोदर नमस्ते ऽस्तु नमस्ते त्वंबिकासुत ३३ एकदंत नमस्ते ऽस्तु नमस्ते त्वीप्सितप्रद । कपर्दिगणनाथस्य सर्वसंपत्प्रदायिनः ३४ पूजाप्रकारः कथितस्तवास्माभिः शुचिस्मिते । अकणानजलिमितान्ह विप्यव्रीहितण्डुलान् ३५ स्वच्छान्यजेन सशोध्य चूर्णं कुर्यान्महेश्वरि । शिवे तु चूर्णं प्रथमे भानुवारे ऽर्पयेद्व्रव ३६ कुर्याद्वितीये संपूर्णचंद्रवत्पिष्टकाष्टकम् । तृतीये पायसान्नं च दध्यन्नं च चतुर्थके ३७ आनीयाष्टांशकं सम्यग्देवं संपूज्य भक्तितः । कल्पितान्नानि विधिवद्दि घते यानि यानि च ३८ तेषां तेषामष्टमांशं तस्मै सम्यक्समर्पयेत् । ततः शुक्लाय बटवे दद्यादेकं वराटकम्३९ मुष्टयामितॉंस्तण्डुलाँश्च भुंजीयाद्वागसप्तकम् । याः कामयंते ये भक्ताः पूजास्ते प्राप्नुवंति हि ४० इत्युक्तुस्तां भवानीं तु स्त्रियो विगतकल्मषाः । तासां तद्वचनं श्रुत्वा तदानीमकरोद्व्रतम् ४१ तत्र क्षणाच्च विघ्नेशः प्रत्यक्षः समजायत ॥ पार्वत्युवा० । त्रिलोकनाथ देवेश करुणाकर शंकर ४२ दीनामनन्यगतिकां भक्तवत्सल पाहि माम् । श्रुत्वा शंकरः प्राह कथमेतत्त्वया कृतम्४३देव्युवाच ।कपर्दिगणनाथस्य माहात्म्यात्किं न सिद्ध्यति॥ सूत उ० । व्रतस्यैतस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वाञ्छितवान्स्वयम् ४४ उद्दिश्याऽऽगमनं विष्णोरकरोत्तद्व्रतं शिवः । तदानीं गरुडारूढः समागत्य तमब्रवीत् ४५ मदागमनिमित्तं किं किं कृतं शंकर त्वया । ममापि ज्ञापनीयं तदित्युक्ते ज्ञापयच्छिवः ४६ अथैतदकरोद्विष्णुरुद्दिश्यागमनं विधेः । आगतः सन्विधिः शीघ्रं ममाज्ञापय माधव ४७ विष्णुरुवाच । प्रयोजनं चास्ति विधे तवागमनकारणे । एकदंतव्रतं किंचिद्भवत्येव न संशयः ४८ ब्रह्मागमनमुद्दिश्य तदानीं तेन तत्कृतम् । आगत्य सहसा सोऽपि ममाज्ञापय विश्वसृट् ४९ विधिरुवाच । हेरम्बव्रतमा-

१ पिष्टकाष्टकं महापूपाः ।

हात्म्यं द्रष्टुमेवं कृतं मया । ममापि ज्ञापनीयं तदित्युक्ते विधिनोदितम् ५० विक्रमादित्यमुद्दिश्य वज्री तदकरोच्च सः ॥विक्रमादित्य उवाच ।
आगतो ऽहं मनुष्यस्त्वामिंद्र तत्ते किमीप्सितम् ५१ कपर्दिहस्तिवदनव्रतमाहात्म्यमीदृशम् । इति ज्ञातुं मया ऽभीष्टं तल्लब्धं, तं तदा ऽब्र-
वीत् ५२ विधानं तस्य माहात्म्यं ज्ञापनीयं त्वयेति मे । पप्रच्छ विक्रमादित्य उत्सुकश्च पुरंदरम् ५३ पुरंदरमुखाज्ज्ञात्वा तत्सर्वं स्वपुरीं
प्रति । सायुधः प्रययौ राजा पराक्रमपरायणः ५४ कपर्दीशव्रतं कृत्वा महिष्याः पुरतोऽवदत् । जेष्यामि सकलाञ्छत्रून्प्राप्स्यामि च म-
होन्नतिम् ५५ तस्य व्रतस्य किं दानमिति सा प्राह विक्रमम् । प्रत्युवाच क्रियामर्कों दद्यादेकं वराटकम् ५६ एवं राज्ञो मुखाच्छ्रुत्वा दूष-
यामास तद्व्रतम् । एवं चेत्तन्न कर्तव्यं मद्गेहे यत्रकुत्रचित् ५७ कपर्दिगणनाथेन किं स्यान्मम सुशोभनम् । न क्रियते मया नाथ कपर्द्याख्यं
तु यद्व्रतम् ५८ सूत उवाच । इत्यादिदूषणादाशु कुष्ठव्याधिमवाप सा । कुष्ठव्याधियुतां पत्नीं दृष्ट्वा राजा ऽब्रवीत्तदा ५९ न स्थातव्यं त्व-
या ऽत्रेति सर्वं राज्यं विनश्यति । अर्कस्य वचनं श्रुत्वा ऋष्याश्रममगाच्च सा ६० परिचर्यावशात्तुष्टास्तस्याः सर्वे मुनीश्वराः । निश्चित्य यो-
गमार्गेण सर्वे तामब्रुवन्सतीम् ६१ कपर्दीशव्रताक्षेपाद्दुःखं प्राप्तं त्वया शुभे । कुरुष्व तद्व्रतं सम्यक्सर्वं भद्रं भविष्यति ६२ ऋषीणामाज्ञया
कृत्वा कपर्दीशव्रतं महत् । तदानीं राजमहिषी दिव्यदेहमवाप सा ६२ अस्मिन्नंतरिते काले भवान्या सह शंकरः । अगमच्च वृषारूढो
भुवनानि चतुर्दश ६४ मध्ये मार्गे द्विजेंद्रस्य रोदनं भववल्लभा । श्रुत्वा ब्राह्मण मा रोदीः किमर्थं तव रोदनम् ६५ ब्राह्मण उवाच । न कि-
मप्यस्ति मे दुःखं दारिद्र्यादेव केवलात् । देव्युवाच । दुःखं चेत्तव विप्रेंद्र कपर्दीशव्रतं कुरु ६६ ब्राह्मण उवाच । एतत्कर्तुं व्रतं देवि सामर्थ्यं
नास्ति मे ऽधुना ॥ देव्युवा० । विक्रमार्कपुरे सर्वे वैश्यो दास्यति तत्कुरु ६७ कपर्दीशव्रतेनैव मंत्रित्वं प्राप्स्यसि ध्रुवम् । दारिद्र्यमोचनं स-

म्यगभविष्यति न संशयः ६८ सूत उवाच । गृहं प्रति समागम्य गृहीत्वा तंडुलान् द्विजः । वैश्याद्गृहीत्वा तत्सर्वं तदानीमकरोद्व्रतम् ६९ तस्मिन्नर्कपुरे विप्रस्तन्मंत्रित्वमवाप सः । आज्ञापयत्कपर्दीशव्रत वैश्यस्य तत्क्षणात् ७० अकरोत्स्वसुतायाश्च विक्रमः पतिरस्त्विति । व्रतप्रभावादादित्यमुपयेमे विशःसुता ७१ अनेनैव विवाहेन परां प्रीतिमवाप सा । एवमंतरिते काले मृगयार्थं प्रविश्य सः ७२ गहनच्छुनूपार्श्वः सन्ययौ मुनिवराश्रमम् । उपचारैः श्रमं नीत्वा तेषामर्को मनोरमाम् ७३ रमणीयाश्रमे तस्मिन्दर्शयामास विक्रमः । इत्यपृच्छन्मुनीन्सर्वान्देया चैषा ममांगना ७४ तवेयं महिषीत्युक्त्वा नयेनास्मै समर्पयन् । सम महिष्या स्वपुरीं दिव्यनारीनरैर्युताम् ७५ हृष्टः सन्विक्रमादित्यः सप्रमात्माह भूपतिः । कपर्दिगणनाथस्य व्रतं कृत्वा स्त्रिया सह ७६ अजयद्विक्रमादित्यः सकलं शत्रुमंडलम् । गणनाथव्रतेनैव पुत्रपौत्रव्रतश्च सः ७७ धनधान्यादिसंपद्भिः सुखेन न्यवसद्भुवि । एतद्व्रतं ये कुर्वंति याश्च कल्पविधानतः । चतुर्णां पुरुषार्थानां तेषां प्राप्तिर्भवेद्ध्रुवम् ७८ हयमेधस्य विघ्ने तु संजाते सगरः पुरा । इदमेव व्रतं कृत्वा पुनरश्वं प्रलब्धवान् ७९ इमां कथां पंचवारं प्रथमे भानुवासरे । द्वितीये च तृतीये च पञ्चवारं शृणुयाद्व्रती ८० इति श्रीस्कंदपुराणे कपर्दिविनायकव्रतकथा समाप्ता ॥ ॥ अथाश्विनकृष्णचतुर्थ्यां दशरथललिताव्रतम् ॥ तच्च पौर्णिमांतमासेन कार्तिकवद्यचतुर्थ्यां कार्यम् । देशकालौ संकीर्त्य । मम पुत्रपौत्रादिसकलकामनासिद्ध्यर्थं दशरथललिताप्रीत्यर्थं यथा मीलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये, आसनादिकलशाराधनं च करिष्य इति संकल्प्य ॥ आगच्छ ललिते देवि सर्वसंपत्प्रदायिनि । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव । आवाहनम् ॥ नीलकौशेयवसना हेमाभां कमलासनाम् । भक्तानां वरदां नित्य ललितां चिंतयाम्यहम् । ध्यायामि ॥ कार्तस्वरमये दिव्ये नानामणिसमन्विते । अनेकरत्नसंयुक्ते आसने सवि

शस्व भोः । आसनम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् । पाद्यम् ॥ दक्षस्य दुहितः साध्वि रोहिणीनामविश्रुते । पुत्रसंपत्तिकार्यार्थं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते । अर्घ्यम् ॥ पाटलोशीरकर्पूरसुरभि स्वादु शीतलम् । तोयमाचमनीयार्थं शिशिरं प्रतिगृह्यताम् । आचमनीयम् ॥ पयोदधिघृतमधुशर्करासंयुतेन च । पंचामृतेन स्नपनं प्रीयतां परमेश्वरी । पंचामृतस्नानम्॥ मंदाकिन्याः समानीतं हेमांभोरुहवासितम् । स्नानाय ते मया भक्त्या नीरं स्वीक्रियतां शिवे । स्नानम् ॥ सर्वसत्वाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रति० । वस्त्रम् ॥ मलयाचलसंभूतं घनसारं मनोहरम् । हृदयानंदनं चारु चंदनं प्रति० । चंदनम् ॥ हरिद्रां कुंकुमं चैव सिंदूरं कज्जलान्वितम् । सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वरि । सौभाग्यद्रव्यम्॥कूष्मांडैर्मालतीकाद्यैर्जातीपुष्पैः सुगंधिभिः। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रति० । पुष्पाणि॥अथांगपूजा ॥ दशांगललितायैन० पादौपू० । भवान्यै०गुल्फौ० । सिद्धेश्वर्यै० जंघे० । भद्रकाल्यै० जानुनी० । श्रियै० ऊरू० । विश्वरूपिण्यै० कटी० । देव्यै० नाभिं० । वरदायै० कुक्षिं० शिवायै० हृदयं० । वागीश्वर्यै० स्कंधौ० । महादेव्यै० बाहू० । भद्रायै० करौ० । पद्मिन्यै० कंठं० । सरस्वत्यै० मुखं० । कमलासनायै० नासिकां० । महिषमर्दिन्यै० नेत्रे० । लक्ष्म्यै० कर्णौ० । भवान्यै० ललाटं० । विंध्यवासिन्यै० शिरःपू० । सिंहवाहिन्यै० सर्वांगपू० । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यश्च मनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । धूपम् ॥ साज्यंचव० । दीपम् ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवि० । नैवेद्यम् ॥ मध्येपानीयम् ॥ इदं फलं० । फलम् ॥ पूगीफलंमह० । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ कर्पूरगौरं० । नीराजनम् ॥ नमो देव्यै महादेव्यै० । मंत्रपुष्पम् ॥ यानिकानिचपापानि० । प्रदक्षिणाः ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्य-

म्यग्भविष्यति न संशयः ६८ सूत उवाच । गृहं प्रति समागम्य गृहीत्वा तंडुलान् द्विजः । वैश्याद्गृहीत्वा तत्सर्वं तदानीमकरोद्व्रतम् ६९ त
स्मिन्नर्कपुरे विप्रस्तन्मन्त्रित्वमवाप सः । आज्ञापयत्कपर्दीशव्रतं वैश्यस्य तत्क्षणात् ७० अकरोत्स्वसुतायाश्च विक्रमः पतिरस्त्विति ।
व्रतप्रभावादादित्यमुपयेमे विशःसुता ७१ अनेनैव विवाहेन परां प्रीतिमवाप सा । एवमंतरिते काले मृगयार्थं प्रविश्य सः ७२ गहन
कुभूपार्थः सन्ययौ मुनिवराश्रमम् । उपचारैः श्रमं नीत्वा तेषामर्को मनोरमाम् ७३ रमणीयाश्रमे तस्मिन्दर्शयामास विक्रमः । इत्यपृ
च्छन्मुनीन्सर्वान्देया चैषा ममांगना ७४ तवेयं महिषीत्युक्त्वा नयेनास्मै समर्पयन् । समं महिष्या स्वपुरीं दिव्यनारीनरैर्युताम् ७५
दृष्टः सन्विक्रमादित्यः सप्रमात्माह भूपतिः । कपर्दिगणनाथस्य व्रतं कृत्वा स्त्रिया सह ७६ अजयद्विक्रमादित्यः सकलं शत्रुमंडलम् । ग
णनाथव्रतेनैव पुत्रपौत्रसुतश्च सः ७७ धनधान्यादिसंपद्भिः सुखेन न्यवसद्भुवि । एतद्व्रतं ये कुर्वंति याश्च कल्पविधानतः । चतुर्णां पुरुषार्थो-
नां तेषां प्राप्तिर्भवेद्ध्रुवम् ७८ इयमेवस्य विप्रे तु संजाते सगरः पुरा । इदमेव व्रतं कृत्वा पुनरश्वं मखेऽथवान् ७९ इमां कथां पंचवारं
प्रथमे भानुवासरे । द्वितीये च तृतीये च पद्वार शृणुयाद्व्रती ८० इति श्रीस्कंदपुराणे कपर्दिविनायकव्रतकथा समाप्ता ॥ ॥ अथा
श्विनकृष्णचतुर्थ्यां दशरथललिताव्रतम् ॥ तत्र पौर्णिमांतमासेन कार्तिकवद्यचतुर्थ्यां कार्यम् । देशकालौ संकीर्त्य । मम पुत्रपौत्रादिसक
लकामनासिद्ध्यर्थं दशरथललिताप्रीत्यर्थं यथा मीलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये, आसनादिकलशाराधनं च करिष्य इति संकल्प्य ॥ आग-
च्छ ललिते देवि सर्वसंपत्प्रदायिनि । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं संनिधौ भव । आवाहनम् ॥ नीलकौशेयवसनां हेमाभां कमलासना
म् । भक्तानां वरदां नित्यं ललितां चिंतयाम्यहम् । ध्यायामि ॥ कार्तस्वरमये दिव्ये नानामणिसमन्विते । अनेकरत्नसंयुक्ते आसने सवि

पूजयित्वा क्षमापयेत् । ततो मंगलवाद्यैश्च गायनाद्यैः प्रतोषयेत् १४ चंद्रोदये च संप्राप्ते अर्घ्यं दद्याद्युधिष्ठिर । शंखे तोयं समादाय सपुष्पाक्षतचंदनम् १५ जानुभ्यामवनीं गत्वा चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् १६ पंचरत्नसमायुक्तं दशपुष्पैः समन्वितम् । अक्षतैश्च समायुक्तं चंद्रायार्घ्यं निवेदये १७ दशरथललिते देवि दशपुष्पं दशांजलिम् । चंद्रेण सहिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते १८ दशरथनाम या देवी नित्यमाराधिता मया । पुत्रार्थी कामये देवि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे १९ दशसंख्याश्च करकाः शीतोदकसमन्विताः । वर्षे वर्षे प्रदातव्या ब्राह्मणेभ्यः प्रयत्नतः २० इत्थं प्रपूजयेद्देवीं सर्वदा तु प्रयत्नतः । अर्वाक् या दशवर्षाणां पूजयेद्भक्तिभावतः २१ नारी नरो वा राजेंद्र व्रतमेतत्करोति वै । यं यं चिंतयते कामं व्रतस्यास्य प्रभावतः । पुत्रपौत्रधनं धान्यं लभते नात्र संशयः २२ ॥ इति कथा ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ उद्यापनविधिं वक्ष्ये व्रतसंपूर्तिहेतवे । कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु आश्विने व्रतमाचरेत् ॥ दशविप्रैः सपत्नीकैर्वेदवेदांगपारगैः । स्नात्वा सायंतने काले सर्वैस्तैर्भक्तिभावतः ॥ चतुःस्तंभं चतुर्द्वारं कदलीस्तंभमंडितम् । तन्मध्ये कारयेत्पद्मं पंचवर्णैः सुशोभितम् ॥ कलशं स्थापयेत्तत्र विधानेन समन्वितम् । ताम्रं वा मृण्मयं कुंभं वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ॥ तस्योपरि न्यसेद्देवं रोहिण्या सहितं विधुम् ॥ सुवर्णनिर्मितं देवं चतुर्भुजसमन्वितम् । सौवर्णी रोहिणी कार्या चंद्रमा रजतस्य च । पूर्वोक्तेन विधानेन पूजां कृत्वा समाहितः ॥ एवं पूजा प्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः । मोदकान्कारयेद्राजन्तिलजानेकविंशतिम् ॥ दश विप्राय दातव्या आत्मार्थं स्थापयेद्दश । एको देवाय दातव्यो ललिताप्रीतये व्रती ॥ दशरथललितादेव्या व्रतसंपूर्णहेतवे । वाणकं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम् ॥ दशरथनाम या देवी नित्यमारा-

---

१ दशवर्षाणि यत्नत इत्यपि पाठः । २ दशवार्षिकी इत्यर्थः । ३ चंद्रमा रजतस्य चेत्यग्रे उक्तत्वादनेन विरोधो दृश्यते ।

भावेन रक्ष मां परमेश्वरि । दशरथनाम्नी या देवी दशपुष्पा दशाक्षरा । पुत्रार्थी कामये देवि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे । प्रार्थना ॥ दशरथललितादेव्या व्रतसंपूर्णहेतवे । वायनं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम् । वायनम् ॥ सवाहना शक्तियुता वरदा पूजिता मया । ममानुग्रहकुर्वाणा गच्छ त्वं निजमंदिरम् । इति विसर्जनम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच । अरण्ये वर्तमानास्ते पांडवा दुःखकर्शिता । कृष्णं दृष्ट्वा महात्मानं प्रणिपत्य यथाक्रमम् १ युधिष्ठिर उवाच । देवदेव जगन्नाथ लक्ष्मीप्रिय जनार्दन । कथयस्व सुरश्रेष्ठ दशांगललिताव्रतम् २ कथमेषा समुत्पन्ना केनादौ पूजिता भुवि । पूजनात्किं फलावाप्तिः कथयस्व सुरेश्वर ३ श्रीकृष्ण उवाच । पुरा त्रेतायुगे पार्थ राजा दशरथो महान् । तस्य भार्या तु कौसल्या अपुत्रा सा पतिव्रता ४ अथाजगाम कस्मिंश्चिदृष्यशृंग ऋषीश्वरः । स्वागतं च कृतं राज्ञा सोपविष्टो वरासने ५ तेन राज्ञा मुनिश्रेष्ठः स्तोत्रैश्च बहु तोषितः । तस्य भक्त्या तु संतुष्टो ऋषिर्वचनमब्रवीत् ६ मुनिरुवाच । तुष्टोऽहं तव राजेंद्र कौसल्याभार्यया सह । ब्रूहि त्वं च महाभाग किं प्रियं ते करोम्यहम् ७ दशरथ उवाच । यदि तुष्टोऽसि मे विप्र ह्यपुत्रो ऽहं ऋषीश्वर । तीर्थं वा व्रतमेकं वा तद्वदस्व मुनीश्वर ८ मुनिरुवाच । शृणु राजन्नवहितो व्रतमेकं ब्रवीमि ते । पुत्रकामव्रतं श्रेष्ठं कृतं राजन्सुरासुरैः ९ रोहिणी नाम चंद्रस्य भार्या परमवल्लभा । सा चैव ललिता नाम्नी रोहिणीति नराधिप १० आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यादि प्रपूजयेत् । दशम्यादि चतुर्थ्यंतं दिग्दिनानि व्रतं चरेत् ११ आश्विनस्य सिते पक्षे चतुर्थ्यां तु विशेषतः । स्नात्वा सायंतने काले समेमन्यक्तिभावत[1] १२ कूष्मांडैर्मातुर्लिंगाद्यैर्जातिपुष्पैः सुगंधिभिः । गंधपुष्पैस्तथा धूपैर्नैवेद्यैर्दशमोदकैः १३ अर्घ्यं दद्याच्च देव्यग्रे

१ यथाक्रमं नमस्कारपूर्वं स्वे स्वे स्थाने स्थित्वा इत्यर्थः । २ अनेन पूर्वापरत्वा, समापपेरित्यभावेन सम्बन्धः ।

पूजयित्वा क्षमापयेत् । ततो मंगलवाद्यैश्च गायनाद्यैः प्रतोषयेत् १४ चंद्रोदये च संप्राप्ते अर्घ्यं दद्याद्युधिष्ठिर । शंखे तोयं समादाय सपुष्पाक्षतचंदनम् १५ जानुभ्यामवनीं गत्वा चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् १६ पंचरत्नसमायुक्तं दशपुष्पैः समन्वितम् । अक्षतैश्च समायुक्तं चंद्रायार्घ्यं निवेदये १७ दशरथललिते देवि दशपुष्पं दशांजलिम् । चंद्रेण सहिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते १८ दशरथनाम या देवी नित्यमाराधिता मया । पुत्रार्थी कामये देवि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे १९ दशसंख्याश्च करकाः शीतोदकसमन्विताः । वर्षे वर्षे प्रदातव्या ब्राह्मणेभ्यः प्रयत्नतः २० इत्थं प्रपूजयेद्देवीं सर्वदा तु प्रयत्नतः । अर्वाक् या दशवर्षाणां पूजयेद्भक्तिभावतः २१ नारी नरो वा राजेंद्र व्रतमेतत्करोति वै । यं यं चिंतयते कामं व्रतस्यास्य प्रभावतः । पुत्रपौत्रधनं धान्यं लभते नात्र संशयः २२ ॥ इति कथा ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ उद्यापनविधिं वक्ष्ये व्रतसंपूर्तिहेतवे । कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु आश्विने व्रतमाचरेत् ॥ दशविप्रैः सपत्नीकैर्वेदवेदांगपारगैः । स्नात्वा सायंतने काले सर्वैस्तैर्भक्तिभावतः ॥ चतुःस्तंभं चतुर्द्वारं कदलीस्तंभमंडितम् । तन्मध्ये कारयेत्पद्मं पंचवर्णैः सुशोभितम् ॥ कलशं स्थापयेत्तत्र विधानेन समन्वितम् । ताम्रं वा मृण्मयं कुंभं वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ॥ तस्योपरि न्यसेद्देवं रोहिण्या सहितं विधुम् ॥ सुवर्णनिर्मितं देवं चतुर्भुजसमन्वितम् । सौवर्णी रोहिणी कार्या चंद्रमा रजतस्य च । पूर्वोक्तेन विधानेन पूजां कृत्वा समाहितः ॥ एवं पूजा प्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः । मोदकान्कारयेद्राजन्तिलजानेकविंशतिम् ॥ दश विप्राय दातव्या आत्मार्थं स्थापयेद्दश । एको देवाय दातव्यो ललिताप्रीतये व्रती ॥ दशरथललितादेव्या व्रतसंपूर्णहेतवे । वाणकं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम् ॥ दशरथनाम या देवी नित्यमारा-

१ दशवर्षाणि यत्नत इत्यपि पाठः । २ दशवार्षिकी इत्यर्थः । ३ चंद्रमा रजतस्य चेत्यग्रे उक्तत्वादनेन विरोधो दृश्यते ।

पिता मया । पुत्रार्थी कामये देवि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥ इति समार्प्य देवेशीं चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् । स्वगृह्योक्तविधानेन कृत्वा ऽग्निं स्थापयेत्ततः ॥ एभिर्द्रव्यैर्यजेत्सम्यक् तिलपायसलड्डुकैः । अष्टोत्तरशतं सद्यो ह्यष्टाविंशतिमेव वा ॥ जुहुयाच्चंद्रमंत्रेण देवीमंत्रेण चैव हि । एवं समाप्य होमं तु तत्राचार्यं प्रपूजयेत् ॥ छत्त्रैर्दशयुग्मैश्च पक्वान्नैश्च प्रपूजयेत् । विधाय पीठदानं च ततः कुर्याद्विसर्जनम् ॥ ततः पुत्राः प्रजायन्ते धनधान्यसमन्विताः । सौभाग्यं पुत्रसंपत्तिर्जायते भूमृतांवर ॥ अवैधव्यं च लभते सर्वान्कामानवाप्नुयात् । एतत्ते कथितं भूप किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ कृष्ण उवाच । कृते दशरथेनास्मिन्कौसल्याभार्यया सह । तुष्टा दशरथादेवी गणेशेन सचंद्रमाः ॥ यस्मात्स कृतकृत्यश्च राजा भार्यया सह मोदते । तस्माद्दशरथा नाम ललिता भुवि कीर्तिता ॥ एतत्ते कथितं राजन्दशांगललिताव्रतम् । य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः ॥ अश्वमेधसहस्रस्य फलं तस्य ध्रुवं भवेत् ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे दशरथललिताव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां अथवा दक्षिणदेशे आश्विनकृष्णचतुर्थ्यां करकचतुर्थीव्रतं ॥ ॥ अत्र स्त्रीणामेवाधिकारः तासामेव फलश्रुतेः ॥ आचम्य मासपक्षाद्युल्लिख्य, मम सौभाग्यपुत्रपौत्रादिसुस्थिरश्रीप्राप्तये करकचतुर्थीव्रतम् करिष्य इति संकल्प्य, वटं विलिख्य तदधस्ताच्छिवं षण्मुखयुक्तां गौरीं लिखित्वा, षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ पूजामंत्रः—नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संततिं शुभाम् । प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे—इति ॥ ततः नमोंतनाममंत्रेण शिवषण्मुखगौरीगणपतीनां पूजा कार्या । ततः सपक्वान्नाक्षतसंयुक्तान्दशकरकान् ब्राह्मणाय दद्यात् । ततः पिष्टकनैवेद्यं भोज्य सर्वं निवेदयेत् । तदभ्यंशोदयोत्तरं चंद्रायार्घ्यं दद्यात् ॥ ॥ अथ कथा ॥ मांधातोवाच ॥ अर्जुने तु गते तत्र इंद्रकीलगिरिं प्रति । विषण्णमनसा सुभ्रूर्द्रौपदी समचिंतयत् १ अहो किरीटिना कर्म

समारब्धं सुदुष्करम् । बहवो विघ्नकर्तारो मार्गे वै परिपंथिनः २ चिंतयित्वेति सा देवी कृष्णा कृष्णं जगद्गुरुम् । भर्तुः प्रियं चिकीर्षंती सा ऽपृच्छद्विघ्नवारणम् ३ द्रौपद्युवाच । कथयस्व जगन्नाथ व्रतमेकं सुदुर्लभम् । यत्कृत्वा सर्वविघ्नानि विलयं यांति तद्वद ४ श्रीकृष्ण उवाच । एवमेव महाभागे शंभुः पृष्टः किलोमया । तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा प्राह देवो महेश्वरः ५ शृणु देवि वरारोहे वक्ष्यामि त्वां महेश्वरि । सर्वविघ्नहरेत्याहुः करकाख्या चतुर्थिका ६ पार्वत्युवाच । भगवन्कीदृशी प्रोक्ता चतुर्थी करकाभिधा । विधानं कीदृशं प्रोक्तं केनेयं च पुरा कृता ७ ईश्वर उवाच । शक्रप्रस्थपुरे रम्ये विद्वज्जनसमाकुले । स्वर्णरौप्यसमाकीर्णे रत्नप्राकारशोभने ८ दिव्यनारीजनालोके वशीकृतजगत्त्रये । वेदध्वनिसमायुक्ते स्वर्गादपि मनोहरे ९ वेदशर्मा द्विजस्तत्र वसन्देशे विदांवरः । पत्नी तस्यैव विप्रस्य नाम्ना लीलावती शुभा १० तस्यां संजनयामास पुत्रान्सप्त मितौजसः । कन्यां वीरावतीं नाम्नीं सर्वलक्षणसंयुताम् ११ नीलोत्पलाभनयनां पूर्णेंदुसदृशाननाम् । तां तु काले शुभदिने विधिवच्च द्विजोत्तमः १२ ददौ वेदांगविदुषे विप्राय विधिपूर्वकम् । अत्रांतरे भ्रातृदारैश्चक्रे गौर्याः शुभं व्रतम् १३ चतुर्थ्यां कार्तिकस्थाय कृष्णायां तु विशेषतः । स्नात्वा सायंतने काले सर्वास्ता भक्तिभावतः १४ विलिख्य वटवृक्षं च गौरीं तस्य तले लिखेत् । शिवेन विघ्ननाथेन षण्मुखेन समन्विताम् १५ गंधपुष्पाक्षतैर्गौरीं मंत्रेणानेन पूजयेत् १६ नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संततिं शुभाम् । प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे १७ तस्याः पार्श्वे महादेवं विघ्ननाथं षडाननम् । पुनः पुष्पाक्षतैर्धूपैरर्चयंश्च पृथक् पृथक् १८ पक्वान्नाक्षतसंपन्नान्सदीपान्करकान्दश । तथा पिष्टकनैवेद्यं भोज्यं सर्वं निवेदयन् १९ प्रतीक्षंत्यः स्त्रियः सर्वाश्चंद्रमर्घ्यपराः स्थिताः । सा

१ वेदधर्मेति पाठो क्वचित्पुस्तकेषु दृश्यते ।

चिता मया । पुत्रार्थी कामये देवि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥ इति समार्प्य देवेशीं चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् । स्वगृह्योक्तविधानेन कृत्वा ऽग्निं स्थापयेत्ततः ॥ एभिर्द्रव्यैर्यजेत्सम्यक् तिलपायसलड्डुकैः । अष्टोत्तरशतं सद्यो ह्यष्टाविंशतिमेव वा ॥ जुहुयाच्चंद्रमंत्रेण देवीमंत्रेण चैव हि । एवं समाप्य होमं तु तत्राचार्यं प्रपूजयेत् ॥ द्वादशैर्दशयुग्मैश्च पक्वान्नैश्च प्रपूजयेत् । विप्राय पीठदानं च ततः कुर्याद्विसर्जनम् ॥ ततः पुत्राः प्रजायंते धनधान्यसमन्विता । सौभाग्य पुत्रसंपत्तिर्जायते भूमृतांवर ॥ अवैधव्यं च लभते सर्वान्कामानवाप्नुयात् । एतत्ते कथित भूप किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ कृष्ण उवाच । कृते दशरथेनास्मिन्कौसल्याभार्यया सह । तुष्टा दशरथादेवी गणेशेन सचंद्रमाः ॥ यस्मात्स कृतकृत्यश्च राजा भार्यया सह मोदते । तस्माद्दशरथा नाम ललिता भुवि कीर्तिता ॥ एतत्ते कथित राजन्दशांगललिताव्रतम् । य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः ॥ अश्वमेधसहस्रस्य फलं तस्य ध्रुवं भवेत् ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे दशरथललितावतोद्यापन संपूर्णम् ॥ ॥ अथ कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां अथवा दक्षिणदेशे आश्विनकृष्णचतुर्थ्यां करकचतुर्थीव्रतं ॥ ॥ अत्र स्त्रीणामेवाधिकारः तासामेव फलश्रुतेः ॥ आचम्य मासपक्षाद्युल्लिख्य, ममः सौभाग्यपुत्रपौत्रादिसुस्थिरश्रीप्राप्तये करकचतुर्थीव्रतम् करिष्य इति संकल्प्य, वट विलिख्य तदधस्ताच्छिवं षण्मुखयुक्तां गौरीं लिखित्वा, षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ पूजामन्त्रः—नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संततिं शुभाम् । प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे—इति ॥ ततः नमोंतनाममंत्रेण शिवषण्मुखगौरीगणपतीनां पूजा कार्या । ततः सपक्वान्नक्षतसंयुक्तान्दशकरकान् ब्राह्मणाय दद्यात् । ततः पिष्टकनैवेद्यं मोच्य सर्वं निवेदयेत् । ततश्चंद्रोदयोत्तरं चंद्रायार्घ्यं दद्यात् ॥ ॥ अथ कथा ॥ मांधातोवाच ॥ अर्जुने तु गते तत्र इन्द्रकीलगिरिं प्रति । विषण्णमनसा सुभ्रूर्द्रौपदी समचिंतयत् १ अहो किरीटिना कर्म

तेषां पुत्रान्धनं धान्यं सौभाग्यं चातुलं यशः ३९ करकं क्षीरसंपूर्णं तोयपूर्णमथापि वा । ददामि रत्नसंयुक्तं चिरं जीवतु मे पतिः ४० इति मंत्रेण करकान्प्रदद्याद्द्विजसत्तमे । सुवासिनीभ्यो दद्याच्च आदद्यात्ताभ्य एव च ४१ एवं व्रतं या कुरुते नारी सौभाग्यकाम्यया । सौभाग्यं पुत्रपौत्रादि लभते सुस्थिरां श्रियम् ४२ ॥ इति वामनपुराणे करकाभिधचतुर्थीव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ माघशुक्लचतुर्थ्यां गौरीचतुर्थीव्रतम् ॥ हेमाद्रौ ब्राह्मे–उमाचतुर्थ्यां माघे तु शुक्लायां योगिनीगणैः । प्राग्भक्षयित्वा सृष्टा च भूयस्त्वांगात्स्वकैर्गणैः ॥ तस्मात्सा तत्र संपूज्या नरैः स्त्रीभिर्विशेषतः । कुंदपुष्पैः प्रयत्नेन सम्यक् भक्त्या समाहितैः ॥ कुंकुमालक्तकाभ्यां च रक्तसूत्रैः सकंकणैः । रक्तपुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्बलिभिरेव च ॥ गुडार्द्रकाभ्यां पयसा लवणेनाथ पालकैः ।-पालकं मृद्भांडं । इति ॥ हेमाद्रिः–पूज्याः स्त्रियश्च विविधास्तथा विप्राश्च शोभनाः ॥ सौभाग्यवृद्धये देयं भोक्तव्यं बंधुभिः सह ॥ इति गौरीचतुर्थीव्रतं ब्रह्मपुराणोक्तम् ॥ ॥ अथ माघशुक्लचतुर्थ्यां वरदचतुर्थीव्रतम् ॥ तदुक्तं काशीखंडे– माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नक्तव्रतपरायणाः । ये त्वां ढुंढे ऽर्चयिष्यंति ते ऽर्च्यास्स्युरसुरद्रुहः ॥ विधाय वार्षिकीं यात्रां चतुर्थीं प्राप्य तापसीम् । शुक्लान्तिलान्गुडैर्बध्वा प्राश्नीयाल्लड्डुकान्व्रती ।- तापसी माघी ॥ अत्र नक्तग्रहणात्प्रदोषव्यापिनी ग्राह्येति सिद्धम् ॥ इति वरदचतुर्थीव्रतम् ॥ ॥ अथ माघकृष्णचतुर्थ्यां संकष्टहरगणपतिव्रतम् ॥ पूजाविधिः ॥ येभ्योमाताऋक् १ । एवापित्रेति च जपित्वा ॥ आगमार्थंतु० । घंटानादं कृत्वा ॥ अपसर्पंत्विति छोटिकामुद्रां प्रदर्श्य । तीक्ष्णदंष्ट्रेति क्षेत्रपालं संप्रार्थ्य । आचम्य प्राणानायम्य, मम सहकुटुंबस्य क्षेमस्थैर्यविजयाभयायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीसंकष्टहरगणेश्वरप्रीत्यर्थं नारदीयपुराणोक्तप्रकारेण पुरुषसूक्तविधानेन यथासंभावितनियमेन यथामीलितोपचारद्रव्यैः संकष्टचतुर्थीव्रतांगत्वेन गणपतिपूजनमहं करिष्ये ।

वाला विकला दीना क्षुत्तृषया परिपीडिता २० निपपात महीपृष्ठे स्कन्धुर्वीक्षवास्तया । समाश्वास्य च वातेस्तां मुखमभ्युक्ष्य वारिणा २१
तन्त्राता चिंतयित्वेवमारुह्योह महावटम् । हस्ते चोल्कां समादाय ज्वलतीं स्नेहपीडितः २२ भगिन्यै दर्शयामास चंद्र व्याजोदित तदा ।
त दृष्ट्वा चार्तिमुत्सृज्य बुभुजे भावसयुता २३ चन्द्रोदय तमाज्ञाय अर्घ्यं दत्त्वा विधानतः । तद्दोषेण मृतस्तस्याः पतिधर्मश्च दूषितः २४
पतिं तथाविधं दृष्ट्वा शिवमभ्यर्च्य सा पुन । व्रत निरशनं चक्रे यावत्सवत्सरो गतः २५ चक्रुः सवत्सरे ऽतीते व्रत तस्यास्तुयोषितः । पूर्वोक्तेन
विधानेन सा ऽपि चक्रे शुभानना २६ तदा ऽऽयाता शची देवी कन्याभिः परिवारिता । एतदेव व्रत कर्तुमागता स्वर्गलोकत २७ वीराव-
त्यास्तदाभ्याशमगमत्साग्यतः स्वयम् । दृष्ट्वा तां मानुषीं देवीं पप्रच्छ सकर्ठ शची २८ वीरावती तदा दृष्टा प्रोवाच विनयान्विता । अहं
पितृगृह प्राप्ता मृतो ऽय मे पति प्रभुः २९ न जाने कर्मणः कस्य फलं प्राप्त मया ऽधुना । मम भाग्यवशाद्देवि आगता ऽसि महेश्वरि
३० अनुगृहीष्व मां मातर्जीवयाऽऽशु पतिं मम ॥ इन्द्राण्युवाच । त्वया पितृगृहे पूर्वं कुर्वत्या करकव्रतम् ३१ तदैवार्घ्यं त्वया दत्त विना
चन्द्रोदय शुभे । तेन ते व्रतदोषेण स्वामी लोकांतर गतः ३२ इदानीं कुरु यत्नेन करकव्रतमुत्तमम् । पतिं ते जीवयिष्यामि व्रतस्यास्य
प्रभावतः ३३ कृष्ण उवाच । तस्यास्तद्वचन श्रुत्वा व्रतं चक्रे विधानतः । प्रसन्ना साऽभवद्देवी शक्रस्य प्राणवल्लभा ३४ तया व्रते कृते
देवी जलेनाभ्युक्ष्य तत्पतिम् । जीवयामास चेंद्राणी देववच्च बभूव सः ३५ ततश्चागाद्गृह स्वीय रेमे सा पतिना सह । धन धान्य सु-
पुत्रांश्च दीर्घमायुश्च लब्धवान् ३६ तस्मात्त्वया ऽपि यत्नेन व्रतमेतद्विधीयताम् ३७ सूत उवाच । श्रीकृष्णस्य वचः श्रुत्वा चकार द्रौपदी
व्रतम् । तद्व्रतस्य प्रभावेण जित्वा तान्कौरवान्रणे ३८ लेभिरे राज्यमतुल पांडवा दुःखनाशनम् । ये करिष्यति सुभगा व्रतमेतन्निशागमे ॥

तेषां पुत्रान्धनं धान्यं सौभाग्यं चातुलं यशः ३९ करकं क्षीरसंपूर्णं तोयपूर्णमथापि वा । ददामि रत्नसंयुक्तं चिरं जीवतु मे पतिः ४० इति मंत्रेण करकान्प्रदद्याद्द्विजसत्तमे । सुवासिनीभ्यो दद्याच्च आदद्यात्ताभ्य एव च ४१ एवं व्रतं या कुरुते नारी सौभाग्यकाम्यया । सौभाग्यं पुत्रपौत्रादि लभते सुस्थिरां श्रियम् ४२ ॥ इति वामनपुराणे करकाभिधचतुर्थीव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ माघशुक्लचतुर्थ्यां गौरीचतुर्थीव्रतम् ॥ हेमाद्रौ ब्राह्मे—उमाचतुर्थ्यां माघे तु शुक्लायां योगिनीगणैः । प्रागभक्षयित्वा सृष्टा च भूयस्त्वांगात्स्वकैर्गणैः ॥ तस्मात्सा तत्र संपूज्या नरैः स्त्रीभिर्विशेषतः । कुंदपुष्पैः प्रयत्नेन सम्यक् भक्त्या समाहितैः ॥ कुंकुमालक्तकाभ्यां च रक्तसूत्रैः सकंकणैः । रक्तपुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्बलिभिरेव च ॥ गुडार्द्रकाभ्यां पयसा लवणेनाथ पालकैः ।-पालकं मृद्भांडं । इति ॥ हेमाद्रिः—पूज्याः स्त्रियश्च विविधास्तथा विप्राश्च शोभनाः ॥ सौभाग्यवृद्धये देयं भोक्तव्यं बंधुभिः सह ॥ इति गौरीचतुर्थीव्रतं ब्रह्मपुराणोक्तम् ॥ ॥ अथ माघशुक्लचतुर्थ्यां वरदचतुर्थीव्रतम् ॥ तदुक्तं काशीखंडे— माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नक्तव्रतपरायणाः । ये त्वां ढुंढे ऽर्चयिष्यंति ते ऽर्च्यास्युरसुरद्रुहः ॥ विधाय वार्षिकीं यात्रां चतुर्थीं प्राप्य तापसीम् । शुक्लान्तिलान्गुडैर्बध्वा प्राश्नीयाल्लडुकान्व्रती ।- तापसी माघी ॥ अत्र नक्तग्रहणात्प्रदोषव्यापिनी ग्राह्येति सिद्धम् ॥ इति वरदचतुर्थीव्रतम् ॥ ॥ अथ माघकृष्णचतुर्थ्यां संकष्टहरगणपतिव्रतम् ॥ पूजाविधिः ॥ येभ्योमाताऋक् १ । एवापित्रेति च जपित्वा ॥ आगमार्थंतु० । घंटानादं कृत्वा ॥ अपसर्पंत्विति छोटिकामुद्रां प्रदर्श्य । तीक्ष्णदंष्ट्रेति क्षेत्रपालं संप्रार्थ्य । आचम्य प्राणानायम्य, मम सहकुटुंबस्य क्षेमस्थैर्यविजयाभयायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीसंकष्टहरगणेश्वरप्रीत्यर्थं नारदीयपुराणोक्तप्रकारेण पुरुषसूक्तविधानेन यथासंभावितनियमेन यथामीलितोपचारद्रव्यैः संकष्टचतुर्थीव्रतांगत्वेन गणपतिपूजनमहं करिष्ये ।

कलशार्चनं शखार्चनं च कृत्वा न्यासं कुर्यात् ॥ अस्य श्रीगणपतिमंत्रस्य शुक्रऋषिः । श्रीसंकष्टहरगणपतिर्देवता । अनुष्टुप्छंदः । श्रीसंकष्टहरगणपतिप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः । ॐ नमो हेरंब अंगुष्ठाभ्यां नमः । मदमोहित तर्जनीभ्यां न० । मम संकष्टं निवारय मध्यमाभ्यां० । निवारय अनामिकाभ्यां० । हुंफट् कनिष्ठिकाभ्यां० । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां० । एवं हृदयादि ॥ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बंधः ॥ ॐ नमो हेरंब मदमोहितममसंकटंनिवारयनिवारयहुंफट्स्वाहा ॥ अथ ध्यानम् ॥ श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगंधैः क्षीराब्धौ रत्नद्वीपे सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थम् । दोर्भिः पाशांकुशेष्टाभयधृतरुचिरं चंद्रमौलिं त्रिनेत्रं ध्यायेच्छांत्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् । लंबोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम् । सर्वाभरणशोभाढ्यं प्रसन्नास्यं विचिंतयेत् । ध्यायामि ॥ आगच्छ विघ्नराजेंद्र स्थाने चात्र स्थितो भव । आराधयिष्ये भक्त्या ऽहं भवंतं सर्वसिद्धये । ॐ सहस्रशीर्षा० । गणेशायन० आवाहनम् ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः । ॐ पुरुषएवेदं० । विघ्ननाशिने० आसनम् ॥ गणाधिप नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धिकर प्रभो । पाद्यं गृहाण देवेश सुरासुरसुपूजित । ॐ एतावानस्य० । लंबोदराय० पाद्यम् ॥ रक्तगंधाक्षतोपेतं रक्तपुष्पसमन्वितम् । अर्घ्यं गृहाण देवेश मया दत्तं हि भक्तितः । ॐ त्रिपादूर्ध्व० चक्रार्धधारिणे० अर्घ्यम् ॥ सुरासुरसमाराध्य सर्वसिद्धिप्रदायक । मया दत्तं सुरश्रेष्ठ गृहाणाचमनीयकम् । ॐ तस्माद्विराळ० । विश्वप्रियाय० आचमनीयम् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम् । पंचामृतेन स्नपनं करिष्ये सर्वसिद्धिदम् । ॐ यत्पुरुषेण० । विघ्नहर्त्रे० पंचामृतस्नानम् ॥ गंगादिसलिलं शुद्धं सुवर्णकलशे स्थितम् ॥ सुवासितं परिमलैः स्नापयामि गणेश्वर । ब्रह्मचारिणे० शुद्धोदकस्नानं पुरुषसूक्तेन कुर्यात् ॥ रक्तवर्णं वस्त्रयुग्मं सर्वकार्यार्थसिद्धये । मया दत्तं गणाध्यक्ष गृह्यतामखिला-

थेंद । ॐ तंयज्ञं० । सर्वप्रदाय० वस्त्रयुग्मम् ॥ कुंकुमाक्तं मया दत्तं सौवर्णमुपवीतकम् । उत्तरीयेण संयुक्तं गृहाण गणनायक ।
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसंभृ० । वक्रतुंडाय० यज्ञोपवीतम् ॥ चंदनागरुकर्पूरकुंकुमादिसमन्वितम् । गंधं गृहाण देवेश सर्वसि-
द्धिप्रदायक । ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋ० । गणाध्यक्षाय० गंधम् ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः । गृहाण वि-
घ्नराजेंद्र मया दत्ता हि भक्तितः । गजवदनाय० अक्षतान् ॥ रक्तपुष्पाणि विघ्नेश एकविंशतिसंख्यया । गृहाण सुमुखो भूत्वा
मया दत्तान्युमासुत । ॐ तस्मादश्वा० । गुणशालिनेनमः पुष्पाणि ॥ सुगंधीनि च माल्यानि गृहाण गणनायक । विनायक
नमस्तुभ्यं शिवसूनो नमो स्तुऽते । विघ्ननाशिने० । माल्यानि ॥ एकविंशतिनामभिः दूर्वाभिः पुष्पैर्वा पूजयेत् ॥ ॐ गजान-
नायनमः विघ्नराजाय० लंबोदराय० शिवात्मजाय० वक्रतुंडाय० शूर्पकर्णाय० कुब्जाय० गणेशाय० विघ्ननाशिने० विकटाय० वामदेवा-
य० सर्वदेवाय० सर्वार्तिनाशिने० विघ्नहर्त्रेन० धूम्राय० सर्वदेवाधिदेवाय० उमापुत्राय० कृष्णपिंगलाय० भालचंद्राय० गणाधिपाय० ए-
कदंताय० २१ । इत्येकविंशतिदूर्वापुष्पाणि समर्पयामि ॥ अथांगपूजा ॥ संकष्टनाशिनेनमः पादौपूजयामि । स्थूलजंघाय० जंघे० ।
एकदंताय० जानुनी० । आखुवाहनाय० ऊरू० । हेरंबाय० कटी० । लंबोदराय० उदरं० । गणाध्यक्षाय० हृदयं० । स्थूलकंठाय०
कंठं० । स्कंदाग्रजाय० स्कंधौ० । परशुहस्ताय० हस्तौ० । गजवक्त्राय० वक्त्रं० । सर्वेश्वराय० शिरः पू० । संकष्टनाशिने० सर्वांगं पू० ॥
अथावरणपूजा ॥ गणाधिपायनमः उमापुत्राय० अघनाशिने० हेरंबाय० लंबोदराय० गजवक्त्राय० एकदंताय० धूम्रकेतवेन० भालचंद्रा-
य० ईशपुत्राय० इभवक्त्राय० मूषकवा० कुमारगुरवे० संकष्टनाशिनेनमः-इति प्रथमावरणम् १। विघ्नगणपतयेन० वीरगणपतये० शूर्प-

कर्णगणपतये॰ प्रसादगणपतये॰ वरदगणपतये॰ इंद्रगणपतये॰ एकदंतगणपतये॰ लंबोदरगणपतये॰ क्षिप्रगणपतये॰ सिद्धिगणपतये॰—इति द्वितीयावरणम् २ रमायन॰ रमेशाय॰ दर्पकाय॰ रतिप्रियाय॰ पुष्पबाणाय॰ महेश्वराय॰ वराहाय॰ श्रीसदाशिवाय॰—इति तृतीयावरणम् ३। आदित्यायन॰ चंद्राय॰ कुजाय॰ बुधाय॰ बृहस्पतये॰ शुक्राय॰ शनैश्चराय॰ केतवे॰ सिद्ध्यै॰ समृद्ध्यै॰ कांत्यै॰ मदनरत्यै॰ मदद्राविण्यै॰ वसुमत्यै॰ वैनायक्यैन॰—इति चतुर्थावरणम् ४। इंद्रायन॰ अग्नये॰ यमाय॰ निर्ऋतये॰ वरुणाय॰ वायवे॰ सोमाय॰ ईशानाय॰—इति पंचमावरणम् ५ ॥ अथ पत्रपूजा ॥ गणाधिपायन॰ पाचीपत्रस॰। सुमुखाय॰ भृंगराजप॰। उमापुत्राय॰ बिल्वप॰। गजवक्त्राय॰ श्वेतदूर्वाप॰ लंबोदराय॰ बदरीप॰। हरसून॰ धत्तूरप॰। गुहाग्रजाय॰ तुलसीप॰। गजकर्णाय॰ अपामार्गप॰। एकदंताय॰ बृहतीप॰। इभवक्त्राय॰ शमीप॰। मूषकवाहनाय॰ करवीरप॰। विनायकाय॰ वेणुप॰। कपिलाय॰ अर्कप॰। भिन्नदंताय॰ अर्जुनप॰। पत्नीहिताय॰ विष्णुक्रांताप॰। बटवेन॰ दाडिमीप॰। भालचंद्राय॰ देवदारुप॰। हेरंबाय॰ मरुप॰। सिद्धिदाय॰ सिंदूरप॰[1]। सुराग्रजाय॰ जातीप॰। विघ्नराजाय॰ केतकीपत्रम् ॥—इत्येकविंशतिपत्राणि ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ सुमुखाय॰ जातीपुष्पस॰। एकदंताय॰ शेवंतीपु॰। कपिलाय॰ यूथिकापु॰। गजकर्णाय॰ चंपकपु॰। लंबोदराय॰ कल्हारपु॰। विकटाय॰ केतकीपु॰। विघ्ननाशिने॰ बकुलपु॰। विनायकाय॰ जपापु॰। धूम्रकेतवे॰ पुन्नागपु॰। गणाध्यक्षाय॰ धत्तूरपु॰। भालचंद्राय॰ मातुलिंगपु॰। पत्नीहिताय॰ विष्णुक्रांतापु॰ उमापुत्राय॰ करवीरपु॰। गजाननाय पारिजातपु॰। ईशपुत्राय॰ कमलपु॰। सर्वसिद्धि

[1] सिंदूरस्वरुभेदे स्यात्सिरपमराठीभाषा विघ्नप्रकाशे। सिंदुवारपत्रमित्यन्यस्मि पुस्तके दृश्यते।

प्रदाय० गोकर्णिकापु० । मूषकवाहनाय० कुमुदपु० । कुमारगुरवेन० तगरपु० । दीर्घशुंडाय० सुगंधिराजपु० । इभवक्त्राय० अगस्ति-
पु० । संकष्टनाशनाय० पाटलापु० ॥- इत्येकविंशतिपुष्पाणि ॥ अथाष्टोत्तरशतनामपूजा ॥ ॐ अस्य श्रीअष्टोत्तरशतविघ्नेश्वरदिव्यना-
मामृतस्तोत्रमंत्रस्य गृत्समदऋषिः । गणपतिर्देवता । अनुष्टुप्छंदः । गं बीजं । नं शक्तिः । मं कीलकम् । श्रीगणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे पूज-
ने विनियोगः ॥ ॐ कारपूर्वकाणि नामानि ॥ ॐ विनायकायनमः विघ्नराजाय० गौरीपुत्राय० गणेश्वराय० स्कंदाग्रजाय० अव्ययाय० पू-
ताय० दक्षाध्यक्षाय० द्विजप्रियाय० अग्निगर्वच्छिदेन० इंद्रश्रीप्रदाय० वाणीबलप्रदाय० सर्वसिद्धिप्रदाय० शर्वतनयाय० शर्वप्रियाय० सर्वा-
त्मकाय० सृष्टिकर्त्रे० देवानीकार्चिताय० शिवाय० शुद्धाय० बुद्धिप्रियाय० शांताय० ब्रह्मचारिणेन० गजाननाय० द्वैमातुराय० मुनिस्तु-
त्याय० भक्तविघ्ननाशिनेन० एकदंताय० चतुर्बाहवे० शक्तिसंयुताय० चतुराय० लंबोदराय० शूर्पकर्णाय० हेरंबाय० ब्रह्मवित्तमाय० का-
लाय० ग्रहपतये० कामिनेन० सोमसूर्याग्निलोचनाय० पाशांकुशधराय० चंडाय० गुणातीताय० निरंजनाय० अकल्मषाय० स्वयंसिद्धा-
य० सिद्धार्चितपदांबुजाय० बीजपूरकाय० अव्यक्ताय० वरदाय० शाश्वताय० कृतिने० विद्वत्प्रियाय० वीतभयाय० गदिने० चक्रिणे०
इक्षुचापधृते० अब्जोत्पलकराय० श्रीशाय० श्रीपतये० स्तुतिहर्षिताय० कुलाद्रिभृतेन० जटिनेन० चंद्रचूडाय० अमरेश्वराय० नागयज्ञो-
पवीतिने० श्रीकंठाय० रामार्चितपदाय० व्रतिनेन० स्थूलकंठाय० त्रयीकर्त्रे० सामघोषप्रियाय० पुरुषोत्तमाय० स्थूलतुंडाय० अग्रगण्या-
य० ग्रामण्याय० गणपाय० स्थिराय० वृद्धिदाय० सुभगदाय० शूराय० वागीशाय० सिद्धिदायकाय० दूर्वाबिल्वप्रियाय० कांताय० पा-
पहारिणेन० कृतागमाय० समाहिताय० वक्रतुंडाय० श्रीपदाय० सौम्याय० भक्तकांक्षितदात्रे० अच्युताय० केवलाय० सिद्धिदाय०

सच्चिदानंदविग्रहाय० ज्ञानिनेन० मायायुक्ताय० दांताय० ब्रह्मिष्ठाय० भयवर्जिताय० प्रमत्तदैत्यभयप्रदाय० व्यक्तमूर्तये० अमूर्तकाय० पा
र्वतीशंकरोत्संगखेलनोत्सवलालसायन० समस्तजगदाधाराय० वरदमूषकवाहनाय० हृष्टचित्ताय० प्रसन्नात्मने० सर्वसिद्धिप्रदायकायनम
-अष्टोत्तरशतेनैव नाम्ना विघ्नेश्वरस्य च ॥ तुष्टाव शंकरः पुत्रं त्रिपुरं हंतुमुद्यतः ॥ यः पूजयेदनेनैव भक्त्या सिद्धिविनायकम् ॥ दूर्वादलै
र्बिल्वदलैः पुष्पैर्वा चदनाक्षतैः ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वापद्भ्यः प्रमुच्यते ॥ इति श्रीमविष्योत्तरपुराणे विघ्नेश्वराष्टोत्तरशतदिव्यनामस्तो
त्रं सपूर्णम् ॥ वनस्पतिरसोद्भूत दशांगं गुग्गुलान्वितम् । गृहाण सर्वकामार्थं मया दत्त विनायक । ॐ यत्पुरुषं० । उमापुत्राय० धूपम् ।
घृताक्तवर्तिसयुक्त दीप शक्तिप्रदायकम् । गृहाणेश मया दत्तं तेजोराशे जगत्पते । ॐ ब्राह्मणोस्य० । रुद्रप्रियाय दीपम् ॥ अन्नं चतुर्वि
ध स्वादु० । भक्ष्यैर्नानाविधैर्युक्तान्मोदकान्घृतपाचितान् । गृहाण विघ्नराजेंद्र तिलखंडसमन्वितान् । ॐ चद्रमाम० । विघ्ननाशिने० नै
वेद्यम् ॥ फलानीमानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः । तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । सकष्टनाशिने० फलम् ॥ पूगीफल
म० । ॐ नाभ्याआसी० । सिद्धिविनायकाय० तांबूलम् ॥ श्रियेजातइति नीराजनम् ॥ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वर
स्थापित तेन मे प्रीत पूर्णान्कुरु मनोरथान् । ॐ सप्तास्यास० । विघ्नेशाय० सुवर्णपुष्पम् ॥ अथ दूर्वाः ॥ गणाधिपायन० दू
र्वायुग्म समर्पयामि । उमापुत्राय० दूर्वायुग्मस० । अघनाशनाय० दूर्वायु० । एकदंताय० दूर्वायु० । इभवक्त्राय० दूर्वायु० । विनायका
य० दूर्वायु० । ईशपुत्राय० दूर्वायु० । सर्वसिद्धिप्रदायकाय० दूर्वायु० । कुमारगुरवे० दूर्वायु० । श्रीगणेश्वराय० एकदूर्वांकुरसम० ।
गणाधिप नमस्ते ऽस्तु उमापुत्राघनाशन । एकदंतेभवक्त्रेति तथा मूषकवाहन ॥ विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक । कुमारगुरवे तुभ्यं

गणराज प्रयत्नतः ॥ एभिर्नामपदैर्नित्यं दूर्वायुग्मं समर्पयेत् । श्रीगणेशो वक्रतुंड उमापुत्रस्तथैव च ॥ विघ्नराजः कामदश्च गणेश्वर इति स्मृतः । जीमूतः शक्तिरित्युग्रस्तथांजनसमप्रभः ॥ योगिध्येयो दिव्यगुणो महाकाय इतीरितः । ततश्च सिद्धिदः प्रोक्तो महोदर इति स्मृतः । गजवक्रः कर्मभीमस्ततः परशुधार्यपि । करिकुंभो विश्वमूर्तिरुग्रतेजास्ततः परम् ॥ लंबोदरस्ततः सिद्धिर्गणेशश्चैकविंशतिः । नामानि रमणीयानि जपेदेभिश्च पूजयेत् ॥ गणेशात्तस्य नश्यंति संकष्टानि महंत्यपि ॥ महासंकष्टदग्धो ऽहं गणेशं शरणं गतः । तस्मान्मनोरथं पूर्णं कुरु विश्वेश्वरप्रिय ॥ ततः स्वर्णमयं पुष्पं विघ्नेशाय निवेदयेत् ॥ प्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वा देवं क्षमापयेत् ॥ ॐ यज्ञेनयज्ञ० । संकष्टनाशनाय० पुष्पांजलिम् ॥ नमो ऽस्तु देवदेवेश भक्तानामभयप्रद । विघ्नानां नाशकर्त्रे च हरात्मज नमो ऽस्तु ते ॥ विघ्ननाशिने०नमस्कारम्॥ ततः ॐ नमोहेरंब इति मूलमंत्रं एकविंशतिवारं जपेत् ॥ अथ गणेशायार्घ्यं दद्यात् ॥ गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदायक । संकष्टहर मे देव गृहाणार्घ्यं नमो ऽस्तु ते । कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु संपूजित विधूदये । क्षिप्रं प्रसीद देवेश गृहाणार्घ्यं नमो ऽस्तु ते । एताभ्यां मंत्राभ्यां संकष्टहरगणपतयेनम इत्यर्घ्यद्वयं दद्यात् ॥ तिथीनामुत्तमे देवि गणेशप्रियवल्लभे । सर्वसंकष्टनाशाय गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते । चतुर्थ्यैनमः इदमर्घ्यंस० ॥ रोहिणीसहितचंद्रं पंचोपचारैः पूजयित्वा ॥ क्षीरोदार्णवसंभूत लक्ष्मीबंधो निशाकर । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितः शशिन् । रोहिणीसहितचंद्रायइदमर्घ्यम् ॥ गगनांगणसंदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव । भाभासितदिगंतांत सोमराज नमोस्तु ते । चंद्राय नमस्कारम् ॥ ततः आचार्यं प्रपूज्य वायनं दद्यात् ॥ मोदकान्सफलान्पंच दक्षिणाभिः समन्वितान् । गृहाण त्वं द्विजश्रेष्ठ व्रतस्य परिपूर्तये । वायनम् ॥ प्रतिमां गुरवे दद्यादाचार्याय सदक्षिणाम् ॥ वस्त्रकुंभसमायुक्तामादौ मंत्रमिमं जपेत् ॥ गणेशस्य प्रसादेन मम

सन्तु मनोरथाः। तुभ्य संप्रददे विप्र प्रतिमां तु गजाननीम् ॥ इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्रप्रवर्धिनीम् । गणाधिराज देवेश विघ्नराज वि- नायक। तव मूर्तिप्रदानेन प्रसन्नो भव सर्वदा-इति कलशप्रतिमादानमंत्रः ॥ अथ प्रतिग्रहमन्त्रः–गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च । गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः ॥ संसारपीडाव्यथितं हि मां सदा सङ्कष्टभूत सुमुख प्रसीद । त्वं त्राहि मां नाशय कष्टसघा न्नमो नमः कष्टविनाशनाय । प्रार्थना ॥ यदुद्दिश्य कृत ते ऽद्य यथाशक्ति प्रपूजनम् ॥ संकष्ट हर मे देव उमासुत नमोस्तु ते । नमस्कारः ॥ इति पूजाविधिः ॥ ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच । अरण्ये वर्तमानं तं पांडुपुत्रं युधिष्ठिरम् । सर्वांचवं सुखासीन प्रययौ व्यास आदरात् १ तं दृष्ट्वा मुनिशार्दूल व्यासं प्रत्याययौ नृपः । मधुपर्कं च साध्यं च कृत्वा तस्मै सुवाच तम् २ युधिष्ठिर उवाच । अद्य मे स फलं जन्म भवताऽऽगमने कृते । ये सङ्कष्टा हि सजाता वने मम निवासिन ३ ते सर्वं विलयं याता भवतो दर्शनेन हि । आत्मानं साधु मन्ये ऽह राज्यतृष्णापराङ्मुखम् ४ दुःखित मां कथं स्वामिन्राज्यभ्रष्ट वने स्थितम् । एते भीमादयः सर्वे बाधवा व्यथयति भोः ५ दुराधर्षाः सुवीर्या हि मच्छासनविधौ रता । इयं तु द्रौपदी साध्वी राजपुत्री पतिव्रता ६ राज्योपभोगयोग्या सा ऽप्यद्य दुःखोपभोगि- नी । मया च किं कृतं व्यास पूर्वं कष्टानुजीविना ७ दायादैर्लुण्ठित राज्य धूतच्छद्मरतैस्तथा । पराजिता वय ब्रह्मन्सह्बन्धुभिस्तथा ८ वन प्रस्थापिता दूतैरिदमूचुस्तथैव च । कुर्वंतु गमन शीघ्र वनाय भवदादयः ९ इत्थं निराकृताः स्वामिन्यदा तद्वनमागताः । अहं तदा प्रभृत्याहो न द्रक्ष्यामि भवादृशान् १० यद्यस्ति व्रतमेकं हि सर्वसकष्टनाशनम् । तद्व्रत कथय ब्रह्मन्ननुग्राह्योऽस्मि सुव्रत ११ इत्युक्तव तं राजानं सर्वसकष्टनाशनम् । उवाच प्रीणयन्व्यासो धर्मज्ञं मेदिनीपतिम् १२ व्यास उवाच । नास्ति भूमंडले राजेंस्त्वत्समो धर्मतत्परः ।

कथयामि व्रतं ते ऽद्य व्रतानामुत्तमोत्तमम् १३ संकष्टनाशनं नित्यं शुभदं फलदं भुवि । यत्कृत्वा सर्वकार्याणां निष्पत्तिर्जायते ध्रुवम्
१४ विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । प्रोषिता या पुरंध्री च करोति व्रतमुत्तमम् १५ ईप्सितं लभते सर्वं पतिना सह
मोदते । संकटेऽपि यदा क्षिप्तो मानवो ग्रहपीडितः १६ साम्राज्ये दीक्षितो नित्यं मंत्रिभिः परिवारितः । सुहृद्भिर्बंधुभिश्चैव तथा पुत्रैः
समन्वितः १७ तस्य तु प्रियकर्त्री च पत्नी गुणवती प्रिया । नाम्ना रत्नावलीत्यासीत्पतिव्रतपरायणा १८ तयोः परस्परं प्रीतिरभवच्च
गुणाश्रया । कदाचिद्दैवयोगेन हृतं राज्यं च वैरिभिः १९ कोशो बलं चापहृतं विध्वस्तो बंधुभिः सह । रत्नावल्या तया साध्व्या निर्गतो
भूमिवल्लभः २० वने क्षुधार्तः क्रमितो ह्येकवासस्तृषार्दितः । इतस्ततश्चरन्राजन्नातपेनातिपीडितः २१ एकाकी वनमासाद्य तया सार्द्धं यु-
धिष्ठिर । सूर्ये चास्ताचलं याते अरण्ये च शिवार्दिते २२ व्याघ्राश्च चुक्रुशुस्तत्र पर्जन्योपि ववर्ष ह । कंटकैः क्लेशिता राज्ञी दुःखदार्क्यं द-
पीडिता २३ तां विलोक्य नृपश्रेष्ठो दुःखेनैव तु पीडितः । ततः प्रभातसमये मार्कंडेयं महामुनिम् २४ ददर्श राजा तत्रैव विस्मयावि-
ष्टमानसः । उपगम्य शनैस्तं तु दंडवत्पतितो भुवि २५ अब्रवीद्वचनं राजा मार्कंडेयं महामुनिम् २६ किं कृतं हि मया स्वामिन्दुष्कृतं कथ-
यस्व तत् । केन कर्मविपाकेन राज्यलक्ष्मीः पराङ्मुखी २७ मार्कंडेय उवाच । शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि यत्त्वया पूर्वजन्मनि । पूर्वं हि लुब्धक-
श्चासीर्गतो ऽसि गहनं वनम् २८ मृगशार्दूलशशकान् हन्यमानो वने तदा । तस्मिन्रात्रौ भ्रमन्राजन् चतुर्थ्यां माघकृष्णके २९ दृष्टं शुभं च
कृष्णायास्तडागं पृथु निर्मलम् । तत्तीरे नागकन्यानां समूहं रक्तवाससाम् ३० गणेशं पूजयंतीनां दृष्टवान्नियमव्रतम् । उपगम्य शनैस्तत्र

१ मानवः मनुवंशसमुद्भवः कश्चिद्भूपतिः ।

पृष्टं तासां त्वया विभो ३१ आर्याः किमेतन्मे सर्वं कथयध्वं हि तत्वतः ॥ नागकन्या ऊचुः । पूजयामो गणपतिं व्रतं सिद्धिप्रदायकम् ३२ शांतिदं पुष्टिदं नित्यं सर्वव्याधिविनाशनम् । पुनः पृष्टं त्वया तत्र किं दानं पूज्यते ऽत्र कः ३३ स्त्रिय ऊचुः । यदा चोत्पद्यते भक्तिर्मासि पूज्यो गणाधिपः । कृष्णायां च चतुर्थ्यां वै रक्तपुष्पैः प्रपूजयेत् ३४ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैरन्यैर्भक्तिसमन्वितैः । विविधान्मोदकान्कृत्वा पूरिका घृतपाचिताः ३५ नैवेद्यं षड्रसं सर्वं गणेशाय निवेदयेत् । ततो गृहीतं राजेंद्र त्वया सकष्टनाशनम् ३६ अभवद्धनधान्य वै पुत्रपौत्रसमन्वितम् । कस्मिंश्चित्समये राजन् धनमत्तेन सिद्धिदम् ३७ विस्मृतं तद्व्रतं सर्वं त्वया यत्नेन भूतिदम् । ततः प्राप्तं हि पचत्वं त्वया प्राणविनाशनम् ३८ तत्प्रभावाद्राजकुले विशाले प्राप्तमुत्तमम् । त्वया जन्म नृपश्रेष्ठ राज्यं प्राप्तं त्वया विभो ३९ सुहृन्मित्रप्रियायुक्त प्राप्तो ऽसि विपुलं वसु । कृतावज्ञा व्रतस्यांते तस्मात्तं फलमीदृशम् ४० राजोवाच । अधुना क्रियते स्वामिन्कथ्यतां मम सद्व्रतम् । यत्कृत्वा सकलं राज्यं प्राप्यते च मया पुनः ४१ ऋषिरुवाच । व्रतसंकल्पमाशु त्वं कुरु राजन्नृपोत्तम । प्राप्स्यसि त्वं हि राज्यं च संदेहं मा कुरु प्रभो ४२ इत्युक्त्वा स मुनिश्रेष्ठो ह्यंतर्धानमगात्तत । मुनेस्तद्वचनं श्रुत्वा व्रतसंकल्पमातनोत् ४३ राजा ऽकरोन्मुनिप्रोक्तं सकलं तद्व्रतं शुभम् । आयाताः सकलास्तस्य मंत्रिभृत्याश्च सैनिकाः ४४ समाययौ नृपश्रेष्ठस्तत्क्षणात्स्वयमेव हि । लब्ध्वा स्वकीयं राज्यं च गणेशस्य प्रसादतः ४५ बुभुजे मेदिनीं राजा पुत्रपौत्रसमन्वितः । तस्मात्त्वमपि राजेंद्र कुरु सकष्टनाशनम् ४६ व्रतं सिद्धिप्रदं नृणां स्त्रीणां चैव विशेषतः ॥ युधिष्ठिर उवाच सविस्तरं व्रतं ब्रूहि कृपया कष्टनाशनम् ४७ व्यास उवाच । यदा सक्लेशितो राजन् दुःखैः सकष्टदारुणैः । पुमान्कृष्णचतुर्थ्यां तु तदा पूज्यो गणाधिपः ४८ श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां तु विधूदये ।

तस्मिन्दिने व्रतं ग्राह्यं संकष्टाख्यं युधिष्टिर ४९ माघे वा कृष्णपक्षे तु चतुर्थी स्याद्विधूदये । तस्मिन्दिने व्रतं ग्राह्यं संकष्टाख्यं नृपोत्तम
५० प्रातः शुचिर्भवेत्सम्यग्दंतधावनपूर्वकम् । " निराहारो ऽद्य देवेश यावच्चंद्रोदयो भवेत् ५१ भोक्ष्यामि पूजयित्वाऽहं गणेशं शरणंगतः । "
एवमादौ तु संकल्प्य स्नात्वा शुक्लतिलैः शुभैः ५२ आह्निकं तु विधायैवं पूजां च कुरु सुव्रत । यथाशक्त्या तु सौवर्णीं प्रतिमां च वि-
धाय च ५३ सौवर्णे राजते ताम्रे मृन्मये वा ऽथ शक्तितः । कुंभे पुष्पैः फलैः पूर्णे देवं तत्रैव विन्यसेत् ५४ शुभे देशे न्यसेत्कुंभं वस्त्रं त-
त्र निधाय च । पद्ममष्टदलं कृत्वा गंधाद्यैः पूजयेत्ततः ५५ रक्तपुष्पैश्च धूपैश्च एभिर्नामपदैः पृथक् । आवाहनं गणेशाय आसनं विघ्नना-
शिने ५६ पाद्यं लंबोदरायेति अर्घ्यं चंद्रार्धधारिणे । विश्वप्रियायाचमनं स्नानं च ब्रह्मचारिणे ५७ वक्रतुंडायोपवीतं वस्त्रं सर्वप्रदाय च । चंद-
नं रुद्रपुत्राय पुष्पं च गुणशालिने ५८ भवानीप्रियकर्त्रे च धूपं दद्याद्यथाविधि । दीपं रुद्रप्रियायेति नैवेद्यं विघ्ननाशिने ५९ तांबूलं सि-
द्धिदायेति फलं संकष्टनाशिने । इति नामपदैः पूजां कृत्वा मासयमाञ्छृणु ६० श्रावणे सप्त लड्डूकान्नभस्ये दधिभक्षणम् । आश्विने चो-
पवासं च कार्तिके दुग्धपानकम् ६१ मार्गे मासि निराहारं पौषे गोमूत्रपानकम् । तिलानष्टशतं माघे फाल्गुने घृतशर्कराम् ६२ चैत्रे मा-
सि पंचगव्यं दूर्वारसं तु माधवे । ज्येष्ठे घृतं पलं भोज्यमाषाढे मधुभक्षणम् ६३ इति मासयमान्कृत्वा नरो मुच्येत संकटात् । भुंजी-
याद्वा तथा सप्त ग्रासान्वा स्वेच्छया सुखम् ६४ अशक्तश्चेत्ततः सिद्धिर्भविष्यति न संशयः । एवं पूजा प्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः ६५
नानाभक्ष्यादिसंयुक्तमुपहारं प्रकल्पयेत् । मोदकान्कारयेद्राजंस्तिलजान्दशसंख्यकान् ६६ देवाग्रे स्थापयेत्पंच दश विप्राय दापयेत् । पूजयित्वा
तु तं विप्रं भक्तिभावेन देववत् । दक्षिणां च यथाशक्त्या दत्त्वा पंचैव मोदकान् ६७ संसारपीडाव्यथितं हि मां सदा संकष्टभूतं सुमुख

प्रसीद । त्वं त्राहि मां नाशय कष्टसंघान्नमो नमः कष्टविनाशनाय ६८ इति समार्घ्य देवेशं चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चा
द्गणेशप्रीतये सदा ६९ स्वयं भुंजीत पंचैव मोदकान्वंधुभिः सह । अशक्तो त्वेकमन्नं वा भुंजीयाद्दधिना सह ७० अथवा भोजनं कार्य-
मेकवारं हि पांडव । भूमिशायी जितक्रोधो लोभदंभविवर्जितः ७१ सोपस्करां च प्रतिमामाचार्याय निवेदयेत् ७२ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ
स्वस्थाने परमेश्वर । व्रतेनानेन सुप्रीतो यथोक्तफलदो भव ७३ एवं व्रतं प्रकर्तव्यं चतुर्थ्यां मासकृष्णके । गाणपत्यं तथा कार्यं सर्वशा
स्त्रविशारदम् ७४ आचार्यं वरयेदादौ यथोक्तविधिना ऽर्चयेत् । एकविंशतिविप्रान्वै वस्त्रालंकारभूषणैः ७५ पूजयेद्गोहिरण्याद्यैर्मोदकैश्चैव
होमयेत् । अष्टोत्तरसहस्रं तु शतं चाष्टाधिकं तथा ७६ अष्टाविंशतिरष्टौ वा वेदोक्तैस्तिलसर्पिषा । सपत्नीकं सुवर्णाद्यैर्गोभूवस्त्रादिभूषणैः ७७
छत्रं चोपानहौ दद्यात्कमंडलुगृहादिभिः । आचार्यं पूजयेद्राजन्गणेशस्य तु तुष्टये ७८ एवं कृत्वा विधानेन प्रसन्नो नात्र संशयः । प्रति
मासं तु यः कुर्यात्त्रीण्यब्दान्येकमेव वा ७९ अथवा जन्मपर्यंतं तस्य तु स्व कदा च न । दारिद्र्यं न भवेत्तस्य संकटं न भवेदिह ८० व
त्सरांते द्वादशान्वै ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः । विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान्सौभाग्यं च सुवासिनी
८१ शृण्वंति ये व्रतमिदं शुभमीदृशं हि ते वै सुखं भुवि मनोव्रतपूर्णकामाः । नित्यं भवति ललनाः पुरुषाः सुखिन्यस्ते पुत्रपौत्रधनधा
न्ययुताः पृथिव्याम् ८२ एवमुक्त्वा ततो व्यासस्तत्रैवांतरधीयत । युधिष्ठिरस्तु तत्सर्वमकरोद्राजसत्तमः ८३ तेन व्रतप्रभावेण स्वं राज्यं
प्राप्तवान्नृपः । हत्वा रिपून्कुरुक्षेत्रे स्वराज्यमलभन्नृपः ८४ ॥ इति श्रीनारदीयपु० कृष्णचतुर्थीसंकष्टहरव्रतकथासंपूर्णा ॥ ॥ अथ अं
गारकचतुर्थीव्रतकथा ॥ ॥ इंद्र उवाच । अंगारकचतुर्थ्यां च विशेषो ऽभिहितः कुतः । वद मे कृपया ब्रह्मन् प्रश्रयाभियमेन च ॥ शृण्वतो

न च मे तृप्तिर्गजाननकथां शुभाम् १ ब्रह्मोवाच । अंगारकचतुर्थ्यास्तु महिमानं महीपते । शृणुष्वावहितो भूत्वा कथयामि तवाग्रतः २ अवंतीनगरे राजन्भरद्वाजो महामुनिः । वेदवेदांगवित्प्राज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः ३ अग्निहोत्ररतो नित्यं शिवध्याने च तत्परः । नदीतीरे गतस्तिष्ठन्ननुष्ठानरतो मुनिः ४ अकस्मात्कामिनीं दृष्ट्वा कामासक्तोऽभवन्मुनिः । कामबाणाभिभूतः सन्निपपात महीतले ५ अतिविह्वलगात्रस्य तस्य रेतस्तदाऽस्खलत् । प्रविष्टं तस्य तद्रेतः पृथिवीबिलमध्यतः ६ तत एकः कुमारोऽभूज्जपाकुसुमसन्निभः । तं धरित्री स्नेहवशात्पालयामास सादरम् ७ जनुः स्वं तेन धन्यं स मन्यते पितरौ कुलम् । ततः स सप्तवर्षस्तां पप्रच्छ जननीं निजाम् ८ मंहितो हि कथं मार्त्यानुपं[1] देहमास्थितः । कश्च मे जनको मातस्तन्ममाचक्ष्व सांप्रतम् ९ धरोवाच । भरद्वाजमुने रेतः स्खलितं मयि संगतम् । ततो जातोऽसि रे पुत्र वर्धितोऽसि मया शुभम् १० सूत उवाच । तर्हि तं मे मुनिं मातर्दर्शयस्व तपोनिधिम् ॥ ब्रह्मोवाच । तमादाय तदा देवी भरद्वाजं जगाम सा ११ भरद्वाजं नमस्कृत्य तद्वीर्यप्रभवं सुतम् । वर्धितं तं पुरोधाय स्वीकुरुष्व मुनेऽधुना[2] १२ तदाज्ञया ययौ धात्री स्वधाम रुचिरं तदा । भरद्वाजः सुतं लब्ध्वा मुमुदे चालिलिंग तम् १३ आघ्राय शिर उत्संगे स्थापयामास तं मुदा । मुहूर्ते शुभलग्ने च चकारोपनयं मुनिः १४ वेदशास्त्राण्युपादिश्य गणेशस्य मनुं शुभम् । उवाच कुर्वनुष्ठानं गणेशप्रीतये चिरम् १५ संतुष्टो दास्यते कामान् सर्वांस्तव मनोगतान् । ततो मंदाकिनीतीरे पद्मासनगतो मुनिः १६ संनियम्येंद्रियाण्याशु ध्यायन् हेरंबमंतरे । जजाप परमं मंत्रं वायुभक्षो भृशं मुनिः १७ एवं वर्षसहस्रं स तपस्तेपे सुदारुणम् । माघकृष्णचतुर्थ्यां तमुदये शशिनः शुभे १८ दर्शयामास स्वं

१ 'मयि लोहितिमाकस्मान्मातुषं देहमास्थिते' इत्यन्यस्मिन्पुस्तके पाठो दृश्यते । २ स्वीकुरुष्व मुनेऽधुनेति धरोक्तिः ।

रूप गणनाथो ऽथ दिग्भुजम् । दिव्यावर भालचंद्रं नानालंकारमडितम् १९ रूप ददर्श देवस्य स बालः पुरतः स्थितम् । उत्थाय प्र णिपत्यैन तुष्टाव जगदीश्वरम् २० नमस्ते विघ्ननाशाय नमस्ते विघ्नकारिणे । सुरासुरशिरोरत्न सर्वशक्त्युपबृंहिणे २१ निरामयाय देवाय निर्गुणाय गुणच्छिदे । नमो ब्रह्मविदां श्रेष्ठ स्थितिसंहारकारिणे २२ नमस्ते जगदाधार नमस्त्रैलोक्यपालक । दयानिधे ब्रह्मविदे ब्रह्म णे ब्रह्मरूपिणे २३ लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपाय दुर्लक्षणच्छिदे नमः । इति स्तुतः प्रसन्नात्मा परमात्मा गजाननः २४ उवाच श्लक्ष्णया वाचा वर याचय बालक । एवमुक्तो भूमिपुत्रस्तत ऊचे गजाननम् २५ भौम उवाच । धन्यौ तातौ मम हि जनन दर्शनात्ते सुरेश धन्य ज्ञान कु- लमपि तथा येन दृष्टो ऽसि साक्षात् । धन्या वाणी वसति मयि या पादपद्मे च भक्तिर्जातो ऽसि त्व वरद सुलभो भक्तिभावेन देव २६ यदि तुष्टोसि देवेश स्वर्गे भवतु मे स्थितिः । अमृत पातुमिच्छामि देवैः सह गजानन २७ कल्याणकारि मे नाम ख्यातिमेतु जगत्रये । दर्शनं मे चतुर्थ्यां ते जातं पुण्यप्रद विभो २८ अतः सा पुण्यदा नित्य सर्वसंकष्टहारिणी । कामदा व्रतकर्तॄणां त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर २९ गजानन उवाच । अमृत प्राप्स्यसे सम्यग्देवैः सह धरासुत । मंगलेति च नाम्ना त्व लोके ख्यातिं गमिष्यसि ३० अगारकेति रक्तत्वाद्- सुमत्या यतः सुतः । अगारकचतुर्थी ये करिष्यति नरा भुवि ३१ तेषामब्दभवं पुण्यं संकष्टीव्रतसभवम् । निर्विघ्नता सर्वकार्ये भवि ष्यति न संशयः ३२ अवतीनगरे राजा भविष्यसि परतपः । व्रतानामुत्तम यस्मात्कृत मे व्रतमुत्तमम् ३३ यस्य सकीर्तनान्मर्त्यः सर्व कामानवाप्नुयात् ॥ ब्रह्मोवाच । इति दत्त्वा वरान्देवोऽतर्दधे द्विरदाननः ३४ ततस्तु मंगलो देव स्थापयित्वा प्रयत्नतः । शुंडामुख दश भुज सर्वावयवसुंदरम् ३५ प्रासाद कारयामास गजाननमुदावहम् । सर्वां मंगलमूर्तिं च देवदेवस्य सो ऽकरोत् ३६ ततो ऽभवत्कामद

तत्क्षेत्रं सर्वजनस्य यत्। अनुष्ठानात्पूजनाच्च दर्शनात्सर्वमोक्षदम् ३७ ततो विनायको देवो विमानवरमुत्तमम् । प्रेषयामास स्वगणान्
भौममानेतुमंतिके ३८ ते गत्वा तेन देहेन तं भौममानयन्बलात् । गणेशस्यांतिकं राजंस्तदद्भुतमिवाभवत् ३९ ततो भौमो ऽभवत्ख्यात-
त्रैलोक्ये सचराचरे । यतो भौमेन संकष्टचतुर्थी भौमसंयुताम् ४० कृत्वा प्राप्तं यथा स्वर्गे सुधापानं सुरैः सह । अतश्चांगारकयुता
चतुर्थी प्रथिता भुवि ४१ चिंतितार्थप्रदानेन चिंतामणिरिव प्रिया । प्रयातो मंगलमूर्तिः सर्वानुग्रहकारकः ४२ परिणेतुं स नगरात्पश्चि-
मे प्रथितो ऽभवत् । चिंतामणिरिति ख्यातः सर्वविघ्ननिवारणः ४३ अतः ससिद्धगंधर्वैः पूज्यते स विधूदये । ददाति वाञ्छितानर्थान्पु-
त्रपौत्रादिसंपदः ४४ इति श्रीगणेशपुराणे ब्रह्मेंद्रसंवादे अंगारकचतुर्थीव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथ पंचमीव्रतानि लिख्यंते ॥ ॥
॥ तत्र चैत्रशुक्लपंचमी कल्पादिः । चैत्रे मासि सिते पक्षे पंचम्यां पूजयेद्धरिम् ॥ तत्र दोलोत्सवं कुर्यात्पुष्पधूपैश्च पूजयेत् ॥ नारी नरो
वा राजेंद्र संतर्प्य पितृदेवताः ॥ स्रक्चंदनसमायुक्तान्ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः—इति हेमाद्रौ भविष्ये ॥ ॥ अथ श्रावणशुक्लपंचमी नागपू-
जायां परा । पंचमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता ॥ तस्यां तु तुषिता नागा इतरा सचतुर्थिका ॥ अथ नागपंचमीव्रतं हेमाद्रौ
प्रभासखंडे—। ईश्वर उवाच । श्रावणे मासि पंचम्यां शुक्लपक्षे तु पार्वति । द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्बणाः । सा तु पु-
ण्यतमा प्रोक्ता देवानामपि दुर्लभा । कुर्याद्द्वादशवर्षाणि पंचम्यां च वरानने । चतुर्थ्यामेकभुक्तं तु तस्यां नक्तं प्रकीर्तितम् । भूरिचंद्र-
मयं नागमथवा कलधौतजम् ॥ कृत्वा दारुमयं वापि ह्यथवा मृण्मयं प्रिये । हरिद्राचंदनेनैव पंच सर्पांस्तु लेखयेत् ॥ पंचम्यामर्चयेद्भ-
क्त्या नागाः पंचफणाः स्मृताः । पूजयेद्विधिवद्वीरे लाजपंचामृतैः सह ॥ करवीरैः शतपत्रैर्जातिपुष्पैश्च पद्मकैः । तथा गंधा-

...कारमहितम् १९ रूप ददर्श देवस्य स बालः पुरत स्थितम् । उत्थाय प्र

...गोल सर्वशक्त्युपबृंहिणे २१ निरामयाय देवाय

...नि ज्ञानिदे ब्रह्म

[illegible]

श्रावणे तु सिते नृप । वत्सराते यथाशक्त्या त्वन्नदानं च कारयेत् १२ ब्राह्मणानां यतीना च नागानुद्दिश्य भक्तितः । इतिहासविदे
नागं कांचनं रत्नचित्रितम् १३ गां च दद्यात्सवत्सां वै सर्वोपस्करसंयुताम् । दानकाले पठेदेतत्स्मरन्नारायणं विभुम् । सर्वगं सर्वधातारमनं-
तमपराजितम् १४ ये केचिन्मे कुले सर्पदष्टाः प्राप्ता ह्यधोगतिम् । व्रतदानेन गोविंद मुक्तिभाजो भवंतु ते १५ इत्युच्चार्याक्षतैर्युक्तं सित-
चंदनमिश्रितम् । वासुदेवाग्रतो भूप तोयं तोयेऽथ निःक्षिपेत् १६ अनेन विधिना सर्वे ये मरिष्यंति वा मृताः । सर्पतस्तेऽभियास्यंति स्व-
र्गंति नृपसत्तम १७ व्रती सर्वान्समुद्धृत्य कुलजान्कुरुनंदन । प्रयाति विष्णुसान्निध्यं सेव्यमानो ऽप्सरोगणैः १८ वित्तशाठ्यविहीनो यः
सर्वमेतत्फलं लभेत् १९ नक्तेन भक्तिसहिताः सितपंचमीषु ये पूजयंति भुजगान्कुसुमोपहारैः । तेषां गृहेष्वभयदा हि भवंति सर्पा अर्चा-
न्विता मणिमयूखविभासितांगाः २० ये तस्यां पूजयंतीह नागान्भक्तिपुरःसराः । न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति किञ्चन ॥२१॥ इति नाग-
दष्टपंचमीव्रतं भविष्योक्तम् ॥ ॥ अथ भाद्रपदशुद्धपंचम्यां ऋषिपंचमीव्रतम् ॥ तच्च मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यम् । तथा, माधवीये हा-
रीतः—पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिः-इति ॥ दिनद्वये तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वविद्धायां कार्यमिति मदनरत्ने ॥ प्राप्य भाद्रपदे मासि
शुक्लपक्षस्य पंचमी ॥ तस्यां मध्याह्नसमये नद्यादौ विमले जले ॥ कृत्वा ऽपामार्गसमिध अष्टोत्तरशताधिकाः ॥ अथवा कारयेत्सम्य दं-
तधावनमादितः ॥ वनस्पतिप्रार्थना—आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ संप्रार्थ्यानेन
मंत्रेण कुर्याद्वै दंतधावनम्॥तत्र मंत्रः—मुखदुर्गंधिनाशाय दंतानां च विशुद्धये । ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वे ऽहं दंतधावनम् ॥ अनेन दंतान्संशो-
ध्य स्नायान्मृत्स्नानपूर्वकम्॥ततः पंचगव्यंप्राशयेत् । तद्विधिः । देशकालौ संकीर्त्य, अमुककायशुद्ध्यर्थं पंचगव्यमहं करिष्ये । गायत्र्या गृह्य गोमूत्रं

दिधूपैश्च पूजयेन्नागपंचकम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्घृतपायसमोदकैः । अनंतं वासुकिं शेषं पद्मं कंबलमेव च ॥ तथा कर्कोटक नागं धृतंगाश्वतरं तथा । धृतराष्ट्रं शंखपालं कालीयं तक्षकं तथा ॥ पिंगलं च महानागं मासि मासि प्रकीर्तिताः । व्रतस्यांते पारणं स्यात्क्षीरैर्ब्राह्मणभोजनम् ॥ सुवर्णभारनिष्पन्नं नागं दद्याच्च गां तथा ॥ तथा वस्त्राणि देयानि द्विजायामिततेजसे ॥ एवं संपूजयेन्नागान् सदा भक्त्या समन्वितः ॥ विशेषतस्तु पंचम्यां पयसा पायसेन च । दिवा रात्रौ नरैस्तत्र मेदिनीखननं नहि ॥ इति प्रभासखंडे नागपंचमीव्रतम् ॥ ॥ अत्रैव नागदष्टव्रतम् ॥ हेमाद्रौ भविष्योत्तरपुराणे—॥ सुमंत उवाच । नागदष्टो नरो राजन् प्राप्य मृत्युं व्रजत्यधः । अधो गत्वा भवेत्सर्पो निर्विषो नात्र संशयः १ शतानीक उवाच । नागदष्टः पिता यस्य भ्राता वा दुहितापि च । माता पुत्रोथ वा भार्या कर्तव्यं तद्वदस्व मे २ मोक्षाय तस्य विप्रेंद्र दानव्रतमुपोषणम् । ब्रूहि मे द्विजशार्दूल यद्भवेत्तत्करोम्यहम् ३ सुमंत उवाच । उपोष्या पंचमी सम्यङ्नागानां बलवर्धिनी । समकमेकं यावच्च विधानं शृणु भारत ४। समकं संवत्सरम्, उपोष्येति दिवाभोजनाभावः, तस्यां नक्तमित्यग्रे नक्तोक्तेः ॥ श्रावणे मासि पंचम्यां शुक्लपक्षे नराधिप । सा ऽपि पुण्यतमा प्रोक्ता ग्राह्या सा गतिकाम्यया ५ चतुर्थ्यामेकभुक्तं च पंचम्यां नक्तमाचरेत् । कुर्याच्चांद्रमसं नागमथवा कलधौतजम् ६ - हैमं रौप्यं चेत्यर्थः ॥ अथ दारुमयं भव्यं मृन्मयं वाऽप्यशक्तितः । पंचम्यामर्चयेद्भक्त्या नागं पंचफणं तथा ७ करवीरैस्तथा पद्मैर्जातिपुष्पैः सुगंधिभिः । गंधधूपैश्च नैवेद्यैः स्नाप्य क्षीरादिभिर्नृप ८ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्घृतपायसमोदकैः । अनंतं वासुकिं शंखं पद्मं कंबलमेव च ९ तथा कर्कोटकं नागं नागमश्वतरं नृप । धृतराष्ट्रं शंखपालं कालीयं तक्षकं तथा १० पिंगलं च तथा नागं मासि मासि क्रमाद्यजेत् । पूजयित्वा प्रयत्नेन पंचम्यां नक्तभुग्भवेत् ११ एवं द्वादशकृत्वा वै

वत्सरांते यथाशक्त्या त्वन्नदानं च कारयेत् १२ ब्राह्मणानां यतीना च नागानुद्दिश्य भक्तितः । इतिहासविदे
श्रावणे तु सिते नृप । नागं कांचनं रत्नचित्रितम् १३ गां च दद्यात्सवत्सां वै सर्वोपस्करसंयुताम् । दानकाले पठेदेतत्स्मरन्नारायणं विभुम् । सर्वगं सर्वधातारमनं-
तमपराजितम् १४ ये केचिन्मे कुले सर्पदष्टाः प्राप्ता ह्यधोगतिम् । व्रतदानेन गोविंद मुक्तिभाजो भवंतु ते १५ इत्युच्चार्याक्षतैर्युक्तं सित-
चंदनमिश्रितम् । वासुदेवाग्रतो भूप तोयं तोयेऽथ निःक्षिपेत् १६ अनेन विधिना सर्वे ये मरिष्यंति वा मृताः । सर्पतस्तेऽभियास्यंति स्व-
र्गतिं नृपसत्तम १७ व्रती सर्वान्समुद्धृत्य कुलजान्कुरुनंदन । प्रयाति विष्णुसान्निध्यं सेव्यमानोऽप्सरोगणैः १८ वित्तशाठ्यविहीनो यः
सर्वमेतत्फलं लभेत् १९ नक्तेन भक्तिसहिताः सितपंचमीषु ये पूजयंति भुजगान्कुसुमोपहारैः । तेषां गृहेष्वभयदा हि भवंति सर्पा अर्चा-
न्विता मणिमयूखविभासितांगाः २० ये तस्यां पूजयंतीह नागान्भक्तिपुरःसराः । न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति किञ्चन ॥२१॥ इति नाग-
दष्टपंचमीव्रतं भविष्योक्तम् ॥ ॥ अथ भाद्रपदशुद्धपंचम्यां ऋषिपंचमीव्रतम् ॥ तच्च मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यम् । तथा, माधवीये हा-
रीतः—पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिः-इति ॥ दिनद्वये तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वविद्धायां कार्यमिति मदनरत्ने ॥ प्राप्य भाद्रपदे मासि
शुक्लपक्षस्य पंचमी ॥ तस्यां मध्याह्नसमये नद्यादौ विमले जले ॥ कृत्वाऽपामार्गसमिध अष्टोत्तरशताधिकाः ॥ अथवा कारयेत्सप्त दं-
तधावनमादितः ॥ वनस्पतिप्रार्थना—आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ संप्रार्थ्यानेन
मंत्रेण कुर्याद्वै दंतधावनम्॥तत्र मंत्रः—मुखदुर्गंधिनाशाय दंतानां च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दंतधावनम् ॥ अनेन दंतान्संशो-
ध्य स्नायान्मृत्स्नानपूर्वकम्॥ततः पंचगव्यंप्राशयेत्। तद्विधिः। देशकालौ संकीर्त्य, अमुककायशुद्ध्यर्थं पंचगव्यमहं करिष्ये। गायत्र्या गृह्य गोमूत्रं

गंधद्वारेति गोमयम्॥आप्यायस्वेति च क्षीर दधिक्राव्णेति वै दधि॥शुक्रमसिज्योतिरसिअमृतमसिनामधामसि ॥ प्रिय देवानामनाधृष्टदेवयजनमसि। इत्याज्यम्॥ देवस्यत्वेति कुशोदकम्। ततः प्रणवेनालोड्य, आपोहिष्ठेति निर्मंथयेत्। ततः प्रणवेनाभिमंत्र्य। तस्यचतुर्भागं होमयेत्। सप्तपत्राः शुभा दर्भा अक्षताश्चैव सस्थिता ॥ तेनैवोद्धृत्य होतव्यमेभिर्मंत्रैः पृथक्पृथक् ॥ तद्यथा—इरावतीति भूम्यै। इदविष्णुरिति विष्णवे। मानस्तोकेतिरुद्रम्। शन्नोदेवीत्यद्भ्यः। ब्रह्मजज्ञानमिति ब्रह्मणे। अग्नयेस्वाहेत्यग्नये। सोमायस्वाहेति सोमाय। गायत्र्यासूर्याय। प्रजापतेनत्वेति समस्तव्याहृतिभिर्वा प्रजापतये प्रणवेन प्रजापतये च, अग्नये स्विष्टकृत्कृत्वा प्रणवेन प्राशयेत्। होमाकरणपक्षे उक्तमंत्रैः पचगव्य सम्पाद्य प्राशयेत्। तूष्णीं केशवेति नाममत्रेण वा स्त्रीणा पचगव्यप्राशनम् ॥ व्रतविधिः— । नद्यादिके तदा स्नात्वा कृत्वा नियममेव च ॥ ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्रा वापि वरानने ॥ कृत्वा नैमित्तिक कर्म गत्वा निजगृहं पुनः। वेदीं सम्यक् प्रकुर्वीत गोमयेनोपलिप्यताम् ॥ रगवल्लीसमायुक्ते सर्वतोभद्रमडले। अव्रणं सजलं कुंभं ताम्रमृन्मयमेव च ॥ सस्थाप्य वस्त्रसयुक्त कण्ठदेशे सुशोभितम्। पचरत्नसमायुक्तं फलगधाक्षतैर्युतम् ॥ सहिरण्य समासाद्य ताम्रेण पटलेन वा ॥ वशमृन्मयपात्रेण यवपूर्णेन चैव हि ॥ आच्छादयेच्चैलेन लिखेदष्टदलं ततः ॥ तत्र सप्तऋषिन्दिव्यान्भक्तियुक्तः प्रपूजयेत् ॥ अथ संकल्पः ॥ मासपक्षाद्युल्लिख्य, मम ज्ञाताज्ञाततुसंपर्कजनितदोषपरिहारार्थमरुंधतीसहितकश्यपादिसप्तऋषिप्रीत्यर्थं ऋषिपूजनमहं करिष्ये ॥ अथ पूजाविधिः ॥ आगच्छंतु महाभागाश्चतुर्वेदपरायणाः। यावद्व्रतमिदं कुर्वे कृपया भवतामहम्। आवाहनम् ॥ मूर्ति ब्रह्मण्यदेवस्य ब्रह्मण्य तेज उत्तमम्। सूर्यकोटिप्रतीकाशमृषिवृंदं विचिंतये। ध्यानम् ॥ ऋग्यजुःसामवेदानां स्वरूपेभ्यो नमो नमः। पुराणपुरुषेभ्यो हि देवर्षिभ्यो नमो नमः। आसनम्। गंधपुष्पाक्ष-

तैर्युक्तं पाद्यं गृह्णंतु भो द्विजाः । प्रसादं कुरुत प्रीतास्तुष्टाः संतु सदा मम । पाद्यम् ॥ नभस्ये शुक्लपंचम्यामर्चिता ऋषिसत्तमाः । दहंतु पापं मे सर्वं गृह्णंत्वर्घ्यं नमो नमः । अर्घ्यम् ॥ लोकानां तुष्टिकर्तारो यूयं सर्वे तपोधनाः । नमो वो धर्मविज्ञेभ्यो महर्षिभ्यो नमो नमः । आचमनम् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम् । पंचामृतेन स्नपनं करिष्ये ऋषिसत्तमाः । पंचामृतस्नानम् ॥ मंदाकिन्याश्च यमुनागोतम्योः सुंदरं जलम् । कृष्णातापीनमर्दानां स्नानार्थं प्रति० । स्नानम् ॥ सर्वे नित्यं तपोनिष्ठा ब्रह्मज्ञाः सत्यवादिनः । वस्त्राणि प्रतिगृह्णंतु मुक्तिदाः संतु मे सदा । वस्त्राणि ॥ नानामंत्रैः समुद्भूतं त्रिवृतं ब्रह्मसूत्रकम् । प्रत्येकं च प्रयच्छामि ऋषयः प्रतिगृह्यताम् । उपवीतानि ॥ कुंकुमागरुकर्पूरसुगंधैर्मिश्रितं शुभम् । गंधाढ्यं चंदनं दिव्यं गृह्णंतु ऋषिसत्तमाः । गंधम् ॥ शुभ्राक्षताश्च संपूर्णाः प्रक्षाल्य च नियोजिताः । शोभायै वो मया दत्ता गृह्यंतां मुनिसत्तमाः । अक्षताः ॥ मालतीचंपकादीनि तुलस्यादीनि वै द्विजाः । मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृ० पुष्पाणि ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यः सुमनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति० । धूपम् ॥ आज्यंचवर्तिसंयुक्तं० । दीपम् ॥ नानापक्वान्नसंयुक्तं रसैः षड्भिः समन्वितम् । गृह्णंतु ऋषयः सर्वे नैवेद्यमर्पितं मया । नैवेद्यम् ॥ मध्येपानीयम् ॥ उत्तरापो० ॥ हस्तप्रक्षाल० ॥ मुखप्र० ॥ करोद्वर्तनार्थेचंद० ॥ नमो वेदविदः श्रेष्ठा ऋषयः सूर्यसन्निभाः । गृह्णंत्विदं फलं तुष्टा मया दत्तं हि भक्तितः । फलम् ॥ पूगीफलं० । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च । तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदे पदे । प्रदक्षिणाम् ॥ नमोस्तु ऋषिवृंदेभ्यो देवर्षिभ्यो नमो नमः । सर्वपापहरेभ्यो हि वेदविद्भ्यो नमो नमः । नमस्कारान् ॥ एते सप्तर्षयः सर्वे भक्त्या संपूजिता मया । सर्वं पापं व्यपोहंतु ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम् । प्रार्थना ॥ कृतायाः पूजायाः सांगतासिद्ध्यर्थं ब्राह्मणाय वायनप्रदानं क०।

तथा च ब्राह्मणपूजनंक० । वायन फलसंयुक्तं सघृतं दक्षिणान्वितम्॥द्विजवर्याय दास्यामि व्रतसंपूर्णहेतवे।भवंतः प्रतिगृह्णंतु ज्योतीरूपास्तपो
धनाः। उभयोस्तारकाःसंतु वायनस्य प्रदानतः। वायनम्॥न्यूनातिरिक्तकर्माणि मया यानि कृतानि च। क्षमध्वं तानि सर्वाणि यूयं सर्वे तपोध
नाः॥यांतुदेव०विसर्जनम्॥ एवं संपूज्य विधिवद्भक्तियुक्तेन चेतसा। तेषामग्रे च श्रोतव्यं शुभचैव कथानकम्॥ इतिपूजाविधिः॥ अथकथा॥ हे
मांद्रीव्रह्महि-सिताश्व उवाच। श्रुतानि देवदेवेश व्रतानि सुबहूनि च।सांप्रत मे समाचक्ष्व व्रतं पापप्रणाशनं १ ब्रह्मोवाच।शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि
व्रतानामुत्तमं व्रतम्। ऋषिपंचमीति विख्यातं सर्वपापहरं परम् २ येन चीर्णेन राजेंद्र नरकं चैव पश्यति। तत्रैवोदाहरिष्यति इतिहासं
पुरातनम् ३ वैदर्भे च द्विजवर उत्तंको नाम नामतः। तस्य भार्या सुशीलेति पतिव्रतपरायणा ४ तस्या अपत्ययुगुलं पुत्रो हि सुविभू
षणः। अधीतवान् सुतस्तस्य वेदान्सांगपदक्रमान् ५ समानेन कुलीनेन सुता चापि विवाहिता। विवाहिता च सा दैवाद्वैधव्य प्राप स
त्तमा ६ सवीर्त्वं पालयती सा आस्ते निजपितुर्गृहे। तस्या दुःखेन सततः सुतं संस्थाप्य वेश्मनि ७ भगातीरवन प्राप्तः कदाचित्तु तयास
ह। स तत्राध्यापयामास शिष्यान्वेद द्विजोत्तमः ८ सुता च कुरुते तस्य पितुः शुश्रूषण परम्। पितुः शुश्रूषणं कृत्वा परिश्रांता कदाचन ९
निशीथे किल संसुप्ता कृमिराशिरजायत। तथाविधां तु तां दृष्ट्वा विवर्णां प्रस्तरस्थिताम् १० शिष्या निवेदयामासुस्तन्मातुः करुणान्वि
ताः। न जानीमो वय किंचिद्देवीं साध्वीं तथाविधाम्। ११ कृमिराशिमयी जाता मातः संप्रति दृश्यते। वज्रपातसम श्रुत्वा तच्छिष्यै
श्च उदाहृतम् १२ सा भ्रांतमानसा शीघ्रं तत्समीपमुपागमत्। सा तां तथाविधां दृष्ट्वा विललाप सुदुःखिता १३ उरश्च ताडया
मास सुतरां मोहमाप च। क्षणेन प्राप्य चैतन्यमुत्थाप्य प्रतिमृज्य च १४ समालंब्य च बाहुभ्यां निन्ये तत्पितुरंतिकम्। स्वामिन्कथ

य मे साध्वी केन दुष्कृतकर्मणा १५ निशीथे च प्रसुप्ता च जायते कृमिसंकुला १६ एवं श्रुत्वा ततो वाक्यं ऋषिर्ध्यानपरायणः । ज्ञा-
त्वा निवेदयामास तस्याः प्राग्जन्मचेष्टितम् १७ ऋषिरुवाच । प्रागियं सप्तमे ऽतीते जन्मनि ब्राह्मणी ह्यभूत् । रजस्वला च संजाता भां-
डादीन्यस्पृशत्तदा १८ अस्यास्तु पाप्मना तेन जायते क्रिमिवद्वपुः । रजस्वलायाः पापेन युक्ता भवति सा ऽनघे १९ प्रथमे ऽहनि चां-
डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी । तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थे ऽहनि शुद्ध्यति २० तदा तया सखीसंगाद्व्रतं दृष्ट्वाऽवमानितम् । दृष्टव्रतप्रभावे-
ण जाता द्विजकुलेऽमले २१ अवमानाद्व्रतस्यास्य कृमिराशिमयी ऽधुना । एतत्ते कथितं सर्वं कारणं दुष्कृतस्य च २२ सुशीलोवाच । म-
दर्शनादपि जन्म स्याद्विप्राणां निर्मले कुले । जन्म युष्मद्विधानां हि जायते ब्रह्मतेजसाम् २३ अवज्ञया प्रजायंते निशीथे कृमिराशयः । म-
हाश्चर्यं कथं नाथ तद्व्रतं कथयस्व मे २४ ऋषिरुवाच । सुशीले शृणु तत्सम्यक् व्रतानामुत्तमं व्रतम् । येन चीर्णेन सहसा पापादस्मात्प्र-
मुच्यते २५ दुःस्वप्नयाच्च मुच्येत नारी सौभाग्यमाप्नुयात् । कल्याणानि विवर्द्धंते संपदश्च निरापदः २६ ॥ ॥ अथ भविष्योक्तकथा ॥
युधिष्ठिर उवाच । श्रुतानि देवदेवेश व्रतानि सुबहूनि च । सांप्रतं त्वन्यदाचक्ष्व व्रतं पापप्रणाशनम् १ श्रीकृष्ण उवाच । अथान्यदपि
राजेंद्र पंचमीमृषिसंज्ञिताम् । कथयिष्यामि यत्कृत्वा नारी पापात्प्रमुच्यते २ युधिष्ठिर उवाच । कीदृशी पंचमी कृष्ण कथं च ऋषि-
संज्ञिता । पातकान्मुच्यते कस्मान्नारी यदुकुलोद्भव ३ पापानि च बहून्यत्र विद्यंते किल केशव । कथं वा ऋषिपंचम्यां नारी कस्मात्प्र-
मुच्यते ४ कृष्णउवाच । अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि या स्त्री जाता रजस्वला । दुष्टा स्पृशति भांडानि गृहकर्मणि संस्थिता ५ प्राप्नोति सा म-

१ ऋषिमुखाद्व्रतविधिं श्रुत्वा कन्यादोषमुक्त्यै सा तथैवाकरोदित्यर्थः । भविष्यपुराणोक्तव्रतकथासामीप्यादाम्रेडितभीत्या हेमाद्रयुक्तव्रतविधिस्तत्कथा चात्र ग्रंथकर्त्रा नोक्तेति ज्ञेयम् ।

द्यापाप सत्यं सा नरक व्रजेत् । शृणु तत्कारण यस्माद्वर्जनीया रजस्वला ६ प्रोत्सार्य गृहतो दूर चातुर्वर्ण्येन भारत । ब्रह्महत्यां पुरा शक्रो वृत्र हत्वा ससवाप च ७ तया वै राजशार्दूल त्रीडितो वृत्रसूदनः । ब्रह्माणं समुपागच्छदात्मनः शुद्धिकारणात् ८ शुद्धिं शक्रस्य राजेंद्र महेष्टेनांतरात्मना । विभज्य ब्रह्महत्यां तु चतुर्धा च चतुर्मुखः ९ प्राक्षिपद्राजशार्दूल चतुःस्थानेषु वै तदा । वह्नौ प्रथमज्वालासु न दीषु प्रथमोदके १० पर्वताग्रे वृक्षजातौ नारी रजसि पार्थिव । ततो रजस्वला नारी प्रोत्सार्या च प्रयत्नतः ११ ब्रह्मणः शासनात्पार्थ चातुर्वर्ण्येन सर्वदा । प्रथमेऽहनि चांडाली द्वितीये ब्रह्मघातकी १२ तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुध्यति । भर्तुः शुद्धा चतुर्थेह्नि दैवे पित्र्ये च पचमे १३ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि जात संपर्कपातकम् । तत्पापसक्षयार्थं वै कार्येयं ऋषिपचमी १४ सर्वपापप्रशमनी सर्वोपद्रवनाशिनी । ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रस्त्रीभिः कार्या विशेषतः १५ कृष्ण उवाच । अत्रार्थे यत्पुरा व्रत प्रवक्ष्यामि कथानकम् । पुरा कृतयुगे राजा विदर्भायां बभूव ह १६ श्येनजिन्नाम राजर्षिश्चातुर्वर्ण्यानुपालकः । तस्य देशे वसन्विप्रो वेदवेदांगपारगः १७ सुमित्रो नाम राजेंद्र सर्वभूतहिते रतः । कृषिवस्या सदा युक्तः कुटुंबपरिपालकः १८ तस्य भार्या सुसाध्वी च पतिशुश्रूषणे रता । जयश्रीर्नामविख्याता बहुभृत्यसहज्जना १९ अतिथिचितान्विता सा च प्रावृट्काले सुमध्यमा । क्षेत्रादिषु रता साध्वी व्याकुलीकृतमानसा २० एकदा सा ऽऽत्मनः प्राप्तमृतुकाल व्यलोकयत् । रजस्वलापि सा राजन् गृहकर्म चकार ह २१ भांडादिन्यस्पृशद्राजन्नृतौ मासे ऽपि भामिनी । कालेन बहुना साध्वी पंचत्वमगमत्तदा २२ तस्या भर्तापि विप्रोऽसौ कालधर्ममुपेयिवान् । एवं तौ दंपती राजन्स्वकर्मवशगौ तदा २३ भार्या तस्य जयश्रीः सा ऋतुसंपर्कदोषतः । शुनियोनिसमुत्पन्ना शुनी चाभूज्जनेश्वर २४ तस्याः संपर्कदोषेण बलीवर्दो बभूव ह । एव तौ दंपती

राजन्स्वकर्मवशगौ तदा २५ ऋतुसंपर्कदोषेण तिर्यग्योनिमुपागतौ । स्वधर्माचरणाज्जातावुभौ जातिस्मरौ तथा २६ सुतस्यैव गृहे राज-
न्स्मरंतौ पूर्वपातकम् । सुमित्रस्य च पुत्रो ऽभूद्गुरुशुश्रूषणे रतः २७ सुमतिर्नाम धर्मज्ञो देवतातिथिपूजकः । अथ क्षयाहे संप्राप्ते पितुस्तु
सुमतिस्तदा २८ भार्यां चंद्रवतीं प्राह सुमतिः श्रद्धयान्वितः । अद्य सांवत्सरदिनं पितुर्मे चारुहासिनि २९ भोजनीया द्विजा भीरु पाकशु-
द्धिर्विधीयताम् । तया कृता पाकशुद्धिः सुमतेर्भर्तुराज्ञया ३० मुक्तं पायसभांडे वै सर्पेण गरलं ततः । दृष्ट्वा ब्रह्मवधाद्भीता शुनी भांडानि
सा ऽस्पृशत् ३१ द्विजभार्या च तां दृष्ट्वा उल्मुकेन जघान ह । भांडादीनि च प्रक्षाल्य त्यक्त्वा पाकं सुमध्यमा ३२ पुनः पाकं च कृत्वा तु
श्राद्धं कृत्वा विधानतः । ततो भुक्तेषु विप्रेषु नोच्छिष्टं च ददौ बहिः ३३ भूमौ क्षिप्तं तथा शुन्या उपवासस्ततो ऽभवत् । ततो रात्र्यां प्रवृत्तायां सा
शुनी क्षुधिता भृशम् ३४ बलीवर्दमुपागत्य भर्तारमिदमब्रवीत् । बुभुक्षिता ऽद्य हे भर्त्तर्न दत्तं भोजनादिकम् ३५ ग्रासादिकं च न प्राप्तं क्षुधा मां बा-
धते भृशम् । अन्यस्मिन्दिवसे पुत्रो मम लेह्यं ददात्यसौ ३६ अद्य मह्यं किमप्येष उच्छिष्टमपि नो ददौ । पायसान्ने पपाताद्य गरलं सर्पसंभवम् ३७
मया विचिंत्य मनसा मरिष्यंति द्विजोत्तमाः । संस्पृष्टं पायसं गत्वा बध्वाहं ताडिता भृशम् ३८ दुःखितं तेन मे गात्रं कटिर्भग्ना करोमि किम् । ततः
प्राह स चानड्वान् भद्रे ते पापसंग्रहात् ३९ किं करोमि ह्यशक्तोहं भारवाहो ऽद्य संस्थितः । अद्याहमात्मनःक्षेत्रे वाहितःसकलं दिनम् ४० मारितश्चा-
त्मजेनाहं मुखं बध्वा बुभुक्षितः । वृथा श्राद्धं कृतं तेन जाता ऽद्य मम कष्टता ४१ कृष्ण उवाच । तयोः संवदतोरेवं मातापित्रोश्च भारत ।
श्रुत्वा पुत्रस्तदा वाक्यं यदुक्तं च तदोभयोः ४२ ततो रजन्यां तत्कालं ददौ तस्यै च भोजनम् । पितरौ तौ विदित्वा तु दत्तवान्सुमतिस्तदा
४३ तदा ऽसौ दुःखितः पुत्रो ज्ञात्वाऽवस्थां तदा तयोः । मातापित्रोस्तु राजेंद्र तदासौ प्रस्थितो वनम् ४४ तत्र गत्वा ज्ञानवृद्धानृषीन् परमधार्मि-

कान् । प्रणिपत्याब्रवीद्वाक्य हितं चैव तदा तयोः ४५ सुमतिरुवाच । कथयध्वं विप्रवर्याः प्रश्नमेकं समाहिताः । केन कर्मविपाकेन पितरौ मे तपोधनाः ४६ इमामवस्थां संप्राप्तौ मुच्येते पातकात्कथम् ॥ कृष्ण उवाच । तदाकर्ण्य वचस्तस्य सुमतेर्दुःखितस्य च ४७ऋषिः सर्वतपो नाम सर्वज्ञः करुणान्वितः।सुमतिं प्रत्युवाचेदं तत्पित्रोर्मुक्तये तदा ४८ ऋषिरुवाच । तव माता पुरा विप्र स्वगृहे बालभावतः । प्राप्तमृतु विदित्वा तु संपर्कमकरोद्द्विज ४९ तेन कर्मविपाकेन शुनियोनिमुपागता । पिता ऽपि स्पर्शदोषेण बलीवर्दो बभूव ह ५० एतयोर्मुक्तिका मार्थं कुरु त्वमृषिपंचमीम् । भार्यया सह विप्रेंद्र ऋषीन्संपूज्य यत्नतः ५१ आचरस्व व्रत तत्र सप्तवर्षं द्विजोत्तम । अंते चोद्यापनं कुर्या द्वित्तशाठ्यविवर्जित ५२ शाकाहारस्तु कर्तव्यो नीवारैः श्यामकैस्तथा । कंदं वा ऽथ फल मूल हलकृष्टं न भक्षयेत् ५३ प्राप्य भाद्रपदे मासि शुक्लपक्षस्य पचमीम् । तस्या मध्याह्नसमये नद्यादौ विमले जले ५४ कृत्वा ऽपामार्गसमिधा दंतधावनमादितः ५५ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वनो देहि वनस्पते ५६ समाप्यानेन मंत्रेण कुर्याद्वै दंतधावनम् । मुखदुर्गंधि नाशाय दंतानां च विशुद्धये ५७ ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेहं दंतधावनम् । अनेन दंतान्संशोध्य स्नायान्मृत्स्नानपूर्वकम् ५८ तिलामलककल्केन केशान्संशोध्य यत्नतः । परिधाय नवे शुद्धे वाससी च समाहित ५९ विधाय नित्यकर्माणि दत्त्वा ह्याग्वतीमृषीन् ।- द्वारवती-मग्निहोत्रशालाम् ॥ स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या पंचामृतरसैः शुभैः ६० चंदनागरुकर्पूरैर्विलिप्य च सुगंधिभिः । पूजयेद्विविधैः पुष्पैर्गंधपुष्पादि दीपकैः६१ समाच्छाद्य शुभैर्वस्त्रैः सोपवीतैर्यथाविधि । ततो नैवेद्यसंपन्नैरर्घ्यं दद्याच्छुभैः फलैः ॥ पूजयस्व ऋषीन्दिव्यानरुंधत्या समन्वितान् ६२ कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः । जमदग्निर्वसिष्ठश्च साध्वी चैवाप्यरुंधती ६३ मंत्रेणानेन सप्तर्षीन्पूजयेत्सुसमाहितः ६४

व्रतेन ऋषिपंचम्याः कृतेनैव द्विजोत्तम । ऋतुसंपर्कजो दोषः क्षयं याति न संशयः ६५ श्रीकृष्ण उवाच । तच्छ्रुत्वा सुमतिर्वाक्यं परमं ऋषिभाषितम् । गृहमेत्य व्रतं चक्रे सभार्यः श्रद्धयान्वितः ६६ व्रतं तु ऋषिपंचम्याः सर्वपापप्रणाशनम् । कृत्वा सर्वं यथोक्तं च माता-पित्रोः फलं ददौ ६७ व्रतपुण्यप्रभावेन माता तस्य श्वयोनितः । मुक्ता नृपतिशार्दूल विमानवरसंस्थिता ६८ दिव्यांबरधरा भूत्वा गता स्वर्गं च भारत । पिता ऽपि स मृतो मुक्तः सुमतेः पशुयोनितः ६९ स्वर्गं प्राप्तो महाराज व्रतस्यास्य प्रभावतः । दिव्यांबरधरो भूत्वा गतः स्वर्गं च भारत ७० कायिकं वाचिकं वापि मानसं यच्च दुष्कृतम् । तत्सर्वं विलयं याति व्रतस्यास्य प्रभावतः ७१ यस्य यज्जायते पुण्यं तच्छृणुष्व नृपोत्तम । सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ७२ सर्वदानेषु दत्तेषु तदेतद्व्रतचारणात् । कुरुते या व्रतं नारी सा भवे-त्सुखभागिनी ७३ रूपलावण्ययुक्ता च पुत्रपौत्रादिसंयुता । इहलोके सुखं भूयात्परत्र च परागतिः ७४ एतत्ते कथितं राजन्व्रतानामुत्तमं व्रतम् । सर्वसंपत्प्रदं चैव नारीणां पापनाशनम् ७५ धन्यं यशस्यं स्वर्ग्यं च पुत्रदं च युधिष्ठिर । पठतां शृण्वतां चापि सर्वपापप्रणा-शनम् ॥ ७६ ॥ इति श्रीभवि० पुराणे ऋषिपंचमीव्रतकथा संपूर्णा ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिर उवाच । किमस्योद्यापनं प्रोक्तं व्रतपूर्णफलप्रदम् । सुमतिः केन विधिना चकार वद तत्वतः ॥ कृष्ण उवाच । पूर्वस्मिन्दिवसे कुर्यादेकभक्तं समाहितः । प्रातरुत्थाय सुस्नातस्ततो गुरुगृहं व्रजेत् ॥ प्रार्थयेत्तं ममाचार्यो भवोद्यापनकर्मणि । पूर्वोक्तेनैव विधिना स्नात्वा भक्त्या समन्वितः ॥ शुचौ देशे समा-लिप्य सर्वतोभद्रमंडले । अव्रणं सजलं कुंभं ताम्रमृण्मयमेव च ॥ संस्थाप्य वस्त्रसंवीतं कंठदेशे सुशोभनम् ॥ पंचरत्नसमायुक्तं फलगं-धाक्षतैर्युतम् ॥ सहिरण्यं समासाद्य ताम्रेण पटलेन वा । वंशमृन्मयपात्रेण यवपूर्णेन चैव हि । आच्छादयेत्तु चैलेन लिखेदष्टदलं ततः ।

सौवर्ण्यः प्रतिमाः कार्या ऋषीणां भावितात्मनाम् ॥ पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः । शक्त्या वा कारयेत्तत्र वित्तशाठ्यविवर्जितः॥ कृष्ण उवाच । वितानं पचवर्णं च फलपुष्पसमन्वितम् । बध्नीयादुपरि श्रीमत्सभारान्संविधाय च । मध्याह्ने पूजयेद्भक्त्या ऋषीन् श्रद्धासमन्वितः ॥ कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोथ गौतमः । जमदग्निर्वसिष्ठश्च साध्वी चैवाप्यरुंधती ॥ मंत्रेणानेन विधिवत्कुर्यात्पूजां समाहितः॥ अनेन विधिना सप्त वर्षाणि व्रतमाचरेत् । आदौ मध्ये तथा चांते कुर्यादुद्यापनं बुधः ॥ आचार्यान्वरयेत्सप्त वेदवेदांगपारगान् । प्रतिमाः सप्त कुर्वीत सुवर्णेन स्वशक्तितः ॥ जटिलाः साक्षसूत्राश्च कमण्डलुसमन्विताः । संस्थाप्य कलशेष्वेतान्मृण्मयेष्वव्रणेषु च ॥ स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या पचामृतपयादिभिः । पूर्वोक्तविधिना राजन्कृत्वा पूजां समाहितः । रात्रौ जागरणं कुर्यात्पुराणश्रवणादिभिः । कृतनित्यक्रियः प्रातर्जुहुयात्तिलसर्पिषा ॥ वैदिको वाथ पौराण अधिकारान्मनुः स्मृतः । सहस्तोमाः[1] सहावाथ नाममंत्रैस्तु वा पृथक् ॥ अष्टोत्तरसहस्रं वा शतमष्टोत्तरं तु वा । पुनः पूजां ततः कृत्वा गुरुं संपूजयेद्व्रती ॥ स्वर्णांगुलीयवासोभिः कुण्डलामृतभोजनैः । सप्त गावश्च दातव्या वस्त्रालकारसयुताः ॥ दद्यादेकां सवत्सां च गुरवे गां पयस्विनीम् । पूजयेदृत्विजः सप्त वासोभिर्दक्षिणादिभिः ॥ कलशानुपवीतानि दद्यात्तेभ्यः समर्पितः । आचार्यं च सपत्नीकं प्रणिपत्य समापयेत् ॥ भोजयेद्ब्राह्मणान् भक्त्या दीनानाथान्प्रतर्प्य च । सोपस्करास्ताः प्रतिमा आचार्येभ्यो निवेदयेत् ॥ लब्ध्वाऽनुज्ञां तु भुंजीत इष्टैर्बंधुजनैः सह । उद्यापनविधिः प्रोक्तः सर्वत्राप फलार्थिनाम् ॥ अनेन विधिना सम्यग्व्रतमेतत्समाचरेत् । सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ॥ सर्वदानेषु दत्तेषु तदेतद्व्रतचारिणाम् । एवं या कुरुते भूप उद्यापनं

१ सहस्तोमाः सहर्षभाः इति वेदोक्तमंत्रेण, ऋषीणां नाममंत्रैर्वा गृह्यपरिशिष्टः । सहस्तोमास्त्स्पर्शं कृत्वा मिथुनास्त्स्पृशे ।

विधिं परम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्ता स्वर्गे लोके महीयते । इहलोके चिरंकालं भर्त्रा सह शुचिस्मिता ॥ पुत्रपौत्रैः परिवृता भुक्त्वा भोगान्मनोहरान् । निष्पापा सुभगा नित्यं लभते चाक्षयां गतिम् ॥ इति श्रीभ० ऋषिपंचमीव्रतोद्यापनविधिः ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लपंचम्यामुपांगललिताव्रतम् ॥ ॥ तत्र दाक्षिणात्यानां शिष्टाचार एव प्रमाणम् । तच्च मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यम् । पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिः—इति माधवीये हारीतोक्तेः ॥ दिनद्वये तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वा, युगभूतां इतियुग्मवाक्यात् । यत्तु शक्तिपूजायां अर्धरात्रव्यापिनी ग्राह्येति भूरिजन्मा जजल्प तत्तुच्छं, वचनं विना रात्रिव्यापिन्या ग्रहणे प्रमाणाभावात् । जागरणस्य चांगत्वात्पूर्वाह्णव्यापिन्येव ग्राह्येति तच्च भूरिजन्मनो मंदप्रज्ञस्य दुर्बुद्धिविलसितमात्रमित्युपेक्ष्यम् ॥ अथ व्रतविधिः ॥ शुक्लपक्षस्य पंचम्यामिषे मासि चरेद्व्रतम् । चत्वारिंशत्तथाष्टौ वा दंतधावनमादितः ॥ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ संप्रार्थ्यानेन मंत्रेण कुर्याद्वै दंतधावनम् ॥ मुखदुर्गंधिनाशाय दंतानां च विशुद्धये । ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दंतधावनम् ॥ अनेन दंतान्संशोध्य स्नायान्मृत्स्नानपूर्वकम् ॥ ततो यथाविधि स्नात्वा शुक्लवासा गृहं व्रजेत् ॥ शुचौ देशे समालिख्य सर्वतोभद्रमंडलम् । अव्रणं सजलं कुंभं ताम्रं मृण्मयमेव च ॥ संस्थाप्य वस्त्रसंवीतं कंठदेशे सुशोभनम् । पंचरत्नसमायुक्तं गंधपुष्पाक्षतैर्युतम् ॥ सहिरण्यं समासाद्य ताम्रेण पटलेन वै । वंशमृन्मयपात्रेण यवपूर्णेन चैव हि ॥ आच्छादयेत्तच्चैलेन लिखेदष्टदलं ततः । सौवर्णं राजतं ताम्रं पिधानं स्थापयेत्ततः ॥ उपचारैः षोडशभिरेभिर्मंत्रैः समाहितः । नित्यं नैमित्तिकं कुर्यात्ततः पूजां समाचरेत् ॥ इति विधिः ॥ आचम्य प्राणानायम्य मासपक्षाद्युल्लिख्य । मम पुत्रधनविद्यारोगनिर्मुक्तिसुखगोविजयपुष्ट्यायुष्यादिकामः, स्त्री त्ववैधव्यका-

मा, उपांगललितापीत्यर्थं यथामिलितोपचारै उपांगललितापूजनमहं करिष्ये । तत्रादौ गणपतिपूजनं क० ॥ अथ पूजा ॥ नीलकौशेयवस-
नां हेमाभां कमलासनाम् । भक्तानां वरदां नित्यं ललितां चिंतयाम्यहम् । ध्यायामि ॥ आगच्छ ललिते देवि सर्वसंपत्प्रदायिनि । या
वद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव । हिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजतस्रजां । चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह । आवाहनम् ॥ कार्त-
स्वरमयं दिव्यं नानामणिगणान्वितम् । अनेकशक्तिसंयुक्तमासनं प्र० । तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीं । यस्यांहिरण्यंविंदेयंगाम
श्वपुरुषानहं । आसनम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् । तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् । अश्वपूर्वांरथमध्यांहस्ति
नादप्रमोदिनीं । श्रियंदेवीमुपह्वयेश्रीर्मादेवीर्जुषताम् । पाद्यम् ॥ निधीनां सर्वरत्नानां त्वमनर्घ्यगुणाह्यसि । तथापि भक्त्या ललिते गृहा-
णार्घ्यं नमोस्तु ते । कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलंतींतृप्तांतर्पयंतीं । पद्मे स्थितांपद्मवर्णांतामिहोपह्वयेश्रियं । अर्घ्यम् ॥ पाटलोशी
रकर्पूरसुरभि स्वादु शीतलम् । तोयमाचमनीयार्थं ललिते प्रति० । चंद्रांप्रभासांयशसाज्वलंतींश्रियंलोकेदेवजुष्टामुदारां । तांपद्मनेमींशरण
महंप्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतांत्वांवृणोमि । आचमनीयम् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम् । पंचामृतेन स्नपनं प्रीयतां परमेश्वरी ।
आप्याय० । दधिक्राव्णो० । घृतंमिमिक्षे० । मधुवाता० । स्वादुःपवस्व० । पंचामृतस्नानम् ॥ मंदाकिन्याः समुद्भूतं हेमांभोरुहवासि
तम् । स्नानाय ते मया भक्त्या दत्तं स्वीक्रियतां जलम् । आदित्यवर्णेतपसोधिजातोवनस्पतिस्तववृक्षोथबिल्वः । तस्यफलानितपसानुदंतु
मायांतरायाश्चबाह्याअलक्ष्मीः । स्नानम् ॥ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृ० । उपैतुमांदेव
सखःकीर्तिश्चमणिनासह । प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिंददातुमे । वस्त्रम् ॥ मुक्तामणिगणोपेतमनर्घ्यं च सुखप्रदम् । उत्तरीयं सुख

स्पर्शं ललिते प्रतिगृ० । उत्तरीयवस्त्रम् ॥ कृष्णकाचाष्टसंयुक्तं सूत्रं ग्रैवेयकं तथा । दास्यामि कंठमालार्थं प्रत्यंगे ललिते तव । कंठमा-
लाम् ॥ मलयाचलसंभूतं घनसारं मनोहरम् । हृदयानंदनं चारु चंदनं प्रतिगृ० । क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहं । अभूतिम-
समृद्धिंचसर्वांनिर्णुदमेगृहात् । चंदनम् ॥ अक्षता विमलाः शुद्धा मुक्ताभासासमप्रभाः । भूषणार्थं मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि ॥ गंधद्वा-
रांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीं । ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियं । अक्षतान् ॥ मालतीचंपकादीनि नानापुष्पैः सुवासितैः । मयाहृ-
तानि पुष्पाणि पूजार्थं प्र० ॥ मनसःकाममाकूतिंवाचःसत्यमशीमहि ॥ पशूनांरूपमन्नस्यमयिश्रीःश्रयतांयशः । पुष्पाणि ॥ अथांग-
पूजा० ॥ उपांगललितायैन०पादौपू० । भवान्यैन०गुल्फौपू० । सिद्धेश्वर्यै०जंघे० । भद्रकाल्यै०जानुनी । श्रियै०ऊरू० । विश्वरूपिण्यै०
कटी० । देव्यै०नाभिं० । वरदायै० कुक्षी० । शिवायै० हृदयं० । वागीश्वर्यै० स्कंधौ० । महादेव्यै० बाहू० । प्रकृतिभद्रायै० करौ० ।
पद्मिन्यै० कंठं० । सरस्वत्यै० मुखं० कमलासनायै० नासिकां० । महिषमर्दिन्यै० नेत्रे० । लक्ष्म्यै० कर्णौ० । भवान्यै० ललाटं० ।
विंध्यवासिन्यै०शिरः पू० । सिंहवाहिन्यै०सर्वांगपू० ॥ देवद्रुमरसोद्भूतः कालागरुसमन्वितः । आघ्रेयतामयं धूपो भवानि घ्राणतर्पणः ॥
कर्दमेनप्रजाभूतामयिसंभवकर्दम । श्रियंवासयमेकुलेमातरंपद्ममालिनीं । धूपम् ॥ चक्षुषां सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् । आर्तिक्यं
कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥ आपःस्रजंतुस्निग्धानि चिक्लीतवसमेगृहे । नीचदेवींमातरंश्रियंवासयमेकुले । दीपम् ॥ मोदकापूपलड्डुकवट-
कोदुंबरादिभिः । सघृतं पायसान्नं च नैवेद्यं प्रति० ॥ आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टींसुवर्णांहेममालिनीं । सूर्यांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह । नै-
वेद्यम् ॥ मलयाचलसंभूतं घनसारं मनोहरम् ॥ करोद्वर्तनकं चारु गृहाण परमेश्वरि । करोद्वर्तनम् ॥ कर्पूरैलालवंगादितांबूलीदलसंयुतम् ॥

क्रमुकस्य फलं तुभ्य तांबूलं प्र० ॥ आर्द्रांयःकरिणींयष्टींपिंगलांपद्ममालिनीं । चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह । तांबूलम् ॥ मातुलिंग नारिकेल फलं खर्जूरसंभवम् ॥ जंबीर पनस वापि गृह्यतां परमेश्वरि । इदं फलं मया देवि० । तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनप- गामिनीं । यस्यांहिरण्यंप्रभूतंगावोदास्योश्वान्विंदेयंपुरुषानहं । फलम् ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं० । यःशुचिःप्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्व- हं । सूक्तंपंचदशर्चंचश्रीकामःसततंजपेत् । दक्षिणाम् ॥ चंद्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रति- गृ० ॥ पद्मासनेपद्मऊरुपद्माक्षिपद्मसंभवे । तन्मेभजसिपद्माक्षियेनसौख्यंलभाम्यहं ॥ नीराजनम् ॥ उपांगललिते मातर्नमस्ते विंध्यवा- सिनि । दुर्गे देवि नमस्तुभ्य नमस्ते विश्वरूपिणि ॥ अश्वदायेगोदायेधनदायेमहाधने । धनमेलभतांदेविसर्वकामांश्चदेहिमे । पुष्पाञ्जलि- म् ॥ अथ दूर्वांकुरान्साग्रान् चत्वारिंशत्तथाष्टभिः । अधिकान् हस्त आदाय मंत्रमेतं जपेद्बुधः ॥ मंत्र—बहुप्ररोहा सततममृता हरिता- लता ॥ यथेयं ललिते मातस्तथा मे स्युर्मनोरथाः ॥ इत्युक्त्वा पूजयेद्देवीं दूर्वाभिः कुसुमैस्तथा । मंत्रेणानेनाष्टचत्वारिंशत्कृत्वा समाहि- तः । दूर्वांकुरान् ॥ प्रदक्षिणात्रय देवि प्रयत्नेन मया कृतम् । तेन पापानि सर्वाणि व्यपोहंतु नमाम्यहम् । प्रदक्षिणाः ॥ साष्टांगोऽयं प्र णामस्ते नमस्कृत्य यथाविधि । त्वद्दास इति मां भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि । नमस्कारम् ॥ दीनोऽहं पापयुक्तोऽहं दारिद्र्यैकनिकेतनः । स सुन्दर कृपासिंधो कामान्मे सफलान्कुरु । प्रार्थनाम् ॥ अथ वायनम् । द्विजाय वाणकं दद्याद्विंशत्या वटकादिभिः । कइदंकस्मेतिमंत्रे- ण आचार्याय निवेदयेत् ॥ पक्वान्नफलसंयुक्तं सघृतं दक्षिणान्वितम् ॥ उपांगललितादेव्या व्रतसंपूर्णहेतवे । वाणकं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्—इति वायनमंत्र ॥ ततः कथां समाकर्ण्य वाणकान्नस्य सत्यया । स्वयं भुंजीत चैवान्नं वाग्यतः सह बांधवैः ॥ रात्रौ जागर-

णं कुर्यान्नृत्यगीतादिमंगलैः । प्रभाते पूजयेद्देवीं ततः कुर्याद्विसर्जनम् ॥ सवाहना शक्तियुता वरदा पूजिता मया । मातर्मामनुगृह्याथ गम्यतां निजमंदिरम् । इति विसर्जनम् ॥ इति वार्षिकपूजाविधिः ॥ ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच । पुरा कैलासशिखरे सुखासीनं षडाननम् । कथयन्तं कथां दिव्यामिदमूचुर्महर्षयः १ ऋषय ऊचुः । महासेन महादेवनंदनानंदविक्रम । आख्यानानि सुपुण्यानि श्रुतानि त्वत्प्रसादतः २ कथास्त्वद्वचनादेव प्रसूता भूरिभूतयः । न तृप्तिमधिगच्छामः पायं पायं सुधामिव ३ शुश्रूषवो वयं देव्या व्रतं तत्कथयस्व नः । मनोभिलषितार्थानां सिद्धिर्यस्मिन्कृते भवेत् ४ स्कंद उवाच । साधुपृष्टं महादेव्या माहात्म्यं मुनिपुंगवाः । वच्मि सर्वं विधानेन तच्छृणुध्वं जगद्धितम् ५ भृगुक्षेत्रे किल पुरा विप्रोऽभूद्गौतमाभिधः । श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञो धनी च बहुबांधवः ६ अनपत्यस्य तस्याथ जज्ञाते जरतः सुतौ । श्रीपतिर्गोपतिश्चैव नामनी विदधे तयोः ७ अचिरेणैव कालेन स पंचत्वमगाद्द्विजः तौ तु बालौ धनं बंधून् हित्वा सा धर्मचारिणी ८ सती विवेश दहनं स्वर्यातुं पतिना सह । अथ ते बांधवाः सर्वे हा कष्टमिति चुक्रुशुः ९ निंदंतो दुःखिताश्चक्रुस्तत्क्रियां पारलौकिकीम् । अथ तस्य सपत्नो ऽभूद्भ्राता स जगृहे धनम् १० आक्रोशंतौ च तौ गेहं निजमानीय दुर्मनाः । नास्ति चक्रे धनं सर्वं ताभ्यां किंचिन्न वै ददौ ११ ततो मौंजीधरौ बालौ बंधुभिः कथितं वसु । ययाचतुः पितृव्यं तं देहि नो द्रविणं हि तत् १२ स तावूचे गतं द्रव्यं युवां केन प्रतारितौ । निर्गच्छतां मम गृहादित्यादि परुषं बहु १३ तौ तद्वचोभिर्निर्विण्णौ बालौ श्रीपतिगोपती । बभाषाते मिथः कष्टं धिगहो पितृहीनता १४ यावो देशांतरं यत्र स्वजनो नास्ति कश्चन । अनाभाष्यैव स्वजनाञ्जग्मतुर्दिशमुत्तराम् १५ भिक्षाचारौ बहू-

१ निराश्रितौ बालौ धनं बंधूंश्च त्यक्त्वा गतां तां निन्दन्त इत्यर्थः ।

न्देशान्वनानि सरितो गिरीन् । समतिक्रम्य ययतुर्विशालां नामत पुरीम् १६ कासारमीक्षांचक्राते ततो ऽस्या सन्निधौ शुभम् । पुंडरी
कपनाकीर्णं रक्तसध्याविभूषितम् १७ सध्याभ्रभूषितं चारु यथा तारकित नभ । श्रांतौ पथिगतौ बालौ क्षण विश्रम्य तत्तटे १८ आ
चम्य शिशिरं तोयं सन्नतुस्तौ यथाविधि । गताध्वखेदौ विप्राग्र्यौ पुर प्राविशतां ततः १९ वीथीचतुष्पययुत चारुगोपुरमंडितम् ॥ देव
तागाररुचिर सौधराजिविराजितम् २० नानावीथीरतिक्रम्य विप्रावासमवापतुः । कस्यचित्स्वय विप्रस्य क्षुत्पिपासार्दितौ गृहम् २१ ईयतु
र्वेदिकाया तावुपविष्टौ श्रमातुरौ । स्वामी ततो ऽस्य गेहस्य विवेक इति विश्रुत २१ आयातौ वैश्वदेवांते स ददर्शातिथी द्विजौ । अना
पृच्छ्यस्तथा शीलं तथा च कुलनामनी २३ ऋषिवत्पूजयामास स्मरन्धर्मं सनातनम् । अतिथी भोजयामास स्वाद्वन्न सह चात्मना २४
तौ ब्रह्मचारिणौ विप्रौ सपर्यां तां विलोक्य च । देशवंधुपरित्यागखेदमुक्तौ बभूवतुः २५ अथापृच्छद्द्विजस्तौ तु कौ युवां कुत आगतौ ।
किमर्थमल्पवयसौ निर्गतौ स्वगृहादिति २६ तद्विवेकस्य वचनमाकर्ण्य श्रीपतिस्तदा । आनुपूर्वेण सकल वृत्तांत समभाषत २७ पितृही-
नौ च तौ ज्ञात्वा त्यक्तौ बंधुजनेन च । आश्वास्य स्थापयामास स्वगृहे बहुवासरम् २८ प्रचक्रमे ऽथ शिष्यैश्च सहाध्यापयितुं श्रुतिम् ।
बभूवतुश्च तौ बालौ गुरुशुश्रूषणे रतौ २९ गुरोर्गृहे न्यवसतामागता निर्मला शरद् । फुल्लपद्मविशालाक्षी प्रसन्नेंदुशुभानना ३० तस्या शिशि
ष्यमाचार्यं चरत व्रतमुत्तमम् ३१ पप्रच्छतुर्मौः किमिदमावाभ्यामिति कथ्यताम् । ताभ्यामेव कृते प्रश्ने विवेक इदमब्रवीत् ३२ विवेक उवाच । उ
पांगललितादेव्या व्रत देवर्षिपूजितम् । सर्वकामकर नृणामस्माभिः समुपास्यते ३३ विद्याकामेन कर्तव्यं तथैव धनकाम्यया । सुतार्थिना प्रकर्त

१ सूर्ष्याभ्रकपिशमिति पाठोपलब्धिः ।

व्यं व्रतमेतदनुत्तमम् ३४ विद्याकामौ च तौ बालौ व्रतमाचरतुर्मुदा । भक्तितो गुर्वनुज्ञातौ यथाशक्ति यथाविधि ३५ व्रतप्रसादात्सकलं वेद-
शास्त्रमवापतुः । अन्यस्मिन् हायने भक्त्या विवाहार्थं प्रचक्रतुः ३६ श्रीपतिर्गोपतिश्चैव व्रतमेतत्तपोधनाः । अचिरेणैव कालेन मासि मा-
घे तयोर्गुरुः ३७ स्वां विवाहोचितां कन्यां नाम्ना गुणवतीमिति । विनीताय श्रुतवते यूने श्रीपतये तदा ३८ विचार्य बांधवैः साकं द-
दौ पुण्यर्क्षवासरे । पारिबर्हं बहु मुदा प्रादाद्दुहितृवत्सलः ३९ विवेकोपि मुदं लेभे सानुरागौ विलोक्य तौ । अन्याब्दे पुनरेतत्तु व्रतं दे-
व्याश्च चक्रतुः ४० भ्रातरौ तौ निजं देशमिच्छंतौ च धनादिकम् । अथान्येऽहनि कस्मिँश्चित्तावुपाध्यायमूचतुः ४१ स्वामिन्युष्मत्प्रसा-
देन लब्धा विद्या तथा वसु । अनुजानीहि गच्छावो निजं देशमितः पुनः ४२ इत्याकर्ण्य समालोक्य शुभं वासरमादृतः । स्वयं प्राप-
यितुं तां तौ विप्रौ कन्यां च निर्ययौ ४३ अथ देव्याः प्रसादेन पितृव्यस्य तयोः किल । अन्वेषणे मतिर्जाता गतौ श्रीपतिगोपती ४४
निर्गतौ कं गतौ देशं वसतः क्वेत्यचिंतयत् । लोका निंदंति मां नित्यं जाता अन्वेषणे मतिः ४५ दिदृक्षुस्तौ ततः सोऽपि निर्जगाम निजा-
त्पुरात् । किञ्चित्स नगरं प्राप द्विजबालौ गवेषयन् ४६ तदेव नगरं प्राप्तौ विवेकाख्यो द्विजोत्तमः । सशिष्यः कन्यया सार्द्धं क्रमन्मार्गे
शनैः शनैः ४७ तत्र तेषां समजनि संगमो मुनिपुंगवाः । विदांचकार तौ कृच्छ्रान्मध्यमे वयसि स्थितौ ४८ मूर्क्ष्यवघ्राय तौ पश्चान्मुदं लेभे
परां ततः । न शक्नुवन्मुदा वक्तुं प्रेमगद्गदया गिरा ४९ पादानतां गुणवतीं विवेकेन प्रणोदिताम् । आशीर्वादैर्बहुविधैस्तां स्नुषां समयोजयत्
५० विवेकस्तु तदा तत्र संभाष्य च परस्परम् ॥ विवेक उवाच । सुतावेतौ मयाऽऽनीतौ पालितौ पठितौ तव ५१ संप्रापितुं प्रयातोऽस्मि
भवतां ग्राममुत्तमम् । इति संभाष्यमाणास्ते भृगुक्षेत्रं ययुर्मुदा ५२ ज्ञातिभिः सह संगम्य शृण्वद्भिस्तद्विचेष्टितम् । स्वपितृव्यगृहे कांश्चिदु-

पित्वा दिवसाँस्तदो ५३ लब्ध्वा पितृधनं गेहं सर्वं श्रीपतिगोपती । इयतुस्तदनुज्ञातो विवेकः स्वां पुरीं ययौ ५४ श्रीपतिर्गोपतेस्तत्र वि
वाहमकरोत्तदा । तावेकचेतसौ तत्र चक्रतुर्द्विजतर्पणम् ५५ श्रीपतिः श्रद्धया युक्तः कनीयान्व्ययशङ्कितः । विचार्य भार्यया सार्कं विभ-
क्तः श्रीपतेरभूत् ५६ सभोगान्विविधान्भुंजन्प्रमत्तो बहुसंपदा । न देव्याराधनं चक्रे गोपतिः सुखलंपटः ५७ अथ स्वल्पेन कालेन न
ष्टं तस्य शनैर्धनम् । अकिंचनो गतश्रीर्का भार्यया ऽऽश्वासितस्तदा ५८ तत्र भ्रातृगृहे विप्रा भुजते बहवः[1] सदा । गच्छावोऽनुदिनं कां
त तत्र भोक्तुमावपि ५९ एवं भोजनवेलायामागत्यागत्य तद्गृहम् । भुजन् भुजनिजगृहे मतौ तौ बहुवासरम् ६० कदाचिदागतो याव-
द्गोपतिर्भार्यया सह । उपविष्टेषु विप्रेषु भोक्तुं नोऽविंददासनम् ६१ अथाभराशेरम्याशे भोजनाय क्षुधातुरः । उपविष्टः श्रीपतेस्तु भार्यो-
या स निवारित ६२ अस्मादुत्तिष्ठ वै तूर्णं त्वमुच्छिष्टं करिष्यसि । तिष्ठ तिष्ठ क्षणं चैव पश्चाद्भुंक्ष्वेति सा ऽब्रवीत् ६३ गोपतेः कांतया
दृष्ट ततो विमनसावुभौ । अभुक्तावेव निष्क्रांतौ जग्मतुर्निजमंदिरम् ६४ ततः स्वजायां प्रोवाच निजमार्गं विचिंतयन् । भ्रात्रा मया सम
वित्तं सविभक्तमपि श्रिये ६५ दुर्बलोऽहं धनोन्मत्तः श्रूयतामत्र कारणम् । पुरा भ्रात्म्या गुरुगृहे व्रतमाचरितं शुभम् ६६ उपांगललिता-
देव्या विद्यादिसकलं ततः । प्राप्तं मया तत्सकलं परित्यक्तं प्रमादतः ६७ ज्येष्ठ आचारते नित्यं तस्माच्छ्रीस्तत्र वर्तते । तस्मादहं तदा
भोक्ष्ये यदा द्रक्ष्यामि तां शिवाम् ६८ इत्युक्त्वा निर्गतस्तस्माद्गृहादकृतभोजनः । तद्भार्या चिंतयाविष्टा सापि तस्यावनश्रती ६९ भुक्तव
त्सु ब्राह्मणेषु श्रीपतिः पर्यपृच्छत । क्व गतो गोपतिरिति तच्छ्रुत्वा सोपि दुःखितः ७० गोपतिस्तु सरिद्दुर्गं वनानि बहुशो भ्रमन् । पृच्छं-

[1] सो पितृभ्यपदे स्थित्वा हापनान्यत्र सम चेति पाठोपलब्धिः पुस्तकांतरे, मतार्कं तु मास्त्येव । [2] आसीदिरपरयाहारः ।

श्व पथिकान्मार्गे न देव्याः पदमभ्यागात् ७१ पंचमे वासरे प्राप्ते क्षुत्पिपासार्दितो वने । अलब्धदर्शनो देव्या दुःखितो निपपात ह ७२
तं कृच्छ्रगतमालोक्य भवानी भक्तवत्सला । कृतापराधमपि तमनुजग्राह वै तदा ७३ गतमूर्च्छः समुत्थाय दिगंतान्प्रविलोकयन् । ददर्श दूरतो गोपं चारयंतं गवांगणम् ७४ तं दृष्ट्वा किञ्चिदाश्वस्तो ययौ तस्यांतिकं शनैः । अपृच्छत्क भवान्यातः कुत्रत्यः कुत आगतः
७५ कोऽयं देशः क भूपालः किं पुरं नाम तद्वद । निशम्य वचनं तस्य वक्तुं गोपः प्रचक्रमे ७६ गोप उवाच । उपांगं नाम नगरमुपांगो नाम भूपतिः । तत्रत्योऽहं समायातः पुनस्तत्र व्रजाम्यहम् ७७ उपांगललिता देव्या विद्यते तत्र मंदिरम् । इत्याकर्ण्य वचस्तस्य विप्रः समुदितोऽभवत् ७८ स गोपसहितः सायं विचरन्प्रविवेश ह । दूराद्ददर्श भवनं पुरमध्ये तपोधनाः ७९ उपांगललितादेव्याः स्फाटिकं गगनंलिहम् । सौवर्णेन विचित्रेण कलशेनोपशोभितम् ८० यथोदयाचलः शैलो दधानो भानुमंडलम् । त्वरितो गोपमामंत्र्य प्रासादं स ययौ मुदा ८१ प्रणम्य दंडवद्भूमौ बद्धांजलिपुटस्तदा । उपांगललितां देवीमथ स्तोतुं प्रचक्रमे ८२ गोपतिरुवाच० । नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि भक्तानां हितकारिणि । जगद्भीतिविनाशिन्यै सर्वमंगलमूर्तये ८३ हत्वा निशुंभमहिषप्रभृतीन् सुरारीनिंद्रादयो निजपदेषु यथाऽभिषिक्ताः । लोकत्रयावनगृहीतमहावतारे मातः प्रसीद सततं कुरु मेऽनुकंपाम् ८४ त्वां मुक्तये निजजनाः कुटिलीकृतांगीं गौरीं निजे वपुषि कुंडलिनीं भजंति । मुक्त्यै च देवमनुजाः कनकारविंदबद्धासनामविरतं कमलां स्तुवंति८५ सापराधोऽस्मि सततं प्राप्तस्त्वां जगदंबिके। इदानीमनुकंप्योऽहं यद्वाञ्छामि कुरुष्व तत् ८६ इति स्तुत्वाऽथ शर्वाणीं प्रणिपत्य पुनः पुनः । कृतसंध्याविधिस्तत्र सुष्वापाकृतभोजनः ८७ स्वप्ने मूर्तिमयी देवी विप्रमेवं समादिशत् । गोपते वत्स तुष्टाऽस्मि गच्छोपांगमहीपतिम् ८८ मत्पूजनकरंडस्य प्रार्थयस्व पिधा-

रा नकम् । तत्प्रजयन्निजगृहे परामृद्धिमवाप्स्यसि ८९ स्वप्न इत्याप्तसंदेशः प्रभाते गोपतिस्तदा । राजदर्शनवेलाया नृपद्वार समभ्यगात् ९०
प्रविष्टोसौ नृपसभां प्रतीहारैर्निवेदित ।राज्ञा समावितस्तत्र निपसादासने शुभे९१ दृष्टो गमनहेतुश्च ययाचे नृपपुंगवम् । देव्यर्चनकरण्डस्य पि
४॥ धानं देहि मे नृप९२ इत्यर्थित स विप्रेण जातादेशो नृपो ददौ । पिधानकं नमस्कृत्य तस्मै चाभ्यर्चनादिकम्९३ आशीर्भिरभिनन्द्याथ तमामन्त्र्य
च भूपतिम् । उपांमललितादेव्याः प्रासाद पुनरागमत् ९४ प्रणिपत्याम्बिकां विप्रस्त्वरितो निर्ययौ पुरात्। समीपे स्वपुर दृष्ट्वा हृष्टो गृहमुपाग
मत् ९५ सुहृद्भिः सह संगम्य सर्वं तत्कथयन्मुदा । पूजयित्वा पिधान तद्विदधे पारणं द्विजः ९६ एवमाराध्यमानस्तु ससमृद्धो भवत्पुनः ।
सोऽपि सत्र समारेभे द्विजाभ्यो बहुवासरम् ९७ एका तस्याभवत्कन्या ललिता नाम सुंदरी । सा पिधानकमादाय विहर्तुं याति सर्वदा
९८ प्रमत्तत्वात्प्रियत्वाच्च पितृभ्यामनिवारिता । कदाचित्स्ववयस्याभि स्नातु गगाजले शुभे ९९ क्रीडती ददृशे तोये नीयमान कलेवरम् ।
पिधानहस्ता साऽसिंचदन्याश्चांजलिभिस्तदा १०० स सर्पदष्ट उत्तस्थौ ततो देव्या प्रसादतः । साऽतिकान्त द्विजं दृष्ट्वा मनसाऽचिंतयत्पति
म् १ उद्वाहाभ्यवहाराय जनकस्य निकेतनम् । मार्गे च परिपप्रच्छ कुल शील च तस्य सा २ सोपि सर्वं समाचख्यौ गुणराशीति
नाम च । ललिता मंत्रयामास गुणराशिं द्विजोत्तमम् ३ परिविष्टेषु पात्रेषु पितुर्वेश्मनि मे द्विज । गृहीतापोशनो भूत्वा भार्या
र्थं मां त्वमर्थय ४ मयाऽनुमोदितस्तातः स मां तुभ्य प्रदास्यति । यथोक्तो गुणराशिस्तु तथा सर्वं चकार ह ५ गोपतिर्भार्यया
भ्रात्रा समालोच्य सबांधवैः । परीक्षिताय विप्रत्वे विद्यायां कुशलीलयोः ६ प्रतिजज्ञे तत कन्यां ललिता गुणशालिने । शु
भे मुहूर्ते च तयोर्विवाह कृतवान्प्रभुः ७ वराय ब्राह्मणेभ्यश्च ददौ बहु धनं तदा । विन्यस्ते च तयोर्गेहं नातिदूरं स्ववेश्मत ८ तत्रोपतुः

सानुरागौ मिथस्तौ दंपती चिरम् । पिधानकं तया नीतं निजं ललितया गृहम् ९ शनरथ धनं सर्वं गोपतेरगमद्गृहात् । गुणराशिर्धनी जातो महादेव्याः प्रसादतः ११० करंडस्य पिधानं तज्जनन्या बहुवासरम् । याचितापि न वै मादाल्ललिता पूजितं गृहे ११ अथ सा गोपतेर्भार्या तस्यैवानर्चनाद्व्रतम् । इत्थं विचिंत्य पापात्मा जामातरमघातयत् १२ समिदर्थं वनं यातं, स्वयं तद्गेहमाययौ । शोचंतीं किल तां कन्यां स तु देव्याः प्रसादतः १३ उत्थाय विपिनादेत्य भुक्त्वा शेते सुखं गृहे । पादसंवाहनं तस्य कुरुते ललिता तदा १४ तं दृष्ट्वा दुःखिता भूमौ प्रणिपत्य पुनः पुनः । लज्जिता कृच्छ्रतः पृष्टा निजपापं न्यवेदयत् १५ स्कंद उवाच । गुणराशिस्तदा तस्यै प्रायश्चित्तं ददौ बहु । आत्मानं बहुकालेन पूतं कृच्छ्रैश्चकार ह १६ श्रीपतेस्त्वचलां लक्ष्मीं समालोक्य तपोधनाः । गोपतिस्तु यथा ऽपृच्छद्भ्रातस्त्वं वर्तसे कथम् १७ किमाचरसि कल्याणं येन श्रीरनपायिनी । इति तस्य वचः श्रुत्वा श्रीपतिर्विस्मितः पुनः १८ अस्माभिस्तद्व्रतं देव्या यत्कृतं गुरुमंदिरे । सोपि देव्या व्रतं चक्रे पुनर्भ्रात्रोपदेशितम् १९ लेभे स परमामृद्धिं पुत्रांश्च मुदितो ऽभवत् । उपांगललितादेव्याः कुर्यादाराधनं ततः १२० एवमेतत्पुरावृत्तं माहात्म्यं कथितं मया । कृतमन्यैश्च बहुभिस्ते ऽपि लब्धमनोरथाः २१ स्कंद उवाच । विधानमस्य वक्ष्ये ऽहं तच्छृणुध्वं तपोधनाः । शुक्लपक्षे तु पंचम्यामिषे मासि चरेद्व्रतम् २२ गर्जितं संध्ययोस्त्याज्यं दिनवृद्धिक्षयौ तथा । निर्वर्त्यावश्यकं कर्म शुची रागविवर्जितः २३ चत्वारिंशत्तथाष्टौ च कल्पयित्वा विधानतः । दंतकाष्ठान्युपादाय तडागं वा नदीं व्रजेत् २४ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रदां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते १२५ इति वनस्पतिप्रार्थना ॥ मुखदुर्गंधिनाशाय दंतानां च विशुद्धये । ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दंतधावनम् २६ इति दंतधावनम् ॥ दंतधावनपूर्वाणि मज्जनानि समाचरेत् । ततो

यथाविधि स्नात्वा शुक्लवासा गृहं व्रजेत् । शुची देशे मंडपिकां कृत्वा ऽतीव मनोहराम् । सोवर्णी प्रतिमां शक्त्या कल्पयेन्मंत्रपूर्विकाम्
२८ उपचारैः षोडशभिरेभिर्मंत्रैः समाहितः । कुर्यात्पूजां प्रयत्नेन दूर्वाभिश्च विशेषतः २९ द्विजाय वाणकं दद्याद्विंशत्या वटकादिभिः १३०
ततः कथां समाकर्ण्य वाणकाम्नस्य सरूपया । स्वयमद्यात्तदेवान्नं वाग्यतः सह बांधवैः ३१ रात्रौ जागरणं कुर्यान्नृत्यगीतादिमंगलैः । प्र
भाते पूजयेद्देवीं ततः कुर्याद्विसर्जनम् ३२ सवाहना शक्तियुता वरदा पूजिता मया । मातर्मामनुगृह्णाय गम्यतां निजमंदिरम् ३३ ताम
र्चां गुरवे दद्याद्दानानि च सभूरिशः । व्रतमेवं च यः कुर्यात्पुत्रवान्धनवान्भवेत् ३४ विद्यावान्रोगनिर्मुक्तो सुखी गोधनवान्भवेत् । अ
वैधव्यं च लभते स्त्री कन्या वरमुत्तमम् ३५ विजय पुष्टिमायुष्यं यद्यान्यदपि वांछितम् । इत्येतद्व्रतमाख्यातं सेतिहास महर्षयः ३६ शृ
ण्वन्नपि नरो भक्त्या सुखमाप्नोति निश्चितम् । निर्मुक्तः स सुखी धीमान्व्रतराजप्रसादतः ३७ वित्तमारोग्यमायुष्य सुखमाप्नोति निश्चितम्
१३८ ॥ इति श्रीस्कं० उपांगल० क० सं० ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ आचार्यं वरयेत्पश्चादृत्विजो विंशतिं तथा । उपलिप्ते शुचौ देशे विलि
खेन्मंडलं ततः ॥ ब्रह्मादींश्च ततः स्थाप्य पूजयेद्विधिमंत्रतः । अव्रणे कलशे शुद्धे ललिता स्थापयेत्तथा ॥ रात्रौ जागरणं कृत्वा प्रभाते
होममाचरेत् । इक्षुदर्तिलैः शुक्लैः पायसेनापि वा व्रती ॥ अष्टोत्तरशतं हुत्वा बलिदान समाचरेत् ॥ वायन च ततो दद्याद्दशपात्रे निधा
य च ॥ वटकान्विंशतिसंख्यान्निर्मलान्घृतपाचितान् । आचार्यं पूजयेत्पश्चाद्वस्त्रालंकारधेनुभिः ॥ ऋत्विजश्च तथा दद्यात्क्रम वस्त्र सदक्षि
णम् । विसृज्य च ततः पीठमाचार्याय निवेदयेत् ॥ भोजयेच्च ततो विप्रान्पायसान्नेन भक्तितः । विप्राज्ञां च ततो गृह्य स्वयं भुंजीत बं-
धुभिः ॥ इति श्रीस्कंदपु० उपांगललितात्रतोद्यापन संपूर्णम् ॥ ॥ अथ माघशुक्लपञ्चम्यां वसंतप्रवृत्तिः । सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या ।

दिनद्वये तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वा । मुहूर्तमात्रसत्वे ऽपि परा ग्राह्या । तत्र विष्णोः पूजा कार्या ॥ माघे मासि सिते पक्षे पंचम्यां पूजये-द्धरिम् ॥ पूर्वविद्धा प्रकर्तव्या वसंतादौ तथैव च ॥ तैलाभ्यंगं ततः कृत्वा भूषणानि च धारयेत् ॥ नित्यं नैमित्तिकं कृत्वा गुलालेनार्च-येद्धरिम् ॥ गंधपुष्पैश्च धूपैश्च नैवेद्यैः पूजयेत्सदा ॥ नारी नरो वा राजेंद्र संतर्प्य पितृदेवताः ॥ स्रक्चंदनसमायुक्तान्ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ॥ इति हेमाद्रौ वसंतपंचमीविधिः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अथ षष्ठीव्रतानि ॥ ॥ तत्र भाद्रशुक्लषष्ठ्यां ललिताव्रतम् । इदं गुर्जरदेशे प्रसिद्धम् ॥ सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या । तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वा जागरप्रधानत्वात् ॥ कृष्ण उवाच । भद्रे भाद्रपदे मासि शुक्लषष्ठ्यां सुसंयुता । नारी स्नात्वा प्रभाते तु शुक्लमाल्यांबरा शुचिः ॥ सुवेषाभरणोपेता भूत्वा संगृह्य वालुकाम् । कृत्वा च वंशपात्रे तु पंचपिंडाकृतिं शुभा-म् ॥ ध्यात्वा तु ललितां देवीं तपोवननिवासिनीम् । पंकजं करवीरं च नेपालीं मालतीं तथा ॥ नीलोत्पलं केतकं च संगृह्य तगरं त-था ॥ एकैकाष्टशतं ग्राह्यमष्टाविंशतिरेव च ॥ अक्षताः कलिका ग्राह्यास्ताभिर्देवीं समर्चयेत् । प्रार्थयेदग्रतो भूत्वा देवीं तां गिरिशप्रि-याम् । गंगाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते । स्नात्वा कनखले तीर्थे हरं लब्धवती पतिम् ॥ ललिते ललिते देवि सौख्यसौभाग्यदा-यिनि । अनंतं देहि सौभाग्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् ॥ मंत्रेणानेन कुसुमैश्चंपकैर्बकुलैः शुभैः । एवमभ्यर्च्य विधिना नैवेद्यं पुरतो न्यसेत् ॥ त्रपुसैरपि कूष्मांडैर्नालिकेरैः सुदाडिमैः । बीजपूरैः सतुंडीरैः कारवेल्लैः सचिर्पिटैः । फलैस्तत्कालसंभूतैः कृत्वा शोभां तदग्रतः । विरूढैर्धा-न्यसंभूतैर्दीपिकाभिः समंततः ॥ सार्द्धं सगुणकैर्धूपैः सौहालककरंजकैः । घृतपक्वैः कर्णवेष्टैर्मोदकैरुपमोदकैः ॥ बहुप्रकारैर्नैवेद्यैर्यथाविभवसा-रतः । एवमभ्यर्च्य विधिवद्रात्रौ जागरणोत्सवम् ॥ गीतवाद्ययुतैर्नृत्यैः प्रोक्षणीयैरनेकधा । सखीभिः सहिता साध्वी तां रात्रिं प्रशमं न-

रा

येद् ॥ न च संमीलयेन्नेत्रे नारी यामचतुष्टयम् । दुर्भगा दुःखिता वध्या नेत्रसमीलनाद्भवेत् ॥ एवं जागरणं कृत्वा सप्तम्यां सरितं नयेत् । स्नात्वा वस्त्रं परीधाय धार्यं सौभाग्यकुंकुमम् ॥ गंधपुष्पादिनैवेद्यैश्च गीतवाद्यपुरःसरम् । तत्र दद्याद्विजेंद्राय नैवेद्यादिसमन्वके ॥ ततो गृहं समागत्य हुत्वा वैश्वानरं क्रमात् । देवान्पितॄन्ब्राह्मणाँश्च पूजयित्वा सुवासिनीः ॥ कन्यकाश्चैव संभोज्या दीनानाथाँश्च भोजयेत् । भक्ष्य

६॥

भोज्यैर्बहुविधैर्दत्त्वा दानानि भूरिशः ॥ ललिता मेऽस्तु सुप्रीता इत्युक्त्वा तु विसर्जयेत् । यः कश्चिदाचरेदेतद्व्रतं सौभाग्यदं परम् ॥ षष्ठ्यां तु ललितासंज्ञं सर्वपापनिवर्हणम् । नरो वा यदि वा नारी तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ यत्तु लभ्यं व्रतैश्चान्यैर्दानैर्वा नृपसत्तम । तपोभिर्नियमैर्वापि तदेतेन हि लभ्यते ॥ इह चैवातुला संपत्सौभाग्यमनुभूय च । कृत्वा मूर्ध्नि पदं पार्थ सपत्नीनां यशस्विनी ॥ मृता शिवपुरं प्राप्य देवैरसुरपन्नगैः । प्राप्नोति दर्शनं देव्या तया तु सह मोदते ॥ पुण्यशेषादिहागत्य पुण्यसौख्यैकभाजनम् । भर्त्रा सह सुता नारी सीतेव प्रियवल्लभा ॥ इदं यः शृणुयात्पार्थ पठेद्वा साधुसंसदि । सोपि पापविनिर्मुक्तः शक्रलोके महीयते ॥ षष्ठ्यां जनांतरगतां वरवंशपात्रे संगृह्य पूजयति या सिकतां क्रमेण । नक्तं च जागरमनुव्रतशेषलीला कुर्यादसौ त्रिभुवनं ललितेव भाति ॥ इति हेमाद्रौ ललितापष्ठीव्रतं सम्पूर्णम् ॥ ॥ अत्रैव भाद्रपदकृष्णषष्ठ्यां कपिलाषष्ठीव्रतम् ॥ तत्र योगविशेषेण पूर्वयुतायां परयुतायां वा कार्यम् । ते च योगाः पुराणसमुच्चये दर्शिताः—॥ भाद्रे मास्यसिते पक्षे भानौ चैव करे स्थिते ॥ पाते कुजे च रोहिण्यां सा षष्ठी कपिला स्मृता ॥ संयोगे तु चतुर्णां च निर्दिष्टा परमेष्ठिना ॥ ॥ अथ कथा ॥ हेमाद्रौ स्कांदे—। चित्रांग उवाच । रूपसंपदमारोग्यं संततिं चातिपुष्कलाम् । प्राप्नुवंति वरा येन नियतं तद्वदस्व मे १ अगस्त्य उवाच । साधु साधु त्वया प्राज्ञ यत्पृष्टोऽहं शुचिव्रत । तत्सर्वं कथयिष्यामि ततः श्रेयो भविष्यसि २ शृणु पार्थिव वक्ष्यामि स्वर्गमो-

निवेदित-
क्षप्रदं नृणाम् । यच्च गुप्तं पुरा देवान्ब्रह्मरुद्रेंद्रदैवतैः ३ असुराणां च सर्वेषां राक्षसानां तथैव च । शंकरेण पुरा चैतत्षण्मुखाय निवेदित-
म् ४ षण्मुखेन ममाख्यातं महापातकनाशनम् । यच्छ्रुत्वा ब्रह्महा गोघ्नः सुरापो गुरुतल्पगः ५ अगारदाही गरदः सर्वपापरतो ऽपि वा ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः स्वर्गलोकं च गच्छति ६ यच्च पुण्यं पवित्रं च नृणामद्भुतमंगलम् । उपकाराय लोकानां तथा तव नृपोत्तम । शृ-
णु भूप महापुण्यं षष्ठीमाहात्म्यमुत्तमम् ७ भाद्रे मास्यसिते पक्षे षष्ठी भौमेन संयुता । व्यतीपातेन रोहिण्या सा षष्ठी कपिला स्मृता ८
आश्विनस्यासिते पक्षे महापुण्यप्रवर्धिनी । षष्टिसंवत्सरस्यांते सा पुनस्तेने संयुता ९ चैत्रवैशाखयोर्मध्ये सिते पक्षे शुभोदये । वैशाखे ऽपि
च राजेंद्र द्वारवत्यां परा स्मृता १० तस्यां चैव हुतं दत्तं यत्किंचित्प्रतिपादितम् । तस्य सर्वस्य पुण्यस्य संख्यां वक्तुं न शक्यते ११ य-
स्मिन्काले भवेदेतैर्गुणैः षष्ठी युता तदा । पंचम्यामेकभुक्तं च कुर्यात्तत्र विचक्षणः १२ षष्ठ्यां प्रातः समुत्थाय कृत्वाऽऽदौ दंतधावनम् ।
जलपूर्णांजलिं कृत्वा इमं मंत्रमुदीरयेत् १३ निराहारो ऽद्य देवेश त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः । पूजयिष्याम्यहं भक्त्या शरणं भव भास्कर १४
अर्घ्यं दत्त्वेति संकल्पं कृत्वा यत्नाच्छुचिस्मितः । स्नानं कृत्वा प्रयत्नेन नद्यां तीर्थोद्भवे ह्रदे १५ तडागे दीर्घिकायां वा गृहे वा नियतात्मवान् ।
देवदारुं तथोशीरं कुंकुमैलामनःशिलम् १६ पद्मकं पत्रकं षष्टिं मधुगव्येन पेषयेत् । क्षीरेणालोड्य कल्केन स्नानं कुर्यात्समंत्रकम् १७ आपस्त्व-
मसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च । पापं शमय देवेश मनोवाक्कायकर्मजम् १८ पंचगव्यकृतस्नानः पंचभंगैस्तु मार्जयेत् ॥ पंचभंगैः पंचपल्लवैः
॥ आनयेन्मृत्तिकां शुद्धां स्नानार्थं वै प्रयत्नतः १९ मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेनाभिमंत्रिता । पवित्रं कुरु मां नित्यं सर्वपापात्समुद्धर २०

१ द्वितीया तु महापुण्या दुर्लभा व्रतिनां क्वचित् तिव्रतार्के। द्वितीया आश्विनमाससम्बन्धिनी षष्ठीत्यर्थ. ।२ तेन पूर्वोक्ताखिलयोगेन ।

येत् ॥ न च समीलयेन्नेत्रे नारी यामचतुष्टयम् । दुर्भगा दुःखिता वन्ध्या नेत्रसमीलनाद्भवेत् ॥ एवं जागरणं कृत्वा सप्तम्यां सरित नयेत् । स्नात्वा वस्त्र परीधाय धार्य सौभाग्यकुंकुमम् ॥ गंधपुष्पादिधूपैश्च गीतवाद्यपुरःसरम् । तच्च दद्याद्विजेंद्राय नैवेद्यादिसमद्रके ॥ ततो गृहं समागत्य हुत्वा वैश्वानरं क्रमात् । देवान्पितृन्ब्राह्मणाँश्च पूजयित्वा सुवासिनीः ॥ कन्यकाश्चैव सभोज्या दीनानाथाँश्च भोजयेत् । भक्ष्य भोज्यैर्बहुविधैर्दत्त्वा दानानि भूरिशः ॥ ललिता मे ऽस्तु सुप्रीता इत्युक्त्वा तु विसर्जयेत् । यः कश्चिदाचरेदेतद्व्रतं सौभाग्यद परम् ॥ षष्ठ्यां तु ललितासज्ञं सर्वपापनिबर्हणम् । नरो वा यदि वा नारी तस्य पुण्यफल शृणु ॥ यत्तु लभ्यं व्रतैश्चान्यैर्दानैर्वा नृपसत्तम । तपोभिर्नियमैर्वापि तदेतेन हि लभ्यते ॥ इह चैवातुला संपत्सौभाग्यमनुभूय च । कृत्वा मूर्ध्नि पदे पार्थ सपत्नीनां यशस्विनी ॥ मृता शिवपुर प्राप्य देवैरसुरपन्नगैः । प्राप्नोति दर्शनं देव्या तया तु सह मोदते ॥ पुण्यशेषादिहागत्य पुण्यसौख्यैकभाजनम् । भर्त्रा सह युता नारी सीतेव प्रियवल्लभा ॥ इदं यः शृणुयात्पार्थ पठेद्वा साधुससदि । सोपि पापविनिर्मुक्तः शक्रलोके महीयते ॥ पष्ठ्या जनांतरगतां वरवंशपात्रे संगृह्य पूजयति या सिक्तां क्रमेण । नक्त च जागरमनुव्रतशेषलीला कुर्यादसौ त्रिभुवन ललितेव भाति ॥ इति हेमाद्रौ ललितापष्ठीव्रत सम्पूर्णम् ॥ ॥ अत्रैव भाद्रपदकृष्णपष्ठ्यां कपिलाषष्ठीव्रतम् ॥ तत्र योगविशेषेण पूर्वयुताया परयुतायां वा कार्यम् । ते च योगाः पुराणसमुच्चये दर्शिताः—॥ भाद्रे मास्यसिते पक्षे भानौ चैव करे स्थिते ॥ पाते कुजे च रोहिण्यां सा षष्ठी कपिला स्मृता ॥ सयोगे तु चतुर्णां च निर्दिष्टा परमेष्ठिना ॥ ॥ अथ कथा ॥ हेमाद्रौ स्कांदे—। चित्राङ्ग उवाच । रूपसंपदमारोग्य सतर्ति चातिपुष्कलाम् । प्राप्नुवंति नरा येन नियत तद्वदस्व मे १ अगस्त्य उवाच । साधु साधु त्वया प्राज्ञ यत्पृष्टो ऽहं शुचिव्रत । तत्सर्वं कथयिष्यामि ततः श्रेयो भविष्यति २ शृणु पार्थिव वक्ष्यामि स्वर्गमो-

मुखे तत्र रविं न्यसेत् ४० कंठे न्यसेद्भानुमंतं पद्महस्तं द्विहस्तयोः । तिमिरक्षयकृद्देवं स्तनयोरेव विन्यसेत् ४१ जातवेदोभिधं नाभ्यां कट्यां भानुं तथा न्यसेत् । उग्ररूपं गुह्यदेशे तेजोरूपं द्विजंघयोः ४२ पादयोः सर्वरूपं तु सूक्ष्मस्थूलगुणान्वितम् । एवं यथोक्तं विन्यस्य पात्रं गृह्य ततोऽर्चयेत् ४३ करवीरार्ककुसुमै रक्तचंदनमिश्रितैः । पुष्पैः सुगंधैर्धूपैश्च कुंकुमैरुपशोभितम् ४४ मार्तंडं भानुमादित्यं भास्करं तपनं रविम् । हंसं दिवाकरं चेति पादयोर्मुकुटावधि ४५ पादौ जंघे तथा जानुद्वयमुरू कटी तथा । नाभिं, वक्षःस्थलं शीर्षमेतेष्वंगेषु पूजयेत् ४६ आनयेदर्घ्यपात्रं च सौवर्णं रौप्यताम्रजम् ४७ अर्घ्यार्थं दैवतं पात्रमुदकेन प्रपूरयेत् । पूजयेच्चाथ प्रागादिदेवतास्ताः समाहितः ४८ दिग्देवतास्ततः पूज्या गंधपुष्पानुलेपनैः । पात्रे तोयं समादाय सुपुष्पफलसंयुतम् । जानुभ्यामवनिं गत्वा सूर्यायार्घ्यं न्यवेदयेत् ४९ वेदगर्भ नमस्तुभ्यं देवगर्भ नमोऽस्तु ते । अव्यक्तमूर्तये तुभ्यमर्घ्यं गृह्ण नमोस्तु ते ५० ब्रह्ममूर्तिधरायैव चतुर्वक्त्र सनातन । सृष्टिस्थितिविनाशाय गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ५१ कालात्मा सर्वभूतात्मा वेदात्मा सर्वतोमुखः । जन्ममृत्युजराशोकसंसारभयनाशनः ५२ विष्णुरूपधरो देवः पीतवस्त्रश्चतुर्भुजः । प्रभवः सर्वलोकानामर्घ्यं गृह्ण नमोऽस्तु ते ५३ दारिद्र्यव्यसनध्वंसी श्रीमान्पातु दिवाकरः । सुवर्णः स्फाटिको भानुः स्वर्णरेता दिवामणिः । हरिदश्वांशुमाली च अर्घ्यं गृह्ण नमोऽस्तु ते ५४ चतुर्भिर्मुनिभिः सम्यगष्टाभिः परिगीयते । सामध्वनिस्तुतो यज्ञे अर्घ्यं गृह्ण नमोऽस्तु ते ५५ अर्घ्यं गंधं च पुष्पं च तथा धूपं प्रदीपकम् । नैवेद्यं च यथाशक्त्या प्रार्थयेत्सूर्यदेवताम् ५६ अग्निमिळे नमस्तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे । इषेत्वैव नमस्तुभ्यमग्ने चैव नमो नमः ५७ आत्मरूपिन्नमस्तुभ्यं विश्वमूर्ते नमो नमः । त्वं धा-

१ अत्र श्लोकांते ' अर्घ्यं गृह्ण नमोस्तु ते ' इतिवदन्नर्घ्यं दद्यात् ।

रा मन्त्रेणानेन वरुणं पूजयेद्भक्तिमान्नरः २१ पाशाग्रहस्त वरुण सर्ववारीश्वर प्रभो । अर्घ्यं प्रार्थयामि त्वां पूजनार्थं सुरेश्वर २२ आदित्यो
भास्करो भानू रविः सूर्या दिवाकरः । प्रभाकरो मितो वीरो देवः सर्वेश्वरो हरि २३ गोमयेनोपलिप्तायां भूम्यां वै कुंकुमेन तु । मंडलं
७॥ सर्वतोभद्रमालिखेद्बुद्धिमान्नरः २४ तत्र मध्ये लिखेत्पद्ममष्टपत्रं सकर्णिकम् । पूर्वपत्रे न्यसेत्सूर्यमाग्नेये तपनं न्यसेत् २५ सुवर्णरेतसं
याम्ये नैर्ऋत्ये च न्यसेद्रविम् । आदित्यं वारुणे पत्रे वायव्ये च दिवाकरम् २६ सौम्ये प्रभाकरं तत्र सूर्यमीशानपत्रके । तीव्ररश्मिधरं
देवं ब्रह्माणं चैव विन्यसेत् २७ आधाररूपिणं देवं मध्ये चैवारुणं न्यसेत् । सहस्ररश्मिं सूर्यं च सूक्ष्मस्थूलगुणान्वितम् २८ सर्वगं सर्व
रूपं च मध्ये भास्करमेव च । सप्ताश्वरथमारूढं पद्महस्तं दिवाकरम् २९ अक्षसूत्रं धनुष्पाणिं कुंडलैर्मुकुटेन च । रत्नैर्नानाविधैर्युक्तं सौ
वर्णं तत्र कारयेत् ३० शक्तितस्तु पलादूर्ध्वं तदर्धं कर्षतोऽपि वा । सौवर्णमरुणं कुर्याद्रज्जु चैव तथाविधाम् ३१ सप्ताश्वैर्भूषितं कृत्वा
रथं तस्याग्रतः स्थितम् । अरुणं विनतापुत्रं गृहीताश्वमनूरुकम् ३२ एकरूपं रथं कृत्वा पद्मस्योपरि विन्यसेत् । तस्योपरि न्यसेद्देवं
रक्तवस्त्रविभूषितम् ३३ रक्तचंदनमाल्यादिर्मंडितं चातिशोभनम् । अग्रतः सारथिं कृत्वा पूजयेदरुणं शुचिः । रक्तपुष्पैस्तु गंधैश्च तथाऽन्यै
रपि शक्तितः ३४ विनतातनयो देवः कर्मसाक्षी तमोनुदः । सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु ३५ मंत्रेणानेन संपूज्य सारथिं तदन
तरम् । देवस्य शंसनं कल्प्य प्रभूतादिकपंचकम् ३६ प्रभूतं विमलं सारमाराध्यं परमं शुभम् । दीप्तादिशक्तिभिश्चैव ततो भानुं प्रपूजये
त् ३७ दीप्ता सूक्ष्मा तथा भद्रा विभिनी विमला ऽनघा । अमोघा वैद्युता चेति नवमा सर्वतोमुखी ३८ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाव
स्थांगतो ऽपि वा । यः स्मरेद्भास्करं देवं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ३९ शिखायां भास्करं न्यस्य ललाटे सूर्यमेव च ।

मुखे तत्र रविं न्यसेत् ४० कंठे न्यसेद्भानुमंतं पद्महस्तं द्विहस्तयोः। तिमिरक्षयकृद्देवं स्तनयोरेव विन्यसेत् ४१ जातवेदोभिधं नाभ्यां कट्यां भानुं तथा न्यसेत्। उग्ररूपं गुह्यदेशे तेजोरूपं द्विजंघयोः ४२ पादयोः सर्वरूपं तु सूक्ष्मस्थूलगुणान्वितम्। एवं यथोक्तं विन्यस्य पात्रं गृह्य ततो ऽर्चयेत् ४३ करवीरार्ककुसुमै रक्तचंदनमिश्रितैः। पुष्पैः सुगंधैर्धूपैश्च कुंकुमैरुपशोभितम् ४४ मार्तंडं भानुमादित्यं भास्करं तपनं रविम्। हंसं दिवाकरं चेति पादयोर्मुकुटावधि ४५ पादौ जंघे तथा जानुद्वयमुरू कटी तथा। नाभिं[1], वक्षःस्थलं शीर्षमेतेष्वंगेषु पूजयेत् ४६ आनयेदर्घ्यपात्रं च सौवर्णं रौप्यताम्रजम् ४७ अर्घ्यार्थे दैवतं पात्रमुदकेन प्रपूरयेत्। पूजयेच्चाथ प्रागादिदेवतास्ताः समाहितः ४८ दिग्देवतास्ततः पूज्या गंधपुष्पानुलेपनैः। पात्रे तोयं समादाय सुपुष्पफलसंयुतम्। जानुभ्यामवनिं गत्वा सूर्यायार्घ्यं न्यवेदयेत् ४९ वेदगर्भ नमस्तुभ्यं देवगर्भ नमो ऽस्तु ते। अव्यक्तमूर्तये तुभ्यमर्घ्यं गृह्ण नमोस्तु ते ५० ब्रह्ममूर्तिधरायैव चतुर्वक्त्र सनातन। सृष्टिस्थितिविनाशाय गृहाणार्घ्यं नमो ऽस्तु ते ५१ कालात्मा सर्वभूतात्मा वेदात्मा सर्वतोमुखः। जन्ममृत्युजराशोकसंसारभयनाशनः ५२ विष्णुरूपधरो देवः पीतवस्त्रश्चतुर्भुजः। प्रभवः सर्वलोकानामर्घ्यं गृह्ण नमो ऽस्तु ते ५३ दारिद्र्यव्यसनध्वंसी श्रीमान्पातु दिवाकरः। सुवर्णः स्फाटिको भानुः स्वर्णरेता दिवामणिः। हरिदश्वांशुमाली च अर्घ्यं गृह्ण नमो ऽस्तु ते ५४ चतुर्भिर्मुनिभिः सम्यगष्टाभिः परिगीयते। सामध्वनिस्तुतो यज्ञे अर्घ्यं गृह्ण नमो ऽस्तु ते ५५ अर्घ्यं गंधं च पुष्पं च तथा धूपं प्रदीपकम्। नैवेद्यं च यथाशक्त्या प्रार्थयेत्सूर्यदेवताम् ५६ अग्निमिळे नमस्तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे। इषेत्वैव नमस्तुभ्यमग्ने चैव नमो नमः ५७ आत्मरूपिन्नमस्तुभ्यं विश्वमूर्ते नमो नमः। त्वं धा-

[1] अत्र श्लोकांते 'अर्घ्यं गृह्ण नमोस्तु ते' इतिवदन्नर्घ्यं दद्यात्।

ता त्वं च वै विष्णुस्त्व ब्रह्मा त्व हुताशनः ५८ मुक्तिकामो ऽहमिच्छामि प्रार्थयामि सुरेश्वर । विश्वतश्चक्षुरास्यातो विश्वतश्चरणाननः ५९ विश्वात्मा सर्वतोदेवः प्रार्थयामि सुरेश्वर । इमं मंत्रं समुच्चार्य नमस्कुर्वीत भास्करम् ६० सवर्चसेति पाणिभ्यां तोयेन विसृजेन्मुखम् । हंसःशुचिषदित्यृचा सूर्यस्यैवावलोकनम् ६१ उदुत्यचित्रमित्येतत्सूक्तं देवाग्रतो जपेत् । पद्मकेसरकोणेषु फलकं चैव कारयेत् ६२ फलैः पुष्पैरक्षतैश्च भक्ष्यैर्नानाविधैरपि । शय्यां तत्र च देवस्य शुभदेशे प्रकल्पयेत्६३पक्वधान्य पद्रस चैव रौप्य चैव महाप्रभुम् । पुरुषं सप्तहस्त च कारयेच्चैव बुद्धिमान् ६४ वस्त्रयुग्मेन संच्छाद्य लवणोपरि विन्यसेत् । अनेनैव तु मंत्रेण स्नानमर्घ्यार्चनं ततः ६५नमस्ते क्रोधरूपाय सप्तहस्तजिघांसवे । जिघांसत च त दृष्ट्वा दुद्रुवुः सर्वदेवताः ६६ त्वया व्याप्त मेरुपृष्ठं चण्डभास्कर सुप्रभ । अतस्त्वां पूजयिष्यामि अर्घ्यं गृहाण नमो ऽस्तु ते ६७ क्षपयित्वा तु तां रात्रिं गीतवादित्रनिस्वनैः । ततस्त्वभ्युदिते सूर्ये होम कुर्यात्स्वशक्तितः ६८ पूजयेत्तत्र शक्त्या च देवांश्च विविधप्रभुम् । होमोऽर्कस्य समिद्भिश्च घृतमिश्रैस्तिलैस्तथा ६९ सिद्धाभ च चरुद्रव्य घृतं च जुहुयाद्द्विजः । आकृष्णेनेति मंत्रेण शतमष्टोत्तर क्रमात् । होमो व्याहृतिभिर्वाथ स्विष्टकृत्तदनंतरम् ७० कपिलां पूजयेद्देवीं सवत्सां पापनाशिनीम् । वस्त्रयुक्तां सघटां च स्वर्णशृंगविभूषिताम् ७१ ताम्रपृष्ठीं रौप्यखुरां कांस्यदोहनकान्विताम् । मंत्रेणानेन तां दद्याद्ब्राह्मणायेति शक्तितः ७२ कपिले सर्वभूतानां पूजनीया ऽसि रोहिणी । सर्वतीर्थमयी यस्मादतः शांतिं प्रयच्छ मे ७३ आचार्यस्य ततो भक्त्या सर्वं पाणौ विनिक्षिपेत् । गोभूहिरण्यवासांसि व्रीहयो लवणं तिलाः ७४ एतत्सर्वं प्रदत्त्वा तु कपिलां प्रार्थयेत्ततः ७५ कपिले पुण्यकर्मासि निष्पापे पुण्यकर्मणि । मां समुद्धर पापाद्रु ददतो ह्यक्षयं कुरु ७६ दिवि वादित्रशब्दैश्च सेव्यते कपिला सदा । तथा विद्याधराः सिद्धा भूतनागगणाग्रहाः ७७

कपिलारोमसंख्यातास्तत्र देवाः प्रतिष्ठिताः । पुष्पवृष्टिं प्रमुंचंति नित्यमाकाशसंस्थिताः ७८ ब्रह्मणोत्पादिता देवी अग्निकुंडात्सुसुप्रभा ।
नमस्ते कपिला पुण्ये सर्वदेवनमस्कृते ७९ जय नित्यं महासत्वे सर्वतीर्थादिमंगले । दातारं स्वजनोपेतं ब्रह्मलोकं नयाशु माम् ८०
ततः प्रदक्षिणां कृत्वा नत्वा ब्राह्मणपुंगवान् । आशीर्वादान्वदेयुस्ते पुत्रपौत्रधनागमान् ८१ आरोग्यं रूपसौभाग्यं सर्वदुःखविवर्जितः ।
अंते गोलोकमासाद्य चिरायुः सुखभाग्भवेत् ८२ यदा स्वर्गात्प्रचरति राजा भवति धार्मिकः । सप्तद्वीपवतीं भुंक्ते सदा राज्यमकंटकम् ८३
अहो व्रतमिदं पुण्यं सर्वदुःखविनाशनम् । अतःपरं प्रवक्ष्यामि दानस्य फलमुत्तमम् ८४ तदा वेदमये पात्रे सद्वृत्ते चाक्षयं भवेत् ८५ क-
पिलाख्या यदा षष्ठी जायते भुवि मानद । व्रतं सर्वव्रतश्रेष्ठमिदमग्र्यं महाफलम् ८६ उद्धरिष्यति दातारं नूनमक्षय्यमव्ययम् । एवं देव-
गणाः सर्वे भूतसंघा महर्षयः ८७ आकाशस्थाः प्रनृत्यंति पुण्येऽस्मिन्दिवसागमे । पात्रभूताय ऋषये श्रोत्रियाय कुटुंबिने ८८ एवं
यः कपिलां दद्याद्विधिदृष्टेन कर्मणा । स याति परमं स्थानं यावन्न च्यवते पुनः ८९ ॥ इति हेमाद्रौ ॥ ॥ स्कांदे प्रभासखंडे तु
संक्षेपेणोक्तो व्रतविधिः—शुचौ देशे समालिप्य सर्वतोभद्रमण्डलम् । स्थापयेदव्रणं कुंभं चंदनोदकपूरितम् ॥ संवेष्ट्य वस्त्रयुग्मेन कंठदेशे सु-
शोभनम् । पंचरत्नसमायुक्तं दूर्वापुष्पाक्षतान्वितम् ॥ रक्तवस्त्रयुगच्छन्नं ताम्रपात्रेण संयुतम् । रथं रौप्यपलस्यैव चतुरश्वैर्विचित्रितम् ॥
सौवर्णीं पलसंयुक्तां मूर्तिं सूर्यस्य कारयेत् । कुंभस्योपरि संस्थाप्य गंधपुष्पैस्तथार्चयेत् ॥ आदित्यं पूजयेद्देवं नामभिः स्वैर्यथोदितैः ॥
आदित्य भास्कर रवे भानो सूर्य दिवाकर । प्रभाकर नमस्तुभ्यं संसारान्मां समुद्धर ॥ भक्तिमुक्तिप्रदो यस्मात्तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे ।
नमो नमस्ते वरद ऋक्सामयजुषांपते । नमोऽस्तु विश्वरूपाय विश्वधात्रे नमोऽस्तु ते ॥ एवं संपूज्य विधिवद्देवदेवं दिवाकरम् । पूजये

त्कपिलां धेनुं वस्त्रमाल्यानुलेपनैः ॥ दानमंत्रः—दिव्यमूर्तिर्जगच्चक्षुर्द्वादशात्मा दिवाकरः । कपिलासहितो देवो मम मुक्तिं प्रयच्छतु ॥ यस्मात्त्वं कपिले पुण्ये सर्वलोकस्य पावनी । मदत्ता सह सूर्येण मम मुक्तिप्रदा भव ॥ इति स्कांदे कपिलाषष्ठीव्रतोद्यापन संपूर्णम् ॥

॥ अथ कार्तिके स्कंदषष्ठीव्रतम् ॥ हेमाद्रौ भविष्ये—। श्रीकृष्ण उवाच । षष्ठ्यां फलाशनो राजन्विशेषात्कार्तिके नृप । राज्यच्युतो विशेषेण स्व राज्य लभते चिरात् ॥ षष्ठी तिथिर्महाराज सर्वदा सर्वकामदा । उपोष्या सा प्रयत्नेन सर्वकाल जयार्थिना ॥ कार्तिकेयस्य दयिता एषा षष्ठी महातिथिः । देवसेनाधिपत्य हि प्राप्तमस्यां महात्मना ॥ अस्यां हि श्रीसमायुक्तो यस्मात्स्कंदो ऽभवत्पुरा । तस्मात्षष्ठ्यां न भुंजीत प्राप्नुयाद्भार्गवीं सदा ॥ दत्त्वाऽर्घ्यं कार्तिकेयाय स्थित्वा वै दक्षिणामुखः । दध्नाक्षतोदकैः पुष्पैर्मंत्रेणानेन सुव्रत ॥ सप्तर्षिदारज स्कंद सेनाधिप महाबल । रुद्रोमाग्निज षड्वक्त्र गंगागर्भ नमोऽस्तु ते ॥ प्रीयतां देवसेनानी संपादयतु हृद्गतम् । दत्त्वा विप्राय चामान्न यच्चान्यदपि वर्तते ॥ पश्चाद्भुंक्ते त्वसौ रात्र्यां भूमिं कृत्वा तु भाजनम् । एव षष्ठी व्रतस्थस्य उक्तं स्कंदेन यत्फलम् । तन्निबोध महाराज गोप्यमान मयाऽखिलम् । षष्ठ्यां फलाशनो यस्तु नक्ताहारो भविष्यति ॥ शुक्लायामथ कृष्णायां ब्रह्मचारी समाहितः । तस्य सिद्धिं धृतिं पुष्टिं राज्यमायुर्निरामयम् ॥ इहलोके परत्रापि दद्यात्स्कंदो न संशयः । अशक्तश्चोपवासे वै तेन नक्तं समाचरेत् ॥ तैलं षष्ठ्यां न भुंजीत न दिवा कुरुनंदन । यस्तु षष्ठ्यां नरो नक्त कुर्यान्नरतसत्तम ॥ सर्वपापैर्विनिर्मुक्तो गांगेयस्य प्रसादतः । स्वर्गे च नियतं वासं लभते नात्र संशयः ॥ इह चागत्य कालांते यथोक्तफलभाग्भवेत् । देवानामपि वंद्योऽसौ राजराजो भविष्यति ॥ इति स्कंदषष्ठीव्रतं भविष्योक्त संपूर्णम् ॥

॥ अथ मार्गशीर्षशुक्ले भाद्रपदे वा चंपाषष्ठी

व्रतम् ॥ हेमाद्रौ स्कांदे–। स्कंद उवाच । प्राप्तराज्यं च राजानं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् । कदाचिदाययौ द्रष्टुं दुर्वासा मुनिसत्तमः ॥ तं पप्रच्छ महातेजा धर्मसूनुः कृतांजलिः ॥ राज्यलाभः कथं जातो मम विप्र तपोनिधे । तद्व्रतं श्रोतुमिच्छामि कर्तुं च मुनिसत्तम ॥ दूर्वासा उवाच । शृणु राजन्महाभाग व्रतानामुत्तमं व्रतम् । अस्तीह यच्चीर्णमात्रं सर्वकामाँस्तु पूरयेत् ॥ सर्वपापक्षयं कुर्यादखंडितव्रतान्यपि । षष्ठी भाद्रपदे शुक्ला वैधृत्या च समन्विता । विशाखाभौमयोगेन सा चंपा इति विश्रुता ॥ देवासुरमनुष्याणां दुर्लभा षष्टिहायनैः । कृते त्रेतायां पंचाशद्धायनी द्वापरे पुनः ॥ चत्वारिंशत्कलौ त्रिंशद्धायनी दुर्लभा ततः ॥ आदौ कृतयुगे पूर्वं या चीर्णा विश्वकर्मणा ॥ तत्फलाद्विश्वकर्तृत्वं प्राजापत्यमवाप्नुयात् । पृथुना कार्तवीर्येण भुवि नारायणेन च ॥ ईश्वरेण मया सार्द्धं इतरेतरलिप्सया । यश्चैतद्विधिवत्कुर्यात्सोऽत्यंतं फलमश्नुते ॥ युधिष्ठिर उवाच । तद्विधिं श्रोतुमिच्छामि विस्तराद्वदतो मुने । के मंत्राः के च नियमाः सापि किंलक्षणा भवेत् ॥ दुर्वासा उवाच । द्विदैवत्यर्क्षभौमेन वैधृतेन समन्विता । भाद्रे मासि सिते षष्ठी सा चंपेति निगद्यते ॥ पंचम्यां नियमं कुर्यादेकभुक्तं समाचरेत् । चंपाषष्ठी व्रतं कुर्याद्यथोक्तं वचनाद्गुरोः ॥ ततः प्रभाते विमले दंतधावनपूर्वकम् । कृत्वा स्नानं शुचिर्भूत्वा संकल्प्य च यथाविधि ॥ निराहारो ऽद्य देवेश त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः । पूजयिष्याम्यहं भक्त्या शरणं भव भास्कर–इति संकल्पमंत्रः ॥ ततः स्नानं प्रकुर्वीत नद्यादौ विमले जले । मृदमालभ्य मंत्रैश्च तिलैः शुक्लैश्च मंत्रवित् ॥ सावित्रं परमं त्वं हि परं धाम जले मम । त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा ॥ प्रार्थना– आद्यस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च । पापं नाशय मे देव वाङ्मनः कर्मभिः कृतम् ॥ स्नानमंत्रः–ततः संतर्पयेद्देवानृषीन् पितृगणानपि । ततश्चैत्य गृहं मौनी पाखंडालापवर्जितः ॥ स्थंडिलं कारयेच्छुद्धं चतुरस्रं सुशोभनम् । स्थापयेद्व्रणं

कुंभ पंचरत्नसमन्वितम् ॥ कुंकुमेन लिखेत्पद्मं द्वादशारं सकर्णिकम् । तस्योपरि न्यसेत्सूर्यं सौवर्णं सरथारुणम् ॥ शक्त्या वा वित्तसारेण वित्तशाठ्यविवर्जितः । तमर्चयेद्गंधपुष्पैर्विधिमन्त्रपुरस्सरम् ॥ पंचामृतेन स्नपनं कुर्यादर्कस्य संयतः । ततस्तु गन्धतोयेन परां पूजां समारभेत् ॥ गंधैर्नानाविधैर्दिव्यैः कर्पूरागरुकुंकुमैः । फलैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुंकुमैश्च सुगंधिभिः ॥ मडप कारयेत्तत्र पुष्पमालाविभूषितम् । यथाशोभं प्रकुर्वीत अधश्चोपरि सर्वतः ॥ ततः संपूजयेद्देवं भास्करं कमलोपरि । मध्ये दलेषु पूर्वादि ह्यादित्यादीन्प्रपूजयेत् ॥ आदित्याय नमः भास्कराय० भानवेन० अर्यम्णेन० विश्वचक्राय० अंशुमतेन० सहस्रांशवेन० भगाय० सुरथाय० सूर्याय० द्वादशात्मनेन० प्रभाकराय० ॥ जन्मांतरसहस्रेषु दुष्कृतं यन्मया कृतम् । तत्सर्वं नाशमायातु त्वत्प्रसादाद्दिवाकर ॥ ततो रथपूजा ॥ ततः संपूजयेद्देवमच्युतं तद्रथे स्थितम् । अष्टाक्षरेण मंत्रेण गंधपुष्पादिभिः क्रमात्– ॥ ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः इति मंत्र ॥ कालात्मा सर्वभूतात्मा वेदात्मा विश्वतोमुख । जन्ममृत्युजरारोगसंसारभयनाशनः –उदये अर्घ्यमंत्रः ॥ ततः संपूजयेच्छुक्लां सवत्सां गां पयस्विनीम् । सवस्त्रघंटाभरणां कांस्यपात्रे च दोहिनीम् ॥ ब्रह्मणोत्पादिते देवि सर्वपापविनाशिनि । संसारार्णवमग्नं मां गोमातस्त्रातुमर्हसि ॥ सुरूपा बहुरूपाश्च मातरो लोकमातरः । गावो मामुपसर्पंतु सरितः सागरं यथा ॥ या लक्ष्मी सर्वदेवानां या च देवेषु संस्थिता । धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ तिलहोमं ततः कुर्यात्सावित्र्याऽष्टोत्तरशतम् । ततस्तां कल्पयेद्धेनुं सद्यो मे प्रीयतामिति ॥ आचार्याय ततो दद्यादादित्यं सरथारुणम् ॥ सकुंभरक्तवस्त्रैश्च सर्वोपस्करसंयुतम् । मनोभिलषितावाप्तिं करोतु मम भास्करः– दानमंत्र ॥ गृह्णामि भास्कर रवे भवंतं विश्वतोमुखम् । मनोभिलषितावाप्तिमुभयोः कर्तुमर्हसि – प्रतिग्रहणमंत्रः ॥ सर्वतीर्थमयीं धेनुं सर्वयज्ञमयीं शुभाम् । सर्वदानमयीं देवीं ब्राह्म

णाय ददाम्यहम्-- गोदानम् ॥ गृह्णामि सुरभीं देवीं सर्वयज्ञमयीं शुभाम् । उभौ पुनीहि वरदे उभयोस्तारका भव ॥ ततस्तु भोजयेद्द्विप्रान्द्वादशैव स्वशक्तितः । दद्याच्च दक्षिणां तेभ्यः प्रणिपत्य विसर्जयेत् ॥ अवैकल्यं भवेत्तस्य शांतिरायुर्द्विजोत्तम । अभिनंद्य तमाशीर्भिस्ते सर्वे अभिनंदिताः ॥ ततस्तु स्वयमश्नीयाद्द्विजानामवशिष्टकम् । सह पुत्रैः कलत्रैश्च अन्यैर्बहुजनैर्वृतः ॥ एवं यः कुरुते राजन्सोऽत्यंतं पुण्यमश्नुते । प्रभूणां च विधिः प्रोक्तः सर्वेषां दृष्टिगोचरः ॥ सर्वैश्च तद्व्रतं कार्यं स्वशक्त्या दुःखभीरुभिः । प्रभुः प्रथमकल्पस्य यो ऽनुकल्पेन वर्तते । विफलं तत्तु तस्य स्यादनुशस्त्वनुकल्पिकः ॥ अथ निर्धनस्य विधिः ॥ पंचम्यां नियमं कुर्यादाचार्यवचनाद्व्रती । षष्ठ्यां स्नानं प्रकुर्वीत संतर्प्य पितृदेवताः ॥ अभ्येत्य स्वगृहं मौनी सूर्यं मनसि चिंतयेत् । स्थापयेदव्रणं कुंभं मृत्पात्रं च तथोपरि ॥ तस्योपरि न्यसेत्सूर्यं फलकेन विनिामतम् । सौवर्णं भक्तिसंयुक्तं रथं सारथिना युतम् ॥ तमर्चयेज्जगन्नाथं गृहीत्वाऽऽज्ञां गुरोः स्वयम् । षडक्षरेण मंत्रेण गंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ ॐ नमःसूर्याय इति मंत्रः ॥ संपूज्य विधिवद्देवं फलपुष्पादिकं च यत् । सूर्यं निवेदयेत्सर्वं सूर्यो मे प्रीयतामिति ॥ ततः प्रभाते विमले गत्वा गुरुगृहं प्रति । सर्वोपकरणैः सूर्यमाचार्याय निवेदयेत् ॥ धान्यं पुष्पं फलं वस्त्रं रत्नधेन्वादिकं च यत् । गवां कोटिसहस्रं तु कुरुक्षेत्रे ऽर्कपर्वणि ॥ चंपादानस्य राजेंद्र कलां नार्हति षोडशीम् । सर्वतीर्थप्रदानानि तथान्यान्यपि षोडश ॥ चंपया तुलितानीह चंपैका त्वतिरिच्यते ॥ इति श्रीस्कंदपुरा॰ चंपाषष्ठीव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ मार्गशीर्षशुक्लचंपाषष्ठी ॥ मार्गे मासे शुक्लपक्षे षष्ठी वैधृतिसंयुता । रविवारेण संयुक्ता सा चम्पा इति कीर्तिता - इति मल्लारिमाहात्म्ये ॥ मार्गशीर्षे ऽमले पक्षे षष्ठ्यां वारेंऽशुमालिनः । शततारागते चंद्रे लिंगं स्यद्दृष्टिगोचरम् -इति ॥ इयं योगविशेषेण पूर्वा, योगाभावे परा ग्राह्या ॥ इति चंपाषष्ठी ॥ ॥ ॥

।। ।। अथ सप्तमीव्रतानि ।। ।। तत्र वैशाखशुक्लसप्तम्यां गंगोत्पत्ति । तत्र पूजा चोक्ता पृथिवीचंद्रोदये ब्राह्मे–वैशाखशुक्लसप्तम्यां जन्हुना जाह्नवी स्वयम् । क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्ता कर्णरंध्रात्तु दक्षिणात् ।। तां तत्र पूजयेद्देवीं गंगां गगनमेखलाम् –इति ।। हरिवंशे पुण्यकव्रतां ते– अब्द प्रातःस्नानमभिधाय, गंगाया व्रतकथा महायशस्कर्युक्ता ।। प्रत्यूषे च सदा स्नानं कार्यं मंदाकिनीजले । अन्यत्र वा जले स्नान शुक्लपक्षे हरिप्रिये ।। एतद्गंगाव्रतं नाम सर्वकामप्रदं शुभम् । सप्त सप्त च सप्ताथ कुलानि हरिवल्लभे ।। स्त्री तारयति धर्मज्ञे गंगाव्रतकधारिणी । देयं कुंभसहस्रं तु गंगायां व्रतके शुभे ।। तारणं सिद्धिदं चैव तद्व्रतं सर्वकामिकम् । वैशाखे शुक्लपक्षे तु सप्तम्यां पूजयेद्धरिम् ।। गंगायां विधिवत्स्नात्वा भोजयेद्ब्राह्मणान् दश । पूजयेत्सूक्ष्मवस्त्रैश्च पुष्पसच्चंदनैः शुभैः ।। पूजकः सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ।। इयं च शिष्टाचारान्मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या । दिनद्वये तद्व्याप्तावेकदेशव्याप्तौ वा पूर्वा युग्मवाक्यात् ।। इति गंगासप्तमीव्रतम् ।। ।। अथ शुक्लादि श्रावणकृष्णसप्तम्यां शीतलाव्रतम् । तच्च मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यम् । तत्र माधवीये हारीतः– पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनीतिथि इति ।। अथ व्रतविधिः ।। मासपक्षाद्युल्लिख्य ममेहजन्मनि जन्मांतरे चावैधव्यप्राप्तये ऽखंडितभर्तृसंयोगपुत्रपौत्रादिधनधान्यप्राप्तये शीतलाव्रतं करिष्ये । तयाच, यथा मिलितोपचारैः शीतलां पूजयिष्ये । तत्राष्टदलपीठे ऽव्रणं कलशं संस्थाप्य, तदुपरि सौवर्णीं शीतलां पूजयेत् ।। अथ ध्यानं, स्कांदे– वंदे ऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबराम् । मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ।। कुंभे संस्थापयेद्देवीं पूजयेन्नाममंत्रत । शीतले दह मे पापं पुत्रसौख्यफलप्रदे । धनधान्यप्रदे देवि पूजां गृह्ण नमो ऽस्तु ते । इति ध्यानम् ।। (नाममंत्रेण–) आवाहनं आसनं पाद्यं । विधाय शीतलाकारि अवैधव्यसुतप्रदे । श्रावणस्य सिते पक्षे अर्घ्यं गृह्ण नमो ऽस्तु ते । अर्घ्यम् ।। ना–

ममंत्रेण पूजनीया ॥ आचमनम् । स्नानम् । वस्त्रम् । उपवस्त्रम् । विलेपनम् । अलंकारान् । पुष्पाणि । धूपम् । दीपम् ॥ शीतले पंचपक्वान्नं दध्योदनयुतं शुभम् । नैवेद्यं गृह्यतां देवि घृतमिश्रं च सुंदरि । नैवेद्यम् ॥ करोद्वर्तनम् । फलम् । तांबूलम् । दक्षिणाम् । नीराजनम् । पुष्पाञ्जलिम् । प्रदक्षिणाम् । नमस्कारान् । शीतले दह मे पापमिति प्रार्थयित्वा व्रतसंपूर्णफलावाप्तये ब्राह्मणाय वायनं दद्यात् । तत्र मंत्रः—दध्यन्नं दक्षिणायुक्तं वाणकं फलसंयुतम् । शीतलाप्रीतये तुभ्यं ब्राह्मणाय ददाम्यहम् ॥ इति पूजनम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ हेमाद्रौ भविष्ये—। कृष्ण उवाच । प्रसिद्धं श्रूयतां रम्यं नगरं हस्तिनापुरम् । इंद्रद्युम्नश्च राजा ऽभून्नृपतिर्लोकपालकः १ धर्मशीलाभिधा चासीत्तस्य भार्या यशस्विनी । क्रियाकांडे रता साध्वी दानशीला प्रियंवदा २ बभूव प्रथमः पुत्रो महाधर्मेति नामतः । नंदते पितृवात्सल्यात्काले ऽन्यस्मिंस्ततो ऽभवत् ३ द्वितीया च तथा पुत्री तस्य जाता गुणोत्तमा । पुत्री लक्षणसंपन्ना शुभकारीति नामतः ४ ववृधे सा पितुर्गेहे सर्वांगगुणसुंदरी । नाम्ना रूपेण सा बाला सर्वासां च गुणाधिका ५ सामुद्रिकगुणोपेता पद्महस्ता प्रियंवदा । कौंडिण्यनगरे राजा सुमित्रो नाम नामतः ६ तत्पुत्रो गुणवान्नाम शुभकार्याः पतिर्बभौ । वरो देहेन मानेन लक्ष्मीवान्रूपवान्गुणैः ७ गुणवान् शुभकारिण्याः पाणिं जग्राह धर्मवित् । गृहीत्वा पारिबर्हाणि गतो ऽसौ नगरं प्रति ८ पुनः समागतो राजा गुणवान् हस्तिनापुरम् । आजगाम परिजनैस्तत्पुत्र्यानयनोत्सुकः ९ प्रणम्य च पितुः पादौ तमूचे चारुहासिनी । आज्ञां देहि महाराज श्वशुरस्य गृहं प्रति १० हृद्गतं च पितुर्ज्ञात्वा मातुस्तु शुभकारिणी । रथमारुह्य हे स्वामिन्यास्यामि स्वपुरं प्रति ११ ततः पिता तु तस्याथ दंपत्योः शुभहेतवे ॥ पितोवाच । पुत्रि त्वं सुस्थिरा भूत्वा वारैकं च क्षमस्व मे १२ शीतलासप्तमी नाम व्रतं चर शुभप्रदम् ॥ कन्योवाच । तात तत्र परिज्ञातं

पदुक्त पद्मयोनिना १३ पतिव्रतासमो धर्मो नास्तीह भुवनत्रये ॥ कृष्णोवाच । ततस्ता कारयामास शीतलाव्रतमुत्तमम् १४ सौभा-
ग्यारोग्यजनकमवैधव्यकर परम् । पुत्रीं च प्रेषयामास ब्राह्मणो वेदपारगः १५ व्रतोपकरणं चैव गृह्य पूजा सरोवरे । मार्गे पद्मानि सं-
गृह्य व्रतोपकरणं शुभा १६ शीतलापूजने हेतोर्गता साध्वी सरोवरम् । तत्रादृष्टं तया मोहात्तडागं विधिसादनम् १७ बभ्राम सा वने
शून्ये स्मरती शीतलाव्रतम् । अतिश्रांता ययौ मोहात्स्मरती शीतलां बहु १८ ददर्श सा ततो नारीं वृद्धां रूपगुणान्विताम् । विप्रस्तु
स्वपितो मार्गे दृष्टिहीनो मृतस्तदा १९ शुभकारीं ततो वाक्य वृद्धा ऊचे यशस्विनी । भविष्यति चिरंजीवी भर्ता ते राजकन्यके २०
आगच्छ पूजनार्थाय दर्शयामि सरोवरम् । तया सह गता साध्वी तडागं विधिपूर्वकम् २१ पूजयामास शर्वाणीं तोषयामास शीतलाम् ।
पूजयित्वा च तां देवीं स्वपथ गंतुमुद्यता २२ शीतलाया वरं गृह्य सहसख्या च प्रस्थिता । ततो सा ददृशे ऽरण्ये ब्राह्मणं दष्टसर्पकम्
२३ भार्या तु तस्य निकटे ब्राह्मणस्य महात्मनः । ब्राह्मणो निद्रया सुप्त पूर्वकर्मप्रभावतः २४ दष्टो भुजगरूपेण कालेनैव हतस्तदा ।
विपेर्हत पतिं दृष्ट्वा रुरोद ब्राह्मणी बहु २५ राजपुत्री लब्धवरा शीतलायाः पतिव्रता । वर सगृह्य शालायां रुरोद करुणं बहु २६ तयोस्त
रुणदंपत्योर्योग्यसौभाग्यदर्शनात् । रुदती करुण बाला शोचयामास त वरम् २७ यावन्न परलोकस्थ जन सगत्य तत्कृते । तावदग्नेन
सहसा अनुगच्छामि वह्निना २८ तिष्ठ तिष्ठ क्षण सुभ्रु गमिष्यामि हि पावकम् । अर्जयिष्ये दिवं दिव्यमक्षय्यं भवनांतरम् २९ राजपु-
त्री वचः श्रुत्वा ब्राह्मण्याः करुणान्विता । सस्मार शीतलां देवीं महावैधव्यभजनीम् ३० आगच्छच्छीतला तत्र वरं दातुं शुचिस्मिता ॥
शीतलोवाच । वर वरय वत्से त्वं किं दुःख चारुहासिनि ३१ शीतला व्रतजं पुण्य देहि त्वं ब्राह्मणीं शुभाम् । तेन पुण्यप्रभावेण

भर्ता ऽस्या निर्विषो भवेत् ३२ इति देव्या वचः श्रुत्वा ह्यददद्ब्राह्मणीं ततः । बुबोधाशु ततो विप्रश्चिरं सुप्तो यथा पुनः ३३ शीतलाया व्रते बुद्धिर्ब्राह्मण्याश्चाभवत्तदा । अकरोत्साऽपि तत्पूजां भक्तिभावपुरःसरा ३४ तत्रांतरे राजपुत्र्याः पतिरागाद्वनातिकम् । सोऽपि दृष्टोऽथ सर्पेण गच्छंत्यग्रे ददर्श तम् ३५ विललाप ततः साध्वी सख्या सह वनांतरे ॥ शीतलोवाच । वत्से मया पूर्वमुक्तं स्मर तद्वरवर्णिनि ३६ शीतलाव्रतचारिण्या वैधव्यं नैव जायते । स्वयमुत्थाय कल्याणि पतिं सुप्तं गृहे यथा ३७ बोधयाशु पतिं भीरु व्रतं वैधव्यनाशनम् । इत्युक्ता बोधयामास भर्तारं सा पतिव्रता ३८ ॥ भर्ता ऽपि मुदितो दृष्ट्वा स्वां प्रियां प्रीतिकर्मणि ३९ दृष्ट्वा तु महदाश्चर्यं तद्ग्राम...नो जनाः । सर्वे ते विस्मयं जग्मुर्ब्राह्मणीपतिरक्षणात् ४० ब्राह्मणी हर्षिता वृद्धां प्रणिपत्य पतिव्रता । देहि मातर्नमस्तेऽस्तु ह्यवैधव्याविंयोगते ४१ अन्यापि शीतलायास्तु व्रतं नारी करिष्यति । अवैधव्यमदारिद्र्यमवियोगः स्वभर्तृतः ४२ तथेत्यंतर्दधे देवी शीतला कामरूपिणी । शीतलाया वरं लब्ध्वा जगामात्मीयवेश्मनि ४३ पद्मानिवासप्रभुविश्ववंद्यसमर्हणैः साधितविश्वमंगला । प्रसादमासाद्य च शीतलाया राज्ञः सुता पार्वतिवद्बभूव ४४ ॥ इति भविष्ये शीतलाव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ भाद्रशुक्लसप्तम्यां मुक्ताभरणव्रतं हेमाद्रौ भविष्ये ॥ सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या । तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा परा । मम इहजन्मनि अखंडितसंततिपुत्रपौत्रवृद्ध्ये मुक्ताभरणव्रते उमामहेश्वरपूजनं करिष्य इति संकल्प्य शिवाग्रे दोरकं विन्यस्य पूजयेत् ॥ ॥ अथ पूजा ॥ देवदेव महेशान परमात्मन् जगद्गुरो । प्रतिपादितया सोम पूजया पूजयाम्यहम् । आवाहनम् ॥ अनेकरत्नखचितं सौवर्णं मणिसंयुतम् । मुक्ताचितं महादेव गृहाणासनमुत्तमम् । आसनम् ॥ पाद्यं गृहाण देवेश सर्वविद्यापरायण । ध्यानगम्य सतां शंभो सर्वेश्वर नमो ऽस्तु ते । पाद्यम् ॥ इदमर्घ्यमनर्घ्यं त्वममराधीश शंकर ।

किंकरीभूतया सोम मया दत्त गृहाण भोः । अर्घ्यम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्यः समानीतं सुशीतलम् । जलमाचमनीयार्थं गृहाण उमया सह । आचमनीयम् ॥ मध्वाज्यशर्करामिश्रमधुना परिकल्पितः । शंकर प्रीतये तुभ्य मधुपर्को निवेदितः । मधुपर्कम् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसयुतम् । पंचामृतेन स्नपन प्रीयतां परमेश्वर । पंचामृतस्नानम् ॥ गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती । ताभ्यस्तोयं समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । शुद्धोदकस्नानम् ॥ स्नानादूर्ध्वं महादेव प्रीत्या पापप्रणाशन । वस्त्रयुग्मं मया देव गृह्यतां कांतया सह । वस्त्रम् ॥ उपवीत सोत्तरीय नानाभूषणभूषितम् । गृहाण सोम विमल मया दत्तमिद शुभम् । उपवीतम् ॥ मलयाचलसंभूत घनसा रसुगंधियुक् । चंदन पंचवदन गृहाण वनितान्वित । चंदनम् ॥ जातीचंपकपुन्नागवकुलैः पारिजातकैः । शतपत्रैश्च कल्हारैरर्चयेऽहमुमापतिम् । पुष्पाणि ॥ त्रैलोक्यपावन ते ऽद्य परमात्मञ्जगद्गुरो । चंदनागरुकर्पूरधूप दास्यामि शंकर । धूपम् ॥ शुभवर्तियुत सर्पिर्लोडितं वह्निना युतम् । दीपमेकमनेकार्कप्रतिम कल्पयत्विमम् । दीपम् ॥ पायसापूपकृसरं दुग्धान्नं सगुडौदनम् । दिव्यान्न षड्रसोपेत सुधारससमन्वितम् । समर्पयामि देवेश किंकरी शंकराय ते । नैवेद्यम् ॥ पुनराचमन शुद्ध कुरु सोमांबुना ऽमुना । मुखशुद्धिकरं देव कृपया त्वं गृहाण भोः । आचमनीयम् ॥ कस्तूरिकासमायुक्त मलयाचलसंभवम् । गृहाण चंदन सोम करोद्वर्तनक शुभम् । करोद्वर्तनम् ॥ नारिकेरफल जंबूफल नारिंगमुत्तमम् । कूष्मांड पुरतो भक्त्या कल्पित प्रतिगृह्यताम् । फलम् ॥ पूगीफल० । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ नीराजनम् ॥ पुष्पांजलिम् ॥ प्रदक्षिणाम् ॥ नमस्कारान् ॥ महादेव महाराज प्रीत्या पापप्रणाशन । अस्माक कुर्वतां पूजां साधु वा ऽसाधु योजिताम् । ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि भवतो विहिता च या । संपूर्णा सा तु विश्वेश विभक्ता त्वत्प्रसादतः । प्रार्थना ॥ देवदेव जगन्नाथ

सर्वसौभाग्यदायक। गृह्णीयां दोररूपं त्वां पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम्। दोरकग्रहणम् ॥ सप्तसामोपगीतं त्वां धारयामि जगद्गुरो। सूत्रग्रंथिस्थितं नित्यं धारयामि स्थिरो भव। इति दोरकबंधनम् ॥ हर पापानि सर्वाणि तुष्टिं कुरु दयानिधे। प्रसन्नः सन्नुमाकांत दीर्घायुः पुत्रदो भव। इति जीर्णदोरकोत्तारणम् ॥ अथ वायनम्– मंडकान्वटकान्वाथ सघृतान्दक्षिणायुतान्। एकादशशतं कृत्वा ब्राह्मणाय कुटुंबिने। वेदशास्त्रप्रवीणाय दद्यात्सोमस्य तुष्टये ॥ शंकरः प्रतिगृह्णाति शंकरो वै ददाति च। शंकरस्तारकोभाभ्यां शंकराय नमो नमः। इति वायनम् ॥ एवं या पूजनं कुर्यात्सोमस्य सुखदस्य च। सर्वान्कामानवाप्नोति पुत्रपौत्रैश्च मोदते ॥ इति पूजा ॥ ॥ अथ कथा ॥ श्रीकृष्ण उवाच। मुनींद्रो लोमशो नाम मथुरायां गतः पुरा। सोऽर्चितो वसुदेवेन देवक्या च युधिष्ठिर १ उपविष्टः कथाः पुण्याः कथयित्वा मनोरमाः। ततः कथयितुं भूयः कथामेतां प्रचक्रमे २ लोमश उवाच। कंसेन ते हताः पुत्रा जाता जाताः पुनः पुनः। मृतवत्सा देवकि त्वं पुत्रदुःखेन दुःखिता ३ यथा चंद्रमुखी दीना बभूव नहुषप्रिया। पश्चाच्चीर्णव्रता चैव बभूवामृतवत्सका ४ त्वमपि देवकि तथा भविष्यसि न संशयः ॥ देवक्युवाच। का सा चंद्रमुखी ब्रह्मन् बभूव नहुषप्रिया ५ किं चीर्णे हि व्रतं दिव्यं तया संततिवर्धनम्। सपत्नीगर्वदमनं सौभाग्यारोग्यदं विभो ६ लोमश उवाच। अयोध्यायां पुरा राजा नहुषो नाम विश्रुतः। तस्य स्त्री रूपसंपन्ना देवी चंद्रमुखी प्रिया ७ तथा तस्यैव नगरे विष्णुगुप्तोऽभवद्द्विजः। आसीद्गुणवती तस्य पत्नी भद्रमुखी तथा ८ तयोरासीदतिप्रीतिः स्पृहणीया परस्परम्। अथ ते द्वेऽपि सख्यौ वै स्नानार्थं शरयूजले ९ प्राप्ते प्राप्ताश्च तत्रैव बह्वयो वै नगरांगनाः। ताः स्नात्वा मंडलं चक्रुस्तन्मध्ये व्यक्तरूपिणम् १० लेपयित्वा शिवं शांतमुमया सह शंकरम्। गंधपुष्पाक्षतैर्भक्त्या पूजयित्वा यथाविधि ११ प्रणम्य गंतुकामास्ताः पप्रच्छतु-

रुमेखियी । तां ऊचुः शकरास्माभिः पावत्या सह [illegible]
म् १३ तासां तद्वचन श्रुत्वा सख्यौ ते चापि देवकि । कृत्वा च समयं तत्र बध्वा दोर्भ्यां सुदोरकम् १४ ततस्ताश्च गृह जग्मु स्वसत्रा।
भिः समावृताः । कालेन महता तस्यास्तद्व्रत विस्मृत शुभम् १५ चंद्रमुख्याः प्रमत्ताया विस्मृतः स सु दोरकः । भद्रमुख्यास्तया भद्रे
विस्मृते सर्वमेव तत् १६ मृता कैश्चिदहोरात्रैः सा बभूव प्लवगमी । भद्रास्या कुक्कुटी जाता व्रतभंगाच्छुमानने १७ संभूय भूयः समय
प्राग्व्रत चक्रतुः सदा । कालेन पचतां प्राप्ते ससीभावात्सदैव ते १८ अदेवमातृके देशे जाता गोकुलसज्ञके । ब्राह्मणी ब्राह्मणी जाता
क्षत्रिया क्षत्रियाऽभवत् १९ नाम्ना चन्द्रमुखी या सा भूपणा नाम सा ऽभवत् । अग्निमीळस्य सा दत्ता पित्रा तस्य पुरोधसः २० अ
तीव वल्लभा चासीद्भूपणा भूपणप्रिया । भूपिता भूपणवरै रूपेणालकृता स्वयम् २१ तस्यां बभूवुरष्टौ च पुत्राः सर्वगुणान्विताः ॥ मातृवद्
पक्षपन्ना पितृवद्धर्मशालिनः २२ सख्यौ ते तेन तद्बन्ध जाते जातिस्मरे किल । पुनर्निरतरा प्रीतिस्तयोरासीद्यथा पुरा २३ काले बहु
तिथे जाते त्यक्ताशा त्यक्तयौवना । मध्ये वयसि राज्ञी सा पुत्रमेकमजीजनत् २४ ईश्वरी रोगिणं मूक प्रज्ञाहीनं च विस्वरम् ॥ तादृशो-
पि महाभागे मृतो ऽसौ नववार्षिकः २५ ततस्तां भूपणां द्रष्टुमीश्वरीं पुत्रदु खिताम् । सखीभावादतिस्नेहात्पुत्रैः स्वैः परिवारिता २६ अ
मुक्ताभरणा भद्रा स्वरूपेणैव भूपिता ।(सा हि भद्रा द्विजस्याभूद्भार्या भूपणनामिका २७ पुरा हि तस्याः कालेन कुक्कुटी बहुपुत्रिणी)। तां
दृष्ट्वा तादृशीं भव्यां प्रजज्वालेश्वरी रुपा २८ततो गृह प्रेपयित्वा ब्राह्मणीं तीव्रमत्सरा । चिंतयामास सा शीघ्र तस्याः पुत्रवध मति २९

१ पञ्चच्छतुर्वरस्निया इत्यपरः पाठः । सम, ह्यपि सख्यौ वरस्त्रियः मति पञ्चच्छतुरित्यन्वयः । २ चन्द्रमुखी

निश्चित्य चेतसा क्रूरा घातयामास तत्सुतान्। हता हताश्च ते पुत्रा पुनर्जीवंत्यनामयाः ३० तदद्भुततरं दृष्ट्वा सखीमाहूय भूषणाम्। उपविश्यासने श्रेष्ठे बहुमानपुरःसरम् ३१ अपृच्छद्विस्मयाविष्टा राज्ञी सा नृपवल्लभा। ब्रूहि तथ्यं महाभागे किं त्वया सुकृतम् कृतम् ३२ दानं व्रतं तपो वापि शुश्रूषणमुपोषणम्। येन ते निहताः पुत्राः पुनर्जीवंत्यनामयाः ३३ तथा हि बहुपुत्रा च जीवद्वत्सा शुभानना। अमुक्ताभरणा नित्यं भर्तुश्चेतस्यवस्थिता ३४ अतीव शोभसे भद्रे विद्युदेव यथांऽबरे ३५ भूषणोवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि जन्मांतरविचेष्टितम्। किं तद्धि विस्मृतं सर्वमयोध्यायां कृतं हि यद् ३६ आवाभ्यां व्रतवैकल्यं प्रमत्ताभ्यां वरानने। येन त्वं प्लवगी जाता जाताऽहं कुक्कुटी तथा ३७ तथापि व्रतवैकल्यं त्वया चापल्यतः कृतम्। मया तु सर्वभावेन चेतसाध्याय संकरम् ३८ तिर्यग्योन्यनुसारेण मनोवृत्त्या ह्यनुष्ठितम्। एतद्धि कारणं भद्रे नान्यत्किञ्चित्करोम्यहम् ३९ लोमश उवाच। इत्याकर्ण्य वचः स्मृत्वा पूर्वजन्मविचेष्टितम्। ईश्वरी च तया सार्द्धं पुनः सम्यक्कार ह ४० व्रतस्यास्य प्रभावेण पुत्रपौत्रादिसंभवम्। भुक्त्वा तु सौख्यमतुलं मृता शिवपुरं गता ४१ तस्मात्त्वमपि कल्याणि व्रतमेतत्समाचर। आरब्धेऽस्मिन्व्रते दिव्ये जीवत्पुत्रा भविष्यसि ४२ देवक्युवाच। ब्रह्मन्नाख्याहि मे सम्यग्व्रतमेतत्सुखप्रदम्। संतानवृद्धिकरणं शिवलोकस्थितिप्रदम् ४३ लोमश उवाच। भद्रे भाद्रपदे मासि सप्तम्यां सलिलाशये। स्नात्वा शिवं मंडलके लेखयित्वा सहांबिकाम् ४४ तत्र संपूज्य समयं कुर्याद्बध्वा करे गुणम्। यावज्जीवं मयात्मा तु शिवस्य विनिवेदितः ४५ इत्येवं समयं कृत्वा ततःप्रभृति दोरकम्। सौवर्णं राजतं वाऽपि सूत्रं वा धारयेत्करे ४६ मंडकान्वटकान्दद्यान्मासे पक्षेऽथवाऽब्दके। स्वयं तांश्चैव भुंजीत व्रतभंगभयाच्छुभे ४७ प्रतिमासं तु सप्तम्यां शुक्लपक्षे विशेषतः। कुर्यादेवं व्रतं भद्रे वर्षांतेऽपि तु देवकि ४८ कारिता मुद्रिका शैवी हैमी रूप्या स्वशक्तितः।

ताम्रपात्रोपरि स्थाप्य ब्राह्मणाय निवेदयेत् । आचार्याय विशेषेण सुवर्णस्यांगुलीयकम् ४९ पुष्पं कुंकुमसंयुक्तं तांबूलांजनसूत्रके । सहार्थे तृतीया ॥ एवं सत्कारयित्वा तु व्रतं संततिवर्धनम् ५० सर्वपापविनिर्मुक्तं भुक्त्वा सौख्यमनामयम् । संतानं वर्धयित्वा च शिवलोके महीयते ५१ एतत्ते सर्वमाख्यानमाख्यातं व्रतमुत्तमम् । कुरु देवकि यत्नेन जीवत्पुत्रा भविष्यसि ५२ कृष्ण उवाच । इत्युक्त्वा तु मुनिश्रेष्ठस्तत्रैवांतरधीयत । चकार सर्वं यत्नेन यदुक्तं तत्र धीमता । व्रतस्यास्य प्रभावेण देवकी मामजीजनत् ५३ तस्मात्पार्थ नरैः कार्यं स्त्रीभिः कार्यं विशेषतः । व्रतं पापप्रशमनं सुखसंततिवर्धनम् ५४ एवं यः शृणुयाद्भक्त्या यश्चैतत्प्रतिपादयेत् । व्रतमाख्यानसहितं सोऽपि पापैः प्रमुच्यते ५५ आख्यानकं व्रतमिदं सुखमोक्षकामा या स्त्री करिष्यति शिवं हृदये निधाय । दुःखं विहाय बहुशो गतकल्मषौघा सा स्त्री व्रताद्भवति शोभनजीववत्सा ५६ ॥ इति हेमाद्रौ भविष्ये मुक्ताभरणसप्तमीव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लसप्तम्यां सरस्वतीपूजा ॥ सा उदयव्यापिनी ग्राह्या ॥ युगाद्या वर्षवृद्धिश्च सप्तमी पार्वतीप्रिया । रवेरुदयमीक्षते न तत्र तिथियुग्मकं-इति प्रतापमार्तंडे भविष्योक्तेः ॥ वर्षवृद्धिर्जन्मतिथिः ॥ तत्रैव मूलनक्षत्रे पुस्तकस्थापनमुक्तम् । रुद्रयामले-मूलऋक्षे सुधाधीश पूजनीया सरस्वती । पूजयेत्प्रत्यहं यावत् श्रवणांते विसर्जयेत् ॥ नाध्यापयेन्न च लिखेन्नाधीयीत कदाचन । पुस्तके स्थापिते देव्या विद्याकामो द्विजोत्तम ॥ अहं भद्रा च भद्राऽहं नावयोरंतरं क्वचित् । सर्वसिद्धिं प्रदास्यामि भद्रायां चर्चिताऽस्म्यहम् ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे मेधा नाम सरस्वती । मूलेनावाहयेद्देवीं श्रवणेन विसर्जयेत् ॥ इति सरस्वतीपूजनम् ॥ ॥ अथ रथसप्तमीव्रतम् ॥ अस्यां स्नानविधिः । तच्च अरुणोदयव्यापिन्यां कार्यम् । तदुक्तं मदनरत्ने स्मृतिसंग्रहे-सूर्यग्रहणतुल्या सा शुक्ला माघस्य सप्तमी । अरुणोदयवेलायां स्नानं तत्र महत्फलम् ॥ माघे मासि

सिते पक्षे सप्तमी कोटिपुण्यदा । कुर्यात्स्नानार्घ्यदानाभ्यामायुरारोग्यसंपदः ॥ दिनद्वये अरुणोदयव्यापित्वे पूर्वैव ॥ सौवर्णे राजते ताम्रे भक्त्याऽलाबुमये तथा । तैलेन वर्त्तिर्दातव्या महापात्रे तु रंजिता ॥ समाहितमना भूत्वा दीपं शिरसि धारयेत् । भास्करं हृदये ध्यात्वा चेमं मंत्रमुदीरयेत् ॥ नमस्ते रुद्ररूपाय रसानां पतये नमः । अरुणाय नमस्ते ऽस्तु हरिदश्व नमो ऽस्तु ते ॥ जले परिहरेदीपं संतर्प्य पितृदेवताः । लोलार्करथसप्तम्यां स्नात्वा गंगादिसंगमे ॥ सप्तजन्मकृतैः पापैर्मुक्तो भवति तत्क्षणात्—इति गर्गः ॥ षष्ठीसप्तमियोगे वा रथारूढांशुमालिनः । योगोऽयं पद्मको नाम सहस्रार्कग्रहैः समः ॥ एतच्च स्नानं तिथ्यादिस्मरणानंतरं शिष्टाचारात् ॥ सप्तार्कपत्राणि सप्तबदरीपात्राणि शिरसि निधाय स्नायात् । तत्र मंत्रः—यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हंतु सप्तमी ॥ स्नानानंतरमर्घ्यं च दातव्यं मंत्रपूर्वकम् । सप्तसप्तावहप्रीत सप्तलोकप्रदीपन । सप्तम्या सहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर । अर्घ्यम् ॥ जननी सर्वभूतानां सप्तमी सप्तसप्तिके । सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमंडले । प्रार्थना ॥ इति स्नानविधिः ॥ अनेनैव तु मंत्रेण पूजयेच्च दिवाकरम् । कृत्वा षोडशधा राजन् सप्ताश्वरथमंडले ॥ ॥ अथ कथा ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच । कथं सा क्रियते कृष्ण मनुष्यै रथसप्तमी । चक्रवर्तित्वफलदा या हि ख्याता त्वया मम १ कृष्ण उवाच । आसीत्कांबोजविषये यशोवर्मा नराधिपः । वृद्धे वयसि तस्यासीत्सर्वव्याधियुतः सुतः २ तत्कर्म पापं सो ऽपृच्छद्विनीतं द्विजपुंगवम् । स प्राह राजन्वैश्यो ऽहं कृपणः पूर्वजन्मनि ३ ददर्श रथसप्तम्याः क्रियमाणं व्रतं नृप । व्रतदर्शनमाहात्म्यादुत्पन्नो जठरे तव ४ अदाता विभवे यस्मात्तस्मात्स व्याधितो ऽभवत् । ततः स राजा पप्रच्छ किमेतस्य विधीयताम् ५ ब्राह्मण उवाच । यस्य संदर्शनात्प्राप्तो लोभी स्थानमनुत्तमम् । तदेव क्रियतां राजन्नथ सप्तमिसंज्ञितम् ॥ व्रतं पापहरं येन च-

क्रवर्तित्वमाप्यते ६ राजोवाच । ब्रूहि विप्र व्रत कृत्स्नं सविधान समन्त्रकम् । रोगिणां च दरिद्राणां सर्वसंपत्प्रदायकम् ७ द्विज उवाच । शु
क्लपक्षे तु माघस्य षष्ठ्यामामन्त्रयेद्गृही । स्नानं शुक्लतिलैः कार्यं नद्यादौ विमले जले ८ वापीकूपतडागेषु विधिवद्धर्मवर्मतः । देवादीन्पूज
यित्वा तु गत्वा सूर्यालय ततः ९ सूर्यं पूज्य नमस्कृत्य पुष्पधूपाक्षतैः शुभैः । आगत्य भवन पश्चात्पंचयज्ञांश्च निर्वपेत् १० संभोज्यातिः
थिभृत्यांश्च बालभृत्याश्रितान्स्वयम् । विद्यमाने दिने ऽश्नीयाद्वाग्यतस्तैलवर्जितम् ११ रात्रौ विप्रान्समाहूय सर्वज्ञान्वेदपारगान् । सं-
पूज्य नियमं कुर्यात्सूर्यमाधाय चेतसि १२ सप्तम्यां तु निराहारो सर्वभोगविवर्जितः । भोक्ष्ये ऽष्टम्यां जगन्नाथ निर्विघ्नं तत्र मे कुरु १३
इत्युच्चार्य नृपश्रेष्ठ तोयं तोयेषु निक्षिपेत् । ततो विसृज्य त विप्रं स्वपेद्भूमौ जितेंद्रियः १४ ततः प्रातः समुत्थाय कृत्वा शौच शिल्पिभिः ।
कारयित्वा रथ दिव्य किंकिणीजालमालिनम् १५ सर्वोपस्करसंयुक्त रम्ये सर्वांगचित्रितम् । कांचन राजतं वा ऽथ हयसारथिसंयुतम् १६
ततो मध्याह्नसमये कृतस्नानादिको व्रती । अतिर्यग्वीक्षमाणस्तु पाखंडालापवर्जितः १७ सौरसूक्त जपेत्तावद् आगच्छेत स्वमालयम् ।
निवृत्तनित्यकार्यस्तु कृत्वा ब्राह्मणवाचनम् १८ वस्त्रमण्डपिकामध्ये स्थापयेत्तं रथोत्तमम् । कुंकुमेन सुगंधेन चर्चयित्वा समंततः १९
मालाभिः पुष्पधूपैश्च समंतात्परिवेष्टयेत् । धूपेनागरुमिश्रेण धूपयित्वा ततोपरि २० रथस्थं पूजयेद्भानुं सर्वसंपूर्णलक्षणम् । वि-
त्तानुसारं हैम च वित्तशाठ्यविवर्जितः २१ शाठ्याद्व्रजति वैकल्यं वैकल्याद्विफलं भवेत् । ततो देवं समभ्यर्च्य सरथं सहसार
थिम् २२ पुष्पैर्धूपैस्तथा गंधैर्वस्त्रालंकारभूषणैः । फलैर्नानाविधैर्भक्ष्यैर्नैवेद्यैर्घृतपाचितैः २३ पूजयेद्भास्करं भक्त्या मन्त्रैरेभिर्द्विजाभि क्र

१ पुस्तकांतरे तु रोगिणामित्यत्र ईश्वराणामिति पाठांतरम् । २ नद्यभावे तु कुत्रचित्- । विमले सलिले राजन् विधिवदिति पाठो दृश्यते ।

मात् २४ भानो दिवाकरादित्य मार्तंड जगतापते । अपांनिधे जगद्रक्ष भूतभावन भास्कर २५ प्रणतार्तिहरार्चित्य विश्वचिं-
तामणे विभो । विष्णो हंसादिभूतेश आदिमध्यांतभास्करा २६ भक्तिहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं जगत्पते । प्रसादात्तव संपू-
र्णमर्चनं यदिहास्तु मे २७ एवं संपूज्य देवेशं प्रार्थयेत्सुमनोगतम् । ददाति प्रार्थितं भानुर्भक्त्या संतोषितो नरैः २८ वित्तहीनो ऽपि वि-
धिना सर्वमेतत्प्रकल्पयेत् । रथं ससारथिं साश्वं वर्णकैर्भिन्नलेखितम् २९ सौवर्णं च तथा भानुं यथाशक्त्या विनिर्मितम् । प्रागुक्तेन वि-
धानेन पूजयित्वा सुविस्तरम् ३० जागरं कारयेद्रात्रौ गीतवादित्रनिस्वनैः । प्रेक्षणीयैर्विचित्रैश्च पुण्याख्यानकथादिभिः ३१ रथयात्रां प्रप-
श्येत भानोरायतनं श्रिया । अनिमीलितनेत्रस्तु नयेत्तां रजनीं बुधः ३२ प्रभाते विमले स्नात्वा कृतकृत्यस्ततो द्विजान् । तर्पयेद्विविधैर-
न्नैर्दानैर्वासोविभूषणैः ३३ अश्वमेधेन तुल्यं तदिदं ब्रह्मविदो विदुः । अतो देयानि दानानि यथाशक्त्या विचक्षणैः ३४ रथस्तु गुरवे देयो
यथोपस्करसंयुतः । सरक्तवस्त्रयुगलो रक्तधेनुसमन्वितः ३५ एवं चीर्णव्रतो राजन्किं नाप्नोति जगत्त्रये । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कुरु त्वं रथस-
प्तमीम् ३६ येनारोग्यो भवेत्पुत्रस्त्वदीयो नृपसत्तम । व्रतस्यास्य प्रभावेण प्रसादाद्भास्करस्य च ३७ भविष्यति महातेजा महाबलपराक्र-
मः । भोगान्स विपुलान्राजन्भुंक्ते राज्यमकंटकः ३८ दत्त्वा ऽसौ रथसप्तम्यां जायते मानवोत्तमः । लभते पुत्रपौत्रांश्च सूर्यलोकं स पश्य-
ति ३९ तत्र स्थित्वा कल्पमेकं चक्रवर्ती भविष्यति ॥ कृष्ण उवाच । इति सर्वं समाख्याय तपोयुक्तो द्विजोत्तमः ४० यथागतं जगामासौ
नृपः सर्वं चकार ह । यथादिष्टं द्विजेंद्रेण तत्तत्सर्वं बभूव ह ४१ एवं स चक्रवर्तित्वं प्राप्तवान्नृपनंदनः । श्रूयते यस्तु मांधाता पुराणेषु
परंतपः ४२ य इदं शृणुयाद्भक्त्या श्रावयेच्च यथाविधि । तस्यैव पुष्यते भानुर्यच्छत्येवापि संपदः ४३ एवंविधं रथवरं रथवाजियुक्तं हैमं

च हेमशतदीधितिना समेतम् । दद्याच्च माघसितसप्तमिवासरे यः सोऽसगचक्रगतिरेव महीं मुनक्ति ४४ इति रथसप्तमीव्रत सपूर्णम् ॥ ॥ अत्रैव अचलासप्तमीव्रतम् ॥ युधिष्ठिर उवाच । कथं स्त्रियः सुरूपाः स्युः सुभगाः सुप्रजास्तथा । पुण्यस्य महतश्चात्र सर्वमेतत्फल यत ॥ अल्पायासेन सुमहद्येन पुण्यमवाप्यते । कथयस्व प्रसादेन येन श्रेयो भविष्यति ॥ श्रीकृष्ण उवाच । श्रूयतां भरतश्रेष्ठ रहस्य मुनिभाषितम् । यन्मया कस्यचिन्नोक्तमचलासप्तमीव्रतम् ॥ वेश्या चेंदुमती नाम रूपौदार्यगुणान्विता । आसीत्कुरुकुलश्रेष्ठ समरस्य विलासिनी ॥ सा वसिष्ठाश्रम पुण्य जगाम गजगामिनी ॥ वसिष्ठमृषिमासीनं प्रणम्यानतकंधरा ॥ कृतांजलिपुटा भूत्वा प्राहेद जगतो हितम् । मया न दत्त न हुत नोपवासव्रत कृतम् ॥ भक्त्या संपूजित शंभुः स्वामिश्च्छार्ङ्गधरो न च । सांप्रत तप्यमानाया व्रत किंचिद्वदस्व मे ॥ येन तु स्यात्तु पकोघादुद्धरामि भवार्णवात् । एतत्तस्या सुबहुश श्रुत्वा ऽतिकरुणं वचः ॥ कारुण्यात्कथयामास वसिष्ठो मुनिपुंगव । माघस्य सितसप्तम्यां सर्वकामफलप्रदम् ॥ रूपसौभाग्यजनन स्नान कुरु वरानने । कृत्वा षष्ठ्यामेकभुक्तं सप्तम्यां निश्चलं जलम् ॥ गम्यते चालयेथास्त्व दत्त्वा शिरसि दीपकम् । माघस्य सितसप्तम्यामचल चालितं च यत् ॥ जलामलाना सर्वेषां स्नान प्रक्षालनं ततः । वसिष्ठवचनं श्रुत्वा तस्मिन्नहनि भारत ॥ चकारेंदुमती स्नान दान सम्यग्यथाविधि । स्नानस्यास्य प्रभावेण भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥ इंद्रलोकेऽप्सरोमध्ये नायकत्वमवाप सा । अचलासप्तमीस्नानं कथित ते विशांपते ॥ सर्वपापप्रशमन सर्वसौभाग्यवर्द्धनम् ॥ युधिष्ठिर उवाच । सप्तमीस्नानमाहात्म्यं श्रुतं निरविशेषतः । सांप्रत श्रोतुमिच्छामि विधिमन्त्रसमन्वितम् ॥ श्रीकृष्ण उवाच । एकभुक्तेन

त्वेष्टं दुष्टसत्वैरदूषितम् ॥ व्यालांबुपक्षिभिश्चैव जलगैर्मत्स्यकच्छपैः । न केन चाल्यते यावत्तावत्स्नानं समाचरेत् ॥ सौवर्णे राजते पात्रे भक्त्या ऽलांबुमये ऽथवा । तैलस्य वर्त्तिर्दातव्या महारजनरंजिता ।-महारजनं कुसुंभम् ॥ समाहितमना भूत्वा दत्त्वा शिरसि दीपकम् ॥ भास्करं हृदये ध्यात्वा इमं मंत्रमुदीरयेत् ॥ नमस्ते रुद्ररूपाय रसानां पतये नमः । वरुणाय नमस्ते ऽस्तु हरिवास नमो ऽस्तु ते ॥ जलोपरि हरेद्दीपं स्नात्वा संतर्प्य देवताः । चंदनेन लिखेत्पद्ममष्टपत्रं सकर्णिकम् ॥ मध्ये शिवं सपत्नीकं प्रणवेन च संयुतम् । शाक्रे दले रविः पूज्यो भानुश्चैवानले तथा ॥ याम्ये विवस्वान्नैर्ऋत्ये भास्करं पूजयेत्ततः । पश्चिमे सविता पूज्यःपूज्योऽर्कश्चानिले दले ॥ सौम्ये सहस्रकिरणः शैवे सर्वात्मको नृप । पूज्याः प्रणवपूर्वास्तु नमस्कारांतयोजिताः ॥ पुष्पैः सुगंधधूपैश्च पृथक्त्वेन युधिष्ठिर । विसृज्य वस्त्रसंवीतं स्वस्थानं गम्यतामिति ॥ विसर्जिते सहस्रांशौ समागम्य स्वमालयम् । ताम्रपात्रे ऽथवा शक्त्या मृन्मये वाऽथ भक्तिमान् ॥ स्थापयेत्तिलपिष्टं च सघृतं सगुडं तथा । कांचनं तालकं कृत्वा ह्यशक्तास्तिलपिष्टजम् ॥ संच्छाद्य रक्तवस्त्रेण पुष्पैर्धूपैरथार्चयेत् । ततस्तं चालयेद्विप्रेर्दद्यान्मंत्रेण तालकम् ॥ आदित्यस्य प्रसादेन प्रातःस्नानफलेन च । दुष्टदौर्भाग्यदुःखघ्नं मया दत्तं तु तालकम् ।- तालकं तालकपत्रम् ॥ पूजयित्वोपदेष्टारं विप्रानन्यांश्च पूजयेत् ॥ ततो दिनं समग्रं च स नरो ध्यानतत्परः । भास्करस्य कथाः शृण्वन्ननन्याश्चापि संहिताः ॥ पाखंडादिभिरालापदर्शनस्पर्शनादिकम् । तर्जयेत्क्षपयेत्प्राज्ञस्ततो बंधुजनैः सह ॥ एतत्ते कथितं पार्थ रूपसौभाग्यकारकम् । अचलासप्तमीस्नानं सर्वकामफलप्रदम् ॥ इति पठति समग्रं यः शृणोति प्रसंगात्कलिकलुषविनाशं सप्तमीस्नानमेतत् । मतिमपि च जनानां यो द-

१ अलाबुमये तुम्बीपात्रे (देशभाषया 'भोपळा' इति ख्याते); भक्त्या लोहमयेऽथवेति पाठांतरं व्रतार्के । दैवे पैत्र्ये च कर्मणि लोहमयपात्रस्यानर्हत्वात्तन्न युक्तम् ।

दाति प्रयत्नात्सुरसदनमतो ऽसौ सेव्यते चाप्सरोभिः ॥ इति अचलासप्तमीव्रतकथा समाप्ता ॥ ॥ अस्यामेव पुत्रसप्तमीव्रतम् ॥ मदनरत्ने आदित्यपुराणे–। आदित्य उवाच। माघमासे तु शुक्लाया सप्तम्यां समुपोषितः। यः पूजयेत मां भक्त्या तस्याहं पुत्रतां व्रजे ॥ एवं पौषमयसप्तम्यां मासि मासि सुरोत्तम। यस्तु मां पूजयेद्भक्त्या सुमेकमेकमादराव् ॥ सुमेकः संवत्सरः ॥ प्रयच्छामि सुतं तस्य आत्मनो ऽंशसंभवम् ॥ वित्तं यशस्तथा पुत्रमारोग्यं परमं सदा ॥ माघमासे तु यो विप्रः शुक्लपक्षे जितेंद्रियः। पाखंडान्पतितानत्यान्न जल्पेद्धिजितेंद्रियः ॥ उपोष्य विधिवत्पष्ठ्यां श्वेतमाल्यविलेपनैः॥ पूजयित्वा तु मां भक्त्या निशि भूमौ स्वपेद्बुधः ॥ प्रातरुत्थाय सप्तम्यां कृत्वा स्नानादिकाः क्रियाः। पूजयित्वा तु मां ब्रह्मन्वीरहोमं समाचरेत् ॥ वीरहोमो नाम अग्निहोत्रहोमः ॥ प्रीणयित्वा हरिं भक्त्या हविषा पद्मलोचनम्। -हरिः आदित्यः ॥ दध्योदनेन पयसा पायसेन द्विजांस्तथा ॥ तस्यैव कृष्णपक्षस्य षष्ठ्यां सम्यगुपोषितः। -तस्यैवेति माघमासस्य रक्तोत्पलैः सुगन्धाढ्यैरक्तपुष्पैश्च पूजयेत्। एवं यः पूजयेद्भक्त्या नरो मां विधिवत्सदा। उभयोरपि देवेंद्र सुपुत्रं लभते वरम् ॥ इति पुत्रसप्तमीव्रत संपूर्णम् ॥ ॥ ध ॥ ॥ अथाष्टमीव्रतानि लिख्यते ॥ ॥ चैत्रशुक्लाष्टम्यां भवान्युत्पत्तिः। तत्र युग्मवाक्यात्परा ग्राह्या। अथ भवानीयात्रोक्ता काशीखंडे–। भवानीं यस्तु पश्येत शुक्लाष्टम्यां मधौ नरः। न जातु शोकं लभते सदानंदमयो भवेत् ॥ अत्रैवाशोककलिकाप्राशनमुक्तम् ॥ अशोककलिकाश्चाष्टौ ये पिबंति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः ॥ त्वामशोकहराभीष्ट मधुमाससमुद्भवम्। पिबामि शोकसंतप्तो मामशोक सदा कुरु। इति प्राशनमंत्रः ॥ अत्रैव विशेषः–। पुनर्वसुबुधोपे

१ शुक्लकृष्णसप्तम्योरपीत्यर्थः। २ शुक्लसप्तम्यां कृष्णसप्तम्यां च।

ता चैत्रे मासि सिताष्टमी ॥ प्रातस्तु विधिवत्स्नात्वा वाजपेयफलं लभेत् ॥ ॥अथ बुधवारयुक्तायां शुक्लाष्टम्यां बुधाष्टमीव्रतम्॥शुक्लपक्षेऽष्टमीचैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविद्धा न कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता । दिनद्वये तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा पूर्वा । मुहूर्तमात्रसत्वेपि परा ॥ चैत्रे मासि च संध्यायां प्रसुप्ते च जनार्दने । बुधाष्टमी न कर्तव्या हंति पुण्यं पुराकृतम् ॥ अत्रव्रतविधिः ॥ मासपक्षाद्युल्लिख्य, ममेह जन्मनि जन्मांतरे चाबाल्याद्यारभ्य कर्मणा मनसा वाचा जानताजानता वा परस्वाद्यपहृतिदोषपरिहारार्थं पुत्रपौत्रादिसकलमनोरथसिद्धिप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं बुधाष्टमीव्रतमहं करिष्ये ॥ तत्र बुधपूजनं च क० इति संकल्प्य । बुधं षोडशोपचारैः कलशोपरि पूजयेत् । चतुर्बाहुं ग्रहपतिं सुप्रसन्नमुखं बुधम् । ध्याये ऽहं शंखचक्रासिपाशहस्तमिलाप्रियम् । ध्यानम् ॥ पीतमाल्यांबरधरकर्णिकारसमद्युते । गृहाण पूजा भगवन्समागत्य ग्रहेश्वर । आवाहनम् ॥ उद्बुध्यस्वमित्यृचा मध्ये बुधमावाह्य अधिदेवतां विष्णुमिदंविष्णुरिति मंत्रेण प्रत्यधिदेवतां नारायणं सहस्रशीर्षेति सूक्तेनावाहयेत् ॥ इलापते नमस्ते ऽस्तु निशेशप्रियसूनवे । हेमसिंहासनं देव गृहाण प्रीतये मम । आसनम् ॥ शीतलोदकमानीतं सुपुष्पसरिदुद्भवम् । पाद्यं गृहाण देवेश ममाद्य परितुष्टये । पाद्यम् ॥ तारासुत नमस्ते ऽस्तु सततं भगवत्प्रिय । गृहाणार्घ्यं ग्रहपते नानाफलसमन्वितम् ॥ अर्घ्यम् ॥ सुगंधद्रव्यसंयुक्तैः शुद्धैः स्वादुसरिज्जलैः ॥ आचम्यतां निशानाथनंदन प्रीतये मम । आचमनम् ॥ पयोदधिघृतैश्चैव मधुशर्करसंयुतैः । पंचामृतैस्तथा देव स्नानं तत्स्वीकुरु प्रभो । पंचामृतस्नानम् ॥ वासितं गंधकर्पूरैर्निर्मलं जलमुत्तमम् । स्नानाय ते मया भक्त्या दीयते व्रतसिद्धये । अतोदेवादिकैः षड्भिः स्नापनीयस्ततो बुधः । पौरुषेण च सूक्तेन उद्बुध्यस्वेत्यृचैकया । स्नानम् ॥ पीतवस्त्रद्वयं देव राजवंशकर प्रभो ॥ उर्वशीनाथजनक गृहाण प्रीतये सदा । वस्त्रम् ॥ यज्ञोपवीतकं सूत्रं त्रिगुणं

त्रिदशप्रिय । मम पाशविनाशार्थं गृहाण प्रीतये बुध । उपवीतम् ॥ हरिचंदनकस्तूरीकर्पूरादिसमन्वितम् । गंध भगवते तुभ्यमिळानाथ
नमोऽस्तु ते । गंध स० ॥ अक्षताश्च० । अक्षतान्स० ॥ माल्यादीनि० । पुष्पाणि ॥ अथांगपूजा ॥ बुधाय० पादौपू० । सोमपुत्राय०
जानुनी० । तारकाय० कटी० । राजपुत्राय० उदरं० । इळाप्रियाय० हृदयं० । कुमाराय० वक्षःस्थलं० । पुरूरवःपित्रेन० बाहू० ।
सोमसुताय० स्कंधौ० । पीतवर्णाय० मुखं० । ज्ञानाय० नेत्रे० । बुधाय० मूर्धानं० । सोमसूनवेन० सर्वांगपू० ॥ वनस्पतिर० । धूपम् ॥
आज्यंच० । दीपम् ॥ नैवेद्यंगृह्य० । नैवेद्यम् ॥ पूगीफलं० । तांबूलम् ॥ इदफलं० । फलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥
नीराजनदीपम् ॥ उद्बुध्यस्वमिति पुष्पांजलिम् ॥ उर्वश्याश्च पतिर्यस्तु यः पुरूरवसः पिता । ग्रहमध्ये सुरूपो यो बुधो नः सं
प्रसीदतु । विशेषार्घ्यम् ॥ यानिकानिच० । प्रदक्षिणाम् । नमस्कारम् ॥ आवाहनं न जानामि० । प्रार्थना ॥ संतुष्टो वायनादस्मादिळा
नाथो ग्रहेश्वरः ॥ सतांबूलाष्टलड्डुक वायनं प्रतिगृह्यताम् । वायनम् ॥ इति पूजनम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ श्रीकृष्ण उवाच । बुधाष्टमीव्रत
भूप वक्ष्यामि शृणु पांडव । येन चीर्णेन नरकं नरः पश्यति न क्वचित् १ युधिष्ठिर उवाच । बुधाष्टमीव्रतं किंतत्कस्मात्पापाच्च मुच्यति ।
तत्सर्वं वद निश्चित्य मम देव दयानिधे २ श्रीकृष्ण उवाच । पुरा कृतयुगस्यादौ इळो राजा बभूव ह । बहुभृत्यसुहृन्मित्रैर्मंत्रिभिः परि
वारितः ३ जगाम हिमवत्पार्श्वं महादेवेन शापितम् । यो ऽस्यां प्रविशते भूमौ स स्त्री भवति निश्चितम् ४ स राजा मृगयासक्तः प्रविष्ट
स्तद्धुमावनम् । एकाकी हयमारूढः क्षणात्स्त्रीत्वं जगाम ह ५ सा बभ्राम वने शून्ये पीनोन्नतपयोधरा । काहं कस्य कुत्र प्राप्ता न सा

यं रूपतोषितः । पुत्रमुत्पादयामास यो ऽसौ ख्यातः पूरूरवाः ८ चंद्रवंशकरो राजा आद्यः सर्वमहीभृताम् । ततःप्रभृति पूज्येयं सा ऽष्टमी बुधसंयुता ९ सर्वपापप्रशमनी सर्वोपद्रवनाशिनी । अथान्यदपि ते वच्मि धर्मराज कथानकम् १० श्रीकृष्ण उवाच । आसीद्राजा विदेहायां निमिर्नाम स वैरिभित् । संग्रामे निहतो राजा तस्य भार्या ऽतिनिर्धना ११ ऊर्मिला नाम बभ्राम महीं बालकसंयुता । अवंतीनगरं प्राप्य ब्राह्मणस्य निकेतने १२ चकारोदरपूर्त्यर्थं नित्यं कंडनपेषणे । हृत्वा सा सप्तगोधूमान्ददौ बालकयोस्तदा १३ कारुण्यात्पुत्रवात्सल्यात्क्षुधासंपीड्यमानयोः । कालेन बहुना साध्वी पंचत्वमगमत्तदा १४ पुत्रस्तस्या विदेहायां गत्वा स्वपितुराश्रमे । उपविष्टः सत्ययोगाद्बुभुजे गामनाकुलाम् १५ अन्विष्य धर्मराजेन सा कन्या निमिवंशजा । श्यामला नाम चार्वंगी सर्वलक्षणसंयुता १६ गांधर्वेणोपयित्वा च नीता स्वनगरंप्रति । तामुवाच वरारोहां धर्मराजः स्वकां प्रियाम् १७ वहस्व सर्वव्यापारं श्यामले त्वं गृहे मम । कुरुष्व सर्वभृत्यानां दानशिक्षां यथोचिताम् १८ किंत्वेते प्रवराः सप्त कीलकैरतियंत्रिताः । कदाचिदपि नोद्घाव्यास्त्वया वैदेहनंदिनि १९ एवमस्त्विति वै प्रोक्ता निजकर्म चकार ह । [ततो भुक्त्वा बुधस्याग्रे बांधवैः प्रीतिपूर्वकम् । तावदेव हि भोक्तव्यं यावत्सा कथ्यते कथा] । कदाचिद्व्याकुली भूत्वा धर्मराज विदेहजा २० उद्घाटयित्वा प्रवरं ददर्श जननीं स्वकाम् । पच्यमानां च रुदतीं भीषणैर्यमकिंकरैः २१ लीलया क्षिप्यते बध्वा तप्ततैलेषु सा पुनः । तथैव तालकं बध्वा पीडिता सा मनस्विनी २२ द्वितीये प्रवरे तद्वत्तां ददर्श स्वमातरम् । यंत्रे निष्पीड्यमानां सा शिलायां लोष्ठकेन च २३ तृतीये प्रवरे तद्वत्तामेव च ददर्श सा । करिभिः पीड्यमानां सा घंटायुक्तैश्च कल्पितैः २४

१ स्थाने । २ प्रवराः कोष्ठाः (कोठड्या इति प्राकृतभाषया प्रसिद्धाः) ३ ततो भुक्त्वेति पद्य पूर्वोत्तरकथासम्बन्धराहित्यादनुपयुक्तमिति भाति ।

त्रिदशप्रिय । मम पाशविनाशार्थं गृहाण प्रीतये बुध । उपवीतम् ॥ हरिचंदनकस्तूरीकर्पूरादिसमन्वितम् । गंधं भगवते तुभ्यमिळानाथ नमोऽस्तु ते । गंध स० ॥ अक्षताश्च० । अक्षतान्स० ॥ माल्यादीनि० । पुष्पाणि ॥ अथांगपूजा ॥ बुधाय० पादौपू० । सोमपुत्राय० जानुनी० । तारकाय० कटी० । राजपुत्राय० उदरं० । इलाप्रियाय० हृदयं० । कुमाराय० वक्षःस्थलं० । पुरूरवःपित्रेन० बाहूपू० । सोमसुताय० स्कंधौ० । पीतवर्णाय० मुखं० । ज्ञानाय० नेत्रे० । बुधाय० मूर्धानं० । सोमसूनवेन० सर्वांगंपू० ॥ वनस्पतिर० । धूपम् ॥ आज्यंच० । दीपम् ॥ नैवेद्यंगृह्य० । नैवेद्यम् ॥ पूगीफलं० । तांबूलम् ॥ इदंफलं० । फलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ नीराजनदीपम् ॥ उद्बुध्यस्वमिति पुष्पांजलिम् ॥ उर्वश्याश्च पतिर्यस्तु यः पुरूरवसः पिता । ग्रहमध्ये सुरूपो यो बुधो नः सं प्रसीदतु । विशेषार्घ्यम् ॥ यानिकानिच० । प्रदक्षिणाम् । नमस्कारम् ॥ आवाहनं न जानामि० । प्रार्थना ॥ संतुष्टो वायनादस्मादिळा नाथो ग्रहेश्वर ॥ सर्वांवूलाष्टलड्डूक वायनं प्रतिगृह्यताम् । वायनम् ॥ इति पूजनम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ श्रीकृष्ण उवाच । बुधाष्टमीव्रत भूप वक्ष्यामि शृणु पांडव । येन चीर्णेन नरक नरः पश्यति न कश्चिद १ युधिष्ठिर उवाच । बुधाष्टमीव्रतं किंतत्कस्मात्पापाच्च मुचति । तत्सर्वं वद निश्चित्य मम देव दयानिधे २ श्रीकृष्ण उवाच । पुरा कृतयुगस्यादौ इलो राजा बभूव ह । बहुभृत्यसुहृन्मित्रैर्मंत्रिभिः परि वारितः ३ जगाम हिमवत्पार्श्वं महादेवेन शापितम् । यो ऽस्यां प्रविशते भूमौ स स्त्री भवति निश्चितम् ४ स राजा मृगयासक्तः प्रविष्ट स्तदुमावनम् । एकाकी हयमारूढः क्षणात्स्त्रीत्व जगाम ह ५ सा बभ्राम वने शून्ये पीनोन्नतपयोधरा । काहं कस्य सुतः प्राप्ता न सा ऽबुध्यत किंचन ६ तां ददर्श बुधस्तन्वीं रूपौदार्यगुणान्विताम् । अष्टम्यां बुधवारे च तस्यास्तुष्टो बुधग्रहः ७ ददौ गृहाश्रमं रम्यमात्मी

यं रूपतोषितः । पुत्रमुत्पादयामास यो ऽसौ ख्यातः पूरूरवाः ८ चंद्रवंशकरो राजा आद्यः सर्वमहीभृताम् । ततःप्रभृति पूज्येयं सा ऽष्टमी बुधसंयुता ९ सर्वपापप्रशमनी सर्वोपद्रवनाशिनी । अथान्यदपि ते वच्मि धर्मराज कथानकम् १० श्रीकृष्ण उवाच । आसीद्राजा विदेहायां निमिर्नाम स वैरिभिः । संग्रामे निहतो राजा तस्य भार्या ऽतिनिर्धना ११ ऊर्मिला नाम बभ्राम महीं बालकसंयुता । अवंतीनगरं प्राप्य ब्राह्मणस्य निकेतने १२ चकारोदरपूर्त्यर्थं नित्यं कंडनपेषणे । हृत्वा सा सप्तगोधूमान्ददौ बालकयोस्तदा १३ कारुण्यात्पुत्रवात्सल्यात्क्षुधासंपीड्यमानयोः । कालेन बहुना साध्वी पंचत्वमगमत्तदा १४ पुत्रस्तस्या विदेहायां गत्वा स्वपितुराश्रमे । उपविष्टः सत्ययोगाद्बुभुजे गामनाकुलाम् १५ अन्विष्य धर्मराजेन सा कन्या निमिवंशजा । श्यामला नाम चार्वंगी सर्वलक्षणसंयुता १६ गांधर्वेणोद्वाहिता च [illegible] । तामुवाच वरारोहां धर्मराजः स्वकां प्रियाम् १७ वहस्व सर्वव्यापारं श्यामले त्वं गृहे मम । कुरुष्व सर्वकार्याणि [illegible] १८ [illegible] सप्त कीलकैरतियंत्रिताः । कदाचिदपि नोद्घाट्यास्त्वया वैदेहनंदिनि १९ एवमस्त्विति [illegible] । [illegible] कथ्यते कथा] । कदाचि- [illegible] स्थानेषु [illegible] जननी [illegible] २१ [illegible] ऽर्घ्यं निवेदयेत् ५८ [illegible] दत्तान्सकलान्नः प्रसीदतु । मंत्रेणानेन [illegible] ये घृतपूरांश्च चतुर्थे वटकांस्तथा ६१ पंचमे मंडकान्दद्यात्षष्ठ [illegible]

चाभिश्चतुर्थे प्रवरे भीषणैर्दारुणाननैः । अभक्ष्यभक्षणाद्यैश्च रुदतीं तां पुनः पुनः २५ पंचमे प्रवरे भूमौ कंठे पादेन ताडिता । संदंशैर्वन्
पातैश्च छिद्यमानां सहस्रशः २६ षष्ठे तामिक्षुयंत्रस्थां मस्तके मुद्गराहताम् । संपीड्यमानामनिशं सप्तमे दारुखंडवत् २७ सप्तमे प्रवरे
चैव कृमिरूपैः सुदारुणैः । दृष्ट्वा तथागतां तां तु मातरं दुःखकर्शिताम् २८ श्यामला म्लानवदना किंचिन्नोवाच भामिनी । अथागतो
यमः प्राह सशोकां श्यामलामिति २९ यम उवाच । किमर्थं म्लानवदना तिष्ठसि त्वमनिंदिते । कारणं तत्र मे ब्रूहि किंचिन्नोवादिता
त्वया ३० एते प्रवरकाः सप्त निषिद्धा ये पुरा मया । इत्युक्ता श्यामला प्राह भर्तारं विनयान्विता ३१ किं नु पापं कृतं राजन्मम मा-
त्रा सुदारुणम् । येनेत्थं विविधैर्घोरैर्बाध्यते बहुशस्त्वया ३२ इत्युक्तः प्रियया प्राह तां यमः प्रहसन्निव । तव मात्रा सुतस्नेहाद्रोषभूमा वै ह-
ताः किल ३३ किं न जानासि तन्मद्रे येन पृच्छसि मामिह । ब्रह्मस्वं प्रणयाद्भुक्तं दहत्यासप्तमं कुलम् ३४ तदेव कृमिरूपेण क्लिश्यत्यासप्तम
कुलम् । गोधूमास्त इमे भूत्वा कृमिरूपाः सुदारुणाः ३५ ये पुरा ब्राह्मणगृहे हृतास्ते त्वत्कृते तया । जानाम्येतदहं सर्वं यत्ते मात्रा कृतं
पुरा ३६ श्यामलोवाच । तथापि त्वां समासाद्य देव जामातरं विभुम् । मुच्यते तेन पापेन यथा त्वमधुना कुरु ३७ तच्छ्रुत्वा चिंतया
विष्टश्चिरं ध्यात्वा जगाद ताम् । धर्मराजः सुखासीनः प्रियां प्राणहरेश्वरीम् ३८ इतस्त्वं सप्तमे ऽतीते जन्मनि ब्राह्मणी शुभा । आसी-
स्तस्मिन् तदा समात्सखीनां पर्युपोषिता ३९ बुधाष्टमी तु संपूर्णा यथोक्तफलदायिनी । तस्याः पुण्यं ददस्व त्वं यदि सत्यं ममाग्रतः ४०
तेन मुच्येत नरकाच्चे माता पापसंघकृत् । तच्छ्रुत्वा त्वरितं स्नात्वा ददौ पुण्यं त्रिवाचकम् ४१ स्वमात्रे श्यामला तुष्टा तेन मोक्षं जगाम
सा । ऊर्मिला रूपसंपन्ना दिव्यदेहा वरांशुका ४२ विमानवरमारूढा दिव्यमाल्यांबरावृता । भर्तुः समीपे स्वर्गस्था दृश्यते ऽद्यापि सा जनैः ॥

४३ बुधस्य पार्श्वे नभसि निमिराजसमीपगा। विस्फुरंती महाराज बुधाष्टम्याः प्रभावतः ४४ युधिष्ठिर उवाच। यद्येवं प्रवरा कृष्ण तिथिर्वै तु बुधाष्टमी। तस्या एव विधिं ब्रूहि यदि तुष्टोऽसि माधव ४५ श्रीकृष्ण उवाच। शृणु पांडव यत्नेन बुधाष्टम्या विधिं शुभम्। यदा यदा सिताष्टम्यां बुधवारो भवेद्यदि ४६ तदा तदा हि सा ग्राह्या एकभुक्ताशनैर्नृभिः। स्नात्वा नद्यां तु पूर्वाह्णे गृहीत्वा करकं नवम् ४७ जलपूर्णं लसद्रत्नैः कृत्वाऽनर्घ्यैः समन्वितम्। पूजयेच्च गृहं नीत्वा बुधमेकं क्रमेण तु ४८ एकमाषसुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः। कारयेद्बुधरूपं तु स्वशक्त्या वा प्रयत्नतः ४९ अंगुष्ठमात्रं पुरुषं चतुर्बाहुं सुलक्षणम्। पद्ममध्येऽव्रणं कुंभं पूजयेत्सिततंडुलैः ५० हेमपात्रे च संस्थाप्य पीतवस्त्रयुगेन च। वस्त्रोपरि स्थितं देवं पीतवस्त्राक्षतादिभिः ५१ पंचामृतेन संस्नाप्य तत्तन्मंत्रैः क्रमेण तु। नैवेद्यं गुग्गुलं धूपं दशांगेन सुगंधितम् ५२ पायसैर्घृतपूपैश्च मोदकाशोकवर्तिकैः। फलैश्च विविधैश्चैव शर्कराभिर्गुडैः शुभैः ५३ ततः पुष्पाक्षतैः पीतैर्वक्ष्यमाणैश्च नामभिः ५४ नमो बुधाय पादौ तु सोमपुत्राय जानुनी। तारकाय कटी चैव राजपुत्राय चोदरम्। इलाप्रियाय हृदयं कुमारायेति वक्षसि ५५ बाहू पुरूरवः पित्रे अंसौ सोमसुताय च। मुखं तु पीतवर्णाय ज्ञानाय नयनद्वयम् ५६ मूर्धानं तु बुधायेति ह्येषु स्थानेषु पूजयेत्। सौवर्णं राजतं ताम्रं पात्रमादाय शोभनम् ५७ गंधपुष्पाक्षतैः पीतैर्गुडमिश्रांबुपूरितैः। जानुभ्यामवनिं गत्वा तेन चार्घ्यं निवेदयेत् ५८ उर्वश्याः श्वशुरो यस्तु यः पुरूरवसः पिता। यो ग्रहाणामधिपतिर्बुधो नः संप्रसीदतु ५९ वरांश्च विष्णुना दत्तान्सकलान्नः प्रसीदतु। मंत्रेणानेन दत्त्वाऽर्घ्यं जप्त्वा मंत्रमिमं बुधः ६० प्रथमे मोदकान्दद्याद्द्वितीये फेणिकास्तथा। तृतीये घृतपूराँश्च चतुर्थे वटकांस्तथा ६१ पंचमे मंडकान्दद्यात्षष्ठे सोहालिकास्तथा। अशोकवर्तिका चैव सप्तमे मासि कार-

श्चतुर्थे प्रवरे भीपर्णैर्दारुणाननैः । अभक्ष्यभक्षणार्थेभ्य क्रंदतीं तां पुनः पुनः २५ पंचमे प्रवरे भूमौ कंठे पादेन ताडिता । सेर्दशैर्वन पातैश्च छिद्यमानां सहस्रशः २६ पष्ठे तामिक्षुयंत्रस्थां मस्तके मुद्गराहताम् । सपीड्यमानामनिशं सुभृश दारुसंडवव २७ सप्तमे प्रवरे चैव कृमिरूपैः सुदारुणैः । दृष्ट्वा तथागतां तां तु मातरं दुःखकर्शिताम् २८ श्यामला म्लानवदना किंचिन्नोवाच भामिनी । अथागतो यमः प्राह सशोकां श्यामलामिति २९ यम उवाच । किमर्थं म्लानवदना तिष्ठसि त्वमनिंदिते । कारण तत्र मे ब्रूहि किंचिन्नोव्राटिता त्वया ३० एते प्रवरकाः सप्त निषिद्धा ये पुरा मया । इत्युक्ता श्यामला प्राह भर्तारं विनयान्विता ३१ किं नु पापं कृतं राजन्मम मात्रा सुदारुणम् । येनेत्थ विविधैर्घोरैर्बाध्यते बहुशस्त्वया ३२ इत्युक्तः प्रियया प्राह तां यमः प्रहसन्निव । तव मात्रा सुतस्नेहाद्गोधूमा वै हृताः किल ३३ किं न जानासि तद्भद्रे येन पृच्छसि मामिह । ब्रह्मस्व प्रणयादुक्तं दहत्यासप्तम कुलम् ३४ तदेव कृमिरूपेण छिद्यत्यासप्तम कुलम् । गोधूमास्त इमे भूत्वा कृमिरूपाः सुदारुणा ३५ ये पुरा ब्राह्मणगृहे हृतास्ते त्वत्कृते तया । जानाम्येतदह सर्वं यत्ते मात्रा कृतं पुरा ३६ श्यामलोवाच । तथापि त्वां समासाद्य देवं जामातरं विभुम् । मुच्यते तेन पापेन यथा त्वमद्युना कुरु ३७ तच्छ्रुत्वा चिंतया चिरं च ध्यात्वा जगाद ताम् । धर्मराजः सुखासीनः प्रियां प्राणहरेश्वरीम् ३८ इतस्त्व सप्तमे ऽतीते जन्मनि ब्राह्मणी शुभा । आसीत्तस्मिन् तदा समात्ससीनां पर्युपोषिता ३९ बुधाष्टमी तु संपूर्णा यथोक्तफलदायिनी । तस्याः पुण्यं ददस्व त्व यदि सत्यं ममाग्रतः४० तेन मुच्येत नरकात्ते माता पापसंचकव् । तच्छ्रुत्वा त्वरितं स्नात्वा ददौ पुण्य त्रिवाचकम् ४१ स्वमात्रे श्यामला तुष्टा तेन मोक्षं जगाम सा । ऊर्मिला रूपसंपन्ना दिव्यदेहा वरांशुका ४२ विमानवरमारूढा दिव्यमाल्यांबरावृता । भर्तुः समीपे स्वर्गस्था दृश्यते ऽद्यापि सा जनैः ॥

कृतम् ॥ तस्य सांगफलप्राप्त्यै पूजां होमं करोम्यहम् । बुधप्रीत्यै च तत्सर्वमिति संकल्प्य पूजयेत् ॥ कर्षमात्रेण राजेंद्र तदर्धार्धेन वा पुनः । बुधस्य प्रतिमां कुर्यात्सुवर्णेन विचक्षणः ॥ कर्णिकायां मध्यकुंभे ताम्रपात्रे बुधं न्यसेत् । पंचामृतेन स्नपनं वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ॥ आत्रेयं पीतवस्त्रं च पीतपुष्पाक्षतादिभिः । उपचारैः षोडशभिः पुरुषसूक्तविधानतः ॥ तद्दक्षिणे विश्वमिदं विष्णुरित्यधिदैवतम् । सहस्रशीर्षापुरुषं वामे प्रत्यधिदैवतम् ॥ दलेषु विन्यसेद्देवान्प्रागारभ्य प्रदक्षिणम् । रविं चंद्रं कुजगुरू शुक्रार्की राहुकेतुकौ ॥ अनंतं वामनं विष्णुं शौरिं सत्यं जनार्दनम् । हंसं नारायणं चाष्टौ दलाग्रेषु च पूजयेत् ॥ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैः फलैश्च विविधैर्यजेत् । बहिरिंद्रादयः पूज्या दश दिक्पालकास्तथा ॥ यमं च चित्रगुप्तं च श्यामलां दक्षिणे न्यसेत् । कुंभेषु वंशपात्रेषु अष्टावष्टौ च लड्डुकान् ॥ यज्ञोपवीतान्कलशान्दक्षिणासहितान्यजेत् । पूजयित्वा ततो होमं शाखोक्तविधिना सुधीः ॥ मंडलात्पश्चिमे भागे स्थंडिलं चतुरस्रकम् । कृत्वा तु लेखनादीनि कृत्वाग्निं स्थापयेत्सुधीः ॥ इध्मदर्भैः परिस्तीर्य पात्रासादनमाचरेत् । पूर्णपात्रविधानांते ब्रह्मासनमतःपरम् ॥ इध्माधानमुखप्रांते प्रधानाहुतिहावनम् । अपामार्गसमिद्भिश्च यवव्रीहितिलैर्घृतैः ॥ गोधूमैश्च सितैर्होमं पृथक्पृथगतंद्रितः । उद्बुध्यस्वेति मंत्रेण होममष्टोत्तरंशतम् ॥ विष्णुमंत्रेण जुहुयात्तथा नारायणं हुनेत् । अधिप्रत्यधिदेवौ च मंत्राभ्यां जुहुयात्तथा ॥ ग्रहादिभ्यश्च जुहुयात्प्रायश्चित्तादिकं तथा । पूर्णाहुतिं च जुहुयात्कुर्याद्ब्रह्मविसर्जनम् ॥ पूर्णपात्रोद्वासनं च बलिदानमतःपरम् । वन्ह्यादिपूजनं कृत्वा देवतोद्वासनं ततः ॥ अभिषिच्याथ तिलकं रक्षाबंधनमेव च । आचार्यं च सपत्नीकं पूजयित्वा यथाविधि ॥ प्रतिमावस्त्रकलशान् गोदानं दक्षिणां तथा । दत्त्वा

१ अत्र विधायेत्यध्याहारः । २ ध्यायेन्नारायणं देवं बुधवासरमाकृतिम् । चतुर्भुजं शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गधरं यजेत्—इति ध्यानं कचित्पुस्तकेषु दृश्यते । ३ कुर्यादित्यध्याहारः ।

रा

॥१॥

येव ६२ अष्टमे शर्करामिश्रैः सांबैश्च युधिष्ठिर । विप्राय वायन दद्याद्व्रती भोजनमाचरेव् ६३ एवं क्रमेण कर्तव्य बुधाष्टम्यां युधिष्ठिर । बांधवैः सहमित्रैश्च भोक्तव्य प्रीतिपूर्वकम् ६४ सौम्यमाख्यानकं शृण्वन्नरकेभ्यो विमुच्यते ६५ सोमात्मजात्मकमशेषसुखप्रद तं य पूजयेत्सफलनीरयुत च कुंभम् । पक्वान्नपात्रसहितं सहिरण्यवस्त्र पश्यत्यसौ यमपुरीं न कदाचिदेव ६६ ॥ इति कथा ॥ ॥ अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिर उवाच । उद्यापनविधिं ब्रूहि कृपया भक्तवत्सल । कस्मिन्काले च किं द्रव्य कथ स फलभाग्भवेव ॥ श्रीकृष्ण उवाच । आदौ मध्ये तथा चांते कुर्यादुद्यापनक्रियाम् । सप्तम्यां प्रयतो भूत्वा कुर्याद्वै दतधावनम् ॥ आचम्य कुर्यात्सकल्प दश विप्राञ्निमन्त्रयेव् । अष्टम्यां प्रातरुत्थाय शुचिर्भूत्वा व्रती ततः ॥ गंगाद्यादिमहातीर्थे स्नात्वा नित्यकृतक्रियः । गृहमध्ये शुचौ देशे रंगवल्या विराजिते ॥ पुण्याहवाचन कृत्वा कुर्याद्दीक्षाविधानकम् । प्राणानायम्य विधिवत्कृत्वा सकल्पनादिकम् ॥ तिथ्याद्युल्लेखनान्ते च व्रतनाम प्रकीर्तयेव् ॥ मया कृत बुधाष्टम्यां व्रत सांगफलाप्तये । उद्यापनं करिष्ये ऽहमित्यक्षतकुशोदकम् ॥ कृत्वाऽऽचार्यादिवरण कुर्याद्वस्त्रादिभिः फलैः । ब्राह्मण वृणुयात्तत्र वस्त्रताम्बूलभूषणैः ॥ ततः पूजादिकां कुर्याद्ब्रह्मयज्ञपुरस्सरम् । ततस्त्वष्टदल कुर्यान्मध्ये कर्णिकया सह ॥ पचवर्णैः समापूर्य सकेसरदलानि च । कर्णिकायां न्यसेद्धान्य पचप्रस्थप्रमाणत ॥ दलेषु च दलाग्रेषु यथाशक्त्या विनिक्षिपेव् । तत्रैव स्थापयेत्कुंभान्मध्ये पूर्वादिदिक्षु च ॥ गंगाजलेन संपूर्य वस्त्रादिभिरलंकृतान् । पचत्वक्पल्लवोपेतान्नवकुंभान्यथाविधि ॥ तदुत्तरे ग्रहान्सर्वान्मंडले स्थापयेत्ततः । तत्पूर्वे स्थापयेत्कुंभ वारुण च विशेषतः ॥ वस्त्रत्वक्पल्लवयुतैः पचरत्नैः सकांचने । तत्र मंत्रैः प्रतिष्ठाप्य पूजयेच्च यथाविधि ॥ सप्तजन्मार्जित चौर्य पातकादि च यत्कृतम् । तद्दोषपरिहाराय बुधाष्टमीव्रत

कृतम् ॥ तस्य सांगफलप्राप्त्यै पूजां होमं करोम्यहम् । बुधप्रीत्यै च तत्सर्वमिति संकल्प्य पूजयेत् ॥ कर्षमात्रेण राजेंद्र तदर्धार्धेन वा पुनः । बुधस्य प्रतिमां कुर्यात्सुवर्णेन विचक्षणः ॥ कर्णिकायां मध्यकुंभे ताम्रपात्रे बुधं न्यसेत् । पंचामृतेन स्नपनं वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ॥ आत्रेयं पीतवस्त्रं च पीतपुष्पाक्षतादिभिः । उपचारैः षोडशभिः पुरुषसूक्तविधानतः ॥ तद्दक्षिणे विश्वमिदं विष्णुरित्यधिदैवतम् । सहस्रशीर्षापुरुषं वामे प्रत्यधिदैवतम् ॥ दलेषु विन्यसेद्देवान्प्रागारभ्य प्रदक्षिणम् । रविं चंद्रं कुजगुरू शुक्रार्की राहुकेतुकौ ॥ अनंतं वामनं विष्णुं शौरिं सत्यं जनार्दनम् । हंसं नारायणं चाष्टौ दलाग्रेषु च पूजयेत् ॥ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैः फलैश्च विविधैर्यजेत् । बहिरिंद्रादयः पूज्या दश दिक्पालकास्तथा ॥ यमं च चित्रगुप्तं च श्यामलं दक्षिणे न्यसेत् । कुंभेषु वंशपात्रेषु अष्टावष्टौ च लड्डुकान् ॥ यज्ञोपवीतान्कलशान्दक्षिणासहितान्यजेत् । पूजयित्वा ततो होमं शाखोक्तविधिना सुधीः ॥ मंडलात्पश्चिमे भागे स्थंडिलं चतुरस्रकम् । कृत्वा तु लेखनादीनि कृत्वाग्निं स्थापयेत्सुधीः ॥ इध्मदर्भैः परिस्तीर्य पात्रासादनमाचरेत् । पूर्णपात्रविधानांते ब्रह्मासनमतःपरम् ॥ इध्माधानमुखप्रांते प्रधानाहुतिहावनम् । अपामार्गसमिद्भिश्च यवव्रीहितिलैर्घृतैः ॥ गोधूमैश्च सितैर्होमं पृथक्पृथगतंद्रितः । उद्बुध्यस्वेति मंत्रेण होममष्टोत्तरंशतम् ॥ विष्णुमंत्रेण जुहुयात्तथा नारायणं हुनेत् । अधिप्रत्यधिदेवौ च मंत्राभ्यां जुहुयात्तथा ॥ ग्रहादिभ्यश्च जुहुयात्प्रायश्चित्तादिकं तथा । पूर्णाहुतिं च जुहुयात्कुर्याद्ब्रह्मविसर्जनम् ॥ पूर्णपात्रोद्वासनं च बलिदानमतःपरम् । वन्ह्यादिपूजनं कृत्वा देवतोद्वासनं ततः ॥ अभिषिच्याथ तिलकं रक्षाबंधनमेव च । आचार्यं च सपत्नीकं पूजयित्वा यथाविधि ॥ प्रतिमावस्त्रकलशान् गोदानं दक्षिणां तथा । दत्त्वा

१ अत्र विधायेत्यध्याहारः । २ ध्यायेन्नारायणं देवं बुधवासरमाकृतिम् । चतुर्भुजं शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गधरं यजेत्—इति ध्यानं क्वचित्पुस्तकेषु दृश्यते । ३ कुर्यादित्यध्याहारः ।

ब्रह्मादिविप्रेभ्यः कलशांश्च सदक्षिणान् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादाशिषो वाचयेत्तथा । इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे बुधाष्टमीव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ शुक्लादिश्रावणकृष्णाष्टम्यां दशाफलव्रतम् ॥ सा निशीथव्यापिनी ग्राह्या ॥ तत्र पूजाविधिः ॥ तमद्भुतं बालकमंबुजेक्षणं चतुर्भुजं शंखगदार्युदायुधम् । श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं पीतांबरं सांद्रपयोदसौभगम् ॥ महार्हवैडूर्यकिरीटकुंडलत्विषा परिष्वक्तसहस्रकुंतलम् । उद्दामकांच्यंगदकंकणादिभिर्विराजमानं वसुदेव ऐक्षत ॥ कृष्णायन० ध्यानम् ॥ वासुदेवाय० आवाहनम् ॥ शेषशायिने० आसनम् ॥ तीर्थपादाय० पाद्यम् ॥ गंगाजनकाय० अर्घ्यम् ॥ यमुनावेगसंहारिणेन० आचमनीयम् ॥ नित्यसुखाय० पंचामृतस्ना० ॥ श्रीगोपालाय० स्नानम् ॥ पीतवाससेन० वस्त्रम् ॥ यज्ञप्रियाय० यज्ञोपवीतम् ॥ सर्वेश्वराय० चंदनम् ॥ अधोक्षजाय० अक्षतान् ॥ कमलाप्रियाय० पुष्पाणि ॥ तुलसीपत्रैर्नामपूजा— । कृष्णायन० विष्णवेन० हरयेन० शेषशायिनेन० गोविंदाय० गरुडध्वजाय० दामोदराय० हृषीकेशाय० पद्मनाभाय० उपेंद्राय० ॥ अथ दोरकबंधनम् ॥ संसारार्णवमग्नानां नराणां पापकर्मणाम् ॥ इह मोक्षफलावाप्तिं कुरुष्व पुरुषोत्तम । इति दोरकबंधनम् ॥ पारिजातापहाराय० धूपम् ॥ ज्ञानप्रदीपाय० दीपम् ॥ चक्रिणेन० नैवेद्यम् ॥ अघनाशिनेन० तांबूलम् ॥ सर्वव्यापिनेन० दक्षिणाम् ॥ पद्मनाभाय० नीराजनम् ॥ अनंताय० पुष्पांजलिम् ॥ देवदेव नमस्ते ऽस्तु भक्तप्रिय दयानिधे । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकयासहित प्रभो । विशेषार्घ्यम् ॥ त्रिलोकनाथो देवेशः सर्वभूतदयानिधि ॥ दानेनानेन सुप्रीतो भवत्विह सदा मम । वायनमंत्रः ॥ श्रीकृष्णः प्रतिगृह्णाति श्रीकृष्णो वै ददाति च । श्रीकृष्णस्तारकोभाभ्यां श्रीकृष्णाय नमो नमः । प्रतिग्रहमंत्रः ॥ परस्परमूरयेति प्रार्थना ॥ ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच । शृणुध्वमृषयः सर्वे नैमिषारण्यवासिनः । पुरा च द्वापरस्यांते कृष्णदेवेन भा

षितम् १ तद्व्रतं च प्रवक्ष्यामि सांगोपांगं मुनीश्वराः । पुरा वै द्वापरस्यांते पांडवाः कौरवास्तथा २ द्यूतं प्रचक्रिरे सर्वे धनमानेन मोहि-
ताः । निर्जिताः पांडवा दुःखाद्वनं प्रापुर्मुनीश्वराः ३ कुंती विदुरगेहे तु संस्थिता च महायशाः । तच्छ्रुत्वा कृष्णदेवोपि कृपया परया
युतः ४ आययौ गरुडारूढो विदुरस्य गृहं प्रति । तदा पश्यन्महाबाहुं कुंती परमहर्षिता ५ विदुरेणार्चितः कृष्णः कुंतीं चैवाह भक्तितः ।
नमामि त्वामहं कुंति संश्रुतं च विडंबनम् ६ त्वत्पुत्रास्तु महादुःखात्प्राययुर्गहनं वनम् । तवापि सुमहद्दुःखं सर्वदा तन्ममा-
प्रियम् ७ कुंत्युवाच । हृषीकेश महाबाहो महादुःखेन कर्शिता । कृपया परया देव रक्षिता वयमीदृशाः ८ मम चैव मह-
द्दुःखं त्वं जानासि च वै प्रभो । मत्पुत्रास्तु महादुःखात्प्रविष्टा गहनं वनम् ९ कृपया विदुरो मह्यं कौरव्यः प्रस्थसंमितम् ।
ददाति प्रीतिदः कृष्ण जीवनाय महामतिः १० गृहस्य पश्चिमे भागे वसामि च जनार्दन । दर्शिता कौरवाणां हि सर्वेषां कुमतिस्तथा ११
सूत उवाच । इति तस्या वचः श्रुत्वा कृष्णः परमधर्मवित् । आह चैनां वासुदेवो भक्तप्रियतमस्तदा १२ कृष्ण उवाच । व्रतं ते कथयिष्या-
मि येन दुःखात्प्रमुच्यसे । पुत्रपौत्रैः परिवृता स्वं राज्यं प्राप्स्यसेऽचिरात् ॥ दशाफलमिति ख्यातं तद्व्रतं कुरु सुव्रते १३ कुंत्युवाच ।
कस्मिन्काले तु कर्तव्यं तद्व्रतं केशव प्रभो । वद मां प्रति इत्युक्तो जगाद यादवेश्वरः १४ श्रावणस्यासिते पक्षे अष्टम्यां च नि-
शीथके । देवक्यां वासुदेवश्च प्रादुर्भूतो न संशयः १५ तस्याग्रे दशगुणितं सूत्रं स्थाप्य प्रपूजयेत् । हस्ते बध्वा तु तत्सूत्रं दशाहं व्रत-
माचरेत् १६ संसारार्णवमग्नानां नराणां पापकर्मिणाम् । इहामुत्रफलावाप्तिं कुरुष्व पुरुषोत्तम १७ अनेनदोरकं बध्वा दशवर्षं व्रतं चरेत् ।
देवस्य पुरतो नित्यं दश पद्मानि कारयेत् १८ ततश्च शृणुयात्पुण्यां कथामेतां शुभावहाम् । तुलस्याः कृष्णवर्णाया दलैर्दशभिरर्चयेत् १९

कृष्ण विष्णु तथा ऽनत गोविंदं गरुडध्वजम् । दामोदरं हृषीकेशं पद्मनाभं हरिं प्रभुम् २० एतैश्च नामभिर्नित्य कृष्णदेवं समर्चयेत् । नमस्कारं ततः कुर्यात्सदक्षिणसमन्वितम् २१ एवं दशदिनं कुर्याद्व्रतानामुत्तमं व्रतम् । चादौ मध्ये तथा चांते होमं कुर्याद्विधानतः २२ कृष्णमंत्रेण शुद्धपायसेनाष्टोत्तरशतम् । ततो होमांते विधिवदाचार्यं पूजयेत्सुधीः २३ सौवर्णे ताम्रपात्रे वा मृन्मये वेणुपात्रके । सौवर्णं तुलसीपत्रं कारयित्वा सुलक्षणम् २४ प्रतिमां च तथा कृत्वा अर्चयित्वा विधानतः । निधाय प्रतिमां तत्र आचार्याय निवेदयेत् २५ दातव्या गौः सवत्सा च वस्त्रालंकारभूषिता । दश होमे तु कृष्णाय पूरिका दश चार्पयेत् २६ दापयेत्तु ब्राह्मणाय स्वयं भुक्त्वा तथैव च । उपायनं च गृह्णीष्व सर्वोपस्करसंयुतम् २७ संसारार्णवमग्नाना पाहि त्वं देवकीसुत । एवं चोपायनं दत्त्वा नमस्कृत्य क्षमापयेत् २८ दक्षिणाभिर्युतं देवि कर्तव्यं कृष्णसन्निधौ । प्रतति दशविप्रेभ्यः प्रत्येकं दश पूरिकाः २९ एवं दशसु वर्षेषु व्रतं कुर्यादतंद्रितः । एवं व्रतं त्वया देवि कर्तव्यं कृष्णसन्निधौ ३० एवमुक्ता तु कृष्णेन कुंती श्रुत्वा मुदान्विता । उवाच कृष्णदेवं सा मम वित्तं न विद्यते ३१ प्रत्युवाच हृषीकेशस्तव वित्तं भविष्यति । एवमुक्त्वा ययौ कृष्णः कर्णं द्रष्टुं सुखान्वितः ३२ कर्णोऽपि च महात्मानं कृष्णं दृष्ट्वा प्रहर्षितः । सिंहासनं ददौ तस्मै पाद्यमर्घ्यं तथैव च ३३ कर्णोऽप्युवाच देवेश किमर्थं तव चागमः । इत्युक्तः कृष्णदेवोऽथ तव माता ऽतिदुःखिता ३४ कर्ण उवाच । भूरिमयाचथा कृष्ण मातरं प्रणमाम्यहम् । कथं वा दुःखिता माता प्रमुच्येत वदस्व मे ३५ श्रीकृष्ण उवाच । सुवर्णपात्रे संपूर्य पायसं क्षीरसंयुतम् । शतनिष्कसमायुक्तं दातव्यं वायुहस्तके ३६ तव माता तथा प्रीता भविष्यति न संशयः । एवमुक्त्वा तदा कृष्णो द्वारकामाजगाम ह ३७ कृष्णवाक्यं ततः श्रुत्वा कर्णश्चक्रे महायशाः । पंचमत्स्यसमायुक्तं पात्रं स्वर्णेन पूरितम् ३८

शतनिष्कसमायुक्तं वायुहस्ते प्रदाय सः । प्रहसंती तथा कुंती पात्रं दृष्ट्वा ऽथ हर्षिता ३९ देवस्य सन्निधौ कुंती व्रतं चक्रे ऽथ भक्तितः । कृष्णेन कारितं सर्वं मम भाग्याय वै ध्रुवम् ४० कृष्णपूजां ततः कृत्वा कथां श्रुत्वा ऽथ भक्तितः । उपायनं ददौ तत्र ब्राह्मणेभ्यो यथाक्रमम् ४१ तुलसीदलं सुवर्णेन कारयित्वा सुलक्षणम् । प्रतिमां विष्णुभक्ताय स्वर्णपात्रे निधाय च ४२ गोदानेन समायुक्तामाचार्याय महामते । कुंती ददौ महादेवी विष्णुर्नः प्रीयतामिति ४३ व्रतं दशसु वर्षेषु चकारोद्यापनं ततः । तद्व्रतस्य प्रभावेण तनूजाश्चागतास्ततः ४४ हत्वा शत्रून्मृधे सर्वान्कृष्णस्यैव प्रसादतः । युधिष्ठिरस्तु धर्मात्मा स्वं राज्यं प्राप्तवान्सुधीः ४५ प्रोवाचेदं व्रतं कुंती द्रौपदीं च पतिव्रताम् । दशाफलमिति ख्यातं कृष्णदेवेन भाषितम् ४६ यूयं सर्वे महादुःखं निस्तीर्य स्वपुरीं गताः । व्रतस्यास्य प्रभावेण कृष्णस्यैव प्रसादतः ४७ त्वमप्येवं व्रतं भद्रे कुरुष्व सुसमाहिता । पुत्रपौत्रैः परिवृता सर्वान्कामानवाप्स्यसि ४८ आचख्यौ तद्व्रतं तस्यै कुंती परमहर्षिता । सा ऽपि चक्रे महाभागा द्रौपदी व्रतमुत्तमम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्तव्यं सुजनैः सदा ४९ या भक्त्या कुरुते नारी व्रतानामुत्तमं व्रतम् । सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ५० इदं व्रतं महापुण्यं व्रतानामुत्तमं व्रतम् । वदतां शृण्वतां चैव विष्णुलोको भवेद्ध्रुवम् ५१ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपु०दशाफलव्रतकथा संपूर्णा ॥ अत्र मूलं चिंत्यम् ॥ ॥ अथ कृष्णादिमासेन भाद्रकृष्णाष्टम्यां जन्माष्टमीव्रतम् ॥ ॥ तच्च अर्धरात्रव्यापिन्यां कार्यम् । रोहिण्या सहिता कृष्णा मासि भाद्रपदे ऽष्टमी । अर्धरात्रे तु योगोयं तारापत्युदये तथा ॥ नियतात्मा शुचिः सम्यक् पूजां तत्र प्रवर्तयेत्–इति विष्णुधर्मोत्तरे ॥ तस्य कालतत्त्वेप्युक्तम् ॥ दिनद्वये अर्धरात्रव्याप्तावव्याप्तौ वा परैव । प्रातःसंकल्पकालसत्त्वाद्दिवारात्रियोगात् । वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमीसंयुताष्टमी-इति ब्रह्मवैवर्ते सप्तमीयुक्तानिषेधाच्च ।

यदा पूर्वेद्युर्निशीथे केवलाष्टमी उत्तरेद्युर्निशीथास्पर्शि यष्टमी रोहिणीयुक्ता, तदा पूर्वैव ग्राह्या । कर्मकालत्वाद्रोहिणीयोगस्तु केवल फलातिशयार्था नवमीबुधादियोगवत्, नतु निर्णयोपयोगी । इतरथा, प्रेतयोनिगतानां तु प्रेतत्वं नाशितं नरैः । यैः कृता श्रावणे मासि अष्टमी रोहिणीयुता ॥ किं पुनर्बुधवारेण सोमेनापि विशेषतः । किं पुनर्नवमीयुक्ता कुलकोट्यास्तु मुक्तिदेति ॥ उदये चाष्टमी किञ्चिन्नवमी सकला यदि । भवेत्तु बुधसंयुक्ता प्राजापत्यर्क्षसंयुता ॥ अपि वर्षशतेनापि लभ्यते यदि वा नवा । तत्र उदयशब्दश्चन्द्रोदयपरः ॥ सूर्योदयपरत्वे तु यदा पूर्वेद्युर्निशीथे केवलाष्टमी उत्तरेद्युर्निशीथस्पर्शिन्यष्टमी रोहिणीयुक्ता सती बुधयुक्ता तदैवोत्तरा स्यात् । तदभावेपि यावद्वचनं वाचनिकमिति यावत् । यदि तु बुधभावेपि रोहिणीयोगमात्रात्तदैवोत्तरोच्यते, तदा रोहिणीयोगाभावेपि बुधमात्रसद्भावादुत्तरासत्त्वे स्यात् । अन्यतरा याप्येतद्वचनप्रवृत्तेरङ्गीकारात्, ऋक्षयोगवद्वारस्यापि प्राशस्त्यहेतुत्वाच्च । किंच यथा पूर्वेद्युर्निशीथे ऽष्टमीमात्रसत्त्वे उत्तरेद्युश्च निशीथास्पर्शऋक्षयोगे बुधसत्त्वे च एतद्वचनादुत्तरेद्युर्व्रतम् । एवं पूर्वेद्युर्निशीथे सर्क्षाष्टमी बुधाधिक्यादुत्तरेद्युर्व्रतापत्तिरिति । यच्च विष्णुरहस्ये–प्राजापत्यार्क्षसंयुक्ता कृष्णा नभसि चाष्टमी । मुहूर्तमपि लभ्येत सोपोष्या च महाफलेति ॥ अत्रापि मुहूर्तपदं निशीथाख्यमुहूर्तपरम् । यत्त्विदमर्थताशुद्ध वाक्यस्यैवानर्थप्रसंगात् । यदा हि शुद्धाप्यष्टम्यर्द्धरात्रे वर्तमाना ग्राह्या, तदा रोहिणीसहिता सुतरामिति वचनेन । मुहूर्तमप्यहोरात्रे यस्मिन्नित्युक्त हि लभ्यते ॥ अष्टम्या रोहिणीऋक्ष तां सुपुण्यामुपावसेत् । विष्णुरहस्ये एव स्पष्टैर्वा ऽहोरात्रसंबंधि यत् किंचिन्मुहूर्तमतीतिरिति कालतत्त्वविवेचने तद्विपरीतं, ऋक्षयोगस्य तावकत्वेन सार्थक्यात् । किंचैतद्वचनद्वयगतापिशब्दस्य स्वार्थे तात्पर्याभावेन ऋक्षयोगात्प्राशस्त्यबोधकत्वस्यैव उचितत्वादिति । यत्तु पुनस्तत्रोक्तं कर्मकालव्याप्तिशास्त्रादेव प्रधानभूताया अष्टम्या एव

अर्धरात्रसत्वेन प्राप्तं ग्राह्यत्वम् । दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति चेद्रोहिणीकला । रात्रियुक्तां प्रकुर्वीत विशेषेणेंदुसंयुताम्-इति वचनेन रोहिणीयोगाभावविषयं क्रियते । एवं तस्यार्थः-दिनावच्छेदेन रात्र्यवच्छेदेन वा कलामात्रापि चेद्रोहिणी अष्टम्यां नास्ति, तदैव चंद्रोदयसहिता । अर्धरात्रव्यापिनीति यावत् । दिनद्वयेपि तादृश्या अभावे बहुरात्रिसंयुतामुत्तरां प्रकुर्वीतेति । तन्न । नेदं कर्मकालशास्त्रबाधकमन्यथाप्यर्थसंभवात् । तथाहि दिनद्वये वैषम्येण निशीथे स्पर्शे अहोरात्रावच्छेदेन रोहिणीयोगाभावे च विशेषेणाधिक्येन इंदुसंयुता अधिकनिशीथव्यापिनी ग्राह्येति यावत् । रोहिणीयोगे त्वधिकनिशीथव्यापिनीमपि विहाय स्वल्पापि निशीथयोगिनी रोहिणीयुतैव ग्राह्येति व्याख्यांतरं मयूखे द्रष्टव्यम् । पारणं तु तिथिभांते कार्यम् । तदाह भृगुः-जन्माष्टमी रोहिणी च शिवरात्रिस्तथैव च । पूर्वविद्धैव कर्तव्या तिथिभांते च पारणम् ॥ निषेधोपि ब्रह्मवैवर्ते- अष्टम्यामथ रोहिण्यां न कुर्यात्पारणं क्वचित् । हन्यात्पुराकृतं कर्म उपवासार्जितं फलम् । तिथिरष्टगुणं हंति नक्षत्रं च चतुर्गुणम् । तस्मात्प्रयत्नात्कुर्वीत तिथिभांते च पारणम् । तत्र दिवसे उभयांते पारणमिति मुख्यः पक्षः । एकतरांते त्वनुकल्पः । यदा तु तिथिनक्षत्रयोरन्यतरस्यैव दिनेंतस्तदा ऽहोरात्रे पारणानिषेधादन्यतरांते पारणाऽभ्यनुज्ञाता तद्दिवैवान्यतरांते कार्या । अतएव वह्निपुराणे-भांते कुर्यात्तिथेर्वापि शस्तं भारत पारणम् । इति जन्माष्टमीनिर्णयः ॥ अथ व्रतविधिः ॥ व्रतपूर्वदिने दंतधावनं कृत्वा, उपवासदिने प्रातरुत्थाय तत्र नित्यकृत्यं कुर्यात् । श्रावणस्यासिते पक्षे शौचमाचमनं कृतम् । तस्यां मध्याह्नसमये नद्यादौ विमले जले ॥ कृत्वा ऽपामार्गसमिधादंतधावनमादितः । तिलामलककल्केन स्नानं मृत्स्नानपूर्वकम् ॥ नद्यादिके तदा स्नात्वा कृत्वा नियममेव च । परिधाय नवे शुद्धे वाससी सुसमाहितः ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चापि तथा चरेत् ।

कृत्वा नैमित्तिकं कर्म गत्वा निजगृहं पुनः ॥ वेदीं सम्यक् प्रकुर्वीत गोमयेनोपलिप्य ताम् । सूर्यः सोमो यमः कालः संध्ये भूतान्यहः क्षपा ॥ पवनो दिक्पतिर्भूमिराकाशं खेचरा नराः ॥ ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पतामिह सन्निधिम् ॥ इत्युक्त्वा सफल पुष्पाक्षतजलपूर्णं ताम्रपात्रमादाय मासपक्षाद्युल्लिख्य, अमुकफलकामः पापक्षयकामो वा कृष्णप्रीतये कृष्णजन्माष्टमीव्रत करिष्ये । तथा । वासुदेवं समुद्दिश्य सर्वपापप्रशांतये । उपवास करिष्यामि कृष्णाष्टम्यां नमस्यहम् ॥ अद्य कृष्णाष्टमीं चंद्रं रोहिण्या सहित च वै । अर्चयित्वोपवासेन मोक्ष्येऽहमपरेऽहनि॥एनसो मोक्षकामोऽस्मि यद्गोविंद नियोजितम् । तन्मे मुंचतु मां त्राहि पतित शोकसागरे ॥ आजन्ममरणं यावद्यन्मया दुष्कृतं कृतम्।तत्प्रणाशाय गोविंद प्रसीद पुरुषोत्तम॥इत्युक्त्वा पात्रस्थं जलं निक्षिपेत्। ततः कदलीस्तम्भवासोभिराम्रपल्लवयुतसजलपूर्णकलशैर्दीपैः पुष्पमालाभिर्युत स्वगरुदर्पितं अभिसत्कृष्णाच्छागरक्षामणिद्वारन्यस्तमुसलादियुत मंगलोपेतं पष्ठ्या देवक्याः सूतिकागृहं विधाय तस्य समंतान्निखिपु कृतुमांजलीन्देवगंधर्वादीन् खड्गचर्मधरवसुदेवदेवकीनंदयशोदागर्गगोपीगोपान् कंसनियुक्तान्गोधेनुकुंजरान् यमुनां तन्मध्ये कालिय अन्यच्च तत्कालीनं गोकुलचरित यथासंभवं लिखित्वा सूतिकागृहमध्ये प्रच्छाद्य वृत्तमचकं स्थापयित्वा मध्याह्ने नद्यादौ तिलैः स्नात्वार्धरात्रे सपरिवारं श्रीकृष्णं पूजयेत् ॥अथपूजाविधिः।येभ्योमातैवापित्रेति मंत्राञ्जपित्वा । आगमार्थंत्विति घंटानाद कृत्वा । अपसर्पंत्विति छोटिकामुद्रां प्रदर्श्य तीक्ष्णदंष्ट्रेति क्षेत्रपालं प्रार्थ्य । आचम्य प्राणानायम्य संकल्प्य,मम सहकुटुंबस्य क्षेमस्थैर्यविजयायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं निशीथे सपरिवारश्रीकृष्णप्रीत्यर्थं च पुराणोक्तप्रकारेण पुरुषसूक्तविधानेन च यथास

१ पद्य पनः (पर्व) नामात्मप्रपद्य मिपोषित वरिस्पर्य। । २ पद्मा वेष्या पुत्रमिस्पर्य। ।

भवनियमेन यथोपचारमिलितद्रव्यैः जन्माष्टमीव्रतांगत्वेन परिवारसहितश्रीकृष्णपूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य कलशार्चनं शंखार्चनं च कुर्यात् ॥ पुरुषसूक्तेन न्यासं कुर्यात् ॥ रंगवल्लीसमायुक्ते सर्वतोभद्रमंडले । अव्रणं सजलं कुंभं ताम्रमृन्मयमेव वा ॥ संस्थाप्य वस्त्रसंवीतं कंठदेशे सुशोभितम् । पंचरत्नसमायुक्तं फलगंधाक्षतैर्युतम् ॥ सहिरण्यं समासाद्य ताम्रेण पटलेन वा । वंशमृन्मयपात्रेण यवपूर्णेन चैव हि ॥ आच्छादयेत चैलेन लिखेदष्टदलं ततः । कांचनी राजती ताम्री पित्तली मृन्मयी च वा ॥ वार्क्षी मणिमयी चैव वर्णकैर्लिखिता ऽथवा । इत्युक्त्वाऽन्यतमेन प्रतिमां विधायाग्न्युत्तारणं कृत्वा प्रतिमाकपोलौ स्पृष्ट्वा तद्देवतानाममूलमंत्रं प्रणवादि चतुर्थ्यंतं नमोंतं नाम ॥ अस्मैदेवत्वासंस्थायैस्वाहेति मंत्रं पठन् प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अस्माइत्यस्य स्थाने तद्देवतानाम ग्राह्यम् ॥ गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैः शृंगारादर्शकुंतप्रवरकृतकरैः किन्नरैः सेव्यमाना । पर्यंके स्वास्तृता या मुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते सा देवी देवमाता जयति सुवदना देवकी दिव्यरूपा । इति देवकीम् ॥ मां तत्र बालकं सुप्तं पर्यंके स्तनपायिनम् । श्रीवत्सवक्षसं शांतं नीलोत्पलदलच्छविम् ॥ एवं देवक्या सह श्रीकृष्णं ध्यात्वा । ॐनमोदेव्यैश्रियै इतिश्रियम्, देवकीसहितं वसुदेवं यशोदासहितं नंदम्, श्रीकृष्णसहितं बलदेवं चंडिकां चावाह्य ॐसपरिवारायकृष्णायनम इति पूजयेत् ॥ आसनम् । पाद्यम् । अर्घ्यम् । आचमनीयम् ॥ तत्रमंत्रः—योगेश्वराय देवाय योगिनां पतये विभो । योगोद्भवाय नित्याय गोविंदाय नमो नमः । सपरिवारायकृष्णाय०स्नानम् ॥ यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च । योगानां पतये नाथ गोविंदाय नमो नमः । सप०कृ०वस्त्रम् ॥ सप०कृष्णायन० चंदनम् ॥ सप० कृष्णाय०यज्ञोपवीतम् ॥ पुष्पाणि० ॥ अथांगपूजा ॥ गोविंदाय०पादौपू० । माधवाय० जंघे । मधुसूदनाय० कटी० । पद्मनाभाय०नाभिं० । हृषीकेशा-

य॰हृदय॰ । संकर्षणाय॰स्तनौ॰ । वामनाय॰बाहू॰ । दैत्यसूदनाय॰हस्तौ॰ । हृषिकेशाय॰ कंठ॰ । चारुमुखाय॰मुखं॰ । त्रिविक्रमाय॰ नासिकां॰ । पुंडरीकाक्षाय॰नेत्रे॰ । नृसिंहाय॰श्रोत्रे॰ । उपेंद्राय॰ललाटं॰ । हरयेन॰शिरः॰ । श्रीकृष्णाय॰सर्वांगं॰ ॥ सप॰कृष्णाय॰धूपम् । सप॰ कृष्णाय॰ दीपम् ॥ विश्वेश्वराय देवाय तथा विश्वोद्भवाय च । विश्वानां पतये तुभ्यं गोविंदाय नमो नमः । नैवेद्यम् ॥ आचमनी॰करोद्व॰ फलं॰ ताम्बू॰दक्षि॰नीराज॰पुष्पांज॰प्रार्थना ॥ इति ॥ (अथ अन्यग्रंथोक्तपूजाविधिः) ॥ यज्ञाययज्ञेश्वराययज्ञपतयेयज्ञसमवायगोविंदायनमोनमइति आदौसर्वेषां यज्ञपदानां स्थाने योगपदादीत्युक्त्वा अयमेव मंत्रः स्नाने विश्वायविश्वेश्वराय इति नैवेद्ये।धर्माय धर्मेश्वरायेत्यादिस्वाहांतस्तिलहोमे । विश्वायविश्वेश्वरायेत्यादिशयने । सोमायसोमेश्वरायेत्यादिचंद्रपूजायां इति मंत्रा उक्ताः ॥ ततो गव्यघृतेनाग्नौ वसोर्धारां कश्चिद्गव्यघृतेनेति । ततो जातकर्मनालच्छेदषष्ठीपूजानामकर्माणि संक्षेपेण कार्याणि । ततश्चंद्रोदये रोहिणीयुतं चंद्रं स्थंडिले प्रतिमायां वा नाममंत्रेण सपूज्य शंखे तोयं समाधाय सपुष्पकुशचंदनम्।जानुभ्यामवनिं गत्वा चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् ॥क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिगोत्रसमुद्भव । गृहाणार्घ्यं शशांकेद रोहिण्या सहितो मम ॥ ज्योत्स्नायाः पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः । नमस्ते रोहिणीकांत सुधावास नमोस्तु ते ॥ नमो मंडलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटेः । कलाभिर्वर्धमानाय नमश्चंद्राय चारवे । इति प्रणमेत् ॥ अनंत वामन शौरीं वैकुंठ पुरुषोत्तमम् । वासुदेव हृषीकेश माधव मधुसूदनम् । वराह पुंडरीकाक्ष नृसिंह दैत्यसूदनम् । दामोदर पद्मनाभ केशव गरुडध्वजम् ॥ गोविंदमच्युत कृष्णमनंतमपराजितम् । अधोक्षज जगद्बीज सर्गस्थित्यंतकारणम् ॥ अनादिनिधनं विष्णु त्रिलोकेश त्रिविक्रमम् । नारायणं चतुर्बाहुं शंखचक्रगदाधरम् ॥ पीतांबरधर नित्य वनमालाविभूषितम् । श्रीवत्सांक जगत्सेतुं श्रीकृष्णं श्रीधरं हरिम् ॥ शरण त्वां प्रपद्ये

ऽहं सर्वकामार्थसिद्धये । प्रणमामि सदा देवं वासुदेवं जगत्पतिम् । इति मंत्रैः प्रणम्य ॥ त्राहि मां सर्वलोकेश हरे संसारसागरात् । त्राहि मां सर्वपापघ्न दुःखशोकार्णवात्प्रभो ॥ सर्वलोकेश्वर त्राहि पतितं मां भवार्णवे । देवकीनंदन श्रीश हरे संसारसागरात् । त्राहि मां सर्वदुःखघ्न रोगशोकार्णवाद्धरे ॥ दुर्वृत्तात्त्रायसे विष्णो ये स्मरंति सकृत्सकृत् । सोऽहं देवातिदुर्वृत्तस्त्राहि मां शोकसागरात् ॥ पुष्कराक्ष निमग्नोहं मायांव्यज्ञानसागरे । त्राहि मां देवदेवेश त्वत्तो नान्यो ऽस्ति रक्षिता ॥ यद्बाल्ये यच्च कौमारे यौवने यच्च वार्द्धके । यत्पुण्यं वृद्धिमाप्नोति पापं हर हलायुध । इति मंत्रैः प्रार्थयेत् ॥ ततः स्तोत्रं पठन्पुराणश्रवणादिना जागरं कुर्यात् । द्वितीये ऽह्नि प्रातःकाले स्नानादि नित्यकर्म कृत्वा पूर्ववद्देवं पूजयित्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् । तेभ्यः सुवर्णधेनुवस्त्रादि दत्त्वा कृष्णो मे प्रीयतामिति वदेत् ॥ नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । शांतिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्त्वा प्रतिमामुद्वास्य । तां ब्राह्मणाय दत्त्वा पारणं कृत्वा व्रतं समापयेत् । सर्वस्मै सर्वेश्वराय सर्वेषां पतये नमः ॥ सर्वसंभवाय गोविंदाय नमो नमः । इति पारणायाम् । भूताय भूतपतये नम इति समापनम् ॥ इति पूजाविधिः ॥ ॥ अथ कथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । जन्माष्टमीव्रतं ब्रूहि विस्तरेण मया ऽच्युत । कस्मिन्काले समुत्पन्नं किं पुण्यं को विधिः स्मृतः १ श्रीकृष्ण उवाच । मल्लयुद्धे परावृत्ते शमिते कुकुरांधके । स्वजनैर्बहुभिः स्त्रीभिः समैः स्निग्धैः समावृते २ हते कंसासुरे दुष्टे मथुरायां युधिष्ठिर । देवकी मां परिष्वज्य कृत्वोत्संगे रुरोद ह ३ वसुदेवो ऽपि तत्रैव वात्सल्यात्प्ररुरोद ह । समालिंग्याश्रुवदनः पुत्रपुत्रेत्युवाच ह ४ सगद्गदस्वरो दीनो बाष्पपर्याकुलेक्षणः । बलभद्रं च मां चैव परिष्वज्य मुदा पुनः ५ अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च

१ अत्र, मायाविज्ञानमत्सरादित्यपरपाठोपलब्धिः ।

सुजीवितम् । उभाभ्यामथ पुत्राभ्य ससुहृत समागमः ६ एव हर्षेण दांपत्य दृष्टं पुष्ट तदा ह्यभूव । मणिपत्य जनाः सर्वे वभूवुस्ते
महर्पिताः ७ एव महोत्सव दृष्ट्वा मासुचुर्मधुसूदनम् ॥ जना ऊचुः । प्रसादः क्रियतामस्य लोकस्यार्तस्य दुःसहद् ८ यस्मिन्दिने च प्रासुत
देवकी त्वां जनार्दनम् । तद्दिन देहि वैकुंठ कुर्मस्तत्र महोत्सवम् ९ एव स्तुते जनौघेन वसुदेवो मयेक्षित । विलोक्य बलभद्र च मां च
हृष्टतनूरुहः १० उवाच सममादेशाल्लोकान् जन्माष्टमीव्रतम् । मथुरायां ततः पश्चात्पार्थ सम्यक् प्रकाशितम् ११ कुर्वंतु ब्राह्मणाः सर्वे व्रतं
जन्माष्टमीदिने । क्षत्रियाश्चैव ये वैश्याः शूद्रा ये ऽन्ये ऽपि धर्मिणः १२ युधिष्ठिर उवाच । कीदृशं तद्व्रत देव सर्वैर्देवैरनुष्ठितम् । जन्माष्टमिति
संज्ञं च पवित्र पापनाशनम् १३ येन त्व तुष्टिमायासि कार्त्स्न्येन प्रभवाव्यय । एतन्मे तत्त्वतो ब्रूहि सविधानं सविस्तरम् १४ श्रीकृष्ण
उवाच । मासि भाद्रपदे ऽष्टम्यां निशीथे कृष्णपक्षके । शशांके वृषराशिस्थे ऋक्षे रोहिणिसंज्ञके १५ योगे ऽस्मिन्वसुदेवाद्धि देवकीमामजी-
जनत् । भगवत्याश्च तत्रैव क्रियते सुमहोत्सवः १६ योगे ऽस्मिन्कथिते ऽष्टम्यां सिंहराशिगते रवौ । सप्तम्यां लघुभुक्त्वा दंतधावनपूर्वकम्
१७ उपवासस्य नियम रात्रौ स्वपेज्जितेंद्रियः । केवलेनोपवासेन तस्मिन् जन्मदिने मम १८ सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ।
उपावृत्तस्तु पापेभ्यो यस्तु वासोगुणैः सह १९ उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः । ततो ऽष्टम्यां तिलैः स्नात्वा नद्यादौ विमले जले
२० सुदेशे शोधन कुर्याद्देवक्याः सूतिकागृहम् । सितपीतैस्तथा रक्तैः कर्बुरैर्हरितैरपि २१ वासोभि शोभित कृत्वा समतात्कलशैर्नवैः ।
पुष्पैः फलैरनेकैश्च दीपालिभिरितस्ततः २२ पुष्पमालाविचित्रं च मदनागरुधूपितम् । अतिरम्यमनोपम्य रक्षामणिविभूषितम् २३ हरि
वंशस्य चरितं गोकुलं च विलेखयेत् । ततो वादित्रनिनदैर्वीणावेणुरवाकुलम् २४ नृत्यगीतक्रमोपेत मंगलैश्च समंततः । वेष्टकारीकोहल

ञ्ञ कृत्वा नादं च यत्नतः २५ द्वारे विन्यस्य मुसलं रक्षितं रक्षपालकैः । षष्ठ्या देव्याधिष्ठितं च तद्गृहं चोत्सवैस्तथा २६ एवं विभवसारेण कृत्वा तत्सूतिकागृहम् । तन्मध्ये प्रतिमा स्थाप्या सा चाप्यष्टविधा स्मृता २७ कांचनी राजती ताम्री पैत्तली मृन्मयी तथा । वार्क्षी मणिमयी चैव वर्णकैर्लिखिता तथा २८ सर्वलक्षणसंपूर्णा पर्यंके चाष्टशल्यके । प्रतप्तकांचनाभासां महार्हां सुतपस्विनीम् २९ प्रसूतां च प्रसुप्तां च स्थापयेन्मंचकोपरि । -प्रसुप्तां देवकीम् ॥ मां तत्र बालकं सुप्तं पर्यंके स्तनपायिनम् ३० श्रीवत्सवक्षसं शांतं नीलोत्पलदलच्छविम् । यशोदां तत्र चैकस्मिन्प्रदेशे सूतिकागृहे ३१ तद्वच्च कल्पयेत्पार्थ प्रसूतां वरकन्यकाम् । तथैव मम पार्श्वस्थाः कृतांजलिपुटा नृप ३२ देवा ग्रहास्तथा नागा यक्षविद्याधरामराः । प्रणताः पुष्पमालाग्रचारुहस्ताः सुरासुराः ३३ संचरंत इवाकाशे प्रहारैरुदितोदितैः । वसुदेवो ऽपि तत्रैव खड्गचर्मधरः स्थितः ३४ कश्यपो वसुदेवोयमदितिश्चैव देवकी । शेषो वै बलदेवोऽयं यशोदा दितिरन्वभूत् ३५ नंदः प्रजापतिर्दक्षो गर्गश्चापि चतुर्मुखः । गोप्यश्चाप्यरसश्चैव गोपाश्चापि दिवौकसः ३६ एषो ऽवतारो राजेंद्र कंसो ऽयं कालनेमिजः । तत्र कंसनियुक्ताश्च मोहिता योगनिद्रया ३७ गोधेनुकुंजराश्चैव दानवाः शस्त्रपाणयः । नृत्यंतश्चाप्सरोभिस्ते गंधर्वा गीततत्पराः ३८ लेखनीयश्च तत्रैव कालियो यमुनाह्रदे । इत्येवमादि यत्किञ्चिद्विद्यते चरितं मम ३९ लेखयित्वा प्रयत्नेन पूजयेद्भक्तितत्परः । रम्यमेवं बीजपूरैः पुष्पमालादिशोभितम् ४० कालदेशोद्भवैः पुष्पैः फलैश्चापि युधिष्ठिर । पाद्यार्घ्यैः पूजयेद्भक्त्याः गंधपुष्पाक्षतैः सह । मंत्रेणानेन कौंतेय देवकीं पूजयेन्नरः ४१ गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैर्भृंगारादर्शकुंभप्रकटकृतकरैः किन्नरैः सेव्यमाना । पर्यंके स्वास्तृते या मुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते सा देवी देवमाता जयतु च सुसुता देवकी कांतरूपा ४२ पादावभ्यंजयंती श्रीर्देवक्याश्चरणांतिके । निशीथे पंचके पूज्या दि-

व्यगपानुलेपनैः४३पंकजैः पूजयेद्देवीं नमो देव्यै श्रिया इति। देवपत्से नमस्तेस्तु कृष्णोत्पादनतत्परा४४पापक्षयकरी देवी तुष्टिं यातु ममा
ऽर्चिता। प्रणवादिनमोंतं च पृथङ्नमानुकीर्तनम् ४५ कुर्यात्पूजां विधिज्ञश्च सर्वपापापनुत्तये। देवक्यै वसुदेवाय वासुदेवाय चैव हि ४६
बलदेवाय नंदाय यशोदायै पृथक् पृथक्। क्षीरादि स्नपन कृत्वा चंदनेनानुलेपयेत् ४७ विध्यतरमपीच्छंति केचिदत्रैव सूरयः। चंद्रोदये
शशांकाय अर्घ्यं दत्त्वा हरिं स्मरन् ४८ अनंतं वामन शौरिं वैकुंठं पुरुषोत्तमम्। वासुदेवं हृषीकेशं माधव मधुसूदनम् ४९ वराह पुंड-
रीकाक्षं नृसिंह ब्रह्मण प्रियम्। गोपीश पुंडरीकाक्षं सृष्टिस्थित्यंतकारकम् ५० अनादिनिधन विष्णुं त्रैलोक्येशं त्रिविक्रमम्। नारायणं
चतुर्बाहुं शंखचक्रगदाधरम् ५१ पीतांबरधर नित्य वनमालाविभूषितम्। श्रीवत्साक जगत्सेतु श्रीपतिं श्रीधरं हरिम् ५२ योगेश्वराय दे-
वाय योगिनां पतये नमः। योगोद्भवाय नित्याय गोविंदाय नमो नमः ५३ यज्ञेश्वराय देवाय तथा जलशयाय च। यज्ञानां पतये नाथ
गोविंदाय नमो नमः ५४ विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वंभराय च। विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविंदाय नमोनमः५५जगन्नाथ नमस्तुभ्य
संसारभयनाशन। जगदीशाय देवाय भूतानां पतये नमः ५६ धर्मेश्वराय धर्माय संभवाय जगत्पते। धर्मज्ञाय च देवाय गोविंदाय न-
मो नमः ५७ एभिर्मंत्रैस्तु स्नानादिशयनांत तथैव च। चंद्रायार्घ्यं च मंत्रेण अनेनैवाथ दापयेत् ५८ क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिगोत्रसमुद्भ-
व। गृहाणार्घ्यं शशांकेश रोहिण्या सहितो मम ५९ ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्य ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकांत अर्घ्यं नः प्र
तिगृह्यताम् ६० स्थंडिले स्थापयेद्देवं शशांकं रोहिणीयुतम्। देवक्या वसुदेवं च नंदं चैव यशोदया१बलदेवं मया सार्धं भक्त्या प-

१ योगेश्वरायेत्यारभ्य (५२–५७) षट् श्लोका आनंदाश्रमीयपुस्तके नैव पठ्यन्ते, इमा पुस्तकांतरे दृश्यंते, अर्घ्यपूजायां तु धूपदीपमंत्रो न स्तः, नैवेद्ये मंत्रांतरमस्ति।

रमया नृप। संपूज्य विधिवद्देही किं नामोत्यतिदुर्लभम् ६२ एकादशीनां विंशत्यः कोटयो याः प्रकीर्तिताः ॥ ताभिः कृष्णाष्टमी तुल्या त-
तोऽनंतचतुर्दशी ६३ अर्धरात्रे वसोर्धारां पातयेद्घृव्यसर्पिषा। ततो वर्धापयेन्नालं षष्ठीनामादिकं मम ६४ कर्तव्यं तत्क्षणाद्रात्रौ प्रभाते न
वमीदिने। यथा मम तथा कार्यो भगवत्या महोत्सवः ६५ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम्। हिरण्यं मेदिनीं गावो वा-
सांसि कुसुमानि च ६६ यद्यदिष्टतमं तत्तत्कृष्णो मे प्रीयतामिति। यं देवं देवकी देवी वसुदेवादजीजनत् ६७ भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्यै त-
स्मै ब्रह्मात्मने नमः। नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ६८ शांतिरस्तु शिवंचास्तु इत्युक्त्वा मां विसर्जयेत्। ततो बंधुजनौघं च
दीनानाथाँश्च भोजयेत् ६९ भोजयित्वा सुशांतांस्तान्स्वयं भुंजीत वाग्यतः। एवं यः कुरुते देव्या देवक्याः सुमहोत्सवम् ७० प्रतिवर्षं
विधानेन मद्भक्तो धर्मनंदन। नरो वा यदि वा नारी यथोक्तं लभते फलम् ७१ पुत्रसंतानमारोग्यं सौभाग्यमतुलं लभेत्। इह धर्मरति-
र्भूत्वा मृतो वैकुंठमाप्नुयात् ७२ तत्र देव विधानेन वर्षलक्षं युधिष्ठिर। भोगान्नानाविधान्भुक्त्वा पुण्यशेषादिहागतः ७३ सर्वकामसमृद्धे च
सर्वाशुभविवर्जिते। कुले नृपतिशीलानां जायते हृच्छयोपमः ७४ यस्मिन्सदैव देशे तु लिखितं तु पटार्पितम्। मम जन्मदिनं यत्र स-
र्वालंकारभूषितम् ७५ पूजयेत्पांडवश्रेष्ठ जनैरुत्सवसंयुतैः। परचक्रभयं तत्र न कदापि भवेत्पुनः ७६ पर्जन्यः कामवर्षी स्यादीतिभ्यो न
भयं भवेत्। गृहे वा पूज्यते यत्र देवक्याश्चरितं मम। तत्र सर्वं समृद्धं स्यान्नोपसर्गादिकं भवेत् ७७ पशुभ्यो नकुलाद्व्यालात्पापरोगाच्च
पातकात्। राजतश्चोरतो वापि न कदाचिद्भयं भवेत् ७८ संसर्गेणापि यो भक्त्या व्रतं पश्येदनाकुलम्। सोऽपि पापविनिर्मुक्तः प्रयाति
हरिमंदिरम् ७९ जन्माष्टमीजनमनोनयनाभिरामा पापापहा सुकृतिनं विदधाति गोपाः। यो देवकीं सुतयुतां च भजेद्धि तस्यां पुत्रानवा-

प्य समुपैति पद स विष्णो ॥ इति हेमाद्रौ म० जन्माष्ट० क० ॥ ॥ अथ शिष्टाचारमासा जन्माष्टमी कथा ॥ व्यास उवाच । निवृत्ते भारते युद्धे कृतशौचो युधिष्ठिर । उवाच वाक्यं धर्मात्मा कृष्ण देवकिनंदनम् १ युधिष्ठिर उवाच । त्वत्प्रसादात्तु गोविंद निहताः शत्रवो रणे । कर्णश्च निहतः सोपि त्वत्प्रसादात्किरीटिना २ जेता को युधि भीष्मस्य यस्य मृत्युर्न विद्यते । अजेयोपि जितः सैन्ये त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ३ प्राप्त निष्कंटक राज्य कृत्वा कर्म सुदुष्करम् । आचारो दंडनीतिश्च राजधर्माः क्रियान्विताः ४ अधुना श्रोतुमिच्छामि शुद्धं जन्माष्टमी व्रतम् । जन्माष्टमीव्रत ब्रूहि विस्तरेण ममाच्युत ५ कुतेऽकाले समुत्पन्न किं पुण्यं को विधिः स्मृतः ॥ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु राजन्मव क्ष्यामि व्रतानामुत्तम व्रतम् ६ यतःप्रभृति विख्यातं फलेन विधिनाऽन्वितम् । राजवंशसमुत्पन्नैर्दैत्यानीके सुपीडिता ७ धरा भारभरा क्रांता ब्रह्माण शरण ययौ । ज्ञात्वा तदा प्रभुर्ब्रह्मा भूमेर्भार समाहितः ८ श्वेतद्वीपं समागत्य सर्वदेवसमन्वितः । समाहितमतिर्ब्रह्मा मां तुष्टाव विशांपते ९ स्तुत्या तया ऽहं सप्रीतस्तेषां दृग्गोचरो ऽभवम् । दृष्ट्वा मां प्रणिपत्याशु भक्तिभावसमन्वितः १० ब्रह्माणमग्रतः कृत्वा तुष्टाः सर्वे दिवौकसः । विजिज्ञपुर्महाराज भूमिभारापनुत्तये ११ उपधार्य तदा तेषां वचन ध्यान्वचिंतयम् । केनोपायेन हंतव्या दानवाः क्षत्रियोद्भवाः १२ स्वधर्मनिरताः सर्वे महाबलपराक्रमाः । ततो निश्चित्य मनसा ब्रह्माणमहमब्रुवम् १३ वसुदेवो देवकी च प्रजाकामौ पुरा नृप । भक्त्या मां भजमानौ तौ तप्तवतौ महत्तपः १४ तयोः प्रसन्नः सुप्रीतो, याचतां वरमुत्तमम् । अब्रुव, तावपि ततो वरयामासतुः किल १५ यदि देव प्रसन्नोसि त्वादृशो नौ भवेत्सुतः । तथेति च मया ताभ्यामुक्त प्रीतेन चेतसा १६ तत्कामपूर-

१ पवरत्वै मया ऽमापीत्यर्थः । २ कुत्काले कस्मिन्काले ।

णार्थाय संभविष्याम्यहं तयोः । दिवौकसोपि स्वांशेन संभवंतु सुरस्त्रियः १७ योगमाया च नंदस्य यशोदायां भविष्यति । देवक्या
जठरे गर्भमनंतं धाम मामकम् १८ सन्निकृष्य ततस्तूर्णं रोहिण्या जठरे नयेत् । इति संदिश्य तान्सर्वानहमंतर्हितोऽभवम् १९ ततो दे-
वैः समं ब्रह्मा तां दिशं प्रणिपत्य च। आश्वास्य च महीं देवीं वरधाम्नि जगाम ह २० ततो ऽहं देवकीगर्भमविशं स्वेन तेजसा । हतेषु
षट्सु बालेषु देवक्या औग्रसेनिना। कारागृहस्थितायां च वसुदेवेन वै सह २१ गते ऽर्धरात्रसमये सुप्ते सर्वजने निशि । भाद्रे मास्य-
सिते पक्षे ऽष्टम्यां ब्रह्मर्क्षसंयुजि २२ सर्वग्रहशुभे काले प्रसन्नहृदयाशये । आविरासं निजेनैव रूपेण ह्यवनीपते २३ वसुदेवोपि मां दृष्ट्वा
हर्षशोकसमन्वितः । भीतः कंसादतितरां तुष्टाव च कृतांजलिः २४ पुनः पुनः प्रणम्याथ प्रार्थयामास सादरम् ॥ वसुदेव उवाच । अलौ-
किकमिदं रूपं दुर्दर्शं योगिनामपि २५ यत्तेजसा ऽरिष्टगृहमभवत्संप्रकाशितम् । उद्विग्नो भगवन्कंसाद्यो मे बालानघातयत् २६ उपसंहर
तस्माच्च एतद्रूपमलौकिकम् । शंखचक्रगदापद्मलसत्कौस्तुभमालिकम् २७ किरीटहारमुकुटकेयूरवलयांकितम् । तडिद्वसनसंवीतं क्वणत्कांच-
नमेखलम् २८ स्फुरद्राजीवताम्राक्षं स्निग्धांजनसमप्रभं । महामरकतस्वच्छं कोटिसूर्यसमप्रभं २९ कृष्ण उ० । एवं संप्रार्थितो राजन् वसुदेवेन
वै तदा।तेनैव निजरूपेण भूत्वा ऽहं प्राकृतः शिशुः ३० नय मां गोकुलमिति वसुदेवमचोदयं। समादायागमत्सोपि नंदगोकुलमंजसा ३१द्वारा
ण्यपाकृतान्यासन्मत्प्रभावात्स्वयं प्रभो । ददौ मार्गं च कालिंदी जलकल्लोलमालिनी ३२ ततो यशोदाशयने न्यस्य चानकदुंदुभिः। तत्पर्यंके
स्थितां गृह्य दारिकामगमत्पुनः ३३द्वाराणि पिहितान्यासन्पूर्ववन्निगडं ततः।विन्यस्य पादयोरास्ते शयने न्यस्य दारिकां ३४ ततो रुरोद मह-
ता स्वरेणापूर्य सा दिशः । तस्या रुदितशब्देन उत्थिता रक्षका गृहात् ३५ कंसायागत्य चाचख्युः प्रसूता देवकीति च । सो ऽपि तल्पा

समुत्थाय भयेनातीव विह्वलः ३६ जगाम सूतिकागेहं देवक्याः प्रस्खलन्पथि । दारिकां शयनाद्गृह्य रुदत्याश्चैव स्वस्वसुः ३७ अपोथय-
च्छिलापृष्ठे सा ऽपि तस्य कराच्च्युता । उवाच कंसमाभाष्य देवी ह्याकाशगा सती ३८ किं मया हतया मंद जातः कुत्रापि ते रिपुः । इ-
त्युक्तो सौ सकपो ऽभूत्परमोद्विग्नमानसः ३९ आज्ञापयामास ततो बालानां कदनाय वै । दानवा अपि बालानां कदनं चक्रुरुद्यताः ४०
घनेपूपवने चैव पुरग्रामव्रजेष्वपि । अहं च गोकुले स्थित्वा पूतनां बालघातिनीम् ४१ स्तनं दातुं प्रवृत्तां च प्राणैः सममशोषयम् । तृ-
णावर्तबकारिष्टान्धेनुकं केशिनं तथा ४२ अन्यानपि खलान्हत्वा स्वप्रभावमदर्शयम् । ततश्च मथुरां गत्वा हत्वा कंसादिदानवान् ४३
ज्ञातीनां परमं हर्षं कृतवानस्मि सादरम् । देवकीवसुदेवौ च परिष्वज्य मुदा मम ४४ आनंदजैर्जलैर्मूर्ध्नि सेचयामासतुर्नृप । तस्मिन्पुर
वरे मल्लान्हत्वा चाणूरमुख्यकान् ४५ गजं कुवलयापीडं कंसभ्रातॄननेकशः । एवं हते ऽसुरे कंसे सर्वलोकैककंटके ४६ अन्येषु दुष्टदैत्येषु
सर्वलोकभयंकरम् । लोकाः समुत्सुकाः सर्वे ऊचुर्मां च समादृताः ४७ कृष्ण कृष्ण महायोगिन्भक्तानामभयप्रद । भवयात्पाहि नो देव
शरणागतवत्सल ४८ अनाथनाथ सर्वज्ञ सर्वभूतहिते रत । किंचिद्विज्ञामहे देव तन्नो वक्तुं त्वमर्हसि ४९ तव जन्मदिनं लोके न ज्ञातं के
नचित्कचित् । ज्ञात्वा च तत्त्वतः सर्वे कुर्मो वर्धापनोत्सवम् ५० तेषां दृष्टा मया भक्तिः श्रद्धा च मयि सौहृदम् । मया जन्मदिनं ते
भ्यः ख्यात निर्मलचेतसा ५१ श्रुत्वा तेपि तथा चक्रुर्विधिना येन तच्छृणु । पार्थ तद्दिवसे प्राप्ते दंतधावनपूर्वकम् ५२ स्नात्वा पुण्यजले
शुद्धे वाससी परिधाय च । निर्वर्त्यावश्यकं कर्म व्रतसंकल्पमाचरेत् ५३ अथ स्थित्वा निराहारः श्वोभूते तु परेहनि । मोक्ष्यामि पुंडरी

१ मुदा परिष्वज्यपार्थवमैर्जलैर्मम मूर्ध्नि सेचयामासतुरित्युत्तरेणान्वयः । २ तरिनमिति पाठः ।

काक्ष शरणं मे भवाव्यय ५४ गृहीत्वा नियमं चैव संपाद्यार्चनसाधनम् । मंडपं शोभनं कृत्वा पुष्पमालादिभिर्युतम् ५५ तस्मिन्मां पूजयेद्भक्त्या गंधपुष्पाक्षतैः क्रमात् । उपचारैः षोडशभिर्द्वादशाक्षरविद्यया ५६ सद्यः प्रसूतां जननीं वसुदेवं च मारिष । बलदेवसमायुक्तां रोहिणीं गुणशोभिनीम् ५७ नंदं यशोदां गोपीश्च गोपान्गाश्चैव सर्वशः । गोकुलं यमुनां चैव योगमायां च दारिकाम् ५८ यशोदाशयने सुप्तां सद्योजातां वरप्रभाम् । एवं संपूजयेत्सम्यङ्नाममंत्रैः पृथक्पृथक् ५९ सुवर्णरौप्यताम्रारमृदादिभिरलंकृताः । काष्ठपाषाणरचिताश्चित्रमप्यथ लेखिताः ६० प्रतिमा विविधाः प्रोक्तास्तासु मां च नरो यजेत् । रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतनृत्यादिभिः सह ६१ पुराणैः स्तोत्रपाठैश्च जातनामादिपूत्सवैः । श्वोभूते पारणं कुर्याद्द्विजान्संभोज्य यत्नतः ६२ एवं कृते महाराज व्रतानामुत्तमोत्तमे । सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ६३ मोहान्न कुरुते यस्तु याति संसारगह्वरे । तस्मात्कुर्वन्प्रयत्नेन निष्पापो जायते नरः ६४ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासं पुरातनम् । अंगदेशोद्भवो राजा मित्रजिन्नाम नामतः ६५ तस्य पुत्रो महातेजाः[१] सत्यजित्सत्पथेस्थितः । पालयामास धर्मज्ञो विधिवद्रंजयन्प्रजाः ६६ तस्यैवं वर्तमानस्य कदाचिद्दैवयोगतः । पाखंडैः सह संवासो बभूव बहुवासरम् ६७ तत्संसर्गात्स नृपतिरधर्मनिरतोऽभवत् । वेदशास्त्रपुराणानि विनिंद्य बहुशो नृप ६८ ब्राह्मणेषु तथा धर्मे विद्वेषं परमं गतः । एवं बहुतिथे काले गते भरतसत्तम ६९ कालेन निधनं प्राप्तो यमदूतवशंगतः । बध्वा पाशैर्नीयमानो यमदूतैर्यमांतिकम् ७० पीडितस्ताड्यमानोऽसौ दुष्टसंगवशंगतः । नरके पतितः पापो यातना बहुवत्सरम् ७१ भुक्त्वा पापस्य शेषेण पैशाचीं योनिमास्थितः । तृषाक्षुधासमाक्रांतो भ्रमन्स मरुध-

१ महातेजा इत्यत्र महासेनेति क्वचित्पुस्तकेषु पाठांतरम् ।

न्वपु ७२ कस्यचित्वथ वैश्यस्य देहमाविश्य संस्थितः । सह तेनैव संप्राप्तो मथुरां पुण्यदां पुरीम् ७३ तत्रत्यै रक्षकैः सो ऽथ तद्देहात्तु
बहिष्कृत । बभ्राम विपिने सोऽपि ऋषीणामाश्रमेष्वपि ७४ कदाचिद्दैवयोगेन मम जन्माष्टमीदिने । क्रियमाणां महापूजां व्रतिभिर्मुनि
भिर्द्विजैः ७५ रात्रौ जागरणं चैव नामसंकीर्तनादिभि । ददर्श सर्वं विधिवच्छुश्राव च हरेः कथा ७६ निष्पापस्तत्क्षणादेव शुद्धनिर्मल
मानसः । प्रेतदेहं समुत्सृज्य विष्णुलोके विमानग ७७ मम दूतैः समानीतो दिव्यभोगसमन्वितः । मम सान्निध्यमापन्नो व्रतस्यास्य प्र
भावतः ७८ नित्यमेव व्रतं चैतत्पुराणे सार्वकालिकम् । गीयते विधिवत्सम्यङ्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ७९ सार्वकालिकमेवैतत्कृत्वा कामान
वाप्नुयात् । एतत्ते सर्वमाख्यातं व्रतानामुत्तमं व्रतम् । मम सान्निध्यकृद्राजन्किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ८० ॥ इति कथा ॥ ॥ युधिष्ठिर उ० ।
उद्यापनविधिं ब्रूहि सर्वदेवदयानिधे । येन संपूर्णतां याति व्रतमेतदनुत्तमम् ॥ श्रीकृष्ण उवाच । पूर्णां तिथिमनुप्राप्य विवर्जितादिसंयुतः ।
पूर्वेद्युरेकभक्ताशी स्वपन्मां संस्मरन्हृदि ॥ प्रातरुत्थाय संस्मृत्य पुण्यश्लोकान्समाहितः । निर्वर्त्यावश्यकं कर्म ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् ॥
गृहमानीय धर्मज्ञं वेदवेदांगपारगम् । वृणुयादृत्विजं चैव वस्त्रालंकरणादिभिः ॥ पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुन । शक्त्या वापि
नृपश्रेष्ठ वित्तशाठ्यविवर्जित ॥ सौवर्णी प्रतिमा कार्या पाद्यार्घ्याचमनीयकम् । पात्रं संपाद्य विधिवत्पूजोपकरणं तथा ॥ गोचर्ममात्रं स
लिप्य मध्ये मण्डलमाचरेत् । ब्रह्माद्या देवतास्तत्र स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ॥ मण्डपं रचयेत्तत्र कदलीस्तम्भमण्डितम् । चतुर्द्वारसमोपेतं फल
पुष्पादिशोभितम् ॥ वितानं तत्र बध्नीयाच्चित्रं चैव शोभनम् । मंडले स्थापयेत्कुंभं ताम्रं वा मृन्मयं शुभम् ॥ तस्योपरि न्यसेत्पात्रं
राजतं वैणवं तु वा । वाससा ऽऽच्छाद्य कौंतेय पूजयेत्तत्र मां बुधः ॥ उपचारैः षोडशभिर्मन्त्रैरेतैः समाहितः । ध्यात्वावाहनमंगीकृत्य स्वाग

तादिभिरादरात् ॥ ध्यात्वा चतुर्भजं देवं शंखचक्रगदाधरम् । पीतांबरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम् । लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम् । ध्यानम् ॥ आगच्छ देवदेवेश जगद्योने रमापते । शुद्धे ह्यस्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहि कृपां कुरु । आवाहनम् ॥ देवदेव जगन्नाथ गरुडासनसंस्थित । गृहाण चासनं दिव्यं जगद्धातर्नमोस्तु ते । आसनम् ॥ नानातीर्थाहृतं तोयं निर्मलं पुष्पमिश्रितम् । पाद्यं गृहाण देवेश विश्वरूप नमोस्तु ते । पाद्यम् ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो भक्त्यानीतं सुशीतलम् । गंधपुष्पाक्षतोपेतं गृहाणार्घ्यं नमो ऽस्तु ते । अर्घ्यम् ॥ कृष्णावेणीसमुद्भूतं कालिंदीजलसंयुतम् । गृहाणाचमनं देवं विश्वकाय नमो ऽस्तु ते । आचमनम् ॥ दधि क्षौद्रं घृतं शुद्धं कपिलायाः सुगंधि यत् । सुस्वादु मधुरं शौरे मधुपर्कं गृहाण मे । मधुपर्कम् । पुनराचमनम् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम् । पंचामृतेन स्नपनं लक्ष्मीकांत नमो ऽस्तु ते । पंचामृतम् ॥ मंदाकिनी गौतमी च यमुना च सरस्वती । ताभ्यः स्नानार्थमानीतं गृहाण शिशिरं जलम् । स्नानम् ॥ शुद्धजांबूनदप्रख्ये तडिद्भासुररोचिषी ॥ मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् । वस्त्रयुग्मम् ॥ यज्ञोपवीतंसहजं० । यजोपवीतम् ॥ किरीटकुडलादीनि कांचीवलययुग्मकम् । कौस्तुभं वनमालां च भूषणानि गृहाण भो । भूषणानि ॥ मलयाचलसंभूतं घनसारंमनोहरम् । हृदयानंदनं चारु चंदनं प्रतिगृह्यताम् । चंदनम् ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः० । कुंकुमाक्षतान् ॥ मालतीचंपकादीनि यूथिकाबकुलानि च । तुलसीपत्रमिश्राणि गृहाण सुरसत्तम । पुष्पाणि ॥ अथांगपूजा ॥ अघनाशनायन०पादौपू० । वामनाय० गुल्फौपू० । शौरये०जंघे० ॥ वैकुंठवासिनेन०ऊरू० । पुरुषोत्तमाय०मेढ्रंपू० । वासुदेवाय० कटी० । हृषीकेशाय० नाभिं० । माधवाय० हृदयं० । मधुसूदनाय० कंठं० । वराहाय० बाहू० । नृसिंहाय हस्तौ० । दैत्यसूदनाय० मुखं० । दामोदराय०नासिकां० । पुंडरिका-

न्वष्ठ ७२ कस्यचित्वथ वैश्यस्य देहमाविश्य संस्थितः । सह तेनैव संप्राप्तो मथुरां पुण्यदां पुरीम् ७३ तत्रत्यै रक्षकैः सो ऽथ तद्देहाद्
बहिष्कृतः । बभ्राम विपिने सोऽपि ऋषीणामाश्रमेष्वपि ७४ कदाचिद्दैवयोगेन मम जन्माष्टमीदिने । क्रियमाणां महापूजां यतिभिर्मुनि
भिर्द्विजैः ७५ रात्रौ जागरणं चैव नामसंकीर्तनादिभि । ददर्श सर्वं विधिवच्छुश्राव च हरेः कथाः ७६ निष्पापस्तत्क्षणादेव शुद्धनिर्मल
मानसः । प्रेतदेह समुत्सृज्य विष्णुलोके विमानम ७७ मम दूतैः समानीतो दिव्यभोगसमन्वितः । मम सान्निध्यमापन्नो व्रतस्यास्य प्र
भावत ७८ नित्यमेव व्रतं चैतत्पुराणे सार्वकालिकम् । गीयते विधिवत्सम्यङ्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ७९ सार्वकालिकमेवैतत्कृत्वा कामान
वाप्नुयात् । एतत्ते सर्वमाख्यात व्रतानामुत्तमं व्रतम् । मम सान्निध्यकृद्राजन्किं भूय श्रोतुमिच्छसि ८० ॥ इति कथा ॥ ॥ युधिष्ठिर उ० ।
उद्यापनविधिं ब्रूहि सर्वदेवदयानिधे । येन संपूर्णतां याति व्रतमेतदनुत्तमम् ॥ श्रीकृष्ण उवाच । पूर्णां तिथिमनुप्राप्य वित्तचिंतादिसंयुतः ।
पूर्वेद्युरेकभक्ताशी स्वपन्मां संस्मरन्हृदि ॥ प्रातरुत्थाय संस्मृत्य पुण्यश्लोकान्समाहितः । निर्वर्त्यावश्यकं कर्म ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् ॥
एहमानीय धर्मज्ञं वेदवेदांगपारगम् । वृणुयादृत्विजं चैव वस्त्रालंकरणादिभिः ॥ पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः । शक्त्या वापि
नृपश्रेष्ठ वित्तशाठ्यविवर्जित ॥ सौवर्णी प्रतिमा कार्या पाद्यार्घ्याचमनीयकम् । पात्रं संपाद्य विधिवत्पूजोपकरणं तथा ॥ गोचर्ममात्रं स
लिप्य मध्ये मंडलमाचरेत् । ब्रह्माद्या देवतास्तत्र स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ॥ मंडपं रचयेत्तत्र कदलीस्तंभमंडितम् । चतुर्द्वारसमोपेतं फल
पुष्पादिशोभितम् ॥ वितानं तत्र बध्नीयाद्विचित्रं चैव शोभनम् । मंडले स्थापयेत्कुंभं ताम्रं वा मृन्मयं शुभम् ॥ तस्योपरि न्यसेत्पात्रं
राजतं वैणवं तु वा । वाससा ऽऽच्छाद्य कौंतेय पूजयेत्तत्र मां बुधः ॥ उपचारैः षोडशभिर्मंत्रैरेतैः समाहितः । ध्यात्वावाहनमतीकृत्य स्वाग

शतं हुत्वा ततः पुरुषसूक्ततः । इदंविष्णुरिति प्रोक्ता जुहुयाद्वै घृताहुतीः ॥ होमशेषं समाप्याथ पूर्णाहुतिमतःपरम् । आचार्यं पूजयेद्भक्त्या भूषणाच्छादनादिभिः ॥ गामेकां कपिलां दद्याद्व्रतसंपूर्णहेतवे । पयस्विनीं सुशीलां च सवत्सां सगुणां तथा ॥ स्वर्णशृंगीं रौप्यखुरीं कांस्यदोहनिकायुताम् । रत्नपुच्छां ताम्रपृष्ठीं कंठे घंटासमन्विताम् ॥ वस्त्रच्छन्नां दक्षिणाढ्यामेवं संपूर्णतां यजेत् । कपिलाया अभावे तु गौरन्यापि प्रदीयते ॥ ततो दद्याच्च ऋत्विग्भ्यो अन्येभ्यश्च यथार्हतः । ब्राह्मणान् भोजयित्वाऽथ भुंजीत सह बंधुभिः ॥ एवं कृते महाराज व्रतोद्यापनकर्मणि । निःपापस्तत्क्षणादेव जायते विबुधोपमः ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमन्वितः । भुक्त्वा भोगांश्चिरंकालमंते मम पुरं व्रजेत् ॥ इति श्रीभविष्यपुराणे कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे जन्माष्टमीव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥अथ भाद्रशुक्लाष्टम्यां ज्येष्ठर्क्षे ज्येष्ठाव्रतम्॥ इदंच ज्येष्ठायोगवशेन परविद्धायां पूर्वविद्धायां वा कार्यम् । दिनद्वये तद्योगे परैव, पूर्वेद्यू रात्रौ तद्योगे पूर्वा । ज्येष्ठापूजनं लैंगे- कन्यास्थार्काष्टमी शुद्धा ज्येष्ठर्क्षे महती स्मृता । अलक्ष्मीपरिहाराय ज्येष्ठां तत्र प्रपूजयेत् ॥ कन्यार्कयोगोऽत्र केवलस्तावक एव।मासस्तु भाद्रपदश्चांद्र एव ग्राह्यः । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठर्क्षसंयुते । यस्मिन्कस्मिन्दिने वापि ज्येष्ठादेवीं प्रपूजयेत् ॥ हेमाद्रौ— नवम्या सह कार्या स्यादष्टमी नात्र संशयः । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठर्क्षसंयुता ॥ रात्रौ यस्मिन्दिने कुर्याज्ज्येष्ठायाः परिपूजनम् । यस्मिन्दिने भवेज्ज्येष्ठा मध्याह्नादूर्ध्वमप्यणुः । तस्मिन्हविष्यं पूजा च न्यूना चेत्पूर्ववासरे ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने अनुराधायामावाहनमुत्तरदिने पूजनं मूले च विसर्जनम् ॥ तथाच स्कांदे— मैत्रेणावाहयेद्देवीं ज्येष्ठायां तु प्रपूजयेत् । मूले विसर्जयेद्देवीं त्रिदिनं व्रतमुत्तमम् ॥ अथ पूजा ॥ तिथ्यादि संकीर्त्य मम मृतवंध्यादिदोषपरिहारार्थं पुत्रपौत्रादिवृद्धये दरिद्रनाशार्थं यथामीलितोपचारैः ज्येष्ठापूजनं करिष्ये । इति संकल्प्य ॥ त्रिलोचनां शुक्लदंतीं

क्षाय० नेत्रे । गरुडध्वजाय० श्रोत्रे० । गोविंदाय० ललाट० । अच्युताय० शिरःपू० । कृष्णाय० सर्वांगपू० ॥ अथ परिवारदेवतापूजा ॥ देवकीं वसुदेवं च रोहिणीं सबलां तथा । सात्यकिं चोद्धवाक्रूरावुग्रसेनादियादवान् । नंदं यशोदां तत्काले प्रसूता गोपगोपिका । कालिंदीं कालियं चैव पूजयेन्नाममंत्रत । इति ॥ वनस्पतिरसोद्भूतं कालागरुसमन्वितम् । धूपं गृहाण गोविंद गुणसागर गोपते । धूपम् ॥ आज्यचवर्तिसंयुक्त० । दीपम् ॥ शाल्योदनं पायसं च सिताघृतविमिश्रितम् । नानापक्वान्नसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । नैवेद्यम् ॥ मध्येपा० उत्तरापोशनादीनि ॥ इदंफलं० । फलम् ॥ पूगीफलं० । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ नीराजयेत्ततो भक्त्या मंगलं समुदीरयन् । जयमंगलनिर्घोषैर्देवदेवं समर्चयेत् । नीराजनम् ॥ दत्त्वा पुष्पांजलिं चैव प्रदक्षिणपुरःसरम् । प्रणमेद्दंडवद्भूमौ भक्तिमान्नः पुनः पुन । स्तुत्वा नानाविधैः स्तोत्रैः प्रार्थयीत जगत्पतिम् ॥ नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो ॥ वसुदेवात्मजानंत यशोदानंदवर्धन । गोविंद गोकुलाधार गोपीकांत नमोस्तु ते ॥ ततस्तु दापयेदर्घ्यमिंदोरुदयतः शुचिः । कृष्णाय प्रथमं दद्याद्देवकीसहिताय च । नारिकेलेण शुद्धेन दद्यादर्घ्यं विचक्षण ॥ कृष्णाय परया भक्त्या शंखे कृत्वा विधानतः ॥ जात कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीसहितो हरे । कृष्णार्घ्यमंत्रः ॥ शंखे कृत्वा ततस्तोयं सपुष्पफलचंदनम् । जानुभ्यामवनिं गत्वा चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् ॥ क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिगोत्रसमुद्भव । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितः प्रभो ॥ ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते । नमस्ते रोहिणीकांत गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते । चंद्रार्घ्यमंत्र ॥ इत्थं संप्रार्घ्य देवेशं रात्रौ जागरणं चरेत् । गीतनृत्यदिना चैव पुराणश्रवणादिभिः ॥ प्रत्यूषे विमले स्नात्वा पूजयित्वा जगद्गुरुम् । पायसेन तिलाज्यैश्च मूलमंत्रेण भक्तितः ॥ अष्टोत्तर-

शतं हुत्वा ततः पुरुषसूक्ततः । इदंविष्णुरिति प्रोक्ता जुहुयाद्वै घृताहुतीः ॥ होमशेषं समाप्याथ पूर्णाहुतिमतः परम् । आचार्यं पूजयेद्भक्त्या भूषणाच्छादनादिभिः ॥ गामेकां कपिलां दद्याद्व्रतसंपूर्णहेतवे । पयस्विनीं सुशीलां च सवत्सां सगुणां तथा ॥ स्वर्णशृंगीं रौप्यखुरीं कांस्यदोहनिकायुताम् । रत्नपुच्छां ताम्रपृष्ठीं कंठे घंटासमन्विताम् ॥ वस्त्रच्छन्नां दक्षिणाढ्यामेवं संपूर्णतां यजेत् । कपिलाया अभावे तु गौरन्यापि प्रदीयते ॥ ततो दद्याच्च ऋत्विग्भ्यो अन्येभ्यश्च यथार्हतः । ब्राह्मणान् भोजयित्वाऽथ भुंजीत सह बंधुभिः ॥ एवं कृते महाराज व्रतोद्यापनकर्मणि । निःपापस्तत्क्षणादेव जायते विबुधोपमः ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमन्वितः । भुक्त्वा भोगांश्चिरंकालमंते मम पुरं व्रजेत् ॥ इति श्रीभविष्यपुराणे कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे जन्माष्टमीव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥अथ भाद्रशुक्लाष्टम्यां ज्येष्ठर्क्षे ज्येष्ठाव्रतम्॥ इदंच ज्येष्ठायोगवशेन परविद्धायां पूर्वविद्धायां वा कार्यम् । दिनद्वये तद्योगे परैव, पूर्वेद्यू रात्रौ तद्योगे पूर्वा । ज्येष्ठापूजनं लैंगे- कन्यास्थार्काष्टमी शुद्धा ज्येष्ठर्क्षे महती स्मृता । अलक्ष्मीपरिहाराय ज्येष्ठां तत्र प्रपूजयेत् ॥ कन्यार्कयोगोऽत्र केवलस्तावक एव। मासस्तु भाद्रपदश्चांद्र एव ग्राह्यः । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठर्क्षसंयुते । यस्मिन्कस्मिन्दिने वापि ज्येष्ठादेवीं प्रपूजयेत् ॥ हेमाद्रौ- नवम्या सह कार्या स्यादष्टमी नात्र संशयः । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठर्क्षसंयुता ॥ रात्रौ यस्मिन्दिने कुर्याज्ज्येष्ठायाः परिपूजनम् । यस्मिन्दिने भवेज्ज्येष्ठा मध्याह्नादूर्ध्वमप्यणुः । तस्मिन्हविष्यं पूजा च न्यूना चेत्पूर्ववासरे ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने अनुराधायामावाहनमुत्तरदिने पूजनं मूले च विसर्जनम् ॥ तथाच स्कांदे- मैत्रेणावाहयेद्देवीं ज्येष्ठायां तु प्रपूजयेत् । मूले विसर्जयेद्देवीं त्रिदिनं व्रतमुत्तमम् ॥ अथ पूजा ॥ तिथ्यादि संकीर्त्य मम मृतवंध्यादिदोषपरिहारार्थं पुत्रपौत्रादिवृद्धये दरिद्रनाशार्थं यथामीलितोपचारैः ज्येष्ठापूजनं करिष्ये । इति संकल्प्य ॥ त्रिलोचनां शुक्लदंतीं

बिभ्रतीं काचनीं तनुम् । विरक्तां रक्तनयनां ज्येष्ठां ध्यायामि सुंदरीम् । ध्यानम् ॥ एह्येहि त्वं महाभागे सुरासुरनमस्कृते । ज्येष्ठा त्वं सर्वदेवानां मत्समीपगता भव । आवाहनम् ॥ श्वेतसिंहासनस्था त्व श्वेतवस्त्रैरलंकृता ॥ वरद पुस्तकं पाशं बिभ्रत्यै ते नमो नमः । आसनम् ॥ ज्येष्ठे श्रेष्ठे तपोनिष्ठे धर्मिष्ठे सत्यवादिनि । समुद्रमथनोत्पन्ने पाद्यं गृह्ण नमो ऽस्तु ते । पाद्यम् ॥ श्रीखण्डकर्पूरयुत तोयं पुष्पेण संयुतम् । गृहाणार्घ्यं मया दत्त ज्येष्ठदेवि नमो ऽस्तु ते । अर्घ्यम् ॥ ज्येष्ठायै ते नमस्तुभ्य श्रेष्ठायै ते नमो नमः । ज्येष्ठे श्रेष्ठे तपोनिष्ठे ब्रह्मिष्ठे सत्यवादिनि । आचमनीयम् ॥ पयो दधि घृत चैव क्षौद्रशर्करयाऽन्वितम् । पंचामृत मयानीत स्नान गृह्ण सुरेश्वरि । पचामृतम् ॥ मदाकिन्याः समानीत हेमांभोरुहवासितम् । स्नानार्थं ते मयानीत स्नान कुरु जगन्मये । स्नानम् ॥ सूक्ष्मतंतुभवे श्वेते धौते निर्मलवारिणा । वारणे छोकलज्जाया वाससी प्रतिगृह्यताम् । वस्त्रयुग्मम् ॥ आचम० ॥ हरिद्रा कुकुमं चैव कठसूत्र च ताडकम् । सिंदूर कज्जलं चारु पट्टसौभाग्य गृहाण भोः । सौभाग्यद्रव्यम् ॥ श्रीखण्डचदन० ॥ अक्षताश्चसुर० । अक्षतान् ॥ नूपुरौ मेखला कांची ककणानि सुशोभने । नासिकायां मया दत्ता मुक्ता कांचनसयुता । अलंकारान् ॥ चपकादिसुगधीनि० पुष्पाणि ॥ वनस्पतिरसो० । धूपम् ॥ साज्यचवर्ति० । दीपम् ॥ गोधूमपिष्टशाल्यादितडुलाना च कारयेत् । स्वाद्यः प्रसूतिमात्रास्तु पूरिका घृतपाचिताः । शाल्योदन सूपयुक्त दधि दुग्ध घृत तथा । नानाव्यजनसयुक्तं नैवेद्यं प्रति० । नैवेद्यम् ॥ मध्येपा० उत्तरापो० हस्तप्र० मुखप्र० । करोद्वर्तनम् । फलम् । ताम्बूलम् । हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् । नीराजनम् । प्रदक्षिणाम् । नमस्कारम् ॥ शार्ङ्गबाणाजखड्गारिप्रासतोमरमुद्गरैः । अन्यैरप्यायुधैर्युक्तां ज्येष्ठ त्वामर्चयाम्यहम् । पुष्पांजलिम् ॥ त्व लक्ष्मीस्त्व महादेवी त्व ज्येष्ठे सर्वदा ऽमरैः । पूजितासि मया देवि वरदा भव मे सदा । प्रार्थना ॥

इति पूजाविधिः ॥ अथ कथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । मृतवंध्या तु या नारी काकवंध्या तथा परा । गर्भस्रावी तृतीया च नानादोषैस्तु दूषिता ॥ निर्धनाश्च नरा ये वै दारिद्र्येण हताश्च ये । कर्मणा केन मुच्यंते तन्मे ब्रूहि जनार्दन ॥ श्रीकृष्ण उवाच । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठा यदा भवेत् । रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवादित्रनिस्वनैः । एवं विधिविधानज्ञो एभिर्मंत्रैश्च पूजयेत् ॥ एह्येहि त्वं महाभागे सुरासुरनमस्कृते । ज्येष्ठासि सर्वदेवानां मत्समीपं गता भव ॥ श्वेतसिंहासनस्था त्वं श्वेतवस्त्रैरलंकृता । वरदं पुस्तकं पाशं बिभ्रत्यै ते नमोनमः ॥ ज्येष्ठे श्रेष्ठे तपोनिष्ठे धर्मिष्ठे सत्यवादिनि । समुद्रमथनोत्पन्ने ज्येष्ठायै ते नमो नमः ॥ शार्ङ्गबाणाब्जखड्गारिप्रासतोमरमुद्गरैः । अन्यैरप्यायुधैर्युक्तां ज्येष्ठे त्वामर्चयाम्यहम् ॥ त्वं लक्ष्मीस्त्वमुमादेवी त्वं ज्येष्ठे सर्वदाऽमरैः ॥ पूजिताऽसि मया देवि वरदा भव मे सदा । प्रार्थना ॥ पुत्रदारविवृद्ध्यर्थं लक्ष्म्याश्चैव विवृद्धये । अलक्ष्म्याश्च विनाशाय सर्वकालं द्विजोत्तम ॥ गुरुं संपूजयेद्भक्त्या वस्त्रैराभरणादिभिः ॥ ततो द्वादश वर्षाणि पूजनीया प्रयत्नतः । यावज्जन्म तथा पूर्वं विधिना ऽनेन मानवैः ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च अर्चनीया सदा स्त्रिया । अनेन विधिना युक्तो यो हि पूजयते नरः ॥ ज्येष्ठां तु पूजयेन्नारीं तस्या लक्ष्मीर्विवर्द्धते । वंध्या तु लभते पुत्रान् दुर्भगा सुभगा भवेत् ॥ एवं विधिविधानेन ज्येष्ठादेवीं समर्चयेत् । विघ्नास्तस्य प्रणश्यंति यथाऽप्सु लवणं तथा ॥ तथा ग्राह्यं कुरुश्रेष्ठ ज्येष्ठायाः शोभनव्रतम् । नीराजने कृते चैव दीपो ग्राह्यः सुभक्तितः ॥ नैवेद्यसहितं प्राश्य व्रती त्वग्रे युधिष्ठिर । गुडहस्तात्सदा ग्राह्यो दीपः प्रज्वलितो महान् ॥ व्रतस्थो भक्तियुक्तश्च शुचिः प्रयतमानसः । अनेन विधिना चैव

१ संपूजनीयेत्यप्पाहारः ।

व्रत कार्यं युधिष्ठिर ॥ ज्येष्ठा नाम परा देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी । यस्तां पूजयते राजन् तस्मै सर्वं प्रयच्छति ॥ इति भविष्ये कथा ॥ ॥
अथ स्कान्दे—। कृष्ण उवाच । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठर्क्षसंयुते। तस्मिन्दिने व्रती कुर्याज्ज्येष्ठायाः परिपूजनम् ॥ तत्राष्टम्यां यदा वारो
भानोर्ज्येष्ठर्क्षमेव च । नीलज्येष्ठेति सा प्रोक्ता दुर्लभा बहुकालिकी ॥ कृतस्नानो नरः कुर्यात्तस्यामन्यत्र वा दिने । भक्तियुक्तः शुचिः कु
र्याज्ज्येष्ठादेव्यास्तु पूजनम् ॥ जलाशयात्तु पूर्वेद्युरानयेत्सप्त शर्कराः ॥ देवीरूपं च तत्रैव कृत्वा वा स्थापयेत्ततः । गोमयेनोपलिप्ते च हैमीं
वा कारयेद्बुधः ॥ स्थापयेद्राजतीं ताम्रीं लेख्या वा पटकुड्ययोः । आवाहयेत्ततो देवीमथवा पुस्तके ऽपि वा ॥ त्रिलोचनां शुक्लदन्तीं बि
भ्रतीं राजतीं तनुम् । विरक्तां रक्तनयनां ज्येष्ठामावाहयाम्यहम् ॥ इतिमंत्रेण तां देवीमावाह्य सुकृती व्रती । स्नान दद्यात्तथा पद्य पाद
योरुभयोर्द्विज ॥ श्रीखण्डकर्पूरयुत दद्यादर्घ्यं च भक्तितः । पंचामृत तथा स्नानं निर्मलेन जलेन च ॥ वस्त्रं गंधं तथा पुष्प धूपदीपादिक
च यत् । पूजयित्वा च सौभाग्यैर्द्रव्यैर्नानाविधैः शुभैः ॥ गोधूमशालितंडुलैर्नानाद्रव्यैश्च निर्मितम् । कृत्वा प्रसृतमात्रास्तु पूरिका घृतपा
चिता ॥ भक्त्या मया सुरेशानि यदन्नं दीयते तव । तद्गृहाण महादेवि ज्येष्ठे श्रेष्ठे नमो ऽस्तु ते ॥ निवेदनीय यत्किञ्चिद्द्यादेभ्ये प्रयत्न
तः । ततः स्तुत्वा महादेवीं सर्वकामफलप्रदाम् ॥ ज्येष्ठायै ते नमस्तुभ्य श्रेष्ठायै ते नमो नमः । ज्येष्ठे श्रेष्ठे तपोनिष्ठे धर्मिष्ठे सत्यवादि-
नि ॥ ततः क्षमाप्य तां देवीं स्तुवीत स्तवनोत्तमैः। ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्सुवासिन्यस्तथा बहु ॥ दास्यो दासाश्च समोज्या दीनान्धकृपणा-
स्तथा। देवीं विप्रमनुज्ञाप्य स्वयं भुंजीत वाग्यतः॥ भक्षयित्वा तथा ऽऽचम्य देवीं नत्वा पुनःपुनः । शयीत ब्रह्मचर्येण कुर्यात्प्रातर्विसर्जनम् ॥ ए-

१ भवार्के ह. नष्टा पूर्वेद्युराहृत्य सिकताः सहसेन वा इति पाठो सि ग्रावारमन्नुतस्य तत्पदे ।

वमेव प्रकुर्याद्वै व्रतं तु परिवत्सरम्। ज्येष्ठाविसर्जनांते तु शर्करां वारिणि क्षिपेत् ॥ दध्योदनं तथा साकं देयं स्वस्य शुभाप्तये। ज्येष्ठे देवि नमस्तुभ्यमलक्ष्मीनाशहेतवे। पुनरेहि वत्सरांते मम गेहे शुभप्रदे ॥ एवं संप्रार्थ्य तां देवीं गीतवाद्यपुरःसरैः। अपूपवटकान्दद्याद्ब्राह्मणेभ्यस्ततो द्विज ॥ कुर्यादेवं प्रयत्नेन सायं वाथ विसर्जयेत्। विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां स्त्रीकामः स्त्रियमेव च ॥ लक्ष्मीवान् जायते मर्त्यः स्त्री तु मोदेत भर्तरि। विनायकेन सहितां देव्याः कुर्याद्विसर्जनम् ॥ सौवर्णीं राजतीं ताम्रीं मृण्मयीं वापि शक्तितः। व्रतं स्वयं च कृतवान् सिद्धं चाप्यकृतार्हणः ॥ देव्या महत्वं कथितं तवेदं विधिश्च मंत्रार्चनसंयुतस्तथा। मंत्रोपि सायुज्यकरो व्रतस्य तथा मया ते कथितं सदैव ॥ ॥ अथोद्यापनम्। यस्याः सिंहो रथे युक्तो व्याघ्रश्चापि महाबलः। ज्येष्ठामहमिमां देवीं प्रपद्ये शरणं शुभाम् ॥तामग्निवर्णां तपसा ज्वलंतीमित्यावाह्य। आपोहिष्ठेतितिसृभिः हिरण्यवर्णेति च तिसृभिरभिषिंचेत् ॥ कृत्वा चाष्टदलं पद्मं स्थापयेत्तत्र स व्रती। नाममंत्रेण कुर्वीत पाद्यमर्घ्यमथासनम्। स्नानमाचमनं चैव मधुपर्कश्च कंचुकी। वस्त्रगंधाक्षताः पुष्पधूपदीपौ प्रयत्नतः ॥ नैवेद्याचमनीयं च करोद्वर्तनकं शुभम् ॥ तांबूलदक्षिणादानं ततो नीराजयेच्छुभाम् ॥ स्थापिते ऽग्नौ ततः पश्चाद्धोममष्टोत्तरंशतम्। द्रव्यैर्दधिमधुक्षीरघृतैः कुर्यात्प्रयत्नतः। तर्पणं च ततः कुर्यादेभिर्मंत्रैर्विचक्षणः ॥ ज्येष्ठायै० श्रेष्ठायै० सत्यायै० कलिनाशिन्यै० विद्यायै० वैनायक्यै० तपोनिष्ठायै० श्रियै० कृष्णायै० ब्रह्मिष्ठायै० ॥ विसृज्य च ततो देवीं ब्राह्मणाय निवेदयेत्। व्रतांते प्रतिमां दद्यात्सौवर्णीं पलसंमिताम् ॥ कृष्णवस्त्रेण संयुक्तामाचार्याय निवेदयेत्। वस्त्राभरणमाल्यादिलेपनैः पूजयेद्द्विजम् ॥ प्रणिपत्य ततः पश्चात्तस्मै सर्वं निवेदयेत्। अनेन विधिना यस्तु ब्राह्मणानां चतुष्टये ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वयं भुंजीत वाग्यतः। ब्राह्मणांश्च ततो नत्वा याचयेत्सर्वमंगलम्। एवं सुवासिनी भोज्याः पूज्याः सर्वसमृद्धये ॥ एवं कृते

व्रते सम्यक् सर्वशांतिः प्रजायते । धनधान्यसमृद्धिश्च आरोग्यं भवति ध्रुवम् ॥ इति श्रीभवि० पु० ज्येष्ठदेवीव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ तत्रैव भाद्रशुक्लाष्टम्यां दूर्वाष्टमीव्रतम् ॥ सा पूर्वा ग्राह्या । श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वाष्टमिर्हुताशनी । पूर्वविद्धा तु कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम् –इति वृद्धयमवचनात् ॥ शुक्लाष्टमी तिथिर्या तु मासि भाद्रपदे भवेत् । दूर्वाष्टमीति विज्ञेया नोत्तरा सा विधीयते–इति हेमाद्रि ॥ मुहूर्ते रौहिणेऽष्टम्यां पूर्वा वा यदि वा परा । दूर्वाष्टमी तु सा कार्या ज्येष्ठां मूलं च वर्जयेत् । इत्युक्तम् ॥ तत्पूर्वत्र ज्येष्ठामूलयोगे कर्मकालव्याप्त्यभावे च द्रष्टव्यम् । दूर्वाष्टमी सदा त्याज्या ज्येष्ठामूलर्क्षसंयुता । तथाच– मासे भाद्रपदे मासि शुक्लाष्टम्यां तु भारत । दूर्वामभ्यर्चयेत्तत्तया ज्येष्ठां मूलं च वर्जयेत् । ऐंद्रर्क्षे पूजिता दूर्वा हंत्यपत्यानि नान्यथा । भर्तुरायुर्हरा मूले तस्मात्तां परिवर्जयेत्–इति मदनरत्ने स्कांदे ॥ शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वासंज्ञा तथाऽष्टमी । सिंहार्के एव कर्तव्या न कन्यार्के कदाचन । सिंहस्थे सोत्तमा सूर्ये ऽनुदिते मुनिसत्तम –इति मदनरत्ने स्कांदोक्तेः ॥ अगस्त्य उदिते तात पूजयेदमृतोद्भवाम् । वैधव्यं पुत्रशोकं च दशजन्मानि पंच च –इति तत्रैव दोषोक्तेः ॥ यदा तु भाद्रशुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदयस्तदा तत्पूर्वं कृष्णाष्टम्यां कार्यम् । शुक्लपक्षाभावे ऽपि पौर्णिमांतमासेन भाद्रपदमात्रलाभात् । यदा तु भाद्रपदो ऽधिकस्तदा सिंहार्के एवेति उदाहृतवचनात् ॥ अधिमासे तु संप्राप्ते नभस्य उदये मुनेः । अर्वागेव व्रतं कार्यं परतो न तु कुत्रचित्–इति निर्णयदीपके ॥ स्कांदाच्चाधिके एव कर्तव्यम् । इदं स्त्रीणां नित्यम् । या न पूजयते दूर्वां मोहादिह यथाविधि । त्रीणि जन्मानि वैधव्यं लभते नात्र संशयः । तस्मात्संपूजनीया सा प्रतिवर्षं वधूजनैः –इति पुराणसमुच्चयात् ।यदा तु ज्येष्ठादिक विनाष्टमी सर्वथा न लभ्यते तदा तत्रैवोक्तम् । कर्तव्या चैकभक्तेन ज्येष्ठामूल यदा भवेत् । ज्येष्ठामभ्यर्चयेत्तत्तया न वंध्य दिवसं नयेत्–इति भविष्योत्तरेऽनुक

ल्पेनानुष्ठानं, नतु सर्वतोलोपः ॥ ॥ अथ दूर्वाष्टमीव्रतं हेमाद्रौ भविष्ये—ब्रह्मन्भाद्रपदे मासि शुक्लाष्टम्यामुपोषितः । पूजयेच्छंकरं भक्त्या यो नरः श्रद्धयान्वितः॥स याति परमं स्थानं यत्र देवस्त्रिलोचनः॥गणेशं पूजयेद्यस्तु दूर्वया सहितं मुने । गणेशः शिवः ॥ फलैश्च सकलैर्दिव्यैर्गंधपुष्पैर्विलेपनैः ॥ दूर्वां पूज्य तथेशानं मुच्यते सर्वपातकैः । शुचौ देशे प्रजातायां दूर्वायां ब्राह्मणोत्तम । स्थाप्य लिंगं ततो गंधैः पुष्पैर्धूपैः समर्चयेत् । खर्जूरैर्नारिकेलैश्च मातुलिंगफलैस्तथा ॥ पूजयेच्छंकरं भक्त्या दूर्वायां विधिवद्द्विज । दध्यक्षतैर्द्विजश्रेष्ठ अर्घ्यं दद्यात्त्रिलोचने ॥ दूर्वाशमीभ्यां संपूज्य मानवः श्रद्धयान्वितः । स वै सुकृतजन्मा स्यात्सर्वदेवैस्तु वंदितः ॥ विद्यां प्राप्नोति विद्यार्थी पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ॥ धर्मानाप्नोति धर्मार्थी कन्यार्थी लभते च ताम् ॥ मनसा यद्यदिच्छेत तत्तदाप्नोति मानवः । य एवं पूजयेद्दूर्वां भूतेशं मानवः फलैः ॥ सप्तजन्मजपापौघैर्मुच्यते नात्र संशयः । कृतोपवासः सप्तम्यमाष्टम्यां पूजयेच्छिवम् ॥ दूर्वासमेतं विप्रेंद्र दध्यक्षतफलैः शुभैः ॥ दूर्वामंत्रः—त्वं दूर्वे ऽमृतजन्मा ऽसि वंदितासि सुरैरपि । सौभाग्यं संततिं देहि सर्वकार्यकरी भव ॥ यथा शाखाप्रशाखाभिर्विस्तृता ऽसि महीतले । तथा विस्तृतसंतानं देहि त्वमजरामरे ॥ तल्लिंगमंत्रैरीशानमर्चयेत्प्रयतः शुचिः । ततः संपूजयेद्विप्रान् फलैर्नानाविधैर्द्विज ॥ अनग्निपक्वमश्नीयादन्नं दधि फलं तथा । अक्षारलवणं ब्रह्मन्नाश्नीयान्मधुनान्वितम् ॥ दद्यात्फलानि विप्रेषु फलहारः स्वयं भवेत् । प्रणम्य शिरसा दूर्वां शिवं शिवमुपाश्नुते ॥ एवं यः कुरुते भक्त्या महादेवस्य पूजनम् । गणत्वं यात्यसौ ब्रह्म मुच्यते ब्रह्महत्यया ॥ एवं पुण्या पापहरा ह्यष्टमी दूर्वसंज्ञिता । चतुर्णामपि वर्णानां स्त्रीजनानां विशेषतः ॥ इति हेमाद्रौ भविष्योक्तदू०व्रतम् ॥ ॥ अथादित्यपुराणे दू०व्रतम् ॥

१ दूर्वारूपिणं शंकरम् ।

तत्र श्रीपूजनमुक्तम् । शुक्लाष्टम्यां तु संप्राप्ते मासि भाद्रपदे तथा । दूर्वा प्रशस्ता शुभेतासुचराख्याभिमानिनी ॥ पूजयेत्तुहमानीय गंधमाल्यानुलेपनैः । फलैर्मूलैस्तथा चैव धूपदीपैश्च पूजयेत् ॥ अनग्निपक्व यत्सर्वं नैवेद्यं च कथंचन । भोक्तव्यं च तथा ब्रह्मन्नग्निपक्वं विसर्जयेत्॥ दूर्वांकुरस्थां संपूज्य प्रतिमां शंकरस्य च । येन स्थिरमायाति यत्र यत्राभिजाते ॥ भविष्योत्तरेषु विशेषः—अष्टम्यां फलपुष्पैश्च खर्जूरैर्नारिकेरकैः । द्राक्षामोदकपिष्टैश्च दाडिमैर्बदरैस्तथा ॥ नारिंगैर्जंबुकैश्चैव तथैव बीजपूरकैः । दध्यक्षतैः सनोमिश्च धूपैरेव सदीपकैः ॥ मंत्रेणानेन राजेंद्र शृणुष्वावहितो नृप । दत्त्वा पिष्टानि विप्रेभ्यः फलं च विविध प्रभो ॥ तिलपिष्टकगोधूमधान्यपिष्टानि पांडव । भोजयित्वा सुहृन्मित्र स्वयं बंधुजनैस्तथा ॥ ततो भुंजीत तच्छेषं स्वयं श्रद्धासमन्वितः । कर्तव्यो चैकभक्तेन ज्येष्ठमूलं यदा भवेत् ॥ दूर्वामभ्यर्चयेद्भक्त्या न वर्ष्यं दिवस नयेत् । पक्षे भाद्रपदस्यैवं शुक्लाष्टम्यां युधिष्ठिर ॥ दूर्वाष्टमीव्रत पुण्यं यः करोतीह मानवः । न तस्य क्षयमाप्नोति संततिः सप्तपौरुषी । नंदते वर्द्धते नित्य यथा दूर्वा तथा कुलम् ॥ इति श्रीदूर्वाष्टमीव्रत संपूर्णम् ॥ ॥ अथ भाद्रशुक्लाष्टमीमारभ्य षोडशदिनपर्यंत महालक्ष्मीव्रतम् ॥ तच्चार्द्धरात्रमतिक्रम्य वर्तिन्यामष्टम्यां कार्यम् ॥ तदुक्तं चंद्रप्रकाशे स्मृत्यंतरे—अर्द्धरात्रमतिक्रम्य वर्तते योत्तरातिथि । तस्यां ज्येष्ठायुतायां प्रारंभः कार्यः । तथाच स्कांदे—मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठायुताष्टमी । प्रारभध्य व्रतं तत्र महालक्ष्म्या यतात्मभिः ॥ तदभावे केवलयामपि कार्यम् । समापनं तु कृष्णाष्टम्यां चंद्रोदयव्यापिन्यां कार्यम् । चंद्रोदयव्रते चैव तिथिस्तात्कालिकी भवेत् । इत्युक्तेः ॥ दिनद्वये चंद्रोदयसत्वे च कृष्णपक्षेऽष्टमी चैवेत्यादिवाक्यात्पूर्वैव । अपरदिने चंद्रोदयोत्तर त्रिमुहूर्ता चेत्परैव । तदुक्तं मदनरत्ने पुराण—

१ दूर्वामवाप्नमिति पाठांतर कचित्पुस्तके दृश्यते, मयात्र विस्तर । २ मागुक्तम संपूर्णेऽपि मंत्रेण । ३ भाद्रपदी कर्तव्येर्थः ।

समुच्चये– पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चंद्रोदये सदा । त्रिमुहूर्ता तु सा पूज्या परतश्चोर्ध्वगामिनी ॥ हेमाद्रौ स्कांदे पूजनम् ॥ आलयं ते हि कथितं कमलं कमलालये । विमले कमले ह्यस्मिन् स्थितिं त्वं कृपाया कुरु । आवाहनम् ॥ कमले पाहि मे देवि स्वर्णसिंहासनं शुभम् । गृहाणेदं मया दत्तं भक्तियुक्तेन चेतसा । आसनम् ॥ गंगादिसलिलाधारं तीर्थमंत्राभिमंत्रितम् । दूरयात्राश्रमहरं पाद्यं मे प्रतिगृह्यताम् । पाद्यम् ॥ तीर्थोदकैर्महादिव्यैः पापसंहारकारकैः । अर्घ्यं गृहाण देवेशि देवानामुपकारिणि । अर्घ्यम् । आचम्य जगदाधारे सिद्धिलक्ष्मि जगत्प्रिये । चपले देवि ते दत्तं तोयं गृह्ण नमोऽस्तु ते । आचमनम् ॥ पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समर्पितम् । स्नानं पंचामृतेनाद्य कुरु देवि दयानिधे । पंचामृतस्नानम् ॥ इदं तव महालक्ष्म्याः कर्पूरागरुवासितम् ॥ तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्र० । स्नानम् ॥ सूक्ष्मतंतुभवं वस्त्रं निर्मितं विश्वकर्मणा । लोकलज्जाहरं देवि गृहाण सुरसत्तमे । वस्त्रम् ॥ कंचुकीम् ॥ नानासौभाग्यद्रव्यम् ॥ मलयाचलसंभूतं घनसारमनोहरम् । शीतलं बहुलामोदं चंदनं प्र० । चंदनम् ॥ नीलोत्पलं महामोदं मत्तालिकुलसंकुलम् । आनंदिनंदनोत्पन्नं पद्मं गृह्ण नमो ऽस्तु ते । पुष्पाणि ॥ अथ नामपूजा ॥ श्रियैन० लक्ष्म्यैन० वरदायैन० विष्णुपत्न्यै० क्षीरसागरवासिन्यै० हिरण्यरूपायै० सुवर्णमालिन्यै० पद्मवासिन्यै० पद्मप्रियायै० मुक्तालंकारिण्यैन० तूर्यायै० चंद्राननायै० विश्वमूर्त्यै० मुक्त्यै० मुक्तिदात्र्यै० ऋद्ध्यै० समृद्ध्यै० तुष्ट्यै० पुष्ट्यै० धनेश्वर्यै० श्रद्धायै० भोगिन्यै० भोगदायै० धात्र्यैन० ॥ गंधसंभारसन्नद्धकस्तूरीमोदसंभवम् । सुरासुरनरानंदि धूपं देवि गृहाण मे । धूपम् ॥ मार्तंडमंडलाखंडचंद्रबिंबाग्नितेजसाम् । निधानं देवि दीपोयं निर्मितस्तव भक्तितः । दीपम् ॥ देवतालयपातालभूतलाधारधान्यजम् । षोडशाकारसंभारं नैवेद्यं ते नमः सदा । नैवेद्यम् ॥ स्नानादिकं विधीयंते यतः शुद्धिः प्रजायते । एतदाच-

मनीयं च महालक्ष्मि विधीयताम् । आचमनीयम् ॥ करोद्वर्तनम् ॥ पातालतलसंभूत वदनांभोजभूषणम् ॥ नानागुणसमाकीर्णं तांबूलं
प्रति० । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ नीराजनम् ॥ शारदेंदुकलाकांतिः स्निग्धनेत्रा चतुर्भुजा । पद्मयुग्मा चाभयदा वरव्यग्र
करांबुजा । पुष्पाञ्जलिम् ॥ विष्णोर्वक्षसि पद्मे च शंखे चक्रे गदाधरे । लक्ष्मीदेवि यथाऽसि त्वं मयि नित्यं तथा भव । प्रार्थना ॥ उत्तार्य
दोरकं बाहोर्लक्ष्मीपार्श्वे निवेदयेत् । लक्ष्मीदेवि गृहाण त्वं दोरकं यन्मया धृतम् ॥ कथां श्रुत्वा सुवर्णं च दत्त्वा ऽऽचार्याय दक्षिणाम् ।
एवं निर्वर्त्य विधिवत्पूजनं चक्रकस्य च । चातुर्वर्ण्यं च संभोज्य यथाशक्त्या च दक्षिणाम् ॥ दीपांश्च षोडशापूपान् गोधूमानां द्विजात-
ये । दत्त्वा तत्सख्यया भुक्त्वा रात्रौ जागरणं चरेत् ॥ चंद्रोदये च संजाते अर्घ्यं दद्याद्व्रती व्रती । मन्त्रेणानेन विप्रेंद्र शङ्खेनांबुफलान्वि
तम् ॥ नमोस्तु ते निशानाथ लक्ष्मीभ्रातर्नमो ऽस्तु ते ॥ व्रतं संपूर्णतां यातु गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ चन्द्रायार्घ्यम् ॥ प्रातर्विसर्जयेद्देवीं
मंत्रेणानेन सुव्रत ॥ पंकज देवि सत्यञ्च मम वेश्मनि संविश । यथा सपुत्रभृत्योऽहं सुखी स्यां त्वत्प्रसादतः ॥ विसर्जनम् ॥ इति पूज
नम् ॥ ॥ अथ कथा ॥ स्कंद उवाच । सौभाग्यजननं स्त्रीणां दौर्भाग्यपरिकृन्तनम् । परमैश्वर्यजननं तद्व्रतं ब्रूहि शंकर १ ईश्वर उवाच ।
साधु साधु महाबाहो यत्पृष्टो ऽहं त्वया ऽनघ । तत्राहं संप्रवक्ष्यामि व्रतानामुत्तमं व्रतम् २ येन चीर्णेन न नरो दुर्गतिं याति कर्हिचि
त् । सुभगा दुर्भगा वापि स्त्रियो वा विधवा गुह ३ अस्ति देव्या व्रतं पुण्यं महालक्ष्म्याः षडानन । नारीणां च नराणां च सर्वदुःखापह
तथा ४ स्कंद उवाच । देव्याश्चरितमाहात्म्यं मर्त्ये केन प्रकाशितम् । विधानं कीदृशं ब्रूहि व्रतस्यास्य महाविभो ५ शंकर उवाच । देवासु-
रमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा । यत्रे सुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ६ तत्र देवैर्महावीर्यैर्नारायणबलाश्रयात् । असुरा निर्जिताः

सर्वे पातालतलमाययुः ७ केचिल्लंकां गताः केचित्प्रविष्टा वरुणालयम् । गिरिदुर्गे समाश्रित्य केचित्तस्थुर्महाबलाः ८ तत्र कोलासुरो नाम महावीर्यो महाबलः । गोमंतं दुर्गमं दुर्गे गिरिमाश्रित्य निर्भयः ९ या राजकन्यका लोके रूपवत्यो महागुणाः । आनीय गिरिदुर्गस्थो रमयामास सर्वशः १० रमयित्वा ऽक्षिपत्तत्र कामरूपी विहंगमः । एतस्मिन्नेव काले तु आगतौ मुनिसत्तमौ ११ श्रुतिप्रभावसंपन्नौ पुलस्त्यो गौतमस्तथा । तीर्थयात्राप्रसंगेन श्रुत्वा वाक्यं जनस्य तत् १२ कोलासुरजयमिति कन्याहेतोः शिखिध्वज । तावूचतुर्जनं सर्वमगस्त्योऽस्ति महामुनिः १३ येन तोयनिधिः पीतो विंध्याचलनिवासिना । वातापील्वलनामानौ दैत्यौ येन विनाशितौ १४ तं गच्छामो वयं सर्वे कोलासुरवधाय च । इत्यामंत्र्य जनाः सर्वे गत्वा तमभिवाद्य च १५ ऊचुः सर्वे यथावृत्तं कोलासुरविचेष्टितम् । तच्छ्रुत्वा भगवानाह मैत्रावरुणिरग्र्यधीः १६ सृष्टिस्थितिविनाशानां कारणं भक्तवत्सलाः । रामस्याद्रौ तपस्यंति ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १७ तिस्रः संध्या मूर्तिमत्यस्तेषां शुश्रूषणे रताः । प्रविश्य ता महालक्ष्मीः शक्तिरूपेण संस्थिता १८ सर्वशक्तियुता देवी लोकानां हितकाम्यया । इत्युक्तास्त्वरितं गत्वा कोलासुरवधाप्तये १९ निवेद्य निखिलं तेभ्यस्तस्थुः प्रांजलयो जनाः । तच्छ्रुत्वा निखिलं तेभ्यो ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः २० संध्यात्रयं समाहूय वाचं प्रोचुर्जनेश्वराः । हनिष्यति महालक्ष्मीर्युद्धे कोलासुरं रिपुम् २१ भगवत्यो मूर्तिमत्यो दंडशूलादिभिर्वरैः । आयुधैर्विविधैः कृत्वा जयमाप्स्यथ संयुगे २२ युष्माकं तु सहायोसौ युष्मत्क्रोधसमुद्भवः । भूतनाथो भूतमन्युर्यः सहायो भविष्यति २३ इत्युक्त्वा त्वरितं गत्वा रुरुधुः कोलराक्षसम् । निरुध्य च पुरीं देव्यो जगर्जुर्जलदस्वनाः २४ भिंदंत्यश्च दिशस्तद्वद्धर्षयंत्यश्च तत्क्रुधम् । कोलासुरोपि तच्छ्रुत्वा प्रोत्पपात महासनात् २५ रोषेण क्रोधताम्राक्षो मेरोरिव मृगांतकः । हस्त्यश्वरथपादातचतुरंगबलान्वितः २६ नि-

ययौ पृतना योद्धुं कालिकाया इवाशनिः । सकुंडलशिरस्त्राणकवचीधृतबाणधिः २७ बद्धगोधांगुलित्राणः क्रुद्धो द्वन्द्व इवापरः । ततो रा क्षससैन्यतद्भूतनाथेन सगतम् २८ देवनारी मनोल्लासि युद्धं चक्रे ऽतिभीषणम् । महारावैर्भीमघोषैर्बाणै र्झंकारनिःस्वनैः २९ गोखरघणां निनादैश्च लोक शब्दमयो ऽभवत् । जयभिंधीति वदतां घावतामितरेतरम् ३० ववृधे समरं घोरं मुष्टामुष्टि कचाकचि । उद्धतो राक्षसबले भूतनाथो महाबलः ३१ ममर्द राक्षसानीकं शरवर्षैश्च दारुणैः । हत दृष्ट्वाऽसुरबल क्रुद्धः कोल्हासुरो रणे ३२ अभिद्रुत्य गदापाणिस्ताड यामास भैरवम् । ययौ मूर्च्छां महावीर्यस्तेनाभिहतमस्तकः ३३ ततो देव्योऽतिवेगेन ह्यभिदुद्रुवुरुद्धते । त्रिशूलैरभिजघ्नुस्त पट्टिशैश्च व्य घातयन् ३४ मुष्टिभिस्ताडयामासुर्नखैश्चाभिव्यदारयन् । पादघातैः समाजघ्नुः सिंहः करिवर यथा ३५ सकुंडलशिरस्त्राणो दष्टोष्ठो रक्त लोचनः । कृतभ्रुकुटिवक्त्रो ऽसौ राक्षसस्तां मुहुर्मुहुः ३६ गदया ताडयामास शिरः कंठांसकुक्षिषु । बभञ्जुस्तां गदां तास्तु हसत्यस्ता म दाकुलाः ३७ ततो धनुर्धरो भूत्वा बाणजालमवाकिरत् । तासां शरीरमर्माणि भिंदञ्छरपुरोगमैः ३८ ननाद वज्रवैरोसौ हृदय चाभि नच्छुरे । ततः क्रुद्धतरास्तास्तु पादेन जगृहुर्भृशम् ३९ आकाशे भ्रामयित्वा तां चिक्षिपुर्गगने क्रुधा । कोल्हासुरोपि पतितो यावदुत्था तुमिच्छति ४० तावन्निर्मथ्य लक्ष्मीस्तं पादाभ्यां मत्यपीडयत् । तत्पादपीडितो दैत्यो विवृत्य नयने भृशम् ४१ मुक्तकंठस्वन कृत्वा त तो मोहमुपेयिवान् । ततो देवाः सगन्धर्वा मनुष्या ऋषयोऽस्तुवन् ४२ देवनाथाश्च देव्यश्च ननृतुः समुदाकुलाः । देवदुंदुभयो नेदुः पु ष्पवृष्टिः पपात ह ४३ दिशः प्रसेदुर्भस्तो ववुर्मंदरव जगत् । सुरासुरशिरोरत्नापीडितांघ्रिसरोरुहाः ४४ देव्यो दिव्येन यानेन यांति को

१ देवतारिमहोस्थमितीत्यपरः पाठः कस्मिंश्चित्पुस्तके दृश्यते ।

लापुरं प्रति । आयांतीं पद्मजां वीक्ष्य मुक्तपादविशृंखलः ४५ तुष्टाव परया भक्त्या राजकन्यागणो मुदा ४६ राजकन्या ऊचुः । वंदारु-
वीरसुरवृंदकिरीटरत्नरोचिच्छटानिकरकल्पितरत्नदीपम् । देवि त्वदीयचरणं शरणं जनानां सेवामहे सकलमंगलवर्धनाय ४७ उत्फुल्लकैरव-
दलायतलोचनायै गंडोल्लसच्चटुलकुंडलमंडितायै । राकाशशिप्रतिभटाननकोमलायै तस्यै नमः कमललोचनवल्लभायै ४८ सद्भक्तकल्पल-
तिकां करिकंठभूषां केयूरहेमकटकोज्ज्वलकंकणांकाम् । संसारसागरसुखे पततो ममाद्य देहि त्वदीयकरयष्टिमनंगमातः ४९ दृष्ट्वा देवि ज-
ना जयाय विविधा ब्रह्माधिपत्यं गता विष्णुर्वक्षसि यां चकार तरलां लीलाब्जमालाभ्रमम् । केशाग्रप्रहितं त्वदीयचरणद्वंद्वाब्जसेवारतं का-
रुण्यामृतसारपूरितदृशामामंब पाहीश्वरि ५० मल्लीप्रफुल्लकुसुमोज्ज्वलमध्यभागधम्मिल्लभारजिततारकवृंदशोभाम् । उत्तप्तहेमनिकषोज्ज्वलका-
यकांतिर्लक्ष्मीः स्वयं प्रणमतां श्रियमातनोति ५१ इति स्तुत्वा महालक्ष्मीं भक्तानामिष्टदायिनीम् । योगिन्योऽद्य भविष्यध्वमिति तासां
वरं ददौ ५२ दृष्ट्वा तास्तु मुदा देवी सारूप्यं च प्रदापयत् । ताभिर्निषेविता देवी वरं वर्यं ददौ मुदा ५३ राजकन्यास्ततः सर्वा मुक्ताः
स्वपुरमाययुः । ततःप्रभृति लोकेषु पूज्याः स्युः सर्वकामदाः ५४ ताश्चतुःषष्टियोगिन्यो महालक्ष्मीपरिग्रहात् । नृत्यंति निवहैस्तत्र गी-
तवादित्रनिःस्वनैः ५५ पुरा देव्या महालक्ष्म्या करहाटपुरे निशि । एवंप्रभावा सा देवी विष्णुरामा षडानन ५६ व्रतस्यास्य विधानं च
शृणु मत्तो विधानतः । मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठायुताष्टमी । प्रारब्धव्यं व्रतं तत्र महालक्ष्म्या यतात्मभिः ५७ करिष्यामि व्रतं देवि
त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः । तदविघ्नेन मे यातु समाप्तिं त्वत्प्रसादतः ५८ इत्युच्चार्य ततो बध्वा दोरकं दक्षिणे करे । षोडशग्रंथिसहितं गुणैः षो-
डशभिर्युतम् ५९ ततोऽन्वहं महालक्ष्मीं पूजयेन्नियतात्मवान् । गंधपुष्पैः सनैवेद्यैर्यावत्कृष्णाष्टमीदिनम् ६० तस्मिन्दिने तु संप्राप्ते कु-

र्योद्यापन व्रती । चद्रमंडपिकां कृत्वा माल्याभरणशोभिताम् ६१ त्रिमूर्मि कांचनश्लक्ष्णां नानादीपैश्च शोभिताम् । चतस्रः प्रतिमाः
कृत्वा सौवर्णीस्तत्स्वरूपिणीः ६२ स्नपनं कारयेच्चासां पंचामृतविधानतः । षोडशैरुपचारैश्च धूपदीपादिभिस्तथा ६३ जागरं तत्र कर्तव्यं गी
तवादित्रनिस्वनैः । ततो निशीथे संप्राप्ते ऽभ्युदिते ऽमृतदीधितौ ६४ कृत्वा तु स्थंडिले पद्मं षडंगं पूजयेत्ततः । दद्यादर्घ्यं च रागेण व्रती
तस्मै समाहितः ६५ क्षीरोदार्णवसंभूत चंद्र लक्ष्मीसहोदर । पीयूषधाम रोहिण्या सहितो ऽर्घ्यं गृहाण वै ६६ क्षीरोदार्णवसंभूते कमले कमला
लये । प्रयच्छ सर्वकामान्मे विष्णुवक्षःस्थलाशये ६७ पुत्रान्देहि यशो देहि सौख्यं सौभाग्यमेव च । कालिकालि महाकालि विकरालि न
मोस्तु ते ६८ त्रैलोक्यजननि त्राहि वरदे भक्तवत्सले । एकनाथे जगन्नाथे जमदग्निप्रिये ऽनघे ६९ रेणुके त्राहि मां देवि राममातः शिवं कुरु ।
कुरु स्थिरं महालक्ष्मि हरिप्रिय त्वाशु नाशय ७० मंत्रैरेतैर्महालक्ष्मीं प्रार्थ्य श्रोत्रिययोषितम् । श्रीसूक्तेन तथा वह्नौ पद्मानि जुहुयाच्छुचिः ७१
पायसं चैव बिल्वानि तदलाभे तथा घृतम् । ग्रहेभ्यश्चैव होतव्यं समिच्चरुतिलादिकम् ७२ चंदनं तालपत्रं च पुष्पमालादिकं तथा । नवे शरावे
भक्ष्याणि क्षिप्त्वा बहुविधानि च ७३ प्रत्येकं षोडशैतानि पूगपूर्णानि चैव हि । तान्यन्येनैः समाच्छाद्य व्रती दद्यात्समन्त्रकम् ७४ क्षीरो
दार्णवसंभूता लक्ष्मीश्चंद्रसहोदरी । व्रतेनानेन संतुष्टा प्रीयतां विष्णुवल्लभा ७५ इंदिरा प्रतिगृह्णाति इंदिरा वै ददाति च । इंदिरा तारको
भाभ्यामिंदिरायै नमो नमः ७६ दद्यादुपायनादीनि श्रोत्रियाणां च योषिताम् । चतस्रः प्रतिमास्तास्तु ब्राह्मणाय निवेदयेत् ७७ एवं
कृत्य तु निर्वर्त्य व्रती भोजनमाचरेत् ७८ स्कंद उवाच । केनेदं स्वीकृतं पूर्वं कथमस्मिन्प्रकाशितम् । ब्रूहि मे तत्त्वतो देव यथाहं तव

१ शरावः मृन्मयविशेषः । अत्र, नवे सूर्ये इत्यपि पाठः । २ सूर्येण शरावेण वेष्टयेत् ।

वल्लभः ७९ शंकर उवाच । आसीद्राजा सार्वभौमो मंगलार्णे इति श्रुतः । कौंडिण्ये नगरे रम्ये तस्य पद्मावती प्रिया ८० तमागतः क-
श्चिदेकः सेवको ब्राह्मणोत्तमः । अज्ञातनाम्नस्तस्यासौ नाम चक्रे नृपस्तदा ८१ तवल्लक इति ख्यातो बभूव द्विजसत्तमः । कदाचिन्मृग-
या सक्तो भूपालो वनमाविशत् ८२ तत्र विध्वा वराहादीन्मृगान्हत्वा सहस्रशः । क्षुत्तृट्परिगतः श्रांतो वृक्षमूलमुपाश्रितः ८३ उदका-
न्वेषणे चारान्प्रेषयामास सर्वशः । वने जलं तु नापश्यन् क्वचिच्छ्रांतः प्रयत्नतः ८४ ते नत्वा नृपतिं प्रोचुर्नात्रांभ इति दुःखिताः । तव-
ल्लकोपि बभ्राम विपिनं तदतंद्रितः ८५ भ्रममाणस्तदा ऽपश्यत्कस्मिँश्चिद्वनगह्वरे । रम्यं सरोवरं दिव्यं कुमुदोत्पलमंडितम् ८६ तत्राप-
श्यद्देवकन्या दिव्यरूपमनोरमाः । चार्वंगीश्चारुनयनाः पीनोन्नतपयोधराः ८७ हारकंकणकेयूरनूपुरालंकृताः शुभाः । पूजयंतीर्महालक्ष्मीं
व्रतरूपेण चादरात् ८८ तवल्लकोपि पप्रच्छ किमिदं कथ्यतामिति ॥ स्त्रिय ऊचुः । महालक्ष्मीव्रतमिदं सर्वकामफलप्रदम् ८९ क्रियते
ऽस्माभिरेकाग्रमनोभिस्तत्तु भक्तितः । तवल्लको ऽपि तच्छ्रुत्वा व्रतं जग्राह भक्तिमान् ९० तदनुज्ञां गृहीत्वा च जलमादाय सत्वरः ।
आजगाम जलं तस्मै दत्त्वा प्राञ्जलिना ऽऽस ह ९१ जलं पीत्वा नृपस्तस्य दृष्टवान्दोरकं करे । किमिदं दोरकं विद्वन् किं व्रतं कृतवान-
सि ९२ राज्ञा पृष्टस्तवल्लोपि कथयामास तद्व्रतम् । तच्छ्रुत्वा राजशार्दूलो व्रतं जग्राह भक्तिमान् ९३ तवल्लकेन सहितो राजा स्वपुरमा-
ययौ । पद्मावत्या गृहं गत्वा तया रंतुं गतः सह ९४ रममाणाथ सा देवी तेन राज्ञा प्रियेण वै । तं दृष्ट्वा दोरकं हस्ते कुपिता ऽत्यंत-
कोपना ९५ कया त्वं वंचितो ब्रूहि कया बद्धं सुदोरकम् । मा वादीरन्यथा ह्येतल्लक्ष्मीव्रतमनुत्तमम् ९६ इत्युक्तापि प्रियेणासौ हस्ताच्चि-

१ देवकन्याभ्यो व्रतं जग्राहेत्यर्थः ।

च्छेद दोरकम् । ज्वालामालाकुले मह्यौ चिरस्त्यतिकोपिता १७ हाहाकष्टमिदं पापं कृतं मूढतया त्वया । इति निर्भर्त्स्य तां राजा तत्याज धनगह्वरे १८ सा च हानिं ययौ पश्चात्तत्र हानिं ययौ नृपः । महालक्ष्म्यापचारेण सा ऽरण्ये जलवर्जिते ९९ मृगमाणा वने तस्मिन्न कश्चिन्नतिमाप्नुयात् । विचरंती वने तत्र ऋषेः कस्यचिदाश्रमम् १०० ददर्श मृगसंकीर्णं शांवकृष्णमृगान्वितम् । तत्रापश्यद्वने रम्ये वसिष्ठं मुनिपुंगवम् १ ववंदे चरणौ तस्य विसंज्ञा दुःखकर्शिता । चिरं ध्यात्वा मुनिस्तस्या ज्ञातवान्दुःखकारणम् २ महालक्ष्म्यापचारेण ज्ञातं विज्ञानचक्षुषा । तद्व्रतं कारयामास तस्या दुःखोपशांतये ३ तद्दुःखं तत्क्षणादेव विनष्टमभवत्तदा । पुनश्च मृगया सक्तो भूपालो वनमाविशत् ४ कश्चिन्मृगं समाविध्य बाणेनैकेन चाहुमान् । अन्वगच्छन्मृगपदं तस्यां भुवि यदा गतः ५ वरं मुनिं ददर्शाग्रे वसिष्ठं वीतकल्मषम् । कृतातिथ्यक्रियो दृष्ट्वा चरतीं चहिरंतिके ६ हावभावकटाक्षैश्च हरंतीं हरिणेक्षणाम् । मदान्निर्गत्य नृपतिः प्रोवाच सस्मितं वचः ७ रंभोरु कासि कल्याणि किमर्थं चरसे वने । किन्नरी मानुषी वा त्वं यक्षिणी चारुहासिनि ८ किमत्र बहुनोक्तेन भजमानं भजस्व माम् । नृपेण तेन मत्त्योक्ता सस्मिता वाक्यमब्रवीत् ९ पुनर्भजामि चाहं त्वामवेहि महिषी तव । महालक्ष्म्यापचारेण त्वया हीना वसाम्यहम् १० मुनींद्रस्याश्रमे रम्ये तरुगुल्मोपशोभिते । ममोपरि कृपाविष्टो महालक्ष्मीव्रतोत्तमम् १११ कारयामास विधिवत्सर्वविघ्नोपशांतये । तयोक्तं वचनं श्रुत्वा स चोत्फुल्लविलोचनः १२ ऋषेरनुज्ञामादाय प्रियामादाय सत्वरः । हृष्टपुष्टजनैर्जुष्टं पताकाध्वजशोभितम् । प्रविवेश तया सार्धं सपौरैरभिवंदितः १३ महालक्ष्मीव्रतं भूयस्तया सह चकार ह । भुक्त्वेह भोगान्विपुलान्पुत्रपौत्रसमावृतः १४ भूपालः सार्वभौमो ऽभवन्न्त्ये ऽमात्यतां ययौ । महालक्ष्म्याः प्रसादेन सन्निधिः सर्वसंपदाम् १५ एवंप्रभावा सा देवी नराणा

मिष्टदायिनी । सर्वपापहरा देवी सर्वदुःखापहारिणी १६ एवं षोडशवर्षं तु कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् । या करिष्यति मे प्रीत्या स्वयं सिद्धिमुपासते १७ लोकपालाश्च तुष्यंति दासा इव मनोरथान् १८ नारी वा पुरुषः करिष्यति मुदा भक्त्या व्रतं यत्नतः सेवंते हरिरुद्रपद्मजसुराः कुर्वंति तस्य प्रियम् । तत्पादं परिरंजयंति मनुजा मौलिप्रभामंडलैस्तस्मिन्नेव कुटुंबिनी वसति सा लक्ष्मीः स्वयं विष्णुना १९ सुभक्त्या ऽप्यभक्त्या वा कुर्वंति व्रतमुत्तमम् । अंतकाले च तान्विष्णुः संसारात्परिरक्षति १२० य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः । न संत्यजति तं लक्ष्मीरलक्ष्मीर्नैव जायते ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते १२१ ॥ इति स्कांदोक्तमहालक्ष्मीव्रतकथा ॥ ॥ अथ भविष्यपुराणोक्ता कथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । स्वस्थानलाभपुत्रायुःसर्वैश्वर्यशुभप्रदम् । व्रतमेकं समाचक्ष्व विचार्य पुरुषोत्तम १ कृष्ण उवाच । दुर्वारे चैव दैत्येंद्रे परिव्याप्तत्रिविष्टपे । एतदेव कृतस्यादौ देवेंद्रः प्राह नारदम् २ तस्य श्रुत्वा ततो वाक्यं स मुनिः प्रत्यभाषत ॥ नारद उवाच । पुरंदर पुरा पूर्वं पुरमासीत्सुशोभितम् ३ रत्नगर्भा ऽभवद्भूमिर्यत्र रत्नाढ्यभूधराः । यत्रांगनाजनापांगभ्रंगलोचनसायकैः ४ त्रैलोक्यं स्ववशं चक्रे देवः कुसुमसायकः । ५ चतुर्वर्गजनिर्यत्र तच्च विश्वस्य भूषणम् । विश्वकर्मापि यद्वीक्ष्य कंपयत्यनिशं शिरः ६ तत्राभवन्महापालो राजाऽभून्मंगलालयः । चिल्लदेवी प्रिया तस्य दुर्भगैका बभूव ह । अन्या तु चोलदेवी या महिषी सा यशस्विनी ७ कदाचिन्मंगलो राजा चोलदेवीसहायवान् ॥ प्रासादशिखरारूढः स्थलीमेकामपश्यत ८ तामालोक्य महीपालः स्मरस्मेरमुखांबुजः । चोलदेवीं प्रति प्राह दंतद्योतितदिङ्मुखः ९ चंचलाक्षि तवोद्यानं कांतिनिंदितनंदनम् । कारयामि तयोद्दिष्टस्तत्रोद्यानमकारयत् १० संपन्नं तु तदुद्यानं नानाद्रुमलतान्वितम् । नानाफलसमायुक्तं नानापक्षिसमावृतम् ११ तत्रागत्य महाक्रोडस्तनुन्यस्तनभस्थलः । प्रावृट्कालघनश्यामश्चक्षु-

राक्षसवचलं १२ दृष्ट्वरूपसंप्राप्तः प्रलयांभोधरध्वनिः । उद्यानं भंजयामास नानाद्रुमलतान्वितम् १३ कांश्चिदुत्पाटयामास पादपान्पादमर्दन । कांश्चिद्दंतप्रहारेण कांश्चिद्धतप्रघर्षणैः १४ जघान कांश्चित्पुरुषान्नक्षकानंतकोपमः । तच्छ्रुत्वेति विज्ञाय सहत्योद्यानपालका १५ सभयास्तस्य वृत्तांतमूचुश्च नृपतेः पुरः । तदाकर्ण्य ततो राजा क्रोधारुणितलोचनः १६ वधाय दंष्ट्रिणस्तस्य संदिदेशाखिलं बलम् । ततश्चचाल भूपालश्चीगडग लितैर्गजैः १७ आप्लावयन्महीं सर्वां वाजिवृंदधुताम्बरः । चालयन्सकलान् शैलान् स्यदनौघमरुद्रवैः १८ पदातिभिर्महोदारैः पूरयन्निखिला दिशः । ततो गाढं समावृत्य तदुद्यानं नरेश्वरः १९ उवाचोच्चैरतिध्यानैर्दिशो मुखरयन्दश । पथि यस्य वराहो ऽप्य भयात्युपवनांतरम् २० तस्यावश्य शिर श्छेदं विदधामि रिपोरिव । तस्य भूपस्य तद्वाक्यं समाकर्ण्य स सूकरः २१ जगामास्यैव मार्गेण प्राणिनां चेष्टितं तथा । ततः स सूकरासक्तः कशया ऽश्व प्रताड्य च २२ क्रीडाकलकितस्वेदो मार्गं तस्यैव सो ऽगमत् । गत्वा ऽथ विपिनं घोरं सिंहशार्दूलसंकुलम् २३ तमालतालहिंतालशालार्जुनलतान्वितम् । झिल्लीझंकारसंरावाच्छादितदिगंतरम् २४ तत्रैकचेताः संपश्यन्वने बभ्राम भूपतिः । कोलो वेलामवाप्याथ सो ऽभवद्राजसंमुखः । महेन सोऽवधीत्कोलं वज्रेणाद्रिं यथा हरिः २५ अथ व्योम्नि विमानस्थः स्मरसुंदरविग्रहः । क्रोडरूपं परित्यज्य सो ऽब्रवीन्ममलं नृपम् २६ गंधर्व उवाच । स्वस्ति ते ऽस्तु महीपाल त्वया मुक्तिः कृता मम । समाकर्णय वृत्तांतं येनाहं जात ईदृशः २७ एकदा देवतावृंदैः संवृतः कमलासनः । चंचत्पुटादिभिस्तालैः पदार्थैः सप्तभिः स्वरैः २८ मंद्रादिभिस्त्रिभिर्मार्गैर्गीयमानं मया नृप । नानास्थानगुणोपेतमथोपगीतमुत्तमम् २९ गीयमानश्च्युतः स्थानात्ततोऽहं कर्मणा ऽमुना । शप्तश्चित्ररथस्त्वेन ब्रह्मणा सु

१ महिमिरपर्क ।

ष्टिकर्मणा ३० ब्रह्मोवाच । कोलो भव त्वं मेदिन्यां मुक्तिस्ते ऽस्तु तदा भवेत् । निर्जिताखिलभूपालो मंगलस्त्वां हनिष्यति ३१ तदद्य घटितं सर्वं त्वत्प्रसादान्महीपते । मद्गृहाण वरं भूप देवस्यापि सुदुर्लभम् ३२ महालक्ष्मीव्रत दिव्यं चतुर्वर्गफलप्रदम् । लभस्व सार्वभौमत्वं गच्छ राज्यं निजं द्रुतम् ३३ नारद उ० । चित्ररथो ऽथ गंधर्व उक्त्वेदं भूपतिं प्रति । अंतर्धानं गतस्तुष्टः शरत्काल इवांबुदः ३४ अथ मंगलभूपालः पार्श्वस्थं द्विजमागतम् । विलोक्य बटुकं कञ्जिलकक्षानिक्षिप्तशंबलम् ३५ ॥ उवाच मधुरां वाचं स्मितपूर्वां शुचिस्मिताम् । देवस्त्वं दानवस्त्वं वा गंधर्वो वा ऽथ राक्षसः ३६ सत्यं वद बटो कस्मात्किमर्थं त्वमिहागतः । श्रुत्वेत्याशिष्य तं विप्रः प्राह त्वद्देशसंभवः ३७ अहं सार्द्धं त्वया यातस्तदादिश यथोचितम् । राजा ऽथ तमुवाचेदं त्वं बटो नूतनाह्वयः ३८ अपास्थानं विलोक्य त्वं तूर्णं तोयं ममानय । अथ विश्रम्य भूपालं बटुको वटपादपे ३९ तथाकृत्य तुरंगं च समारुह्य महामतिः । जगाम पक्षिघोषेण यत्रास्ते सुदरं सरः ४० कमलैकनिवासेन रथांगाभरणेन च । वनमालालयत्वेन दधन्नारायणीं तनुम् ४१ भग्नवायुशतोद्योगमक्षारं विषवर्जितम् । नाशितागस्तितृष्णार्तिं प्रसन्नं सागराधिकम् ४२ पंके मग्नो ऽथ तत्राश्वः पृष्ठादुत्तीर्य तस्य सः । चतुर्दिशं निरीक्ष्याथ तस्यैव सरसस्तटे ४३ दिव्यवस्त्रपरीधानं दिव्याभरणभूषितम् । कथयंतं कथां दिव्यां स्त्रीणां सार्थमपश्यत ४४ उपसृत्याथ तं सार्थं स्ववृत्तांतं निवेद्य च । कृतांजलिरिति प्राह बटुर्मधुरया गिरा ४५ बटुरुवाच । एतत्किं क्रियते सार्थ त्वया भक्तिपरेण वै । को विधिः किं फलं चास्य ब्रूहि तन्मे यथातथम् ४६ श्रुत्वा च तमुवाचेदं सार्थः करुणया गिरा ॥ सार्थ उवाच । शृणु विप्रैकचित्तेन श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ४७ या माया प्रकृतिः शक्तिस्त्रैलोक्ये ऽप्यभिधीयते । व्रतमेतन्महालक्ष्म्यास्तस्याः सर्वफलप्रदम् ४८ आकर्णय विधिं चास्य कथ्यमानं मया बटो । भाद्रे मासि

सिताष्टम्यामारंभो ऽस्य विधीयते ४९ प्रातः षोडशकृत्वस्तु प्रक्षाल्यांघ्री करौ मुखम् । तंतुषोडशसंसिद्धं ग्रंथिषोडशसंयुतम् ५० मालतीपुष्पकर्पूरचंदनागरुचर्चितम् । लक्ष्म्यै नमो ऽथ मंत्रेण प्रतिग्रथ्याभिमंत्रितम् ५१ धनं धान्यं धरां धर्मं कीर्तिमायुर्यशः श्रियम् । तुरगान्दंतिनः पुत्रान्महालक्ष्मि प्रयच्छ मे ५२ मंत्रेणानेन बध्वा ऽथ दोरकं दक्षिणे करे । कांडानि षोडशादाय दूर्वायाः साक्षतानि च ५३ एकचित्तः कथां श्रुत्वा पूजयेत्तं च दोरकम् । ततस्तु प्रातरारभ्य यावत्स्यादसिताष्टमी ५४ तावत्प्रक्षाल्य हस्तौ तु पादादीनि कथां तथा । शृणुयात्प्रत्यहं विप्र ततस्त्वेरक्षतादिभिः ५५ अथ कृष्णाष्टमीं प्राप्य नक्तकाले जितेंद्रियः । स्नातः शुक्लांबरधरो व्रती पूजागृहं विशेत् ५६ तत्रोपविश्य पूर्वास्यश्चारुधौतासनोपरि । श्वेतपत्रं लिखेदष्टदलं कमलमुत्तमम् ५७ ऐंद्यादिशक्तिसंयुक्तं पार्श्वे पत्रं सकेसरम् । कर्णिकायां ततो लक्ष्मीं कर्पूरक्षोदपांडुराम् ५८ शुभ्रवस्त्रपरीधानां मुक्ताभरणभूषिताम् । पंकजासनसंस्थानां स्मेराननसरोरुहाम् ५९ शारदेंदुकलाकांतिं स्निग्धनेत्रां चतुर्भुजाम् । पद्मयुग्मामभयदां वरव्यग्रकरांबुजाम् ६० अभितो गजयुग्मेन सिच्यमानां करांबुना । सर्पिस्त्वेवं लिखेद्देवीं कर्पूरागरुचंदनैः ६१ ततस्त्वावाहनं कुर्यान्मंत्रेणानेन सुव्रती ६२ महालक्ष्मि समागच्छ पद्मनाभपदादिह । पंचोपचारपूजेयं त्वदर्थं देवि कल्पिता ६३ षोडशाहे तु संपूर्णे कुर्यादुद्यापनं व्रती । विधिना येन विप्रेंद्र शृणु श्रद्धासमन्वितः ६४ दातव्या धेनुरेका वै स्वर्णशृंगादिसंयुता । श्रोत्रियाय सुवर्णं च तथा च वसनादिकम् ६५ यथाशक्त्या सुवर्णं च दत्त्वा पूर्णं भवेद्व्रतम् । द्विजेभ्यः षोडशेभ्यश्च प्रदद्याद्वसनादिकम् ६६ सार्थ उवाच । एतत्ते कथितं विप्र व्रतानामुत्तमं व्रतम् । तद्विधानादनायासाल्लभते वांछितं फलम् ६७ कृत्वा व्रतं परं विप्र त्वं राज्ञा तच्च कारय । व्रतमेतत्त्वया विप्र

१ तावत्पूर्वाभ्यर्च्यैरितपर्वः

देयं श्रद्धावते परम् ६८ नास्तिकानां पुरस्तात्तु न प्रकाश्यं कथंचन । नमस्कृत्वा ऽथ तं सार्धं पंकादुत्थाप्य वाजिनम् ६९ सरसोभस्त-
थादाय पद्मिनीपत्रयंत्रितम् । आरुह्य तुरगं विप्रो राजांतिकमुपागमत् ७० निवेद्य तद्व्रतं विप्रो राजानमथ कारयत् । नानाप्रकारसंभूतं
माबलं बटुकस्य च ७१ व्रतप्रभावादभवत्स भूभृद्भूभृतांवरः । अथारुह्य महीपालो बटुपर्याणितं हयम् ७२ तद्व्रतस्य प्रभावेण तूर्णं स्व-
पुरमागतः । तमायांतं समालोक्य राजानं भूपुरंदरम् ७३ उत्सवं चक्रिरे पौरास्तौर्यादिकपुरःसराः । चलत्पताकदोर्मालं लसत्कलशमौ-
लिकम् ७४ पुरं नृत्यदिवाभाति छन्नघंटौघघर्घरैः । अथोत्कलिकया काचिद्धावति स्म वरांगना ७५ स्वर्णमुक्तालताजालैश्चतुष्कमिव कुर्व-
ती । काचिद्विमुक्तकेशैव कृतैकनयनांजसा ७६ काचिन्नितंबभारार्ता काचित्पीनपयोधरा । अथाविशन्महीपालो बटुना सहितो गृहम् ७७
पौरनारीजनाक्षिप्तलाजैः पूरितविग्रहः । अथोत्तीर्य हयात्तस्माद्बटुबाह्ववलंबितः ७८ जगाम मंगलो राजा चोलदेवी तु यत्र वै । दृष्ट्वा
तु चोलदेवी सा दोरकं राजबाहुके ७९ विमृश्य मनसा क्रुद्धा शंकां चक्रे नृपे त्विमाम् । आखेटकस्य व्याजेन गतो ऽन्यां
वल्लभां प्रति ८० सौभाग्याय तया बद्धो दोरको दक्षिणे करे । तथैव बटुकश्चायं द्रष्टुं मां प्रेषितो ध्रुवम् ८१ ततो दुर्दैवदुष्टात्मा
कोपादाच्छिद्य दोरकम् । चिक्षेप च महीपृष्ठे स्वसौभाग्यं सुखैः सह ८२ न बुबोध च तां राजा त्रोटयंतीं च दोरकम् । सामंतमंत्रिभृ-
त्याद्यैः कुर्वन्वार्तां वनोद्भवाम् ८३ चिल्लदेव्यास्तदा काचिद्दासी द्रष्टुं समागता । तया दोरकमादाय बटुमापृच्छ्य तद्व्रतम् ८४ तद्व्रतस्य विधा-
नार्थं स्वस्वामिन्यै निवेदितम् । ततो नूतनमाहूय चिल्लदेव्यकरोद्व्रतम् ८५ अथ संवत्सरे ऽतीते लक्ष्मीपूजादिने नृप । तौर्यत्रिकस्य निःस्वानं

१ तूर्यादिवाद्यपुरःसराः । २ आखेटकस्य व्याजेन मृगयाया व्याजेन ।

चिल्लदेव्या गृहेऽशृणोत् ८६ तदाकर्ण्य महीपालो नूतनं वहुमब्रवीत् । अहहाथ दिन लक्ष्म्याः स व्रतस्य क दोरकः ८७ इति पृष्टो नृप प्राह
दोरकत्रोटनक्रमम् । तच्छ्रुत्वा मगलो राजा चोलदेव्ये प्रकुप्य च ८८ मयाद्य पूजन कार्य चिल्लदेवीगृह प्रति । अथ मगलभूपालो वहुशाह
वलन्वितः ८९ चचाल कमलाचार्ये चिल्लदेवीगृह प्रति । अत्रांतरे महालक्ष्मीर्वृद्धारूपं विधाय च ९० जिज्ञासार्थं गृह तस्याश्चोलदेव्याः समाग-
ता । गच्छ गच्छाथ दुष्टे किमिहागत्य करोषि मे ९१ तया दुराशयात्यर्थं लक्ष्मीः साऽप्यवमानिता । ततः क्रुद्धा महालक्ष्मीश्चोलदेवीममापत ९२
शशापाथ महालक्ष्मीश्चोलदेवीं पुनःपुन ९३ लक्ष्मीरुवाच । कोलस्या भव दुष्टे त्व यस्त्वया ह्यवमानिता । कोलापुरमिति ख्यात क्षितौ
तन्मगल पुरम् ९४ अथायाता महालक्ष्मीश्चिल्लदेवीनिकेतनम् । बहुधा चिल्लदेव्या सा लक्ष्मीः संमानिता ऽर्चिता ९५ वृद्धारूप परित्य
ज्य प्रत्यक्षा सा ऽभवत्तदा । पचोपचारपूजाभिः श्रिय राज्ञी ततोऽर्चयत् ९६ अतितुष्टा ततो लक्ष्मीश्चिल्लदेवीमुवाच ह ९७ लक्ष्मीरुवा-
च । अर्चनात्ते प्रसन्नास्मि चिल्लदेवि वर वृणु । वव्रे वर ततो राज्ञी चिल्लदेवी शुभाशया ९८ चिल्लदेव्युवाच । ये करिष्यति ते देवि व्रत-
मेतत्सुरेश्वरी । तद्देरम न त्वया त्याज्यं यावच्चद्रदिवाकरौ ९९ अथारभ्य तदा शेषा भूपसंबंधिनी तथा । ख्यातिं यातु क्षितौ देवि भ-
क्तिर्भवतु मे त्वयि १०० सद्भावेन कथामेतां ये शृण्वति पठंति च । तेषां च वांच्छित सर्वं त्वया देयं सदैव हि १ तथेत्युक्त्वा महाल
क्ष्मीस्तत्रैवांतरधीयत । अथ मगलभूपालस्तथागत्य श्रियो ऽर्चनम् २ चक्रे परमया भक्त्या चिल्लदेव्या समन्वितः । अथेर्ष्यया दुराचारा
चिल्लदेवीगृहं प्रति ३ चोलदेवी समायाता द्वारस्थैर्वारिता जनैः । ततो जगाम विपिन यत्रासीदगिरामुनिः ४ अथालोक्याद्भुताकारा ज्ञान-
दृष्ट्या विचिंत्य ताम् । मुनिस्तु श्रीव्रतं दिव्य चोलदेवीमकारयत् ५ व्रते कृते ऽथ सजाता चोलदेवी महायशाः । दाक्षिण्यकेलिलीला

भिल्लीवर्ण्यैकनिकेतनम् ६ ततः कदाचिदागत्य वनमाखेटके नृपः । मुनेर्वेश्मनि राजा तां ददर्श वामलोचनाम् ७ अथ राजा मुनिं प्राह केयं धन्येति कथ्यताम् । तद्वृत्तांतं समाख्याय राज्ञे तां प्रददौ मुनिः ८ अथागत्य निजं राज्यं चोलदेवी समन्वितः । चिल्लदेव्या च सहितो बुभुजे मंगलो नृपः ९ चिल्लदेवी वरं वव्रे चोलदेवीसमागमम् । समुद्रस्य यथा गंगायमुने संगते सदा १० तथा मंगलभूपस्य जाते ते वामलोचने । परस्पराधिके ते तु प्रिये मान्ये बभूवतुः ११ चिल्लदेव्या समं सोऽथ चोलदेव्या सहाखिलाम् । सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं बुभुजे मंगलो नृपः १२ व्रतस्यास्यैव सामर्थ्याद्वटुकः सोऽपि नूतनः । अभून्मंगलभूपस्य मंत्री तव यथा गुरुः १३ भुक्त्वाऽथ स कलान् भोगान् मंगलो भूभुजांवरः । स पुनः स्वर्गमेत्याभून्नक्षत्रं विष्णुदैवतम् १४ नारद उवाच । एतत्ते कथितं शक्र व्रतानामुत्तमं व्रतम् । यत्कथाश्रवणेनापि लभते वांछितं फलम् १५ प्रयागमिव तीर्थेषु देवेषु भगवानिव । नदीषु च यथा गंगा व्रतेष्वेतत्तथा व्रतम् १६ धर्मं चार्थं च कामं च मोक्षं च यदि वांछसि । तर्हीदं च व्रतं शक्र कुरु श्रद्धासमन्वितः १७ धनं धान्यं धरां धर्मं कीर्तिमायुर्यशः श्रियम् । तुरंगान्दंतिनः पुत्रान्महालक्ष्मीः प्रयच्छति १८ कृष्ण उवाच । व्रतमिदमथ चक्रे नारदेनोपदिष्टं सुरपतिरपि यस्माद्वाञ्छितार्थं स लेभे । त्वमपि कुरु तथैतद्धर्मसूनो यथा स्यादभिमतफलसिद्धिः पुत्रपौत्रादिवृद्धिः ११९ ॥ इति श्रीभवि० महालक्ष्मीव्रतकथा सं० ॥ ॥ अथ आश्विनशुक्लाष्टमी महाष्टमी ॥ तत्राष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञविनाशिनी । प्रादुर्भूता महाघोरा योगिनीकोटिभिर्वृता ॥ देवीपुराणे— सप्तमीवेधसंयुक्ता यैः कृता तु महाष्टमी । पुत्रदारधनैर्हीना भ्रमंतीह पिशाचवत् ॥ शरज्जन्माष्टमी पूज्या नवमीसंयुता सदा । सप्तमीसंयुता नित्यं शोकसंतापकारिणी ॥ जंभेन सप्तमीयुक्ता पूजिता च महाष्टमी । इंद्रेण निहतो जंभस्तस्यां दानवपुंगवः । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सप्तमी-

सहिताऽष्टमी । वर्जनीया प्रयत्नेन मनुष्यैः शुभकांक्षिभिः ॥ सप्तमी कलया यत्र परतश्चाष्टमी तथा । तेन शल्यमिदं प्रोक्तं पुत्रपौत्रक्षयप्रदम् ॥ पुत्रान् हन्ति पशून्हन्ति राष्ट्रं हन्ति सराजकम् । हन्ति जानपदांश्चापि सप्तमीसहिताष्टमी ॥ शुक्लपक्षे ऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी । पूर्वविद्धा न कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता ॥ अत्र त्रिमुहूर्तन्यूना सत्यपि सप्तमीवर्जनप्रयोजिका नतु त्रिमुहूर्तैव॥ सप्तमीस्वल्पसंयुक्ता वर्जनीया,स दा ऽष्टमी । स्तोकापि सा तिथिः पुण्या यस्यां तु भास्करोदयः ॥ नवमीयुक्ताया अलाभे तु सप्तमीयुतैव कार्या ॥ उपवास महाष्टम्यां पुत्रवान्न समाचरेत् ॥ सप्तशत्यास्तु पाठेन तोषयेज्जगदंबिकाम् ॥ ॥ अथाश्विनकृष्णाष्टम्यामशोकाष्टमीव्रतम् ॥ हेमाद्रावादित्यपुराणे-ऽश्विनस्यासिते पक्षे पूजनीया ह्यशोकिका । गंधमाल्यनमस्कारधूपदीपैश्च सर्वदा ॥ तस्मिन्नहनि या भुक्ते नक्तमिंदुविवर्जिते । भवत्य विशोका सा यत्र यत्राभिजायते ॥ पूर्वाष्टमीषु सर्वासु न चेच्छक्नोति वै मुने । प्रौष्ठपद्यामतीतायां या स्यात्कृष्णाष्टमी युता ॥ तत्र सार्वं व्रतं त्वेतत्सर्वकामफलप्रदम् ॥ इत्यशोकाष्टमी ॥ ॥ अथ मार्गशीर्षकृष्णाष्टम्यां काशीखंडे कालभैरवस्य पूजोक्ता ॥ मार्गशीर्षासिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ । उपोष्य जागरं कुर्वन्सर्वपापैः प्रमुच्यते -इति काशीखंडात् ॥ रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्तव्या संमुखीतिथिः -इ-ति मदनरत्नाच्च ॥ दिनद्वयेंऽशतो रात्रिव्याप्तौ उत्तरैव । भैरवोत्पत्तिः प्रदोषकालव्याप्ताविति केचित् । तत्र शिवरहस्ये मध्याह्ने भैरवोत्पत्तेश्च श्रवणात् । तत्र नित्यपानादिकं कृत्वा मध्याह्ने सस्थिते रवावित्युपक्रम्योक्तम् ॥ तदोग्ररूपान्नयनात्ततः श्रीकालभैरव । आविरासीत्तदा लोका भीषणस्मिताननिभाम्भति ॥ कृत्वा च विविधां पूजां महासंभारविस्तरैः । नरो मार्गासिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्नमुत्सृजेत् ॥ तीर्थे कालो-दके स्नात्वा तर्पणं विधिपूर्वकम् । विलोक्य कालराजानं निरयादुद्धरेत्पितॄन् । इति ॥ ॥ अथ कृष्णाष्टमीव्रतम् ॥ सूत उवाच । व्रता

नि च प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिपुंगवाः । तत्र कृष्णाष्टमी पुण्या सर्वपापप्रणाशिनी १ विष्णुत्वं प्राप्तवान् विष्णुः सुरेशत्वं शचीपतिः । कुबे-
रो यक्षराजत्वं नियंतृत्वं यमः स्वयम् २ चंद्रश्चंद्रत्वमापन्नो गणेशत्वं गणाधिपः । स्कंदः सेनापतित्वं च तथा चान्ये गणेश्वराः ३ कृत्वा
चैश्वर्यमापन्नाः सौभाग्यं देववल्लभाः । व्रतस्यास्य प्रभावेण लक्ष्म्याः पतिरभूद्धरिः ४ ययातिः सार्वभौमत्वं तथा चान्ये नृपोत्तमाः । ऋषयो मु-
नयः सिद्धगंधर्वाणां च कन्यकाः ५ कृत्वा वै परमां सिद्धिं प्राप्ताश्च मुनिपुंगवाः । नंदीश्वरेण यत्प्रोक्तं नारदाय महात्मने ६ कृष्णाष्ट-
मीव्रतं श्रेष्ठं सर्वकामफलप्रदम् । मेरोर्यद्दक्षिणं शृंगं सुरासुरनमस्कृतम् ७ तत्र नंदीश्वरं दृष्ट्वा सर्वज्ञं शंभुवल्लभम् । उपास्यमानं मुनि-
भिः स्तूयमानं मरुद्गणैः ८ सर्वानुग्रहकर्तारं स्तुत्वा तु विविधैः स्तवैः । अब्रवीत्प्रणिपत्याथ दंडवन्नारदो मुनिः ९ नारद उवाच । भगव-
न् सर्वतत्त्वज्ञ सर्वेषामभयप्रद । केन व्रतेन भगवंस्तपोवृद्धिः प्रजायते १० सौभाग्यं कांतिरैश्वर्यमपत्यं च यशस्तथा । शाश्वती मुक्तिरंते
च कर्मपाशविमोचनी ११ भगवंस्तद्व्रतं ब्रूहि कारुण्याच्छंकरप्रिय ॥ नंदिकेश्वर उवाच । कृष्णाष्टमीव्रतं श्रेष्ठमस्ति नारद तच्छृणु १२
गणेशत्वं मया लब्धं येन पुण्येन भो मुने । मासि मार्गशिरे प्राप्ते कृष्णाष्टम्यां जितेंद्रियः १३ अश्वत्थदंतकाष्ठेन कृत्वा वै दंतधावनम् ।
स्नानं कृत्वा तु विधिवत्तर्पणं चैव नारद १४ आगत्य भवनं चैव पूजयेच्छंकरं प्रभुम् । गोमूत्रं प्राश्य विधिवदुपवासी भवेन्निशि १५ अतिरात्रस्य
यज्ञस्य फलं चाष्टगुणं भवेत् । सर्पिषः प्राशनं पौषे दंतकाष्ठं च तत्स्मृतम् १६ पूजयेच्छंभुनामानं भगवंतं महेश्वरम् । वाजपेयाष्टकं पुण्यं प्रा-
प्नोति श्रद्धयान्वितः १७ माघे वटस्य काष्ठं च गोक्षीरप्राशने स्मृतम् । महेश्वरं सुसंपूज्य गोमेधाष्टगुणं फलम् १८ फाल्गुने चैतदेवोक्तं

१ देववल्लभाः देवस्त्रियः । २ अत्र, व्रतमित्यध्याहारः । ३ पूर्वमासोक्तम् । ४ पूर्वश्लोकोक्तं वटस्य दंतकाष्ठमित्यर्थः ।

सर्पिषः प्राशन च यव । सपूजयेन्महादेवं राजसूयाष्टक फलम् १९ काष्ठमौदुंबरं चैत्रे प्राशने भर्जिता यवाः । पूजयेच्छमुनामानमश्वमेध-
फलं लभेत् २० शिवं संपूज्य वैशाखे पीत्वा चैव कुशोदकम् । नारमेधाष्टक पुण्य प्राप्नोत्येव हि नारद २१ ज्येष्ठे प्लाक्षं भवेत्काष्ठ संपू
ज्य पशुपतिं विभुम् । गवां शृंगोदक प्राश्य स्वपेद्देवस्य सन्निधौ २२ गवां कोटिप्रदानस्य तत्फल तदवाप्नुयात् । आषाढे चोग्रनामान
भिक्षा समाश्य गोमयम् २३ सौत्रामणेस्तु यज्ञस्य फलमष्टगुण भवेत् । पालाश श्रावणे प्रोक्त शर्वं सपूज्य नारद २४ प्राशयित्वाऽर्क
पत्राणि कल्प शिवपुरे वसेत् । मासे भाद्रपदे ऽष्टम्यां त्र्यबक समपूजयेत् २५ प्राशन विल्वपत्रस्य सर्वदीक्षाफलं लभेत् । आश्विने ज
म्बुरक्षस्य दंतकाष्ठमुदीरितम् २६ ईश्वर पूजयेद्भक्त्या प्राशयेत्तण्डुलोदकम् । पौंडरीकस्य यज्ञस्य फलमष्टगुण भवेत् २७ मासे तु कार्तिके
ऽष्टम्यामीशानाख्य प्रपूजयेत् । पंचगव्य सकृत्पीत्वा अग्निष्टोमफल लभेत् २८ उद्यापन च वर्षांते प्रकुर्याद्भक्तितत्परः । विरच्य लिंग
तोभद्र पूजयेत्सर्वदेवता २९ वितान तत्र बध्नीयात्पचवर्ण सुशोभनम् । आचार्यं वरयित्वा च ऋत्विजो रुद्रसयुताम् ३० सुवर्णप्रतिमां
तत्र वृषभ रजतस्य च । कलशे पूजयित्वा च रात्रौ जागरमाचरेत् ३१ प्रभाते च पुन पूज्यमग्निस्थापनमाचरेत् । हुनेदष्टशत चैव ति
लद्रव्य घृतप्लुतम् ३२ त्र्यबकेन च मंत्रेण गौर्याश्चैव पृथक्पृथक् । वर्षांते भोजयेद्धिमान् शिवभक्तिसमन्वितान् ३३ पायस घृतसयुक्त म
धुना च परिप्लुतम् । शक्त्या हिरण्यवासांसि भक्त्या तेभ्यो निवेदयेत् ३४ देवाय चापि दद्यात्न वितानं ध्वजचामरम् । कृष्णां पयस्विनीं
गां सघण्टाकंदुकवाससीम् ३५ सरत्ना तत्र कलशीमलकृत्य च नारद । अलकार च वस्त्र च दक्षिणां च स्वशक्तितः ३६ भक्त्या प्रणम्य

१ प्रभाति पूर्वोक्त औदुंबर दंतकाष्ठम् । २ प्रभ, प्लाक्ष दंतकाष्ठम् । ३ श्रावणमासोक्त । पालाश काष्ठम् । ४ प्रभाति जाम्बकाष्ठम् ।

विधिवदाचार्याय निवेदयेत् । करोत्येवं व्रतं पुण्यं वर्षमेकं निरंतरम् ३७ महापातकनिर्मुक्तः सर्वैश्वर्यसमन्वितः । कल्पकोटिशतं साग्रं शिवलोके महीयते ३८ कृष्णाष्टमीव्रतं सम्यग्देवर्षे कथितं मया । यदुक्तं देवदेवेन देव्यै विश्वसृजा पुरा ३९ सूत उवाच । एवं नंदिश्वराच्छ्रुत्वा नारदो मुनिपुंगवः । कृष्णाष्टमीव्रतं पुण्यं ययौ बदरिकाश्रमम् ४० व्रतस्यास्य प्रभावं यः पठेद्वा शृणुयादपि । स याति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥ ४१ ॥ इति श्रीआदित्यपु० कृष्णाष्टमीव्रतं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ॥ ६ ॥ इत्यष्टमीव्रतानि समाप्तानि ॥ ॥

॥ अथ नवमीव्रतानि लिख्यंते ॥ ॥ तत्र चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतम् ॥ इदं च परविद्धायां मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यम् । तदुक्तमगस्त्यसंहितायाम्–। चैत्रशुद्धा तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि । सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत् ॥ दिनद्वये ऋक्षयोगे मध्याह्नव्याप्तावेकदेशव्याप्तौ वा परा ऽन्यथा पूर्वा । तदुक्तं तत्रैव– नवमी चाष्टमी विद्धा त्याज्या विष्णुपरायणैः । उपोषणं नवम्यां वै दशम्यां पारणं भवेत् ॥ चैत्रमासे नवम्यां तु जातो रामः स्वयं हरिः । पुनर्वस्वृक्षसंयुक्ता सा तिथिः सर्वकामदा ॥ श्रीरामनवमी प्रोक्ता कोटिसूर्यग्रहाधिका । केवलापि सदोपोष्या नवमीशब्दसंग्रहात् । तस्मात्सर्वात्मना सर्वैः कार्यं वै नवमीव्रतम् ॥ अथागस्त्यसंहितायां तत्रैव, चैत्रे नवम्यां प्राक्पक्षे दिवा पुण्ये पुनर्वसौ । उदये गुरुगौरांशे स्वोच्चस्थे ग्रहपंचके ॥ मेषे पूषणि संप्राप्ते लग्ने कर्कटकाह्वये । आविरासीत्स कलया कौसल्यायां परं पुमान् ॥- प्राक्पक्षे शुक्लपक्षे, उदये लग्ने, गुरुगौरांशे गुरुनवांशे ॥ तस्मिंन्दिने[1] तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा । तत्र जागरणं कुर्याद्रघुनाथपरो भुवि ॥-भुवि इति खट्वादिव्यावृत्त्यर्थम् ॥ प्रातर्दशम्यां कृत्वा तु संध्याद्याः कालिकाः क्रियाः । संपूज्य वि-

१ तस्मिन्दिने रामजन्मदिने । अतःपरं रामप्रतिमादानोद्यापनविधिरुक्तइति ज्ञेयम् ।

विप्राग्रं भक्त्या वित्तानुसारतः ॥ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या दक्षिणाभिश्च तोषयेत् । गोभूतिलहिरण्याद्यैर्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ राम भक्त्या प्रयत्नेन पूजयेत्परया मुदा । एव य कुरुते भक्त्या श्रीरामनवमीव्रतम् । अनेकजन्मसिद्धानि पातकानि बहून्यपि ॥ भस्मीकृत्वा व्रजत्येव तद्विष्णोः परमं पदम् । सर्वेषामप्ययं धर्मो भुक्तिमुक्त्येकसाधनः ॥ अशुचिर्वापि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम् । पूज्यः स्यात्सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः ॥ यस्तु रामनवम्यां वै भुंक्ते स च नराधमः । कुंभीपाकेषु घोरेषु पच्यते नात्र संशय ॥ अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वव्रतोत्तमम् । व्रतान्यन्यानि कुरुते न तस्य फलभाग्भवेत् ॥ रहस्यानि च पापानि प्रख्यातानि बहून्यपि । महांति च प्रणश्यंति श्रीरामनवमीव्रतात् ॥ एकामपि नरो भक्त्या श्रीरामनवमीं मुने । उपोष्य कृतकृत्यः स्यात्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ नरो रामनवम्यां तु श्रीरामप्रतिमाप्रदः । विधानेन मुनिश्रेष्ठ संमुक्तो नात्र संशयः ॥ सुतीक्ष्ण उवाच । श्रीरामप्रतिमादानं विधानं वा कथं मुने । कथयस्व मुनिश्रेष्ठ भक्तस्य मम विस्तरात् ॥ अगस्त्य उवाच । कथयिष्यामि तद्विद्वन्प्रतिमादानमुत्तमम् । विधानं चापि यत्नेन यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः । अष्टम्यां चैत्रमासे तु शुक्लपक्षे जितेंद्रिय ॥ दंतधावनपूर्वं तु प्रातः स्नायाद्यथाविधि । नद्यां तडागे कूपे वा ह्रदे प्रस्रवणेऽपि वा । ततः संध्यादिकाः कार्या संस्मरन्राघवं हृदि ॥ गृहमासाद्य विप्रेंद्र कुर्यात्पूजादिकं परम् । दांतं कुटुंबिनं विप्रं वेदशास्त्रपरं मुदा ॥ श्रीरामपूजानिरतं सुशीलं दंभवर्जितम् । विधिज्ञं राममंत्राणां राममंत्रैकसाधनम् ॥ आहूय भक्त्या संपूज्य प्रार्थयेत्प्रार्थयन्निति ॥ श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येऽहं द्विजोत्तम । भक्त्याचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोसि त्वमेव च ॥ इत्युक्त्वा पूज्य विप्रेंद्र स्नापयित्वा ततःपरम् । तैलेनाभ्यज्य च स्नायार्चितपन्राघवं हृदि । तैलेनाभ्यज्य स्नापयित्वेत्यन्वयः ॥ श्वेतांबरधरः श्वेतगंधमाल्यानि धारयेत् । अर्चितो भूषितश्चैव कु

तमध्याह्निकक्रियः ।-आर्चितः कृतार्चनः ॥ आचार्यं भोजयेद्भक्त्या सात्विकान्नैः सविस्तरम् । भुंजीत स्वयमप्येवं हृदि राममनुस्मरन् ॥ एकभक्तव्रती तत्र सहाचार्यो जितेंद्रियः । शृण्वन्रामकथां दिव्यामहःशेषं नयेन्मुने ॥ सायंसंध्यादिकाः कुर्यात्क्रिया राममनुस्मरन् । आचार्यसहितो रात्रावधःशायी जितेंद्रियः ॥ वसेत्स्वयं न चैकांते श्रीरामार्पितमानसः ॥ ततः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा संध्यां यथाविधि । प्रातः सर्वाणि कर्माणि शीघ्रमेव समापयेत् ॥ ततः स्वस्थमना भूत्वा विद्वद्भिः सहितोऽनघ । स्वगृहस्योत्तरे देशे द्वारस्योत्तरमंडपम् । स्वगृहसमीपे ॥ चतुर्द्वारं पताकाढ्यं सुवितानं सुतोरणम् ॥ मनोहरं महोत्सेधं पुष्पाद्यैः समलंकृतम् । शंखचक्रहनूमद्भिः प्राग्द्वारे समलंकृतम् । गरुत्मच्छार्ङ्गबाणैश्च दक्षिणे समलंकृतम् । गदाखड्गांगदैश्चैव पश्चिमे सुविभूषितम् ॥ पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेरे समलंकृतम् । मध्ये हस्तचतुष्कायं वेदिकायुक्तमायतम् ॥ प्रविश्य नृत्यगीतैश्च वाद्यैश्चापि सुसंयुतम् । पुण्याहं वाचयेत्तत्र विद्वद्भिः प्रीतमानसः ॥ ततः संकल्पयेद्देवं राममेव स्मरन्मुने । अस्यां रामनवम्यां च रामाराधनतत्परः । उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि ॥ इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां च प्रयत्नतः । श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते ॥ प्रीतो रामो हरत्वाशु पापानि सुबहूनि मे । अनेकजन्मसिद्धानि अभ्यस्तानि महांति च ॥ विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपरि सुंदरम् ॥ मध्ये तीर्थोदकैर्युक्तं पात्रं संस्थाप्य चार्चितम् ॥ सौवर्णे राजते ताम्रे पात्रे षट्कोणमालिखेत् । ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां पलमात्रतः ॥ निर्मितां द्विभुजां दिव्यां वामांकस्थितजानकीम् । बिभ्रतीं दक्षिणकरे ज्ञानमुद्रां महामुने ॥ वामेनाधःकरेणेशां देवीमालिंग्य संस्थिताम् । सिंहासने राजतेऽत्र पलद्वय विनिर्मिते ॥ पंचामृतस्नानपूर्वं वामां संपूज्य विधिवत्ततः । मूलमंत्रेण नियतो न्यासपूर्वमतंद्रितः ॥ दिवैवं विधिवत्कृत्वा रात्रौ जागरणं

तत । दिव्या रामकथा श्रुत्वा रामभक्तैः समन्वितः ॥ नृत्यगीतादिभिश्चैव रामस्तोत्रैरनेकधा । रामाष्टकैस्तथा पूजा गंधपुष्पाक्षतादि-
भिः ॥ कर्पूरागरुकस्तूरी कल्हाराद्यैरनेकधा । पूजयेद्विधिवद्भक्त्या दिवारात्रिं नयेद्बुध ॥ ततः प्रात समुत्थाय स्नानसंध्यादिकाः क्रियाः ।
समाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने ॥ ततो होमं प्रकुर्वीत मूलमंत्रेण मंत्रवित् । पूर्वोक्तपद्मकुण्डे वा स्थण्डिले वा समाहित ॥ लौकि
कामौ विधानेन शतमष्टोत्तरं ततः । आज्येन पायसेनैव स्मरन् राममनन्यधी ॥ ततो भक्त्या सुसंतोष्य आचार्यं पूजयेन्मुने । कुण्डलाभ्यां
सरत्नाभ्यामङ्गुलीयैरनेकधा ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैः सुमनोहरैः । ततो राम स्मरन्दद्यादेवमंत्रमुदीरयेत् ॥ इमां स्वर्णमयीं राम प्रतिमां
समलंकृताम् । चित्रवस्त्रयुगच्छन्नां रामोऽहं राघवाय ते । श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघव ॥ इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां
पुनः । अन्येभ्यश्च यथान्याय गोहिरण्यादिशक्तित ॥ दद्याद्दासीयुग धान्य यथाविभवमादृत । ब्राह्मणैः सह भुञ्जीत तेभ्यो दद्याश्च
दक्षिणाम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः । तुलापुरुषदानानि फल प्राप्नोति सुव्रतः ॥ अनेकजन्मससिद्धपापेभ्यो
मुच्यते ध्रुवम् । बहुना किमिहोक्तेन मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ॥ कुरुक्षेत्रे महापुण्ये सूर्यपर्वण्यशेषतः । तुलापुरुषदानाद्यैः कृतैर्यल्लभ्यते
फलम् ॥ तत्फल लभते मर्त्यो दानेनानेन सुव्रती । इति रामप्रतिमादानोद्यापनविधिः ॥ ॥ अथ रामपूजा ॥ आचम्य प्राणानायम्य
मासपक्षाद्युल्लिख्य, सकलपापक्षयकामः श्रीरामप्रीतये रामनवमीव्रतमहं करिष्ये तदङ्गत्वेन रामपूजां करिष्ये । तथा राममन्त्रेण पञ्चगव्या
सं कलशार्चनं च करिष्य इति सकल्प्य । फलपुष्पाक्षतसहितं जलपूर्णताम्रपात्र गृहीत्वा ॥ उपोष्य नवमीं त्वद्य यामेष्वष्टसु राघव ।
तेन प्रीतो भव त्वं मे संसारात्त्राहि मां हरे । इति मन्त्रेण पात्रस्थं जल क्षिपेत् ॥ ततः शक्तितः हैमीं रामप्रतिमां कृत्वा अग्न्युत्तारण

पूर्वकम् कपोलौ स्पृष्ट्वा मूलमंत्रं प्रणवादिचतुर्थ्यंतं नाम रामायदेवत्वंसंख्यायस्वाहेति मंत्रं पठन्प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ततः । कोमलाक्षं विशालाक्षमिंद्रनीलसमप्रभम् । दक्षिणांगे दशरथं पुत्रावेक्षणतत्परम् । पृष्ठतो लक्ष्मणं देवं सच्छत्रकनकप्रभम् । पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ तालवृंतकरावुभौ । अग्रेऽव्यग्रं हनूमंतं रामानुग्रहकांक्षिणम् । इति ध्यात्वा षोडशोपचारैः पूजयेत् । आवाहयामि विश्वेशं जानकीवल्लभं प्रभुम् । कौसल्यातनयं विष्णुं श्रीरामं प्रकृतेःपरम् । ॐसहस्रशीर्षा० । आवाहनम् ॥ श्रीरामागच्छ भगवन् रघुवीर नृपोत्तम । जानकीसह राजेंद्र सुस्थिरो भव सर्वदा । रामचंद्र महेष्वास रावणांतक राघव । यावत्पूजां समाप्येऽहं तावत्त्वं सन्निधौ भव । इतिसन्निधापनम् ॥ रघुनायकराजर्षे नमो राजीवलोचन । रघुनंदन मे देव श्रीरामाभिमुखो भव । इति संमुखीकरणम् ॥ राजाधिराज राजेंद्र रामचंद्र महीपते । रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो । ॐपुरुषएवेदं० । आसनम् ॥ त्रैलोक्यपावनानंत नमस्ते रघुनायक ॥ पाद्यं गृहाण राजर्षे नमो राजीवलोचन । ॐएतावानस्य० । पाद्यम् ॥ परिपूर्ण परानंद नमो रामाय वेधसे । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृष्ण विष्णो जनार्दन । त्रिपादूर्ध्व० । अर्घ्यम् ॥ नमः सत्याय शुद्धाय नित्याय ज्ञानरूपिणे । गृहाणाचमनं नाथ सर्वलोकैकनायक । ॐतस्माद्विरा० । आचमनीयम् ॥ नमः श्रीवासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे । मधुपर्कं गृहाणेदं जानकीपतये नमः । ॐयत्पुरुषेण० । मधुपर्कम् ॥ पंचामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु । शर्करामधुसंयुक्तं राम त्वं प्रतिगृह्यताम् । पंचामृतस्नानम् ॥ शुद्धोदकेन स्नानम् ॥ पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं निर्माल्यं विसर्जयेत् ॥ ब्रह्माण्डोदरमध्यस्थैस्तीर्थैश्च रघुनंदन । स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या त्वं गृहाण जनार्दन ॥ पुरुषसूक्तेन स्नानम् ॥ तप्तकांचनसंकाशं पीतांबरमिदं हरे । संगृहाण जगन्नाथ रामचंद्र नमोस्तु ते । तंयज्ञं० । वस्त्रम् ॥ श्रीरामाच्युत य-

द्रेश श्रीधरानत राघव । ब्रह्मसूत्र सोत्तरीय गृहाण रघुनदन । ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःस० । यज्ञोपवीतम् ॥ कुंकुमागरुकस्तूरिकर्पूरं चदनं तथा । तुभ्य दास्यामि राजेंद श्रीराम स्वीकुरु प्रभो । ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः० । गंधम् ॥ अक्षताः परमा दिव्या० । अलंकारार्थे अक्षतान् ॥ तुलसीकुंदमंदारजातीपुन्नागचंपकैः । कदंबकरवीरैश्च कुसुमैः शतपत्रकैः ॥ नीलांबुजैर्बिल्वपत्रैरर्चयेद्राघव विभुम् । पूजयिष्याम्यहं भक्त्या सगृहाण जनार्दन । ॐतस्मादश्वा० । पुष्पाणि ॥ अथांगपूजा ॥ श्रीरामचंद्रायन० पादौपूजयामि । राजीवलोचनाय० गुल्फौ पू० । रावणांतकाय० जानुनी० । वाचस्पतये० ऊरू० । विश्वरूपाय० जंघे० । लक्ष्मणाग्रजाय० कटी० । विश्वमूर्तये० मेंढ्र० । विश्वामित्रप्रियाय० नाभिं० । परमात्मनेन० हृदय० । श्रीकंठाय० कंठ० सर्वास्त्रधारिणेन० बाहू० । रघूद्वहाय० मुख० । पद्मनाभाय० जिह्वां० । दामोदराय० दंता पू० । सीतापतये० ललाट० । ज्ञानमय्याय० शिरःपू० । सर्वात्मनेन० सर्वांग० पूजयामि ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः । रामचंद्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । ॐयत्पुरुषव्यद० । धूपम् ॥ ज्योतिषांपतये तुभ्य नमो रामाय वेधसे । गृहाण दीपकं चैव त्रैलोक्यतिमिरापह । ॐब्राह्मणोस्य० । दीपम् ॥ इदं दिव्यान्नममृतं रसैः षड्भिः समन्वितम् । रामचंद्रेश नैवेद्य सीतेश प्रति० । ॐचंद्रमामनसो० । नैवेद्यम् ॥ ततः आचमनीयम् । इदंफल० । फलम् ॥ नागवल्लीदलैर्युक्त पूगीफलसमन्वितम् । तांबूल गृह्यतां राम कर्पूरादिसमन्वितम् । तांबूलम् ॥ हिरण्यगर्भ० । दक्षिणाम् ॥ नाभ्याआसी० । प्रदक्षिणाम् ॥ नृत्यैर्गीतैश्च वाद्यैश्च पुराणपठनादिभिः । पूजोपचारैरखिलैः सतुष्टो भव राघव ॥ मंगलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे ॥ सगृहाण जगन्नाथ रामचंद्र नमोस्तु ते । नीराजनम् ॥ नमो देवाधिदेवाय रघुनाथाय शार्ङ्गिणे । चिन्मयानतरूपाय सीतायाः पतये नमः ॐ यज्ञेनयज्ञ० । मंत्रपुष्पां-

प्रदक्षिणाम् ॥अशोककुसुमैर्युक्तं रामायार्घ्यं
जलिम् ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च । तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे । प्रदक्षिणाम् ॥अशोककुसुमैर्युक्तं रामायार्घ्यं
निवेदयेत् । दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥ राक्षसानां वधार्थाय दैत्यानां निधनाय च । परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः॥ गृ-
हाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ । इत्यर्घ्यम् ॥ इति पूजनम् । अथ कथा अगस्त्य उवाच । रहस्यं कथयिष्यामि सुतीक्ष्ण मुनिस-
त्तम । चैत्रमासे नवम्यां तु शुक्लपक्षे रघूत्तमः॥ प्रादुरासीत्ततो ब्रह्मन्ब्रह्मानंदैककेवलः । तत्र जागरणं कुर्याद्रामस्य पुरतो बुधः ॥ प्रतिमायां
यथाशक्ति पूजा कार्या यथाविधि । प्रातर्दशम्यां स्नात्वैव कृत्वा संध्यादिकाः क्रियाः ॥ संपूज्य विधिवद्रामं भक्त्या वित्तानुसारतः । ब्राह्मणा-
न्भोजयेत्सम्यग्दक्षिणाभिश्च तोषयेत् ॥ गोभूतिलहिरण्याद्यैर्वस्त्रालंकारभूषणैः । रामं भक्त्या प्रयत्नेन प्रीणयेत्परया मुदा ॥ एवं यः कुरुते भ-
क्त्या श्रीरामनवमीव्रतम् । अनेकजन्मजातानि पापानि सुबहूनि च ॥ भस्मीभवंति पापानि याति विष्णोः परंपदम् । सर्वेषामप्ययं
धर्मो भुक्तिमुक्त्यैकसाधनः ॥ अशुचिर्वापि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम् । पूज्यः स्यात्सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः ॥ यस्तु रामनवम्यां
वै भुंक्ते स तु नराधमः । कुंभीपाकेषु घोरेषु पतत्येव न संशयः ॥ अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वोत्तमं व्रतम् । व्रतान्यन्यानि कुरुते न ते-
षां फलभाग्भवेत् ॥ महांत्यपि प्रणश्यंति पापानि नवमीव्रतात् । एकामपि ततो भक्त्या श्रीरामनवमीव्रती ॥ उपोष्य कृतकृत्यः स्यात्स-
र्वपापैः प्रमुच्यते । ततो रामनवम्यां तु श्रीरामप्रतिमापरः । विधानेन नरश्रेष्ठः स मुक्तो नात्र संशयः ॥ सुतीक्ष्ण उवाच । श्रीरामप्रतिमादा-
नं विधानं वा कथं मुने । कथयस्व यथा रामभक्तस्य मम विस्तरात् ॥ अगस्त्य उवाच । कथयिष्यामि ते भक्त्या प्रतिमादानमुत्तमम् । विधानं

१ अत्र रामनवमीविषये विशेषो निर्णयसिन्धौ द्रष्टव्यः ।

वापि यत्नेन यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः ॥ अष्टम्यां चैत्रमासे तु शुक्लपक्षे जितेंद्रियः । दंतधावनपूर्वं तु प्रातः स्नात्वा यथाविधि । नद्यां तडागे कूपे वा ह्रदे प्रस्रवणे ऽपि वा । संध्यादिकाः क्रियाः कुर्यात्संस्मरन्राघवं हृदि ॥ गृहमागत्य विप्रेंद्र कुर्यादौपासनादिकम् ॥ दांत कुटुंबिन विप्रं वेदशास्त्रविदांवरम् । श्रीरामपूजानिरत शुचिं दंभविवर्जितम् । सर्वज्ञ राममंत्राणां राममंत्रैकसाधनम् ॥ आहूय भक्त्या संपूज्य वृणुयात्प्रार्थयेद्बुधः । श्रीरामप्रतिमादान करिष्ये हे द्विजोत्तम ॥ तत्राचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोऽसि त्वमेव च । इत्युक्त्वा भोक्तुमायातं स्थापयित्वा तत स्वयम् ॥ तदैवाभ्यर्च्य च स्नायाच्चिंतयेद्राघवं हृदि । श्वेतांबरधर देव गंधमाल्यादि धारयेत् । अर्चितो भूषितश्चैव कृत्वा माध्याह्निकीं क्रियाम् ॥ आचार्य पूजयेत्पश्चात्सात्विकान्नैः सुविस्तरम् ॥ भुंजीयात्स्वयमप्येव राम हृदि ह्यनुस्मरन् । एकभक्त व्रत तत्र सहाचार्यो जितेंद्रियः ॥ शयीत भूतले सम्यक् श्रीरामार्पितमानसः । ततः प्रात समुत्थाय स्नात्वा संध्यां यथाविधि ॥ प्रात सर्वाणि कर्माणि शीघ्रमेव समापयेत् । तत स्वस्थमना भूत्वा विद्वद्भिः सहितो ऽनघ ॥ स्वगृहे चोत्तरे भागे मंडपं श्लक्ष्णमुज्ज्वलम् । मंडप च चतुर्द्वारं ध्वजाः कार्याः सुविस्तरे ॥ फलैर्नानाविधैर्युक्त पुष्पमालासुशोभनम् । कदलीस्तंभसंयुक्त यज्ञियैस्तैरलंकृतम् ॥ सतोरणैर्मनोरम्य पुष्पाद्यैः समलंकृतम् । शंखचक्रहनूमद्भिः प्राग्द्वारे समलंकृतम् ॥ गरुत्मच्छार्ङ्गबाणैश्च दक्षिणेषु विभूषितम् ॥ गदाखड्गांगदैश्चैव पश्चिमे च विभूषितम् ॥ पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेर्यां समलंकृतम् । मध्ये तु चतुरस्रा च वेदिका हस्तमायताम् ॥ विप्रैश्च गीतनृत्यैश्च वाद्यैश्चापि समन्वितम् । पुण्याहं वाचयित्वा च विद्वद्भिः प्रीतमानसैः ॥ ततः संकल्पयेद्देव राममेवमनुस्मरन् । अस्यां रामनवम्यां तु रामाराधनतत्परः । उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि ॥ इमां स्वर्णमयीं राम प्रतिमां तु प्रयत्नतः ॥ श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते ॥ प्रीतो रामो दहत्वाशु पा

पानि सुबहूनि मे । अनेकजन्मलब्धानि अभ्यस्तानि महांति च ॥ विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपरि सुंदरम् । मध्ये तीर्थोदकैर्युक्तं पात्रं संस्थाप्य चर्चितम् ॥ सौवर्णे राजते ताम्रे पात्रे षट्कोणमालिखेत् । ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां फलमात्रतः ॥ निर्मितां द्विभुजां रम्यां वामांकस्थितजानकीम् । बिभ्रतीं दक्षिणे हस्ते ज्ञानमुद्रां महामुने ॥ वामेनाधःकरेणैनां देहमालिंग्य संस्थिताम् । सिंहासनं राजतं च पलद्वयविनिर्मितम् ॥ पंचामृतस्नानपूर्वं संपूज्य विधिवत्ततः । मूलमंत्रेण नियतो दद्याच्चैवमतंद्रितः ॥ एवं संपूज्य विधिवद्रात्रौ जागरणं तथा । दिव्यां रामकथां श्रुत्वा रामभक्तिसमन्वितः ॥ गीतनृत्यादिभिश्चैव रामस्तोत्रैरनेकधा । रामाष्टकेन संस्तुत्य गंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ कर्पूरागरुकस्तूरी कल्हाराद्यैरनेकधा । संपूज्य विधिवद्भक्त्या दिवारात्रिं नयेद्बुधः ॥ ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसंध्यादिकाः क्रियाः । संस्थाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने ॥ ततो होमं प्रकुर्वीत मूलमंत्रेण मंत्रवित् । पूर्वोक्तकुंडे गृह्योक्तस्थंडिले वा समाहिताः ॥ लौकिकाग्नौ विधानेन शतमष्टोत्तरं मुने । आज्येन पायसेनैव स्मरन्राममतंद्रितः ॥ ततो भक्त्या सदा तुष्ट आचार्यं पूजयेन्मुने । कुंडलाभ्यां सुवर्णाभ्यामंगुलीयैरनेकधा ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैस्तु मनोहरैः । ततो रामं स्वयं दद्यादिमं मंत्रमुदीरयेत् ॥ इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलंकृताम् । चित्रवस्त्रयुगच्छन्नां रामोऽहं राघवाय ते । श्रीरामप्रतिमां दास्ये प्रीतो भवतु राघवः ॥ इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां भुवम् । अन्येभ्यश्च यथाशक्त्या गोहिरण्यादि भक्तितः । दद्याद्दासो धनं धान्यं यथालंकरणानि च ॥ अगस्त्य उवाच । एवं यः कुरुते रामप्रतिमादानमुत्तमम् । ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥ तुलापुरुषदानेन फलमाप्नोति सुव्रतात् । अनेकजन्मसंसिद्धपापेभ्यो मुच्यते ध्रुवम् ॥ बहुनाऽत्र किमुक्तेन मुक्तिस्तस्य करे स्थिता । तुलापुरुषदानेन मुने यल्लभते फलम् । तत्फलं लभते मर्त्यो

दानेनानेन सुव्रत ॥ सुतीक्ष्ण उवाच । प्रायेण हि नराः सर्वे दरिद्राः कृपणा मुने ॥ अगस्त्य उवाच । दरिद्रस्तु महाभाग स्वस्य वित्तानुसारतः ।
पळायन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः ॥ वित्तशाठ्यमकृत्वैव कुर्यादेव व्रतं मुने । यदि घोरतर दुष्ट पातक नेहते क्वचित् ॥ अकिंचनो
ऽपि यत्नेन उपोष्य नवमीदिने । एकचित्तो ऽतियत्नेन सर्वपापै प्रमुच्यते ॥ प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः । उपोषणं न कुरुते
कुंभीपाकेषु पच्यते ॥ यत्किंचिद्राममुद्दिश्य क्रियते न स्वशक्तितः । रौरवे स तु मूढात्मा पच्यते नात्र संशयः ॥ सुतीक्ष्ण उवाच । यामा
एके तु पूजा वै तत्र चोक्ता महामुने ॥ मूलमन्त्रेण संयुक्ता तां कथां वद सुव्रत ॥ अगस्त्य उवाच । सर्वेषां राममन्त्राणां मन्त्रराजं षडक्षरम् ॥
इद तु स्कांदे मोक्षखंडे श्रीरामं प्रति रुद्रगीतायां रुद्रवाक्यम् ॥ मुमूर्षोर्मणिकर्ण्यां ते अर्धोदकनिवासिनः अहं दिशामि ते मंत्र तारक
स्योपदेशतः ॥ श्रीरामरामरामेति एतत्तारकमुच्यते । अतस्त्वं जानकीनाथ परब्रह्माभिधीयसे ॥ तारकं ब्रह्म चेत्युक्त तेन पूजा प्रश
स्यते । पीठांगदेवतानां तु आवृतीनां तथैव च । आदावेव प्रकुर्वीत देवस्य प्रीतमानसः । उपचारैः षोडशभिः पूजा कार्या यथाविधि ॥
आवाहनं स्थापनं च सम्मुखीकरणं तथा ॥ एवं मुद्राप्रार्थनां च पूजामुद्रां प्रयत्नतः ॥ शंखपूजां प्रकुर्वीत पूर्वोक्तविधिना ततः । कलशं वामभागे च
पूजाद्रव्याणि चादरात् ॥ पीठे संपूज्य यत्नेन आत्मानं मन्त्रमुच्चरेत् । पात्रसादनमप्येवं कुर्याद्धामेष्वतंद्रितः ॥ पीतांबराणि देवाय प्रार्प्य
मर्चयेत्सुधीः । स्वर्णयज्ञोपवीतानि दद्याद्देवाय भक्तितः ॥ नानारत्नविचित्राणि दद्यादाभरणानि च । हिमांबुघृष्टं रुचिरं घनसारमनोहर
म् ॥ क्रमात्तु मूलमन्त्रेण उपचारान्प्रकल्पयेत् । कल्हारैः केतकैर्जात्यैः पुन्नागाद्यैः प्रपूजयेत् ॥ चंपकैः शतपत्रैश्च सुगंधैः सुमनोहरैः । पा
द्यचंदनधूपैश्च तत्तन्मन्त्रैः प्रपूजयेत् ॥ भक्ष्यभोज्यादिकं भक्त्या देवाय विधिना ऽर्पयेत् । येन सोपस्कर देवं दत्त्वा पापैः प्रमुच्यते ॥ ज

न्मकोटिकृतैर्घोरैर्नानारूपैश्च दारुणैः। विमुक्तः स्यात्क्षणादेव राम एव भवेन्मुने ॥ श्रद्दधानस्य दातव्यं श्रीरामनवमीव्रतम् । सर्वलोक-
हितायेदं पवित्रं पापनाशनम् ॥ लोहेन निर्मितं वापि शिलया दारुणाऽपि वा । एकेनैव प्रकारेण यस्मै कस्मै ऽथवा मुने । कृतं सर्वं
प्रयत्नेन यत्किंचिदपि भक्तितः । जपेदेकांतमासीनो यावत्स दशमीदिनम् ॥ अनेन स्यात्पुनः पूजा दशम्यां भोजयेद्द्विजान् । भक्त्या भो-
ज्यैर्बहुविधैर्दद्याद्भक्त्या च दक्षिणाम् ॥ कृतकृत्यो भवेत्तेन सद्यो रामः प्रसीदति ॥ तूष्णीं तिष्ठन्नरो वापि पुनरावृत्तिवर्जितः ॥ द्वादशाब्दे
कृतेनापि यत्पापं चापि मुच्यते। विलयं याति तत्सर्वं श्रीरामनवमीव्रतात् ॥ जपश्च राममंत्राणां यो न जानाति तस्य वै । उपोष्य
संस्मरेद्रामं न्यासपूर्वमतंद्रितः ॥ गुरुलब्धो ऽयं मंत्रस्तु न्यसेन्न्यासपुरःसरः । यामे यामे च विधिना कुर्यात्पूजां समाहितः ॥ मुमुक्षुश्च
सदा कुर्याच्छ्रीरामनवमीव्रतम् । मुच्यते सर्वपापेभ्यो याति ब्रह्मसनातनम् ॥ इति श्रीस्कंदपु० अगस्त्यसंहितायामगस्तिसुतीक्ष्णसंवादे
रामनवमीव्रतविधिः सं० ॥ ॥ अथ रामनामव्रतम् ॥ तत्रैव । रामनवमीमारभ्य अथवा सर्वकालेपि रामनामजपलेखनं कुर्यात् । आचम्य प्रा
णानायम्य मासपक्षाद्युल्लिख्य, सकलपापक्षयकामो विष्णुलोकप्राप्तिकामो वा श्रीरामप्रीतये रामनामजपलेखनं करिष्य इति संकल्प्य । ना-
ममंत्रेण षोडशोपचारैः। पूजयेत् ॥ ॥ अथ कथोद्यापनं च ॥ पार्वत्युवाच । धन्याऽस्म्यनुगृहीता ऽस्मि कृतार्था ऽस्मि जगत्प्रभो । वि-
च्छिन्नो मेऽद्य संदेहग्रंथिर्भवदनुग्रहात् १ त्वन्मुखाद्गलितं रामकथामृतरसायनम् । पिबंत्या मे मनो देव न तृप्यति भवापहम् २ श्रीरा-
मस्यामृतं नाम श्रुतं संक्षेपतो मया । इदानीं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण स्फुटाक्षरम् ३ श्रीमहादेव उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्या-
द्गुह्यतरं महत् । प्राप्नोति परमां सिद्धिं दीर्घायुः पुत्रसंपदम् ४ रामनामलिखेद्यस्तु लक्षकोटिशतावधि । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकना-

शनम् ५ सकामो ऽपि लिखेयस्तु निष्कामेन तु किं पुन । इहैव सुखमाप्नोति अंते च परम पदम् ६ आदावंते च मध्ये च व्रतस्यो
द्यापन चरेत ७ उद्यापन विना नैव फलसिद्धिमवाप्नुयात् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नाम्ना उद्यापन कुरु ८ पार्वत्युवाच । नताऽस्मि देवदेवेश
भक्तानुग्रहकारक । नाम्न उद्यापनं ब्रूहि विस्तरेण मम प्रभो ९ श्रीशिव उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथाविधि । नाम्न उद्या
पन चात्र भक्त्या भवदनुग्रहात् १० सुवर्णप्रतिमां कुर्यात्ससीतारामलक्ष्मणाम् । हनूमत्प्रतिमां तत्र चतुर्थांशेन हाटकैः ११
सुवर्णस्य प्रमाण तु पलाष्टकमुदीरितम् । अशक्तश्चेत्पलेनैव तदर्धार्धेन वा पुन १२ श्रीरामप्रतिमाया तु वित्तशाठ्य न कारयेत् । रा
जतेनासन कुर्यात् माषे षोडशसमितैः १३ पीतवस्त्रेण संवेष्ट्य स्थापयेत्तण्डुलोपरि। तंडुलानां प्रमाण तु भवेद्द्रोणचतुष्टयम् १४ शुचौ
देशे गृहे तीर्थे मंडप कारयेत्सुधीः । तोरणानि चतुर्द्वारे बंधयेदाम्रपल्लवैः १५ भूमौ गोमयलिप्तायां सर्वतोभद्रसंज्ञकम् । रचयेत्सम्यथा
-येन नानारंगै सुशोभनम् १६ कुम्भानष्टौ च पूर्वादौ स्थापयेदव्रणाञ्छुभान् । कुम्भमेक मध्यदेशे स्थापयेत्तण्डुलोपरि १७ गंगाजलेन
सपूर्य पंचरत्नैः सपल्लवैः । नालीकेरफलान्यष्टवेक रामाय दापयेत् १८ आचार्य वरयेत्तत्र वेदशास्त्रविशारदम् । ब्रह्मादिऋत्विजाना तु
वरण कारयेत्ततः १९ मधुपर्केण सपूज्य वस्त्रालंकारभूषणैः । ऋत्विजः षोडशानष्टौ वरयेद्वेदपारगान् २० स्नात्वा नित्य विधायादौ पूज
येद्गणनायकम् । पुण्याह वाचयित्वा तु पूजयेद्रामचक्रकम् २१ ततो ऽग्निं च प्रतिष्ठाप्य स्वशास्त्रोक्तविधानतः । विष्णुसूक्तेन होतव्य मू-
लमन्त्रेण वा पुनः २२ नवग्रहांश्च दिक्पालानत्रानुगांश्च होमयेत् । पुरुषसूक्तेन होतव्या समिदाज्यं चरुस्तिलाः ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु
राममंत्रेण होमयेत् २३ होमांते पूजन कुर्याद्राममन्त्रादिदेवताः । पूजयित्वा ततो हुत्वा बलिं पूर्णाहुतिं तथा २४ श्रेयः संपाद्य दानं च

अभिषेकं समापयेत् । रामं नत्वा ऽर्चयित्वा च प्रार्थयित्वा पुनःपुनः २५ आचार्यं पूजयेत्पश्चात्सुवर्णैर्वस्त्रधेनुभिः । प्रतिमां दानमंत्रेण आचार्याय निवेदयेत् २६ नतो ऽस्मि देवदेवेश बहुबुद्धिमहात्मभिः । यश्चिंत्यते कर्मपाशाद्धृदि नित्यं मुमुक्षुभिः २७ मायया गुणमय्या त्वं सृजस्यवसि लुंपसि । अतस्त्वत्पादभक्तोस्मि त्वद्भक्तिस्तु श्रियोधिका २८ भक्तिमेव हि वांच्छंति त्वद्भक्ताः सारवेदिनः । अतस्त्वत्पादकमले भक्तिरेव सदा ऽस्तु मे २९ संसारामयतप्तानां भैषज्यं भक्तिरेव ते । सीतासौमित्रिहनुमद्भक्तयुक्तो नरेश्वरः ३० दानेनानेन मे राम भक्तिमुक्तिप्रदो भव । प्रतिमादानसिद्ध्यर्थं शक्त्या स्वर्णं तु दापयेत् ३१ दानं यद्दक्षिणाहीनं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् । ब्राह्मणाञ्छतसाहस्रं भोजयेन्मधुसर्पिषा ३२ पक्वान्नैः पायसैः स्वाद्यैर्लड्डुकैः शर्करान्वितैः । ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्याद्भूयसीं दक्षिणां ददेत् ३३ तदंते घृतपात्रं च तिलपात्रं च दापयेत् । शय्यां च रथदानानि दशदानानि शक्तितः ३४ अशक्तश्चेत्स्वर्णमेकं दत्त्वा रामं नमेत्पुनः तिलकं कारयेत्पश्चादभिषिंचेत्सपल्लवैः ३५ द्विजैस्तु आशिषो देया नत्वा स्तुत्वा विसर्जयेत् । उमामहेश्वरौ पूज्यौ भोजयेद्बटुकं तथा ३६ कुमारीणां शतं भोज्यं योगिराजं च भोजयेत् । क्षेत्रपालबलिं दत्त्वा ध्यात्वा रामं सदा जपेत् ३७ ब्रह्मादिभिस्तु तत्पुण्यं वक्तुं शक्यं न किंचन । अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ३८ एकेन रामनाम्ना तु तत्फलं लभते नरः । नारी वा पुरुषो वापि शूद्रो वाप्यधमो नरः ३९ रामनाम्ना तु मुक्तास्ते सत्यं सत्यं वरानने ४० मूले कल्पद्रुमस्याखिलमणिविलसद्रत्नसिंहासनस्थं कोदंडं धारयंतं ललितकरयुगेनार्पितं लक्ष्मणेन वामांकन्यस्तसीतं भरतधृतमहामौक्तिकच्छत्रकांतं शत्रुघ्नं चामराभ्यां विलसितमनिशं रामचंद्रं भजे ऽहम् ४१ वंदे तत्र महे-

१ शत्रून् रावणादीन्। हन्तीति रामविशेषण मतार्केऽप्येवमेव ।

शान चंडकोदंडखंडनम्।जानकीहृदयानंदवर्द्धनं रघुनंदनम्॥४२॥चरितं रघुनाथस्य, शतकोटिप्रविस्तरम्।एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥
४३इति श्रीभ० उमामहेश्वरसं०रामनामलेखनोद्यापनं संपूर्णम्॥ ॥अथादुःखनवमीव्रतम्॥भाद्रपदशुक्लनवम्यां मुहूर्तमात्रसत्वेपि परयुताया
मदुःखनवमीव्रतम्।देशकालौ स्मृत्वा, ममेहजन्मनि जन्मांतरे च भर्त्रासह सकलपातकादिदुःखनाशार्थं व्रतसंकल्पोक्तफलावाप्त्यर्थं श्रीगौ
रीदेवताप्रीत्यर्थमदुःखनवमीव्रतांगपूजनमहं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिपुण्याहवाचन च करिष्य इति संकल्प्य । गोम
येनोपलिप्तभूमौ वेदिकां मुक्तिसामिश्रच्छादितामपूपपायसान्वितामुपरिमंडपिकायुतां कृत्वा तत्र पीठे आसनादिकलशप्रतिष्ठांत कृत्वा
ऽग्युत्तारणपूर्वकं गौरीप्रतिमां संस्थाप्य गणपतिचतुष्टयमिंद्रादिलोकपालान्गौरीर्मिमायेति नमोदेव्या इति वा मंत्रेण गौरीमावाह्य पूजये-
त्। दिव्यपात्रधरां देवीं बिभ्रतीं च त्रिलोचनीम्। दुग्धान्नदाननिरतां गौरीं त्वां चिंतयाम्यहम्। ध्यानम्॥ गौरीं दुःखहरां देवीं शि
वस्यार्द्धांगधारिणीम्। सुनीलवस्त्रसंयुक्तामुमामावाहयाम्यहम्। आवाहनम्॥ प्रसन्नवदने मातर्नित्यं देवर्षिसंस्तुते । मया भावेन यद्दत्त
पीठं तत्प्रतिगृह्यताम्। आसनम्॥ सर्वतीर्थमयं दिव्यं सर्वभूतोपजीवनम्। मया दत्त च पानीयं पाद्यार्थं प्र०। पाद्यम्॥ गंगादिसर्वतीर्थे
भ्यो भक्त्यानीतं सुशीतलम्॥ गंधपुष्पाक्षतोपेत गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते। अर्घ्यम्॥ मातः सर्वाणि तीर्थानि गंगाद्याश्च तथा नदाः ।
स्नानार्थं तव देवेशि मयाऽऽनीताः सुशोभनाः। स्नानम्॥ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्य वाससी प्रति-
गृ०। वस्त्रम्॥श्रीखंडमिति गंधम्॥ माल्यादीनीति पुष्पम्॥वनस्पतिरसो० धूपम्॥आज्यंचेति दीपम्॥अन्नंचतुर्विधमिति नैवेद्यं॥पूगीफल
मिति तांबूलम्॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम्॥नीराज० मंत्रपुष्पं० प्रदक्षि० नमस्का० प्रार्थना० वायनम्॥ स्कंदमातर्नमस्तुभ्य दुःखव्याधि

विनाशिनि । उत्तिष्ठ गच्छ भवनं वरदा भव पार्वति । विसर्जनम् ॥ इति पूजा ॥ ॥ अथ कथा ॥ ऋषय ऊचुः । कदाचिन्नैमिषारण्ये व्यासं धर्मविदांवरम् । कथयंतं कथां दिव्यामिदमूचुर्महर्षयः १ यज्ञधर्मविदांश्रेष्ठ व्रतानि विविधानि च । विपाकात्कर्मणां चैव प्राणिनां विविधा गतिः २ आकर्ण्य विस्मिताः सर्वे कौतूहलसमन्विताः । न तृप्तिमधिगच्छामो नाप्रियं च कथामृतम् ३ शृणुमश्च वयं सद्यो व्रतं दुःखहरं त्विदम् । येन चीर्णेन धर्मज्ञाऽज्ञानदुःखं न जायते । कृपां कुरु महाबुद्धे ब्रूहि दुःखहरं व्रतम् ४ व्यास उवाच । शृण्वंतु पुरुषाः सर्वे शौनकाद्या महर्षयः । ये नराः पुण्यकर्माणो दंभाहंकारवर्जिताः ५ श्रद्धया यमिनो नित्यमहिंसानिरताश्च ये । यथामीलितभोक्तारः सुखिनस्तेन तेन हि ६ गुह्यं चान्यत्तु वक्ष्यामि दुःखनाशनसूचकम् । ये ऽदुःखनवमीं प्राप्य नराश्चैवाप्यपंडिताः ७ शिवां गच्छंति शरणमुत्पत्तिस्थितिकारिणीम् । जन्मांतरशते वापि न ते दुःखस्य भागिनः ८ ऋषय ऊचुः । अदुःखनवमी नाम त्वया केयं निरूपिता । भविष्यति कदाचेयं यदा कार्यं भविष्यति ९ पूजनीया कथं गौरी विधानं कीदृशं तथा । एतत्सर्वं विधानेन वक्तुमर्हस्यशेषतः १० व्यास उवाच । एतद्गुह्यतमं पुण्यं शृणुध्वं गदतो मम । न देयं नास्तिकायैतदभक्ताय शठाय च ११ अहं वः श्रद्दधानेभ्यो विधिं सर्वमशेषतः । समाहितमना वच्मि भवतः पुण्यदायकम् १२ सर्वस्याद्या महादेवी त्रिगुणा परमेश्वरी । नित्यानंदमयी देवी तमःपारे प्रतिष्ठति १३ ब्रह्मांडजननी चेयमुत्पत्तिस्थितिकारिणी । पुरुषः प्रकृतिश्चेयमात्मानं बिभिदे द्विधा १४ यथा शिवस्तथा गौरी यथा गौरी तथा हरः । यथा गौरी तथा लक्ष्मीर्दुःखपापापहारिणी १५ तासां पूजाविधानेन न कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् । नभस्ये शुक्लनवमी या वा पूर्णातिथिर्भवेत् १६ अस्तदोषादिरहिता सर्वदुःखहरा परा । प्रशस्तायां नरः स्नात्वा कृत्वा नित्यविधिं ततः १७ मौनेन गृहमागत्य संयतस्तत्परायणः ।

अदुःखदायी भूत्वा च शुचिस्थानगतस्तथा १८ गोमयेन विलिप्तायां शुचौ मण्डपिकां शुभाम् । सुकुंभ स्थापयेत्तत्र कुंकुमालिप्तभित्ति
काम् १९ आच्छादित सुधूपैस्तामुमामानददायिनीम् । आचार्यानुज्ञया तस्यां जगद्धात्रीं प्रपूजयेत् २० पूजयित्वोपचारैस्ता नत्वा न
त्वा पुनःपुनः । वाणकं च ददेत्तस्याः पक्वान्नफलसंयुतम् २१ शक्तश्चेदुपवासे न निशां च जागरैर्नयेत् । अशक्तेन च भोक्तव्य पयः प्राश्य-
मथापि वा २२ फलं वापि प्रयत्नेन न हिंसारतचेतसा । रात्रौ जागरणं कार्यं नृत्यगीतादिभिस्तथा २३ प्रभाते विमले जाते कृत्वा नि-
त्यविधिं पुनः । ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्या सपत्नीकान्सुशुचींस्तथा २४ देवीं विसर्जयेत्पश्चादाचार्यं पूजयेत्तथा । आचार्यस्तु स्वशास्त्रोक्तो
नव वर्षाणि कारयेत् २५ सौवर्णैर्भूषणैर्वस्त्रैर्नत्वा तं च समर्चयेत् । पच वा अथवा चैक नारीकेलैश्च वायनम् २६ पक्वान्नं नवसंख्याक
ब्राह्मणाय निवेदयेत् । पश्चाद्बंधुजनैः सार्द्धं भुंजीयान्नियतः शुचिः २७ श्रुत्वा कथां पुण्यतमां वाग्यतस्तत्परो यतः । स कदाचिन्न दु
खेन युज्यते नात्र संशयः २८ भुक्त्वा भोगान्यथाकाम स याति परम पदम् । अत्रैवोदाहरंतीममितिहास पुरातनम् २९ अरण्ये विषमे
भामा शापदग्धाप्सराः किल । आसीज्जातिस्मरा काचित्तिर्यग्योनिं समागता ३० कुक्कुटी नामतो ह्यासीत्सदा दुःखेन पीडिता । त
त्सखी मर्कटी नाम ते चोभे शोककर्शिते ३१ अथ तस्मिन्वनोद्देशे परस्परहिते रते । उभे अभूतां सहिते विचरन्त्यौ दिशो दश ३२ ततः
कालेन महता वर्षांते चागता तिथिः । अदुःखनवमी नाम दुःखव्याधिविनाशिनी ३३ गत्वा तां कुक्कुटी प्राह मर्कटी दैवयोगतः । अ
द्य किंचिन्न भोक्तव्यमावाभ्यां शृणु कारणम् ३४ तिर्यग्योनिगते चावां पूर्वकर्मविपाकतः । दुःखापनुत्तये चाद्य न भोक्ष्ये ऽहं त्वया

१ कृत्वेत्यध्याहारः । २ कुंकुमालिप्तभित्तिकामित्येतन्मंडपिकाविशेषणम् । ३ कुंभविशेषणम् ।

सह ३५ त्वं चेशं शरणं गत्वा नवमीं सुव्रतस्थिता । कृत्वा च त्वमशक्ता चेद्भुंक्ष्व शीर्णफलानि च ३६ महामायाप्रसादेन याहि भद्र-
महिंसया । इत्युक्त्वा कुक्कुटीं तूष्णीं बभूवानश्नती तदा ३७ मर्कट्यप्युररीकृत्य प्रशस्ते संबभूवतुः । अथ सा मर्कटी नाम गत्वा पूर्व-
वनं प्रति ३८ स्थित्वा तद्दिनशेषं तु क्षुधिता पीडिता भृशम् । अजानती तमेवार्थं पूर्वकर्मविशेषतः ३९ निशांते तरसा गत्वा वनदेशे
विचिन्वती । ददर्श बर्हिणोंडानि अतीव क्षुधिता तदा ४० भक्षयित्वा मर्कटी सा मुखं प्रक्षाल्य वारिणा । पुनस्तदंतिकं प्राप्ता दर्शयंती
क्षुधोऽन्यथाम् ४१ कुपिता कुक्कुटी वाक्यमुवाच मर्कटीं प्रति । किञ्चिद्भुक्तं त्वया दुष्टे व्रज त्वं हरिसंयुता ४२ व्रतभ्रष्टा स्थिता चाथ वारि-
वासितया त्वघे । नाकरोस्त्वं मम वचः प्राणाः किं न गतास्तव ४३ केदारं शरणं याहि मया सह भयंकरि । देहायोगेन योगेन गच्छावः पर-
मंपदम् ४४ अथ ते निर्गते चोभे केदारं भूतभावनम् । गत्वा मनः समाधाय कुक्कुटी मनसाऽस्मरत् ४५ उत्पत्स्ये सत्कुले चाहं धनाढ्ये वेदपार-
गे । इति मत्वा स्वदेहं सा वह्निमध्ये न्यपातयत् ४६ पुनर्भवे राजपत्नी इति मत्वा च मर्कटी । अकरोत्स्वतनुत्यागं तद्वाक्येनैव बोधिता ४७ कुक्कु
टी सा महादेव्याः प्रसादेन तथा कुले- । विप्राणां कन्यका भूत्वा भर्ता विमलरत्नदः४८दिव्यवर्द्धनशीला सा निरता पतिसेवने । इतरा रा-
जपत्नीत्वं प्राप्ताऽसावथ मर्कटी४९उभे जातिस्मरे जाते महादेव्याः प्रसादतः । अथ सा कुक्कुटी पंच पुत्रान् जज्ञे पितुः समान्५०बभूव धनसंपन्ना
रूपशीलगुणान्विता । मर्कटी पुत्रशोकार्ता बभूव व्यथिता भृशम् ५१ पूर्वकर्मसमरंती सा कदाचिद्दैवयोगतः । अपश्यत्कुक्कुटीपुत्रान्पंचैव
च पितुःसमान् ५२ अमारयत्स्वभृत्यैस्तान् पुत्रान्सा मर्कटी तदा । तच्छिरांसि गृहीत्वा तु कुक्कुट्यै वाणकं ददौ ५३ अदुःखनवमीं प्राप्य
व्रतस्था च बभूव सा । गौरी कृपाविजननी जननी भक्तवत्सला ५४ शिरांस्यादाय सर्वेषां पुत्रकांस्तानजीवयत् । तद्वाणकं सुवर्णस्य रा-

रोपि पर्यंकल्पयत् ५५ कुक्कुटी पूजयांचक्रे गौरीं दुःखविनाशिनीम् । त्वत्तः सदा जीवतोऽयं भोक्तुं गृहमगात्ततः ५६ तदा तद्वाणकं प्रेक्ष्य तत्र हेमशिरोयुतम् । स्वभर्तारं पुत्रयुतं न्यवेदयत नंदिनी ५७ पुनर्वनागतांस्तांस्तु सा ददर्शालिपुत्रकान् । दृष्ट्वा पुनःपुनः साथ रुरोद घ्नशत्रु सिता ५८ आत्मानं निंदयामास मर्कटी विह्वला सती । आगत्य सख्याः सदनमात्मानं सा न्यवेदयत् ।५९ पापिन्यहं दुराचारा दुर्भगा ऽश्रुतपूर्वकम् । बालहत्यात्मकं पाप चरित नात्र संशयः ६० इत्याकर्ण्य सखीवाक्यं कुक्कुटी विस्मिता ऽभवत् । अपृच्छत्कारणं क्षिप्रं शोकसागरदायकम् ६१ इदं शीलं कथं भद्रे कस्माद्वदसि तद्वद । विमोगा राजपत्नी त्वं मान्या सर्वसखीष्वपि ६२ मर्कटी कुक्कुटीवाक्यं श्रुत्वा वृत्तं न्यवेदयत् । गत्वा च कुक्कुटीपुत्रैः प्रायश्चित्तमकारयत् ६३ स्मरती च व्रतं देव्याः चक्रे सा च यथाविधि । अथ देव्याः प्रसादेन मर्कटी सुषुवे सुतम् ६४ सुंदरं सुवर्णं नाम पृथ्वीभारसहं वरम् । राजपत्नी विप्रपत्नी सुखिन्यौ संबभूवतु ६५ इह लोके दुःखितस्य अदुःखनवमीव्रतम् । सीतया यत्कृतं चैतद्दमयन्त्या कृतं त्विदम् ६६ अन्याभिर्बहुभिः स्त्रीभिर्व्रतमाचरितं त्विदम् । या करोति व्रतमिदं शृणोति च कथामिमाम् ६७ सा दुःखमाप्नुवति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् । सर्वदुःखहरं लोके किमन्यच्छ्रोतुमिच्छथ ६८ ॥ इति श्रीस्कंदपु० अदुःखनवमीव्रतकथा स० ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लनवम्यां देवीव्रतम् ॥ हेमाद्रौ विष्णुधर्मे—राज उवाच । विधिना पूजयेत्तेन भद्रकालीं नराधिप । नवम्यामाश्विने मासि शुक्लपक्षे नरोत्तम ॥ पुष्कर उवाच । पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे शिवे वास्तुमनोहरे । भद्रकाल्या गृहं कार्यं चित्रवस्त्रैरलंकृतम् ॥ भद्रकालीगृहं कृत्वा तत्र संपूजयेच्छिव[1] । अष्टादशभुजा कार्या भद्रकाली मनोहरा ॥ आलीढस्था

[1] भद्रकालीपदं कृत्वा तत्र संपूजयेच्छिवमिति पाठान्तरम् ।

नसंस्थाना चतुःसिहस्थे स्थिता । अक्षमाला त्रिशूलं च खड्गचर्माकुशास्तथा ॥ बाणचापे च कर्तव्ये शंखपद्मे तथैवच च । स्रुक्स्रुवौ च तथा कार्यौ तथा वेदिकमंलू ॥ दंडशक्ती च कर्तव्ये तथा पाशहुताशनौ ॥ हस्तानां भद्रकाल्याश्च भवेत्कांतिकरः परः । एवं साध्य महाभाग रत्नपात्रधरो भवेत् ॥ आश्विने शुक्लपक्षस्य अष्टम्यां प्रयतः शुचिः । तत्र चायुधचर्माद्यं छत्रं वस्त्रं च पूजयेत् ॥ पुष्पैर्गंधैः फलैर्भक्ष्यैर्भोज्यैश्च सुमनोहरैः । बलिभिश्च विचित्रैश्च प्रेक्ष्या दानैस्तथैव च ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्तत्रैव वसुधाधिप । उपोषितो द्वितीये ऽह्नि पूजयेत्पुनरेव ताम् ॥ आयुधाद्यं च सकलं पूजयेद्वसुधाधिप । एवं संपूजयेद्देवीं वरदां भक्तवत्सलाम् ॥ कात्यायनीं कामगमां बहुरूपां वरप्रदाम् । पूजिता सर्वकामैः सा भुनक्ति वसुधाधिप ॥ एवं हि संपूज्य जगत्प्रधानां यात्रानुदेया वसुधाधिपेन । प्राप्नोति सिद्धिं परमां महेशाजनस्तथान्यो ऽपि च वित्तशक्त्या ॥ ॥ अथ नवरात्रव्रतम् ॥ देवीपुराणे—ब्रह्मोवाच । श्रृणु शक्र प्रवक्ष्यामि यथा त्वं परिपृच्छसि । महासिद्धिप्रदं धन्यं सर्वशत्रुनिबर्हणम् ॥ सर्वलोकोपकारार्थं पूजयेत्सर्ववृत्तिषु । ऋत्वर्थं ब्राह्मणाद्यैश्च क्षत्रियैर्भूमिपालने ॥ गोधनार्थे वत्स वैश्यैः शूद्रैः पुत्रसुखादिभिः । सौभाग्यार्थं तथा स्त्रीभिर्धनार्थं धनकांक्षिभिः ॥ महाव्रतं महापुण्यं शंकराद्यैरनुष्ठितम् । कर्तव्यं देवराजेंद्र देव्या भक्तिसमन्वितैः ॥ कन्यासंस्थे रवौ शुक्ले देवीमाराध्य नंदिकाम् ।-नंदिका प्रतिपत् ॥ अयाची त्वथवैकाशी नक्ताशी त्वथवापुनः । प्रातःस्नायी जितद्वंद्वस्त्रिकालं शिवपूजकः ॥- शिवश्च शिवा च शिवौ, तत्पूजकः । जपहोमसमासक्तः कन्यकां भोजयेत्सदा । अष्टम्यां नवमे चाह्नि दारुजानि शुभानि च ॥ एकं वा चित्तभावेन कारयेत्सुसुरोत्तम । तस्मिन्देवी प्रकर्तव्या हैमी वा राजती तु वा ॥ मृ-

१ एकत्रैवेत्यपरं पाठांतरम् ।

द्वार्षी लक्षणोपेता सन्नशूले च पूजयेत् । सर्वोपहारसपन्नवस्त्ररत्नफलादिभि ॥ कारयेद्रथदोलादिपूजां च बलिदैविकीम् । बलिमाग्राहिणो द्वाभेरवाद्या विनायकाः । तत्सवर्धिनीं बलिदैविकीम् ॥ पुष्पैश्च द्रोणबिल्वाद्यैर्जातीपुन्नागचपकैः । -द्रोणः कुरुबकः । विचित्रां रचयेत्पूजामष्टम्यामुपवासयेत् ॥ दुर्गाग्रतो जपेन्मत्र दुर्गापाठेन सस्तुता ॥ तदर्द्धयामिनीशेषे विजयार्थं नृपोत्तम । पचाब्द लक्षणोपेत महिषाख्य सुपूजितम् ॥ विधिवत्कालिकाकालीति जप्त्वा खड्गेन घातयेत् । तस्योत्थं रुधिरं मांस गृहीत्वा पूजनादिषु ॥ निर्ऋताय प्रदातव्य महाकौशिकमन्त्रितम् ॥ तस्याग्रतो नृपः स्नायाच्छत्रु कृत्वा तु पिष्टजम् ॥ खड्गेन घातयित्वा तु दद्यात्स्कदविशाखयो । ततो देवीं पुनः प्रीत क्षीरसर्पिजलादिभिः ॥ कुकुमागरुकर्पूरचदनैश्चापि धूपयेत् । हेमादिपुष्परत्नानि वासांसि भूषणानि च ॥ नैवेद्य पायस चैव देयं देव्याः सुमाविभिः । देवीभक्तान्पूजयीत कन्यकाप्रमदादिकाः ॥ द्विजातीनथ पासदानन्नदानेन तोषयेत् । दुर्गाभक्तिपरा ये तु ब्रह्मव्रतपराश्च ये ॥ पूजयेत्तान्विशेषेण तद्रूपाश्चार्चका यतः । मातृणा चैव योगीनां पूजा कार्या तदा निशि ॥ ध्वजच्छत्रपताकादीनुच्छ्रयेच्चंडिकागृहे । रथ्यायां च बलिक्षेपं पड्वाधरवाकुलम् ॥ कारयेत्तुष्यते येन देवीशास्त्रविधानकैः । अश्वमेधमवाप्नोति भक्तितः सुरसत्तम ॥ महानवम्यां पूजेयं सर्वकामप्रदायका । सर्वेषु वत्स वर्णेषु तव भक्त्या प्रकीर्तिता ॥ कृत्वाप्नोति यशो राज्यं पुत्रायुर्धनसपदः । इति ॥ ॥ अथ महानवम्यां दुर्गाव्रतम् ॥ ब्रह्मोवाच । आश्वयुक्शुक्लपक्षस्य नवम्यां प्रयतात्मवान् । भक्त्या सपूजयेद्देव देवीं समार्थयेत्ततः ॥ महिषघ्नि महामाये चामुडे मुडमालिनि । द्रव्यमारोग्यविजयौ देहि देवि नमोस्तु ते । भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि । देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च

१ प्रिमार्थिनम्यपार्लकामिति पाठांतरम् । २ भत्र पाठांतरं तु, दुर्गेत्यम मंत्रेति दृश्यते । ३ रामविषावनैरिति च पाठः ।

भयेभ्यो रक्ष मां सदा । उमे ब्रह्माणि कौमारि विश्वरूपे प्रसीद मे ॥ कुमारीर्भोजयित्वा च दद्यादाच्छादनादिकम् । नवसप्ताष्टकं चैव स्वस्य वित्तानुसारतः ॥ शस्त्रं च यस्य यच्चैव स तद्यत्नेन पूजयेत् । यतः शस्त्रेषु सा देवी निवसत्येव संततम् ।-शास्त्रमिति पाठः, शास्त्रं तत्पुस्तकम् ॥ स्नपने विशेषः शिवरहस्ये—ये मेरुमूर्धगतसंघकृताभिषेकां पंचामृतैर्गिरिसुतामभिषेचयंति । ते दिव्यकल्पमनुभूयसुवेषरूपा राज्याभिषेकमतुलं पुनराप्नुवंति ॥ दुर्गाभक्तितरंगिण्यां देवीपुराणे—सुगंधिपुष्पतोयेन स्नापयित्वा नरः शिवाम् । नागलोकं समासाद्य क्रीडंते पन्नगैः सह ॥ द्रोणपुष्पं बिल्वपत्रं करवीरोत्पलानि च ॥ स्नानकाले प्रयोज्यानि देव्यै प्रीतिकराणि च । भगवत्यै नरो दत्त्वा विष्णुलोके महीयते ॥ स्नापयित्वा नरो दुर्गां नवम्यां हेमवारिणा । सौवर्णयानमारूढो वसुभिः सह मोदते ॥ रत्नोदकैर्विष्णुलोकं लभते बांधवैः सह ।-तिलोदकैरिति पाठः ॥ घृतेन स्नापयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ दश पर्वान्दश परानात्मानं च विशेषतः ॥ भवार्णवात्समुद्धृत्य दुर्गालोके महीयते ॥ क्षीरेण स्नापयेद्यस्तु श्रद्धाभक्तिसमन्वितः । चंडिकां विधिवद्वीर इंद्रलोके महीयते ॥ स्नापयेद्विधिना वीर दध्ना दुर्गां महीपते । राजतेन विमानेनशिवलोके महीयते ॥ पंचगव्येन यो दुर्गां तथा च कुशवारिणा ॥ स्नापयेद्विधिवन्मंत्रैर्ब्रह्मस्नानं हि तत्स्मृतम् ॥ एकाहेपि च यो दुर्गां पंचगव्येन चंडिकाम्, । चंडिकां स्नापयेद्यस्तु स गच्छेद्विष्णुसन्निधौ ॥ चंडी गायत्री— । नारायण्यैचविद्महेचंडिकायैचधीमहि । तन्नोचंडीप्रचोदयात् ॥ कात्यायन्यैचविद्महेकन्याकुमार्यैचधीमहि । तन्नोदुर्गाप्रचोदयात् ॥ कपिलापंचगव्येन दधिक्षीरयुतेन च । स्नानं शतगुणं प्रोक्तमितरेभ्यो नराधिप ॥ भविष्ये—चंडिकां स्नापयेद्यस्तु नर इक्षुरसेनच । गरुडेन स यानेन विष्णुना

१ विष्णुसन्निधावित्यत्र सुरभीपुरमिति पाठो दृश्यते ।

सह मोदते ॥ पितुर्दिश्य यो दुर्गां मधुना पयसापि च । स्नापयेत्तस्य पितरस्तृप्ता वर्षसहस्रकम् ॥ चतुर्दश्यां नवम्यां वा अष्टम्यां वा नराधिप । स्नापयित्वा तीर्थजलैर्वाजपेयफलं लभेत् ॥ स्नापयित्वा नदीतोयैर्गंधचंदनवारिणा । चंद्रांशुनिर्मलः श्रीमान् चंद्रलोके महीयते ॥ स्नापयेद्यस्तु वै देवीं नरः कर्पूरवारिणा । स गच्छति परं स्थानं यत्र सा चंडिका स्थिता ॥ चंडिकां स्नापयित्वा तु श्रद्धया ऽगरुवारिणा । इंद्रलोकं समासाद्य क्रीडते सह किंनरैः ॥ वाराहतंत्रे—षडक्षरेण मंत्रेण पाद्यादीनथ षोडश । इतरैरुपचारैश्च पूर्वप्रोक्तैश्च भैरवम् ॥ द्वादशांगेन योऽर्घेण चंडिकां पूजयेन्नरः । दशपद्मसहस्राणि वर्षाणां मोदते दिवि ॥ आपः क्षीरं कुशाग्राणि अक्षतादधितण्डुलाः । सहा सिद्धार्थका दूर्वा कुंकुमं रोचनं मधु । अर्घोऽयं कुरुशार्दूल द्वादशांग उदाहृतः ॥ सहा सहादेवी । कुमारीमुपक्रम्य । अनेन पूजयेद्यस्तु स याति परमां गतिम् । अष्टांगार्घ्यं समापूर्य देव्या मूर्ध्नि निवेदयेत् ॥ दशवर्षसहस्राणि दुर्गालोके महीयते ॥ आपः क्षीरं कुशाग्राणि दधि सर्पिश्च तण्डुलाः । तिलाः सिद्धार्थकाश्चैव अष्टांगोऽर्घ[1] प्रकीर्तितः ॥ भविष्ये—रक्तबिल्वाक्षतैः पुष्पैर्दधिदूर्वाकुशैस्तिलैः । सामान्य सर्वदेवानामर्घोऽयं परिकीर्तितः ॥ मृत्पात्रेण नरो दत्त्वा वाजपेयफलं लभेत् । ताम्रपात्रार्घ्यदानेन पौंडरीकफलं लभेत् ॥ दत्त्वा सौवर्णपात्रेण लभेद्बहुसुवर्णकम् । हेमपात्रेण सर्वाणि ईप्सितानि लभेद्दिवि ॥ अर्घ्यं दत्त्वा तु रौप्येण आयू राज्यं फलं लभेत् । पलाशपद्मपत्राभ्यां गोसहस्रफलं लभेत् ॥ रौप्यपात्रेण दुर्गायै विष्णुयागफलं लभेत् । विलिप्य कृष्णागरुणा वाजपेयफलं लभेत् ॥ कस्तूरीलेपनं कृत्वा ज्योतिष्टोमफलं लभेत् । चंदनागरुकर्पूरैः श्लक्ष्णपिष्टैः सकुंकुमैः ॥ दुर्गामालिप्य विधिवत्कल्पकोटिवसेद्दिवि । चंदनं मदकर्पूररो

१ अत्र वर्षसहस्रपमिति पाठांतरम् ।

चनं च चतुष्टयम् ॥ एतेन लेपयेद्देवीं सर्वकामानवाप्नुयात् । देवीपुराणे– मल्लिका उत्पलं पद्मं शमी पुन्नागचंपकम् ॥ अशोकं कर्णिकारं च द्रोणपुष्पं विशेषतः । करवीरं शमीपुष्पं कुसुंभं नागकेसरम् ॥ कुंदश्च यूथिका मल्ली पुन्नागश्चंपकं नवम् । जपा च केतकी मल्ली बृहती शतपत्रिका ॥ तथा कुमुदकल्हारबिल्वपाटलमालती । यावनीबकुलाशोकरक्तनीलोत्पलानि च ॥ दमनं मरुवकं चैव शतधा पुण्यवृद्धये । केतकी चातिमुक्तश्च बंधूकं बकुलान्यपि ॥ कुसुदं कर्णिकारं च सिंदूराभं समृद्धये ॥ बिल्वपत्रैरखंडाद्यैः सकृद्देवीं प्रपूजयेत् । सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकेमहीयते ॥ मणिमौक्तिकमालां च वितानं दुकूलं तथा । घंटादि सर्वदा दत्त्वा हेमपुष्पं तु शक्तितः । तावद्भिश्च वृताः पुत्रैः पौत्रैश्चैव समंततः । श्रिया सहैव युज्यंते हेमपुष्पैः शिवार्चनात् ॥ भविष्ये– प्रत्येकमुक्तपुष्पेषु दशनिष्कफलं लभेत् । स्रग्बद्धेषु च तेष्वेव द्विगुणं कांचनस्य तु ॥ करवीरस्रजोभिश्च पूजयेद्यस्तु चंडिकाम् । सोऽग्निष्टोमफलं लब्ध्वा सूर्यलोके महीयते ॥ पूजयित्वा नरो भक्त्या चंडिकां पद्ममालया । ज्योतिष्टोमफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ शमीपुष्पस्रजाभिश्च आर्यां संपूज्य यत्नतः । गोसहस्रफलं प्राप्य विष्णुलोके महीयते । पूजयित्वा तु राजेंद्र श्रद्धया विधिवन्नृप । कुशपुष्पस्रजाभिस्तु पितृलोकमवाप्नुयात् । सुगंधयुतपुष्पैस्तु पूजयेद्यस्तु चंडिकाम् ॥ मालाभिर्मालया वापि सोऽश्वमेधफलं लभेत् । सुवर्णानां सुवर्णस्य शते दत्ते फलं लभेत् ॥ मालया बिल्वपत्राणां नवम्यां गुग्गुलेन च । नीलोत्पलस्रजाभिश्च पूजयेद्यस्तु चंडिकाम् ॥ वाजपेयफलं प्राप्य रुद्रलोके महीयते । नीलोत्पलसहस्रेण यो वै मालां प्रयच्छति ॥ वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च । दुर्गानुचरतां यातो रुद्रलोके महीयते ॥ तथा । विलिप्तां पूजयेद्दुर्गां दिव्यपुष्पाधिवासिताम् । तालवृंतेन संवीज्य महासत्र-

फलं लभेत् ॥ भविष्ये– सर्वेषामेव धूपाना दुर्गायां गुग्गुलुः प्रियः ॥ मन्त्रस्तु । धूपोयं देवदेवेशि घृतगुग्गुलुयोजितः । गृहाण वरदे मातर्दुर्गे देवि नमो ऽस्तु ते ॥ कृष्णागरु नरो दत्त्वा गोसहस्रफलं लभेत् । माहिषाख्यघृताभ्यक्त दत्त्वा बिल्वमथापि वा ॥ वाजपेयफ ल प्राप्य सूर्यलोके महीयते । सकृष्णागरुधूपेन महिषाख्येन मंगला ॥ शोधयेत्पापकलिलं यथाग्निरिव कांचनम् । कृष्णागरु सकर्पूर चदनं सिह्रक तथा ॥ तथा शब्दसमुच्चये– भगवत्यै नरो धूपमिम दत्त्वा नराधिप । इह कामानवाप्यांते दुर्गालोके महीयते ॥ घृतदीप प्रदानेन चंडिकां पूजयेन्नरः । सो ऽश्वमेधफलं प्राप्य दुर्गायास्तु गणो भवेत् ॥ तैलदीपप्रदानेन पूजयित्वा च चडिकाम् । वाजपेयफल प्राप्य मोदते सह किन्नरैः ॥ अग्निज्योती रविज्योतिश्चंद्रज्योतिस्तथैव च । ज्योतिषामुत्तमो दुर्गे दीपोय प्रतिगृह्यताम् । शिवरहस्ये– देदी प्यते सकनकोज्ज्वलपद्मरागरत्नप्रभाभरणहेममये विमाने । दिव्यांगनापरिवृते नयनाभिरामं प्रज्वाल्य दीपममल भवने भवान्याः ॥ भविष्ये– घृतेन कुरुशार्दूल ह्यमावास्यां तु कार्तिके । विशेषतो नवम्यां तु भक्त्या श्रद्धासमन्वितः । यावत दीपसघात घृतेनापूर्य बोधि तम् । तावत्कल्पसहस्राणि दुर्गालोके महीयते ॥ दीपप्रदान यो दद्याद्देवेषु ब्राह्मणेषु च । तेन दीपप्रदानेन अक्षय्यां गतिमाप्नुयात् ॥ गुडखंड घृतान्न च तथा शर्करया ऽपि च । घृतेन परिपक्वान्नं दत्त्वा च ब्रह्मणः पदम् । स्यादिति शेषः ॥ शाल्योदन रसाल च पान बदरजं तथा । यः प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छति शिवालयम् । रसाला, सूपशास्त्रे–ईषदाम्लदधिशर्करापयःसाधितंदुमरिचं सुगालितम् । पित्तना शमशर्म निहति वै मोदन च कुरुते रसालयाम् ॥ गौडमम्लमनम्ल वा पानक सुरभीकृतम् । तदेव संडमृद्वीकाशर्करासहित पुन । सा- म्ल सुतीक्ष्ण सहित पानक स्यान्निरत्ययम् । निरत्यय तत्कालम् ॥ श्रद्धया पायसयुत शर्करासहितं नर । यः प्रयच्छति दुर्गायै तस्य

राज्यं करे स्थितम् ॥ कालिकापुराणे—आमिक्षां परमान्नं च दधि चापि सशर्करम् । महादेव्यै निवेद्यैव वाजपेयफलं लभेत् ॥ दुर्गामुद्दिश्य पानीयं केतकीपुष्पवासितम् । यः प्रयच्छति राजेंद्र स गणाधिपतिर्भवेत् ॥ आम्रं च नारिकेरं च खर्जूरीबीजपूरकम् । यः प्रयच्छति दुर्गायै स याति परमं पदम् ॥ भक्ष्यं भोज्यं च खाद्यं च पेयं चोष्यं च पंचमम् । परमान्नं पिष्टकं च यावकं कृसरं तथा ॥ मोदकं पृथुकादीनि देव्यै पक्वानि चोत्सृजेत् । दद्यादित्यर्थः । निवेदयेन्महादेव्यै सर्वाणि व्यंजनानि च - क्षीरादीनि च गव्यानि माहिषाणि च सर्वशः । तांबूलानि च दत्त्वा तु गंधर्वैः सह मोदते ॥ विष्णुधर्मे— तंतुसंतानसन्नद्धं रंजितं रागवस्तुना । दुर्गे देवि भजस्वेदं वासस्ते परिधीयताम् ॥ भविष्ये—वस्त्राणि तु विचित्राणि सूक्ष्माणि च मृदूनि च । यः प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छति शिवालयम् ॥ यावंतस्तंतवो वीर तेषु वस्त्रेषु संस्थिताः । तावद्वर्षसहस्राणि मोदते चंडिकागृहे ॥ अलंकारं तु यो दद्याद्विप्रायाथ सुराय वा । स गच्छेद्वारुणं लोकं नानाभूषणभूषितः ॥ जातः पृथिव्यां कालेन ततो द्वीपपतिर्भवेत् ॥ विभूषणप्रदानेन राजा भवति भूतले ॥ सुवर्णतिलकं यस्तु भगवत्यै प्रयच्छति । स गच्छति परं स्थानं यत्र सा परमा कला ॥ सौवर्णे राजते वापि अक्षिणी यः प्रयच्छति । गोसहस्रफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ श्रोणिसूत्रप्रदानेन महीं सागरमेखलाम् । प्रशास्ति निहतामित्रो मित्रवृद्ध्या च मोदते । हेमनूपुरदानेन स्थानं सर्वत्र विंदति ॥ शि० र०—दैदीप्यते कनकदंडविराजितैश्च सच्चामरैः प्रचलकुंडलसुंदरीभिः । दिव्यांगनास्तनविराजितभूषितांगः कृत्वा तु चामरयुतां वरवस्त्रपूजाम् ॥ भ०— गैरिकस्य तु पात्राणि दुर्गायै यः प्रयच्छति । तस्य पुण्यफलं प्रोक्तं तारागणपदं दिवि । --गैरिकं सुवर्णम् ॥ निष्ककोटिप्रदानाद्धि रजतस्य ततो ऽधिकम् । हेमपात्राणि यद्दत्त्वा पुण्यं स्याद्वेदपारगे ॥ ताम्रपात्रप्रदानेन देव्यै शतगुणं भवेत् ।

तस्माच्छतगुण प्रोक्तं दत्त्वा मृन्मयमादरात् । मृन्मय करकादि ॥ उपस्करप्रदानेन प्रियमाप्नोत्यनुत्तमम् । उपस्करः प्रपूजार्थं धूपदीपादि पात्रकम् ॥ चन्द्रांशुनिर्मलं स्वच्छं दर्पणं मणिभूषितम् । पद्मोपशोभितं कृत्वा दिव्यमाल्यानुलेपनैः । दुर्गायाः पुरतः कृत्वा विष्णोर्वा शङ्करस्य वा । राजसूयफलं प्राप्य हंसलोके महीयते । हंसः सूर्यः ॥ शिवरहस्ये—दत्त्वा तु यः परमभक्तियुतो भवान्या घण्टावितानमथ चामरमातपत्रम् । केयूरहारमणिकुण्डलभूषितोऽसौ रत्नाधिपो भवति भूतलचक्रवर्ती ॥ शङ्खकुन्देन्दुसंकाशं प्रवालमणिभूषितम् । हेमदण्डमयं छत्रं दुर्गायै यः प्रयच्छति ॥ सच्छत्रेण विचित्रेण किंकिणीजालमालिना । धार्यमाणेन शिरसि शिवलोके महीयते ॥ विष्णुधर्मे—यानं शय्यां मणिं छत्रं पादुके वाऽप्युपानहौ । वाहनं गां गृहं वापि त्रिदशायै प्रयच्छति । वायुलोकं समासाद्य क्रीडते वायुना सह ॥ आर्यापाश्चामरं दत्त्वा मणिदण्डविभूषितम् । सुवर्णरूप्यं चित्रं वा दुर्गालोके महीयते । मयूरपिच्छव्यजनं नानारत्नविभूषितम् ॥ भगवत्यै नरो दत्त्वा स लभेत्सुवर्णकम् । तालवृन्तं महाबाहो चित्रकर्मोपशोभितम् ॥ भगवत्यै नरो दत्त्वा वैष्णवस्य फलं लभेत्। वैष्णवो यज्ञः । घंटे निवेदयेद्यस्तु लभते वाञ्छितं फलं ।हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव। इति संपूज्य निवेदयेत् ॥ अनः शकटमातरीति कोशात् । आदित्यपुराणे-यः शय्यां तु प्रयच्छेत देवेषु च गुरुष्वपि ॥ ज्ञानवृद्धेषु विप्रेषु दाता न नरकं व्रजेत् ॥ भ०-सर्वोपकरणैर्युक्तां सारदारुमयीं शुभाम् ॥ शय्यां निवेदयेद्यस्तु भगवत्यै नराधिप।दुकूलवस्त्रतन्तूनां परिसंख्या तु यावती ।तावद्वर्षसहस्राणि दुर्गालोके महीयते ॥ विष्णुधर्मे—पादुकासनदानेन भगवत्यै कृतेन तु । अग्निष्टोमफलं प्राप्य विष्णुलोके महीयते । यो गां पयस्विनीं शुद्धां तरुणीं शीलमण्डनाम् ॥ भगवत्यै नरो दद्यादश्वमेधफलं लभेत् ॥ वृषभं परिपूर्णाङ्गमुदासीनं शशिप्रभम् । यस्तु दद्यान्नतो भक्त्या भगव

त्यै सकृन्नरः । यावंति रोमकूपाणि वृषदेहस्थितानि तु । तावत्कल्पसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥ सुविनीतां स्त्रियं दासीं भृत्यकं वा नराधिप । प्रयच्छति च दुर्गायै राजसूयाश्वमेधभाक् ॥ विष्णुध०–प्रतिपाद्य तथा भक्त्या ध्वजं त्रिदशवेश्मनि । निर्दहत्याशु पापानि महापातकजान्यपि ॥ भवि०ध्वजं श्वेतपताकाद्यमथवा पंचरंगिकम् । किंकिणीजालसंवीतं श्वेतपद्मोपशोभितम् ॥ दत्त्वा देव्यै महाबाहो शक्रलोके महीयते । ध्वजमालाकुलं यस्तु कुर्याद्वै चंडिकालयम् ॥ महाध्वजाष्टकं चापि दिशासु विदिशासु च । कल्पानां तु शतं साग्रं दुर्गालोके महीयते ॥ यावद्धनुःप्रमाणेन पताका प्रतिपादिता । तावद्वर्षसहस्राणि दुर्गालोके महीयते । -चतुर्हस्तं धनुः ॥ का० पु०–प्रभूत बलिदानं च नवम्यां विधिवच्चरेत् । कूष्मांडमिक्षुदंडं च मद्यमांसानि चैव हि ॥ एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौ छागसमा मताः । भवि०–न तत्र देशे दुर्भिक्षं न च दुःखं प्रवर्तते ॥ नाकाले म्रियते कश्चित्पूज्यते यत्र चंडिका । शरत्काले महाष्टम्यां चंडिकां यः प्रपूजयेत् । विमानवरमारुह्य मोदते ब्रह्मणा सह ॥ अथावरणपूजा ॥ देव्या दक्षिणे सिंहं संपूज्य ॥ पूर्वादिक्रमेण एकादश देवीर्नाममंत्रेण पूजयेत् ॥ ॐह्रींजयंत्यैनमः, ॐह्रींमंगलायैनमः ॐह्रींकाल्यै० ॐह्रींभद्रकाल्यैन० ॐह्रींकपालिन्यै० ॐह्रींदुर्गायै० ॐह्रींक्षमायै० ॐह्रींशिवायै० ॐह्रींधात्र्यै० ॐह्रींस्वधायै० ॐह्रींस्वहायै० इति ॥ नामपूजनमनया रीत्या कुर्यात् सर्वत्रादौ ॐकारः ह्रींकारश्च पठनीयः ॥ ॐह्रींउग्रचंडिकायैन० ॐह्रींप्रचंडायै० ॐह्रींस्वाहायैन० प्रह्वायै० चंडवत्यै० चंडरूपायै० उग्रदंष्ट्रायै० महादंष्ट्रायै० ॐह्रींदंष्ट्राकरालायै० बहुरूपिण्यै० भीमसेनायै० ॐह्रींविशालाक्ष्यै० भ्रामर्यै० मंगलायै० नंदिन्यै० भद्रायै० लक्ष्म्यै० भोगदायै० पृथिव्यै० मेधायै० साध्यायै० यशोवत्यै० शोभायै० बहुरूपायै० धृत्यै० आनंदायै० सुनंदायै० नंदायै० विजयायै० मंगलायै० महीधृत्यै० शिवायै० क्षमा-

ये॰ सिद्धये॰ मुष्टये॰ सयायै॰ पुष्टयै॰ ऋद्धये॰ रत्यै॰ दीप्त्यै॰ कांत्यै॰ पद्मायै॰ लक्ष्म्यै॰ ईश्वर्यै॰ वृद्धिदायै॰ शक्त्यै॰ जयवत्यै॰ ब्राह्म्यै॰ जयत्यै॰ अपराजितायै॰ अजितायै॰ मानिन्यै॰ श्वेतायै॰ दित्यै॰ मायायै॰ मोहिन्यै॰ रतिप्रियायै॰ लालसायै॰ तारायै॰ विमलायै॰ कौमार्यै॰ शरण्यै॰ गोरूपिण्यै॰ क्षामायै॰ मत्यै॰ दुर्गायै॰ क्रियायै॰ अरुंधत्यै॰ घंटायै॰ करालायै॰ कपालिन्यै॰ रौद्र्यै॰ कालिकायै॰ त्रिनेत्रायै॰ सुरूपायै॰ बहुरूपायै॰ रिपुहंत्र्यै॰ अम्बिकायै॰ चर्चिकायै॰ देवपूजितायै॰ वैवस्वत्यै॰ कौमार्यै॰ माहेश्वर्यै॰ वैष्णव्यै॰ महालक्ष्म्यै॰ काल्यै॰ कौशिक्यै॰ शिवदूत्यै॰ चामुंडायै॰ शिवप्रियायै॰ मुण्डहंत्र्यै॰ दुर्गपारायै॰ महिषमर्दिन्यै॰ ख्यात्यै॰ कृष्णायै॰ धूम्रायै॰ अतिसौम्यायै॰ रौद्रायै॰ वाराह्यै॰ रुद्राण्यै॰ मयूरवाहिन्यै॰ विंध्यवासिन्यै॰ गंगायै॰ महापद्मायै॰ नवचण्ड्यै॰ चंडिकायैन॰ इति ॥ तत कालिकालीस्वा॰ हृदयायैनमः। कालिकालिलोहदण्डायैस्वा॰ मुखे। कालिकालिलोहदण्डायैस्वा॰ नेत्रे। पुरतः॥ अथ पञ्चवक्त्राणि ॥ ईशानाय॰ शिरसि॰ कालिकालितत्पुरुषाय॰ मुखे॰ वज्रेश्वरीघोरायै॰ हृदयम्॰ लोहदण्डायै॰ नाभौ॰ वामदेवाय॰ पादयो स्वाहा सद्योजातायै॰ सर्वांगेषु॰ ॥ अथ आयुधानि ॥ दक्षिणोर्ध्वकरादि, त्रिशूलं खड्ग बाणं शक्तिं वामे खेट पाशं अङ्कुश घंटाम्। तत वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय॰ ॐहुंफट्नमः इतिसिंहम् ॥ महिषासनाय॰ नागपाशाय॰ ॥ इति पूजा ॥ भविष्ये—वर्षैः पञ्चसहस्रेस्तु यत्पापं समुपार्जितम्। तत्सर्वं विलयं याति घृताभ्यंगेन वै नृप ॥ घृतेन पयसा दध्ना स्नापयेच्चण्डिकां नृप। निंबपत्रैश्च गंधाद्यैर्धूपैर्यत्नतस्तत ॥ इति महानवमी दुर्गाव्रतविधिः ॥ ॥ अथ अक्षय्यनवमी व्रतप्रारम्भः ॥ वालखिल्या ऊचुः। कार्तिके शुक्लनवमी तत्राभूद्द्वापर युगम्। पूर्वापराह्नगा ग्राह्या क्रमाद्दानोपवासयोः १ अत्र कूष्मांडको नाम हतो दैत्यस्तु विष्णुना। तद्रोमभिः समद्भूता

वल्यः कूष्मांडसंभवाः २ तस्मात्कूष्मांडदानेन फलमाप्नोति निश्चितम् । कूष्मांडं पूजयेच्चैव गंधपुष्पाक्षतादिना ३ पंचरत्नैः समायुक्तं गोघृतेन समन्वितम् । फलान्नदक्षिणायुक्तं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ४ कूष्मांडं बहुबीजाढ्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा । दास्यामि विष्णवे तुभ्यं पितॄणां तारणाय च ५ देवस्यत्वेति मंत्रेण पितॄणां दत्तमक्षयम् । अस्यामेव नवम्यां तु कुर्यात्कृष्णेन यो नरः ६ स्वशाखोक्तेन विधिना तुलस्याः करपीडनम् । कन्यादानफलं तस्य जायते नात्र संशयः ७ कार्तिके शुक्लनवमीं समवाप्य जितेंद्रियः । हरिं विधाय सौवर्णं तुलस्या सहितं शुभम् ८ पूजयेद्विधिवद्भक्त्या व्रती तत्र दिनत्रयम् ॥ एवं यथोक्तविधिना कुर्याद्वैवाहिकं विधिम् ९ ग्राह्यं त्रिरात्रमत्रैव नवम्यामनुरोधतः । मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या नवमी पूर्ववेधिता १० धात्र्यश्वत्थौ च एकत्र रोपयित्वा समुद्वहेत् । न नश्यते तस्य पुण्यं कल्पकोटिशतैरपि ११ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासं पुरातनम् । बभूव विष्णुकांच्यां तु क्षत्रियः कनकाभिधः १२ धनाढ्यो वैश्यवृत्तिश्च वैष्णवो राजपूजितः । बहुकालो गतस्तस्य विनापत्यं मुनीश्वराः १३ ततो नानाव्रतैर्जाता कन्या कमललोचना । सुरूपा लक्षणोपेता नानागुणसमन्विता १४ पिता तस्या नाम चक्रे किशोरीति च विश्रुतम् । एकदा तद्गृहे यातो जन्मपत्रनिरीक्षकः १५ दर्शयित्वा जन्मपत्रं कथं कन्या भवेदियम् । ततस्तेन क्षणं ध्यात्वा कनक शृणु मे वचः १६ यदि ब्रवीमि सत्यं चेत्तव दुःखं भविष्यति । यद्यसत्यमहं ब्रूयां मिथ्यात्वं मम जायते १७ तस्मात्सत्यं वदिष्यामि यद्रोचति तथा कुरु । अस्याः करग्रहं कुर्याद्योसौ वज्रान्मरिष्यति १८ इति तद्वचनं श्रुत्वा कनको दुःखितो ऽभवत् । न चाकारि विवाहो ऽस्याः सा च ब्राह्मणपूजने १९ नियुक्ता ऽन्यगृहं, सा तु नानेया मन्मुखाग्रतः । दृष्ट्वेमां रूपसंपन्नां दुःखं मे बाधयिष्यति २० स्थित्वा ऽन्यस्मिन्गृहे सा तु द्विजातिथ्यमचीकरत् । कदाचिद्दैवयोगेन तत्रागाद्द्विजपुंगवः २१

यात्रार्थं विष्णुकांच्यास्तु वैशाखे मासि शंकरः । कनको विप्रशुश्रूषी ज्ञात्वा ऽत्रैव समागतः २२ आगत्यांगणमध्ये तु उपविष्टो द्विजोत्तमः । किशोर्यागत्य चातिथ्य शंकरस्य कृत तदा २३ दृष्ट्वा तां तरुणीं नम्रां सुवेषां विनयान्विताम् , अजातकरपीडां च सखीं दृष्ट्वा ऽभ्युवाच सः २४ शंकर उवाच । चंदने वद शीघ्रं त्वं किशोरी न विवाहिता । किमत्र कारण जात तरुणी कामरूपिणी २५ इति तद्वचनं श्रुत्वा चंदना सर्वमब्रवीत् । तदा कृपालुना तेन तत्पित्र्यग्रे निवेदितम् २६ अस्यै मंत्रं प्रयच्छामि श्रीविष्णोर्द्वादशाक्षरम् । करोतु वर्षत्रितय जपमस्य सुलोचना २७ प्रात स्नानवती चास्तु तुलसीवनमालिका । कार्तिकस्य सिते पक्षे नवम्यां विष्णुना सह २८ सौवर्णेन तुलस्याश्च विवाह कारयत्वियम् । तेन व्रतप्रभावेण विधवा न भविष्यति २९ तत्पित्रा ऽपि तथेत्युक्त प्रायश्चित्तं स दत्तवान् । किशोर्यै वैष्णव धर्मं समग्रं चादिदेश सः ३० द्विजेन तेन यत्प्रोक्त किशोर्यपि तथा ऽकरोत् । वर्षत्रय यथाशक्त्या किशोर्या तद्व्रत कृतम् ३१ चतुर्थे कार्तिके मासि किशोरी स्नपनाय च । प्रात काले गता बाला तस्मिन्मार्गे सुलोचना ३२ क्षत्रियेण यदा दृष्टा प्राप मोह जडात्मकः । पृष्ठे तस्यास्तु सख्यो भावयैस्तामनिंदिताम् ३३ केचित्तां ददृशुर्दूरात्केचित्पश्यंति गुप्तित । स्त्रियोपि तां प्रपश्यति पुरुषाणा तु का कथा ३४ यथा द्वितीया चद्रस्य दर्शने चोत्सुका जना । तथा यत्रो प्रतीक्षंति तद्द्वारे सकला जनाः ३५ निमेषमात्रमर्केण दृष्टा स्थित्वा तु बालिका । अधिकं किं वर्णनीयं तत्सौंदर्यं मुनीश्वराः ३६ केचिद्वदंति देवीय नागकन्येति चापरे । रुद्रसमोहनार्थाय जाता सा विश्वमोहिनी ३७ सा न पश्यति लोकांश्च न मार्गं न सखीगणम् । ध्यायंती हृदये विष्णुं तुळसीं देवरूपिणीम् ३८ तां गृहीतु मनश्चक्रे विलेपी द्रव्यवान्खली । नाना भेदाः कृतास्तेन न लेभे चांतरं क्वचित् ३९ मालाकारी गृहं गत्वा तस्यैद्रव्यमयच्छत । येन केन प्रकारेण किशोर्या सह संगमः ४० यथा स्यात्क्रियतां

भद्रे देयमस्माच्चतुर्गुणम् । प्रतिमासं किशोर्यादीयमानाद्द्रव्यादधिकं ददामीत्यर्थः । तथा च बहुलोपाया दृष्टास्तद्ग्रहणाय च ४० नददर्श तदोपायम
वदत्सा विलेपिनम् ४१ न दृश्यते मयोपायस्त्वया यत्प्रोच्यतेऽधुना । मया तदेव कर्तव्यं द्रव्यग्रहणसिद्धये ४२ विलेप्युवाच । तव कन्या तु भू-
त्वाहं नयामि कुसुमानि च । अग्रे यद्भावि भवतु गृहाणाह्निशतंशतम् ४३ तयापि च तथेत्युक्ते सप्तम्यां निश्चयः कृतः । अष्टम्यां सा गता तत्र कि-
शोरी तामुवाच ह ४४ मालाकारि श्वो नवमी तुलस्याः पाणिपीडनम् । तिष्ठत्यतस्त्वयानेया मुकुटाः पुष्पसंभवाः ४५ मालिन्युवाच । मत्कन्या
चागता ग्रामान्नानाकौतुककारिणी । यद्यत्प्रोक्तं त्वया बाले समानेष्यति सत्वरम् ४६ तथापि च तथेत्युक्त्वा मालिनी स्वगृहं ययौ । कथितः
सर्ववृत्तांतो विलेप्यग्रे ततोऽभवत् ४७ प्राप्ता महेंद्रपदवीत्येवं सुखमवाप सः । मालिन्या रचिता रात्रौ मुकुटा विविधास्तदा ४८ विष्णुकांच्यां
तदा राजा जयसेनो बभूव ह । तस्य पुत्रो मुकुंदोऽभूत्सूर्यभक्तिपरायणः ४९ किशोर्यास्तु श्रुता तेन वार्तेयमतिसुंदरा । तदा तेन मुकुंदेन संक
ल्पः कृत एव हि ५० किशोरी यदि भार्या मे भविष्यति दिवाकर । तदान्नमहमश्नामि अन्यथा स्यान्मतिर्मम ५१ कृत्वेत्थं स तु संकल्पमुपवासा-
न्प्रचक्रमे । सप्तमेऽहनि सूर्योऽसौ स्वप्ने वचनमब्रवीत् ५२ सूर्य उवाच । किशोर्या विधवायोगो वर्तते ऽसौ कथं भवेत् । सा ते पत्नी प्रदा-
स्यामि त्वन्यां पद्मायतेक्षणाम् ५३ मुकुंद उवाच । यदि देव प्रसन्नोऽसि विश्वं सृजसि त्वं प्रभो । बालवैधव्ययोगं च हंतुं त्वं च क्षमो ह्य-
सि ५४ इति तस्य वचः श्रुत्वा सांत्वना बहुला कृता । न मन्यते मुकुंदोऽसौ तथेत्युक्त्वा गतो रविः ५५ तुलसीव्रतमाहात्म्याद्विधवा-
त्वं गमिष्यति । रात्रौ स्वप्नः किशोर्यास्तु तस्यामेवाभ्यजायत ५६ आगता कन्यका काचिद्भर्त्रा सह प्रमोदिता । भर्तारं वदति स्वप्ने मम
माता किशोरिका ५७ तद्भर्त्राऽपि तथेत्युक्तं प्रदास्ये बलिमुत्तमम् । एतद्धस्तेन पश्चात्तु विवाहोऽस्या भविष्यति ५८ श्रुत्वा बलिप्रदा

न सा स्वप्ने चिंतातुरा ऽभवत् । क द्वादशाक्षरी विद्या क्केद विष्णुसमर्पणम् ५९ नरकद्वारमूलं क मद्धस्तात्पशुमारणम् । एवं सा तु स
मुत्थाय स्वप्नोऽयमिति निश्चितम् ६० भावयित्वा समाहूय चंदनां वाक्यमब्रवीत् । निवेद्य दृष्टं स्वप्नं तु कीदृगस्य फलं वद ६१ अद
नोवाच । फलं तु सम्यक्कस्याणि तवानिष्टं विनश्यति । विवाहो भविता शीघ्रं तुलसीव्रतकारणात् ६२ इत्थं स्वप्नफलं श्रुत्वा ततो क्
कुटशब्दितम् । श्रुत्वा सा सहसोत्थाय स्नात्वोद्योगमथाकरत् ६३ यावदायाति सा स्नानं कृत्वा देहे किशोरिका । तावद्विलेपी मालिन्याः
पुत्री भूत्वा समाययौ ६४ कृत्वा केशांश्च गोपुच्छैः श्मश्रु चोत्पाटितं बलात् । अपरं शाटकं धृत्वा निंबुम्यां च स्तनौ कृतौ ६५ सर्वा-
लंकारशोभाढ्या कटाक्षयति चापरान् । न ज्ञाता सा तु केनापि पुमान्स्त्रीरूपधारकः ६६ ध्यानं धृत्वा तया हस्तौ प्रसार्येते यदा तदा ।
दत्ते विलेपी पुष्पाणि विलोकयति सर्वतः ६७ कथमस्या मम स्पर्शो भविष्यति विचिंतयन् । एवं दिनत्रयं तस्य प्रयातं तु मुनीश्वराः ६८
तस्मिन्नहनि संजातो कनकः शोकपीडितः । किं कार्यमधुना ऽस्माभी राजपुत्रो वरिष्यति ६९ एवं चिंतयतस्तस्य प्रातःकालो बभूव ह ।
राजलोकाः समायाता गृहीत्वा वरवाहनम् ७० अभ्यंतरे समागत्य मंत्री वचनमब्रवीत् । गृहे ऽस्ति तव कन्यैका मुकुंदार्थे प्रदीयताम् ७१
मा विचारो ऽस्तु भवतो नृपाज्ञा परिपाल्यताम् । कनकेन तथेत्युक्तं मम भाग्यमुपस्थितम् ७२ महाराजकुमारस्य वधू कन्या भविष्यति । ततः
प्रोवाच मंत्री तं द्वादश्यां लग्नमुत्तमम् ७३ रात्रौ तिष्ठति युग्माख्यं रविः षष्ठे विधुश्च खे ॥ भवे भौमो गुरुर्धर्मे पंचमे बुधभार्गवौ ७४ शनिस्तृती-
ये ऽपौ राहुर्विवाहसमयः स तु । उभौ सम्भृतसंभारावुभावपि धनान्वितौ ७५ द्वादश्यामाययौ सायं राजपुत्रः ससैनिकः । अब्रवीत्तत्र कनकं तेकी

१ शाटकं वस्त्रविशेषः ।

राजपुरोहितः ७६ तेक्युवाच । अथो निरोधः क्रियतां किशोर्याश्च नृपाज्ञया । भविष्यति महादेवी नोदृश्या पुरुषैः कचित् ७७ इति तद्वचनं श्रुत्वा पुरुषास्तु निराकृताः । जायारूपो विलेपी तु दैवात्तत्रैव संस्थितः ७८ ततो ऽर्द्धरात्रवेलायां मुकुंदोऽभ्यंतरं ययौ । तुलस्याग्रे स्थिता बाला किशोरी संस्मरन्हरिम् ७९ ततो घनघटाशब्दस्तुमुलः समपद्यत । महावायुर्ववौ तत्र प्रशांताः सर्वदीपकाः ८० विद्युल्लताश्चकमिता अंधीभूतोऽखिलो जनः । मिथ्या न भास्करवचो मुकुंदो चिंतयन्हृदि ८१ अन्यैः प्रतर्कितं लोके वैधव्यस्य तु कारणम् । भीतो मुकुंदो हृदये यावद्ध्यायति भास्करम् ८२ तस्यां संधौ धृतं तस्याः करपद्मं विलेपिना । तस्याः करस्य संसर्गात्स्वर्गाद्वज्रं पपात ह ८३ नीतस्तेन विलेपी तु तत्कालं यममंदिरम् । बाह्य आसीत्कलकलो मुकुंदो ऽयं मृतस्त्विति ८४ क्षणादेव ततो ज्ञातं मालाकारसुता मृता । ततस्तयोर्विवाहो ऽभूद्राज्यं प्राप किशोरिका ८५ किशोर्याश्च समुत्पन्ना भ्रातरस्तुलसीव्रतात् । आदौ शास्त्रं सत्यमासीत्ततो देवो दिवाकरः ८६ तुलसीव्रतमाहात्म्यात्कथं न स्युर्मनोरथाः ८७ सौभाग्यार्थं धनार्थं च विद्यार्थे रुङ्निवृत्तये । संतत्यर्थं प्रकर्तव्यं तुलस्याः पाणिपीडनम् ८८ इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां कार्तिकशुक्लनवम्यामक्षय्यनवमीव्रतं स० ॥ ॥ इति नवमीव्रतानि समाप्तानि ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथ दशमीव्रतानि लिख्यंते ॥ ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लदशम्यां दशहराख्यं स्नानदानादिकव्रतम् । स्कांदे— ज्येष्ठस्य शुक्लदशमी संवत्सरमुखा स्मृता । तस्यां स्नानं प्रकुर्वीत दानं चैव विशेषतः ॥ यां कांचित्सरितं प्राप्य दद्यादर्घं तिलोदकम् । मुच्यते दशभिः पापैर्विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ज्येष्ठशुक्लदशम्यां तु भवेत्सौम्यदिनं[1] यदि । ज्ञेया हस्तर्क्षसंयुक्ता सर्वपापहरा तिथिः ॥ वराहपुराणे—दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठमासे बुधे ऽहनि ।

१ सौम्यदिनमित्यत्र भौमदिनमिति पाठांतरं, व्रतार्के ।

अवतीर्णा यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा ॥ हरते दश पापानि तस्माद्दशहरा स्मृता। स्कान्दे—ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः॥ गरानन्दे व्यतीपाते कन्याचंद्रे वृषे रवौ । दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ भविष्ये—तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गंगाजले स्थितः । पठेत्तु दशकृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः । सोपि तत्फलमाप्नोति गंगां संपूज्य यत्नतः ॥ इति दशहराविधिः ॥ ॥ अथ दशहरा स्तोत्र पठेत् ॥ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वावयवशोभिताम् । रत्नकुंभसिताम्भोजवरदाभयसत्कराम् ॥ श्वेतवस्त्रपरीधानां मुक्तामणिविभूषिताम् । एवं ध्यायेत्सुसौम्यां च चंद्रायुतसमप्रभाम् ॥ चामरैर्वीज्यमानां च श्वेतच्छत्रोपशोभिताम् । सुप्रसन्नां च वरदां करुणार्द्रां निरंतराम् । सुधाप्लावितभूपृष्ठां दिव्यगंधानुलेपनाम् । त्रैलोक्यनिर्मितां गंगां सर्वदेवैरधिष्ठिताम् ॥ दिव्यरत्नविभूषां च दिव्यमाल्यानुलेपनाम् । ध्यात्वा जले यथा प्रोक्तां तथार्चामत्र पूर्ववत् ॥ ॐनमोभगवतिहिलिहिलिमिलिमिलिगंगेमांपावयपावयस्वाहा । अनेन मंत्रेणागमोक्तषोपचारपुष्पांजलिं श्रीगंगायै निवेदयेत् ॥ (परदारपरद्रव्यपरद्रोहपराङ्मुख । गंगा ब्रूते कदागत्य मामयं पावयिष्यति) ॥ एवं श्रीगंगायाः ध्यानार्चने विधाय पश्चाज्जलमध्ये स्थित्वा, अद्येत्यादि० ज्येष्ठमासे सिते पक्षे प्रतिपदमारभ्य दशमीपर्यंतं प्रतिदिनमेकोत्तरवृद्धया सर्वपापक्षयार्थं दशहरास्तोत्रजपमहं करिष्ये इति संकल्प्य स्तोत्रं पठेत् ॥ ब्रह्मोवाच । ॐनमः शिवायै गंगायै शिवदायै नमो नमः । नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः ॥ नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शांकर्यै ते नमो नमः । सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये । सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्छ्रेष्ठ्यै नमोस्तु ते ॥ स्थाणुजंगमसंभूतविषहन्त्र्यै नमो ऽस्तु ते । संसारविषना

१ पञ्चवर्षं तु वर्णोच्यते स्मृतये ।

शिन्यै जीवनायै नमो ऽस्तु ते ॥ तापत्रितयसंहर्त्र्यै प्राणेश्यै ते नमो नमः । शांतिसंतानकारिण्यै नमस्ते शुद्धमूर्तये ॥ सर्वसंसिद्धिकारिण्यै नमः पापारिमूर्तये । भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै भद्रदायै नमो नमः॥भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमोऽस्तु ते । मंदाकिन्यै नमस्ते ऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः। नमस्त्रैलोक्यभूषायै त्रिपथायै नमो नमः । नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः॥नंदायै लिंगधारिण्यै सुधाधारात्मने नमः।नमस्ते विश्वमुख्यायै नमो देव्यै नमो नमः ॥ बृहत्यै ते नमस्ते ऽस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः। नमस्ते विश्वमित्रायै नंदिन्यै ते नमो नमः ॥ पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः । परापरशताढ्यायै तारायै ते नमो नमः ॥ पाशजालनिकृंतिन्यै अभिन्नायै नमो नमः । शांतायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः । उग्रायै सुखजग्ध्यै च संजीविन्यै नमो ऽस्तु ते । ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमो नमः ॥ प्रणतार्तिप्रभंजिन्यै जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते । सर्वापत्प्रतिपक्षायै मंगलायै नमो नमः ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ निर्लेपायै दुर्गहंत्र्यै दक्षायै ते नमो नमः । परापरपरायै च गंगे निर्वाणदायिनि ॥ गंगे ममाग्रतो भूया गंगे मे देवि पृष्ठतः । गंगे मे पार्श्वयोर्देवि त्वयि गंगे ऽस्तु मे स्थितिः ॥ आदौ त्वमंते मध्ये च सर्वं त्वं गां गते शिवे । त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं पुमान्पर एव हि ॥ गंगे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे । य इदं पठते स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरः प्रियः ॥ शृणोति श्रद्धया युक्तः कायवाक्चित्तसंभवैः । दशधासंस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते ॥ रोगस्थो मुच्यते रोगादापद्भ्यश्च प्रमुच्यते । द्विषद्भ्यो बंधनाद्यैश्च भयेभ्यश्च प्रमुच्यते ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते । इमं स्तवं गृहे यस्तु लेखयित्वा विनिक्षिपेत् ॥ नाग्निचोरभयं तत्र पापेभ्यो

१ नारायण्यै नमो नमः इति वा पाठः । २ रेवत्यै ते इति पाठः ।

हि भय नहि ॥ ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता । संहरेत्त्रिविधं पाप बुधवारेण संयुता । तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गंगाजले स्थितः । यः पठेद्दशकृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः ॥ सोपि तत्फलमाप्नोति गंगां संपूज्य यत्नतः । पूर्वोक्तेन विधानेन यत्फलं संप्रकीर्तितम् ॥ यथा गौरी तथा गंगा तस्माद्गौर्यास्तु पूजने । विधिर्यो विहितः सम्यक्सोपि गंगाप्रपूजने ॥ यथा शिवस्तथा विष्णुर्यथा लक्ष्मीस्तथा उमा ॥ लक्ष्मीरुमा तथा गंगा यत्तूरूपं न भिद्यते । विष्णुरुद्रांतरं यश्च श्रीगौर्यारंतरं तथा ॥ गंगागौर्योरंतरं च यो ब्रूते च स मूढधीः । रौरवादिषु घोरेषु नरकेषु पतत्यधः ॥ अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः । परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम् ॥ पारुष्यमनृतं चैव पैशून्यं चापि सर्वतः । असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसाऽनिष्टचिंतनम् । वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम् ॥ एतानि दश पापानि हर त्वमथ जाह्नवि । दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता ॥ एतैर्दशविधैः पापैः कोटिजन्मसमुद्भवैः । मुच्यते नात्र संदेहो ब्रह्मणो वचनं यथा ॥ दशत्रिंशच्छतान्सर्वान्पितॄनथ पितामहान् । उद्धरत्येव संसारान्मंत्रेणानेन पूजिता ॥ ॐ नमोभगवत्यैनारायण्यैदशपापहरायै शिवायैगंगायैविष्णुमुख्यायैक्षयायैरेवत्यैभागीरथ्यैनमोनमः । ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः । गरानंदे व्यतीपाते कन्या चंद्रे वृषे रवौ ॥ दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृतकलशाब्जाभुयता भीत्यभिष्टाम् । विधिहरिहररूपां सेंदुकोटीरजुष्टां कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम् । भूयः शंभुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ॥ इति काशीखंडे दशहरास्तोत्रं संपू० ॥ ॥ अथाषाढशुक्लदशमीमन्वादिः । सा पू

र्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या । तत्र यस्यां कस्याञ्चिच्छुक्लदशम्यामाशादशमीव्रतं ॥ हेमाद्रौ भविष्ये— । युधिष्ठिर उवाच । कथमाशादशम्येषा गोविंद क्रियते कदा । दमयंत्या नलस्येव यया ज्ञातः समागमः ॥ कृष्ण उवाच । राज्याशया राजपुत्रः कृष्यर्थं च कृषीवलः । वाणिज्यार्थे वणिक्पुत्रः पुत्रार्थे गुर्विणी तथा ॥ धर्मकामार्थसंसिद्ध्यै लोकः कन्यावरार्थिनी । यष्टकामो द्विजवरो योगी श्रेयोर्थमेव च ॥ चिरप्रवसिते कांते बाले दंतनिपीडिते । एतदन्येषु कर्तव्यमाशाव्रतमिदं तथा ॥ यस्माद्यस्य भवेदार्तिः कर्तव्यं तेन तद्व्रतम् । शुक्लपक्षे दशम्यां तु स्नात्वा संपूज्य देवताः ॥ नक्तमाशासुपूज्या वै पुष्पभक्तकचंदनैः । गृहांगणे लेखयित्वा यवैः पिष्टांतकेन वा । स्त्रीरूपाश्चाधिदेवस्य शस्त्रवाहनचिह्निताः ।-अधिदेवस्य तत्तद्दिक्पालस्य इंद्रादयस्त च्छस्त्रैर्वाहनैश्च चिह्निता लेखयित्वेत्यर्थः ॥ दत्त्वा घृताक्तं नैवेद्यं पृथग्दीपाँश्च दापयेत् । फलानि कालजातानि ततः कार्यं निवेदयेत् ॥ आशा स्वाशाः सदा संतु सिद्ध्यंतां मे मनोरथाः । भवतीनां प्रसादेन सदा कल्याणमास्थिताः ॥ एवं संपूज्य विधिवद्दत्त्वा विप्राय दक्षिणाम् । अनेन क्रमयोगेन मासि मासि समाचरेत् ॥ वर्षमेकं कुरुश्रेष्ठ ततः पश्चात्समुद्यजेत् । अर्वाक्संवत्सरस्यापि सिद्ध्यर्थं वा समुद्यजेत् ॥ सौवर्णीः कारयेदाशा रौप्याः पिष्टातकेन वा । ज्ञातिबंधुजनैः सार्द्धं ततः सम्यगलंकृतः ॥ पूज्याश्च क्रमयोगेन मंत्रैरेभिर्गृहांगणे ॥ त्वयि सन्निहितः शक्रः सुरासुरनमस्कृतः । पूर्वा त्वं भुवनस्यास्य ऐंद्रि दिग्देवते नमः । अग्नेः परिग्रहादाशे त्वमाग्नेयीति पठ्यते । तेजोरूपा पराशक्तिराग्नेयी वरदा भव ॥ धर्मराजं समाश्रित्य लोकान्संयमयस्यमून् । तेन संयमिनी चासि याम्ये सत्कामदा भव । खड्गहस्तातिविकृता निर्ऋतिस्थानमाश्रिता । तेन निर्ऋतिनामाऽसि त्वमाशां पूरयस्व मे ॥

१ पिष्टातकेन पटवासकेन (‘बुका’ इति ख्यातेन)

त्वय्यारते भुवनाधारो वरुणो यादसां पतिः। कामार्थं मम धर्मार्थं वारुणि प्रवणा भव ॥ अधिष्ठिता ऽसि यस्मात्त्वं वायुना जगदायुना। वायव्ये त्वमतः शांतिं नित्यं यच्छ ममालये ॥ धनदेनाधिष्ठिता त्वं प्रख्याता त्वमिहोत्तरा। निरुत्तरा भवास्माकं दत्त्वा सद्यो मनोरथम् ॥ ऐशानि जगदीशेन शंभुना त्वमलंकृता। पूरयस्वाशु मे देवि वांछितानि नमो नमः ॥ भुजगाष्टकुलेन त्वं सेविताऽसि यतो ह्यधः। नागांगनाभिः सहिता हिता भव ममाद्य वै ॥ सर्वलोकोपरिगता सर्वदा त्वं शिवाय च। सनकाद्यैः परिवृता ब्राह्मि मां पाहि सर्वदा ॥ नक्षत्राणि च सर्वाणि ग्रहास्तारागणास्तथा। नक्षत्रमातरो याश्च भूतप्रेतविनायकाः। सर्वे ममेष्टसिद्ध्यर्थं भवंतु प्रवणाः सदा। एभिर्मंत्रैः समभ्यर्च्य पुष्पधूपादिना ततः। वासोभिरभिषेकाद्यैः फलानि विनिवेदयेत् ॥ ततो घंटानिनादेन गीतवादित्रमंगलैः। नृत्यंतीभिर्वरस्त्रीभिर्जागृत्या च निशां नयेत् ॥ कुंकुमाक्षततांबूलदानमानादिभिः सुखम्। प्रभाते वेदविदुषे ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ अनेन विधिना सर्वं क्षमाप्य प्रणिपत्य च। भुंजीत मित्रसहितः सुहृद्बंधुजनेन च ॥ एवं यः कुरुते पार्थ दशमीव्रतमादरात्। सर्वान्कामानवाप्नोति मनोभिलषितान्नरः ॥ स्त्रीभिर्विशेषतः कार्यं व्रतमेतद्युधिष्ठिर। प्राणिवर्गे यतो नार्यः श्रद्धाकामपरायणाः ॥ धन्यं यशस्यमायुष्यं सर्वकामफलप्रदम्। कथितं ते महाराज मया व्रतमनुत्तमम् ॥ ये मानवा मनुजपुंगवकामकामाः संपूजयंति दशमीषु सदा दशाशाः। तेषां विशेषनिहितान् हृदयेपि कामानाशाः फलंत्यलमलं बहुनोदितेन ॥ इति श्रीभविष्योत्तरे आशादशमीव्रतम् ॥ ॥ अथ भाद्रशुक्लदशम्यां दशावतारव्रतं भविष्योत्तरे ॥ युधिष्ठिर उवाच। व्रतं दशावताराख्यं कृष्ण ब्रूहि सविस्तरम्। समंत्रं सरहस्यं च सर्वपापोपशांतिदम् ॥ कृष्ण उवाच। दशम्यां शुक्लपक्षस्य मासे भौष्ठपदे शुचिः। स्नात्वा जलाशये स्वच्छे पितृदेवादितर्पणम् ॥ कृत्वा कुरुकुलश्रेष्ठ गृहमागत्य मानवः। गृहीयाद्धान्यचूर्णस्य स्वह-

स्तप्रसृतित्रयम् ॥ क्रमेण पाचयेत्तत्तु पुंसंज्ञं घृतपायसम् । वर्षे वर्षे दिने तस्मिन्नेवं वर्षाणि वै दश ॥ प्रथमेऽपूपकान्वर्षे द्वितीये घृतपूरिकान् । तृतीये पूपकासारान् चतुर्थे मोदकान् शुभान् ॥ सोहालिकान्पंचमे वै षष्ठे तु खंडवेष्टकान् । सप्तमेऽब्दे कोकरसानर्कपुष्पान्तथाऽष्टमे ॥ नवमे कर्णवेष्टांश्च दशमे मंडकान् शुभान् । दशात्मनो दश हरेर्दश विप्राय दापयेत् ॥ क्रमेण भक्षयेद्दत्त्वा यथोक्तविधिना नृप । अर्धार्धं विष्णवे देयमर्धार्धं च द्विजातये ॥ ततोपरार्द्धमश्नीयाद्दत्वा रम्ये जलाशये । दशावतारमभ्यर्च्य पुष्पधूपविलेपनैः ॥ मंत्रेणानेन मेधावी हरिमभ्युक्ष्य वारिणा ॥ मत्स्यं कूर्मं वराहं च नारसिंहं च वामनम् । रामं रामं च कृष्णं च बौद्धं च कल्किनं तथेति ॥ गतोऽस्मि शरणं देवं हरिं नारायणं विभुम् । प्रणतोस्मि जगन्नाथं स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥ छिनत्तु वैष्णवीं मायां भक्त्या प्रीतो जनार्दनः ।श्वेतद्वीपं नयत्वस्मान्मयात्मा सन्निवेशितः ॥ अत्र हैमीर्महार्हाश्च दश मूर्तीः सुलक्षणः ॥ गंधपुष्पैश्च नैवेद्यैरर्चयेद्विधिपूर्वकम् । एवं यः कुरुते भक्त्या विधिनाऽनेन सुव्रत ॥ व्रतं दशावताराख्यं तस्य पुण्यफलं शृणु । श्राव्यंते यास्त्विमा लोके पुरुषाणां दशा दश । ताश्छिनत्ति न संदेहश्चक्रप्रहरणो विभुः ॥ संसारसागराद्घोरात्समुद्धृत्य जगत्पतिः । श्वेतद्वीपं नयत्याशु व्रतेनानेन तोषितः ॥ किं तस्य न भवेल्लोके यस्य तुष्टो जनार्दनः । यद्दुर्लभं फलं प्राप्तुं मनसो यन्न गोचरम् ॥ तदप्यप्रार्थितं ध्यातो ददाति मधुसूदनः । सोहं जनार्दनः साक्षात्कालरूपधरोऽच्युतः । मर्त्यलोके स्वयं प्राप्य भूभारोत्तारणाय च ॥ या स्त्रीव्रतमिदं पार्थ करिष्यति मयोदितम् । सा च लक्ष्म्या युता नित्यं पुत्रभक्तिसमन्विता । मर्त्यलोके चिरं स्थित्वा विष्णुलोके महीयते ॥ ये पूजयंति पुरुषाः पुरुषोत्तमस्य मत्स्यादिकांस्तु दशमीषु दशावतारान् । मन्ये दशस्वपि दशासु सुखं विहृत्य ते यांति यानमधिरुह्य मुरारिलोकम् ॥ इति भविष्ये भाद्रपदशुक्लदशम्यां दशावतारव्र-

तं सपूर्णम् ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लदशम्यां विजयादशमीव्रतम् ॥ सा च तारकोदयव्यापिनी ग्राह्या । तदुक्तं चिंतामणौ–आश्विनस्य सिते
पक्षे दशम्यां तारकोदये । स कालो विजयो नाम सर्वकामार्थसाधकः ॥ रत्नकोशे–ईषत्संध्यामतिक्रांतः किंचिदुद्भिन्नतारकः । विजयो
नाम कालोयं सर्वकामार्थसाधकः ॥ दिनद्वये तद्व्याप्तावव्याप्तौ वा ऽपराजिता पूजायां पूर्वैव । तदुक्तं हेमाद्रौ स्कांदे–दशम्यां तु
नरैः सम्यक्पूजनीया ऽपराजिता । ईशानीं दिशमाश्रित्य अपराह्ने प्रयत्नतः ॥ या पूर्णा नवमीयुक्ता तस्यां पूज्या ऽपराजिता । क्षे
मार्थं विजयार्थं च पूर्वोक्तविधिना नरैः॥नवमीशेषसंयुक्तदशम्यामपराजिता । ददाति विजयं देवी पूजिता जयवर्द्धिनी ॥ तथा–आश्विने शु
क्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेन्नरः । एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम् ॥ यात्रा त्वेकादशमुहूर्ते कार्या । तदाह भृगुः–आश्विनस्य सिते
पक्षे दशमी सर्वराशिषु । सायंकाले शुभा यात्रा दिवा च विजयक्षणे ॥ एकादशमुहूर्तो यो विजयः समकीर्तितः । तस्मिन्सर्वैर्विधातव्या
यात्रा विजयकांक्षिभिः ॥ दिनद्वये एकादशमुहूर्ते व्याप्तावव्याप्तौ वा श्रवणयुक्ता ग्राह्या । तथा च हेमाद्रौ मदनरत्ने कश्यपः–उदये दश
मी किंचित्संपूर्णैकादशी यदि । श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजया भवेत्॥श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुत्स्थः प्रस्थितो यतः । उल्लंघयेयुः सीमांतं
तद्दिनर्क्षे ततो नराः ॥ अत्र कृत्यं भविष्ये–शमीं सुलक्षणोपेतामीशान्याशाप्रतिष्ठिताम्।समाप्य तां च संपूज्य त्वीशानीसमुखो भवेत्॥अत्र श
मीपूजा कार्या॥शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।अर्जुनस्य धनुर्धारी रामस्य प्रियवादिनी१शमी शमयते पापं शमी लोहितकंटका ।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी २ करिष्यमाणयात्रायां यथाकालं सुखं मया । तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते ३
गृहीत्वा साक्षतामार्द्रां शमीमूलगतां मृदम् । गीतवादित्रनिर्घोषैरानयेत्स्वगृहमति ॥ ततो भूषणवस्त्रादि धारयेत्स्वजनैः सह । शम्यभावे

वनराजपूजा कार्या ॥ तत्र मंत्रः—आदिराज महाराज वनराज वनस्पते । इष्टदर्शनमिष्टान्नं शत्रूणां च पराजयः ॥ अथापराजितदशम्यां पू-
र्वोक्ते विजयामुहूर्ते उक्तं प्रास्थानिकमित्युपक्र म्य तदप्येते श्लोकाः । अलंकृतो भूषितभृत्यवर्गः परिष्कृतोत्तुंगतुरंगनागः । वादित्रनादप्रति-
नादिताशः सुमंगलाचारपरंपराशीः ॥ राजा निर्गत्य भवनात्पुरोहितपुरोगमः । प्रास्थानिकं विधिं कृत्वा प्रतिष्ठेत्पूर्वतो दिशि ॥ गत्वा
नगरसीमांतं वास्तुपूजां समाचरेत् । संपूज्य चाथ दिक्पालान्पूजयेत्पथिदेवताः ॥ मंत्रैर्वैदिकपौराणैः पूजयेच्च शमीतरुम् ॥ अमंगलानां
शमनीं सर्वसिद्धिकरीं शुभाम् । दुःस्वप्नशमनीं धन्यां प्रपद्ये ऽहं शमीं शुभाम् ॥ ततः कृताशीः पूर्वस्यां दिशि विष्णुक्रमात्क्रमेत् । श-
त्रोः प्रतिकृतिं कृत्वा ध्यात्वा शमं तथार्थदम् ॥ शरेण स्वर्णपुंखेन विध्येद्धृदयमर्मणि । दिशाविजयमंत्राश्च पठितव्याः पुरोधसा ॥ एवमेव
विधिं कृत्वा दक्षिणादिभिरर्चयेत् । पूज्यान्द्विजांश्च संपूज्य सांवत्सरपुरोहितौ ॥ गजवाजिपदातीनां प्रेक्षाकौतुकमाचरेत् । जयमंगलशब्देन
ततः स्वभवनं विशेत् ॥ नीराजमानः पुण्याभिर्गणिकाभिः सुमंगलम् ॥ य एवं कुरुते राजा वर्षे वर्षे सुमंगलम् । आयुरारोग्यमैश्वर्यं
विजयं च स गच्छति ॥ नाधयो व्याधयश्चैव न भवंति पराजयाः । श्रियं पुण्यमवाप्नोति विजयं च सदा भुवि, इति ॥ उक्तं प्रस्थानं
व्याख्यास्यामः । आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तु जनेषु गमिष्यत्सु पार्थिवश्च दुंदुभीन्वीणाश्चोपवादयेत् । ततः । घटोत्थापनानंतरं
सुचारुवेषैः सह संभारानुपकल्पयित्वा एकादशमुहूर्ते श्रवणयोगे सीमांते गत्वा पश्चाद्गेहे जनैः सह सुवर्णसहितं ग्राममाविशेत् । योषि-
तां कौतुकैश्च प्रज्वालितैर्दीपैरंजनानुलेपनं कारयित्वा वासोगंधस्रक्पुष्पैश्च पूजयित्वा हिरण्यरूपमिति मंत्रेण सुवर्णपूजनं कृत्वा ऽऽशिषः

१ पथि देवताः मार्गसम्बन्धिन्यो या देवतास्ताः सर्वाः पूजयेदित्यर्थः । २ अत्र, शमनीं दुष्कृतस्य चेति वा पाठः । ३ दक्षिणादिदिशास्वपीति पाठांतरम् ।

प्रतिगृह्य लक्ष्मीं नमस्कुर्यात् । सर्वा भगिनीः वस्त्रालंकारभूषणैः पूजयेत ॥ ब्राह्मणान्पूजयेत्तत्र गंधपुष्पैश्च दीपकैः ॥ इति भविष्ये वि
जयादशमीव्रतं संपूर्णम् ॥ ॥ इति दशमीव्रतानि समाप्तानि ॥ छ ॥ ॥ अथैकादशीव्रतानि ॥ ॥ तत्रैकादश्यामुपवासनिर्णयः ॥
निषेधपरिपालनात्मको व्रतरूपश्च । सा च द्विधा, शुद्धा दशमीविद्धा च । वेधोपि द्विविधः, अरुणोदये दशमीसंबधात्सूर्योदये च । त-
त्राद्यो वैष्णवैरत्याज्यः । तथाच भविष्ये–अरुणोदयकाले तु दशमी यदि दृश्यते । सा विद्धैकादशी तत्र पापमूलमुपोषणम् ॥ तथा ।
दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः । नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम् ॥ अरुणोदयस्वरूपं तु हेमाद्रौ स्मृत्यंतरे दर्शितम्–निशि
प्रांते तु यामार्द्धे देववादित्रनिःस्वने । सारस्वते अध्ययने अरुणोदय उच्यते । यामार्द्धं मुहूर्तद्वयलक्षणम् । अतएव सौरधर्मे–आदित्योद-
यवेलायां या मुहूर्तद्वयान्विता । सैकादशीति संपूर्णा विद्धाऽन्या परिकीर्तिता ॥ यत्तु माधवीये स्कांदे–उदयात्प्राक्चतस्रस्तु घटिका अरुणोद-
यः–इति ॥ तदपि द्वात्रिंशद्घटिकारात्रिमानपक्षे तु मुहूर्तद्वयस्य तावत्परिमाणत्वमुक्तमिति द्वैतनिर्णये ॥ ब्रह्मवैवर्ते च–चतस्रो घटिकाः प्रा-
तररुणोदयनिश्चयः । चतुष्टयविभागोऽत्र वेधादीनां किलोदितः । अरुणोदयवेधः स्यात्सार्द्धं तु घटिकात्रयम् । अतिवेधो द्विघटिकः प्रभास
दर्शनाद्रवेः ॥ महावेधोपि तत्रैव दृश्यतेऽर्को न दृश्यते । तुरीयस्तत्र विहितो योगः सूर्योदये सती ॥ इत्यादयो वेधा उक्ताः, ते चार्वाग्दो
षातिशयार्थाः । अन्यच्च । पंचपंच उषःकालः सप्तपंचारुणोदयः । अष्टपंच भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयः स्मृतः ॥ वैष्णवलक्षणं तु स्कांदे–
परमापदमापन्नो हर्षे वा समुपस्थिते । नैकादशीं त्यजेद्यस्तु तस्य दीक्षा तु वैष्णवी ॥ भविष्ये–यथा शुक्ला तथा कृष्णा यथा कृष्णा
तथेतरा । तुल्ये ते मन्यते यस्तु स हि वैष्णव उच्यते ॥ अतिवेधादयः सर्वे ये वेधास्तिथिषु स्मृताः । सर्वेऽप्यवेधा विज्ञेया वेधः

सूर्योदयः स्मृतः ॥ तत्र शुद्धा विद्धा एकादशी चतुर्धा। अधिका एकादशी। अधिका द्वादशी। उभयाधिका। अनुभयाधिका च। शुद्धायामेकादश्याधिक्ये परेद्युरुपवासमाह, नारदः—संपूर्णैकादशी यत्र द्वादश्यां वृद्धिगामिनी। द्वादश्यां लंघनं कार्यं त्रयोदश्यां तु पारणम् ॥ वृद्धवसिष्ठः— एकादशी यदा लुप्ता परतो द्वादशी भवेत्। उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेच्च परां गतिम् ॥ भृगुः--संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा। तदोपोष्या द्वितीया तु परतो द्वादशी यदि ॥ प्रथमेऽहनि संपूर्णा व्याप्याहोरात्रसंयुता। द्वादश्यां तु तदोपोष्या दृश्यते पुनरेव सा। पूर्वा कार्या गृहस्थैश्च यतिभिश्चोत्तरा विभो ॥ मार्कंडेयः—संपूर्णैकादशी यत्र परत्र पुनरेव च। पूर्वामुपवसेत्कामी निष्कामस्तु परा वसेत् ॥ हेमाद्रौ— विद्धा ऽप्यविद्धा विज्ञेया परतो द्वादशी न चेत्। अविद्धापि च विद्धा स्यात्परतो द्वादशी यदि ॥ एकादशी विवृद्धा चेच्छुक्ले कृष्णे विशेषतः। उत्तरां तु यतिः कुर्यात्पूर्वामुपवसेद्गृही ॥ सनत्कुमारः—न करोति हि यो मूढ एकादश्यामुपोषणम्। स नरो नरकं याति रौरवे तमसावृते ॥ यदीच्छेद्विपुलान्भोगान्मुक्तिं चात्यंतदुर्लभाम् ॥ उपोष्यैकादशीं नित्यं पक्षयोरुभयोरपि ॥ माधवेप्युक्तम्---एकादशी द्वादशी चेत्युभयं वर्द्धते यदा। तदा पूर्वदिनं त्याज्यं स्मार्तैर्ग्राह्यं परं दिनम् ॥ त्रयोदश्यां न लभ्येत द्वादशी यदि किंचन। उपोष्यैकादशी तत्र दशमीमिश्रिता यदि --इति स्कांदात् ॥ हेमाद्रिमते--शुद्धा विशुद्धा द्वे नंदा त्रिधा न्यूनसमाधिकैः। षट्प्रकाराः पुनस्त्रेधा द्वादश्यूनसमाधिकैः-- इत्यष्टादशैकादशीभेदाः ॥ पाद्मे—संपूर्णैकादशी त्याज्या परतो द्वादशी यदि। उपोष्या द्वादशी शुद्धा द्वादश्यामेव पारणम् ॥ पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलया ऽपि चेत्। तदानीं दशमीविद्धा उपोष्यैकादशी तिथिः। इति ॥ बहुवाक्यविरोधेन संदेहो जायते यदा। द्वादशी तु तदा ग्राह्या त्रयोदश्यां तु पारणम् --इति मार्कंडेयोक्तेः ॥ कात्यायन---अष्टवर्षाधि-

को मर्त्यो ह्यशीतिन्यूनवत्सरः । एकादश्यामुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि ॥ भविष्ये— ब्रह्मचारी च नारी च शुक्लामेव सदा गृही ॥ सधवा यास्तु भर्त्राज्ञया ऽधिकारः ॥ पत्यौ जीवति या नारी ह्युपोष्य व्रतमाचरेत् । आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत्—इति कौर्मे ॥ तदुक्तं मदनरत्ने स्मृत्यंतरे— शयनीबोधिनीमध्ये या कृष्णैकादशी भवेत् । सैवोपोष्या गृहस्थेन नान्या कृष्णा कदाचन । - नान्या कृष्णेति न निषेधः ॥ संक्रांत्यामुपवासं च कृष्णैकादशिवासरे । चंद्रसूर्यग्रहे चैव न कुर्यात्पुत्रवान्गृही ॥ नारदः— आदित्येऽहनि संक्रांतौ ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः । पारणं चोपवासं च न कुर्यात्पुत्रवान् गृही । माधवीये कात्यायनः—अर्के पर्वद्वये रात्रौ चतुर्दश्यष्टमीं दिवा । एकादश्यामहोरात्रं भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् ॥ ॥ अथ काम्यव्रतविधिः ॥ तत्र दशम्यां विधिः । कांस्यं मांसं मसूरांश्च चणकान् कोरदूषकान् । शाकं मधु परान्नं च त्यजेदुपवसन् स्त्रियम् ॥ शाकं माषं मसूरांश्च पुनर्भोजनमैथुनम् । द्यूतमत्यंबुपानं च दशम्यां वैष्णवस्त्यजेत् ॥ मदनरत्ने नारदीये— अक्षारलवणाः सर्वे हविष्यान्ननिषेविणः । अवनीतल्पशयनाः प्रियासंगविवर्जिताः ॥ हेमाद्रौ देवलः — असकृज्जलपाना च्च सकृत्तांबूलचर्वणात् । उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ अशक्तौ तु मदनरत्ने देवलः— अत्यये चांबुपाने च नोपवासः प्रणश्यति । अत्यये कष्टे ॥ विष्णुरहस्ये— गात्राभ्यंगं शिरोभ्यंगं तांबूलं चानुलेपनम् । व्रतस्थो वर्जयेत्सर्वं यच्चान्यच्च निराकृतम् ॥ एषु प्रायश्चित्तम् । स्तेनहिंसकयोः सख्यं कृत्वा स्तैन्यं च हिंसनम् । प्रायश्चित्तं व्रती कुर्याज्जपेन्नामशतत्रयम् ॥ मिथ्यावादे दिवास्वापे बहुशोंबुनिषेवणे ॥ अष्टाक्षरं जपेन्मंत्रं शतमष्टोत्तरं शुचिः ॥ ॐनमोनारायणायेत्यष्टाक्षरः ॥ हेमाद्रौ वसिष्ठः—उपवासे तथा श्राद्धे न कुर्याद्दंतधावनम् । दंतानां काष्ठसंयोगो दहत्यासप्तमं कुलम् ॥ एकादश्यां श्राद्धे प्राप्ते माधवीये कात्यायनः—उपवासो यदा नित्यः श्राद्धं नै

मित्तिकं भवेत् । उपवासं तदा कुर्यादाघ्राय पितृसेवितम् ॥ मातापित्रोः क्षये प्राप्ते भवेदेकादशी यदि । अभ्यर्च्य पितृदेवांश्च आजिघ्रेत्पितृसेवितम् ॥ प्राप्ते हरिदिने सम्यग्विधाय नियमं निशि । दशम्यामुपवासं च प्रकुर्याद्वैष्णवं व्रतम् ॥ तत्र एकादश्यां संकल्पः ॥ गृहीत्वौदुंबरं पात्रं वारिपूर्णमुदङ्मुखः ॥ उपवासं तु गृह्णीयाद्यथा संकल्पयेद्बुधः ॥ -औदुंबरं ताम्रमयम् ॥ मंत्रः—एकादश्यां निराहारः स्थित्वाऽहमपरेऽहनि । भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत । इति विष्णूक्तेः ॥ शैवादीनां तु हेमाद्रौ सौरपुराणे— सावित्र्याप्यथवा नाम्ना[1] संकल्पं तु समाचरेत् ॥ वाराहे— इत्युच्चार्य ततो विद्वान्पुष्पांजलिमथार्पयेत् । अष्टाक्षरेण मंत्रेण त्रिजप्तेनाभिमंत्रितम् । उपवासफलं प्रेप्सुः पिबेत्पात्रगतं जलम् — इति कात्यायनोक्तेः । मध्यरात्रे उदये वा दशमीवेधे रात्रौ संकल्प्य —इति माधवः ॥ विद्धोपवासे ऽनश्नंस्तु दिनं त्यक्त्वा समाहितः । रात्रौ संपूजयेद्विष्णुं संकल्पं[2] च सदाचरेत् ॥ देवलः--देवस्य पुरतः कुर्याज्जागरं नियतो व्रती ॥ अज्ञानतिमिरांधस्य व्रतेनानेन केशव । प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव ॥ दिवा निद्रां परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने । क्षौद्रं कांस्यं माषतैले द्वादश्यामष्ट वर्जयेत् ॥ पुनर्भोजनमध्यायोभार आयासमैथुने । उपवासफलं हन्युर्दिवा निद्रा च पंचमी । स्कांदे--असंभाष्याह्नि संभाष्य तुलस्याश्चार्पितं दलम् । आमलक्याः फलं वापि पारणे भक्ष्य शुद्ध्यति ॥ भोजनानंतरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम् । भक्षणात्पापनिर्मुक्तिश्चांद्रायणशताधिका --इति विष्णूक्तेः ॥ सूतकांते नरः स्नात्वा पूजयित्वा जनार्दनम् । दानं दत्त्वा विधानेन व्रतस्य फलमश्नुते ॥ स्त्रीभिस्तु रजोदर्शनेपि कार्यम् । एकादश्यां न भुंजीत नारी दृष्टे रजस्यपि--इति मात्स्योक्तेः ॥ यदा द्वादश्यां श्रवणर्क्षं तदा शुद्धामप्येकादशीं त्यक्त्वा

१ शिवगायत्रीमन्त्रेणेत्यर्थः । २ इति संकल्प्येत्यर्थः ।

द्वादशीमुपवसेत् । शुक्ला वा यदि वा कृष्ण द्वादशी श्रवणान्विता ॥ तयोरेवोपवासश्च त्रयोदश्यां तु पारणम् –इति नारदोक्तेः ॥ तत्र शुद्धाधिकैकादशी उन्मीलिनी । द्वादशी वर्धते चेत्सा व्यंजुली । वासरत्रयस्पर्शिनी त्रिस्पृशा । अग्रे पर्वणः संपूर्णाधिकत्वे पक्षवर्धिनी । पुष्यर्क्षयुता जया । श्रवणयुता विजया । पुनर्वसुयुता जयंती । रोहिणीयुता पापनाशिनी । एता अष्टौ महाद्वादश्यः ॥ एता पापक्षयमुक्तिकामः उपवसेत् ॥ अत्र मूलं हेमाद्रौ ज्ञेयम् । द्वादश्याः प्रथमः पादो हरिवासरसंज्ञितः । तमतिक्रम्य कुर्वीत पारणं विष्णुतत्परः ॥ अन्यत्र । सर्वेषामुपवासानां प्रातरेव हि पारणम् ॥ इत्येकादशीनिर्णयः ॥ अथ शुक्लकृष्णैकादश्युद्यापनम् ॥ मार्गशीर्षे शुक्लपक्षे कार्तिके वा तथैव च । शुभमासे तु कार्या सा शुक्लकृष्ण उभे तयोः ॥ व्रतविधिः । दशम्यामेकभुक्तं तु दंतधावनपूर्वकम् । एकादश्यां शुचिर्भूत्वा आचार्यं वरयेत्ततः ॥ तत्रसंकल्पः । गणेशस्मरणपूर्वकं मासपक्षाद्युल्लिख्य तिथ्यादि संकीर्त्य मया ऽऽचरितस्याचरिष्यमाणस्य वा शुक्लकृष्णैकादशीव्रतस्य सांगतासिद्ध्यर्थं संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं देशकालाद्यनुसारतो यथाज्ञानेन शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनमहं करिष्ये । तदंगत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनमाचार्यवरणं च करिष्य इति संकल्प्य गणेशं षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः करिष्यमाणशुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु । अस्तु पुण्याहम् ॥ स्वस्ति भवतो ब्रुवंतु । आयुष्मतेस्वस्ति ॥ ऋद्धिं भवतो ब्रुवंतु । कर्म ऋध्यताम् ॥ श्रीरस्त्विति भवतो ब्रुवंतु । अस्तुश्रीः ॥ वर्षशतं पूर्णमस्तु । शिवं कर्मास्तु । गोत्राभिवृद्धिरस्तु । प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ ततः । उद्यापनकर्मणि आचार्यं वरयेत् ॥ श्रुताध्ययनसंपन्नो क्रोधलोभविवर्जितो । आचार्यौ वरयेत्प्राज्ञमज्ञानसमन्वितो ॥ अस्मिन्कर्मणि आचार्यो भव ॥ यथाज्ञानेन कर्म करिष्यामि । उपोष्य नियतो राजा आचार्यसहितो व्रती । कुर्यादाराधनं विष्णोर्यथाशक्त्या

जगद्गुरोः ॥ देवालये गवां गोष्ठे शुचौ देशे ऽथवा गृहे । अष्टांगुलोच्छ्रितां वेदीं चतुरस्रां प्रकल्पयेत् ॥ वितस्तिद्वयविस्तीर्णां तिलैः कृष्णैः प्रपूरयेत् । तस्यां षोडशपत्रं च कमलं परिकल्पयेत् ॥ तन्मध्ये स्थापयेत्कुंभं नवीनमव्रणं शुभम् । कृष्णैस्तिलैश्च संपूर्णं कृष्णवस्त्रोपशोभितम् ॥ अश्वत्थपर्णयुग्मेन पंचरत्नैः समन्वितम् । समंतादंतिकं चैव नामसंकर्षणादिभिः ॥ उपचारैः षोडशभिः पूजयेत्प्रयतो नरः । आग्नेयादिचतुष्पत्रे पूजयेद्गणमातृकाः ॥ गणेशं मातृकाश्चैव दुर्गां क्षेत्राधिपं तथा । समाहितमनाः कोणेष्वाग्नेयादिषु विन्यसेत् ॥ शुक्लामेकादशीं तद्वत्तिलैः शुक्लैश्च पूरयेत् ॥ शुक्लवस्त्रेण संवेष्ट्य पूजयेत्परया मुदा ॥ समंतादंतिके चैव नामभिः केशवादिभिः । तदग्रे सर्वतोभद्रं लिखेत् । देवतासान्निध्यार्थं सुवर्णमूर्तावग्न्युत्तारणं करिष्ये । ततो देवं च सौवर्णं स्नाप्य पंचामृतादिभिः । गंधपुष्पाक्षतोपेतमथ पुण्यजलैः शुभैः ॥ गृहीत्वावाहयेत्कुंभे रमायुक्तं चतुर्भुजम् । एवं विष्णुमावाहयेत् । ॐ नमो विष्णवे तुभ्यं भगवन्परमात्मने ॥ कृष्णोसि देवकीपुत्र परमेश्वर उत्तम ॥ अजो ऽनादिश्च विश्वात्मा सर्वलोकपितामहः । क्षेत्रज्ञः शाश्वतो विष्णुः श्रीमान्नारायणः परः ॥ त्वमेव पुरुषः सत्यो ऽतींद्रियोसि जगत्पते । यत्ते तेजः परं सूक्ष्मं तेनेमां वेदिकां विश ॥ ॐभूः पुरुषमावाहयामि ॐभुवःपुरुषमावाहयामि ॐ स्वःपुरुषमावाहयामि ॐभूर्भुवःस्वःपुरुषमावाहयामि । विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण सुप्रसन्नो वरदो भव । रुक्मिणीं सह जांबवतीं सत्यभामां श्रियं च पूर्वपश्चिमदलाभ्यंतरेषु षोडशस्त्रीसहस्राणि कल्पयेत् । शंखं चक्रं गदां पद्ममीशानादिषु कल्पयेत् । तद्बहिः

१ व्रतोद्यापनकौमुद्यां तु, ताम्रमयं तण्डुलपूर्णं राजतपूर्णपात्रसहित कलशं प्रतिष्ठाप्य तत्राष्टदले पद्मे देवता आवाहयेदिति ।

* स्त्रीचतुःसहस्रयुतां रुक्मिणीमेवमेव प्रत्येकं स्त्रीसहस्रयुता जांबवत्यादयः स्त्रियः स्थापयेदित्यर्थः । अत्रोद्यापने विशेषो कौमुद्यां द्रष्टव्यः ।

पूर्वपत्रादिष्वष्टपत्रेष्वनुक्रमात् । विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया योगा तथैव च । प्रह्वी सत्या तथा ईशानानुग्रहा पद्ममध्यगा ॥ देवस्याग्रे
ततः कृत्वा वेदिकायां खगेश्वरमेवमावाह्य । लोकपालानवस्थाप्य दिक्षु पूर्वादिषु क्रमात् ॥ ततः पूर्वादिद्वादशपद्मपत्रेषु केशवादीनावाह्य ।
केशवाय नमः केशवमावा० । नारायणाय० माधवाय० गोविंदाय० विष्णवेन० मधुसूदनाय० त्रिविक्रमाय० वामनाय० श्रीधराय० हृषीकेशा
य० पद्मनाभाय० दामोदरायन०—एताः शुक्लैकादश्या मंडलदेवताः ॥ एवमेव कृष्णैकादश्याम्—संकर्षणायन० संकर्षणआ० वासुदेवाय० प्रद्यु
म्नाय० अनिरुद्धाय० पुरुषोत्तमाय० अधोक्षजाय० नारसिंहाय० अच्युताय० जनार्दनाय० उपेंद्राय० हरयेन० श्रीकृष्णायन० इत्यावाह्य, त
दस्त्विति प्रतिष्ठाप्य, अतोदेवेति षोडशोपचारैः विष्णुं मंडलदेवताश्च नाममन्त्रेण पूजयेत् ॥ प्रदद्यादासनं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । स्नानं वस्त्रं
चोपवीतं गंधपुष्पाणि वै ततः । धूपं दीपं च नैवेद्यं नीराजनप्रदक्षिणे ॥ उभयैकादश्योर्यदा एक आचार्यः, तदा द्वादशपद्मदलेषु पूर्वादिक्रमेण ए
कत्र देवताः स्थाप्य पूजयेत् ॥ स्तवनं विष्णुसूक्तैश्च परिचर्यां च नामभिः । नमोंतैर्वैष्णवैर्मंत्रैस्तन्मूर्तौ पूजयेत्सुधीः ॥ ततो देवादयो भूमौ सर्व-
तोभद्रमंडले । ब्रह्माद्या देवताः सर्वाः पूजनीया ह्यनुक्रमात् । उपचारादिकं कुर्यान्नैव कार्यं विसर्जनम् ॥ गीतवाद्यैस्तथा नृत्यैरितिहासैर्म
नोरमैः । पुराणैः सत्कथाभिश्च रात्रिशेषं नयेत्सुधीः ॥ प्रभाते विमले स्नात्वा कृत्वा शौचादिकाः क्रियाः । चतुर्विंशतिसरूपाकान् विप्रा
नागमदर्शिनः ॥ आकारयेत्ततः पश्चात्पूजयेच्च समागतान् । आचार्येण समं कुर्याद्वपचारादिकं ततः ॥ होमसंख्यानुसारेण स्थंडिलं का
रयेत्ततः । उल्लेखनादिकं कृत्वा प्रणीतास्थापनं ततः ॥ तद्यथेवम् । अस्मिन् शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनहोमं कर्तुं स्थंडिलादि सकलं कर्म
करिष्ये । विसंकल्प्य अग्निध्यानांतं कृत्वा ततोन्वाधानं ॥ क्रियमाणे शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ।

चक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा । अत्र प्रधानम् । अग्निं इंद्रं प्रजापतिं विश्वान्देवान् ब्रह्माणं पुरुषं नारायणं प्रत्यृचमाज्येन, वासुदेवं बलदेवं श्रीविष्णुं सप्तवारं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं, एताः प्रधानदेवताः पायसद्रव्येण । केशवादिद्वादशदेवताः आज्यमिश्रितपायसद्रव्येण । विष्णुमष्टोत्तरशताहुत्या वा पायसद्रव्येण । केशवादिदेवता आज्यमिश्रितपायसद्रव्येण प्रत्येकं षोडशस्त्रीसहस्रयुता रुक्मिण्याद्याःस्त्रियः, शंखाद्यावाहितदेवताः, विमलाद्या देवताः, लोकपालान्ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्या । शेषेण स्विष्टकृतमित्यादिप्रणीताप्रणयनांतं कृत्वाऽन्वाधानसमिद्भिर्जुहुयात् । पायसं श्रपयित्वा चरोःपवित्रंते इति मंत्रं जपन्प्रापणमुद्धरेत् ॥ पायसादुद्धृतं किञ्चित्प्रापणं तत्प्रकीर्तितम् । आज्यसंस्कारादिकमाज्यभागांतं कृत्वा । इदंउपकल्पितंहवनीयद्रव्यंयथादैवतमस्तु ॥ अनादेशाहुतीः पंच होतव्याः सर्पिषा ततः । पौरुषेणाथसूक्तेन प्रत्यृचं जुहुयाद्घृतम् ॥ पायसं सघृतं चैव हुनेदष्टोत्तरंशतम् । घृताक्ततिलपालाशसमिद्भिर्जुहुयात्पृथक् ॥ अष्टोत्तराहुतीनां च विष्णुमंत्रेण कारयेत् । इदंविष्णुर्विचक्रमे इति सूक्तेन जुहुयात्तिलसर्पिषा ॥ वासुदेवायस्वाहा बलदेवायस्वा० श्रियैस्वा० विष्णवे० विष्णोर्नुकंऽ्क, तदस्यप्रियमभिपाथो० प्रतद्विष्णु० परोमात्रया० इदंविष्णु० त्रीणिपदा० एतैर्मंत्रैर्व्याहृतिभिश्चेति जुहुयात् । केशवादिद्वादशनामभिः पायसं हुत्वा, विष्णुं अष्टोत्तरशतं पायसेन जुहुयात् । कृष्णैकादश्यामेवं संकर्षणादिद्वादशनामभिरेव, शुक्लैकादश्यां केशवादिनामभिः । एवं शुक्लकृष्णैकादश्यां एकाचार्यैकस्थंडिलपक्षे चतुर्विंशतिनामभिर्हुत्वा मुख्यदेवतामष्टोत्तरशतं हुत्वा ब्रह्मादिदेवता एकैकयाज्याहुत्या हुनेत् ॥ ततः प्रापणार्थं भगवत्प्रार्थना । त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं नारायणं विश्वसृजं भजामः । मयैकभागो विहितो विधेयो गृहाण हव्यं जगतामधीश -इतिप्रापणं निवेद्योपतिष्ठेत् । ततः त्रिवारं चतुर्वारं वा प्रदक्षिणमग्निं वेदिकां च परिक्रम्य, भिंधिविश्वा-

इति जानुनी निपात्य घुसक्त जपेत्पुरुषसूक्त वा । ततः अष्टौ पदानि प्रतिदिशं एतैर्मंत्रैर्जपन् गच्छेत् । कृष्णाय वासुदेवाय हरये पर
मात्मने । शरण्यायाप्रमेयाय गोविंदाय नमो नमः । नमः स्थूलाय सूक्ष्माय व्यापकायाव्ययाय च । अनताय जगद्धात्रे ब्रह्मणेऽनंतमू
तये ॥ अथ तं निवेदित प्रापण मूर्ध्नि कृत्वा घोषयेत् । केवैष्णवाःकेवैष्णवा इति उच्चैर्वदेत् ॥ वयवैष्णवाः वयवैष्णवाः इति प्रवदेयुः ॥
तेभ्यः समानेभ्यो हविर्देयम् ॐनमोभगवतेवासुदेवायेति द्वादशाक्षरमन्त्रेण इदमहममृतमाश्नामि इति प्राश्य । आचम्य गृहमागत्य सिद्धये
स्वाहेति जुहुयात् । यतद्व्रमयामहह्त्यात्मानमभिमन्त्र्य सर्वप्रायश्चित्तादि समापयेत् । स्विष्टकृदादिहोमशेष समाप्य उत्तरपूजां कृत्वा वि
ष्णुसूक्तानि जपेत् । तथाच- । ततो होमावसाने च गामरोगां पयस्विनीम् । सवत्सां कृष्णवर्णां च सवस्त्रां कांस्यदोहिनीम् ।
दद्याद्व्रतसमाप्त्यर्थमाचार्याय सदक्षिणाम् । भूषणानि विचित्राणि वासांसि विविधानि च । चतुर्विंशतिसंख्यानि पक्वान्नानि च दापयेत् ।
आचार्याय प्रदेयानि दक्षिणां भूयसीं तदा । यदीच्छेदात्मन श्रेयो व्रतस्योद्यापन चरेत् । विप्रान्द्वादशसंख्याकान्नामभिः पृथगर्चयेत् ।
उपवीतानि तेभ्यो वै दद्यात्कुम्भान्सदक्षिणान् । पक्वान्नफलसयुक्तान्वस्त्रयुक्तांस्तु दापयेत् । भोजयित्वा ततो विप्रान् पक्वान्नेन च भक्ति
तः । अन्यानपि यथाशक्ति ब्राह्मणान्भोजयेद्व्रती । व्रत ममास्तु संपूर्णमित्युक्तैः पूजितैर्द्विजैः । अस्तु संपूर्णमित्युक्त्वा आचार्यसहितो
व्रती । जप्त्वा वैष्णवसूक्तानि प्रणम्य च पुनःपुनः । ॐ भूःपुरुषमुद्वासयामीतिक्रमेणोद्वासयेत् । इदंविष्णुरिति पीठमाचार्याय दद्यात् ।
अस्यमयाकृतस्यशुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थंचतुर्विंशतिब्राह्मणान्भोजयिष्ये नममेति भोजयित्वा, ततो बधुजनैः
सार्द्धं शिष्टैरिष्टैश्च भोजयेत् ॥ इति भगवद्बौधायनोक्त शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापन संपूर्णम् ॥ ॥ अथ पूजाविधिर्ब्राह्मे ॥ एकादश्यामुभे

पक्षे निराहारः समाहितः । स्नात्वा सम्यग्विधानेन सोपवासो जितेंद्रियः ॥ संपूज्य विधिवद्विष्णुं श्रद्धया सुसमाहितः । गंधपुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्नैवेद्यकैः परैः ॥ उपचारैर्बहुविधैर्जपहोमैः प्रदक्षिणैः । स्तोत्रैर्नानाविधैर्दिव्यैर्गीतवाद्यैर्मनोहरैः ॥ दंडवत्प्रणिपातैश्च जयशब्दैस्तथोत्तमैः । एवं संपूज्य विधिवद्रात्रौ कृत्वा प्रजागरम् ॥ याति विष्णोः परं स्थानं नरो नास्त्यत्र संशयः । पंचामृतेन संस्नाप्य एकादश्यां जनार्दनम् । द्वादश्यां पयसा स्नाप्य हरिसारूप्यमश्नुते ॥ इति पूजाविधिः ॥ ॥ अथ पुराणोक्तशुक्लकृष्णैकादश्युद्यापनविधिः ॥ अर्जुन उवाच । कीदृग्व्रतविसर्गोऽत्र विधानं चात्र कीदृशम् । संपूर्णं हि भवेद्येन तन्मे वद कृपानिधे ॥ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु पांडव यत्नेन प्रवक्ष्यामि तदव्ययम्[१] । शक्तः स्वर्णसहस्रं तु अशक्तः काकिणीं तथा ॥ ददाति श्रद्धया पार्थ समं स्यादुभयोरपि । शक्तश्चेद्द्विगुणं दद्याद्यथोक्तो मध्यमो विधिः ॥ उक्तार्द्धमप्यशक्तस्य दानं पूर्णफलप्रदम् । तद्रूपविधिमप्येकं कथयामि तवाग्रतः ॥ यानि कष्टेन चीर्णानि व्रतानि कुरुसत्तम । विफलान्येव सर्वाणि उद्यापनविधिं विना ॥ प्रबोधसमये पार्थ कुर्यादुद्यापनक्रियाम् । मार्गशीर्षे विशेषेण उद्यापनविधिं चरेत् ॥ दशम्यां दिनशेषेण रात्रौ गुरुगृहं व्रजेत् । एकादशीदिने प्राप्ते गुरुमभ्यर्च्य शक्तितः ॥ गृहीत्वा चरणौ मूर्ध्ना प्रार्थयीत विचक्षणः । पुण्यदेशोद्भवं विप्रं शांतं सर्वगुणान्वितम् । सदाचाररतं पार्थ वेदवेदांगपारगम् ॥ अस्मदीयं व्रतं विप्र विष्णुवासरसंभवम् । संपूर्णं तु भवेद्येन तत्कुरुष्व द्विजोत्तम ॥ तस्याग्रे नियमः कार्यो दंतधावनपूर्वकः । एकादश्यां निराहारः स्थित्वा चैव परेहनि ॥ भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत । एवं प्रभातसमये शुचिर्भूत्वा समाहितः । पाखंडिनां च सर्वेषां पतितानां च संगमम् ॥ कामं दु-

१ वक्ष्यमाणप्रकारेणेत्यर्थः ।

रोदर पार्थ दूरतः परिवर्जयेत् । स्नानं कृत्वा मन्त्रपूर्वं नद्यादौ विमले जले ॥ तर्पयित्वा पितॄन्देवान्पूजयेन्मधुसूदनम् । उपलिप्य शुचौ देशे कीटकेशास्थिवर्जिते ॥ वर्णैश्च सर्वतोभद्रं नीलपीतसितासितैः । मंडलं चोद्धरेद्भूप सर्वकर्मसु पूजितम् ॥ [अष्टांगुलोच्छ्रितां वेदीं चतुरस्रां प्रकल्पयेत् । वितस्तिद्वयविस्तीर्णामक्षतैः परिपूरिताम् ॥ तस्यां षोडशपत्रं च कमलं परिकल्पयेत् । तन्मध्ये स्थापयेत्कुंभं नवीनं सुस्थिरं शुभम् ॥] अथवा तण्डुलानां च अष्टपत्राम्बुजं चरेत् । वारिपूर्णं घटं ताम्रपात्रं रौप्यसमुद्भवम् ॥ जातरूपमयं देवं लक्ष्म्यायुक्तं जनार्दनम् । साक्षतं सोपवीतं च सहिरण्यं सवाससम् । अक्षमालासमायुक्तं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ शक्त्या सुवर्णपुष्पैश्च पूजनं पुष्टिवर्द्धनम् । अन्यैर्ऋतुद्भवैः पुष्पैरर्चयेद्विधिवन्नरः ॥ ब्रह्मादिदेवताः सर्वाः पूजनीया अनुक्रमात् ॥ नैवेद्यांश्च चतुर्विंशत्यथ दद्यादनुक्रमात् । भक्त्या चतुर्विंशतिषु तिथिष्वपि परंतप ॥ इच्छया वा तथा दद्याद्देवोद्यापनं भवेत् । मोदकान्गुडकांश्चूर्णान्घृतपूरकमंडकान् ॥ सोहालिकादिकं सारं सेवाः सफवं एव च । वटकान्पायसं दुग्धं शालिदध्योदनं तथा ॥ इंडिकान्पूरिकान्पार्थ अपूपान् गुडमोदकान् । तिलपिष्टं कर्णवेष्टं शालिपिष्टं सशर्करम् ॥ रम्भाफलं च सघृतं मुद्गपूर्णं गुडौदनम् ॥ एवक्रमेण नैवेद्यं पृथग्वा चरमेऽहनि ॥ दामोदराय पादौ तु जानुनी माधवाय च । गुह्यं वै कामपतये कट्यां वामनमूर्तये ॥ पद्मनाभाय नाभिं तु उदरं विश्वमूर्तये । हृदयं ज्ञानगम्याय कंठं श्रीकण्ठगामिने ॥ सहस्रबाहवे बाहू चक्षुषी योगयोगिने । ललाटमुरुगायेति नासां नाकसुरेश्वरम् ॥ श्रवणौ श्रवणेशाय शिखायां सर्वकामदम् । सहस्रशीर्षाय शिरः सर्वांगं सर्वरूपिणे ॥ इति पूजानामानि ॥ शुभेन नारिकेरेण बीजपूरेण वा पुनः । हृदि ध्यात्वा जग

१ एतच्चिह्नान्तर्गतं ग्रन्थांशं नास्ति । २ कर्णवेष्टितपत्रं सर्वपिष्टमिति पाठो दृश्यते ।

न्नार्थं दद्यादर्घ्यं विधानतः ॥ साक्षतं च सपुष्पं च सजलं चंदनान्वितम् । पूर्वोक्तेनैव मंत्रेण व्रतपूर्तिकरेण वै ॥ रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीत-
शास्त्रविनोदतः ॥ इष्टं दत्तं धरादानं पिंडो दत्तो गयाशिरे । कृतं दानं कुरुक्षेत्रे यैः कृतं जागरं हरेः ॥ नृत्यं गीतं प्रकुर्वंति वीणावाद्यं त-
थैव च । ये पठंति पुराणानि ते नराः कृष्णवल्लभाः ॥ शास्त्रैर्वाप्यथवा भक्त्या शुचिर्वाप्यथवाऽशुचिः । कृत्वा जागरणं विष्णोर्मुच्यते पा-
पकोटिभिः ॥ भुक्तो वाप्यथवा ऽभुक्तो जागरे समुपस्थितः । मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ यावत्पदानि स्वगृहात्केश-
वायतनं प्रति । अश्वमेधसमानि स्युर्जागरार्थं प्रयच्छतः ॥ पादयोः पांसुकणिका धरण्यां निपतंति याः । तावद्वर्षसहस्राणि जागरद्रमते
दिवि ॥ बहून्यपि च पापानि कृतं जागरणं हरेः । निर्दहेन्मेरुतुल्यानि युगकोटिकृतान्यपि ॥ मनसा संस्मरेद्देवं तां रात्रिमतिवाह्य च ।
प्रभाते विमले स्नात्वा विप्रानाकारयेत्सुधीः ॥ चतुर्विंशतिसंख्याकान्निगमागमदर्शिनः । सर्वं कुर्याद्विधानेन जपहोमार्चनादिकम् ॥ (स्व-
गृह्योक्तेन विधिना कृत्वा ऽग्निस्थापनं ततः । उल्लेखनादिकं कुर्यात्प्रणीतास्थापनादिकम् ॥ तत्राग्नौ च चरुं कृत्वा चरोः प्राणमुद्धरेत् । पवि-
त्रंतेविततमिति मंत्रं पठेत् ॥ अन्वाधानादिकं कुर्यादाज्यभागांतमाचरेत् । तिलाज्यपायसान्नैश्च समिद्भिर्जुहुयात्ततः) शतमष्टोत्तरं होमः म-
त्रापि प्रशस्यते । इदंविष्णुर्द्विजातीनां होममंत्रः प्रकीर्तितः ॥ शूद्राणां चैव सर्वेषां मंत्रमष्टाक्षरं विदुः । त्रिभिरपि वस्त्रैश्च भोजनैरासनैः सह ॥
छत्रोपानहगोभिश्च दद्यात्पार्थ पृथक् पृथक् । द्वादशैवाथ शक्त्या वा वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ पूजयेत्पुष्पमालाभिः सपत्नीकान्द्विजोत्तमान् ।
कुंभा द्वादश दातव्याः पक्वान्नजलपूरिताः ॥ भोजयित्वा ततो विप्रान्भक्तितो विसर्जयेत् । एका हि कपिला देया सर्वकामफलप्रदा । यथा स्व-
र्गश्च मोक्षश्च इह संपूर्णता व्रते ॥ नमस्ते कपिले देवि संसारार्णवतारिणि । मया दत्ता द्विजेंद्राय प्रीयतां मे जनार्दनः ॥ सपत्नीको गुरुः

पूज्यो मण्डले हरिसन्निधौ । भूषणाच्छादितैर्मोज्यैः प्रणामैः परितोषयेत् । समाप्य वैष्णवं धर्मं दद्यात्सर्वं धनंजय ॥ इदं चान्यथया श्रद्धया वित्तशाठ्यविवर्जितः । जलदानं विशेषेण भूमिदानमतःपरम् । प्रार्थयेत्पुरुषाधीश ततो भक्त्या कृताञ्जलिः ॥ मयाऽद्यास्मिन्व्रते देव यदपूर्णं कृतं विभो । सर्वं भवतु संपूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ॥ त्वयि भक्तिः सदैवास्तु मम दामोदर प्रभो । पुण्ये बुद्धिः सतां सेवा सर्वधर्मफलं च मे ॥ जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं व्रतकर्मणि । सर्वं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद्रमापते ॥ प्रदक्षिणां ततः कृत्वा दंडवत्प्रणिपत्य च । मण्डलं मूर्तिसंयुक्तं सोपहारं सदक्षिणम् ॥ प्रीयतां विष्णुरित्युक्त्वा आचार्याय निवेदयेत् । सर्वं विसर्जयेत्पश्चात्संतोष्य परिमोच्य च ॥ तदाज्ञया ततः कुर्यात्पारणं बंधुभिः सह । एकादशीव्रतं चैतद्यथाविधि कृतं पुरा ॥ यौवनाश्वेन भूपेन कथितं पुरतस्तव । धनंजय तव प्रीत्या भक्त्यानुग्रहकारणात् ॥ यः करोति नरो भक्त्या व्रतमेतद्भयापहम् । स याति वैष्णवं स्थानं दाहप्रलयवर्जितम् । उद्यापनं चैवमुभयोः कुरुसत्तम ॥ किमन्यैर्बहुभिर्वाक्यैः प्रशंसापरकैर्भुवि । एकादश्याः परतरं त्रैलोक्ये न हि विद्यते ॥ अत्र दानं तु गोदानं भूमिदानमथापि वा । गोरोमबीजमूलानां समसंख्यायुगानि हि । दातारो विष्णुभवने एकादश्यां वसंति हि ॥ येऽपि शृण्वंति सततं कथ्यमानां कथामिमाम् । तेपि पापविनिर्मुक्ताः स्वर्गं यांति न संशयः । इत्याकर्ण्यार्जुनो वाक्यं कृष्णस्य परमाद्भुतम् । आनंदं परमं प्राप सौख्यं चापि निरंतरम् ॥ इति पुराणोक्तं शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ अथाषाढशुक्लैकादश्यां गोपद्मव्रतम् ॥ तत्र पूजाविधि ॥ चतुर्भुजं महाकायं जांबूनदसमप्रभम् । शंखचक्रगदापद्मरमागरुडशोभितम् । सेवितं मुनिभिर्देवैर्यक्षगंधर्वकिन्नरैः ॥ (एवंविधं हरिं ध्यात्वा ततो यजनमारभेत् ।) ध्यानम् ॥ आवाहयामि देवेश भक्तानामभयप्रद । मत्सिरसं वरद शांतं [illegible]

आवाहनम् ॥ सुवर्णमणिभिर्दिव्यैः खचिते देवनिर्मिते । दिव्यसिंहासने स्निग्धे प्रविश त्वं सुराधिप । आसनम् ॥ गंगोदकं सुरश्रेष्ठ सुवर्णकलशस्थितम् । गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तं गृहाण रमया सह । पाद्यम् ॥ अष्टगंधसमायुक्तं स्वर्णपात्रे स्थितं जलम् । अर्घ्यं गृहाण भो देव भक्तानामभयप्रद । अर्घ्यम् ॥ देवदेव नमस्तुभ्यं पुराणपुरुषोत्तम । मया दत्तमिदं तोयं गृह्णीष्वाचमनीयकम् । आचमनीयम् ॥ पयोदधिघृतैः स्नानं मधुशर्करया युतैः।पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्र० ।[मध्ये मध्ये प्रपूजा च कर्तव्या व्रतिभिःसदा] पंचामृतस्नानम्॥नदीनां चैव सरसां मयानीतं जलं शुभम्। अनेन स्नानं कुरु भो मंत्रैर्वारुणसंभवैः। स्नानम्॥वस्त्रयुग्मं समानीतं पट्टसूत्रेण निर्मितम्। सूक्ष्मं कार्पासतंतूनां सुवर्णेन विराजितम्। वस्त्रम्॥नारायण नमस्ते ऽस्तु त्राहि मां भवसागरात्। ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण पुरुषोत्तम। यज्ञोपवीतम् ॥ केयूरमुकुटैश्चैव नूपुरैरंगुलीयकैः । पूजितोसि प्रयत्नेन रत्नैराभरणैर्विभो । आभरणानि ॥चंदनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यगुरुसंयुतम् । कर्पूरेण च संमिश्रं स्वीकुरुष्वानुलेपनम् । चंदनम्॥शतपत्रैः कर्णिकारैश्चंपकैर्मल्लिकादिभिः। पुष्पैर्नानाविधैश्चैव पूजयामि सुरेश्वर। पुष्पाणि ॥दशांगगुग्गुलोद्भूतः सुगंधिश्च मनोहरः। आघ्रेयो देवदेवेश धूपोयं प्रतिगृह्यताम् । धूपम् ॥ एकार्तिकं सुरश्रेष्ठ गोघृतेन सुवर्तिना । संयुक्तं तेजसा कृष्ण गृहाणादित्यदीपित । दीपम् ॥ अन्नं च पायसं भक्ष्यं सितालेह्यसमन्वितम् । दधिक्षीरघृतैर्युक्तं गृहाण सुरपूजित । नैवेद्यम् ॥ नागवल्लीदलैर्युक्तं पूगीफलसमन्वितम् । कर्पूरखदिरैर्युक्तं तांबूलं प्र० । तांबूलम् । हिरण्यगर्भ० दक्षिणाम् ॥ नीराजनं गृहाणेश पंचवर्तिभिरावृतम् । तेजोराशे मया दत्तं लोकानंदकर प्रभो । नीराजनम् ॥ अंजलिस्थानि पुष्पाणि अर्पयामि जगत्पते । गृहाण सुमुखो भूत्वा जगदानंददायक । पुष्पांजलिम् ॥ यानि कानि० । प्रदक्षिणाम् ॥ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गरुडध्वज । नमस्ते विष्णवे तुभ्यं व्रतस्य फलदायक । नमस्कारान् ॥ मंत्रहीनं क्रियाही-

न भक्तिहीनं सुरेश्वर। व्रतेनानेन सुप्रीतः सपूर्णफलदो भव। प्रार्थना॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं वायनप्रदानं करिष्य इति संकल्प्य। परमान्नमिदं दिव्यं कांस्यपात्रेण संयुतम्। वाणकं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्। वायनम्॥ इति पूजा समाप्ता॥ ॥ अथ कथा॥ व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्। पराशरात्मजं वंदे शुकतातं तपोनिधिम् १ सूत उवाच। द्वापरे द्वारवत्यां च नारदः कृष्णदर्शनात्। उत्साहेनाभ्यगात्तत्र ददर्श यदुनंदनम् २ पूजितश्चैव कृष्णेन विष्टरादिभिरादरात्। ततः प्रोवाच सं विष्णुर्नारदं लोकपूजितम् ३ श्रीकृष्ण उवाच। शृणु लोकज्ञ देवर्षे भुवने विचरन्सदा। लोकांतरेषु चरितं यद्विशेषं वदस्व मे ४ नारद उवाच। भगवन्देवदेवेश भक्तोस्मि तव चांकितः। तत्राश्चर्यमिदं वक्ष्ये धर्मस्य सदसि स्थितम् ५ तत्र सर्वे समासीना सुरा इंद्राश्चतुर्दश। ह्यहाश्चैकादश रुद्रा आदित्या द्वादश स्मृताः ६ वसवोऽष्टौ तथा नागा यक्षराक्षसपन्नगाः। ते सर्वे यममाहुश्च स्थितं सिंहासने शुभे ७ मानुष्यं दुंदुभेश्चर्माच्छादनार्थं वदस्व नः॥ यम उवाच। चातुर्मास्यव्रतं चैकं सक्रांतिव्रतमेव च ८ न कुर्वंति च या नार्यस्तासामाच्छादनं त्वचा। कुर्वंतु दुंदुभेश्चास्य विचार्यैवं महाभटाः ९ ते तस्य वचनं श्रुत्वा भटाः प्रविविशुर्भुवम्। स्वामिन्निदं महाश्चर्यमतस्त्वा प्रवदामि च १० तच्छ्रुत्वा त्वरितं कृष्णः प्राह लोकान्पुरस्थितान्। तथा कुर्वंतु लोकाश्च नार्यः पुर्यां वसंति हि ११ तच्छ्रुत्वा चरितं कृष्णनारीभिर्नगरेषु च। कृष्णाज्ञया कृष्णदूताः प्रोचुस्ते सर्वयोषितः १२ पुर सराः प्रशृण्वंतु नगरस्थाश्च योषितः। अन्यच्च यत्र कुत्रापि ऊचुस्ता यदुनंदनम् १३ त्वत्सोदर्रीं विना स्वामिन्मान्यां नार्योऽत्र संति हि। तच्छ्रुत्वा भयसंत्रस्तः सोदर्रीं प्रत्यभाषत १४ कृष्ण उवाच। सुभद्रे किं

१ ये सुप्रास्ते तमधर्मसदसिसीना संतः जातुरित्यर्थः। २ व्रतीकृतव्रता अन्या नार्यो न संतीत्यर्थः।

करोषीह आगता यमसेवकाः । व्रतं त्वया कृतं भद्रे पुरा पुण्योद्भवं शुभम् १५ सुभद्रोवाच । सर्वव्रतानि हे कृष्ण कृतान्यद्य न संशयः । नोचेत्त्वत्सोदरी न स्यां योषिच्चाप्यर्जुनस्य च ॥ न स्यां माता ऽभिमन्योर्वै यमदूताः कथं विभो १६ कृष्ण उवाच । कुरु त्वं भगिनी मे ऽद्य व्रतमेकं शुभप्रदम् । गोपद्ममिति विख्यातं व्रतं लोकेषु विश्रुतम् १७ सूतेन कथितं पूर्वमृषीणां हितकाम्यया । नैमिषे हिमवत्पार्श्वे सिद्धाश्रममनुत्तमम् १८ तत्र सूतोऽगमद्द्रष्टुं मुनीनां यज्ञमुत्तमम् । तं दृष्ट्वा मुनयः सर्वे हर्षिताश्च मुहुर्मुहुः १९ अर्चितश्च ततः सर्वैरर्घ्यादिभिर्यथाविधि । अभ्यर्च्य तं मुनिं विप्रा ऊचुस्ते प्रीतिपूर्वकम् २० ऋषय ऊचुः । भवाँल्लोकस्य धर्मज्ञो भक्तानां ज्ञानसाधनः । समर्थं सर्वमुक्तीनां सर्वसौभाग्यकारकम् २१ कृपया मुनिशार्दूल कथयस्वोत्तमं व्रतम् ॥ सूत उवाच । शृणुध्वमृषयः सर्वे व्रतानामुत्तमं व्रतम् २२ गोपद्ममिति विख्यातं सर्वपापहरं परम् । सर्वदुःखोपशमनं सर्वसंपत्प्रदायकम् २३ यमस्य दंडनं यस्माद्दूरीकृतमनुत्तमम् । सुवासिन्यास्तु सौभाग्यं पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम् २४ ऋषय ऊचुः । कस्मिन्मासि कथं कृत्वा किं फलं कस्य पूजनम् । केन चीर्णं पुरा साधो तत्सर्वं कथयस्व नः २५ सूत उवाच । आषाढशुक्लपक्षस्य एकादश्यां विशेषतः । तदारभ्य कार्तिकस्य द्वादश्यंतं व्रतं चरेत् २६ गोष्ठे च शुद्धगोस्थाने गोमयेनोपलिप्य च । त्रयस्त्रिंशच्च पद्मानि कारयेद्व्रीहिपिष्टकैः २७ शोभयेत्पंचरंगैश्च गंधपुष्पैः प्रपूजयेत् । तत्संख्यया च कर्तव्या नमस्कारप्रदक्षिणाः २८ तत्संख्यया ह्यपूपाँश्च ब्राह्मणाय निवेदयेत् । वायनं द्विजवर्याय प्रथमे वत्सरे शुभम् २९ द्वितीये वत्सरे दद्यात्पायसं चैव निर्मितम् । तृतीये मंडकान्दद्याच्चतुर्थे पूर्णमिश्रितान् ॥ ३० पंचमे घारिका दद्यात्पूर्णे उद्यापनं चरेत् ।

१ अत्र, त्वया व्रतं कृतमिति प्रश्नः । अकृत मिति च्छेदो वा व्रतं वा न कृतं भद्रे सत्यं वद सहोदरि, इति पाठे व्रतार्के, वेति प्रश्नार्थे । २ कथं यमदूता आगता इत्यर्थः ।

एकादश्यामुपवसेद्दन्तधावनपूर्वकम् ३१ अभ्यर्गं तु प्रकुर्वीत स्वार्चितैर्ब्राह्मणै सह । मण्डपं कारयेत्तत्र कदलीस्तंभमण्डितम् ३२ नानापुष्पैश्च शोभाढ्यं मसर तत्र कारयेत् । तन्मध्ये सर्वतोभद्रं पचरंगैः समन्वितम् ३३ पुण्याहं वाचयित्वा तु प्रतिमायां यजेद्धरिम् । कर्षमात्रसु वर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः ३४ आचार्यं वरयित्वा च कलशं स्थापयेत्ततः । लक्ष्मीनारायणं स्थाप्य सौवर्णेन प्रकल्पितम् ३५ प्रभाव्या वाहन तत्र पूजयेद्धूपदीपकैः । द्वादशैव तु नामानि प्रत्येक पूजयेद्व्रती ३६ रात्रौ जागरणं कृत्वा गीतवाद्यादिमङ्गलैः । ततः प्रभाते उत्था-य स्नात्वा होम तु कारयेत् ३७ सतिलाज्यसमिद्द्रव्यं हुनेद्द्वादशनामभिः । पायसं च शतं चाष्टौ हुत्वा पूर्णाहुतिं चरेत् ३८ वत्सेन सहि तां धेनुमाचार्याय निवेदयेत् । विप्रान्यच सपत्नीकान्भोजयेत्परसैर्व्रती ३९ भुंजीत बन्धुभिः सार्द्धमेकाग्रकृतमानसः । अन्यानपि यथा शक्त्या ब्राह्मणानपि भोजयेत् ४० कृत्वा चेदं व्रत पुण्य सर्वान्कामानवाप्नुयात् । अन्ते स्वर्गपदं गच्छेत्सर्वपापविवर्जितः ४१ सूत उवाच । कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा सुभद्रा तत्तथाऽकरोत् । पश्चाद्व्रतमेतस्या रात्रौ यामचतुष्टये ४२ गोपद्मानि च संपूज्य प्रातर्हुत्वा हुताशनम् । एवं व्रते कृते पश्चात्पुर्यां यमभटाविशन् ४३ यमभटा ऊचुः । सुभद्रे तव देहस्य चर्मार्थे चागता वयम् ॥ सुभद्रोवाच । गोष्ठे पद्मानि चान्यत्र सर्वं पश्यतु हे भटाः ४४ अन्योन्यवादसमये विष्णुदूताः समागताः । तान्दृष्ट्वा ताडयामासुर्व्रतस्यास्य प्रभावतः ४५ पला यिता महाभीता स्मरन्तो यमशासनम् । तान्दृष्ट्वा रक्तदिग्धांगान्यमो भयसमन्वित ४६ कस्येद कृत्यमिति च ज्ञात्वाऽतीन्द्रियदर्शनात् । उवाच दूता शृणुत यत्र संपूज्यते हरिः ४७ न गंतव्यं भवद्भिश्च सत्य सत्य वदाम्यहम् । प्राक्सर्वतो दैववशाद्विविशश्च महाभटाः ४८ इत्युक्त्वा धर्मराजो ऽसौ शालायां च विवेश ह । तेनैव ऋषिणा मह्यं कथित व्रतमीदृशम् ४९ दमयंत्या तथा चान्ये राज्यभ्रंशा

त्कृतं व्रतम् । व्रतस्यास्य प्रभावेण राज्यसौभाग्यसंपदः ॥ पुत्रपौत्रादिसौभाग्यं भुक्त्वा मोक्षमवाप्नुयात् ५० ऋषय ऊचुः । त्वत्प्रसादात्कृतार्था भो गच्छामः स्वाश्रमालयम् । प्रणम्य मुनिभिः साकं सूतश्चांतर्हितो ऽभवत् ५१ मुनिभिः सर्वलोकेषु कथितं व्रतमुत्तमम् । नातःपरतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ५२ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे गोपद्मव्रतोद्यापनं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ पुरुषोत्तममासस्य कमलानामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि व्रतानामुत्तमं व्रतम् । सर्वपापहरं चैव फलं मुक्तिप्रदायकम् १ पुरुषोत्तममासस्य कथां ब्रूहि जनार्दन । को विधिः किं फलं तस्य को देवस्तत्र पूज्यते २ अधिमासे तु संप्राप्ते व्रतं ब्रूहि जनार्दन ॥ कस्य दानस्य किं पुण्यं किं कर्तव्यं नृभिः प्रभो ३ कथं स्नानं च किं जाप्यं कथं पूजाविधिः स्मृतः । किं भोज्यमुत्तमं चान्नं मासे वै पुरुषोत्तमे ४ श्रीकृष्ण उवाच । कथयिष्यामि राजेंद्र भवतः स्नेहकारणात् । अधिमासे तु संप्राप्ते भवेदेकादशी तु या ५ कमला नामनामेति तिथीनामुत्तमा तिथिः । तस्याश्चैव प्रभावेण कमला ऽभिमुखी भवेत् ६ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा तं पुरुषोत्तमम् । स्नात्वा चैव विधानेन व्रती नियममाचरेत् ७ गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां दशगुणं स्मृतम् । गवां गोष्ठे शतगुणमग्न्यागारे दशाधिकम् ८ शिवक्षेत्रेषु तीर्थेषु देवतानां च सन्निधौ । सहस्रं शतकोटीनामनंतं विष्णुसन्निधौ ९ अवंत्यामभवद्विप्रः शिवशर्मेति नामतः । तस्यात्मजेषु पंचेषु कनिष्ठो दुष्टकर्मकृत् १० तदा पित्रा परित्यक्तस्त्यक्तः स्वजनबंधुभिः ॥ स्वकर्मणः प्रभावेण गतो दूरतरं वनम् ११ एकदा दैवयोगेन तीर्थराजं समागमत् । [1]क्षुत्क्षामो दीनवदनस्त्रिवेण्यां स्नानमाचरत् १२ ऋषीणामाश्रमं तत्र विचिन्वन्क्षुधयार्दितः । हरिमित्रमुनेस्तत्र त्वाश्रमं च ददर्श ह १३ पुरुषोत्तममासे तु श्रद्धया कमला स्तुता । एका-

१ इयमुक्तिः सूतस्य प्राग्भोक्त्या न संगच्छते ।

दशी पुण्यतमा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी १४ पुरुषोत्तममासस्य जनाना च समागमे । यत्राश्रमे कथयतां कथां कल्मषनाशिनीम् १५ जप
क्रमेण तां श्रुत्वा कमलां पापहारिणीम् । व्रत कृत च तैः सार्द्धं स्थित्वा शून्यालये तदा १६ निशीथे समनुप्राप्ते कमला ऽत्र स
मागता । वर ददामि भो विप्र कमलाया प्रभावतः १७ विप्र उवाच । का त्वं कस्यासि रंभोरु प्रसन्ना च कथं मम । ऐंद्री स्वमिंद्रदेव
स्य भवानी शंकरस्य च १८ वधूर्वा चंद्रसूर्यस्य गंधर्वी किन्नरी तथा । त्वत्सदृशी न दृष्टा च न श्रुता च शुभानने १९ लक्ष्मीरुवाच ।
प्रसन्ना सांप्रत जाता वैकुंठादहमागता । प्रेरिता हरिदेवेन एकादश्याः प्रभावतः २० पुरुषोत्तममासस्य कृष्णपक्षे तु या भवेत् । कम
ला नाम सा प्रोक्ता कमला दातुमागता २१ पुरुषोत्तममासस्य या पक्षे प्रथमा भवेत् । तस्या व्रतं त्वया चीर्णं प्रयागे मुनिसन्निधौ२२
व्रतस्यास्य प्रभावेण वशगा ऽहं न संशय । तव वशे भविष्यंति मानवा द्विजसत्तम । कर्मंते मत्प्रसाद तु सत्यं ते व्याहृत मया २३ वि
प्र उवाच । प्रसन्ना यदि मे पद्मे व्रतं विस्तरतो वद । यत्कथासु प्रवर्तंते राजानो ये जगद्धिताः २४ लक्ष्मीरुवाच । श्रोतॄणां परमं श्रा-
व्य पवित्राणामनुत्तमम् । दुःस्वप्ननाशन पुण्य श्रोतव्यं यत्नतस्तत २५ उत्तमः श्रद्धया युक्तः श्लोकं श्लोकार्द्धमेव । पठित्वा मुच्यते स
द्यो महापातककोटिभि २६ मासानां परमो मास पक्षिणा गरुडो यथा । नदीना च यथा गंगा तिथीनां द्वादशी तिथि २७ तेमर्च
यति विबुधा नारायणमनामयम् । ये यजति सदा भक्त्या नारायणमनामयम् । २८ तानर्चयंति सततं ब्रह्माद्या देवतागणाः । नारायण
परा ये च हरिकीर्तनतत्पराः २९ हरिप्रजागरा ये च कृतार्थास्ते कलौ युगे । शुक्ले वा यदि वा कृष्णे भवेदेकादशीद्वयम् ३० गृहस्था

१ पकामध्यामित्यप्याठ ।

नां च पूर्वा तु यतीनामुत्तरा स्मृता । एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी २१ व्रते क्रतुशतं पुण्यं त्रयोदश्यां तु पारणम् । एका-
दश्यां निराहारः स्थित्वाहमपरेऽहनि २२ भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत । अमुं मंत्रं समुच्चार्य देवदेवस्य चक्रिणः २३ भ-
क्तिभावेन तुष्टात्मा चोपवासं समर्पयेत् । देवदेवस्य पुरतो जागरं नियतो व्रती २४ गीतैर्वाद्यैश्च नृत्यैश्च पुराणपठनादिभिः । ततः प्रातः समु-
त्थाय द्वादशीदिवसे व्रती २५ स्नात्वा विष्णुं समभ्यर्च्य विधिवत्प्रयतेंद्रियः । पंचामृतेन संस्नाप्य ह्येकादश्यां जनार्दनम् । द्वादश्यां च पय:
स्नानं हरेः सारूप्यमश्नुते २६ अज्ञानतिमिरांधस्य व्रतेनानेन केशव । प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव २७ एवं विज्ञाप्य
देवेशं देवदेवं च चक्रिणम् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम् २८ ततः स बंधुभिः सार्द्धं नारायणपरायणः । कृत्वा पंचम-
हायज्ञान्स्वयं भुंजीत वाग्यतः २९ एवं यः प्रयतः कुर्यात्पुण्यमेकादशीव्रतम् । स याति विष्णुभवनं पुनरावृत्तिदुर्लभम् ४० इत्युक्त्वा क-
मला तस्मै प्रसन्ना तस्य वंशजान् । सोपि विप्रो धनी भूत्वा पितुर्गेहं समाविशत् ४१ एवं यः कुरुते राजन् कमलाव्रतमुत्तमम् । शृणु-
याद्वासरे विष्णोः सर्वपापैः प्रमुच्यते ४२ ॥ इति श्रीब्रह्मांडपुराणे पुरुषोत्तममासे कमलानामैकादशीमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ का-
र्तिकशुक्लैकादश्यां प्रबोधविधिः ॥ हेमाद्रौ ब्राह्मे—एकादश्यां तु शुक्लायां कार्तिके मासि केशवम् । प्रसुप्तं बोधयेद्रात्रौ श्रद्धाभक्तिसमन्वि-
तः ॥ नृत्यैर्गीतैस्तथा वेदैर्ऋग्यजुःसाममंगलैः । वीणापणवशब्दैश्च पुराणश्रवणेन च ॥ वासुदेवकथाभिश्च स्तोत्रैरन्यैश्च वैष्णवैः । सुभा-
षितैरिंद्रजालैर्भूरिशोभाभिरेव च ॥ पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैर्दीपमालोसुशोभनैः । होमैर्भक्ष्यैरपूपैश्च फलैः शर्करपायसैः ॥ इक्षोर्विकारैर्मधुरैर्द्राक्षा-

१ अत्र, कृत्वेत्यध्याहारः । २ अत्र कचित्पुस्तके, दीपवृक्षैः सुशोभनैरिति पाठः ।

वैः सह दाडिमे । कुठेरकस्य मंजर्या मालत्या कमलेन च । -कुठेरकः पर्णशरः, कृष्णतुलसीति केचित् ॥ हुताभ्यां श्वेतरक्ताभ्यां चदना भ्यां च सर्वदा । कुंकुमालक्तकाभ्या च रक्तसूत्रैः सकंकणैः ॥ तथा नानाविधैः पुष्पैर्द्रव्यैर्वीरक्रियाहृतैः । विक्रेत्रा प्रथमतोऽभिहित मू ल्यं दत्त्वा क्रियमाणः क्रयो वीरक्रयः ॥ तस्यां राज्यां व्यतीतायां द्वादश्यामरुणोदये । आदौ घृतेनेक्षुरवेण मधुना स्नापयेत्ततः ॥ दध्ना क्षीरे ण च तथा पंचगव्येन पूजयेत् । उद्वर्तयेन्माषचूर्णं शर्करामलकी तथा ॥ सर्षपांश्च प्रियंगूंश्च मातुलिंगरसैस्तथा । सर्वौषध्यः सर्वगंधाः सर्वबीजानि कांचनम् ॥ मंगलानि यथाकामं रत्नानि च कुशोदकम् । एवं संशोध्य देवेश दद्याद्गोरोचनं शुभम् ॥ ततस्तु कलशान्स्थाप्य यथाप्राप्तं स्वलंकृतान् । जातीपल्लवसंयुक्तान्सफलांश्च सकांचनाम् ॥ पुण्याह वेदशब्देन वीणावेणुरवेण च । एवं संस्नाप्य गोविंद स्वनुलिप्तं स्वलंकृतम् ॥ सुवासतंतु संपूज्य सुमनोभिः सकुंकुमैः । धूपैर्दीपैर्मनोज्ञैश्च पायसेन च भूरिणा ॥ हविष्यैश्चान्नदानैश्च होमैः पु- ष्पैः सदक्षिणैः । वासोभिर्भूषणैरन्यैर्गोभिरश्वैर्मनोजवैः ॥ ब्राह्मणाः पूजनीयाश्च विष्णोरीश्याश्च मूर्तयः । यत्तु शिष्टमतं पश्चाद्भोक्तव्य ब्राह्मणैः सह ॥ इति प्रबोधोत्सवविधिः ॥ ॥ अथ कार्तिकशुक्लैकादश्यां भीष्मपंचकव्रतम् । हेमाद्रौ नारदीये–नारद उवाच । यदेतद- चलं पुण्यं व्रतानामुत्तमं व्रतम् । कर्तव्य कार्तिके मासि मयभाद्भीष्मपंचकम् ॥ विज्ञानं तस्य विस्पष्ट फल चापि ततो वरम् । कथयस्व प्रसादेन मुनीनां हितकाम्यया ॥ ब्रह्मोवाच । प्रवक्ष्यामि महापुण्य व्रत व्रतविदांवर । भीष्मेणैव च समाप्त व्रत पंचदिनात्मकम् । सका- शाद्वासुदेवस्य तेनोक्त भीष्मपंचकम् । व्रतस्यास्य गुणान्वक्तुं कः शक्त केशवादृते ॥ व्रतं चैतन्महापुण्यं महापातकनाशनम् ।

१ पचास इत्यमरटीकायां मतार्के च ।

अतो वरं प्रयत्नेन कर्तव्यं भीष्मपंचकम् ॥ वालखिल्या ऊचुः । कार्तिकस्यासिते पक्षे स्नात्वा सम्यग्यतव्रतः । एकादश्यां तु गृह्णीयाद्व्रतं पंचदिनात्मकम् । शरपंजरसुप्तेन भीष्मेण तु महात्मना ॥ राजधर्मा दानधर्मा मोक्षधर्मास्ततःपरम् । कथितः पांडुदायादैः कृष्णेनापि श्रुतास्तदा ॥ ततः प्रीतेन मनसा वासुदेवेन भाषितम् । धन्यधन्यो ऽसि भीष्म त्वं धर्माः संश्रावितास्त्वया ॥ एकादश्यां कार्तिकस्य याचितं च जलं त्वया। अर्जुनेन समानीतं गांगं बाणस्य वेगतः । तुष्टानि तव गात्राणि तस्माद्यदिनावधि । पूर्णांतं सर्वलोकास्त्वां तर्पयंत्वर्घ्यदानतः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मम संतुष्टिकारकम् । एतद्व्रतं प्रकुर्वंतु भीष्मपंचकसंज्ञितम् ॥ कार्तिकस्य व्रतं कृत्वा न कुर्याद्भीष्मपंचकम् । समग्रं कार्तिकव्रतं वृथा तस्य भविष्यति । अशक्तश्चेन्नरो भूयादसमर्थश्च कार्तिके । भीष्मस्य पंचकं कृत्वा कार्तिकस्य फलं लभेत् ॥ सत्यव्रताय शुचये गांगेयाय महात्मनः । भीष्मायैतद्ददाम्यर्घ्यमाजन्मब्रह्मचारिणे ॥ सव्येनानेन मंत्रेण तर्पणं सार्ववर्णिकम् । व्रतांगत्वात्पूर्णिमायां प्रदेयः पापपूरुषः ॥ अपुत्रेण प्रकर्तव्यं सर्वथा भीष्मपंचकम् । यः पुत्रार्थं व्रतं कुर्यात्सस्त्रीको भीष्मपंचकम् । प्रदत्त्वा पापपुरुषं वर्षमध्ये सुतं लभेत् ॥ आवश्यमेव कर्तव्यं तस्माद्भीष्मस्य पंचकम् । विष्णुप्रीतिकरं प्रोक्तं मया भीष्मस्य पंचकम् ॥ अत्रैव हि प्रकर्तव्यः प्रबोधस्तु हरेः खग । हतः शंखासुरो दैत्यो नभसः शुक्लपक्षके । एकादश्यां ततो विष्णुश्चातुर्मास्ये प्रसुप्तवान् ॥ क्षीरोदधौ जाग्रतो ऽसावेकादश्यां तु कार्तिके । अतः प्रबोधनं कार्यमेकादश्यां तु वैष्णवैः ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ शंखघ्न उत्तिष्ठांभोधिचारक । उत्तिष्ठ मुनिनौधार त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥ उत्तिष्ठ धरणीधार वराहादिकधारक । कूर्मरूपधरोत्तिष्ठ त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वाराह दंष्ट्रोद्धृतवसुंधर । हिरण्याक्षप्राणघातिन्

त्रैलोक्ये मगलं कुरु । हिरण्यकशिपुघ्न त्व प्रल्हादानंददायक । लक्ष्मीपते समुत्तिष्ठ त्रैलोक्ये मंगल कुरु ॥ उत्तिष्ठ बलिदर्पघ्न देवेंद्रपददाय
क । उत्तिष्ठादितिपुत्र त्वं त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥ उत्तिष्ठ हैहयाधीश समस्तकुलनाशन । रेणुकाघ्न त्वमुत्तिष्ठ त्रैलोक्ये मगल कुरु ॥ उ
त्तिष्ठ रक्षोदलन अयोध्यास्वर्गदायक । समुद्रसेतुकर्तस्त्व त्रैलोक्ये० ॥ उत्तिष्ठ कंसहरण मदघूर्णितलोचन । उत्तिष्ठ हलपाणे त्व त्रै० ॥
उत्तिष्ठ त्व गयावासिस्त्यक्तलौकिककृत्यक । उत्तिष्ठ पद्मासनग त्रै० । उत्तिष्ठ म्लेच्छनिवहसञ्जसंहारकारक । अश्ववाहयुगांते त्व त्रै० ॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज । उत्तिष्ठ कमलाकांत त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥ इत्युक्त्वा शंखभेर्यादि प्रातःकाले तु वादयेत् । वीणा-
वेणुमृदंगादि गीतनृत्यादि कारयेत् ॥ उत्थापयित्वा देवेश पूजां तस्य विधाय च । सायकाले प्रकर्त०परस्तुलस्युद्वाहजो विधिः ॥ अवश्य
मेव कर्तव्यः प्रतिवर्ष तु वैष्णवैः । विधिं तस्य प्रवक्ष्यामि यथासांगा क्रिया भवेत् ॥ विष्णोस्तु प्रतिमां कुर्यात्पलस्य स्वर्णजां शुभाम् ।
तदर्धार्धं तदधार्धं यथाशक्त्या प्रकल्पयेत् ॥ प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा च तुलसीविष्णुरूपयोः । तत उत्थापयेद्देवं पूर्वोक्तैश्च स्तवादिभिः । उ
पचारैः षोडशभिः पुरुषसूक्तेन पूजयेत् । देशकालौ ततः स्मृत्वा गणेशं तत्र पूजयेत् । पुण्याहं वाचयित्वा ऽथ नांदीश्राद्ध समाचरेत् ।
वेदवाद्यादिनिर्घोषैर्विष्णुमूर्तिं समानयेत् ॥ तुलस्या निकटे सा तु स्थाप्या चांतरिता पटैः ॥ आगच्छ भगवन्देव अर्चयिष्यामि केशव । तु
भ्यं ददामि तुलसीं सर्वकामप्रदो भव ॥ दद्यात्रिवारमर्घ्यं च पाद्य विष्टरमेव च । ततश्चाचमनीयं च त्रिरुक्त्वा च प्रदापयेत् । ततो द
धि घृत क्षौद्रं कांस्यपात्रपुटीकृतम् । मधुपर्कं गृहाण त्व वासुदेव नमोस्तु ते ॥ ततो ये स्वकुलाचाराः कर्तव्या विष्णुतुष्टये । हरिद्रालेपना
भ्यंगः कार्यः सर्वं विधाय च ॥ गोधूलिसमये पूज्यौ तुलसीकेशवौ पुन । पृथक्पृथक् ततः कार्यौ सम्मुखं मंगलं पठेत् ॥ ईक्षते भा

स्करे तु संकल्पं तु समर्पयेत् । स्वगोत्रप्रवरानुक्त्वा तथा त्रिपुरुषादिकम् ॥ अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक । इमां गृहाण तुलसीं
विवाहविधिनेश्वर ॥ पार्वतीबीजसंभूतां वृंदाभस्मनि संस्थिताम् । अनादिमध्यनिधनां वल्लभां च ददाम्यहम् ॥ पयोघटैश्च सेवाभिः कन्या-
वर्द्धिता मया । त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं दास्यामि त्वं गृहाण भोः ॥ एवं दत्त्वा तु तुलसीं पश्चात्तौ पूजयेत्ततः । रात्रौ जागरणं कुर्या-
द्विवाहोत्सवपूर्वकम् ॥ प्रतिवर्षमिदं कुर्यात्कार्तिकव्रतसिद्धये ॥ ॥ वालखिल्या ऊचुः । ततः प्रभातसमये तुलसीं विष्णुमर्चयेत् । वह्नि-
संस्थापनं कृत्वा द्वादशाक्षरविद्यया । पायसाज्यक्षौद्रतिलैर्हुनेदष्टोत्तरं शतम् । ततः स्विष्टकृतं हुत्वा दद्यात्पूर्णाहुतिं ततः । आचार्यं च
समभ्यर्च्य होमशेषं समापयेत् ॥ चतुरो वार्षिकान्मासान्नियमं यस्य यत्कृतम् । कथयित्वा द्विजेभ्यस्तत्तथा ऽन्यत्परिपूजयेत् ॥ इदं व्रतं
मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो । न्यूनं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन । रेवती तुर्यचरणे द्वादशीसंयुते नरः । न कुर्यात्पारणं कुर्वन्व्रतं
निष्फलतां व्रजेत् ॥ ततो येषां पदार्थानां वर्जनं तु कृतं भवेत् । चातुर्मास्ये ऽथवा चोर्जे ब्राह्मणेभ्यः समर्पयेत् । ततः सर्वं समश्नीयाद्य-
द्यदुक्तं व्रते स्थितः । दंपतीभ्यां सहैवात्र भोक्तव्यं वा द्विजैः सह । ततो भुक्त्युत्तरं यानि गलितानि दलानि च । तुलस्यास्तानि भुक्त्वा तु
सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ भोजनानंतरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम् ॥ भक्षणात्पापनिर्मुक्तिश्चांद्रायणशताधिका । इक्षुखंडं तथा धात्रीफलं पूगी-
फलं तथा । भुक्त्वा तु भोजनस्यांते तयोच्छिष्टं विनश्यति । एषु त्रीषु न भुक्तं चेदेकैकमपि येन तु ॥ ज्ञेय उच्छिष्ट आवर्षं नरो ऽसौ
नात्र संशयः । ततः सायं पुनः पूज्यौ इक्षुवंशैश्च मंडितौ ॥ तुलसीवासुदेवौ च कृतकृत्यौ भवेत्ततः । ततो विसर्जनं कुर्याद्दत्त्वा देयादिकं
हरेः ॥ वैकुंठं गच्छ भगवंस्तुलस्या सहितः प्रभो । मत्कृतं पूजनं गृह्य संतुष्टो भव सर्वदा ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र

ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ जनार्दन ॥ एवं विसृज्य देवेशमाचार्याय प्रदापयेत् । मूर्त्यादिकं सर्वमेव कृतकृत्यो भवेन्नरः ॥ प्रतिवर्षं करोत्येवं तुलस्युद्वहनं शुभम् । इहलोके परत्रापि विपुलं सद्यशो लभेत् ॥ प्रतिवर्षं तु यः कुर्यात्तुलसीकरपीडनम् । भक्तिमान्धनधान्यैश्च युक्तो भवति निश्चितम् ॥ इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां कार्तिकशुक्लैकादश्यां द्वादश्यां तुलसीविवाहविधिः भीष्मपंचकव्रतं च संपूर्णम् ॥ ॥ अथ मार्गशीर्षकृष्णैकादशीव्रतम् ॥ अर्जुन उवाच । ॐ नमोनारायणायाव्यक्तायात्मस्वरूपिणे । सृष्टिस्थित्यन्तकर्त्रे च केशवाय नमोस्तु ते १ त्वमेव जगतां नाथ अंतर्यामी त्वमेव च । शास्त्राणां च कवीशश्च वक्ता त्वं च जगत्पते २ एकादशी कथं स्वामिन्नुत्पन्ना इति भीयते । एतं हि संशयं मे अद्य छेत्तुमर्हसि त्वं प्रभो ३ ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत । ममोपरि कृपां कृत्वा इदानीं वक्तुमर्हसि ४ मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे किन्नामैकादशी भवेत् । किन्नाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते । कृता केन पुरा देव एतद्विस्तरतो वद ५ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पातकनाशिनीम् । पृष्टा च या त्वया राजँल्लोकानां हितकाम्यया ६ मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे चोत्पत्तिर्नामनामतः । तस्यामुपोषणेनैव धार्मिको जायते नरः ७ धर्माद्भवति सत्यं वै लक्ष्मीः सत्यानुसारिणी । पुरा वै मुरनाशाय उत्पन्नां मम वल्लभाम् ८ ये कुर्वंति नरा राजंस्तेषां सौख्यं भवेच्छुभम् । तथा पापानि नश्यंति ते न यांति यमालयम् ९ अर्जुन उवाच । उत्पन्ना सा कथं देव कथं पुण्याधिका शुभा । कथं देव पवित्रा वै कथं च देवताप्रिया १० श्रीकृष्ण उवाच । पुरा कृतयुगे पार्थ मुरुनामेति दानवः । अत्यद्भुतो महारौद्रः सर्वलोकभयंकरः ११ इंद्र उच्छेदितस्तेन ह्याद्यो देवः पुरंदरः । आदित्या वसवो ब्रह्मा वायुरग्निस्तथैव च १२ (नवं प्रतिष्ठितं तेन एवमादि धनंजय) । देवता निर्जितास्तेन अत्युग्रेण तु पांडव १३ स्वर्गान्निराकृता

देवा विचरंति महीतले। साशंका भयभीतास्ते गताः सर्वे महेश्वरम् १४ इंद्रेण कथितं सर्वमीश्वरस्यापि चाग्रतः । स्वर्गलोकं परि-
त्यज्य विचरंति महीतले १५ मर्त्येषु संस्थिता देवा न शोभंते महेश्वर। उपायं ब्रूहि मे देव ह्यमराणां तु का गतिः १६ शिव उवाच ।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ यत्रास्ति गरुडध्वजः। शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणः १७ ईश्वरस्य वचः श्रुत्वा देवराजो महामतिः । त्रिदशैः सहि
तः सर्वैर्गतस्तत्र धनंजय १८ अप्सरोगणगंधर्वैः सिद्धविद्याधरोरगैः। यत्रैव स जगन्नाथः सुप्तो ऽस्ति च जनार्दनः ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा इदं स्तो-
त्रमुदीरयत् १९ ॐ नमो देवदेवेश देवानामपि वंदित। दैत्यारे पुंडरीकाक्ष त्राहि मां मधुसुदन २० नमस्ते स्थितिनाशाय नमस्तेस्तु जगत्पते।
नमो दैत्यविनाशाय त्राहि मां मधुसूदन २१ सुराः सर्वे समायुक्ता भयभीताः समागताः । शरणं त्वां जगन्नाथ त्राहि मां भयविह्वलम् २२ त्राहि
मां देव देवेश त्राहि मां त्वं जनार्दन। त्राहि मां त्वं सुरानंद दानवानां विनाशक २३ त्वं गतिस्त्वं मतिर्देव त्वं कर्ता त्वं परायणः। त्वं माता सर्वगो-
सि त्वं त्वमेव हि जगत्पिता २४ अत्युग्रेण तु दैत्येन निर्जितास्त्रिदशाः प्रभो। स्वर्गं त्यक्त्वा जगन्नाथ विचरंति महीतले २५ इंद्रस्य वचनं श्रुत्वा
विष्णुर्वचनमब्रवीत् २६ विष्णुरुवाच। कीदृशो वो भवच्छत्रुः किन्नामा कीदृशं बलम्। किं स्थानं तस्य दुष्टस्य किं वीर्यं कः पराक्रमः
२७ इंद्र उवाच । बभूव पूर्वं देवेशासुरो ब्रह्मसमुद्भवः । तालजंघेति नाम्ना च अत्युग्रो ऽतिमहाबलः २८ तस्य पुत्रो ऽतिविख्यातो
मुरनाममहासुरः । उत्कटश्च महावीर्यो ब्रह्मलब्धवरो महान् २९ पुरी चंद्रवती नाम तत्र स्थाने वसत्यसौ । निर्जिता देवताः सर्वाः
स्वर्गाच्चैव निराकृताः ३० इंद्रोऽन्यश्च कृतस्तेन अन्यो देवो हुताशनः । चंद्रसूर्यौ कृतौ चान्यौ यमो वरुण एव च ३१ सर्वमात्मीकृतं तेन
सत्यं सत्यं जनार्दन । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कोपाविष्टो जगत्पतिः ३२ हनिष्ये दानवं दुष्टमित्याह भगवान्हरिः । त्रिदशैः सहितस्तत्र ग-

नर्मदवतीं पुरीम् ३३ दृष्ट्वा देवान्स युयुधे दानवो बलदर्पितः । असंख्यातैश्च शस्त्रास्त्रैर्दिव्यप्रहरणायुधैः ३४ हन्यमानास्तु तैर्देवा अ सुरेश्च पुनःपुनः । त्रस्ता देवास्ततः सर्वे गताः सर्वे दिशो दश ३५ हरिं निरीक्ष्य तत्रस्थं तिष्ठतिष्ठात्रवीद्वच । स तन्निरीक्ष्य प्रोवाच असुरं मधुसूदनः ३६ रे दानव दुराचार मम बाहु निरीक्ष्य च । चक्र चैव समायातं सक्रोधो रक्तलोचन ३७ ततस्ते समुखाः सर्वे विष्णुना दानवा हताः । हतो बाणैः पुनर्दिव्यैर्विमुख सो ऽतिविह्वलः ३८ चक्रं मुक्तं तु कृष्णेन दैत्यसैन्ये च पाडव । तेनैव च्छिन्नशिरसो बहवो निधन गताः ३९ एकांगो दानवस्तत्र युध्यमानो मुहुर्मुहुः । नष्टाः सर्वे सुरास्तेन निर्जितो मधुसूदनः ४० निर्जितेने च दैत्येन बाहुयुद्ध च याचितम् । बाहुयुद्धं कृत तेन दिव्यं वर्षसहस्रकम् ४१ विष्णुः पराजितस्तेन गतो बदरिकाश्रमम् । गुहा सिंहवती नाम तत्र सुप्तो जनार्दनः ४२ दानवः पृष्ठतो लग्न प्रविष्टस्तां गुहोत्तमाम् । प्रसुप्तं तत्र मां दृष्ट्वा दानवेन सुभाषितम् ४३ हनिष्यामि न संदेहो सुरराणां भयकरः । इत्येवमुक्ते वचने दैत्येनामित्रकर्षिणा ४४ निर्गता कन्यका चैका जनार्दनशरीरत । रूपेणातिसुरूपाढ्या दिव्यप्रहरणायुधा ४५ विष्णुतेजःसमुद्भूता महाबलपराक्रमा । मोहितो दानवस्तत्र मुरनामा हि पांडव ४६ सा कन्या युयुधे तेन सर्वयुद्ध विशारदा । निहतो दानवस्तत्र तथा देवः प्रबुद्धवान् ४७ पतित दानव दृष्ट्वा ततो विस्मयमागतः । केनेत्य निहितो रौद्रो मम शत्रुर्भयकरः ४८ न देवो न च गधर्वो न समो ऽस्यास्ति भूतले । एवं पार्थ तदा जातो विस्मितो मधुसूदनः ४९ अकस्मादेव सोवाच वाचा दिव्या ऽशरीरिणी ॥ एकादश्युवाच । मया च निहतो दुष्टो देवासुरभयकरः ५० जिता येन सुराः सर्वे स्वर्गाश्चैव निराकृताः । तस्या

१ मम, भर्तोर्बाहुमालिमिरिति पाठांतरं स्वपदे । २ मदरोऽमवदिरपध्याहारः । ३ दैत्येन निर्जितेन विष्णुनेत्यर्थः ।

स्तद्वचनं श्रुत्वा विष्णुर्वचनमब्रवीत् ५१ विष्णुरुवाच । उपकारस्त्वया भद्रे मम कारुण्यभावतः । दानवो निहतो दुष्टः सुराणां च भयंकरः ५२ सोहं विनिर्जितो येन¹, कंसो येन² निपातितः । विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वा देवी वचनमब्रवीत् ५३ एकादश्यस्म्यहं विष्णो सर्वशत्रुविनाशिनी । मया च निहतो दैत्यः सुराणां त्रासकारकः ५४ इत्येतद्वचनं श्रुत्वा देवदेवो जनार्दनः । प्राह तुष्टोऽस्मि भद्रं ते वरं वरय वांच्छितम् ५५ निहते दानवेंद्रे च संतुष्टास्तत्र देवताः । आनंदस्त्रिषु लोकेषु मुनयो मुदमागताः ५६ ब्रूहि त्वं वचनं भद्रे यत्ते मनसि वर्तते । ददामि च न संदेहः सुराणामपि दुर्लभम् ५७ एकादश्युवाच । यदि तुष्टोसि मे देव सत्यमुक्तं जनार्दन । यदि सत्यं जगन्नाथस्तिस्रो वाचो ददस्व मे ५८ श्रीभगवानुवाच । सत्यमेतन्मया प्रोक्तमवश्यं तव सुव्रते । तिस्रो वाचो मया दत्तास्तव वाक्यं भवेदिति ५९ एकादश्युवाच । त्रैलोक्येषु च देवेश मन्वंतरयुगेष्वपि । अहं च त्वत्प्रिया नित्यं यथा स्यां कुरु मे वरम् ६० सर्वतिथिप्रधाना च सर्वविघ्नविनाशिनी । सर्वपापापहंत्री च आयुर्बलविवर्द्धिनी ६१ उपोष्यंति हि ये मर्त्या महाभक्त्या जनार्दन । सर्वसिद्धिर्भवेत्तेषां यदि तुष्टोऽसि माधव ६२ श्रीकृष्ण उवाच । यत्त्वं वदसि कल्याणि तत्सर्वं च भविष्यति । धर्मार्थकाममोक्षं च यस्त्वामेवं करिष्यति ६३ मम भक्ताश्च ये लोका ये च भक्तास्तवापि च । मम पूजां करिष्यंति एकादश्यां न संशयः ६४ चतुर्युगेषु विख्याताास्त्रिषु लोकेषु वै परम् । त्वां च भक्तामहं मन्ये एकादशिव्रते स्थिताम् ६५ सर्वतिथ्युत्तमा त्वं च मत्प्रसादाद्भविष्यसि । एवमुक्त्वा ततः सा तु तत्रैवांतरधीयत ६६ कृष्ण उवाच । पुरा कैकटके देशे कर्णीकनगरे शुभे । कर्णसेनेति राजर्षिन्यवसद्वृद्धिमत्प्रजः ६७ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्चे-

---

१ येन दैत्येन । २ येन मया ।

वानुमोदितः । न दुर्भिक्ष न दारिद्य तस्मिन्राज्ञि स्थिते प्रभो ६८ नाकालवृष्टिर्नो व्याधिर्नैव तस्करतापि च । संततसंपद्विहीनश्च कोपि तत्र न विद्यते ६९ पुत्रदुःख पिता क्वापि न पश्यति च कुत्रचित् । एतादृशे महाराजे प्रशासति प्रजाः प्रभो ७० धनहीनो द्विजः कोपि क्षुत्क्षामो विपद्गतः । कुटुंबभरणासक्तः कृच्छ्रात्समनुवर्तते ७१ भर्तुः शुश्रूषणे सक्ता सदाचारे गृहे स्थिता । सुदामानाम विप्रर्षिर्भार्या साध्वी च सत्तमा ७२ रहः पृच्छति भर्तारं म्लायता वदनेन सा । स्वामिन्पापे कृते पूर्वं धर्महीनस्तु जायते ७३ धर्महीने धनं नास्ति धर्महीने क्रिया नहि । तस्मात्केनाप्युपायेन धर्मस्य जननं कुरु ७४ एतस्मिन्नंतरे राजन्देवर्षि समुपागतः । दंपती चोत्थितौ तत्र, मधुपर्कं गृहाण भोः ७५ आसने तिष्ठ भो स्वामिन्नर्घ्यं गृह्ण नमोऽस्तु ते । अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफलाः क्रियाः ७६ अद्य नौ सफलं सर्वं भवतो दर्शनेन च । अस्मिन्पुरे तु ये स्वामिन्सर्वे ते सुखिनो जनाः ७७ अहं तु धनहीनत्वान्महादुःखेन पीडितः । कथयस्व प्रसादेन धनाढ्यः स्यामहं कथम् ७८ धनहीनस्य लोकेऽस्मिन्वृथा जन्म मनोरथाः । एवं श्रुत्वा तु राजेंद्र वचनं नारदोऽब्रवीत् ७९ नारद उवाच । मार्गशीर्षसिते पक्षे उत्पत्तिर्नामनामतः । तस्यामुपोषणेनैव धनाढ्यो जायते ध्रुवम् ८० तथा पापानि नश्यंति एतत्सत्यं वदामि ते । सर्वसौख्यकरं नृणां हरिवासरमुत्तमम् ८१ गते तु नारदे पश्चाद्व्रतं कृत्वा प्रयत्नतः । तस्या व्रतप्रभावेण सुप्रसन्नो जनार्दनः ८२ स्वयमेवाश्रिता लक्ष्मीर्यत्रासीद्द्विजमंदिरम् । भोगांस्तौ विपुलान्भुक्त्वा गतौ वैकुंठसन्निधौ ८३ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्यं हरिवासरम् । अंतरं नैव कर्तव्यं प्रशस्तव्रतकारिभिः ८४ तिथिरेका भवेत्सर्वा पक्षयोरुभयोरपि । उदयैकादशी स्वल्पा अंते चैव त्रयो

१ इप विमोक्षि ।

दशी ८५ मध्ये च द्वादशी पूर्णा त्रिःस्पृहा सा हरिप्रिया । एका उपोषिता चैव सहस्रैकादशीफला । सहस्रगुणितं दानं एकादश्यां तु पारणे ८६ अष्टम्येकादशी षष्ठी तृतीया च चतुर्दशी । पूर्वविद्धा न कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता ८७ एकामुपोषयेत्तां तु द्वादशीं विष्णुवल्लभाम् । दशमीवेधसंयुक्ता हंति पुण्यं पुराकृतम् ८८ एकादशी अहोरात्रं प्रभाते घटिका भवेत् । सा तिथिः परिहर्तव्या उपोष्या द्वादशीयुता ८९ एवंविधा मया प्रोक्ता पक्षयोरुभयोरपि । एकादश्यां प्रकुर्वीत उपवासं न संशयः ९० स याति परमं स्थानं यत्रास्ते गरुडध्वजः । धन्यास्ते मानवा लोके विष्णुभक्तिपरायणाः ९१ एकादश्याश्च माहात्म्यं पर्वकाले तु यः पठेत् । गोसहस्रफलं तस्य पुण्यं भवति भारत ९२ दिवा वा यदि वा रात्रौ यः शृणोतीह भक्तितः । कुलकोटिसमायुक्तो विष्णुलोके वसेद्ध्रुवम् ९३ एकादश्याश्च माहात्म्यं पठ्यमानं शृणोति यः । ब्रह्महत्यादिपापानि नश्यंते नात्र संशयः ९४ एकादशीसमा नास्ति सर्वपातकनाशिनी ९५ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे मार्गशीर्षकृष्णैकादश्या उत्पत्तिनाम्न्या माहात्म्यं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ मार्गशीर्षकृष्णैकादश्यां वैतरणीव्रतम् ॥ हेमाद्रौ भविष्ये—। कृष्ण उवाच । शरतल्पगतं भीष्मं पर्यपृच्छद्युधिष्ठिरः । व्रतेन येन पुण्येन यमलोको न दृश्यते १ नारी वा पुरुषो वापि यमलोकं न पश्यति । तत्समाचक्ष्व धर्मज्ञ पितामह कृपां कुरु २ भीष्म उवाच । एकादशीं वैतरणीं ना कृत्वा च विमुच्यते । यमलोकं न पश्येच्च शोकं चैव न विंदति ३ युधिष्ठिर उवाच । केन तात विधानेन कर्तव्या सा महाफला । पितामह समाख्याहि तद्विधानं मम प्रभो ४ भीष्म उवाच । एकादशी तिथिं कृत्वा मार्गशीर्षगतां शुभाम् । तामासाद्य नरः सम्यग्गृह्णीयान्नियमं शुचिः । ५ एकादशीतिथिः कृष्ण नाम्ना वैतरणी शुभा । सा व्रतेन त्वया कार्या वर्षं नक्तोपवासिना ६ मध्याह्ने तु नरः स्नात्वा नित्या निर्वर्त्य सत्क्रियाः । रात्रौ सुरभिमानीय

कृष्णामर्घ्यंयथाविधि ७ सा पूर्वाभिमुखी कार्या कृष्णा गौः किल भूतले । अग्रपादात्समारभ्य पश्चात्पादद्वयावधि ८ गोपुच्छं तु समासाद्य कुर्याद्वा पितृतर्पणम् । ततः पूजा प्रकर्तव्या शास्त्रदृष्टविधानतः ९ गां चैव श्रद्धया शुक्लचंदनेनानुलेपिनम् । गंधतोयेन चरणौ शृंगे प्रक्षाल्य शक्तित १० ततोऽनुपूजयेद्भक्त्या पुष्पैर्गंधादिवासितैः ।मंत्रैः पुराणसंप्रोक्तैर्यथास्थान यथाविधि ११ (तत्र मंत्राश्चतुर्थ्यंता नमोंता) ततो गोरग्रपादाभ्यां गोरास्याय नमोस्तु ते । गोशृंगाभ्यां च संपूज्य गोस्कंधाभ्यां तथैव च १२ गोपुच्छाय नमस्ते ऽस्तु गोः पुच्छात्पादयोस्तथा । गोः सर्वांगेषु संपूज्य स्थानेस्थानेषु देवताः १३ स्थानेष्वेतेषु गंधांश्च प्रक्षिपेच्छुद्धमानस । पश्चात्प्रदापयेद्धूप गोर्दीप प्रतिगृह्यताम् १४ असिपत्रादिकं घोरं नदीं वैतरणीं तथा । प्रसादात्ते तरिष्यामि गौर्मातस्ते नमो नमः १५ यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा १६ सुखेन तीर्यते यस्मान्नदी वैतरणी ध्रुवम् । तस्मादेकादशीं कृत्वा नाम्ना वैतरणी भवेत् १७ हेमशृंगीं रौप्यखुरीं सघंटाभरणांबराम् । ताम्रपृष्ठीं कांस्यदोग्ध्रीं सुवर्णोत्तरदक्षिणाम् ॥ सवत्सां द्विजमुख्याय पूजयित्वा समर्पयेत् १८ आनंदकृत्सर्वलोके देवानां च सदा प्रिया । गोस्त्वं पाहि जगन्नाथे दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् १९ आच्छादनं गवे दद्यात्सम्यक्शुद्धं सुनिर्मलम् । सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरी २० मार्गशीर्षादिके भक्त्या वर्षमेकं तु पूजयेत् । मासिमासि प्रकुर्वीत मासद्वादशकव्रतम् २१ उद्यापनं ततः कुर्यात्पूर्णे संवत्सरे तदा ॥ युधिष्ठिर उवाच । मार्गशीर्षसिते पक्षे उद्यापनविधिं वद २२ कृष्ण उवाच । य इच्छेत्सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् । विनाशं सर्वपापानां स कुर्याद्द्वादशीमिमाम् २३ युधिष्ठिर किमिष्टेन शिष्टैरन्यैर्व्रतोत्तमैः । दुष्टानीतरदुर्गाणि तोषयस्व च केशवम् २४ मार्गशीर्षे सिते पक्षे द्वादश्यां कारयेदिदम् । यदा वा भक्तियुक्तः स्या) देवदेवं जनार्दनम् २५

एकादश्यां निराहारो मासि मास्यर्चयेद्धरिम् । द्वादश्यां द्वादशैतानि नामानि परिकीर्तयेत् २६ केशवं मार्गशीर्षे च पौषे नारायणं विदुः । माधवं माघमासे तु गोविंदमथ फाल्गुने २७ चैत्रे विष्णुं तथा विंद्याद्वैशाखे मधुसूदनम् । त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः २८ श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके । आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः २९ कृष्णो ऽनंतोऽच्युतश्चक्री वैकुंठो ऽथ जनार्दनः । उपेंद्रो यज्ञपुरुषो वासुदेवस्तथा हरिः ३० योगीशः पुंडरीकाक्षो मासनामान्यनुक्रमात् । एतानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्पुरुषः सदा ३१ अपि दुर्गतिकास्तस्य पितरः स्वर्गमाप्नुयुः । तिलपात्रद्वादशकं यो दद्यात्प्रत्यहं द्विजे ३२ एवं द्वादशभिर्मासैर्व्रतं पारं गमिष्यति। व्रतांते ब्राह्मणान् शांतान्माससंख्यान्निमंत्रयेत् ३३ द्वादशाश्वत्थपत्रेषु स्थापयेच्छुक्लतंडुलैः । ॐ तस्मै नम आयातु इति चावाहयेत्पृथक् ३४ संस्थाप्याग्निं ततः प्राच्यां ध्यायेद्य आत्मसंमुखान् । आसनं पाद्यमर्घ्यं च गंधपुष्पादिना तथा ३५ धूपदीपांश्च वासांसि होमशेषं समापयेत् । दत्त्वा चाचमनं पश्चाद्धोमशेषं निवेदयेत् ३६ अष्टाष्टसमिधो होमे हुत्वा ऽष्टाष्टघृताहुतीः । अग्निप्रतिष्ठितं होमं देवेभ्यश्च निवेदयेत् ३७ पूर्णाहुतौ भवेन्मंत्रस्तद्विष्णोः परमं पदम् । एवं कृते तु होमांते गाः कृष्णा द्वादशाष्ट वा ३८ षट् चतस्रोपि वा देया एका वापि पयस्विनी । शय्या सतूलिका कार्या दंपत्योः परिधानकम् ३९ सवत्सा कृष्णवर्णा तु धेनुर्देया पयस्विनी । सौवर्णीं सुरभिं कृत्वा स्थापयेत्तूलिकोपरि ४० सुरभिं पूजयेन्मंत्रैः पूर्वोक्तैर्भक्तिसंयुतः । ततस्तु गुरवे दद्यात्सर्वं तत्र क्षमापयेत् ४१ कृष्णभक्ताय शांताय विधिज्ञात्रे महात्मने । ते प्रीयतामिति प्रोक्ता देवाद्वादशमासिकान् ४२ मामेवमुद्धरस्वेति गवां वाच्यः परिग्रहः । मासि मासि भवेत्तेषु तिलपात्रेषु तैर्घटैः ४३ तस्मिन्काले प्रदातव्या घटास्ते मासनामभिः । समाप्य तु व्रतं पुण्यं तस्मादर्घ्यं प्रदापयेत् ४४

तारयेत्पितृगणान्दश पूर्वान्दशापरान् । आत्मानमेकविंशञ्च कृष्णैकादश्युपोषणात् ४५ भारो लोहस्य दातव्य कार्पासो द्रोणसंयुतः । वैतरिण्यां समाप्यर्थं ब्राह्मणाय कुटुंबिने ४६ नारी वा पुरुषो वापि व्रतस्यास्य प्रभावतः । राज्य बहुदिन भुक्त्वा स्वर्गलोके महीयते ४७ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे मार्गशीर्षकृष्णैकादश्यां वैतरणीव्रतोद्यापन संपूर्णम् ॥ ॥ इति एकादशीव्रतानि समाप्तानि ॥ ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच । एवं प्रीत्या पुरा विप्राः श्रीकृष्णेन परं व्रतम् । माहात्म्यं विधिसंयुक्तमुपदिष्टं विशेषतः १ उत्पत्तिं च शृणोत्येवमेकादश्यां द्विजोत्तम । भुक्त्वा भोगाननेकांस्तु विष्णुलोक प्रयाति सः २ पार्थ उवाच । उपवासस्य नक्तस्य तथैवायाचितस्य भो । किं पुण्य किं विधान हि ब्रूहि सर्वं जनार्दन ३ श्रीकृष्ण उवाच । हेमंते चैव संप्राप्ते मासि मार्गशिरे शुभे । शुक्लपक्षे तथा पार्थ एकादश्यामुपोषयेत् ४ दशम्यां चैव यत्किंचित्प्रकुर्यात्सुदृढव्रतम् । नक्त च तद्दिने कृत्वा दशम्यां दंतधावनम् ५ दिवसस्याष्टमे भागे मंदीभूते दिवाकरे । तत्र नक्त विजानीयान्न नक्त निशि भोजनम् ६ ततः प्रभातसमये सकल्प्य नियमांश्चरेत् । मध्याह्ने च तथा पार्थ शुचि स्नातः समाहितः ७ नद्यां तडागे वाप्यां वा ह्युत्तमं मध्यमं त्वध । क्रमाच्छ्रेयं तथा कूपे तदभावे प्रशस्यते ८ अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुंधरे । मृत्तिके हर मे पाप यन्मया पूर्वसंचितम् ९ त्वया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् । अनेन मृत्तिकास्नानं विदध्यात्तु व्रती नरः १० नालपेत्पतितैश्चोरैस्तथा पाखंडिभिः सह । मिथ्यापवादिनो देववेदब्राह्मणनिंदकान् ११ अन्यांश्चैव दुराचारानगम्यागामिनस्तथा । परद्रव्यापहर्तॄंश्च देवद्रव्यापहारिण १२ न समापेत दृष्टापि भास्कर चावलोकयेत् । ततो गोविंदमभ्यर्च्य नैवेद्यादिभिरादरात् १३ दीप दद्याद्गृहे चैव भक्तियुक्तेन चेतसा । तद्दिने वर्जयेत्पार्थ निंदा मैथुनमेव च १४ गीतशास्त्रविनोदेन दि-

वारात्री नयेद्व्रती । रात्रौ जागरणं कृत्वा भक्तियुक्तेन चेतसा १५ विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा प्रणिपत्य क्षमापयेत् । यथा शुक्ला तथा
कृष्णा मान्या वै धर्मतत्परैः १६ एकादश्योर्द्वयो राजन्विभेदं नैव कारयेत् । एवं हि कुरुते यस्तु शृणु तस्यापि यत्फलम् १७ शं-
खोद्धारे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा देवं गदाधरम् । एकादश्युपवासस्य कलां नार्हति षोडशीम् १८ व्यतीपाते च दानस्य लक्षमेकं फलं स्मृत-
म् । संक्रांतिषु चतुर्लक्षं यो ददाति धनंजय १९ कुरुक्षेत्रे च यत्पुण्यं ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः । तत्सर्वं लभते यस्तु ह्येकादश्यामुपोषितः २०
अश्वमेधस्य यज्ञस्य करणाद्यत्फलं लभेत् । ततः शतगुणं पुण्यमेकादश्युपवासतः २१ तपस्विनो गृहे नित्यं लक्षं यस्य च भुंजते । ष-
ष्टिवर्षसहस्राणि तस्य पुण्यं च यद्भवेत् २२ एकादश्युपवासेन फलं प्राप्नोति मानवः । गोसहस्रे च यत्पुण्यं दत्ते वेदांगपारगे २३ तस्मा-
त्पुण्यं दशगुणमेकादश्युपवासिनाम् । नित्यं च भुंजते यस्य दश चैव द्विजोत्तमा २४ भंवेत्तद्धै दशगुणं भोजने ब्रह्मचारिणः । एतत्सह-
स्रं भूदाने कन्यादाने तु तत्स्मृतम् २५ तस्माद्दशगुणं प्रोक्तं विद्यादाने तथैव च । विद्याद्दशगुणं चान्नं यो ददाति बुभुक्षिते २६ अन्नदा-
नसमं दानं न भूतं न भविष्यति । तृप्तिमायांति कौंतेय स्वर्गस्थाः पितृदेवताः २७ एकादश्या व्रतस्यापि पुण्यसंख्या न विद्यते । एत-
त्पुण्यप्रभावस्तु यत्सुरैरपि दुर्लभम् २८ नक्तस्यार्द्धफलं तस्य एकभक्तस्य सत्तम । एकभक्तं च नक्तं च उपवासस्तथैव च २९ एतेष्वन्य-
तमं वापि व्रतं कुर्याद्धरेर्दिने । तावद्गर्जंति तीर्थानि दानानि नियमा यमाः ३० एकादशी न संप्राप्ता यावत्तावन्मखा अपि । तस्मादेका-
दशी सर्वैरुपोष्या भवभीरुभिः ३१ न नखेन पिबेत्तोयं न हन्यान्मत्स्यसूकरान् । एकादश्यां न भुंजीत यन्मां त्वं पृच्छसेऽर्जुन ३२

१ अत्र, यत्पुण्यमित्यध्याहारः । २ नक्ते कृते यत्पुण्यं समाप्नोति तदेकादश्यामेकभक्तस्य भवेदित्यर्थः । ३ नखेनेत्यत्र शंखेनेति पाठः ।

एतद्वे कथितं सर्वं व्रतानामुत्तमं व्रतम् । एकादशीसमं नास्ति कृत्वा यज्ञसहस्रकम् ३३ अर्जुन उवाच । उक्ता त्वया कथं देव पुण्येयं सर्वतस्तिथि[१] । सर्वेभ्योपि पवित्रेयमुक्ता ह्येकादशीतिथिः ३४ श्रीकृष्ण उवाच । पुरा कृतयुगे पार्थ मरुनामा हि दानव । अत्यद्भुतो महारौद्र सर्वदेवभयंकर[:] ३५ इन्द्रो विनिर्जितस्तेन अत्युग्रेण च पांडव । इंद्रेण कथितः सर्ववृत्तांत शंकराय वै ३६ सर्वलोकपरिभ्रष्टा विचरामो महीतले । उपाय ब्रूहि मे देव अमराणां तु का गति[:] ३७ ईश्वर उवाच । देवराज सुरश्रेष्ठ यत्रास्ति गरुडध्वजः । शरण्यश्च जगन्नाथ परित्राणपरायणः ३८ तत्र गच्छामहे सर्वे स नः कार्यं विधास्यति । ईशस्य वचनं श्रुत्वा देवराजो महामना[:] ३९ पुरस्कृत्य महादेवं समगे समरक्षणम् । यत्र देवो जगन्नाथः प्रसुप्तो हि जनार्दनः ४० जलमध्ये प्रसुप्तं तु दृष्ट्वा देवं जगत्पतिम् । कृतांजलिपुटो भूत्वा इन्द्रः स्तोत्रमुदीरयत् ४१ ॐ नमो देवदेवाय देवदेवै स्तुवंदित । दैत्यारे पुंडरीकाक्ष त्राहि नो मधुसूदन ४२ दैत्यभीता इमे देवा मया सह समागता । शरणं त्वां जगन्नाथ त्वं कर्ता त्वं च कारकः ४३ त्वं माता सर्वलोकानां त्वमेव जगतः पिता । त्वं स्थितिस्त्वं तथोत्पत्तिस्त्वं च संहारकारक[:] ४४ सहायस्त्वं च देवानां त्वं च शांतिकरः प्रभो । त्वं धरा च त्वमाकाशः सर्वविश्वोपकारकः ४५ भवस्त्वं च स्वयं ब्रह्मा त्रैलोक्यप्रतिपालकः । त्वं रविस्त्वं शशांकश्च त्वं च देवो हुताशनः ४६ हव्यं होमो हुतस्त्वं च मन्त्रतन्त्रर्त्विजो जपः । यजमानश्च यज्ञस्त्वं फलभोक्ता त्वमीश्वरः ४७ न त्वया रहितं किंचित्त्रैलोक्ये सचराचरे । भगवन्देवदेवेश शरणागतवत्सल ४८ त्राहि त्राहि महायोगिन्भीतानां शरणं भव । दानवैर्विजिता देवा स्वर्गभ्रष्टा कृता विभो ४९ स्थानभ्रष्टा जगन्नाथ विचरंति महीतले । इन्द्रस्य वचनं श्रुत्वा वि

१ इयमेव कथा पूर्वं (पत्र २६८ श्लोक ११) कथितास्ति तत्र मध्यान्तरविशेषो द्रष्टव्यः ।

ष्णुर्वचनमब्रवीत् ५० श्रीभगवानुवाच । को ऽसौ दैत्यो महामायो दैवा येन विनिर्जिताः । किं स्थानं तस्य किं नाम किं बलं कस्तदाश्र
यः ५१ एतत्सर्वं समाचक्ष्व मघवन्निर्भयो भव ॥ इंद्र उवाच । भगवन्देवदेवेश भक्तानुग्रहकारक ५२ दैत्यः पूर्वं महानासीन्नाडीजंघ इति
स्मृतः । ब्रह्मवंशसमुद्भूतो महोग्रः सुरसूदनः ५३ तस्य पुत्रोऽतिविख्यातो मरुनामा महासुरः । तस्य चंद्रवती नाम नगरी च गरीयसी
५४ तस्यां वसन्स दुष्टात्मा विश्वं निर्जित्य वीर्यवान् । सुरान्स्ववशमानिन्ये निराकृत्य त्रिविष्टपात् ५५ इंद्राग्नियमवाय्वीशसोमनिर्ऋति-
पाशिनाम् । पदेषु स्वयमेवासीत्सूर्यो भूत्वा तपत्यपि ५६ पर्जन्यः स्वयमेवासीदजेयः सर्वदैवतैः । जहि तं दानवं विष्णो सुराणां जयमावह
५७ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कोपाविष्टो जनार्दनः । उवाच, शत्रुं देवेंद्र हनिष्ये तं महाबलम् ५८ प्रयांतु सहिताः सर्वे चंद्रवत्यां महाबलाः ।
इत्युक्त्वा प्रययुः सर्वे पुरस्कृत्य हरिं सुराः । ५९ दृष्टो देवैस्तु दैत्येंद्रो गर्जमानस्तु दानवैः । असंख्यातसहस्रैस्तु दिव्यप्रहरणायुधैः ६०
हन्यमानास्तदा देवा असुरैर्बाहुशालिभिः । संग्रामं ते समुत्सृज्य पलायंते दिशो दश ६१ ततो दृष्ट्वा हृषीकेशं संग्रामे समुपस्थितम् ।
अन्वधावन्नभिक्रुद्धा विविधायुधपाणयः ६२ अथ तान्प्रद्रुतान्दृष्ट्वा शंखचक्रगदाधरः । विव्याध सर्वगात्रेषु शरैराशीविषोपमैः ६३ तेनाह-
तास्ते शतशो दानवा निधनं गताः । एकांगो दानवः स्थित्वा युध्यमानो मुहुर्मुहुः ६४ तस्योपरि हृषीकेशो यद्यदायुधमुत्सृजत् । पुष्प-
वत्तं समभ्येति कुंठितं तस्य तेजसा ६५ शस्त्रास्त्रैर्विध्यमानोपि यदा जेतुं न शक्यते । युयोध च तदा क्रुद्धो बाहुभिः परिघोपमैः ६६
बाहुयुद्धं कृतं तेन दिव्यवर्षसहस्रकम् । तेन श्रांतः स भगवान्गतो बदरिकाश्रमम् ६७ तत्र हैमवती नाम्नी गुहा परमशोभना । तां प्र-
विश्य महायोगी शयनार्थं जगत्पतिः ६८ योजनद्वादशायामा एकद्वारा धनंजय । अहं तत्र प्रसुप्तोस्मि भयभीतो न संशयः ६९ महायु-

देन सेनैव श्रांतो ऽहं पांडुनंदन । दानवः पृष्ठतो रुग्मः प्रविवेश स तां गुहाम् ७० प्रसुप्तं मां तदा दृष्ट्वा चिंतयद्दानवो हृदि । हरिमेन
हनिष्ये ऽहं दानवानां क्षयावहम् ७१ एवं सुदुर्मतेस्तस्य व्यवसायं व्यवस्य च । समुद्भूता ममांगेभ्यः कन्यैका च महाप्रभा ७२ दिव्य
प्रहरणा देवी युद्धाय समुपस्थिता । ईक्षिता दानवेंद्रेण प्रभ्रुणा पांडुनंदन ७३ युद्धं समाहितं तेन स्त्रिया तत्र यथोचितम् । तेनायुद्ध्यत
सा नित्यं तां दृष्ट्वा विस्मयं गतः ७४ केनेयं निर्मिता रौद्रा मृत्युग्रासनिपातिनी । इत्युक्त्वा दानवेंद्रो ऽसौ युयुधे कन्यया तथा ७५ त-
रतया महादेव्या त्वरया दानवो बली । छित्वा सर्वाणि शस्त्राणि क्षणेन विरथः कृतः ७६ बाहुप्रहरणोपेतो धावमानो महाबलात् ।
तलेनाहत्य हृदये तया देव्या निपातितः ७७ पुनरुत्थाय सो ऽधावत्कन्याहननकांक्षया । दानव पुनरायांत रोषेणाहत्य तच्छिरः ७८
क्षणान्निपातयामास भूमौ तत्र समुज्ज्वलत् । दैत्यः कृत्तशिराः सोऽपि ययौ वैवस्वतालयम् ७९ शेषा भयार्दिता दीना पाताल विविशुर्द्विपः ।
ततः समुत्थितो देवः पुरो दृष्ट्वा ऽसुरं हतम् ८० कन्यां पुरस्थितां चापि कृतांजलिपुटां नताम् । विस्मयोत्फुल्लनयनः प्रोवाच जगतां पतिः
८१ केनायं निहतः संख्ये दानवो दुष्टमानसः । येन देवाः सगंधर्वाः सेंद्राश्च समरुद्गणाः ८२ सनागाः सहलोकेशा लीलयैव विनिर्जिताः ।
येनाहं निर्जितो भीतः श्रांतः सुप्तो गुहामिमाम् ८३ केन कारुण्यभावेन रक्षितो ऽहं पलायितः ॥ कन्योवाच । मया विनिहतो दैत्यस्त्वदंशो
द्भूतया प्रभो ८४ दृष्ट्वा सुप्तं हरे त्वां तु यतो हंतुं समुद्यतः । त्रैलोक्यकंटकस्येत्थं व्यवसायं प्रबुध्य च८५ हतो मया दुरात्मा ऽसौ देवता नि
र्भयाः कृताः । तवैवाहं महाशक्तिः सर्वशत्रुभयंकरी ८६ त्रैलोक्यरक्षणार्थाय हतो लोकभयंकरः । निहतं दानवं दृष्ट्वा किमाश्चर्यं वद प्रभो ८७
श्रीभगवानुवाच । निहते दानवेंद्रे ऽस्मिन् संतुष्टो ऽहं तवानघे । हृष्टाः पुष्टाश्च वै देवा आनंदः समजायत ८८ आनंदस्त्रिषु लोकेषु देवानां

यस्त्वया कृतः । प्रसन्नो ऽस्म्यनघे तुभ्यं वरं वरय सुव्रते ८९ ददामि तं न संदेहो यत्सुरैरपि दुर्लभम् ९० कन्योवाच । यदि तुष्टोसि मे देव यदि देयो वरो मम । तारये ऽहं महापापादुपवासपरं नरम् ९१ उपवासस्य यत्पुण्यं तस्यार्द्धं नक्तभोजने । तदर्द्धं च भवेत्तस्य एकभुक्तं करोति यः ९२ यः करोति व्रतं भक्त्या दिने मम जितेंद्रियः । स गत्वा वैष्णवं स्थानं कल्पकोटिशतानि च ९३ भुंजानो विविधान्भोगानुपवासी जितेंद्रियः । भगवंस्त्वत्प्रसादेन भवत्वेष वरो मम ९४ उपवासं च नक्तं च ह्येकभुक्तं करोति यः । तस्य धर्मं च वित्तं च मोक्षं देहि जनार्दन ९५ श्रीभगवानुवाच । यत्त्वं वदसि कल्याणि तत्सर्वं च भविष्यति । मम भक्ताश्च ये लोकास्तव भक्ताश्च ये नराः ९६ त्रिषु लोकेषु विख्याताः प्राप्स्यंति मम सन्निधिम् । एकादश्यां समुत्पन्ना मम शक्तिः परा यतः ९७ अत एकादशीत्येवं तव नाम भविष्यति । दग्ध्वा पापानि सर्वाणि दास्यामि पदमव्ययम् ९८ तृतीया चाष्टमी चैव नवमी च चतुर्दशी । एकादशी विशेषेण तिथयो मे महाप्रियाः ९९ सर्वतीर्थाधिकं पुण्यं सर्वदानाधिकं फलम् । सर्वव्रताधिकं चैव सत्यं सत्यं वदामि ते १०० कृष्ण उवाच । एवं दत्त्वा वरं तस्यास्तत्रैवांतरधीयत । हृष्टा तुष्टा तु सा जाता तदा एकादशीतिथिः १ इमामेकादशी पार्थ करिष्यंति नरास्तु ये । तेषां शत्रुं हनिष्यामि दास्यामि परमां गतिम् २ अन्येपि ये करिष्यंति एकादश्या महाव्रतम् । हरामि तेषां विघ्नांश्च सर्वसिद्धिं ददामि च ३ एवमुक्ता समुत्पत्तिरेकादश्याः पृथासुत । इयमेकादशी नित्या सर्वपापक्षयंकरी ४ एकैव च महापुण्या सर्वपापनिषूदनी । उदिता सर्वलोकेषु सर्वसिद्धिकरी तिथिः ५ शुक्ला वाप्यथवा कृष्णा इति भेदं न कारयेत् । कर्तव्ये उभये पार्थ न तुल्या द्वादशीतिथिः ६ अंतरं नैव कर्तव्यं समस्तैर्व्रतकारिभिः । तिथिरेका भवेत्सर्वा पक्षयोरुभयोरपि ७ एकादशी तु संपूर्णा प्रभाते घटिका यदि । सा तिथिः परिहर्तव्या उपो-

प्या द्वादशी तदा ८ एवंविधा मया प्रोक्ता पक्षयोरुभयोरपि । उपवासं प्रकुर्वंति एकादश्यां नराश्च ये ९ ते यांति परमं स्थानं यत्रास्ते गरुडध्वजः । धन्यास्ते मानवा लोके विष्णुभक्तिपरायणा ११० एकादश्यास्तु माहात्म्यं सर्वकाले तु यः पठेत् । अश्वमेधस्य यत्पुण्य तदाप्नोति न संशयः १११ एकादश्यां निराहारः स्थित्वा चाहं परेऽहनि । भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत १२ इत्युच्चार्य त तो विद्वान्पुष्पांजलिमथार्पयेत् । अष्टाक्षरेण मंत्रेण त्रिर्जप्तेना मिमंत्रितम् १३ उपवासफलं प्रेप्सुः पिबेत्पात्रगतं जलम् । दिवा निद्रां परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने १४ क्षौद्रं कांस्यामिषं तैलं द्वादश्यामष्ट वर्जयेत् । असमाप्य हि समाप्य भक्षयेत्तुलसीदलम् १५ आमलक्याः फलं वापि पारणे भक्ष्य भूपते । आमध्याह्नात्त राजेंद्र द्वादश्यामरुणोदये १६ स्नानार्चनक्रियाः कार्या दानहोमादिसंयुताः । संकटे विषमे प्राप्ते द्वादश्यां पारणं कथम् १७ अद्भिस्तु पारणं कुर्यात्पुनर्भुक्त न दोषकृत् । यः शृणोति दिवा रात्रौ नरो विष्णुपरायणः १८ तद्भक्तमु खनिष्पन्नां कथां विष्णोः सुमंगलाम् । कल्पकोटिसमायुक्तो विष्णुलोके महीयते १९ एकादश्याश्च माहात्म्य पादमेकं शृणोति यः । ब्र ह्महत्यादिकं पापं नश्यते नात्र संशयः । विष्णुधर्मसमं नास्ति व्रतं नाम सनातनम् १२० ॥ इति श्रीभविष्यो० श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मार्गशी- र्षकृष्णोत्पत्त्येकादशीमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ मार्गशीर्षशुक्लमोक्षदैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । वंदे विष्णुं प्रभुं साक्षाल्लोकत्रयसुखप्र- दम् । विश्वेशं विश्वकर्तारं पुराणं पुरुषोत्तमम् १ पृच्छामि देवदेवेश संशयोऽस्ति महान्मम । लोकानां तु हितार्थाय पापानां च क्षयाय च २ मार्गशीर्षे सिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् । कीदृशश्च विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते ॥ एतदाचक्ष्व मे स्वामिन्विस्तरेण यथा तथम् ३ श्रीकृष्ण उवाच । सम्यक्पृष्टं त्वया राजन् साधु ते विपुलं यशः । कथयिष्यामि राजेंद्र हरिवासरमुत्तमम् ४ उत्पन्ना सा सिते पक्षे

द्वादशी[1] मम वल्लभा । मार्गशीर्षे समुत्पन्ना मम देहान्नराधिप ५ मुरस्य च वधार्थाय प्रख्याता मम वल्लभा । कथिता सा मया चैव त्वदग्रे राज-
सत्तम ६ पूर्वमेकादशी राजंस्त्रैलोक्ये सचराचरे । मार्गशीर्षे ऽसिते पक्षे चोत्पत्तिरिति नामतः ७ अतःपरं प्रवक्ष्यामि मार्गशीर्षसितां
तथा । यस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् ८ मोक्षानाम्नीति विख्याता सर्वपापहरा परा । देवं दामोदरं तस्यां पूजयेच्च प्रयत्न-
तः ९ तत्रापि पूजनं चैव गीतनृत्यैः सुमंगलैः । शृणु राजेंद्र वक्ष्यामि कथां पौराणिकीं शुभाम् १० अधोगतिं गता ये वै पितृमातृसु-
तादयः । अस्याः पुण्यप्रभावेण स्वर्गं यांति न संशयः ११ एतस्मात्कारणाद्राजन्महिमानं शृणुष्व तत् । पुरा वै नगरे रम्ये गोकुले न्य-
वसन्नृपः १२ वैखानसेति राजर्षिः पुत्रवत्पालयन्प्रजाः । द्विजांश्च न्यवसंस्तत्र चतुर्वेदपरायणाः १३ एवं स राज्यं कुर्वाणो रात्रौ तु स्वप्नम-
ध्यतः । ददर्श जनकं स्वं तु अधोयोनिगतं नृपः १४ एवं दृष्ट्वा तु तं तत्र विस्मयोत्फुल्ललोचनः । कथयामास वृत्तांतं द्विजाग्रे स्वप्नसंभवम् १५
राजोवाच । मया तु स्वपिता दृष्टो नरके पतितो द्विजाः । तारयस्वेति मां तात ह्यधोयोनिगतं सुत १६ इति ब्रुवाणः स तदा मया दृष्टः पि-
ता स्वयम् । तदाप्रभृति भो विप्रा नाहं शर्म लभाम्यहो १७ एतद्राज्यं मम महदसह्यमसुखं तथा । अश्वा गजा रथाश्चैव न मां रोचंति
सर्वथा १८ न कोशो ऽपि सुखायेति न किञ्चित्सुखदं मम । न दारा न सुता मह्यं रोचंति द्विजसत्तमाः १९ किं करोमि क्व गच्छामि श-
रीरं मे तु दह्यते २० दानं व्रतं तपो योगो येनैव मम पूर्वजाः । मोक्षमायांति विप्रेंद्रास्तदेव कथयंतु मे २१ किं तेन जीवता लोके सुपुत्रेण
बलीयसा । पिता तु यस्य नरके तस्य जन्म निरर्थकम् २२ ब्राह्मणा ऊचुः । पर्वतस्य मुनेरत्र आश्रमो निकटे नृप । गम्यतां राजशा-

१ द्वादशीशब्देनात्रैकादशी ज्ञेया ।

र्वूल भूत भव्यं विजानत २३ तेषां श्रुत्वा ततो वाक्यं वैखानो राजसत्तमः । जगाम तत्र यत्रासावाश्रमे पर्वतो मुनिः २४ ब्राह्मणैर्वेष्टित शतैः प्रजाभिश्च समतत । आश्रमो विपुलस्तस्य मुनिभिः सन्निषेवितः २५ ऋग्वेदिभिर्याजुषैश्च सामाथर्वणकोविदैः । वेष्टितो मुनिभिस्तत्र द्वितीय इव पद्मजः २६ दृष्ट्वा तं मुनिशार्दूल राजा वैखानसस्तदा । जगाम चावनिं मूर्ध्ना दंडवत्प्रणनाम च २७ पप्रच्छ कुशलं तस्य सप्तस्वंगेष्वसौ मुनिः । राज्ये निष्कंटकत्वं च राज्यं सौख्यसमन्वितम् २८ राजोवाच । प्रसादात्कुशलं विप्र अंगेषु मम सप्तसु । विप्र वेष्वनुकूलेषु कश्चिद्विघ्न उपस्थित २९ एत मे सशयं ब्रह्मन् प्रष्टुं त्वां च समागतः । एवं श्रुत्वा नृपवचः पर्वतो मुनिसत्तमः ३० ध्यानस्तिमितनेत्रोऽसौ भूत भव्यं विचिंतयन् । मुहूर्तमेकं ध्यात्वा च प्रत्युवाच नृपोत्तमम् ३१ मुनिरुवाच । जानेऽहं तव राजेंद्र पितुः पापं विकर्मणः। पूर्वजन्मनि ते पित्रा सपत्नीकृतक्षेपतः ३२ कामासक्तेन चैकत्र ऋतुभंगः कृत स्त्रियः । त्राहि देहीति जल्पंत्या ऋतुदानं नराधिप ३३ तेन वै तव पित्रा तु न दत्तो ऋतुराग्रहाद् । कर्मणा तेन सतत नरके पतितो ध्रुवम् ३४ राजोवाच । केन वै व्रतदानेन मोक्षस्तस्य भवेन्मुने । निरयात्पापसयुक्तात्तन्ममाचक्ष्व पृच्छत ३५ मुनिरुवाच । मार्गशीर्षे सिते पक्षे मोक्षानाम्नी हरेस्तिथिः । सर्वैस्तु तद्व्रतं कृत्वा पित्रे पुण्य प्रदीयताम् ३६ तस्याः पुत्र प्रभावेण मोक्षस्तस्य भविष्यति ३७ मुनेर्वाक्य ततः श्रुत्वा नृपः स्वगृहमागतः । आग्रहायणिकीं कृच्छ्रात्मासो भरतसत्तम ३८ अतःपुरचरैर्सर्वैः पुत्रैर्दारैस्तथा नृपः । व्रत कृत्वा विधानेन पुण्यं दत्त्वा नृपाय तत् ३९ तस्मिन्दत्ते तदा पुण्ये पुष्पवृष्टिरभूद्दिवः । वैखानसपिता तेन मतः स्वर्गे स्तुतो गणैः ४० राजा तमंतरिक्षाच्च भूयो गिरममापत । स्वस्त्यस्तु ते पुत्र सदेत्युक्त्वा स त्रिदिव गतः ४१ एव यः कुरुते राज

१ सपत्नीकृतक्षेपेण इत्यपि पाठः । २ ऋतुदानं देहि त्राहीति जल्पंत्याः स्त्रियः ऋतुभंगः कृत इति इत्यन्वयः ।

न्मोक्षामेकादशीमिमाम् । तस्य पापं क्षयं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ४२ नास्त्यपरतरा काचिन्मोक्षदा विमला शुभा । पुण्यसंख्या तु राजेंद्र न जाने ऽहं तु यैः कृता ४३ पठनाच्छ्रवणात्तस्या वाजपेयफलं लभेत । चिंतामणिसमा ह्येषा स्वर्गमोक्षप्रदायिनी ॥ ४४ ॥ इति श्रीब्रह्मांडपु० मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या मोक्षानाम्न्या माहात्म्यं सं० ॥ ॥ अथ पौषकृष्णसफलैकादशीकथा॥ युधिष्ठिर उवाच । पौषस्य कृष्णपक्षे तु द्वादशी या भवेत्प्रभो । किं नाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते १ एतदाचक्ष्व मे स्वामिन्विस्तरेण जनार्दन ॥ श्रीकृष्ण उवाच । कथयिष्यामि राजेंद्र भवतः स्नेहकारणात् २ तथा तुष्टिर्न मे राजन् क्रतुभिश्चाप्तदक्षिणैः । यथा तुष्टिर्भवेन्मह्यमेकादश्या व्रतेन वै ३ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्तव्यो हरिवासरः । पौषस्य कृष्णपक्षे तु द्वादशी या भवेन्नृप ४ तस्याश्चैव च माहात्म्यं शृणुष्वैकाग्रमानसः । गदिता याश्च वै राजन्नेकादश्यो भवंति हि ॥ तासामपि हि सर्वासां विकल्पं नैव कारयेत् ५ अतःपरं प्रवक्ष्यामि पौषस्यैकादशीं तव । लोकानां च हितार्थाय कथयिष्ये विधिं तव ६ पौषस्य कृष्णपक्षे या सफला नाम नामतः । नारायणोधिदेवो ऽस्या पूजयेत्तं प्रयत्नतः ७ पूर्वेन विधिना राजन्कर्तव्यैकादशी जनैः । नागानां च यथा शेषः पक्षिणां गरुडो यथा ८ यथा ऽश्वमेधो यज्ञानां नदीनां जाह्नवी यथा । व्रतानां च तथा राजन्प्रवरैकादशीतिथिः ९ ते जना भरतश्रेष्ठ मम पूज्याश्च सर्वशः । हरिवासरसंयुक्ता वर्तंते ये जना भृशम् १० सफला नाम या प्रोक्ता तस्याः पूजाविधिं शृणु । फलैर्मां पूजयेत्तत्र कालदेशोद्भवैः शुभैः ११ नारिकेलफलैः शुद्धैस्तथा वै बीजपूरकैः । जंबीरैर्दाडिमैश्चैव तथा पूगीफलैरपि १२ लवंगैर्विविधैश्चान्यैस्तथा चाम्रफलादिभिः । पूजयेद्देवदेवेशं धूपैर्दीपैर्यथाक्रमम् १३

१ एकादशीत्यर्थः । २ यः पूर्वमुक्तस्तेन पूर्वेन विधिनेत्यर्थः ।

सफलायां दीपदानं विशेषेण प्रकीर्तितम् । रात्रौ जागरणं तत्र कर्तव्यं च प्रयत्नतः १४ यावदुन्मीलयेन्नेत्र तावज्जागर्ति यो निशि । ए
काग्रमानसो भूत्वा तस्य पुण्य शृणुष्व तव १५ तत्समो नास्ति वै यज्ञस्तीर्थं तत्सदृशं नहि । तत्समं न व्रतं किंचिदिहलोके नराधि
प १६ पंचवर्षसहस्राणि तपस्तप्त्वा च यत्फलम् । तत्फल समवाप्नोति सफलाया व्रतेन वै १७ श्रूयतां राजशार्दूल सफलायाः कथा
नकम् । चंपावतीति विख्याता पुरी माहिष्मतस्य च १८ माहिष्मतस्य राजर्षेश्चत्वारश्चाभवन्सुताः । तेषां मध्ये तु यो ज्येष्ठः स महा
पापसयुतः १९ परदाराभिगामी च वेश्यासंगरतः सदा । पितुर्द्रव्यं स पापिष्ठो गमयामास सर्वशः २० असद्वृत्तिरतो नित्य देवताद्विज
निंदकः । वैष्णवानां च देवानां नित्य निंदारतः स वै २१ ईदृग्विध तदा दृष्ट्वा पुत्रं माहिष्मतो नृप । राज्यान्निष्कासितस्तेन पित्रा
चैवापि भ्रातृभिः २२ परिवारजनैः सर्वैस्त्यक्तो राज्ञो भयादिति । लुपकोपि तदा त्यक्तश्चिंतयामास चैककः २३ मया ऽत्र किं प्रकर्तव्यं
त्यक्तः पित्रा च बांधवैः । इति चिंतापरो भूत्वा मतिं पापे तदा ऽकरोत २४ मया तु गमन कार्यं वने, त्यक्त्वा पुर पितुः । तस्मा-
द्वनात्पितुः सर्वं व्यापयिष्ये पुरं निशि २५ दिवा वने चरिष्यामि रात्रावपि पितुः पुरे २६ इत्येवं स मतिं कृत्वा लुपको दैवपातितः ।
निर्जगाम पुरात्तस्माद्गतो ऽसौ गहन वनम् २७ जीवघातकरो नित्य नित्य स्तेयपरायणः । सर्वं च नगरं तेन मुषितं पापकर्मणा २८
गृहीतश्च परित्यक्तो राज्ञो माहिष्मतेर्भयात् । जन्मांतरीयपापेन राज्यभ्रष्ट स पापकृत् २९ आमिषाभिरतो नित्य नित्य वै फलभक्षक ।
आश्रमस्तस्य दुष्टस्य वासुदेवस्य संमतः ३० अश्वत्थो वर्तते तत्र जीर्णो बहुलवार्षिकः । देवत्वं तस्य वृक्षस्य वर्तते तद्वने महत् ३१

१ अमेरिरपपः ।

तत्रैव निवसञ्चासो लुंपकः पापबुद्धिमान् । एवं कालक्रमेणैव वसतस्तस्य पापिनः ३२ दुष्कर्मनिरतस्यास्य कुर्वतः कर्म निंदितम् ।
पौषस्य कृष्णपक्षे तु पूर्वाह्ले सफलादिने ३३ दशमीदिवसे राजन्निशायां शीतपीडितः । लुंपको वस्त्रहीनो वै निश्चेष्टो ह्यभवत्तदा ३४
पीड्यमानस्तु शीतेन अश्वत्थस्य समीपगः । न निद्रा न सुखं तस्य गतप्राण इवाभवत् ३५ पीडयन्दशनैर्दंतानेवं च गमिता निशा ।
भानूदये ऽपि तस्याथ न संज्ञा समजायत ३६ लुंपको गतसंज्ञस्तु सफलादिवसे तदा । मध्याह्नसमये प्राप्ते संज्ञां लेभे स लुंपकः ३७
प्राप्तसंज्ञो मुहूर्तेन चोत्थितो ऽसौ तदासनात् । प्रस्खलँश्च पदन्यासैः पंगुवच्चलितो मुहुः ३८ वनमध्ये गतस्तत्र क्षुत्तृषापीडितो ऽभवत् ।
न शक्तिर्जीवघातस्य लुंपकस्य दुरात्मनः ३९ फलानि भूमौ पतितान्याजहार स लुंपकः । यावत्स चागतस्तत्र तावदस्तमगाद्रविः ४०
किं भविष्यति तातेति विललापातिदुःखितः । फलानि तानि सर्वाणि वृक्षमूले न्यवेदयत् ४१ प्रत्युवाच फलैरेभिः प्रीयतां भगवान्ह-
रिः । उपविष्टो लुंपकश्च निद्रां लेभे न वै निशि ४२ तेन जागरणं जातं भगवान्मधुसूदनः । फलानां पूजनं मेने सफलायास्तथा व्रत-
म् ४३ कृतमेवं लुंपकेन ह्यकस्माद्व्रतमुत्तमम् । तेन व्रतप्रभावेण प्राप्तं राज्यमकंटकम् ४४ पुण्यांकुरोदयाद्राजन्यथा प्राप्तं तथा शृणु ।
रवेरुदयवेलायां दिव्योऽश्वश्चाजगाम ह ४५ दिव्यवस्तुपरीवारो लुंपकस्य समीपतः । तस्थौ स तुरगो राजन्वागुवाचाशरीरिणी ४६ प्रा-
प्नुहि त्वं नृपसुत स्वराज्यं हतकंटकम् । वासुदेवप्रसादेन सफलायाः प्रभावतः ४७ पितुः समीपं गच्छ त्वं भुंक्ष्व राज्यमकंटकम् । तथे-
त्युक्त्वा त्वसौ तत्र दिव्यरूपधरो ऽभवत् ४८ कृष्णे मतिश्च तस्यासीत्परमा वैष्णवी तथा । दिव्याभरणशोभाढ्यस्तातं नत्वा स्थितो गृ-
हे ४९ वैष्णवाय ततो दत्तं पित्रा राज्यमकंटकम् । कृतं राज्यं तु तेनैव वर्षाणि सुबहून्यपि ५० हरिवासरसंलीनो विष्णुभक्तिरतः स-

दा । मनोज्ञास्तस्य पुत्रास्युर्दारा कृष्णप्रसादतः ५१ तत स वार्धके राज्ये मासे पुत्रं निवेश्य च । वनं गतः सयतात्मा विष्णुभक्तिप
रायणः ५२ साधयित्वा तथात्मानं विष्णुलोकं जगाम ह । गतः कृष्णस्य सान्निध्ये यत्र गत्वा न शोचति ५३ एवं ये वै प्रकुर्वंति सफले-
कादशीव्रतम् । इहलोके यशः प्राप्य मोक्षं यास्यंत्यसंशयम् ५४ धन्यास्ते मानवा लोके सफलाव्रतकारिणः । तस्मिन् जन्मनि ते मोक्षं लभंते
नात्र संशयः ५५ सफलायाश्च माहात्म्यश्रवणाद्धि विशांपते । राजसूयफलं प्राप्य वसेत्स्वर्गे च मानवः ५६ ॥ इति पौषकृष्णैका० सफलानाम्न्या
मा० संपूर्ण ॥ ॥ अथ पौषशुक्लपुत्रदैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । कथिता वै त्वया कृष्ण सफलैकादशी शुभा । कथयस्व प्रसादेन शुक्ला पौष
स्य या भवेत् १ किंनाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते । कस्मै तुष्टो हृषीकेशस्त्वमेव पुरुषोत्तम २ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि
शुक्ला पौषस्य या भवेत् । तस्या विधिं महाराज लोकानां च हिताय वै ३ पूर्वेण विधिना राजन्कर्तव्यैषा प्रयत्नतः । पुत्रदेति च नाम्ना ऽसौ सर्वपापह
रा परा ४ नारायणोऽधिदेवोऽस्याः कामदः सिद्धिदायकः । नातःपरतरा काचित्त्रैलोक्ये सचराचरे ५ विद्यावंतं यशस्वंतं करोति च नरं हरिः । शृणु
राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पापहरां पराम् ६ पुरी भद्रावती नाम्नी राजा तत्र सुकेतुमान् । तस्य राज्ञो ऽथ राज्ञी च शैव्यानाम्नीति विश्रुता
७ पुत्रहीनेन राज्ञा च कालो नीतो मनोरथैः । नैवात्मजं नृपो लेभे वंशकर्तारमेव च ८ तेनैव राज्ञा धर्मेण चिंतितं बहुकालतः । किं
करोमि क्व गच्छामि सुतप्राप्तिः कथं भवेत् ९ न राष्ट्रे न पुरे सौख्यं लेभे राजा सुकेतुमान् । शैव्यया कांतया सार्धं प्रत्यहं दुःखितो
ऽभवत् १० तावुभौ दंपती नित्यं चिंताशोकपरायणौ । पितरस्तु जलं दत्तं कवोष्णमुपभुंजते । राज्ञः पश्चान्न पश्यामो यो ऽस्मान्संत-
र्पयिष्यति ११ इत्येवं संस्मरंतो ऽस्य पितरो दुःखिता ऽभवन् । तेषां तद्दुःखमूलं च ज्ञात्वा राजा ऽप्यतप्यत १२ न बांधवा न मित्राणि

नामात्याः सुहृदस्तथा । रोचंते तस्य भूपस्य न गजाश्वपदातयः १३ नैराश्यं भूपतेस्तस्य मनस्येवमजायत । नरस्य पुत्रहीनस्य नास्ति वै जन्मनः फलम् । अपुत्रस्य गृहं शून्यं हृदयं दुःखितं सदा १४ पितृदेवमनुष्याणां नानृणित्वं सुतं विना । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुतमुत्पादयेन्नरः १५ इहलोके यशस्तेषां परलोके शुभा गतिः । येषां तु कर्मकर्तॄणां पुण्यं जन्मशतोद्भवम् १६ आयुरारोग्यसंपत्तिस्तेषां गेहे प्रवर्तंते । पुत्राः पौत्राश्च लोकाश्च भवेयुः पुण्यकर्मणाम् १७ पुण्यं विना न च प्राप्तिर्विष्णुभक्तिं विना तथा । पुत्राणां संपदो वापि विद्यायाश्चेति मे मतिः १८ एवं चिंतयमानोऽसौ राजा शर्म न लब्धवान् । प्रत्यूषेऽचिंतयद्राजा निशीथेऽचिंतयत्तथा १९ ततश्चात्मविनाशं वै विचार्याथ सुकेतुमान् । आत्मघाते दुर्गतिं च चिंतयित्वा तदा नृपः २० दृष्ट्वात्मदेहं प्रक्षीणमपुत्रत्वं तथैव च । पुनर्विचार्यात्मबुद्ध्या ह्यात्मनो हितकारणम् २१ अश्वारूढस्ततो राजा जगाम गहनं वनम् । पुरोहितादयः सर्वे न जानंति गतं नृपम् २२ गंभीरे विपिने राजा मृगपक्षिनिषेविते । विचचार तदा तस्मिन्वनवृक्षान्विलोकयन् २३ वटानश्वत्थबिल्वांश्च खर्जूरान्पनसांस्तथा । बकुलांश्च सदापर्णांस्तिंदुलांस्तिलकानपि २४ शालांस्तालांस्तमालांश्च ददर्श सरलान्नृपः । इंगुदीककुभांश्चैव श्लेष्मातकबिभीतकान् २५ शल्लकीकरमर्दांश्च पाटलान्खदिरानपि । शाकांश्चैव पलाशांश्च शोभितान्ददृशे पुनः २६ मृगव्याघ्रवराहांश्च सिंहान् शाखामृगानपि । ददर्श भुजगान्राजा वल्मीकादभिनिःसृतान् २७ तथा वनगजान्मत्तान्कलभैः सह संगतान् । यूथपांश्च चतुर्दंतान्करिणीगणमध्यगान् २८ तान्दृष्ट्वा चिंतयामास ह्यात्मनः संगजान्नृपः । तेषां स विचरन्मध्ये राजा शोकमवाप ह २९ महदाश्चर्यसंयुक्तं ददर्श विपिनं नृपः । क्वचिच्छिवारुतं शृण्वन्नुलूकविरुतं तथा ३० तांस्तान्पक्षिगणान्पश्यन्बभ्राम वनमध्यगः । एवं ददर्श गहनं नृपो मध्यंगते रवौ ३१ क्षुत्तृड्भ्यां पीडितो राजा

इतश्चेतश्च धावति । चिंतयामास नृपतिः सच्छुष्कमलकधरः ३२ मया तु किं कृतं कर्म प्राप्तं दुःखं यदीदृशम् । मया वै तोषिता देवा य-
ज्ञैः पूजाभिरेव च ३३ तथैव ब्राह्मणा दानैस्तोषिता मिष्टभोजनैः । प्रजाश्चैव यथाकालं पुत्रवत्परिपालिताः ३४ कस्माद्दुःखं मया प्राप्त
मीदृशं दारुणं महत् । इति चिंतापरो राजा जगामाथाग्रतो वनम् ३५ सुकृतस्य प्रभावेण सरो दृष्ट्वा मनोरमम्। मानस स्पर्धमानं च पद्मि-
नीपरिशोभितम् ३६ कारंडवैश्चक्रवाकैराजहंसैश्च नादितम् । मकरैर्बहुभिर्युक्तमन्यैर्जलचरैर्युतम् ३७ समीपे सरसस्तत्र मुनीनामाश्रमान्ब
हून् । ददर्श राजा लक्ष्मीवानिमित्तैः शुभशंसिभिः ३८ सव्यात्परतरं चक्षुः प्रास्फुरच्च तथा करः । स्फुरितैस्तस्य राज्ञश्च शंसितं शुभफल
शंसितव्रतान् । कृतांजलिपुटो भूत्वा दंडवच्च प्रणम्य सः ४१ हर्षेण महताविष्टो बभूव नृपसत्तमः ४२ तमूचुस्तेपि मुनयः प्रसन्नास्मो
वयं तव । कथयस्वाद्य वै राजन्यत्ते मनसि वर्तते ४३ राजोवाच । के यूयमुग्रतपसः किमाख्या भवतामपि । किमर्थं संगता यूयं वदतु
मम तत्त्वतः ४४ मुनय ऊचुः । विश्वेदेवा वयं राजन्स्नानार्थमिह चागतः । माघो निकटमायात एतस्मात्पंचमेऽहनि ४५ अद्य ह्येकाद
शी राजन्पुत्रदा नाम नामतः । पुत्रं ददात्यसौ शुक्ला पुत्रदा पुत्रमिच्छताम् ४६ राजोवाच । एष वै संशयो मह्यं सुतस्योत्पादने महान् ।
यदि तुष्टा भवंतो मे पुत्रो वै दीयतां तदा ४७ मुनय ऊचुः । अस्मिन्नेव दिने राजन्पुत्रदा नाम वर्तते । एकादशीति विख्याता क्रियतां
व्रतमुत्तमम् ४८ आशीर्वादेन चास्माकं केशवस्य प्रसादतः । अवश्यं तव राजेंद्र पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ४९ इत्येव वचनात्तेषां कृतं राज्ञा व्रत

१ मम पृष्ठीपार्श्वे द्वितीया, मानससरोवरेण स्पर्धमानमित्यर्थः ।

शुभम् । द्वादश्यां पारणं कृत्वा मुनीन्नत्वा पुनः पुनः । आजगाम गृहं राजा राज्ञीगर्भं समादधौ ५० मुनीनां वचनेनैव पुत्रदायाः प्रसादतः । पुत्रो जातस्तथा काले तेजस्वी पुण्यकर्मकृत् ५१ पितरं तोषयामास प्रजापालो बभूव सः । एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्यं पुत्रदाव्रतम् ५२ लोकानां च हितार्थाय तवाग्रे कथितं मया । एतद्व्रतं तु ये मर्त्याः कुर्वंति पुत्रदाभिधम् ५३ तेषां चैव भवेत्पुत्रो ह्यवश्यं मोक्षभागिनाम् । पठनाच्छ्रवणाद्राजन्नश्वमेधफलं लभेत् ५४ इति श्रीभविष्योत्तरपु० पौषशुक्लैकादश्या पुत्रदानाम्न्या माहात्म्यं सं० ॥ ॥ अथ माघकृष्णषट्तिलैकादशीकथा ॥ दाल्भ्य उवाच । मर्त्यलोके तु संप्राप्ताः पापं कुर्वंति जंतवः । ब्रह्महत्यादिपापैश्च ह्यन्यैश्च विविधैर्युताः १ परद्रव्यापहाराश्च परव्यसनमोहिताः । कथं नायांति नरकान्ब्रह्मंस्तद्ब्रूहि तत्त्वतः २ अनायासेन भगवन्दानेनाल्पेन केनचित् । पापं प्रशममायाति येन तद्वक्तुमर्हसि ३ गभस्तिरुवाच । साधुसाधु महाभाग गुह्यमेतदुदाहृतम् । यन्न कस्यचिदाख्यातं ब्रह्मविष्ण्वेंद्रदैवतैः ४ तदहं कथयिष्यामि त्वया पृष्टो द्विजोत्तम । ततो माघे तु संप्राप्ते शुचिः स्नातो जितेंद्रियः ५ कामक्रोधाभिमानेर्ष्यालोभपैशून्यवर्जितः । देवदेवं च संस्मृत्य पादौ प्रक्षाल्य वारिणा ६ भूमावपतितं ग्राह्यं गोमयं तत्र मानवः । तिलान्प्रक्षिप्य कार्पासं पिंडकांश्चैव कारयेत् ७ अष्टोत्तरशतं चैव नात्र कार्या विचारणा । ततो माघे च संप्राप्ते ह्यार्द्रा चैव भवेद्यदि ८ मूले वा कृष्णपक्षस्यैकादश्यां नियमं ततः । गृह्णीयात्पुण्यफलदं विधानं तत्र मे शृणु ९ देवदेवं समभ्यर्च्य सुस्नातः प्रयतः शुचिः । कृष्णनामानि संकीर्त्य क्षुतजृंभासु सर्वदा १० रात्रौ जागरणं कुर्याद्रात्रौ होमं च कारयेत् । अर्चयेद्देवदेवेशं शंखचक्रगदाधरम् ११ चंदनागरुकर्पूरैर्नैवेद्यं कृसरं तथा १२ संस्मृत्य नाम्ना च ततः कृष्णाख्येन पुनःपुनः । कूष्मांडैर्नारिकेलैश्च ह्यथवा बीजपूरकैः १३ सर्वाभावेपि विप्रेंद्र शस्तं पूगी

फल तथा । अर्घ्यं दत्त्वा विधानेन पूजयित्वा जनार्दनम् १४ कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिप्रद । संसारार्णवमग्नं मां प्रसीद पर
मेश्वर १५ नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन । सुब्रह्मण्य नमस्तेस्तु महापुरुषपूर्वज । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते १६
ततस्तु पूजयेद्विप्रमुदकुंभं प्रदापयेत् । छत्रोपानहवस्त्रैश्च कृष्णो मे प्रीयतामिति १७ कृष्णा धेनुः प्रदातव्या यथाशक्त्या द्विजोत्तम । ति
लपात्रं द्विजश्रेष्ठ दद्यात्तत्र विचक्षणः १८ स्नानमाशनयोः शस्ता श्वेताः कृष्णास्तिला मुने । तान्प्रदद्यात्प्रयत्नेन यथाशक्त्या द्विजोत्त
म १९ तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते । तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी २० तिलभुक्तिलदाता च षट् तिलाः पाप
नाशकाः ॥ नारद उवाच । कृष्ण कृष्ण महाबाहो नमस्ते भक्तभावन २१ षट्तिलैकादशीभुक्त कीदृशं फलमश्नुते । सोपाख्यानं मम ब्रूहि
यदि तुष्टोसि यादव २२ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु राजन्यथा वृत्तं दृष्टं तत्कथयामि ते । मृत्युलोके पुरा ह्यासीद्ब्राह्मणी तत्र नारद २३
व्रतचर्यारता नित्यं देवपूजारता सदा । मासोपवासनिरता मम भक्ता च सर्वदा २४ कृष्णोपवाससंयुक्ता मम पूजापरायणा । शरीरं क्ले
शितं नित्यमुपवासैर्द्विजोत्तम २५ दीनानां ब्राह्मणानां च कुमारीणां च भक्तितः । गृहादिकं प्रयच्छंती सर्वकालं महामतिः २६ अतिकृ
च्छ्रस्ता सा तु सर्वकालेषु वै द्विज । शुद्धमस्याः शरीरं हि व्रतैः कृच्छ्रैर्न संशयः २७ अथिनं वैष्णवं लोकं कायक्लेशेन वै तया । ना द
त्तमन्नदानं हि येन तृप्तिः परा भवेत् २८ एतज्ज्ञातं मया ब्रह्म मृत्युलोकमुपागतः । कापालिकं रूपमास्थाय भिक्षापात्रेण याचिता २९
ब्राह्मण्युवाच । कस्मात्त्वमागतो ब्रह्मन्वद यस्मात्समागतः । पुनरेव मया प्रोक्तं देहि भिक्षां च सुंदरि ३० तया कोपेन महता मृत्पिं
डस्ताम्रभाजने । क्षिप्तो यावत्तया देव्या पुनः स्वर्गं गतो द्विज ३१ ततः कालेन महता तापसी सुमहाव्रता । कदाचित्स्वर्गमासाता व्रत

चर्याप्रभावतः ३२ मृत्पिंडस्य प्रभावेण गृहं प्राप्तं मनोरमम् । संजातं चैव विप्रर्षे धान्यकोशविवर्जितम् ३३ गृहं यावन्निरीक्षेत न किञ्चित्तत्र पश्यति । तावद्गृहाद्विनिष्क्रांता ममांते चागता द्विज ३४ क्रोधेन महताविष्टा इदं वचनमब्रवीत् । मया व्रतैश्च कृच्छ्रैश्च ह्युपवासैरनेकशः ३५ पूजयाराधितो देवः सर्वलोकस्य भावनः । न धनं दृश्यते किञ्चिद्गृहे मम जनार्दन ३६ ततश्चोक्ता मया सा तु गृहं गच्छ यथागतम् । आगमिष्यंति सुतरां कौतूहलसमन्विताः ३७ देवपत्न्यस्तव द्रष्टुं विस्मयेन समन्विताः । द्वारं नोद्घाटनीयं हि षट्तिलापुण्यवाचनात् ३८ एवमुक्ता गता सा तु यदा वै मानुषी तदा । अत्रांतरे समायाता देवपत्न्यश्च नारद ३९ ताभिश्च कथितं तत्र त्वां द्रष्टुं हि समागताः । द्वारमुद्घाटय त्वं च पश्यामस्त्वां शुभानने ४० मानुष्युवाच । यदि द्रष्टुं समायाता सत्यं वाच्यं विशेषतः । षट्तिलापुण्यं वदत द्वारोद्घाटनकारणात् ४१ एकापि नावदत्तत्र षट्तिलाव्रतनाशतः । अन्यया कथितं तत्र द्रष्टव्या मानुषी मया ४२ ततो द्वारं समुद्घाट्य दृष्टा ताभिश्च मानुषी । न देवी न च गंधर्वी नासुरी च न पन्नगी ४३ दृष्टा पूर्वं तथा नारी ईदृशी सा द्विजर्षभ । रूपकांतिसमायुक्ता क्षणेन समपद्यत ४४ धनं धान्यं च वस्त्रादि सुवर्णं रौप्यमेव च । भवनं सर्वसंपन्नं षट्तिलायाः प्रसादतः ४५ अतितृष्णा न कर्तव्या वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् । आत्मवित्तानुसारेण तिलान्वस्त्रादि दापयेत् ४६ लभते चैव मारोग्यं ततो जन्मनि जन्मनि । दारिद्र्यं न च कष्टं वै न च दौर्भाग्यमेव च ४७ न भवेद्वै द्विजश्रेष्ठ षट्तिलायामुपोषणात् । अनेन विधिना राजंस्तिलदानान्न संशयः ४८ मुच्यते पातकैः सर्वैर्नात्र कार्या विचारणा । दानं च विधिना सम्यक् सर्वपापप्रणाशनम् ४९ नानर्थः कश्चिन्नायासः शरीरे मुनिसत्तम ५० इति श्रीभवि०माघकृष्णैकादश्याः षट्तिलानाम्या माहात्म्यं सं० ॥ ॥ अथ माघशुक्लजयैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । साधु कृष्ण त्वया

पोक्ता आदिदेव जगत्पते । स्वेदजा अण्डजाश्चैव उद्भिजाश्च जरायुजाः १ तेषां कर्ता विकर्ता त्वं पालकः क्षयकारकः । माघस्य कृष्णपक्षे
तु षट्तिला कथिता त्वया २ शुक्ले चैकादशी या स्यात् कथयस्व प्रसादतः । किं नाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते ३ श्रीकृष्ण
उवाच । कथयिष्यामि राजेंद्र शुक्ले माघस्य या भवेत् । जयानाम्नीति विख्याता सर्वपापहरा परा ४ पवित्रा पापहन्त्री च पिशाचत्ववि
नाशिनी । नैव तस्या व्रते चीर्णे प्रेतत्वं जायते नृणाम् ५ नातःपरतरा काचित्पापघ्नी मोक्षदायिनी । एतस्मात्कारणाद्राजन् कर्तव्येयं
प्रयत्नतः ६ श्रूयतां राजशार्दूल कथां पौराणिकीं शुभाम् । पंकजे च पुराणेऽस्या महिमा कथितो मया ७ एकदा नागलोके वै इंद्रो रा
ज्यं चकार ह । देवाश्च तत्र सौख्येन निवसंति मनोरमे ८ पीयूषपाननिरता अप्सरोगणसेविताः । नंदनं तु वनं तत्र पारिजातोपशोभि
तम् ९ रमयंति रमंत्यत्र अप्सरोभिर्दिवौकसः । एकदा रममाणोऽसौ देवेंद्रः स्वेच्छया नृप १० नर्तयामास हर्षात्स पंचाशत्कोटिनायि
का । गंधर्वास्तत्र गायंति, गंधर्वः पुष्पदंतकः ११ चित्रसेनश्च तत्रैव चित्रसेनसुता तथा । मालिनीति च नाम्ना तु चित्रसेनस्य कामि-
नी १२ मालिन्यां तु समुत्पन्नः पुष्पवानिति नामतः । पुष्पदंतस्य पुत्रो वै माल्यवान्नाम नामतः १३ गंधर्वी पुष्पवत्याख्या माल्यव
त्यतिमोहिता । कामस्य च शरैस्तीक्ष्णैर्विद्धांगी सा बभूव ह १४ तया भावकटाक्षैश्च माल्यवांस्तु वशीकृतः । लावण्यरूपसंपन्ना तस्या
रूपं नृप शृणु १५ बाहू तस्यास्तु कामेन कंठपाशौ कृताविव । चंद्रवद्वदनं तस्या नयने श्रवणायते १६ कर्णौ तु शोभितौ तस्याः कु
ंडलाभ्यां नृपोत्तम । कंबुग्रीवायुता चैव दिव्याभरणभूषिता १७ पीनोन्नतौ कुचौ तस्या मुष्टिमात्रं च मध्यमम् । नितंबौ विपुलौ तस्या

१ पंकजे पुराणे पद्मपुराणे ।

विस्तीर्णं जघनस्थलम् १८ चरणौ शोभमानौ तौ रक्तोत्फलसमद्युती । ईदृश्या पुष्पवत्या च माल्यवानतिमोहितः १९ शक्रस्य परितोषाय नृत्यार्थं तौ समागतौ । गायमानौ च तौ तत्र ह्यप्सरोगणसंगतौ २० न शुद्धगानं गायेतां चित्तभ्रमसमन्वितौ । बद्धदृष्टी तथाऽन्योन्यं कामबाणवशंगतौ २१ ज्ञात्वा लेखर्षभस्तत्र संगतं मानसं तयोः । तालकालक्रियामानलोपाद्गीतावभंजनात् २२ चिंतयित्वा तु मघवानवज्ञातं तथात्मनः । कुपितश्च तयोरित्थं शापं दास्यन्निदं जगौ २३ धिग्वां पापरतौ मूढावाज्ञाभंगकरौ मम । युवां पिशाचौ भवतां दंपती रूप धारिणौ २४ मृत्युलोकमनुप्राप्तौ भुंजानौ कर्मणः फलम् । एवं मघवता शप्तावुभौ दुःखितमानसौ २५ हिमवंतमनुप्राप्ताविंद्रशापविमोहितौ । उभौ पिशाचतां प्राप्तौ दारुणं दुःखमेव च २६ संप्राप्तमानसौ तत्र महाकृच्छ्रगतावुभौ । गंधं रसं च स्पर्शं च न जानंतौ विमोहितौ २७ पीडयमानौ तु दाहेन देहपातकरेण च । तौ न निद्रासुखं प्राप्तौ कर्मणा तेन पीडितौ २८ परस्परं वादमानौ चेरतुर्गिरिगह्वरम् । पीडयमानौ तु शीतेन तुषारप्रभवेण तौ २९ दंतघर्षं प्रकुर्वाणौ रोमांचितवपुर्धरौ । ऊचे पिशाचः शीतार्तः स्वपत्नीं तु पिशाचिकाम् ३० किमावाभ्यां कृतं पापमत्यंतं दुःखदायकम् । येन प्राप्तं पिशाचत्वं स्वेन दुष्कृतकर्मणा ३१ नरकं दारुणं मत्वा पिशाचत्वं च गर्हितम् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापं नैव समाचरेत् ३२ इति चिंतापरौ तत्र ह्यास्तां दुःखेन कर्षितौ । दैवयोगात्तयोः प्राप्ता माघस्यैकादशी सिता ३३ जयानाम्नीति विख्याता तिथीनामुत्तमा तिथिः । तस्मिन्दिने तु संप्राप्ते तावाहारविवर्जितौ ३४ आसाते तत्र नृपते जलपानविवर्जितौ । न कृतो जीवघातश्च न पत्र फलभक्षणम् ३५ अश्वत्थस्य समीपे तु पतितौ दुःखसंयुतौ । रविरस्तंगतो राजँस्तथैव स्थितयोस्तयोः ३६ प्राप्ता चैव निशा घोरा दारुणा शीतधारिणी । वेपमानौ तु तौ तत्र हि-

मेन च जरीकृतौ ३७ परस्परेण सक्रमौ माऋयोर्भुजयोरपि । न निद्रां न रतिं तत्र न तौ सौख्यमविंदताम् ३८ एवं तौ राजशार्दूल शा-
पेनेंद्रस्य पीडितौ । इत्य तयोर्दुःखितयोर्निर्जगाम तदा निशा । जयायास्तु व्रते चीर्णे रात्रौ जागरणे कृते ३९ तयोर्व्रतप्रभावेण यथा स्वा-
सीत्तथा शृणु । द्वादशीदिवसे प्राप्ते ताभ्यां चीर्णे जयाव्रते ४० विष्णोः प्रभावान्नृपतेः पिशाचत्व तयोर्गतम् । पुष्पवंती माल्यवांश्च पूर्व-
रूपौ बभूवतुः ४१ पुरातनस्नेहयुतौ पूर्वालंकारसंयुतौ । विमानमधिरूढौ तावप्सरोगणसेवितौ ४२ स्तूयमानौ तु गंधर्वैस्तुम्बरुप्रमुखैस्तथा ।
हावभावसमायुक्तौ गतौ नाके मनोरमे ४३ देवेंद्रस्याग्रतो गत्वा प्रणाम चक्रतुर्मुदा । तथाविधौ तु तौ दृष्ट्वा मघवान्विस्मितोऽब्रवीत् ४४ इंद्र
उवाच । वदत केन पुण्येन पिशाचत्व विनिर्गतम् । मम शापवश प्राप्तौ केन देवेन मोचितौ ४५ माल्यवानुवाच । वासुदेवप्रसादेन जयायाः
स्वव्रतेन च । पिशाचत्वं गत स्वामिन्सत्य भक्तिप्रसादतः ४६ इति श्रुत्वा वचस्तस्य प्रत्युवाच सुरेश्वरः । पवित्रौ पावनौ जातौ वंदनीयौ
ममापि च ४७ हरिवासरकर्तारौ विष्णुभक्तिपरायणौ । हरिभक्तिरता ये च शिवभक्तिरतास्तथा ४८ अस्माकमपि ते मर्त्याः पूज्या वंद्या न
संशयः । विहरस्व यथासौख्यं पुष्पवत्या सुरालये ४९ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्यो हरिवासरः । जयाव्रत तु राजेंद्र ब्रह्महत्यापहारकम् ५०
सर्वदानानि दत्तानि यज्ञास्तेन कृता नृप । सर्वतीर्थेषु सुस्नातः कृत येन जयाव्रतम् ५१ यः करोति नरो भक्त्या श्रद्धायुक्तो जयाव्रतम् ।
कल्पकोटिशत यावद्वैकुंठे मोदते ध्रुवम् । पठनाच्छ्रवणाद्राजन्नग्निष्टोमफल लभेत् ५२ ॥ इति श्रीम० माघशुक्लजयानामैकादशीमाहात्म्य
संपूर्णम् ॥ ॥ अथ फाल्गुनकृष्णविजयानामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । फाल्गुनस्यासिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् । वासुदेव
प्रसादेन कथयस्व प्रमादतः १ श्रीकृष्ण उवाच । कथयिष्यामि राजेंद्र कृष्णा या फाल्गुनी भवेत् । विजयेति च सा प्रोक्ता कर्तॄणां जयदा

सदा २ तस्याश्च व्रतमाहात्म्यं सर्वपापहरं परम् । नारदः परिपप्रच्छ ब्रह्माणं कमलासनम् ३ फाल्गुनस्यासिते पक्षे विजया नाम या तिथिः । तस्या व्रतं सुरश्रेष्ठ कथयस्व प्रसादतः ४ इति पृष्टो नारदेन प्रत्युवाच पितामहः ॥ ब्रह्मोवाच । शृणु नारद वक्ष्यामि कथां पापहरां पराम् ५ पुरातनं व्रतं ह्येतत्पवित्रं पापनाशनम् । यन्न कस्यचिदाख्यातं मयैतद्विजयाव्रतम् ६ जयं ददाति विजया नृणां चैव न संशयः । रामस्तपोवनं यातो वर्षाण्येव चतुर्दश ७ न्यवसत्पंचवट्यां तु ससीतश्च सलक्ष्मणः । तत्रैव वसतस्तस्य राघवस्य महात्मनः ८ रावणेन हृता भार्या सीतानाम्नी तपस्विनी । तेन दुःखेन रामोऽसौ मोहमभ्यागतस्तदा ९ भ्रमञ्जटायुषं तत्र ददर्श विगतायुषम् । कबंधो निहतः पश्चाद्भ्रमता[1] ऽरण्यमध्यतः १० राज्ञे विज्ञाप्य तत्सर्वं सोपि मृत्युवशंगतः । सुग्रीवेण समं सख्यमर्जयन्समजायत ११ वानराणामनीकानि रामार्थे संगतानि वै । ततो हनूमता दृष्टा लंकोद्याने तु जानकी १२ रामसंज्ञापनं तस्यै दत्तं कर्म महत्कृतम् । समेत्य रामेण पुनः सर्वं तत्र निवेदितम् १३ अथ श्रुत्वा रामचंद्रो वाक्यं चैव हनूमतः । सुग्रीवानुमतेनैव प्रस्थानं समरोचयत् १४ स गत्वा वानरैः सार्द्धं तीरं नदनदीपतेः । दृष्ट्वाब्धिं दुस्तरं रामो विस्मितोऽभूत्कपिप्रियः १५ प्रोत्फुल्ललोचनो भूत्वा लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् । सौमित्रे केन पुण्येन तीर्यते वरुणालयः १६ अगाधसलिलैः पूर्णो नक्रैर्भीमैः समाकुलः । उपायं नैव पश्यामि येनैव सुतरो भवेत् १७ लक्ष्मण उवाच । आदिदेवस्त्वमेवासि पुराणपुरुषोत्तम । बकदाल्भ्यो मुनिश्चात्र वर्तते द्वीपमध्यतः १८ अस्मात्स्थानाद्योजनार्द्धमाश्रमस्तस्य राघव । अनेन दृष्टा ब्रह्माणो बहवो रघुनंदनः १९ तं पृच्छ गत्वा राजेंद्र पुराणमृषिपुंगवम् । इति वाक्यं ततः श्रुत्वा लक्ष्मणस्यातिशोभनम् २०

१ अटमानेन रामेणेत्यर्थः ।

गाम राघवो ग्रष्टुं चकदाल्भ्यं महामुनिम् । प्रणनाम मुनिं मूर्ध्ना रामो विष्णुमिवामरः २१ मुनिर्ज्ञात्वा ततो राम पुराणपुरुषोत्तमम् । के-
नापि कारणेनैव प्रविष्ट मानुषीं तनुम् २२ उवाच स ऋषिस्तत्र कुतो राम तवागम ॥ राम उवाच । त्वत्प्रसादादहो विप्र वरुणालयसन्नि
धिम् २३ आगतोऽस्मि ससैन्यो ऽत्र लङ्कां नेतुं सराक्षसीम् । भवतश्चानुकूल्येन तीर्यते ऽब्धिर्यथा मया २४ तमुपाय वद मुने प्रसाद कुरु
सुव्रत । एतस्मात्कारणादेव ग्रष्टुं त्वाहमुपागतः २५ मुनिरुवाच । कथयिष्याम्यहं राम व्रतानामुत्तम व्रतम् । कृतेन येन सहसा विजयस्ते
भविष्यति २६ लङ्कां जित्वा राक्षसांश्च दीर्घां कीर्तिमवाप्स्यसि । एकाग्रमानसो भूत्वा व्रतमेतत्समाचर २७ फाल्गुनस्यासिते पक्षे विजयै
कादशी भवेत् । तस्या व्रते कृते राम विजयस्ते भविष्यति २८ निःसंशय समुद्र च तरिष्यसि सवानरः । विधिस्तु श्रूयता राम व्रतस्या
स्य फलप्रदः २९ दशमीदिवसे प्राप्ते कुम्भमेकं च कारयेत् । हैम वा राजतं वापि ताम्र वाप्यथ मृन्मयम् ३० स्थापयेच्छोभितं कुंभं ज-
लपूर्णं सपल्लवम् । तस्योपरि न्यसेद्देवं हैम नारायण प्रभुम् ३१ एकादशीदिने प्राप्ते प्रातःस्नान समाचरेत् । निश्चल स्थापयेत्कुम्भ गंध
माल्यानुलेपनैः ३२ दाडिमैर्नारिकेलैश्च पूजयेच्च विशेषतः । सप्तधान्यान्यधस्तत्र यवानुपरि विन्यसेत् ३३ गंधैर्धूपैस्तथा दीपैर्नैवेद्यैर्विवि
धैरपि । कुम्भाग्रे तद्दिनं राम नीयते भक्तिभावतः ३४ रात्रौ जागरण तत्र तस्याग्रे कारयेद्बुधः । द्वादशीदिवसे प्राप्ते मार्तंडस्योदय प्रति ३५
नीत्वा कुम्भ जलोद्देशे नद्यां प्रस्रवणे तथा । तडागे स्थापयित्वा वा पूजयित्वा यथाविधि ३६ दद्यात्सदैवतं कुंभं ब्राह्मणे वेदपारगे । कु
म्भेन सह राजेंद्र महादानानि दापयेत् ३७ अनेन विधिना राम यूथपैः सह सगतः । कुरु व्रत प्रयत्नेन विजयस्ते भविष्यति ३८ इति श्रु
त्वा वचो रामो यथोक्तमकरोत्तथा । कृते व्रते स विजयी बभूव रघुनदनः ३९ अनेन विधिना राजन्ये कुर्वंति नरा व्रतम् । इहलोके ज

यस्तेषां परलोकस्तथा ऽक्षयः ४० एतस्मात्कारणात्पुत्र कर्तव्यं विजयाव्रतम् । विजयायाश्च माहात्म्यं सर्वकिल्बिषनाशनम् ४१ पठना-
च्छ्रवणात्तस्य वाजपेयफलं लभेत्४२ ॥ इति श्रीस्कंदपु० फाल्गुनकृष्णैकादश्या विजयानाम्न्या माहात्म्यं समाप्तम् ॥ अथ फाल्गुनशुक्ला
ऽऽमलकीनामैकादशीकथा ॥ मांधातोवाच । वद ब्रह्मन्महाभाग येन श्रेयो भवेन्मम । ईदृग्ब्रूहि ब्रह्मयोने यद्यनुग्रहता मयि १ सरहस्यं
सेतिहासं व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ वसिष्ठ उवाच । कथयाम्यधुना तुभ्यं सर्वव्रतफलप्रदम् २ आमलक्या व्रतं राजन्महापातकनाशनम् ।
मोक्षदं सर्वलोकानां गोसहस्रफलप्रदम् ३ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासं पुरातनम् । यथामुक्तिमनुप्राप्तो व्याधो हिंसासमन्वितः ४ वैदिशं
नाम नगरं हृष्टपुष्टजनावृतम् । ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्च समलंकृतम् ५ रुचिरं नृपशार्दूल ब्रह्मघोषनिनादितम् । न नास्तिको दुष्कृ-
तिकस्तस्मिन्पुरवरे सदा ६ तत्र सोमान्वयो राजा विख्यातः शाशबिंदुकः । राजा चैत्ररथो नाम धर्मात्मा सत्यसंगरः ७ नागायुत
बलः श्रीमाञ्छस्त्रशास्त्रार्थपारगः । तस्मिञ्छासति धर्मज्ञे धर्मात्मनि धरां प्रभो ८ कृपणो नैव कुत्रापि दृश्यते नैव निर्धनः । सुकालः
क्षेममारोग्यं तस्मिन् राज्यं प्रशासति ९ विष्णुभक्तिरता लोकास्तस्मिन् पुरवरे सदा । हरिपूजारताश्चैव राजा चापि विशेषतः १० न
शुक्लां नैव कृष्णां च द्वादशीं[१] भुंजते जनाः । सर्वधर्मान्परित्यज्य हरिभक्तिपरायणाः ११ एवं संवत्सरा जग्मुर्बहवो राजसत्तम । जनस्य सौ-
ख्ययुक्तस्य हरिभक्तिरतस्य च १२ अथ कालेन संप्राप्ता द्वादशी पुण्यसंयुता । फाल्गुनस्य सिते पक्षे नाम्ना ह्यामलकी स्मृता १३ ताम-
वाप्य जनाः सर्वे बालकाः स्थविरा नृप । नियमं चोपवासं च सर्वे चक्रुर्नरा विभो १४ महाफलं व्रतं ज्ञात्वा स्नानं कृत्वा नदीजले । तत्र

१ द्वादशीशब्देनैकादशी ज्ञेया ।

देवालये राजा लोकयुक्तो महामखः १५ पूर्णकुंभमवस्थाप्य छत्रोपानहसंयुतम् । पंचरत्नसमायुक्तं दिव्यमधादिवासितम् १६ दीपमाला-
न्वितं चैव जामदग्न्यसमन्वितम् । पूजयामासुरव्यग्रा धात्रीं च मुनिभिर्जनाः १७ जामदग्न्य नमस्तेऽस्तु रेणुकानंदवर्द्धन । आमलकीकृत-
च्छाय भुक्तिमुक्तिवरप्रद १८ धात्रि धातृसमुद्भूते सर्वपातकनाशिनि । आमलकि नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्योदकं मम १९ धात्रि ब्रह्मस्व
रूपासि त्वं तु रामेण पूजिता । प्रदक्षिणाविधानेन सर्वपापहरा भव २० तत्र जागरणं चक्रुर्जनाः सर्वे स्वभक्तितः । एतस्मिन्नेव काले तु
व्याधस्तत्र समागतः २१ क्षुधाश्रमपरिव्याप्तो महाभारेण पीडितः । कुटुंबार्थं जीवघाती सर्वधर्मबहिष्कृतः २२ जागरं तत्र सोऽपश्यदाम
लक्यां क्षुधान्वितः । दीपमालाकुलं दृष्ट्वा तत्रैव निषसाद सः २३ किमेतदिति संचिंत्य प्राप्तो विस्मयतां भृशम् । ददर्श कुंभं तत्रस्थं
देवं दामोदरं तथा २४ ददर्शामलकीवृक्षं तत्रस्थांश्चैव दीपकान् । वैष्णवं च तथाख्यानं सुश्राव पठतां नृणाम् २५ एकादश्याश्च मा
हात्म्यं सुश्राव क्षुधितोऽपि सन् । जाग्रतस्तस्य सा रात्रिर्गता विस्मितचेतसः २६ ततः प्रभातसमये विविशुर्नगरं जनाः । व्याधोऽपि गृ
हमागत्याबुभुजे प्रीतमानसः २७ ततः कालेन महता व्याधः पंचत्वमागतः । एकादश्याः प्रभावेण रात्रौ जागरणेन च २८ राज्यं प्रपेदे
सुमहच्चतुरंगबलान्वितम् । जयंती नाम नगरी तत्र राजा विदूरथः २९ तस्मात्स तनयो जज्ञे नाम्ना वसुरथो बली । चतुरंगबलोपेतो
धनधान्यसमन्वितः ३० दशायुतानि ग्रामाणां बुभुजे भयवर्जितः । तेजसाऽऽदित्यसदृशः कांत्या चंद्रसमप्रभः ३१ पराक्रमे विष्णुसमः क्ष
मया पृथिवीसमः । धार्मिकः सत्यवादी च विष्णुभक्तिपरायण ३२ ब्रह्मज्ञः कर्मशीलश्च प्रजापालनतत्परः । यजते विविधान्यज्ञान् स
राजा परदर्पहा ३३ दानानि विविधान्येव प्रददाति च सर्वदा । एकदा मृगयां यातो दैवान्मार्गपरिच्युतः ३४ न दिशो नैव विदिशो वेत्ति

तत्र महीपतिः । उपधाय च दोर्मूलमेकाकी गहने वने ३५ श्रांतश्च क्षुधितो ऽत्यंतं संविवेश महीपतिः । अत्रांतरे म्लेच्छगणः पर्वतांतर-
वासभुक् ३६ आ ययौ तत्र यत्रास्ते राजा परबलार्दनः । कृतवैरास्तु ते राज्ञा सर्वे दैवोपतापिताः ३७ परिवार्य ततस्तस्थू राजानं भूरि-
दक्षिणम् । हन्यतां हन्यतां चायं पूर्ववैरविरुद्धधीः ३८ अनेन निहताः पूर्वं पितरो भ्रातरः सुताः । पौत्राश्च भागिनेयाश्च मातुलाश्च निपा-
तिताः ३९ निष्कासिताश्च स्वस्थानाद्विक्षिप्ताश्च दिशो दश । एतावदुक्त्वा ते सर्वे तत्रैनं हंतुमुद्यताः ४० पाशैश्च पट्टिशैः खड्गैर्बाणैर्धनुषि सं-
स्थितैः । सर्वतो ऽरिगणास्ते च राजानं हंतुमुद्यताः ४१ सर्वाणि शस्त्राणि समाद्रवंति न वै शरीरे प्रविशंति तस्य । ते चापि सर्वे हतशस्त्रसंघा
म्लेच्छा बभूवर्गतदेहजीवाः ४२ यदापि चलितुं तत्र न शेकुस्ते ऽयो भृशम् । शस्त्राणि कुंठतां जग्मुः सर्वेषां हतचेतसाम् ४३ दीना बभुवस्ते सर्वे
ये च हंतुं समागताः । एतस्मिन्नेव काले तु तस्य राज्ञः शरीरतः ४४ निःसृता प्रमदा ह्येका सर्वावयवशोभना । दिव्यगंधसमायुक्ता दिव्या-
भरणभूषिता ४५ दिव्यमाल्यांबरधरा भ्रुकुटीकुटिलानना । [1]स्फुलिंगाभ्यां च नेत्राभ्यां पावकं वमती बहु ४६ चक्रोद्यतकरा चैव कालरा-
त्रिरिवापरा । अभ्यधावत संक्रुद्धा म्लेच्छानत्यंतदुःखितान् ४७ निहताश्च यदाम्लेच्छास्ते विकर्मरतास्तथा । ततो राजा विबुद्धः सन् ददर्श
महदद्भुतम् ४८ हतान्म्लेच्छगणान्दृष्ट्वा राजा हर्षमवाप सः । इह केन हता म्लेच्छा अत्यंतं वैरिणो मम ४९ केन चेदं महत्कर्म कृतम-
स्मद्धितार्थिना । एतस्मिन्नेव काले तु वागुवाचाशरीरिणी ५० तं स्थितं नृपतिं दृष्ट्वा निकामं विस्मयान्वितम् । शरणं केशवादन्यो ना-
स्ति कोपि द्वितीयकः ५१ वनात्तस्मात्स कुशली समायातापि भूमिभुक् । राज्यं चकार धर्मात्मा धरायां देवतेशवत् ५२ वसिष्ठ उवाच ।

१ स्फुलिंगाभ्यां अग्निकणरूपाभ्यां नेत्राभ्यामित्यर्थः ।

तस्मादामलकीं राजन्ये कुर्वंति नरोत्तमाः । ते यांति वैष्णवं लोकं नात्र कार्या विचारणा ५२ ॥ इति श्रीब्रह्माण्डपु० फाल्गुनशुक्लैकादश्या आमलकीनाम्न्या माहात्म्यं सं०॥ ॥ अथ चैत्रकृष्णपापमोचनीनामैकादशी कथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । फाल्गुनस्य सिते पक्षे श्रुता सा ऽऽमलकी मया । चैत्रस्य कृष्णपक्षे तु किं नामैकादशी भवेत् १ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु राजेंद्र वक्ष्यामि अज्ञातपापनाशनम् । यल्लो मशो ऽब्रवीत्पृष्टो मांधात्रा चक्रवर्तिना २ मांधातोवाच । भगवन् श्रोतुमिच्छामि लोकानां हितकाम्यया । चैत्रमासस्यसिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् ३ को विधिः किं फलं तस्याः कथयस्व प्रसादतः ॥ लोमश उवाच । श्रूयतां राजशार्दूल कामदां सिद्धिदा तथा । कथा विचित्रां शुभदां पापहां धर्मदायिनीम् ४ पुरा चैत्ररथोद्देशे अप्सरोगणसेविते । वसंतसमये मासे पुष्पैराकुलिते वने ५ गंधर्वकन्यास्तत्रैव रमंति सह किन्नरैः । पाकशासनमुख्याश्च क्रीडते च दिवौकसः ६ नापरं सुंदरं किंचिद्वनाचैत्ररथाद्वनम् । तस्मिन्वने तु मुनयस्तपंति बहुलं तपः ७ सह देवैस्तु मघवा रमते मधुमाधवौ । एको मुनिवरस्तत्र मेधावी नाम नामतः ८ अप्सरास्तु मुनिवरं मोहनायोपचक्रमे । मंजु घोषेति विख्याता भाम तस्य विधिन्वती ९ कोशमात्रे स्थिता तस्य भयादाश्रमसन्निधौ । गायती मधुरं साधु पीडयती विपंचिकाम् १० गायतीं तामथालोक्य पुष्पचंदनवेष्टिताम् । कामोपि विजयाकांक्षी शिवभक्तं मुनीश्वरम् ११ तस्याः शरीरसंसर्गी शिववैरमनुस्मरन् । भ्रु त्ययुगं धनुःकोटी गुणं कृत्वा कटाक्षकम् १२ मार्गणौ नयने कृत्वा पक्षयुक्तौ यथाक्रमम् । कुचौ कृत्वा पटकुटी विजयायोपसंस्थितः १३ मंजुघोषा ऽभवत्तत्र कामस्येव वरूथिनी । मेधाविनं मुनिं दृष्ट्वा सापि कामेन पीडिता १४ यौवनोद्भिन्नदेहोऽसौ मेधाव्यतिविराजते । सितोपवीतसहितो दंडी स्मर इवापरः १५ मेधावी वसति स्मासौ च्यवनस्याश्रमे शुभे । मंजुघोषा स्थिता तत्र दृष्ट्वा तं मुनिपुंगवम् १६ मद-

नस्य वशं प्राप्ता मंदं मंदमगायत । रणद्वलयसंयुक्ता सिंजन्नूपुरमेखला १७ गायंतीं भावसंयुक्तां विलोक्य मुनिपुंगवः । मदनेन ससैन्येन नीतो मोहवशे बलात् १८ मंजुघोषा समागम्य मुनिं दृष्ट्वा तथाविधम् । हावभावकटाक्षैस्तु मोहयामास चांगना १९ अधः संस्थाप्य वीणां सा सस्वजे तं मुनीश्वरम् । वल्लीवाकुलिता वृक्षे वातवेगेन वेपिता २० सोपि रेमे तया सार्द्धं मेधावी मुनिपुंगवः । तस्मिन्नेव वनोद्देशे दृष्ट्वा तद्देहमुत्तमम् २१ शिवतत्त्वं गतं तस्य कामतत्त्ववशंगतः । न निशा न दिनं सोपि रमञ्जानाति कामुकः २२ बहुलश्च गतः कालो मुनेराचारलोपकः । मंजुघोषा देवलोकं गमनायोपचक्रमे २३ गच्छंती प्रत्युवाचाथ रमते मुनिपुंगवः । आदेशो दीयतां ब्रह्मन्स्वधामगमनाय मे २४ मेधाव्युवाच । अद्यैव त्वं समायाता प्रदोषादौ वरानने । यावत्प्रभातसंध्या स्यात्तावत्तिष्ठ ममांतिके २५ इति श्रुत्वा मुनेर्वाक्यं भयभीता बभूव सा । पुनर्वै रमयामास तं मुनिं ऋषिसत्तमम् २६ मुनिशापभयाद्भीता बहुलान्परिवत्सरान् । वर्षाणां पंचपंचाशच्छतं मासान्दिनत्रयम् २७ सा रेमे मुनिना तेन निशार्द्धमिव चाभवत् । सा च तं प्रत्युवाचाथ तस्मिन्काले गते मुनिम् ॥ आदेशो दीयतां ब्रह्मन् गंतव्यं स्वगृहे मम २८ मेधाव्युवाच । प्रातःकालोऽधुनैवास्ते श्रूयतां वचनं मम । कुर्वे संध्यां दिने यावत्तावत्त्वं वै स्थिरा भव २९ इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा भयेन च समाकुला । स्मितं कृत्वा तु सा किंचित्प्रत्युवाच सुविस्मिता ३० अप्सरा उवाच । कियत्प्रमाणा विप्रेंद्र तव संध्यागता नवा । मयि प्रसादं कृत्वा तु गतः कालो विचार्यताम् ३१ इति तस्या वचः श्रुत्वा विस्मयोत्फुल्ललोचनः । स ध्यात्वा हृदि विप्रेंद्रः प्रमाणमकरोत्तदा ३२ समाश्च सप्तपंचाशद्गता मम तया सह । नेत्राभ्यां विस्फुलिंगान्स मुंचमानोऽतिकोपनः ३३

१ मुनिपुंगवः सन्नपि मया सहैव रमते इति साश्चर्यमनस्युक्त्वा आदेशो दीयतामित्यवदत् ।

कालरूपा च तां दृष्ट्वा तपसः क्षयकारिणीम् । दुःखार्जितं मम तपो नीतं तदनया क्षयम् ३४ सकोपोष्ठो मुनिस्तत्र प्रत्युवाचाकुलेंद्रियः ।
स तां शशाप मेधावी त्वं पिशाची भवेति च ३५ धिक् त्वां पापे दुराचारे कुलटे पातकप्रिये । तस्य शापेन सा दग्धा विनयावनता-
स्थिता ३६ उवाच वचनं सुभ्रूः प्रसादं वांछती मुनिम् । प्रसादं कुरु विप्रेंद्र शापस्यानुग्रहं कुरु ३७ सतां संगो हि फलति वचोभिः स
प्तभिः पदे । त्वया सह मम ब्रह्मन्गताः सुबहवः समाः ३८ एतस्मात्कारणात्स्वामिन्प्रसादं कुरु सुव्रत ॥ मुनिरुवाच । शृणु मे वचनं भद्रे
शापानुग्रहकारकम् । किं करोमि त्वया पापे क्षयं नीतं महत्तपः ३९ चैत्रस्य कृष्णपक्षे या भवेदेकादशी शुभा । पापमोचनिका नाम
सर्वपापक्षयंकरी ४० तस्या व्रते कृते सुभ्रु पिशाचत्वं प्रयास्यति । इत्युक्त्वा तां स मेधावी जगाम पितुराश्रमम् ४१ तमागतं समालो
क्य च वचनं प्रत्युवाच ह । किमेतद्विहितं पुत्र त्वया पुण्यक्षयः कृतः ४२ मेधाव्युवाच । पापं कृतं महत्तात रमिता चाप्सरा मया । प्रा
यश्चित्तं ब्रूहि तात येन पापक्षयो भवेत् ४३ च्यवन उवाच । चैत्रस्य चासिते पक्षे नाम्ना वै पापमोचनी । अस्या व्रते कृते पुत्र पाप
राशिः क्षयं व्रजेत् ४४ इति श्रुत्वा पितुर्वाक्यं कृतं तेन व्रतोत्तमम् । गतं पापं क्षयं तस्य पुण्ययुक्तो बभूव सः ४५ सोप्येवं मञ्जुघोषा
च कृत्वा तद्व्रतमुत्तमम् । पिशाचत्वविनिर्मुक्ता पापमोचनिकाप्रसाद ४६ दिव्यरूपधरा सापि गता नाकं वराप्सराः ॥ लोमश उवाच । इ-
त्थंभूतप्रभावं हि पापमोचनिकाव्रतम् ४७ पापमोचनिकां राजन्ये कुर्वंति च मानवाः । तेषां पापं च यत्किंचित्तत्सर्वं क्षयतां व्रजेत् ४८
पठनाच्छ्रवणाद्राजन् गोसहस्रफलप्रदा । ब्रह्महा हेमहारी च सुरापो गुरुतल्पगः ४९ व्रतस्य चास्य करणात्पापमुक्ता भवंति ते । बहुपुण्य
प्रदं ह्येतत्करणाद्व्रतमुत्तमम् ५० ॥ इति श्रीभवि० चैत्रकृष्णपापमोचनिकानामैकादशीमाहात्म्यं सं० ॥ ॥ अथ चैत्रशुक्लकामदानामैकादशीकथा ॥

सूत उवाच । देवकीनंदनं कृष्णं वसुदेवात्मजं हरिम् । नमस्कृत्वा प्रवक्ष्यामि महापातकहानि तु १ युधिष्ठिराय कृष्णेन कथितानि महात्मना ।
एकादशीमाहात्म्यानि नानापापहराणि च । अष्टादशपुराणेभ्यो विविच्य सुमहात्मना २ चतुर्विंशतिसंख्यानि नानाख्यानैर्युतानि च । तानि
वक्ष्यामि भो विप्राः शृणुध्वं सुसमाहिताः ३ युधिष्ठिर उवाच । वासुदेव नमस्तुभ्यं कथयस्व ममाग्रतः । चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु किं नामैकादशी
भवेत् ४ श्रीकृष्ण उवाच । शृणुष्वैकमना राजन्कथामेकां पुरातनीम् । वसिष्ठो यामकथयत्प्राग्दिलीपाय पृच्छते ५ दिलीप उवाच । भगवन्
श्रोतुमिच्छामि कथयस्व प्रसादतः । चैत्रमासि सिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् ६ वसिष्ठ उवाच । साधु पृष्टं नृपश्रेष्ठ कथयामि तवाग्रतः ।
चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु कामदा नाम नामतः ७ एकादशी पुण्यतमा पापेंधनदवानला । शृणु राजन्कथामेतां पापघ्नीं पुत्रदायिनीम् ८ पुरा
भोगिपुरे रम्ये हेमरत्नविभूषिते । पुंडरीकमुखा नागा निवसंति मदोत्कटाः ९ तस्मिन्पुरे पुंडरीको राजा राज्यं करोति च । गंधर्वैः किन्नरै-
श्चैव ह्यप्सरोभिः सुसेव्यते १० वराप्सरा तु ललिता गंधर्वो ललितस्तथा । उभौ रागेण संयुक्तौ दंपती कामपीडितौ ११ रेमाते स्वगृहे
रम्ये धनधान्ययुते सदा । ललितायास्तु हृदये पतिर्वसति सर्वदा १२ हृदये तस्य ललिता नित्यं वसति भामिनी । एकदा पुंडरीकाद्याः
क्रीडंति सदसि स्थिताः १३ गीतमानं प्रकुरुते ललितो दयितां विना । पदबन्धस्खलज्जिह्वो बभूव ललितां स्मरन् १४ मनोभावं विदित्वा
ऽस्य कर्कोटो नागसत्तमः । पदबंधच्युतिं तस्य पुंडरीके न्यवेदयत् १५ शशाप ललितं तत्र मदनातुरचेतसम् । राक्षसो भव दुर्बुद्धे क्र-
व्यादः पुरुषादकः १६ यतः पत्नीवशो जातो गायमानो ममाग्रतः । वचनात्तस्य राजेंद्र रक्षोरूपो बभूव ह १७ रौद्राननो विरूपाक्षो दृष्टमा-
त्रो भयंकरः । बाहू योजनविस्तीर्णौ मुखं कंदरसन्निभम् १८ चंद्रसूर्यनिभे नेत्रे ग्रीवा पर्वतसन्निभा । नासारंध्रे तु विवरे अधरौ योजनार्द्ध

को १९ शरीरं तस्य राजेंद्र उच्छ्रित योजनाष्टकम् । ईदृशो राक्षसः सो ऽभूद्भुजान' कर्मण' फलम् २० ललिता तमथालोक्य स्वपतिं
विकृताकृतिम् । चिंतयामास मनसा दुःखेन महतार्दिता २१ किं करोमि क्व गच्छामि पतिः पापेन पीडितः । इति सस्मृत्य मनसा न
शर्म लभते तु सा २२ चचार पतिना सार्द्धं ललिता गहने वने । बभ्राम विपिने दुर्गे कामरूपः स राक्षसः २३ निर्घृण पापनिरतो
विरूप' पुरुषादक' । न सुख लभते रात्रौ न दिवा पापपीडितः २४ ललिता दुःखिता ऽतीव पतिं दृष्ट्वा तथाविधम् । भ्रमती तेन सार्धं
सा रुदती गहने वने २५ कदाचिदगमद्विंध्यशिखरे बहुकौतुके । ऋष्यशृंगमुनेस्तत्र दृष्ट्वाश्रमपदं शुभम् २६ शीघ्रं जगाम ललिता
विनयावनतास्थिता । प्रत्युवाच मुनिर्दृष्ट्वा का त्वं कस्य सुता शुभे २७ किमर्थं हि समायाता सत्य वद ममाग्रतः ॥ ललितोवाच । वी-
रधन्वेति गंधर्वः सुता तस्य महात्मन' २८ ललितां नाम मां विद्धि पत्यर्थमिह चागताम् । भर्ता मे शापदोषेण राक्षसो ऽभून्महामुने
२९ रौद्ररूपो दुराचारस्त दृष्ट्वा नास्ति मे सुखम् । सांप्रत शाधि मां ब्रह्मन्प्रायश्चित्त वद प्रभो ३० येन पुण्येन विप्रेंद्र राक्षस
त्वाद्विमुच्यते ॥ ऋषिरुवाच । चैत्रमासस्य रंभोरु शुक्लपक्षस्य सांप्रतम् ३१ कामदैकादशी नाम्ना या कृता कामदा नृणाम् ।
कुरुष्व तद्व्रत भद्रे विधिपूर्वं मयोदितम् ३२ तस्य व्रतस्य यत्पुण्य तत्स्वभर्त्रे प्रदीयताम् । दत्ते पुण्ये क्षणात्तस्य शापदोषः प्रशा-
म्यति ३३ इति श्रुत्वा मुनेर्वाक्यं ललिता हर्षिता ऽभवत् । उपोष्यैकादशीं राजन्द्वादशीदिवसे तदा ३४ विप्रस्यैव समीपे तु वासुदेवाग्र
त स्थिता । वाक्यमूचे तु ललिता स्वपत्युस्तारणाय वै ३५ मया तु यद्व्रत चीर्णं कामदाया उपोषणम् । तस्य पुण्यप्रभावेण गच्छत्वस्य
पिशाचता ३६ कृष्ण उ० । ललितावचनादेव वर्तमानोपि तत्क्षणे । गतपापः स ललितो दिव्यदेहो बभूव ह ३७ राक्षसत्व गतं तस्य प्राप्तो गंधर्व

तां पुनः । हेमरत्नसमाकीर्णो रेमे ललितया सह ३८ तौ विमानसमारूढौ पूर्वरूपाधिकावुभौ । दंपती चापि शोभेतां कामदायाः प्रभावतः ३९ इति ज्ञात्वा नृपश्रेष्ठ कर्तव्यैषा प्रयत्नतः । लोकानां च हितार्थाय तवाग्रे कथिता मया ४० ब्रह्महत्यादिपापघ्नी पिशाचत्वविनाशिनी । नातःपरतरा काचित्त्रैलोक्ये सचराचरे ४१ पठनाच्छ्रवणाद्वापि वाजपेयफलं लभेत् ४२ ॥ इति श्रीवाराहपुराणे चैत्रशुक्लकामदानामैकादशीमाहात्म्यं सं० ॥ ॥ अथ वैशाखकृष्णवरूथिनीनामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । वैशाखस्यासिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् । महिमानं कथय मे वासुदेव नमो ऽस्तु ते १ श्रीकृष्ण उवाच । सौभाग्यदायिनी राजन्निहलोके परत्र च । वैशाखकृष्णपक्षे तु नाम्ना चैव वरूथिनी २ वरूथिन्या व्रतेनैव सौख्यं भवति सर्वदा । पापहानिश्च भवति सौभाग्यप्राप्तिरेव च ३ दुर्भगापि करोत्येनां स्त्री सौभाग्यमवाप्नुयात् । लोकानां चैव सर्वेषां भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ४ सर्वपापहरा नृणां गर्भवासनिकृंतनी । वरूथिन्या व्रतेनैव मांधाता स्वर्गतिं गतः ५ धुंधुमारादयश्चान्ये राजानो बहवस्तथा । ब्रह्मकपालनिर्मुक्तो बभूव भगवान्भवः ६ दशवर्षसहस्राणि तपस्तप्यति यो नरः । तत्तुल्यं फलमाप्नोति वरूथिन्या व्रतादपि ७ श्रद्धावान्यस्तु कुरुते वरूथिन्या व्रतं नरः । वांछितं लभते सो ऽपि इहलोके परत्र च ८ पवित्रा पावनी ह्येषा महापातकनाशिनी । भुक्तियुक्तिप्रदा ह्येषा कर्तॄणां नृपसत्तम ९ अश्वदानान्नृपश्रेष्ठ गजदानं विशेषतः । गजदानाद्भूमिदानं तिलदानं ततोऽधिकम् १० ततः सुवर्णदानं तु अन्नदानं ततो ऽधिकम् । अन्नदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति ११ पितृदेवमनुष्याणां तृप्तिरन्नेन जायते । तत्समं कविभिः प्रोक्तं कन्यादानं नृपोत्तम १२ धेनुदानं च तत्तुल्यमित्याह भगवान्स्वयम् । प्रोक्तेभ्यः सर्वदानेभ्यो विद्यादानं विशिष्यते १३ तत्फलं समवाप्नोति नरः कृत्वा वरूथिनीम् । कन्यावित्तेन जीवंति ये नराः पापमोहिताः १४ ते नरा नरकं

याति यावदाभूतसम्प्लवम् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन न ग्राह्य कन्यकाधनम् १५ यश्च गृह्णाति लोभेन कन्या क्रीत्वा च तद्धनम् । सो ऽन्यज
न्मनि राजेंद्र ओतुर्भवति निश्चितम् १६ कन्यां वित्तेन यो दद्याद्यथाशक्तिस्वलंकृताम् । तत्पुण्यसंख्यां कर्तुं हि चित्रगुप्तो भवत्यलम्
१७ तत्फल समवाप्नोति नरः कृत्वा वरूथिनीम् । कांस्यं मांसं मसूरान्न चणकान्कोद्रवांस्तथा । शाक मधुपरान्न च पुनर्भोजनमैथुने १८
वैष्णवो व्रतकर्ता च दशम्यां दश वर्जयेत् । द्यूतक्रीडां च निद्रां च तांबूलं दंतधावनम् १९ परापवाद पैशून्यं पतिते सह भाषणम् ।
क्रोधं चैवानृत वाक्यमेकादश्यां विवर्जयेत् २० कांस्यं मांस मसूरांश्च क्षौद्र वितथभाषणम् । व्यायामं च प्रयासं च पुनर्भोजनमैथुने २१
क्षौरं तैलं परान्नं च द्वादश्यां परिवर्जयेत् । अनेन विधिना राजन्विहिता यैर्वरूथिनी ॥ सर्वपापक्षयं कृत्वा दद्यात्माते ऽक्षयां गतिम् २२ रा
त्रौ जागरणं कृत्वा पूजितो यैर्जनार्दनः । सर्वपापविनिर्मुक्तास्ते यांति परमां गतिम् २३ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्तव्या पापभीरुभिः । क्षपा
रितनेयाद्भीतैर्नरदेव वरूथिनी २४ पठनाच्छ्रवणाद्राजन्गोसहस्रफलं लभेत् । सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते २५ ॥ इति श्रीभ० वै
शाखकृष्णवरूथिन्येकादशीमाहात्म्य समाप्तम् ॥ ॥ अथ वैशाखशुक्लमोहिन्येकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । वैशाखशुक्लपक्षे तु किंनामै-
कादशी भवेत् । किं फलं को विधिस्तस्याः कथयस्व जनार्दन १ श्रीकृष्ण उवाच । कथयामि कथामेतां शृणुष्व धर्मनंदन । वसिष्ठो याम
कथयत्पुरा रामाय पृच्छते २ राम उवाच । भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि व्रतानामुत्तमं व्रतम् । सर्वपापक्षयकर सर्वदुःखनिकृंतनम् २ मया दुःखानि
भुक्तानि सीताविरहजानि वै । ततोऽहं भयभीतोऽस्मि पृच्छामि त्वां महामुने ४ वसिष्ठ उवाच । साधु पृष्टं त्वया राम तवैषा नैष्ठिकी मतिः ।

१ वित्तेन शोभयन्तीं । २ क्षपारिवनपात् पयात् ।

त्वन्नामग्रहणेनैव पूतो भवति मानवः ५ तथापि कथयिष्यामि लोकानां हितकाम्यया । पवित्रं पावनानां च व्रतानामुत्तमं व्रतम् ६ वैशाखस्य सिते पक्षे द्वादशी राम या भवेत् । मोहिनी नाम सा प्रोक्ता सर्वपापहरा परा ७ मोहजालात्प्रमुच्येत पातकानां समूहतः । अस्या व्रतप्रभावेण सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ८ अतस्तु कारणाद्राम कर्तव्यैषा भवादृशैः ॥ पातकानां क्षयकरी महादुःखविनाशिनी ९ शृणुष्वैकमना राम कथां पुण्यप्रदां शुभाम् । अस्याः श्रवणमात्रेण महापापं प्रणश्यति १० सरस्वत्यास्तटे रम्ये पुरी भद्रावती शुभा । द्युतिमान्नाम नृपतिस्तत्र राज्यं करोति वै ११ सोमवंशोद्भवो राम धृतिमान्सत्यसंगरः । तत्र वैश्यो निवसति धनधान्यसमृद्धिमान् १२ धनपाल इति ख्यातः पुण्यकर्मप्रवर्तकः । प्रपासत्राद्यायतनतडागारामकारकः १३ विष्णुभक्तिपरः शांतस्तस्यासन्पंच पुत्रकाः । सुमना द्युतिमांश्चैव मेधावी सुकृती तथा १४ पंचमो धृष्टबुद्धिश्च महापापरतः सदा । वारस्त्रीसंगनिरतो विटगोष्ठीविशारदः १५ द्यूतादिव्यसनासक्तः परस्त्रीरतिलालसः । न देवान्नातिथीन्वृद्धान् पितॄंश्चैव द्विजानपि १६ अन्यायकर्ता दुष्टात्मा पितुर्द्रव्यक्षयंकरः । अभक्ष्यभक्षकः पापः सुरापानरतः सदा १७ वेश्याकंठक्षिप्तबाहुर्भ्रमद्दृष्टिश्चतुष्पथे । पित्रा निष्कासितो गेहात्परित्यक्तश्च बांधवैः १८ स्वदेहभूषणान्येव क्षयं नीतानि तेन वै । गणिकाभिः परित्यक्तो निंदितश्च धनक्षयात् १९ ततश्चिंतापरो जातो वस्त्रहीनः क्षुधार्दितः । किं करोमि क्व गच्छामि केनोपायेन जीव्यते २० तस्करत्वं समारब्धं तत्रैव नगरे पुनः । गृहीतो राजपुरुषैर्मुक्तश्च पितृगौरवात् २१ पुनर्बद्धः पुनर्मुक्तः पुनर्मुक्तः ससंभ्रमैः । धृष्टबुद्धिर्दुराचारो निबद्धो निगडैर्दृढैः २२ कशाघातैस्ताडितश्च पीडितश्च पुनःपुनः । न स्थातव्यं हि मंदात्मंस्त्वया मद्देश-

१ अत्र, द्वादशीशब्देन एकादशी ग्राह्या ।

गोचरे २३ एवमुक्त्वा ततो राज्ञा मोचितो दृढबंधनात् । निर्जगाम भयात्तस्य गतोऽसौ गहनं वनम् २४ क्षुत्तृषापीडितश्चायमितश्चेतश्च
धावति । सिंहवन्निजघानासौ मृगसूकरचित्तलान् २५ आमिषाहारनिरतो वने तिष्ठति सर्वदा । करे शरासनं कृत्वा निषंगं पृष्ठसंगतम्
२६ अरण्यचारिणो हंति पक्षिणश्च चतुष्पदान् । चकोरांश्च मयूरांश्च कंकांस्तित्तिरमूषकान् २७ एतानन्यान्हंति नित्यं धृष्टबुद्धिर्गतघृणः ।
पूर्वजन्मकृतैः पापैर्निमग्नः पापकर्दमे २८ दुःखशोकसमाविष्टश्चिंतयत्सोप्यहर्निशम् । कौंडिन्यस्याश्रमपदं प्राप्तः पुण्यवशात्क्वचित् २९
माधवे मासि जाह्नव्यां कृतस्नानं तपोधनम् । आससाद धृष्टबुद्धिः शोकभारेण पीडितः ३० तद्वस्त्रबिंदुस्पर्शेन गतपाप्मा हताशुभः । कौं
डिन्यस्याग्रतः स्थित्वा प्रत्युवाच कृतांजलिः ३१ धृष्टबुद्धिरुवाच । प्रायश्चित्तं वद ब्रह्मन्विना यत्नेन यद्भवेत् । आजन्मकृतपापस्य ना
स्ति वित्तं ममाधुना ३२ ऋषिरुवाच । शृणुष्वैकमना भूत्वा येन पापक्षयस्तव । वैशाखस्य सिते पक्षे मोहिनी नाम नामतः ३३ एकादशीव्रतं
तस्याः कुरु मद्वाक्यनोदितः । मेरुतुल्यानि पापानि क्षयं नयति देहिनाम् ३४ बहुजन्मार्जितान्येषा मोहिनी समुपोषिता । इति वाक्यं मुनेः
श्रुत्वा धृष्टबुद्धिर्हसन्हृदि ३५ व्रतं चकार विधिवत्कौंडिन्यस्योपदेशतः । कृते व्रते नृपश्रेष्ठ हतपापो बभूव सः ३६ दिव्यदेहस्ततो भूत्वा गरु
डोपरि संस्थितः । जगाम वैष्णवं लोकं सर्वोपद्रववर्जितम् ३७ इतीदृशं रामचंद्र तमोमोहनिकृंतनम् । नातःपरतरं किंचित्त्रैलोक्ये
सचराचरे ३८ यज्ञादितीर्थदानानि कलां नार्हंति षोडशीम् । पठनाच्छ्रवणाद्राजन्गोसहस्रफलं लभेत् ३९ ॥ इति श्रीकूर्मपु० वैशाखशु
क्लमोहिन्येकादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ॥ अथ ज्येष्ठकृष्णापरानामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । ज्येष्ठस्य कृष्णपक्षे तु किंनामैका
दशी भवेत् । श्रोतुमिच्छामि माहात्म्यं तद्वदस्व जनार्दन १ श्रीकृष्ण उवाच । साधु पृष्टं त्वया राजँल्लोकानां हितकाम्यया । बहुपुण्यप्रदा

ह्येषा महापातकनाशिनी २ अपरा नाम राजेंद्र अपारफलदायिनी । लोके प्रसिद्धतां याति अपरां यस्तु सेवते ३ महिमानं चापरायाः
शृणु राजन्वदाम्यहम् । ब्रह्महत्याऽभिभूतोऽपि गोत्रहा भ्रूणहा तथा ४ परापवादवादी च परस्त्रीरसिकोपि च । अपरासेवनाद्राजन्विपा-
प्मा भवति ध्रुवम् ५ कूटसाक्ष्यं मानकूटं तुलाकूटं करोति यः । कूटवेदं पठेद्विप्रः कूटशास्त्रं करोति च ६ ज्योतिषी कूटगणकः कूटायु-
र्वेदको भिषक् । कूटसाक्षिसमा ह्येते विज्ञेया नरकौकसः ७ अपरासेवनाद्राजन्पापमुक्ता भवंति ते । क्षत्रियः क्षात्रधर्मं यस्त्यक्त्वा युद्धा-
त्पलायते ८ स याति नरकं घोरं स्वीयधर्मबहिष्कृतः । अपरासेवनाद्राजन्पापं त्यक्त्वा दिवं व्रजेत् ९ विद्यामधीत्य यः शिष्यो गुरुनिंदां
करोति च । महापातकयुक्तोपि निरयं याति दारुणम् १० अपरासेवनात्सोपि सद्गतिं प्राप्नुयान्नरः । पुष्करत्रितये स्नात्वा कार्तिक्यां यत्फ-
लं लभेत् ११ गंगायां पिंडदानेन पितॄणां तृप्तिदो यथा । सिंहस्थिते देवगुरौ गौतमीस्नातको नरः १२ यत्फलं समवाप्नोति कुंभे केदा-
रदर्शनात् । बदर्याश्रमयात्रायां तत्तीर्थसेवनादपि १३ यत्फलं समवाप्नोति कुरुक्षेत्रे रविग्रहे । गजाश्वहेमदानानि यज्ञे कृत्स्नसुवर्णदः १४
यत्फलं समवाप्नोति ह्यपराया व्रतं नरः । अर्धप्रसूतां गां दत्त्वा सुवर्णं वसुधां तथा १५ नरस्तत्फलमाप्नोति ह्यपराव्रतसेवनात् । पाप-
द्रुमकुठारोऽयं पापेंधनदवानलः ॥ पापांधकारसूर्योऽयं पापसारंगकेसरी १६ बुद्बुदा इव तोयेषु पुत्तिका इव जंतुषु । जायंते मरणायैव
एकादश्या व्रतं विना १७ अपरां समुपोष्यैव पूजयित्वा त्रिविक्रमम् । सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं व्रजेन्नरः १८ लोकानां च हितार्था-
य तवाग्रे कथितं मया । पठनाच्छ्रवणाद्राजन् सर्वपापैः प्रमुच्यते १९ ॥ इति श्रीब्रह्मांडपु० ज्येष्ठकृष्णैकादश्या अपरानाम्न्या माहात्म्यं
समाप्तम् ॥ ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लनिर्जलैकादशीकथा ॥ भीमसेन उवाच । पितामह महाबुद्धे शृणु मे परमं वचः । युधिष्ठिरश्च कुंती च

ऽथ पुरुषस्य ५। । ५। .

तथा द्रुपदनंदिनी १ अर्जुनो नकुलश्चैव सहदेवस्तथैव च । एकादश्यां न भुंजति कदाचिदपि सुव्रत २ ते मां ब्रुवति वै नित्य मा भु
क्ष्व त्वं वृकोदर । अहं तानब्रुवंस्तात बुभुक्षा दु:सहा मम ३ दानं] दास्यामि विधिवत्पूजयिष्यामि केशवम् । विनोपवास लभ्येत क
थमेकादशीव्रतम् ४ भीमसेनवचः श्रुत्वा व्यासो वचनमब्रवीत् ५ व्यास उवाच । यदि स्वर्गो ऽत्यभीष्टस्ते नरको दुष्ट एव च । एका
दश्यां न भोक्तव्यं पक्षयोरुभयोरपि ६ भीमसेन उवाच । पितामह महाबुद्धे कथयामि तवाग्रतः । एकभुक्ते न शक्तोऽहमुपवासः कथ
मुने ७ वृको नामापि यो वह्निः स सदा जठरे मम । अतीवार्थं यदा ऽश्नामि तदा समुपशाम्यति ८ एक शक्तोऽस्म्यहं कर्तुं चोपवास
महामुने । येनैव प्राप्यते स्वर्गस्तत्करोमि यथातथम् ॥ तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ९ व्यास उवाच । श्रुत्वा मे मानवा धर्मा
वैदिकाश्च श्रुतास्त्वया । कलौ युगे न शक्यंते ते वै कर्तुं नराधिप १० सुखोपायं चाल्पधनमल्पक्लेशं महाफलम् । पुराणानां च सर्वेषां
सारभूतं वदामि ते ११ एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि । एकादश्यां न भुंक्ते यो न याति नरकं तु सः १२ व्यासस्य वचनं श्रुत्वा
कंपितो ऽश्वत्थपत्रवत् । भीमसेनो महाबाहुर्भीतो वाक्यमभाषत १३ भीमसेन उवाच । पितामह न शक्तोऽहमुपवासे करोमि किम् ॥ ततो
बहुफलं ब्रूहि व्रतमेकं मम प्रभो १४ व्यास उवाच । वृषस्थे मिथुनस्थे वा शुक्ला ह्येकादशी भवेत् । ज्येष्ठमासे प्रयत्नेन सोपोष्या,जलवर्जि
ता १५ स्नाने चाचमने चैव वर्जयित्वोदकं बुधः । माषमात्रसुवर्णस्य यत्र मज्जति वै मणि १६ एतदाचमनं प्रोक्तं पवित्रं कायशोधनम् ।
गोकर्णाकृतहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत् १७ तन्न्यूनमधिकं पीत्वा सुरापानसमं भवेत् । उपयुंजीत नैवान्यं व्रतभंगो ऽन्यथा भवेत् १८

१ मम यथैतस्मेन मया बीभत्सम् । २ मम एवाशिरपष्याहारः ।

उदयादुदयं यावद्वर्जयित्वा तथोदकम् । अप्रयत्नादवाप्नोति द्वादशद्वादशीफलम् १९ प्रभाते विमले जाते द्वादश्यां स्नानमाचरेत् । जलं सुवर्णं दत्त्वा च द्विजातिभ्यो यथाविधि २० भुंजीत कृतकृत्यस्तु ब्राह्मणैः सहितो वशी । एवं कृते तु यत्पुण्यं भीमसेन शृणुष्व तत् २१ संवत्सरस्य या मध्ये एकादश्यो भवंति वै । तासां फलमवाप्नोति ह्यत्र मे नास्ति संशयः २२ इति मां केशवः प्राह शंखचक्रगदाधरः । सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज २३ एकादश्यां निराहारान्नरः पापात्प्रमुच्यते । द्रव्यशुद्धिः कलौ नास्ति संस्कारः स्मार्त एव च २४ वैदिकश्च कुतश्चास्ते प्राप्ते दुष्टे कलौ युगे । किं तु ते बहुनोक्तेन वायुपुत्र पुनःपुनः २५ एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि । एकादश्यां सिते पक्षे ज्येष्ठस्योदकवर्जितम् २६ उपोष्यफलमाप्नोति तच्छृणुष्व वृकोदर । सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वदानेषु यत्फलम् २७ तत्फलं समवाप्नोति इमां कृत्वा वृकोदर । संवत्सरेण याश्च स्युः शुक्लाः कृष्णा वृकोदर २८ उपोषितास्ताः सर्वाः स्युरेकादश्यो न संशयः । धनधान्यवहायुर्दाः पुत्रारोग्यफलप्रदाः २९ उपोषिता नरव्याघ्र इति सत्यं वदामि ते । यमदूता महाकायाः करालाः कृष्णपिंगलाः ३० दंडपाशधरा रौद्रा नोपसर्पंति तं नरम् । पीतांबरधरा सौम्याश्चक्रहस्ता मनोजवाः ३१ अंतकाले नयंत्येव मानवं वैष्णवीं पुरीम् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सोपोष्योदकवर्जिता ३२ जलधेनुं ततो दत्त्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते । इति श्रुत्वा तदा चक्रुः पांडवा जनमेजय ३३ तथा त्वमपि भूपाल सोपवासार्चनं हरेः । कुरु त्वं च प्रयत्नेन सर्वपापप्रशांतये ३४ करिष्याम्यद्य देवेश जलवर्जमुपोषणम् । भोक्ष्ये ऽपरेऽह्नि देवेश ह्यन्नं वा तव वासरात् ३५ इत्युच्चार्य ततो मंत्रमुपवासपरो भवेत् । सर्वपापविनाशाय श्रद्धादमसमन्वितः ३६ मेरुमंदरमानं तु स्त्रियोऽथ पुरुषस्य वा । सर्वं तद्भस्मतां यातु एकादश्याः प्रभावतः ३७ सकांचनः प्रदातव्यो घटो वस्त्रेण संवृतः । तोयस्य नियमं तस्यां कुरुते

वे स पुण्यभाक् ३८ पलकोटिसुवर्णस्य यामे यामे ऽश्नुते फलम् । स्नानं दानं जप होम यदस्यां कुरुते नरः ३९ तत्सर्वं चाक्षय प्रोक्तमे
तत्कृष्णस्य भाषितम् । किं वा परेण धर्मेण निर्जलैकादशी नृप ४० उपोषिता च विधिवद्वैष्णवं पदमाप्नुयात् । सुवर्णमन्न वासांसि यद
स्यां सम्प्रदीयते ४१ तस्यैव च कुरुश्रेष्ठ सर्वं चाप्यक्षय भवेत् । एकादशीदिने योऽन्नं भुंक्ते पापं भुनक्ति स ४२ इहलोके स चांडालो मृत
प्राप्नोति दुर्गतिम् । ये प्रदास्यंति दानानि द्वादशीं समुपोष्य च ४३ ज्येष्ठमासि सिते पक्षे प्राप्स्यंति परमं पदम् । ब्रह्महा मद्यप स्तेनो गुरुद्वे
ष्टा सदाऽनृती ४४ मुच्यते पातकैः सर्वैर्द्वादशी यैरुपोषिता । विशेष शृणु कौंतेय निर्जलैकादशीदिने ४५ यत्कर्तव्यं नरैः स्त्रीभिः श्रद्धादमसम-
न्वितैः । जलशायी तु सम्पूज्यो देया धेनुश्च तन्मयी ४६ प्रत्यक्षं वा नृपश्रेष्ठ घृतधेनुमथापि वा । दक्षिणाभिश्च श्रेष्ठाभिर्मिष्टान्नैश्च पृथग्विधैः ४७
तोषणीया प्रयत्नेन द्विजा धर्मभृतांवर । तुष्टो भवति वै क्षिप्रं तैस्तुष्टैर्मोक्षदो हरिः ४८ आत्मद्रोहः कृतस्तैस्तु यैर्नैषा समुपोषिता । पापात्मानो
दुराचारा दुष्टास्ते नात्र संशयः ४९ कुलानां च शतं साग्रमनाचाररतं सदा । आत्मना सह सन्नीत वासुदेवस्य मंदिरम् ५० शांतैर्दांनप
रैश्चैव ह्यर्चयद्भिश्च तथा हरिम् । कुर्वद्भिर्जागरं रात्रौ यैर्नरैः समुपोषिता ५१ अन्नं पानं तथा गावो वस्त्रं शय्यासनं शुभम् । कमण्डलुस्तथा
छत्रं दातव्यं निर्जलादिने ५२ उपानहौ च यो दद्यात्पात्रभूते द्विजोत्तमे । स सौवर्णेन यानेन स्वर्गलोके व्रजेद्ध्रुवम् ५३ यश्चेमां शृणुया
द्भक्त्या यश्चापि परिकीर्तयेत् । उभौ तौ स्वर्गतौ स्यातां नात्र कार्या विचारणा ५४ यत्फलं तु सिनीवाल्यां राहुग्रस्ते दिवाकरे । कृत्वा
श्राद्धं लभेन्मर्त्यस्तदस्याः श्रवणादपि ५५ नियमं च प्रकुर्वीत दंतधावनपूर्वकम् । एकादश्यां निराहारो वर्जयिष्यामि वै जलम् ५६ केश
वप्रीणनार्थाय अन्यदाचमनादृते । द्वादश्यां देवदेवेशः पूजनीयस्त्रिविक्रमः ५७ गंधपुष्पैस्तथा दीपैर्धूपैरिभिः प्रीणयेद्धरिम् । पूजयित्वा वि

धानेन मंत्रमेतमुदीरयेत् ५८ देवदेव हृषीकेश संसारार्णवतारक । उदकुंभप्रदानेन नय मां परमां गतिम् ५९ ततः कुंभाः प्रदातव्या ब्राह्मणेभ्यः स्वशक्तितः । सान्ना वस्त्रयुता भीम छत्रोपानत्फलान्विताः ६० दानान्यन्यानि देयानि जलधेनुर्विशेषतः । भोजयित्वा ततो विप्रान्स्वयं भुंजीत वाग्यतः ६१ एवं यः कुरुते पूर्णां द्वादशी पापनाशिनीम् । सर्वपापविनिर्मुक्तः पदं गच्छत्यनामयम् ६२ ततःप्रभृति भीमेन कृता ह्येकादशी शुभा । पांडवद्वादशीनाम्ना लोके ख्याता बभूव ह ६३ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपु० ज्येष्ठशुक्लनिर्जलैकादशीमाहात्म्यं स० ॥ ॥ अथाषाढकृष्णयोगिन्याख्यैकादशीकथा ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच । ज्येष्ठशुक्ले निर्जलाया माहात्म्यं वै श्रुतं मया । आषाढकृष्णपक्षे तु किं नामैकादशी भवेत् । कथयस्व प्रसादेन ममाग्रे मधुसूदन १ श्रीकृष्ण उवाच । व्रतानामुत्तमं; राजन् कथयामि तवाग्रतः । सर्वपापक्षयकरं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् २ आषाढस्यासिते पक्षे योगिनी नाम नामतः ३ एकादशी नृपश्रेष्ठ महापातकनाशिनी । संसारार्णवमग्नानां पोतरूपा सनातनी ४ जगत्त्रये सारभूता योगिनीति नराधिप । कथयामि कथां तस्याः पौराणीं पापहारिणीम् ५ अलकाधिपतिर्नाम्ना कुबेरः शिवपूजकः । तस्यासीत्पुष्पवटुको हेममालीति नामतः ६ तस्य पत्नी सुरूपा च विशालाक्षीति नामतः-। स तस्या स्नेहसंयुक्तः कामपाशवशंगतः ७ मानसात्पुष्पनिचयमानीय स्वगृहे स्थितः । पत्नीप्रेमसमायुक्तो न कुबेरालयं गतः ८ कुबेरो देवसदने करोति शिवपूजनम् । मध्याह्नसमये राजन्पुष्पाणि प्रसमीक्षते ९ हेममाली स्वभवने रमते कांतया सह । यक्षराट् प्रत्युवाचाथ कालातिक्रमकोपितः १० कस्मान्नायाति भो यक्षो हेममाली दुरात्मवान् । निश्चयः क्रियतामस्य प्रत्युवाच पुनःपुनः ११ यक्षा ऊचुः । वनिताकामुको गेहे रमते स्वच्छया नृप । तेषां वाक्यं समाकर्ण्य कुबेरः कोपपूरितः १२ आह्वयामास तं तूर्णं बटुकं हेममालिनम् । ज्ञात्वा का-

लास्यर्थं सोऽपि मयव्याकुललोचनः १३ आजगाम नमस्कृत्य कुबेरस्याग्रतः स्थितः । तं दृष्ट्वा धनदः क्रुद्धः कोपसंरक्तलोचनः १४ प्रत्यु-
वाच रुषाविष्टः कोपाद्विस्फुरिताधरः ॥ धनद उवाच । रे पाप दुष्ट दुर्वृत्त कृतवान्देवहेलनम् १५ अतो मम श्वित्रयुक्तो वियुक्त कांतया
सदा । अस्मात्स्थानादपध्वस्तो गच्छ स्थानमयाधमम् १६ इत्युक्ते वचने तेन तस्मात्स्थानात्पपात सः । महादुःखाभिभूतश्च कुष्ठपीडि-
तविग्रहः १७ न वै तोयं न भक्ष्यं च वने रौद्रे लभत्यसौ । न सुखं दिवसे तस्य न निद्रां लभते निशि १८ छायायां पीडिततनुर्निदाघे
ऽत्यंतपीडितः । शिवपूजाप्रभावेण स्मृतिस्तस्य न लुप्यते १९ पातकेनाभिभूतोऽपि कर्म पूर्वमनुस्मरन् । भ्रममाणस्ततो गच्छन्हिमाद्रिं पर्व-
तोत्तमम् २० तत्रापश्यन्मुनिवरं मार्कंडेयं तपोनिधिम् । यस्यायुर्विद्यते राजन्ब्रह्मणो दिनसप्तकम् २१ आश्रमं स गतस्तस्य ब्रह्मर्षेर्ब्रह्मस-
दःसमम् । ववंदे चरणौ तस्य दूरतः पापकर्मकृत् २२ मार्कंडेयो मुनिवरो दृष्ट्वा तं कुष्ठिनं तदा । परोपकरणार्थाय समाहूयेदमब्रवीत् २३
मार्कंडेय उवाच । कस्मात्कुष्ठाभिभूतस्त्वं कुतो निंद्यतरो ह्यसि । इत्युक्तः प्रत्युवाचाथ मार्कंडेयेन धीमता २४ हेममाल्युवाच । यक्षराज-
स्यानुचरो हेममालीति नामतः । मानसात्पुष्पनिचयमानीय प्रत्यहं मुने २५ शिवपूजनवेलायां कुबेराय समर्पये । एकस्मिन्दिवसे का-
ललोपश्च विहितो मया २६ पत्नीसौख्यप्रसक्तेन कामव्याकुलचेतसा । ततः क्रुद्धेन शप्तो ऽहं राजराजेन वै मुने २७ कुष्ठाभिभूतः संजातो
विमुक्तः कांतया सह । अधुना तव सान्निध्यं प्राप्तो ऽस्मि शुभकर्मणा २८ सतां स्वभावतश्चित्तं परोपकरणक्षमम् । इति ज्ञात्वा मुनिश्रेष्ठ
शाधि मां च कृतैनसम् २९ मार्कंडेय उवाच । त्वया सत्यमिह प्रोक्तं नासत्यं भाषितं यतः । अतो व्रतोपदेशं ते करिष्यामि शुभप्रदम् ३०
आषाढे कृष्णपक्षे त्वं योगिनीव्रतमाचर । अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठात्त्वं मुच्यसे ध्रुवम् ३१ इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा दंडवत्पतितो

भुवि । उत्थापितश्च मुनिना बभूवातीव हर्षितः ३२ मार्कंडेयोपदेशेन कृतं तेन व्रतोत्तमम् । तद्व्रतस्य प्रभावेण देवरूपो बभूव सः ३३
संयोगं कांतया लेभे बुभुजे सौख्यमुत्तमम् । ईदृग्विधं नृपश्रेष्ठ कथितं योगिनीव्रतम् ३४ अष्टाशीति सहस्राणि द्विजान्भोजयते तु यः ।
तत्फलं समवाप्नोति योगिनीव्रतकृन्नरः ३५ महापापप्रशमनी महापुण्यफलप्रदा । शुचौ कृष्णैकादशी च कथिता योगिनी नृप ३६॥ इति
श्रीब्रह्मवैवर्तपु० आषाढकृष्णैकादश्या योगिनीनाम्न्या माहात्म्यं समाप्तम् ॥ ॥ अथाषाढशुक्लपद्मानामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥
आषाढस्य सिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् । को देवः को विधिस्तस्या एतदाख्याहि केशव १ श्रीकृष्ण उवाच । कथयामि महीपाल
कथामाश्चर्यकारिणीम् । कथयामास यां ब्रह्मा नारदाय महात्मने २ नारद उवाच । कथयस्व प्रसादेन विष्णोराराधनाय मे । आषाढशुक्ल-
पक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ३ ब्रह्मोवाच । वैष्णवो ऽसि मुनिश्रेष्ठ साधु पृष्टं कलिप्रिय । नातःपरतरं लोके पवित्रं हरिवासरात् ४ क-
र्तव्यं तु प्रयत्नेन सर्वपापापनुत्तये । तस्मात्तेऽहं प्रवक्ष्यामि शुक्ल एकादशीव्रतम् ५ एकादश्या व्रतं पुण्यं पापघ्नं सर्वकामदम् । न कृतं यैर्न-
रैर्लोके ते नरा निरयैषिणः ६ पद्मानामेति विख्याता शुचौ ह्येकादशी सिता । हृषीकेशप्रीतये तु कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् ७ कथयामि तवाग्रेऽहं
कथां पौराणिकीं शुभाम् । यस्याः श्रवणमात्रेण महापापं प्रणश्यति ८ मांधाता नाम राजर्षिर्विवस्वद्वंशसंभवः । बभूव चक्रवर्ती स सत्यसंधः
प्रतापवान् ९ धर्मतः पालयामास प्रजाः पुत्रानिवौरसान् । न तस्य राज्ये दुर्भिक्षं नाधयो व्याधयस्तथा १० निरातंकाः प्रजास्तस्य धनधान्य-
समन्विताः । नान्यायोपार्जितं द्रव्यं कोशे तस्य महीपतेः ११ तस्यैवं कुर्वतो राज्यं बहुवर्षगणो गतः । अथो कदाचित्संप्राप्ते विपाके
पापकर्मणः १२ वर्षत्रयं तद्विषये न ववर्ष बलाहकः । तेनोद्विग्नाः प्रजास्तत्र बभूवुः क्षुधयार्दिताः १३ स्वाहास्वधावषट्कारवेदाध्ययनव-

जिताः । बभूवुर्विषयास्तस्य सस्याभावेन पीडिताः १४ अथ प्रजाः समागत्य राजानमिदमब्रुवन् । श्रूयतां वचनं राजन् प्रजानां हितकारणम् १५ आपो नारा इति प्रोक्ताः पुराणेषु मनीषिभिः । अयनं ता भगवतस्तेन नारायणः स्मृत १६ पर्जन्यरूपी भगवान्विष्णुः सर्वगत सदा । स एव कुरुते वृष्टिं वृष्टेरन्न ततः प्रजाः १७ तदभावेन नृपते क्षय गच्छति वै प्रजाः । तथा कुरु नृपश्रेष्ठ योगक्षेमो यथा भवेत् १८ राजोवाच । सत्यमुक्तं च भवता न मिथ्याऽभिहित वचः । अन्न ब्रह्ममय प्रोक्तमन्ने सर्वं प्रतिष्ठितम् १९ अन्नाद्भवंति भूतानि जगदन्नेन वर्तते । इत्येवं भूयते लोके पुराणे बहुविस्तरे २० नृपाणामपचारेण प्रजानां पीडन भवेत् । नाहं पश्याम्यात्मकृत दोषं बुद्ध्याविचारयन् २१ तथापि प्रयतिष्यामि प्रजानां हितकाम्यया । इति कृत्वा मतिं राजा परिमेयबलान्वित २२ नमस्कृत्य विधातारं जगाम गहन वनम् । चचार मुनिमुख्यानामाश्रमास्तपसैधितान् २३ ददर्शाथ ब्रह्मसुतमृषिमंगिरसं नृपः । तेजसाऽद्योतितदिश द्वितीयमिव पद्मजम् २४ तं दृष्ट्वा हर्षितो राजा अवतीर्य च वाहनात् । नमश्चक्रेऽस्य चरणौ कृतांजलिपुटो वशी २५ मुनिस्तमभिनन्द्याथ स्वस्तिवाचनपूर्वकम् । पप्रच्छ कुशलं राज्ये सप्तस्वंगेषु भूपतेः २६ निवेदयित्वा कुशलं पप्रच्छानामयं नृपः । ततश्च मुनिना राजा पृष्टो गमनकारणम् २७ अब्रवीन्मुनिशार्दूलं स्वस्यागमनकारणम् ॥ राजोवाच । भगवन्धर्मविधिना मम पालयतो महीम् । अनावृष्टिः संप्रवृत्ता नाहं वेद्म्यत्र कारणम् २८ संशयच्छेदनार्थेऽत्र आगतोऽहं तवांतिकम् । योगक्षेमविधानेन प्रजानां निर्वृतिं कुरु २९ ऋषिरुवाच । एतत्कृतयुगं राजन्युगानामुत्तमं स्मृतम् । अत्र ब्रह्मोत्तरा लोका धर्मश्चात्र चतुष्पदः ३० अस्मिन्युगे तपोयुक्ता ब्राह्मणा नेतरे जनाः । विषये तव राजेंद्र वृषलो यत्तपस्यति ३१ अकार्यकरणात्तस्य न वर्षंति बलाहकाः । कुरु तस्य वधे यत्नं येन दोषः प्रशाम्यति ३२ राजो

वाच । नाहमेनं वधिष्यामि तपस्यंतमनागसम् । धर्मोपदेशं कथय उपसर्गविनाशने ३३ ऋषिरुवाच । यद्येवं तर्हि नृपते कुरुष्वैकादशीव्रतम् । शुचिमासे सिते पक्षे पद्मानामेति विश्रुता ३४ तस्या व्रतप्रभावेण सुवृष्टिर्भविता ध्रुवम् । सर्वसिद्धिप्रदा ह्येषा सर्वोपद्रवनाशिनी ३५ अस्या व्रतं कुरु नृप सप्रजः सपरिच्छदः । इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा राजा स्वगृहमागतः ३६ आषाढमासे संप्राप्ते पद्माव्रतमथाकरोत् । प्रजाभिः सह सर्वाभिश्चातुर्वर्ण्यसमन्वितः ३७ एवं कृते व्रते राजन्प्रववर्ष बलाहकः । जलेन प्लाविता भूमिरभवत्सस्यमालिनी ३८ हृषीकेशप्रसादेन जनाः सौख्यं प्रपेदिरे । एतस्मात्कारणादेव कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् ३९ भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव लोकानां सुखदायकम् । पठनाच्छ्रवणादस्याः सर्वपापैः प्रमुच्यते ४० ॥ इति पद्माख्यैकादशी ॥ ॥ इयमेव शयनीनाम्न्येकादशी ॥ इयमेकादशी राजन् शयनीत्यभिधीयते । विष्णोः प्रसादसिद्ध्यर्थमस्यां च शयनव्रतम् १ कर्तव्यं राजशार्दूल जनैर्मोक्षेच्छुभिःसदा । चातुर्मास्यव्रतारंभोऽप्यस्यामेव विधीयते २ युधिष्ठिर उवाच । कथं कृष्ण प्रकर्तव्यं श्रीविष्णोः शयनव्रतम् । तद्ब्रूहि कृपया देव चातुर्मास्यव्रतानि च ३ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु पार्थ प्रवक्ष्यामि गोविंदशयनव्रतम् । चातुर्मास्ये च यान्युक्तान्यासंस्तानि व्रतानि च ४ कर्कराशिगते सूर्ये शुचौ शुक्ले तु पक्षके । एकादश्यां जगन्नाथं स्वापयेन्मधुसूदनम् ५ तुलाराशिस्थिते तस्मिन्पुनरुत्थापयेद्धरिम् । अधिमासेऽपि पतिते एष एव विधिः क्रमात् ६ नान्यथा स्वापयेद्देवं तथैवोत्थापयेद्धरिम् । आषाढस्य सिते पक्षे एकादश्यामुपोषितः ७ चातुर्मास्यव्रतानां तु कुर्वीत परिकल्पनम् ८ स्नापयेत्प्रतिमां विष्णोः शंखचक्रगदाधराम् । पीतांबरधरां सौम्यां पर्यंके वै सिते शुभे ॥ सितवस्त्रसमाच्छन्ने सोपधाने युधिष्ठिर ९ इतिहासपुराणज्ञो ब्राह्मणो वेदपारगः । स्नापयित्वा दधिक्षीरघृतक्षौद्रसितादिभिः १० समालेप्य शुभैर्गंधैर्धूपैर्दीपैश्च भूरिशः । पूजयेत्कुसुमैः

शरतेर्मंत्रेणानेन पाण्डव ११ शायिनस्त्व हृषीकेश पूजयित्वा श्रिया सह ॥ प्रसादं कुरु देवेश लक्ष्म्या सह जनार्दन ॥ सुप्ते त्वयि जग-
न्नाथे जगत्सुप्तं चराचरम् १२ एवं तां प्रतिमां विष्णोः स्थापयित्वा युधिष्ठिर । तस्या एवाग्रतः स्थित्वा गृह्णीयान्नियमान्नर १३ (प्रातः
संध्यादिकं सर्वं नित्यकर्म समाप्य च)॥ चतुरो वार्षिकान्मासान्देवस्योत्थापनावधि । ग्रहीष्ये नियमान् शुद्धान्निर्विघ्नान्कुरु मे प्रभो १४
इति संप्रार्थ्य देवेशं प्रहृः सशुद्धमानसः । स्त्री वा नरो वा मद्भक्तो धर्मार्थं च धृतव्रतः १५ गृह्णीयान्नियमानेतान् दंतधावनपूर्वकम् । व्र
तप्रारम्भकालास्तु प्रोक्ताः पंचैव विष्णुना १६ उपक्रमं चतुर्मासव्रतानां च नरः शुची । एकादशी द्वादशी च पौर्णिमा च तथाष्टमी १७
कर्कटा चैव संक्रांतिस्तेषु कुर्याद्यथाविधि । चतुर्धा गृह्य वै चीर्णं चातुर्मास्यव्रतं नरः १८ कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तत्समापयेत् ।
तेषां फलानि वक्ष्यामि कर्मणां ते पृथक्पृथक् १९ आषाढे शुक्लपक्षे तु एकादश्यामुपोषितः । चातुर्मास्यव्रतं कुर्याद्यत्किञ्चिदवनीपते २०
नान्यथा चान्दकं पापं विनिर्हंति प्रयत्नतः । न शैशवं च मौढ्यं च शुक्रगुर्वोर्न वार्द्धकम् २१ संक्रान्त्यै चिंतयेदादौ चातुर्मास्यविधौ नरः ।
सर्वांगव्यापिमार्तंडो यथसद्दा भवेत्तिथिः २२ अशुचिर्वा शुचिर्वापि यदि स्त्री यदि वा पुमान् । व्रतमेकं नरः कृत्वा मुच्यते सर्वपातकैः
२३ असंक्रांतं तथा मासं दैवे पित्र्ये च कर्मणि । मलरूपमशोच च वर्जयेन्मतिमान्नर २४ प्रतिवर्षं तु यः कुर्याद्व्रतं वै संस्मरन्हरिम् । दे-
हांते प्रतिप्रदीप्तेन विमानेनार्कतेजसा २५ मोदते विष्णुलोके ऽसौ यावदाभूतसंप्लवम् । देवतायतने नित्यं मार्जनं जलसेचनम् २६ प्रलेप
नं गोमयेन रंगवल्यादिकं तथा । यः करोति नरश्रेष्ठ चातुर्मास्यमतंद्रितः २७ समाप्तौ च यथाशक्त्या कृत्वा ब्राह्मणभोजनम् । सप्तजन्म
स विप्रेंद्र सत्यधर्मपरो भवेत् २८ दध्ना क्षीरेण चाज्येन क्षौद्रेण सितया तथा । स्नापयेद्विधिना देवं चातुर्मास्ये जनाधिप २९ स याति

विष्णुसारूप्यं सुखमक्षय्यमश्नुते । नृपेण भूमिर्दातव्या यथाशक्त्या च कांचनम् ३० विप्राय देवमुद्दिश्य सफलं च सदक्षिणम् । अक्षय्याँल्लभते भोगान्स्वर्गे इंद्र इवापरः ३१ लोकं च समवाप्नोति विष्णोरत्र न संशयः । देवाय हेमपद्मं तु दद्यान्नैवेद्यसंयुतम् ३२ गंधपुष्पाक्षताद्यैर्यो देवब्राह्मणयोरपि । पूजां यः कुरुते नित्यं चातुर्मास्ये व्रती नरः ३३ अक्षयं सुखमाप्नोति पुरंदरपुरं व्रजेत् । यस्तु वै चतुरो मासांस्तुलस्या हरिमर्चयेत् ३४ तुलसीं कांचनीं कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् । कांचनेन विमानेन वैष्णवीं लभते गतिम् ३५ देवाय गुग्गुलं यो वै दीपं चार्पयते नरः । स भोगी जायते श्रीमांस्तथा सौभाग्यवानपि ३६ समाप्तौ भूमिकां दद्याद्दीपिकां च महामते । प्रदक्षिणां तु यः कुर्यान्नमस्कारं विशेषतः ३७ अश्वत्थस्याथवा विष्णोः कार्तिक्यामवधिर्भवेत् । पादं पादांतरे न्यस्य करौ कृत्वा च संयुतौ ३८ स्तुतिं वाचि हृदि ज्ञानं चतुरंगा प्रदक्षिणा । संध्यादीपप्रदो यस्तु प्रांगणे द्विजदेवयोः ३९ समाप्तौ दीपिकां दद्याद्वस्त्रं चैकं च कांचनम् । वायुमाल्लभते यस्तु तेजस्वी स भवेदिह ४० वैमानिको भवेद्देहो गंधर्वाप्सरसेवितः । विष्णुपादोदकं यस्तु पिबेच्छ्रद्धासमन्वितः ४१ विष्णोर्लोकमवाप्नोति न चास्मिन् जायते नरः । शतमष्टोत्तरं यस्तु गायत्रीजपमाचरेत् ४२ त्रिकालं वैष्णवे हर्म्ये न स पापेन लिप्यते । अक्षसूत्रं पुस्तकं च धत्ते पद्मं कमंडलुम् । चतुर्वक्त्रा तु गायत्री श्रोत्रियाणां गृहे स्थिता ४३ सर्वलोकमयी देवी गायत्री या त्रयीमयी । नित्या शास्त्रसमाख्याता लोकान्या तु प्रबोधयेत् ४४ व्यासस्तुष्यति तस्याशु विष्णुलोकं स गच्छति । अत्र चोद्यापने शास्त्रपुस्तकं दानमेव च ४५ सर्वविद्यासमं शास्त्रकरणं ललिताक्षरम् । पुस्तकं संप्रयच्छामि प्रीता भवतु भारती ४६ पुराणं शृणुयान्नित्यं धर्मशास्त्रमथापि वा । पुण्यवान्धनवान्भोगी सत्यशौचपरायणः ४७ ज्ञानवाँल्लोकविख्यातो बहुशिष्यः सुधार्मिकः । कांचनेन युतं वस्त्रं पुस्तकं

च निवेदयेत् ४८ नाममंत्रमतपरः शंभोर्वा केशवस्य च । समासौ प्रतिमां दद्यात्तस्य देवस्य कांचनीम् ४९ पंचवक्त्रो वृषारूढ प्रतिवक्त्र
त्रिलोचन । कपालशूलखट्वांगी चंद्रमौलिः सदाशिवः ५० त्वया सुराणाममृत विहाय हालाहल संहृतमेव यस्मात् । तथा ऽसुराणां त्रि
पुरं च दग्धमेकेषुणा लोकहितार्थमीश ५१ त्वमूपदानाद्बहुपुण्यभाक्श्च दोषैर्विमुक्तश्च गुणालयोऽहम् । तथा कुरु त्वां शरण प्रपद्ये मम प्रभो
देववर प्रसीद ५२ कृतनित्यक्रियो भूत्वा सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत् । सूर्यमंडलमध्यस्थं देव ध्यात्वा जनार्दनम् ५३ समासौ कां
चनं दद्याद्रक्तवस्त्र च गाः तथा । आरोग्य पूर्णमायुश्च कीर्तिर्लक्ष्मीर्बलं भवेत् ५४ तिलहोम तु यः कुर्याच्चातुर्मास्ये दिने दिने ।
भक्त्या व्याहृतिभिर्मंत्रैर्गायत्र्या वा व्रतान्वित ५५ अष्टोत्तरशत चाथ ह्यष्टाविंशतिरेव वा । तिलपात्र समासौ तु दद्याद्विप्राय धीमते
५६ वाङ्मनःकायजनितैः पापैर्मुच्येत संचितैः । न रोगैरभिभूयेत लभेत्संततिमुत्तमाम् ५७ देवदेव जगन्नाथ वाञ्छितार्थफलप्रद ।
तिलपात्र प्रदास्यामि तेन पाप व्यपोहतु ५८ अन्नहोम तु य कुर्याच्चातुर्मास्यमतंद्रितः । समासौ घृतकुंभ तु वस्त्रकांचनसंयुत
म् ५९ आरोग्य कांतिमतुला पुत्रसौभाग्यसंपदः । शत्रुक्षय च लभते ब्राह्मणप्रतिमो भवेत् ६० अश्वत्थसेवां यः कुर्यात्सर्वपापैः प्र-
मुच्यते । विष्णुभक्तो भवेत्पश्चाद्दत्ते वस्त्र प्रदापयेत् ६१ सकांचनं ब्राह्मणाय नैव रोगान्स विंदते । तुलसीं धारयेद्यस्तु विष्णुप्रीतिकरां
शुभाम् ६२ विष्णुलोकमवाप्नोति सर्वपापैः प्रमुच्यते । ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाद्विष्णुमुद्दिश्य पांडव ६३ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे दूर्वाममृतसं-
भवाम् । सदा प्रातर्वहेन्मूर्ध्नि शुद्धात्मा च ऋतुदये ६४ मंत्रेणानेन राजेंद्र लक्ष्मीनाथस्य तुष्टये ६५ त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वंदितासि सुरा-
सुरैः । सौभाग्य संततिं दत्त्वा सर्वकार्यकरी भव ६६ व्रतांते च कुरुश्रेष्ठ दूर्वां स्वर्णविनिर्मिताम् । साग्रसर्वदलोपेतां सवस्त्रां द्विजपुंगवे । प्रद

द्याद्दक्षिणासार्द्धं मंत्रेणानेन सुव्रत ६७ यथाशक्त्या प्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले । तथा मामपि संतानं देहि त्वमजरामरम् ६८एवं व्रतं यः कुर्वीत चातुर्मास्यमतंद्रितः । न च दुःखभयं तस्य न च रोगभयं भवेत् ६९ नाशुभं प्राप्नुयाज्जातु पापेभ्यः प्रविमुच्यते । भुक्त्वा तु सकलान्भोगान्स्वर्गलोके महीयते ७०गीतं तु देवदेवस्य शिवस्य केशवस्य वा । करोति नित्यं प्राप्नोति नरो जागरणे फलम् ७१ व्रतांते च व्रती दद्याद्धंटां देवाय सुस्वराम् । गुरोरवज्ञया यच्चानध्याये ऽध्ययनं कृतम् ७२सरस्वती जगन्नाथा जगज्जाड्यापहारिणी । साक्षाद्ब्रह्मकलत्रं च विष्णुरुद्रादिभिस्तुता ७३ तन्ममाध्ययनोत्पन्नं जाड्यं हर वरानने । घंटादानेन तुष्टा त्वं ब्रह्माणी लोकपावनी ७४ विप्रपादविनिर्मुक्तं तोयं यः प्रत्यहं पिबेत् । चातुर्मास्ये नरो भक्त्या मद्रूपं ब्राह्मणं स्मरन् ७५मनोवाक्कायजनितैर्मुक्तो भवति किल्बिषैः । व्याधिभिर्नाभिभूयेत श्रीरायुस्तस्य वर्द्धते७६समाप्तौ गोयुगं दद्याद्गामेकां वा पयस्विनीम् । तत्राप्यशक्तो राजेंद्र दद्याद्वासोयुगं व्रती ७७ ब्राह्मणं वंदते यस्तु सर्वदेवमयं स्मृतम् । कृतकृत्यो भवेत्सद्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ७८ अक्षय्यं सुखमाप्नोति पितृभक्तिपरो नरः । समाप्तौ भोजयेद्विप्रानायुर्वित्तं च विंदति ७९ संध्याध्यानं तपः कृत्वा समाप्तौ घृतकुंभदः । वस्त्रयुग्मं तिलान्घण्टां ब्राह्मणाय निवेदयेत् ८० सारस्वतं याति तत्त्वं विद्यावांस्तु भवेदिति । संस्पृशेत्कपिलां यो वै नित्यं भक्तिसमन्वितः ८१ तामेवालंकृतां दद्यात्सर्वां भूमिमथापि वा । सार्वभौमो भवेद्राजा दीर्घायुश्च प्रतापवान् ८२ दानशीलः सदारंभः सर्वकंटकवर्जितः । रूपवान्भाग्यसंपन्नो लभते सुखमक्षयम् ८३ स वसेदिंद्रवत्स्वर्गे वत्सरान्रोमसंमितान् । नमः करोति यः सूर्यं गणेशं वापि नित्यशः ८४ आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते कांतिमुत्तमाम् ८५ विघ्नराजप्रसादेन प्राप्नुयादीप्सितं फलम् । सर्वत्र विजयं चैव नात्र कार्या विचारणा ८६ रविः कार्यः सुवर्णस्य सिंदूरारुणसन्निभः । निवेदयेद्ब्राह्मणाय सर्वकामार्थसिद्धये ८७ उरसा शिरसा दृष्ट्या म-

नसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाग उच्यते ८८ अष्टांगसहितं भूमौ नमस्कारेण योऽर्चयेत्। स या गतिमवा
मोति न तां क्रतुशतैरपि ८९ यस्तु रौप्यं शिवप्रीत्यै दद्याद्रूपांगतुष्टये। ताम्रं वा प्रत्यह दद्यात्स्वशक्त्या शिवतुष्टये ९० सुरूपोंऽल्भते
पुत्रान् स्वभक्तिपरायणान्। समाप्तौ मधुपूर्णं तु पात्रं राजतमुत्तमम् ९१ प्रदद्यात्ताम्रदानेन ताम्रपात्र गुडान्वितम्। ताम्र पुष्टिकर सर्व-
देवप्रियकर शुभम् ९२ सर्वरक्षाकरं नित्यमतःशांतिं प्रयच्छ मे। यस्तु सुप्ते हृषीकेशे स्वर्णदान स्वशक्तित ९३ वस्त्रयुग्मतिलैः सार्द्धं
दत्त्वा पापैः प्रमुच्यते। इह भुक्त्वा महाभोगानंते शिवपुर व्रजेत् ९४ सुवर्णं रजतं ताम्र नित्यदानं च धान्यकम्। नित्यश्राद्धं देवपूजां
सर्वमेतत्सदक्षिणम् ९५ वस्त्रदानं तु य कुर्याच्चातुर्मास्ये द्विजातये। अभ्यर्च्य गंधपुष्पाद्यैः स विष्णुः प्रीयतामिति ९६ शय्यां दद्यात्स
मासौ तु वास कांचनपट्टिकाम्। अक्षय्य सुखमाप्नोति धनं च धनदोपमम् ९७ यो गोपीचदन दद्यान्नित्यं वर्षासु मानवः। श्रीपतिः
स्तस्य सतुष्टो भुक्तिं मुक्तिं ददाति च ९८ यद्वै देवांगसंलग्नं कुंकुमादिविलेपनम्। जलक्रीडासु गोपीनां द्वारवत्यामृदान्वितम् ९९ गो-
पीचदनमित्युक्त मुनींद्रैः किल्बिषापहम्। तस्माद्देय प्रयत्नेन विष्णुर्दिशति वांच्छितम् १०० समाप्तावपि तद्दद्यात्तुलापरिमित शुभम्।
तदर्द्ध वा तदर्द्धं वा सवस्त्र च सदक्षिणम् १ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे प्रत्यह तु व्रतान्वित। दद्याद्दक्षिणया सार्द्धं शर्करामपि वा गुडम् २ अ
मृतस्य कला प्रोक्ता इक्षुसारजशर्करा। तस्या दानेन सतुष्टो भानुर्दिशति वांच्छितम् ३ एव व्रते तु सपूर्णे कुर्यादुद्यापनं बुध। कारयेत्ताम्र-
पात्राणि प्रत्येक तु फलाष्टकम् ४ वित्तशाठ्यमकुर्वाणो यथा पलचतुष्टयम्। अष्टौ चत्वार्यथैकं वा प्रत्येकं च सशर्करम् ५ दक्षिणाफलवस्त्रेण
प्रत्येकं वेष्टितानि च। सहधान्यानि विप्रेभ्यः श्रद्धया प्रतिपादयेत् ६ ताम्रपात्रं सवस्त्र च शर्कराहेमसंयुतम्। सूर्यप्रीतिकरं यस्माद्रोगघ्नं पापनाश

नम् ७ पुष्टिदं कीर्तिदं नृणां नित्यं संतानकारकम्। सर्वकामप्रदं स्वर्ग्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ८ तस्मादस्य प्रदानेन कीर्तिरस्तु सदा मम। एवं व्रतं तु यः कुर्यात्तस्य पुण्यफलं श्रृणु ९ गंधर्वविद्यासंपन्नः सर्वयोषित्प्रियो भवेत्। राजापि लभते राज्यं पुत्रार्थी लभते सुतान् १० अर्थार्थी प्राप्नुयादर्थं निष्कामो मोक्षमाप्नुयात्। यस्तु वै चतुरो मासाञ्छाकमूलफलादिकम् ११ नित्यं ददाति विप्रेभ्यः शक्त्या यत्संभवेद्द्विजः। व्रतांते वस्त्रयुग्मं च शक्त्या दद्यात्सदक्षिणम् १२ सुखी भूत्वा चिरंकालं राजयोगी भवेन्नरः। सर्वदेवप्रियं यस्माच्छाकं तृप्तिकरं नृणाम् १३ देवर्षिप्रीतिदं कंदमूलपत्रसपुष्पकम्। ददामि तेन देवाद्याः सदा कुर्वंतु मंगलम् १४ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे प्रत्यहं तु ऋतुद्वये। दद्यात्कटुत्रयं मर्त्यो गृहपर्याप्तमादरात् १५ ब्राह्मणाय सुशीलाय दिनेशप्रीतयेऽनघ। दक्षिणासहिते विप्रे मंत्रेणानेन सुव्रत १६ कटुत्रयमिदं यस्माद्रोगघ्नं सर्वदेहिनाम्। तस्मादस्य प्रदानेन प्रीतो भवतु भास्करः १७ एवं कृत्वा व्रतं सम्यक्कुर्यादुद्यापनं बुधः। कृत्वा स्वर्णमयीं शुंठीं मरीचीं मागधीमपि[1] १८ सवस्त्रां दक्षिणायुक्तां दद्याद्विप्राय धीमते। एवं व्रतं यः कुरुते स जीवेच्छरदां शतम् १९ प्राप्नुयादीप्सितानर्थानंते स्वर्गं व्रजेदिति। मुक्ताफलानि यो दद्यान्नित्यं विप्राय सन्मतिः १२० अन्नवान्कीर्तिमाञ्छ्रीमान् जायते वसुधाधिप। चातुर्मास्ये प्रत्यहं तु क्षीरकुंभं प्रदापयेत् २१ वेष्टयित्वा सुवस्त्रेण फलैर्दक्षिणया सह। सुवासिनीं श्रियं मत्वा गंधपुष्पैरथार्चयेत् २२ तांबूलं फलमेकं वा दद्याच्छ्रीपतये पुनः। समाप्तौ योषितं विप्रं सूक्ष्मवस्त्रविभूषणैः २३ मिथुनं पूजयित्वा तु जातीपुष्पैः सुशोभनैः। पुमांस्तु स्त्रियमाप्नोति नारी भर्तारमाप्नुयात् २४ पुमांस्तु श्रिय माप्नोति सकलामिव माधवः। तांबूलदानं यः कुर्याद्वर्जयेद्वा जितेंद्रियः १२५ रक्तवस्त्रद्वयं दद्यात्करकं च सदक्षिणम्। महालावण्यमाप्नोति सर्व-

१ मागधीं पिप्पलीम्।

रोगविवर्जितः २६ मेधावी सुभगः प्राज्ञो रक्तकंठश्च जायते । गंधर्वत्वमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति २७ तांबूलं श्रीकरं भद्रं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् । अस्य प्रदानाद्ब्रह्माद्याः श्रियं ददंतु पुष्कलाम् २८ पूगे ब्रह्मा हरिः पत्रे चूर्णे साक्षान्महेश्वरः । एतेषां संप्रदानेन संतु मे भाग्यसंपदः २९ पूरितं पूगचूर्णेन नागवल्लीदलान्वितम् । सचूर्णखादिरं चैव पत्रीफलसमन्वितम् १३० एलालवंगसंमिश्रं गंधर्वाप्सरसां प्रियम् । कनकत्वं निरातंकं त्वं प्रसादात्कुरुष्व माम् ३१ चातुर्मास्यव्रतोपेतः सुवासिन्यै द्विजाय च । नारी वा पुरुषो वापि हरिद्रां संप्रयच्छति ३२ लक्ष्मीमुद्दिश्य गौरीं वा तत्पात्रं दक्षिणान्वितम् । प्रदद्याद्भक्तिसंयुक्तं देवी मे प्रीयतामिति ३३ भर्त्रा सह सुखं भुंक्ते नारी, नार्या तथा पुमान् । सौभाग्यमक्षयं धान्यं धनपुत्रससुन्नतिम् ३४ संप्राप्य रूपलावण्ये देवीलोके महीयते । उमामहेशमुद्दिश्य चातुर्मास्ये दिने दिने ३५ संपूज्य विप्रमिथुनं तस्मै विप्राय शक्तितः । दद्यात्सदक्षिणं हेम उमेशः प्रीयतामिति ३६ उमेशप्रतिमां हैमीं दद्यादुद्यापने बुधः । पंचोपचारैः संपूज्य धेन्वा च वृषभेण च ३७ भोजयेदपि मिष्टान्नं तस्य पुण्यफलं शृणु । सौभाग्यं पूर्णमायुष्यं संपत्तिश्चानपायिनी ३८ संपत्तिरक्षया कीर्तिर्जायते व्रतवैभवात् । इह भुक्त्वाऽखिलान्कामानंते शिवपुरं व्रजेत् ३९ तत्र स्थित्वा चिरकालमुपभुज्य सुखं महत् । पुण्यशेषादिहागत्य जायते धरणीपतिः १४० फलदानं तु यः कुर्याच्चातुर्मास्यमतंद्रितः । समाप्तौ कलधौतानि तानि दद्याद्द्विजातये ४१ सर्वान्मनोरथान्प्राप्य संततिं चानपायिनीम् । फलदानस्य माहात्म्यान्मोदते नंदने वने ४२ पुष्पदानव्रतेनापि स्वर्णपुष्पादि दापयेत् । स सौभाग्यं परं प्राप्य गंधर्वपदमाप्नुयात् ४३ वासुदेवे प्रसुप्ते तु चातुर्मास्यमतंद्रितः । नित्यं वामनमुद्दिश्य, दध्यन्नं स्वादु पयसेः ४४ भोजयेदथवा दद्यादेकादश्यां न भोजयेत् । दानमेव प्रकुर्वीत ग्रहणादौ तथैव च ४५ अशक्तौ नित्यदाने तु कु-

र्यात्पंचसु पर्वसु । भूताष्टम्याममायां च पूर्णिमायां तथापि च ४६ प्रत्यकवारमथर्वा प्रतिभार्गववासरम् । पक्षद्वये ऽपि द्वादश्यामवश्यं ज्ञानमेव च ४७ एवं कृत्वा समाप्तौ तु यथाशक्ति महीं ददेत् । अशक्तौ भूमिदाने तु धेनुं दद्यादलंकृताम् ४८ तथाप्यशक्तौ वासश्च सरुक्मपादुके तथा । छत्रोपानद्वस्त्रयुतं दानं सर्वं प्रशस्यते ४९ द्विजानां भोजनं चैव क्षत्रियस्य यथासुखम् । भूम्यादि मुनिशार्दूल वैश्यस्य वसुधां विना १५० ब्राह्मणस्यापि शक्तस्य शूद्रस्यापि तथा मतम् । कुबेरेण पुरा चीर्णं शंकरस्योपदेशतः ५१ जन्हुना गौतमेनापि शक्रेणापि कृतं पुरा । अक्षय्यमन्नमाप्नोति पुत्रपौत्रादिसंपदम् ५२ दृढांगः पूर्णमायुष्यं लभते वैरिनाशनम् । सुस्थिरां विष्णुभक्तिं च प्रयाति हरिमंदिरम् ५३ आरोग्यं सौख्यमतुलं रूपं संपत्तिमेव च । न वंध्यं जायते चेदमनंतफलदायकम् ५४ नित्यं पयस्विनी दद्यात्सालंकारां शुभावहाम् । दत्त्वा तु दक्षिणां शक्त्या स सर्वज्ञानवान्भवेत् ५५ न परप्रेष्यतां याति ब्रह्मलोकं च गच्छति । अक्षय्यं सुखमाप्नोति पितृभिः सहितो नरः ५६ वार्षिकांश्चतुरो मासान् प्राजापत्यं चरेन्नरः । समाप्तौ गोयुगं दद्यात्कृत्वा ब्राह्मणभोजनम् ५७ सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्मसनातनम् । एकांतरोपवासे तु सीराण्यष्टौ प्रदापयेत् ५८ वस्त्रकांचनयुक्तानि शय्यया सह भामिनि । अनडुद्द्वयसंयुक्तं लांगलं कर्षणक्षमम् ५९ सर्वोपस्करसंयुक्तं ददामि प्रीयतां हरिः । शाकमूलफलैर्वापि चातुर्मास्यं नयेन्नरः १६० समाप्तौ गोप्रदानेन स गच्छेद्विष्णुमंदिरम् । पयोव्रती तथाऽऽप्नोति ब्रह्मलोकं सनातनम् ६१ व्रतांते च तथा दद्याद्गामेकां च पयस्विनीम् । रंभाफलपलाशेषु यो भुंक्ते च ऋतुद्वये ६२ वस्त्रयुग्मं च कांस्यं च शक्त्या दद्यात्सुखी भवेत् । कांस्ये ब्रह्मा शिवो लक्ष्मीः कास्यमेव विभावसुः ६३ कास्यं विष्णु-

१ सीराणि हलानि ।

मयं परमादतः शांतिं प्रयच्छ मे । नित्यं पलाशभोजी च तैलाभ्यंगविवर्जितः ६४ स निर्दहत्यतिपापानि तूलराशिमिवानल । ब्रह्मघ्नश्च
सुरापश्च बालघातकरश्च यः ६५ असत्यवादिनो ये च स्त्रीघाती गजघातकः । अगम्यागामिनश्चैव विधवागामिनस्तथा ६६ चांडालीगा
मिनश्चैव विप्रस्त्रीगामिनस्तथा । ते सर्वे पापनिर्मुक्ता व्रतेनानेन केशव ६७ समाप्तौ कांस्यपात्रं तु चतुःषष्टिपलैर्युतम् । सवत्सां गां च वै
दद्यात्साऽलंकारां पयस्विनीम् ६८ अलंकृताय विदुषे सवस्त्राय सुवेषिणे । भूमौ विक्षिप्य यो भुंक्ते देवं नारायणं स्मरन् ६९ दद्याद्भूमिं
यथाशक्ति कृष्यां बहुजलांतिके । आरोग्यपुत्रसंपन्नो राजा भवति धार्मिकः १७० शत्रोर्भयं न लभते विष्णुलोकं स गच्छति । अयाचिते
त्वनड्वाह सहिरण्य सचंदनम् ७१ षड्रसं भोजनं दद्यात्स याति परमां गतिम् । यस्तु सुप्ते हृषीकेशे नक्तं च कुरुते व्रतम् ७२ ब्राह्म-
णान्भोजयेत्पश्चाच्छिवलोके महीयते । एकभक्तं नरः कृत्वा मिताशी च दृढव्रतः ७३ यो ऽर्चयेच्चतुरो मासान् वासुदेवं स नाकभाक् ।
समाप्तौ भोजयेद्विप्रान् शक्त्या दद्याच्च दक्षिणाम् ७४ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे क्षितिशायी भवेन्नरः । शय्यां सोपस्करां दद्याच्छिवलोके महीयते ७५
पादाभ्यंगं नरो यस्तु वर्जयेच्च ऋतुद्वये । पादाभ्यंगं नरः कुर्याद्ब्राह्मणानां च भोजनम् ७६ दक्षिणां च यथाशक्त्या स गच्छेद्विष्णुमंदिरम् ।
आषाढादि चतुर्मासान् वर्जयेन्नखकृंतनम् ७७ आरोग्यपुत्रसंपन्नो राजा भवति धार्मिकः । पायसं लवणं चैव मधुसर्पिःफलानि च ७८ चातुर्मा
स्ये वर्जयति गौरीशंकरतुष्टये । कार्तिक्यां च पुनरेतानि ब्राह्मणाय निवेदयेत् ७९ स रुद्रलोकमाप्नोति रुद्रव्रतनिषेवणात् । यवान्नं भक्षयेद्यस्तु
अथवा शालयः शुभाः १८० पुत्रपौत्रादिभिः सार्द्धं शिवलोके महीयते । तैलाभ्यंगपरित्यागी विष्णुभक्तः सदा व्रती ८१ वर्षासु विष्णुमभ्य-
र्च्य वैष्णवीं लभते गतिम् । समाप्तौ कांस्यपात्रं च सुवर्णेन समन्वितम् ८२ तैलेन पूरितं कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् । मार्गिकांश्चतुरो

मासाञ्छाकादिपरिवर्जयेत् ८३ विष्णुलोकमवाप्नोति पितृतृप्तिः प्रजायते । व्रतांते हरिमुद्दिश्य पात्रं राजतमेव हि ८४ वस्त्रेण वेष्टये-द्गंधपत्रपुष्पैः समर्चयेत् । मूलपत्रकरीराग्रफलकांडादिरूढकः ८५ त्वक् पुष्पं कवचं चेति शाकमष्टविधं स्मृतम् । समभ्यर्च्य यथाशक्त्या ब्राह्मणान्वेदपारगान् ८६ दद्याद्दक्षिणया सार्द्धं व्रतसंपूर्णहेतवे । शिवसायुज्यमाप्नोति प्रसादाच्छूलपाणिनः ८७ अपूप-वर्जनं कृत्वा भोजनव्रतमाचरेत् । कार्तिके स्वर्णगोधूमान्वस्त्रं दत्त्वाश्वमेधकृत् ८८ गोधूमाः सर्वजंतूनां बलपुष्टिविवर्द्धनाः । मुख्याश्च ह-व्यकव्येषु तस्मान्मे ददतु श्रियम् ८९ आषाढादिचतुर्मासान्वृंताकं वर्जयेन्नरः । कारवल्लीफलं वापि अलाबुं पडलं तथा १९० यद्यत्फलं प्रियं चास्ति वर्जयेत्तु च तत्फलम् । चातुर्मास्ये ततो वृत्ते रौप्याण्येतानि कारयेत् ९१ मध्ये विद्रुमयुक्तानि ह्यर्चयित्वा तु शक्तितः । द-द्याद्दक्षिणया सार्द्धं ब्राह्मणायातिभक्तितः ९२ अभीष्टं देवमुद्दिश्य देवो मे प्रीयतामिति । सदीर्घमायुरारोग्यं पुत्रपौत्रान्सुरूपताम् ९३ अ-क्षय्यां संततिं कीर्तिं लब्ध्वा स्वर्गे महीयते । फलत्यागी भवेद्यस्तु विष्णुलोके स पूज्यते ९४ समाप्तौ कलधौतानि तानि दद्याद्द्विजात-ये । श्रावणे वर्जयेच्छाकं दधि भाद्रपदे तथा ९५ दुग्धमाश्वयुजे मासि कार्तिके द्विदलं त्यजेत् । चत्वार्येतानि नित्यानि चतुराश्रमव-र्तिनाम् ९६ प्रथमे मासि कर्तव्यं नित्यं शाकव्रतं नरैः । द्वितीये मासि कर्तव्यं दधिव्रतमनुत्तमम् ९७ पयोव्रतं तृतीये तु चतुर्थे द्विदलं तथा । कूष्मांडं राजमाषांश्च मूलकं गृंजरं तथा ९८ करमर्दं चेक्षुदंडं चातुर्मास्ये त्यजेन्नरः । मसूरं बहुबीजं च वृंताकं चैव वर्जयेत् ९९ नित्यान्येतानि विप्रेंद्र व्रतान्याहुर्मनीषिणः । विशेषाद्बदरीं धात्रीमलाबुं चिंचिणीं त्यजेत् २०० जीर्णधात्रीफलं ग्राह्यं जीर्णा ग्राह्या च चिंचिणी । वार्षिकांश्चतुरो मासान् प्रसुप्ते च जनार्दने १ मंचखट्वादिशयनं वर्जयेद्भक्तिमान्नरः । अनृतौ वर्जयेद्भार्यामृतौ गच्छन्न दुष्य-

ति २ मधुवेर्ळी च शिग्रुं च चातुर्मास्ये त्यजेन्नरः । वृंताकं च कलिंगं च बिल्वोदुंबरभिःसटाः ३ उदरे यस्य जीर्यंते तस्य दूरतरो हरिः ।
उपवासस्तथा नक्तमेकभक्तमयाचितम् ४ अशक्तस्तु यथा कुर्यात्सायं प्रातरसंशितम् । स्नानपूजादिसंयुक्तः स नरो हरिलोकभाक् ५ गी-
तवाद्यकरो विष्णोर्गांधर्वं लोकमाप्नुयात् । मधुरस्वरो भवेद्राजन् पुरुषो गुडवर्जनात् ६ लभेच्च संततिं दीर्घां पुत्रपौत्रादिवर्धिनीम् । तैलस्य
वर्जनाद्राजन् सुदर्शांगः प्रजायते ७ कौसुंभतैलसत्यागाच्छत्रुनाशमवाप्नुयात् । मधूकतैलत्यागाच्च सुसौभाग्यफलं लभेत् ८ कटुतिक्तं
च मधुरं कषायलवणान्रसान् । वर्जयेत्स च वैरूप्यं दौर्गंध्यं नाप्नुयात्सदा ९ पुष्पादिभोगत्यागेन स्वर्गे विद्याधरो भवेत् । योगाभ्यासी
भवेद्यस्तु स ब्रह्मपदवीमियात् १० तांबूलवर्जनाद्रोगी सद्यो मुक्तामयो भवेत् । पादाभ्यंगपरित्यागाच्छिरोभ्यंगस्य पार्थिव ११ दीप्ति
मान्दीप्तिकरणो यक्षद्रव्यपतिर्भवेत् । दधिदुग्धपरित्यागी गोलोकं लभते नरः १२ इहलोकमवाप्नोति स्थालीपाकविवर्जनात् । एकांतरो
पवासेन ब्रह्मलोके महीयते १३ चतुरो वार्षिकान्मासान्नखरोमाणि धारयेत् । कल्पस्थायी भवेद्राजन् स नरो नात्र संशयः १४ नमो
नारायणायेति जपित्वाऽनशनं फलम् । विष्णुपादांबुजस्पर्शात्कृतकृत्यो भवेन्नरः १५ लक्षमदक्षिणा यस्तु करोति हरिमव्ययम् । हंसयु-
क्तविमानेन स याति वैष्णवीं पुरीम् १६ त्रिरात्रभोजनत्यागान्मोदते दिवि देववत् । परान्नवर्जनाद्राजन् देवो वै मानुषो भवेत् १७
प्राजापत्यं चरेद्यो वै चातुर्मास्यव्रतं नरः । मुच्यते पातकैः सर्वैस्त्रिविधैर्नात्र संशयः १८ तप्तकृच्छ्रातिकृच्छ्राभ्यां यः क्षिपेच्छयनं हरेः ।
स याति परमं स्थानं पुनरावृत्तिवर्जितम् । १९ चांद्रायणेन यो राजन् क्षिपेन्मासचतुष्टयम् । दिव्यदेहो भवेत्सोऽपि शिवलोकं च गच्छ
ति २० चातुर्मास्ये नरो यो वै त्यजेदन्नादिभक्षणम् । स गच्छेद्धरिसायुज्यं न भूयस्तु प्रजायते २१ भिक्षाभोजी नरो यो हि स

भवेद्वेदपारगः । पयोव्रतेन यो राजन् क्षिपेन्मासचतुष्टयम् २२२ तस्य वंशसमुच्छेदः कदाचिन्नोपपद्यते । पंचगव्याशनः पार्थ चांद्रायणफलं लभेत् २३ दिनत्रयं जलत्यागान्न रोगैरभिभूयते । एवमादिव्रतैः पार्थ तुष्टिमायाति केशवः २४ दुग्धाब्धिवीचिशयने भगवाननंतो यस्मिन्दिने स्वपिति चाथ विबुद्ध्यते च । तस्मिन्ननन्यमनसामुपवासभाजां पुंसां ददाति च गतिं गरुडासनोऽसौ २२५ ॥ इति श्रीभ० विष्णोःशयन्येकादशीचातुर्मास्यमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ श्रावणकृष्णकामिकैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । आषाढशुक्लपक्षे तु यद्देवशयनव्रतम् । तन्मया श्रुतपूर्वं हि पुराणे बहुविस्तरम् १ श्रावणे कृष्णपक्षे तु किं नामैकादशी भवेत् । एतत्कथय गोविंद वासुदेव नमोऽस्तु ते २ श्रीकृष्ण उवाच । शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि व्रतं पापप्रणाशनम् । नारदाय पुरा राजन् पृच्छते च पितामहः ३ परं यदुक्तवांस्तात तदहं ते वदामि च ॥ नारद उवाच । भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि त्वत्तोऽहं कमलासन ४ श्रावणस्यासिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् । को देवः को विधिस्तस्याः किं पुण्यं कथय प्रभो ५ ब्रह्मोवाच । शृणु नारद ते वच्मि लोकानां हितकाम्यया ॥ श्रावणैकादशी कृष्णा कामिकेति च नामतः ६ तस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् । तस्यां यः पूजयेद्देवं शंखचक्रगदाधरम् ७ श्रीधराख्यं हरिं विष्णुं माधवं मधुसूदनम् । यजते ध्यायते यो वै तस्य पुण्यफलं शृणु ८ न गंगायां न काश्यां वै नैमिषे न च पुष्करे । तत्फलं समवाप्नोति यत्फलं विष्णुपूजनात् ९ केदारे च कुरुक्षेत्रे राहुग्रस्ते दिवाकरे । न तत्फलमवाप्नोति यत्फलं कृष्णपूजनात् १० ससागरवनोपेतां यो ददाति वसुंधराम् । गोदावर्यां गुरौ सिंहे व्यतीपाते च गंडके ११ न तत्फलमवाप्नोति यत्फलं कृष्णपूजनात् । कामिकाव्रतकामी च ह्युभौ फलसमौ स्मृतौ १२ प्रसूयमानां यो धेनुं दद्यात्सोपस्करां नरः । तत्फलं समवाप्नोति कामिकाव्रतकारकः १३

श्रावणे श्रीधरं देवं पूजयेद्यो नरोत्तमः । तेनैव पूजिता देवा गंधर्वोरगपन्नगाः १४ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कामिकादिवसे हरिः । पूजनीयो य-
थाशक्त्या मनुष्यैः पापभीरुभिः १५ संसारार्णवमग्ना ये पापपंकसमाकुलाः । तेषामुद्धरणार्थाय कामिकाव्रतमुत्तमम् १६ नातःपरतरा
कापित्पवित्रा पापहारिणी । एव नारद जानीहि स्वयमाह पुरा हरिः १७ अध्यात्मविद्यानिरतैर्यत्फलं प्राप्यते नरैः । ततो बहुतरं विद्धि
कामिकाव्रतसेवनात् १८ रात्रौ जागरणं कुर्यात्कामिकाव्रतकृन्नरः । न पश्यति यमं रौद्रं नैव पश्यति दुर्गतिम् १९ न पश्यति कुयोनिं च
कामिकाव्रतसेवनात् । कामिकाया व्रतेनैव कैवल्यं योगिनो गताः ॥ सर्वैः सर्वप्रयत्नेन कर्तव्या नियतात्मभिः २० तुलसीप्रभवैः पत्रैर्यो नरः
पूजयेद्धरिम् । न वै स लिप्यते पापैः पद्मपत्रमिवांभसा २१ सुवर्णभारमेकं तु रजतं च चतुर्गुणम् । तत्फलं समवाप्नोति तुलसीदलसेवना-
त् २२ रत्नमौक्तिकवैडूर्यप्रवालादिभिरर्चितः । न तुष्यति तथा विष्णुस्तुलसीपूजनाद्यथा २३ तुलसीमंजरीभिस्तु पूजितो येन केशवः ।
आजन्मकृतपापस्य तेन संमार्जिता लिपिः २४ या दृष्टा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुःपावनी रोगाणामभिवंदिता निरसनी सिक्तांत-
कत्रासिनी । प्रत्यासत्तिविधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः २५ दीपं ददाति
यो मर्त्यो दिवारात्रे हरेर्दिने । तस्य पुण्यस्य संख्यानं चित्रगुप्तोऽपि वेत्ति न २६ कृष्णाग्रे दीपको यस्य ज्वलेदेकादशीदिने ।
पितरस्तस्य तृप्यंति अमृतेन दिविस्थिताः २७ घृतेन दीपं प्रज्वाल्य तिलतैलेन वा पुनः । प्रयाति सूर्यलोके ऽसौ दीपकोटिशतैर्वृतः २८
अयं तवाग्रे कथितः कामिकामहिमा मया । अतो नरैः प्रकर्तव्या सर्वपातकहारिणी २९ ब्रह्महत्यापहरणी भ्रूणहत्याविनाशिनी । त्रिदिव
स्थानदात्री च महापुण्यफलप्रदा ३० श्रुत्वा माहात्म्यमेतस्या नरः श्रद्धासमन्वितः । विष्णुलोकमवाप्नोति सर्वपापैः प्रमुच्यते ३१

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे श्रावणकृष्णैकादश्याः कामिकानाम्न्या मा० स० ॥ अथ श्रावणशुक्लपुत्रदाख्यैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । श्रावणस्य सिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् । कथयस्व प्रसादेन ममाग्रे मधुसूदन १ श्रीकृष्ण उवाच । शृणुष्वावहितो राजन् कथां पापहरां पराम् । यस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् २ द्वापरस्य युगस्यादौ पुरा माहिष्मतीपुरे । राजा महीजिदाख्यातो राज्यं पालयति स्वयम् ३ पुत्रहीनस्य तस्यैव न तद्राज्यं सुखप्रदम् । अपुत्रस्य सुखं नास्ति इहलोके परत्र च ४ यततोऽस्य सुतप्राप्तौ कालो बहुतरो गतः । न प्राप्तश्च सुतो राजा सर्वसौख्यप्रदो नृणाम् ५ दृष्ट्वात्मानं प्रवयसं राजा चिंतापरोऽभवत् । सदोगतः प्रजामध्ये इदं वचनमब्रवीत् ६ इहजन्मनि भो लोका न मया पातकं कृतम् । अन्यायोपार्जितं वित्तं क्षिप्तं कोशे मया नहि ७ ब्रह्मस्वं देवद्रविणं न गृहीतं मया क्वचित् । न्यासापहारो न कृतः परस्य बहुपापदः ८ सुतवत्पालिता लोका धर्मेण विजिता मही । दुष्टेषु पातितो दंडो बंधुपुत्रोपमेष्वपि ९ शिष्टाः सुपूजिता लोका द्वेष्याश्चापि महाजनाः । इत्येवं व्रजतो मार्गे धर्मयुक्ते द्विजोत्तमाः १० कस्मान्मम गृहे पुत्रो न जातस्तद्विचार्यताम् । इति वाक्यं द्विजाः श्रुत्वा सप्रजाः सपुरोहिताः ११ मंत्रयित्वा नृपहितं जग्मुस्ते गहनं वनम् ।इतस्ततश्च पश्यंतश्चाश्रमानृषिसेवितान् १२ नृपतेर्हितमिच्छंतो ददृशुर्मुनिसत्तमम् । तप्यमानं तपो घोरं चिदानंदं निरामयम् १३ निराहारं चिदात्मानं जितक्रोधं सनातनम् । लोमशं धर्मतत्त्वज्ञं सर्वशास्त्रविशारदम् १४ दीर्घायुषं महात्मानमनेकब्रह्मसंमितम् । यस्यैकस्मिन्गते कल्पे अकं लोम विशीर्यते १५ अतो लोमशनामानं त्रिकालज्ञं महामुनिम् । तं दृष्ट्वा हर्षिताः सर्वे आजग्मुस्तस्य सन्निधिम् १६ । यथान्यायं यथार्हं ते नमश्चक्रुर्यथोदितम् । विनयावनताः सर्वे ऊचुश्चैव परस्परम् १७ अस्मद्भाग्यवशादेव प्राप्तोऽयं मुनिसत्तमः ।तांस्तथा प्रणतान्दृष्ट्वा ह्युवाच मुनिस-

त्तमः १८ लोमश उवाच । किमर्थमिह संप्राप्ताः कथयध्वं च कारणम् । मद्दर्शनाल्हादभिरः स्तुवत इव मां किमु १९ असशय करिष्यामि भवतां यद्धितं भवेत् । परोपकृतये जन्म मादृशानां न सशय २० जना ऊचुः । श्रूयतामभिधास्यामो वयमागमकारणम् । सशय-च्छेदनार्थाय तव सन्निधिमागताः २१ पद्मयोनेः परतरस्त्वत्त श्रेष्ठो न विद्यते । अतः कार्यवशात्प्राप्ताः समीप भवतो वयम् २२ म हीजिन्नाम राजा ऽसौ पुत्रहीनो ऽस्ति सांप्रतम् । वय तस्य प्रजा ब्रह्मन् पुत्रवत्तेन पालिता २३ तं पुत्ररहित दृष्ट्वा तस्य दुःखेन दुःखिता । तपः कर्तुमिहायाता मतिं कृत्वा तु नैष्ठिकीम् २४ तस्य भाग्यवशा दृष्टस्त्वमस्माभिर्द्विजोत्तम । महतां दर्शनेनैव कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम् २५ उपदेश वद मुने राज्ञः पुत्रो यथा भवेत् २६ इति तेषां वचः श्रुत्वा मुहूर्तं ध्यानमास्थितः । प्रत्युवाच मुनिर्ज्ञात्वा तस्य जन्म पुरातनम् २७ लोमश उवाच । पूर्वजन्मनि वैश्योऽयं धनहीनो नृशंसकृत् । वाणिज्यकर्मनिरतो ग्रामाद्ग्रामांतरं भ्रमन् २८ ज्येष्ठमासि सिते पक्षे द्वादशी दिवसे तथा । मध्याह्ने भ्रमणो प्राप्ते ग्रामसीम्नि जलाशयम् २९ कूपिकां सजलां दृष्ट्वा जलपाने मनो दधौ । सद्यःसूता सवत्सा च धेनुस्तत्र समागता ३० तृषातुरा निदाघार्ता तस्या नीरं पपौ तु सा । पिबतीं वारयित्वा तामसौ तोय स्वयं पपौ ३१ कर्मणस्तस्य पापेन स पुत्ररहितो नृप । पूर्वजन्मकृतात्पुण्यात्प्राप्तं राज्यमकण्टकम् । ३२ जना ऊचुः । पुण्यात्पाप क्षयं याति पुराणे श्रूयते मुने । पुण्योपदेशं कथय येन पापक्षयो भवेत् ॥ यथा भवत्प्रसादेन पुत्रोऽस्य भविता तथा ३३ लोमश उवाच । श्रावणे शुक्लपक्षे तु पुत्रदानामविश्रुता । एकादशीतिथिस्त्वास्ति कुरुध्वं तद्व्रतं जनाः ३४ यथाविधि यथान्याय यथोक्त जागरान्वितम् । तस्या पुण्य सुविमलं दद्ध्व नृपतेर्जं

१ गाव इत्यपपाठ ।

नाः ३५ एवं कृते सुनियतं राज्ञः पुत्रो भविष्यति । श्रुत्वैतल्लोमशवचस्तं प्रणम्य द्विजोत्तमम् ३६ प्रजग्मुः स्वगृहान्सर्वे हर्षोत्फुल्ल-
विलोचनाः । श्रावणं तु समासाद्य स्मृत्वा लोमशभाषितम् ३७ राज्ञा सह व्रतं चक्रुः सर्वे श्रद्धासमन्विताः । द्वादशीदिवसे पुण्यं ददुर्नृ-
पतये जनाः ३८ दत्ते पुण्ये यथा राज्ञी गर्भमाधत्त शोभनम् । प्राप्ते प्रसवकाले सा सुषुवे पुत्रमूर्जितम् ३९ एवमेषा नृपश्रेष्ठ पुत्रदा-
नामविश्रुता । कर्तव्या सुखमिच्छद्भिरिहलोके परत्र च ४० श्रुत्वा माहात्म्यमेतस्याः सर्वपापैः प्रमुच्यते । इह पुत्रसुखं प्राप्य परत्र
स्वर्गतिर्भवेत् ४१ ॥ इति श्रीभ० पु० श्रावणशुक्लैकादश्याः पुत्रदाया माहात्म्यं समाप्तम् ॥ ॥ अथ भाद्रपदकृष्ण अजैकादशीकथा ॥
युधिष्ठिर उवाच । भाद्रस्य कृष्णपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं कथयस्व जनार्दन १ श्रीकृष्ण उवाच ।
शृणुष्वैकमना राजन् कथयिष्यामि विस्तरात् । अजेति नामतः प्रोक्ता सर्वपापप्रणाशिनी २ पूजयित्वा हृषीकेशं व्रतं तस्याः क-
रोति यः । पापानि तस्य नश्यंति व्रतस्य श्रवणादपि ३ नातःपरतरा राजँल्लोकद्वयहितावहा । सत्यमुक्तं मया ह्येतन्नासत्यं भाषितं मम ४
हरिश्चंद्र इति ख्यातो बभूव नृपतिः पुरा । चक्रवर्ती सत्यसंधः समस्ताया भुवः पतिः ५ कस्यापि कर्मणो योगाद्राज्यभ्रष्टो बभूव सः
विक्रीत्वा वनितां पुत्रं स चकारात्मविक्रयम् ६ पुल्कसस्य[१] च दासत्वं गतो राजा स पुण्यकृत् । सत्यमालंब्य राजेंद्र मृतचैलापहार-
कः ७ सोऽभवन्नृपतिश्रेष्ठो न सत्याच्चलितस्तथा । एवंगतस्य नृपतेर्बहवो वत्सरा गताः ८ ततश्चिंतापरो राजा बभूवात्यंतदुःखितः । किं
करोमि क्व गच्छामि निष्कृतिर्मे कथं भवेत् ९ इति चिंतयतस्तस्य मग्नस्य वृजिनार्णवे । आजगाम मुनिः कश्चिज्ज्ञात्वा राजानमातुरम् १०

१ नीचस्यांत्यजस्य ।

परोपकारणार्थाय निर्मितो ब्रह्मणा द्विजः । स तं दृष्ट्वा द्विजवरं ननाम नृपसत्तमः ११ कृतांजलिपुटो भूत्वा गौतमस्याग्रत स्थितः । क
थयामास वृत्तातमात्मनो दुःखसंयुतम् १२ श्रुत्वा नृपतिवाक्यानि गौतमो विस्मयान्वितः । उपदेशं नृपतये व्रतस्यास्य मुनिर्ददौ १३
मासि भाद्रपदे राजन् कृष्णपक्षे तु शोभना । एकादशी समायाता अजानाम्न्यतिपुण्यदा १४ तस्याः कुरु व्रतं राजन्पापनाशो भवि
ष्यति । तव भाग्यवशादेषा सप्तमे ऽह्नि समागता १५ उपवासपरो भूत्वा रात्रौ जागरणं कुरु । एवं तस्या व्रते चीर्णे सर्वपापक्षयो भवे
त् १६ तव पुण्यप्रभावेण चागतो ऽहं नृपोत्तम । इत्येवं कथयित्वा तु मुनिरंतरधीयत १७ मुनिवाक्यं नृप श्रुत्वा चकार व्रतमुत्तमम् ।
कृते तस्मिन्व्रते राज्ञः पापस्यांतो ऽभवत्क्षणात् १८ श्रूयतां राजशार्दूल प्रभावो ऽस्य व्रतस्य च । यद्दुःखं बहुभिर्वर्षैर्भोक्तव्यं तत्क्षयो भ
वेत् १९ निस्तीर्णदुःखो राजा ऽऽसीद्व्रतस्यास्य प्रभावतः । पत्न्या सह समायोगं पुत्रजीवनमाप स २० देवदुंदुभयो नेदुः पुष्पवर्षमभू
द्दिवः । एकादश्याः प्रभावेण प्राप्त राज्यमकंटकम् २१ स्वर्गं लेभे हरिश्चंद्रः सपुरः सपरिच्छदः । ईदृग्विधं व्रतं राजन्ये कुर्वंति द्विजो-
त्तमाः २२ सर्वपापविनिर्मुक्तास्त्रिदिवं यांति ते ध्रुवम् । पठनाच्छ्रवणाद्राजन्नश्वमेधफलं लभेत् २३ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्त्तपु० भाद्रपदकृष्णैका
दश्या अजाख्याया माहात्म्यं समाप्तम् ॥ ॥ अथ भाद्रपदशुक्लपरिवर्तिन्येकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । नभस्य सितपक्षे तु किंनामै
कादशी भवेत् । को देवः को विधिस्तस्याः किं पुण्यं च वदस्व नः १ श्रीकृष्ण उवाच । कथयामि महापुण्यां स्वर्गमोक्षप्रदायिनीम् ।
वामनैकादशीं राजन्सर्वपापहरां पराम् २ इमामेव जयंत्याख्यां प्राहुरेकादशीं नृप । यस्याः श्रवणमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत् ३ वाजपे
यफलं मोक्षं नातः परतरं नृणाम् । पापिनां पापशमनं जयंतीमतमुत्तमम् ४ नातःपरतरा राजन्वै मोक्षप्रदायिनी । एतस्मात्कारणा-

द्राजन्कर्तव्या गतिमिच्छता ५ वैष्णवैर्मम भक्तैस्तु मनुजैर्मत्परायणैः । नभस्ये वामनो यैस्तु पूजितस्तैर्जगत्त्रयम् ६ पूजितं नात्र संदे-
हस्ते यांति हरिसन्निधिम् । वामनः पूजितो येन कमलैः कमलेक्षणः ७ नभस्य सितपक्षे तु जयंत्येकादशीदिने । तेनार्चितं जगत्सर्वं त्रयो
देवाः सनातनाः ८ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्यो हरिवासरः । अस्मिन्कृते न कर्तव्यं किंचिदस्ति जगत्त्रये ९ अस्यां प्रसुप्तो भगवानेत्यंग-
परिवर्तनम् । तस्मादेनां जनाः सर्वे वदंति परिवर्तिनीम् १० युधिष्ठिर उवाच । संशयो ऽस्ति महान्मह्यं श्रूयतां च जनार्दन । कथं सुप्तोसि देवेश
कथं यास्यंगवर्तनम् ११ किमर्थं देवदेवेश बलिर्बद्धस्त्वया ऽसुरः । संतुष्टाः पृथिवीदेवाः किमकुर्वन् जनार्दन १२ को विधिः किं व्रतं चैव
चातुर्मास्यमुपासताम् । त्वयि सुप्ते जगन्नाथे किं कुर्वंति जनाः प्रभो । एतद्विस्तरतो ब्रूहि संशयं हर मे प्रभो १३ श्रीकृष्ण उवाच । श्रूयतां
राजशार्दूल कथां पापहरां पराम् । बलिर्वै दानवः पूर्वमासीत्त्रेतायुगे नृप १४ अपूजयंश्च मां नित्यं मद्भक्तो मत्परायणः । जपैस्तु
विविधैः सूक्तैर्यजते मां स नित्यशः १५ द्विजानां पूजको नित्यं यज्ञकर्मकृताशयः । परंत्विंद्रकृतद्वेषी देवलोकमजीजयत् १६ मद्दत्तमिह-
लोकं वै जितं तेन महात्मना । विलोक्य च ततः सर्वे देवाः संहत्य मंत्रयन् १७ सर्वैर्मिलित्वा गंतव्यं देवं विज्ञापितुं प्रभुम् । ततश्च देव-
ऋषिभिः साकमिंद्रो गतः प्रभुम् १८ शिरसा ह्यवनीं गत्वा स्तुत इंद्रेण सूक्तिभिः । गुरुणा दैवतैः सार्द्धं बहुधा पूजितो ह्यहम् १९ ततो
वामनरूपेण ह्यवतीर्णश्च पंचमे । अत्युग्ररूपेण तदा सर्वब्रह्मांडरूपिणा । बालकेन जितः सो वै सत्यमालंब्य तस्थिवान् २० युधिष्ठिर उवाच ।
त्वया वामनरूपेण सो सुरश्च जितः कथम् । एतत्कथय देवेश मह्यं भक्ताय विस्तरात् २१ श्रीकृष्ण उवाच । मया ऽलीकेन स बलिः प्रार्थितो

१ मदतिक्रमित्यर्थः । २ अत्र, अहमित्यध्याहारः । ३ पचमे मन्वतरे । ४ बालकरूपेण मयेत्यर्थः ।

गरुडरूपिणा । पदत्रयमितां भूमिं देहि मे भुवनत्रयम् २२ दत्तं भवति ते, राजन्नात्र कार्या विचारणा । इत्युक्तश्च मया राजा दत्तवांस्त्रिपदां
भुवम् २३ संकल्पमात्राद्वपुषे देहस्त्रैविक्रमः परम् । भूर्लोके तु कृतौ पादौ भुवर्लोके तु जानुनी २४ स्वर्लोके तु कटिं न्यस्य महर्लोके
तथोदरम् । जनलोके तु हृदयं तपोलोके च कण्ठकम् २५ सत्यलोके मुखं स्थाप्य उत्तमांगं तथोर्ध्वतः । चन्द्रसूर्यग्रहाश्चैव भगणो योगसंयु
त २६ संप्राप्ताश्चैव तदा देवा नागाः शेषादयः परे । स्तुवंतो वेदसंभूतैः सूक्तैश्च विविधैस्तु माम् २७ करे गृहीत्वा तु बलिमब्रुवं वचनं
तदा । एकेन पूरिता पृथ्वी द्वितीयेन त्रिविष्टपम् । २८ तृतीयस्य तु पादस्य स्थानं देहि ममानघ । एवमुक्ते मया सोपि मस्तकं दत्तवान्ब
लिः २९ ततो वै मस्तके ह्येकं पदं दत्तं मया तदा । क्षिप्तो रसातले राजन् दानवो मम पूजकः ३० विनयावनतं दृष्ट्वा प्रसन्नोस्मि जनार्द
नः । बले वसामि सततं संनिधौ तव मानद ३१ इत्यवोचं महाभागं बलिं वैरोचनिं तदा । नभस्य शुक्लपक्षे तु परिवर्तिनिवासरे ३२ ममै
का तत्र मूर्तिश्च बलिमाश्रित्य तिष्ठति । द्वितीया शेषपृष्ठे वै क्षीराब्धौ सागरोत्तमे ३३ सुप्यते च हृषीकेशो यावदायाति कार्तिकी । तावद्भव ति तत्पु-
ण्यं सर्वपुण्योत्तमोत्तमम् ३४ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्येषा प्रयत्नतः । एकादशी महापुण्या पवित्रा पापहारिणी ३५ अस्यां प्रसुप्तो भ
गवानेत्यंगपरिवर्तनम् । एतस्यां पूजयेद्देवं त्रैलोक्यस्य पितामहम् ३६ दधिदानं प्रकर्तव्यं रौप्यतण्डुलसंयुतम् । रात्रौ जागरणं कृत्वा मु-
क्तो भवति मानवः ३७ एवं यः कुरुते राजन्नेकादश्या व्रतं शुभम् । सर्वपापहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ३८ स देवलोकं संप्राप्य भ्राजते
चन्द्रमा यथा ३९ शृणुयाच्चैव यो मर्त्यः कथां पापहरां पराम् । अश्वमेधसहस्रस्य फलं प्राप्नोति मानवः ४० ॥ इति श्रीस्कंदपु० भाद्रप
दशुक्लपरिवर्तिनीनामैकादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ॥ अथाश्विनकृष्णेंदिरानामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । कथयस्व प्रसादेन ममाग्रे

मधुसूदन । आश्विने कृष्णपक्षे तु किं नामैकादशी भवेत् १ श्रीकृष्ण उवाच । आश्विनस्य सिते पक्षे इंदिरा नाम नामतः । तस्या व्रत-
प्रभावेण महापापं प्रणश्यति २ अधोयोनिगतानां च पितॄणां गतिदायिनी । शृणुष्वावहितो राजन्कथां पापहरां पराम् ३ यस्याः श्र-
वणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् । पुरा कृतयुगे राजा बभूव रिपुसूदनः ४ इंद्रसेन इति ख्यातः पुरीं माहिष्मतीं प्रति । स राज्यं पालया-
मास धर्मेण यशसाऽन्वितः ५ पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमन्वितः । माहिष्मत्यधिपो राजा विष्णुभक्तिपरायणः ६ जपन्गोविंदनामानि
मुक्तिदानि नराधिपः । कालं नयति विधिवद्ध्यात्मस्य विचिंतकः ७ एकस्मिन्दिवसे राज्ञि सुखासीने सदोगते । अवतीर्यागमद्धीमानंबरा-
न्नारदो मुनिः ८ तमागतमभिप्रेत्य प्रत्युत्थाय कृतांजलिः । पूजयित्वाऽर्घविधिना चासने संन्यवेशयत् ९ सुखोपविष्टः स मुनिः प्रत्युवाच
नृपोत्तमम् । कुशलं तव राजेंद्र सप्तस्वर्गेषु वर्तते १० धर्मे मतिर्वर्तते ते विष्णुभक्तिरतस्तथा । इति वाक्यं तु देवर्षेः श्रुत्वा राजा तमब्र-
वीत् ११ राजोवाच । त्वत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठ सर्वत्र कुशलं मम । अद्य क्रतुक्रियाः सर्वाः सफलास्तव दर्शनात् १२ प्रसादं कुरु विप्रर्षे ब्रू-
ह्यागमनकारणम् । इति राज्ञो वचः श्रुत्वा देवर्षिर्वाक्यमब्रवीत् १३ नारद उवाच । श्रूयतां राजशार्दूल मद्वचो विस्मयप्रदम् । ब्रह्मलो-
कादहं प्राप्तो यमलोकं द्विजोत्तम १४ शमनेनार्चितो भक्त्या उपविष्टो वरासने । धर्मशीलः सत्यवांस्तु भास्करिं समुपासते १५ बहुपु-
ण्यप्रकर्ता च व्रतवैकल्यदोषतः । सभायां श्राद्धदेवस्य मया दृष्टः पिता तव १६ कथितस्तेन संदेशस्तं निबोध जनेश्वर । इंद्रसेन इति
ख्यातो राजा माहिष्मतीप्रभुः १७ तस्याग्रे कथय ब्रह्मन् स्थितं मां यमसन्निधौ । केनापि चांतरायेण पूर्वजन्मोद्भवेन वै १८ स्वर्गं प्रेषय
मां पुत्र इंदिराव्रतदानतः । इत्युक्तो ऽहं समायातः समीपं तव पार्थिव १९ पितुः स्वर्गतये राजन्निंदिराव्रतमाचर । तेन व्रतप्रभावेण स्वर्गं

यास्यति ते पिता २० राजोवाच । कथयस्व प्रसादेन भगवन्निंदिराव्रतम् । विधिना केन कर्तव्य कस्मिन्पक्षे तिथौ तथा २१
नारद उवाच । शृणु राजन्हित वच्मि व्रतस्यास्य विधिं शुभम् । आश्विनस्यासिते पक्षे दशमीदिवसे शुभे २२ प्रातःस्नानं
प्रकुर्वीत श्रद्धायुक्तेन चेतसा । ततो मध्याह्नसमये स्नान कृत्वा वहिर्जले २३ पितॄणां प्रीतये श्राद्ध कुर्याच्छ्रद्धासमन्वितः ।
एकभक्त ततः कृत्वा रात्रौ भूमौ शयीत च २४ प्रभाते विमले जाते प्राप्ते चैकादशीदिने । मुखप्रक्षालन कुर्याद्दंतधावनपू
र्वकम् । उपवासस्य नियम गृह्णीयाद्भक्तिभावतः २५ अद्य स्थित्वा निराहारः सर्वभोगविवर्जित । श्वो भोक्ष्ये पुंडरीकाक्ष श
रण मे भवाच्युत २६ इत्येव नियमं कृत्वा मध्याह्नसमये तथा । शालग्रामशिलाग्रे तु श्राद्ध कृत्वा यथाविधि २७ भोजयित्वा द्वि
जान् शुद्धान्दक्षिणाभि सुपूजितान् । पितृशेष समाघ्राय गवे दद्याद्विचक्षण २८ पूजयित्वा हृषीकेश धूपगंधादिभिस्तथा । रात्रौ जाग
रण कुर्यात्केशवस्य समीपत २९ ततः प्रभातसमये सप्राप्ते द्वादशीदिने । अर्चयित्वा हरिं भक्त्या भोजयित्वा द्विजानथ ३० बंधुदौहि
त्रपुत्राद्यैः स्वय भुंजीत वाग्यतः । अनेन विधिना राजन्कुरु व्रतमतंद्रित ३१ विष्णुलोकं प्रयास्यति पितरस्तव भूपते । इत्युक्त्वा नृ
पतिं राजन्मुनिरंतरधीयत ३२ यथोक्तविधिना राजा चकार व्रतमुत्तमम् । अतःपुरेण सहित पुत्रभृत्यसमन्वित ३३ कृते व्रते तु कौंतेय
पुष्पवृष्टिरभूद्दिवः । तत्पिता गरुडारूढो जगाम हरिमंदिरम् ३४ इंद्रसेनोपि राजर्षिः कृत्वा राज्यमकंटकम् । राज्ये निवेश्य तनय जगाम
त्रिदिव स्वयम् ३५ इंदिराव्रतमाहात्म्य तवाग्रे कथित मया । पठनाच्छ्रवणाच्चास्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ भुक्त्वेह निखिलान्भोगा
न्विष्णुलोके वसेच्चिरम् ३६ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपु० आश्विनकृष्णैकादश्या इंदिराख्याया माहात्म्य समाप्तम् ॥ ॥ अथाश्विनशुक्लपाशांकुशै

कादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । कथयस्व प्रसादेन भगवन्मधुसूदन । इषस्य शुक्लपक्षे तु किं नामैकादशी भवेत् १ श्रीकृष्ण उवाच ।
शृणु राजेंद्र वक्ष्यामि माहात्म्यं पापनाशनम् । शुक्लपक्षे चाश्वयुजि भवेदेकादशी तु या २ पाशांकुशेति विख्याता सर्वपापहरा परा ।
पद्मनाभाभिधानं तु पूजयेत्तत्र मानवः ३ सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यै स्वर्गमोक्षप्रदं नृणाम् । तपस्तप्त्वा नरस्तीव्रं चिरं सुनियतेंद्रियः ४ यत्फलं
समवाप्नोति तन्नत्वा गरुडध्वजम् । कृत्वाऽपि बहुशः पापं नरो मोहसमन्वितः ५ न याति नरकं घोरं नत्वा पापहरं हरिम् । पृथिव्यां या-
नि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च ६ तानि सर्वाण्यवाप्नोति विष्णोर्नामानुकीर्तनात् । देवं शार्ङ्गधरं विष्णुं ये प्रपन्ना जनार्दनम् ७ न
तेषां यमलोकश्च नृणां वै जायते क्वचित् । उपोष्यैकादशीमेकां प्रसंगेनापि मानवाः ८ न यांति यातनां याम्यां पापं कृत्वा तु दारुण-
म् । वैष्णवः पुरुषो भूत्वा शिवनिंदां करोति यः ९ यो निंदेद्वैष्णवं लोकं स याति नरकं ध्रुवम् ॥ अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च
१० एकादश्युपवासस्य कलां नार्हंति षोडशीम् । एकादशीसमं पुण्यं किंचिल्लोके न विद्यते ११ नेदृशं पावनं किंचित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
यादृशं पद्मनाभस्य दिनं पातकहानिदम् । तावत्पापानि तिष्ठंति देहेऽस्मिन्मनुजाधिप १२ यावन्नोपोष्यते जंतुः पद्मनाभदिनं शुभम् । व्या-
जेनापि कृता राजन्न दर्शयति भस्करिम् १३ स्वर्गमोक्षप्रदा ह्येषा शरीरारोग्यदायिनी । सुकलत्रप्रदा ह्येषा धनधान्यप्रदायिनी १४ न गंगा
न गया राजन्न काशी न च पुष्करम् । न चापि कौरवं क्षेत्रं पुण्यं भूप हरेर्दिनात् १५ रात्रौ जागरणं कृत्वा समुपोष्य हरेर्दिनम् । अ-
नायासेन भूपाल प्राप्यते वैष्णवं पदम् १६ दश वै मातृके पक्षे दश राजेंद्र पैतृके । प्रियाया दश पक्षे तु पुरुषानुद्धरेन्नरः १७ चतुर्भु-
जा दिव्यरूपा नागारिकृतकेतनाः । स्रग्विणः पीतवस्त्राश्च प्रयांति हरिमंदिरम् १८ बालत्वे यौवनत्वे च वृद्धत्वेपि नृपोत्तम । उपोष्य

द्वादशीन्यून नेति पापोपि दुर्गतिम् १९ पाशांकुशामुपोष्यैव आश्विने चासितेतरे । सर्वपापविनिर्मुक्तो हरिलोकं स गच्छति २० दत्त्वा
हेमतिलान्भूमिं गामन्नमुदकं तथा । उपानद्वस्त्रछत्रादि न पश्यति यमं नरः २१ यस्य पुण्यविहीनानि दिनान्यपगतानि च । स लो-
हकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति २२ अवध्य दिवसं कुर्याद्दरिद्रोपि नृपोत्तम । समाचरन्यथाशक्ति स्नानदानादिकाः क्रियाः २३ तडागा
रामसौधानां सत्राणां पुण्यकर्मणाम् । कर्तारो नैव पश्यंति घोरास्तां यमयातनाम् २४ दीर्घायुषो धनाढ्याश्च कुलीना रोगवर्जिताः ।
दृश्यंते मानवा लोके पुण्यकर्तार ईदृशाः २५ किमत्र बहुनोक्तेन पापधर्मेण दुर्गतिम् । आरोहंति दिवं धर्मैर्नात्र कार्या विचारणा २६
इति ते कथितं राजन्यत्पृष्टोऽहं त्वयाऽनघ । पाशांकुशाया माहात्म्यं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि २७ ॥ इति श्रीब्रह्मांडपु० आश्विनशुक्लैका-
दश्याः पाशांकुशाया माहात्म्यं सं० ॥ ॥ अथ कार्तिककृष्णरमानामैकादशीकथा ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच । कथयस्व प्रसादेन मम स्ने
हाज्जनार्दन । कार्तिकस्यासिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् १ श्रीकृष्ण उवाच । श्रूयतां राजशार्दूल कथयामि तवाग्रतः । कार्तिके कृ
ष्णपक्षे तु रमानाम्नी सुशोभना २ एकादशी समाख्याता महापापहरा परा । अस्याः प्रसंगतो राजन्माहात्म्यं प्रवदामि ते ३ मुचुकुंद
इति ख्यातो बभूव नृपतिः पुरा । देवेंद्रेण समं यस्य मित्रत्वमभवन्नृप ४ यमेन वरुणेनैव कुबेरेण समं तथा । बिभीषणेन चैतस्य सखि
त्वमभवत्सह ५ विष्णुभक्तः सत्यसंधो बभूव नृपतिः सदा । तस्यैवं शासतो राजन्राज्यं निहतकंटकम् ६ बभूव दुहिता गेहे चंद्रभागा
सरिद्वरा । शोभनाय च सा दत्ता चंद्रसेनसुताय वै ७ स कदाचित्समायातः श्वशुरस्य गृहे नृप । एकादशीव्रतमिदं समायातं सुपुण्य
दम् ८ समागते व्रतदिने चंद्रभागा स्वचिंतयत् । किं भविष्यति देवेश मम भर्तापि दुर्बलः ९ क्षुधा न सहते सोऽयं पिता [illegible]

नः। पटहस्ताड्यते यस्य संप्राप्ते दशमीदिने १० न भोक्तव्यं न भोक्तव्यं न भोक्तव्यं हरेर्दिने। श्रुत्वा पटहनिर्घोषं शोभनस्त्वब्रवीत्प्रियाम् ११
किं कर्तव्यं मया कांते देहि शिक्षां सुशोभने। कृतेन येन मे सम्यग्जीवितं न विनश्यति १२ चंद्रभागोवाच। मत्पितुर्वेश्मनि विभो भो-
क्तव्यं नापि केनचित्। गजैरश्वैस्तथा चोष्ट्रैरन्यैः पशुभिरेव च १३ तृणमन्नं तथा वारि न भोक्तव्यं हरेर्दिने। मानवैश्च कुतः कांत भु-
ज्यते हरिवासरे १४ यदि त्वं भोक्ष्यसे कांत ततो गेहात्प्रयास्यताम्। एवं विचार्य मनसा सुदृढं मानसं कुरु १५ शोभन उवाच। स-
त्यमेव त्वयैवोक्तं करिष्येऽहमुपोषणम्। दैवेन विहितं यद्वै तत्तथैव भविष्यति १६ इति दिष्टे मतिं कृत्वा चकार व्रतमुत्तमम्। क्षुत्तृषा-
पीडिततनुः स बभूवातिदुःखितः १७ इति चिंतयतस्तस्य आदित्योऽस्तमगाद्गिरिम्। वैष्णवानां नराणां सा निशा हर्षविवर्धिनी १८
हरिपूजारतानां च जागरासक्तचेतसाम्। बभूव नृपशार्दूल शोभनस्यातिदुःखदा १९ रवेरुदयवेलायां शोभनः पंचतां गतः। दाहयामा-
स राजा तं राजयोग्यैश्च दारुभिः २० चंद्रभागा नात्मदेहं ददाह पितृवारिता। कृत्वौर्ध्वदेहिकं तस्य तस्थौ जनकवेश्मनि २१ शोभ-
नेन नृपश्रेष्ठ रमाव्रतप्रभावतः। प्राप्तं देवपुरं रम्यं मंदराचलसानुनि २२ अनुत्तममनाधृष्यमसंख्येयगुणान्वितम्। हेमस्तंभमयैः सौधै
रत्नवैडूर्यमंडितैः २३ स्फाटिकैर्विविधाकारैर्विचित्रैरुपशोभितम्। सिंहासनसमारूढः सुश्वेतच्छत्रचामरः २४ किरीटकुंडलयुतो हारकेयूर-
भूषितः। स्तूयमानश्च गंधर्वैरप्सरोगणसेवितः २५ शोभनः शोभते तत्र देवराडपरो यथा। सोमशर्मेति विख्यातो मुचुकुंदपुरे वसन्
२६ तीर्थयात्राप्रसंगेन भ्रमन्विप्रो ददर्श तम्। नृपजामातरं ज्ञात्वा तत्समीपं जगाम सः २७ आसनादुत्थितः शीघ्रं नमश्चक्रे द्विजो-

१ पटहः दुंदुभिः। २ सोमशर्मा विप्रस्तं ददर्शेत्युत्तरेण सम्बन्धः।

त्तमम् । चकार कुशलप्रश्नं श्वशुरस्य नृपस्य च १८ सोमशर्मोवाच । कुशलं वर्तते राजन् श्वशुरस्य गृहे तव । चंद्रभागा कुशलि
नी सर्वतः कुशलं पुरे १९ स्ववृत्तं कथ्यतां राजन्नाश्चर्यं परमं मम । पुरं विचित्रं रुचिरं न दृष्टं केनचित्क्वचित् २० एतदाचक्ष्व
नृपते कुत प्राप्तमिदं त्वया ॥ शोभन उवाच । कार्तिकस्यासिते पक्षे नाम्ना चैकादशी रमा २१ तामुपोष्य मया प्राप्तं द्विजेंद्र पुर
मध्रुवम् । ध्रुवं भवति येनैव तत्कुरुष्व द्विजोत्तम २२ द्विजेंद्र उवाच । कथमध्रुवमेतद्धि कथं हि भवति ध्रुवम् । तत्त्वं कथय राजेंद्र तत्क-
रिष्यामि न चान्यथा २३ शोभन उवाच । मयैतद्विहितं विप्र श्रद्धाहीनं व्रतोत्तमम् । तेनाहमध्रुवं मन्ये ध्रुवं भवति तच्छृणु २४ मुचुकुंदस्य दुहिता
चंद्रभागा सुशोभना । तस्यै कथय वृत्तांतं ध्रुवमेतद्भविष्यति २५ तच्छ्रुत्वाऽथ द्विजवरस्तस्यै सर्वं न्यवेदयत् । श्रुत्वाऽथ सा द्विजवचो
विस्मयोत्फुल्ललोचना २६ चंद्रभागोवाच । प्रत्यक्षमथवा स्वप्नस्त्वयैतत्कथ्यते द्विज । सोमशर्मोवाच । प्रत्यक्षं पुत्रि ते कांतो मया दृष्टो
महावने २७ देवतुल्यमनाधृष्यं दृष्टं तस्य पुरं मया । अध्रुवं तेन तत्प्रोक्तं ध्रुवं भवति तत्कुरु २८ चंद्रभागोवाच । तत्र मां नय विप्रर्षे
पतिदर्शनलालसाम् । आत्मनो व्रतपुण्येन करिष्यामि पुरं ध्रुवम् २९ आवयोर्द्विज संयोगो यथा भवति तत्कुरु । प्राप्यते हि महत्पुण्यं
कृत्वा योगं वियुक्तयोः ३० इति श्रुत्वा सह तया सोमशर्मा जगाम ह । आश्रमं वामदेवस्य मंदराचलसन्निधौ ३१ वामदेवोऽशृणोत्सर्वं वृ
त्तांतं कथितं तयोः । अभ्यषिंचच्चंद्रभागां वेदमंत्रैरथोज्ज्वलाम् ३२ ऋषिमंत्रप्रभावेण विष्णुवासरसेवनात् । दिव्यदेहा बभूवासौ दिव्यां गतिम
वाप ह ३३ पत्युः समीपमगमद्धर्षोत्फुल्ललोचना । सहर्षः शोभनोऽतीव दृष्ट्वा कांतां समागताम् ३४ समाहूय स्वके वामे पार्श्वे तां संन्यवे
शयत् । सा चोवाच प्रियं हर्षाच्चंद्रभागा प्रियं वचः ३५ शृणु कांत हितं वाक्यं यत्पुण्यं विद्यते मयि । अष्टवर्षाधिका जाता यदाहं पितृवेश्म

नि ४६ मया ततःप्रभृति च कृतमेकादशीव्रतम्। यथोक्तविधिसंयुक्तं श्रद्धायुक्तेन चेतसा ४७ तेन पुण्यप्रभावेण भविष्यति पुरं ध्रुवम्। सर्वकामसमृद्धं च यावदाभूतसंप्लवम् ४८ कृष्ण उवाच। एवं सा नृपशार्दूल रमते पतिना सह। दिव्यभोगा दिव्यरूपा दिव्याभरणभूषिता ४९शोभनोपि तया सार्द्धं रमते दिव्यविग्रहः। रमाव्रतप्रभावेण मंदराचलसानुनि ५० चिंतामणिसमा ह्येषा कामधेनुसमाऽथवा। रमाभिधाना नृपते तवाग्रे कथिता मया ५१ ईदृशं च व्रतं राजन्ये कुर्वंति नरोत्तमाः। ब्रह्महत्यादिपापानि नाशं यांति न संशयः ५२ एकादशीव्रतानां च पक्षयोरुभयोरपि। यथा शुक्ला तथा कृष्णा तिथिभेदं न कारयेत् ५३ सेवितैकादशी नृणां भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। धेनुः कृष्णा तथा श्वेता उभयोः सदृशं पयः ५४ तथैव तुल्यफलदं स्मृतमेकादशीव्रतम्। एकादशीव्रतानां च माहात्म्यं शृणुयान्नरः॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ५५ इति श्री० कार्तिककृष्णरमानामैकादशीमाहा० स०॥ अथ कार्तिकशुक्लप्रबोधिनीनामैकादशीकथा॥ ब्रह्मोवाच। प्रबोधिन्याश्च माहात्म्यं पापघ्नं पुण्यवर्द्धनम्। मुक्तिप्रदं सुबुद्धीनां शृणुष्व मुनिसत्तम १ तावद्गर्जंति विप्रेंद्र गंगाभागीरथी क्षितौ। यावन्नायाति पापघ्नी कार्तिके हरिबोधिनी २ तावद्गर्जंति तीर्थानि ह्यासमुद्रं सरांसि च। यावत्प्रबोधिनी विष्णोस्तिथिर्नायाति कार्तिकी ३ अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च। एकेनैवोपवासेन प्रबोधिन्यां लभेन्नरः ४ नारद उवाच। एकभुक्तेन किं पुण्यं किं पुण्यं नक्तभोजने। उपवासेन किं पुण्यं तन्मे ब्रूहि पितामह ५ ब्रह्मोवाच। एकभुक्तेन जन्मोत्थं नक्तेन द्विजनुर्भवम्। सप्तजन्मभवं पापमुपवासेन नश्यति ६ यद्दुर्लभं यदप्राप्यं त्रैलोक्ये न तु गोचरम्। यदप्यप्रार्थितं पुत्र ददाति हरिबोधिनी ७ मेरुमंदरमात्राणि पापान्युग्राणि यानि तु। एकेनैवोपवासेन दहते पापहारिणी ८ पूर्वजन्मसहस्रैस्तु यद्दुष्कर्म ह्युपार्जितम्। जागरेण प्रबोधिन्यां दहते तूलराशि-

वव् ९ उपवासं प्रबोधिन्या य करोति स्वभावतः । विधिवन्मुनिशार्दूल यथोक्तं लभते फलम् १० यथोक्तं सुकृतं यस्तु वि
धिवत्कुरुते नरः । स्वल्पं मुनिवरश्रेष्ठ मेरुतुल्यं भवेत्फलम् ११ विधिहीनं तु यः कुर्यात्सुकृतं मेरुमात्रकम् । अणुमात्रं न चाप्नोति फ-
लं धर्मस्य नारद १२ सन्ध्याहीने व्रतभ्रष्टे नास्तिके हेतुके शठे । नैतेषां तिष्ठते देहे धर्मशास्त्रविदूषके १३ परदाररते मूर्खे कृतघ्ने वंचके
तथा । धर्मो न तिष्ठते देहे एतेषामपि देहिनाम् १४ ब्राह्मणो वापि शूद्रो वा सेवते परयोषितम् । ब्राह्मणीं च विशेषेण चांडालसदृशा
वुभौ १५ सभर्तृकां वा विधवां ब्राह्मणो ब्राह्मणीं यदि । सेवते मुनिशार्दूल सान्वयो याति संक्षयम् १६ परदाराभिगमनं कुरुते यो द्वि
जाधमः । संततिर्न भवेत्तस्य फलं जन्मार्जितं नहि १७ गुरुणा सह विप्रेन्द्र योऽहंकारेण वर्तते । सुकृतान्नश्यते शीघ्रं धनं नाप्नोति संतति
म् १८ आचारभ्रष्टदेहानां वृषलीगामिनां सुत । यस्तेन सेव्यमानोपि धर्मस्तेषां पराङ्मुख १९ पापिनस्ते नरा लोके सगतिं पतितैः सह ।
ये कुर्वंति नृपश्रेष्ठ ते गच्छंति यमालयम् २० धर्मो नष्टो नृणां येषां स्वागवासनभोजने । तेषां वै नश्यते वत्स कीर्तिरायुः प्रजा सु-
खम् २१ साधूनामपमानं तु ये कुर्वंति नराधमाः । त्रिवर्गफलहीनास्ते दह्यंते नरकाग्निना २२ कृत्वा ऽवमानं साधूनां ये कुप्यंति नरा
धमाः । वारयंति न ये मूढास्ते पश्यंति कुलक्षयम् २३ आचारभ्रष्टदेहस्य हेतुकस्य शठस्य च । ददतो जुह्वतो वापि गतिस्तस्य न वि-
द्यते २४ तस्मात्सदाचारैर्लिंकिंचिदशुभं लोकगर्हितम् । सदाचाररता भाव्यं यथा धर्मो न नश्यति २५ ये ध्यायंति मनोवृत्त्या करिष्यामः
प्रबोधिनीम् । तेषां विलीयते पापं पूर्वजन्मशतोद्भवम् २६ समतीतं भविष्यं च वर्तमानं कुलायुतम् । विष्णुलोकं नयत्याशु प्रबोधिन्यां
तु जागरे २७ वसंति पितरो हृष्टा विष्णुलोके स्वलंकृताः । विमुक्ता नारकैर्दुःखैः पूर्वकर्मसमुद्भवैः २८ कृत्वा तु पातकं घोरं ब्रह्महत्या

दिकं नरः । कृत्वा तु जागरं विष्णोर्धौतपापो भवेन्मुने २९ दुष्प्राप्यं यत्फलं विप्रेरश्वमेधादिभिर्मखैः । प्राप्यते तत्सुखेनैव प्रबोधिन्यां तु
जागरे ३० आप्लुत्य सर्वतीर्थेषु दत्त्वा गाः कांचनं महीम् । न तत्फलमवाप्नोति यत्कृत्वा जागरं हरेः ३१ जातः स एव सुकृती कुलं तेनैव
पावितम् । कार्तिके मुनिशार्दूल कृता येन प्रबोधिनी ३२ यथा ध्रुवं नृणां मृत्युर्धननाशस्तथा ध्रुवम् । इति ज्ञात्वा मुनिश्रेष्ठ कर्तव्यं वै-
ष्णवं दिनम् ३३ यानि कानि च तीर्थानि त्रैलोक्ये संभवंति च । तानि तस्य गृहे सम्यग्यः करोति प्रबोधिनीम् ३४ सर्वकृत्यं परित्य-
ज्य तुष्ट्यर्थं चक्रपाणिनः । उपोष्यैकादशीं रम्यां कार्तिके हरिबोधिनीम् ३५ स ज्ञानी स च योगी च स तपस्वी जितेंद्रियः । भोगो मो-
क्षश्च तस्यास्ति भूपास्ते हरिबोधिनीम् ३६ विष्णुप्रियतरा ह्येषा धर्मसारस्य दायिनी । सकृदेनामुपोष्यैव मुक्तिभाक् भवेन्नरः ३७ प्रबो-
धिनीमुपोषित्वा न गर्भे विशते नरः । सर्वधर्मान्परित्यज्य तस्मात्कुर्वीत नारद ३८ कर्मणा मनसा वाचा पापं यत्समुपार्जितम् । त-
त्क्षालयति गोविंदः प्रबोधिन्यां तु जागरे ३९ स्नानं दानं जपो होमः समुद्दिश्य जनार्दनम् । नरैर्यत्क्रियते वत्स प्रबोधिन्यां तदक्षयम् ४०
ये ऽर्चयंति नरास्तस्यां भक्त्या देवं च माधवम् । समुपोष्य प्रमुच्यंते पापैस्ते शतजन्मभिः ४१ महाव्रतमिदं पुत्र महापापौघनाशनम् ।
प्रबोधवासरं विष्णोर्विधिवत्समुपोषयेत् ४२ व्रतेनानेन देवेशं परितोष्य जनार्दनम् । विराजयन्दिशः सर्वाः प्रयाति भवनं हरेः ४३ कर्त-
व्यैषा प्रयत्नेन नरैः कांतिमभीप्सुभिः । द्वादशी द्विपदांश्रेष्ठ कार्तिके तु प्रबोधिनी ४४ बाल्ये यच्चार्जितं वत्स यौवने वार्धके तथा । श-
तजन्मकृतं पापं स्वल्पं वा यदि वा बहु ४५ शुष्कमार्द्रं मुनिश्रेष्ठ स्वगुह्यमपि नारद । तत्क्षालयति गोविंदो ह्यस्यामभ्यर्च्य भक्तितः ४६

१ कृते ' सती ' इत्यभ्याहारः ।

धनधान्यवहा पुण्या सर्वपापहरा परा । तामुपोष्य हरेर्भक्त्या दुर्लभं न भवेत्कचित् ५७ चंद्रसूर्योपरागे च यत्फलं परिकीर्तितम् । तत्सहस्रगुणं प्रोक्तं प्रबोधिन्यां तु जागरात् ४८ स्नानं दानं जपो होमः स्वाध्यायो ऽभ्यर्चनं हरेः । तत्सर्वं कोटितुल्यं तु प्रबोधिन्यां तु यत्कृतम् ४९ जन्मप्रभृति यत्पुण्यं नरेणाभ्यर्जितं भवेत् । वृथा भवति तत्सर्वमकृत्वा कार्तिकव्रतम् ५० अकृत्वा नियमं विष्णोः कार्तिकं यः क्षिपेन्नरः । जन्मार्जितस्य पुण्यस्य फलं नाप्नोति नारद ५१ तस्मात्त्वया प्रयत्नेन देवदेवो जनार्दनः । उपासनीयो विप्रेन्द्र सर्वकामफलप्रदः ५२ परान्नं वर्जयेद्यस्तु कार्तिके विष्णुतत्परः । परान्नवर्जनाद्वत्स चांद्रायणफलं लभेत् ५३ न तथा तुष्यते यज्ञैर्न दानैर्वा गजादिभिः । यथाशास्त्रकथालापैः कार्तिके मधुसूदनः ५४ ये कुर्वंति कथां विष्णोर्ये शृण्वंति समाहिताः । श्लोकार्द्धं श्लोकमेकं वा कार्तिके गोशतं फलम् ५५ सर्वधर्मान्परित्यज्य कार्तिके केशवाग्रतः । शास्त्रावधारणं कार्यं श्रोतव्यं च सदा मुने ५६ श्रेयसां लोभबुद्ध्या वा यः करोति हरेः कथाम् । कार्तिके मुनिशार्दूल कुलानां तारयेच्छतम् ५७ नित्यं शास्त्रविनोदेन कार्तिकं यः क्षपेन्नरः । निर्दहेत्सर्वपापानि यज्ञायुतफलं लभेत् ५८ नियमेन नरो यस्तु शृणुते वैष्णवीं कथाम् । कार्तिके तु विशेषेण गोसहस्रफलं लभेत् ५९ प्रबोधवासरे विष्णोर्युस्ते यो हरेः कथाम् । सप्तद्वीपवतीदाने तत्फलं लभते मुने ६० श्रुत्वा विष्णुकथां दिव्यां ये ऽर्चयंति कथाविदम् । स्वशक्त्या मुनिशार्दूल तेषां लोकाः सनातनाः ६१ ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वा नारदः पुनरब्रवीत् ॥ नारद उवाच । विधानं ब्रूहि मे स्वामिन्नेकादश्याः सुरोत्तम ६२ चीर्णेन येन भगवन्यादृशं फलमाप्नुयात् । नारदस्य वचः श्रुत्वा ब्रह्मा वचनमब्रवीत् ६३ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय ह्येकादश्यां द्विजोत्तम । स्नानं चैव प्रकर्तव्यं दंतधावनपूर्वकम् ६४ नद्यां तडागे कूपे वा वाप्यां गेहे तथैव च । केशवश्चैव संपूज्यः कथायाः श्रवणं

तथा ॥ नियमार्थे महाभाग इमं मंत्रमुदीरयेत् ६५ एकादश्यां निराहारः स्थित्वाऽहनि परे ह्यहम् । भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत ६६ अमुं मंत्रं समुच्चार्य देवदेवस्य चक्रिणः । भक्तिभावेन तुष्टात्मा ह्युपवासं समर्पयेत् ६७ रात्रौ जागरणं कार्यं देवदेवस्य सन्निधौ । गीतं नृत्यं च वाद्यं च तथा कृष्णकथां मुने ६८ यः करोति स पुण्यात्मा त्रैलोक्योपरिसंस्थितः ६९ बहुपुष्पैर्बहुफलैः कर्पूरागुरुकुंकुमैः । हरेः पूजा विधातव्या कार्तिक्यां बोधवासरे ७० वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं संप्राप्ते हरिवासरे । यस्मात्पुण्यमसंख्यातं प्राप्यते मुनिसत्तम ७१ फलैर्नानाविधैर्दिव्यैः प्रबोधिन्यां तु जागरात् । शंखे तोयं समादाय ह्यर्घ्यो देयो जनार्दने ७२ यत्फलं सर्वतीर्थेषु सर्वदानेषु तत्फलम् । यत्फलं कोटिगुणितं दत्त्वाऽर्घ्यं बोधवासरे ७३ अगस्त्यकुसुमैर्देवं पूजयेद्यो जनार्दनम् । देवेंद्रोऽपि मुनिश्रेष्ठ करोति करसंपुटम् ७४ न तत्करोति विप्रेंद्र तपसा तोषितो हरिः । यत्करोति हृषीकेशो मुनिपुष्पैरलंकृतः[1] ७५ बिल्वपत्रैश्च ये कृष्णं कार्तिके कलिवर्द्धन । पूजयंति महाभक्त्या मुक्तिस्तेषां मयोदिता ७६ तुलसीदलपुष्पैश्च पूजयंति जनार्दनम् । कार्तिके सकलं वत्स पापं जन्मायुतं दहेत् ७७ दृष्टा स्पृष्टा ऽथवा ध्याता कीर्तिता नमिता स्तुता । रोपिता सेचिता नित्यं पूजिता तुलसी शुभा ७८ नवधा तुलसीभक्तिं ये कुर्वंति दिने दिने । युगकोटिसहस्राणि ते वसंति हरेर्गृहे ७९ रोपिता तुलसी यावत्कुरुते मूलविस्तरम् । तावद्युगसहस्राणि तनोति सुकृतं मुने ८० यावच्छाखाप्रशाखाभिर्बीजपुष्पदलैर्मुने । रोपिता तुलसी पुंभिर्वर्द्धते वसुधातले ८१ कुले तेषां तु ये जाता ये भविष्यंति ये गताः । आकल्पयुगसाहस्रं तेषां वासो हरेर्गृहे ८२ कदंबकुसुमैर्देवं ये ऽर्चयंति जना-

१ मुनिपुष्पैः अगस्थिपुष्पै. ।

र्दनम् । तेषां यमालय नैव प्रसादाचक्रपाणिनः ८३ एक। कर्दंबकुसुम प्रीतो भवति केशवः । किं पुनः पूजितो विप्र सर्वकामप्रदो हरिः
८४ यः पुनः पाटलापुष्पैर्वसते गरुडध्वजम् । अर्चयेत्परया भक्त्या मुक्तिभागी भवेद्धि स ८५ बकुलाशोककुसुमैर्ये ऽर्चयंति जगत्प-
तिम् । विशोकास्ते भविष्यति यावच्चंद्रदिवाकरौ ८६ ये ऽर्चयति जगन्नाथं करवीरैः सितासितैः । चतुर्युगानि विप्रेंद्र प्रीतो भवति केश
व ८७ मजरीं सहकारस्य केशवोपरि ये नराः । यच्छति ते महाभागा गोकोटिफलभागिन ८८ दूर्वांकुरैर्हरेर्यस्तु पूजां काले प्रयच्छ
ति । पूजाफल शतगुणं सम्पगाप्नोति मानवः ८९ शमीपत्रैस्तु ये देव पूजयति सुखप्रदम् । यममार्गो महाघोरो निस्तीर्णस्तैस्तु नारद
९० वर्षाकाले तु देवेश कुसुमैश्चंपकोद्भवैः । ये ऽर्चयति न ते मर्त्याः ससरेयुः पुनर्भवे ९१ कुमीपुष्प तु विप्रर्षे ये यच्छति जनार्दनम् ।
सुवर्णपलमात्र ते लभते वै फल मुने ९२ सुवर्णकेतकीपुष्प यो ददाति जनार्दने । कोटिजन्मार्जित पाप दहते गरुडध्वज ९३ कुंकुमा-
रुणवर्णा च गधाढ्यां शतपत्रिकाम् । यो ददाति जगन्नाथे श्वेतद्वीपालये वसेत ९४ एव सपूज्य रात्रौ च केशव भुक्तिमुक्तिदम् । प्रातरु
त्थाय च ब्रह्मन् गत्वा तु सजलां नदीम् ९५ तत्र स्नात्वा जपित्वा च कृत्वा पूर्वाह्णिकाः क्रियाः । गृहे गत्वा च सपूज्यः केशवो विधिव-
न्नरैः ९६ व्रतस्य पूरणार्थाय ब्राह्मणान्भोजयेत्सुधी । क्षमापयेच्च शिरसा भक्तियुक्तेन चेतसा ९७ गुरुपूजा ततः कार्या भोजनाच्छाद-
नादिभिः । दक्षिणा गौश्च दातव्या तुष्टयर्थं चक्रपाणिनः ९८ भूयसी चैव दातव्या ब्राह्मणेभ्यः प्रयत्नतः । नियमश्चैव सत्याज्यो ब्राह्मणा
ग्रे प्रयत्नतः ९९ कथयित्वा द्विजेभ्यस्तु दद्याच्छक्तया च दक्षिणाम् । नक्तभोजी नरो राजन् ब्राह्मणान्भोजयेच्छुभान् १०० अयाचिते

१ कुमीपुष्पं गुग्गुलुपुष्पम् ।

बलीवर्दं सहिरण्यं प्रदापयेत् । अमांसाशी नरो यस्तु प्रदद्देद्गां सदक्षिणाम् १ धात्रीस्नायी नरो दद्याद्दधिमाक्षिकमेव च । फलानां नियमे राजन् फलदानं समाचरेत् २ तैलस्थाने घृतं देयं घृतस्थाने पयः स्मृतम् । धान्यानां नियमे राजन् दीयंते शालितंडुलाः ३ दद्याद्भूशयने शय्यां सतूलां सपरिच्छदाम् । पत्रभोजी नरो राजन् भाजनं घृतसंयुतम् ४ मौने घंटां तिलांश्चैव सहिरण्यं प्रदापयेत् । दंपत्योर्भोजनं देयं निःस्नेहं सर्पिसात्कृतम् ५ धारणे च स्वकेशानामादर्शं दापयेद्बुधः । उपानहौ प्रदातव्यौ उपानत्परिवर्जनात् ६ लवणस्य च संत्यागे शर्करां च प्रदापयेत् । नित्यं दीपप्रदो यस्तु विष्णोर्वा विबुधालये ७ सदीपं सघृतं ताम्रं कांचनं वा दशायुतम् । प्रदद्याद्विष्णुभक्ताय संपूर्णव्रतहेतवे ८ एकांतरोपवासे तु कुंभानष्टौ प्रदापयेत् । सवस्त्रान्कांचनोपेतान् सर्वान्सालंकृतान्छुभान् ९ सर्वेषामप्यलाभे तु यथोक्तकरणं विना । द्विजवाक्यं स्मृतं राजन् संपूर्णव्रतसिद्धिदम् ११० नत्वा विसर्जयेद्विप्रान् ततो भुंजीत च स्वयम् । यत्त्यक्तं चतुरो मासान् समाप्तिं तस्य चाचरेत् ११ एवं य आचरेत्पार्थ सो ऽनंतफलमाप्नुयात् । अवसाने तु राजेंद्र वासुदेवपुरं व्रजेत् १२ यश्चाविघ्नं समाप्यैवं चातुर्मास्यव्रतं नृप । स भवेत्कृतकृत्यस्तु न पुनर्मानुषो भवेत् १३ एतत्कृत्वा महीपाल परिपूर्णं व्रतं भवेत् । व्रतवैकल्यमासाद्य ह्यंधः कुष्ठी प्रजायते १४ एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टो ऽहमिह त्वया । पठनाच्छ्रवणाद्वापि लभेद्गोदानजं फलम् ११५ ॥ इति श्रीस्कंदपु० कार्तिकशुक्लप्रबोधिनीनामैकादशीमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ ॥ अथाधिकशुक्लपद्मिनीनामैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच । मलिम्लुचस्य मासस्य का वा ह्येकादशी भवेत् । किं नाम को विधिस्तस्याः कथयस्व जनार्दन १ श्रीकृष्ण उवाच । मम मासस्य या पुण्या प्रोक्ता नाम्ना च पद्मिनी । सोपोषिता प्रयत्नेन पद्मनाभपुरं नयेत् २ मम मासे महापुण्या कीर्तिता कल्मषापहा । तस्याः फलं कथ-

यितु न शक्रमतुरानन २ नारदाय पुरा मोक्तं विधिना व्रतमुत्तमम् । पद्मिन्याः पापराशिघ्नं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ४ श्रुत्वा वाक्य मुरारेस्तु
प्रेमाचातिमुदान्वितः । युधिष्ठिरो जगन्नाथं विधिं पप्रच्छ धर्मवित् ५ श्रुत्वा राज्ञस्तु वचन मीत्युत्फुल्लांबुजेक्षणः । शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि मुनी-
नामप्यगोचरम् ६ दशमीदिवसे मासे व्रतारंभो विधियते । कांस्यं मांसं मसूराश्च चणका कोद्रवास्तथा ७ शाक मधु परान्न च दशम्यां दश व
र्जयेत् । हविष्यान्नं च भुंजीत ह्यक्षारलवणं तथा ८ भूमिशायी ब्रह्मचारी भवेच्च दशमीदिने । एकादशीदिने मासे प्रातरुत्थाय सादरम् ॥
विधाय च मलोत्सर्गं न कुर्याद्दंतधावनम् ९ कृत्वा द्वादश गंडूषान् शुचिर्भूत्वा समाहितः । सूर्योदये शुभे तीर्थे स्नानार्थं प्रव्रजेत्सुधीः १० गो
मयं मृत्तिकां गृह्य तिलान्दर्भांश्छुचिस्तथा । चूर्णैरामलकीभूतैर्विधिना स्नानमाचरेत् ११ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना । मृत्तिके
ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिमंत्रिता १२ त्वं मे कुरु पवित्रांगं क्षमा नेत्रे शिरोरुहे । हरिपूजनयोग्यं मां मृत्तिके कुरु ते नमः १३ सर्वौषधि-
समुत्पन्न गवोदरमधिष्ठितम् । पवित्रकरण भूमेर्मां पावयतु गोमयम् १४ ब्रह्मष्ठीवनसंभूता धात्री भुवनपावनी । सस्पृष्टा पावयांग मे नि
र्मलं कुरु ते नमः १५ देवदेव जगन्नाथ शंखचक्रगदाधर । देहि विष्णो ममानुज्ञां तव तीर्थावगाहने १६ वारुणांश्च जपेन्मंत्रान्स्नान कुर्या
द्विधानतः । गंगादितीर्थं संस्मृत्य यत्र कुत्र जलाशये १७ पश्चात्समार्जयेद्गात्र विधिना नृपसत्तम । मुखे पृष्ठे च हृदये बाह्वोः शिरसि
पाप्यथ १८ परिधाय सुवासः शुभ्र शुचि ह्यसंधितम् । ततः कुर्याद्धरेः पूजां महापाप विनश्यति १९ संध्यामुपास्य विधिना तर्पयित्वा
पितॄन्सुरान् । हरेर्मंदिरमागम्य पूजयेत्कमलापतिम् २० स्वर्णमापकृतं देवं राधिकासहितं हरिम् । पार्वत्या सहितं देव पूजयेद्विधिपूर्व-

१ देवं शंकरम् ॥

कम् २१ कुंभोपरि न्यसेद्देवं ताम्रपात्रेऽथ मृन्मये । दिव्यवस्त्रसमायुक्ते दिव्यगंधानुवासिते २२ तस्योपरि न्यसेत्पात्रं ताम्रं रा[illegible]हिर-
ण्मयम् । तस्मिन्संस्नापयेद्देवं विधिना पूजयेत्ततः २३ संस्नाप्य सलिलैः श्रेष्ठैर्गंधधूपादिवासितैः । चंदनागरुकर्पूरैः पूजयेद्देवमीश्वरम् [illegible]
नानाकुसुमकस्तूरीकुंकुमैश्च सितांबुजैः । तत्कालजातैः कुसुमैः पूजयेत्परमेश्वरम् २५ नैवेद्यैर्विविधैः शक्त्या तथा नीराजनादिभिः । धूपै
र्दीपैः सकर्पूरैः पूजयेत्केशवं शिवम् २६ नृत्यं गीतं तदग्रे तु कुर्याद्भक्तिपुरःसरम् । नालपेत्पतितान्पापांस्तस्मिन्नहनि न स्पृशेत् २७
नानृतं हि वदेद्वाक्यं सत्यपूतं वचो वदेत् । रजस्वलां न स्पृशेत नर्निदेद्ब्राह्मणं गुरुम् २८ पुराणं पुरतो विष्णोः शृणुयात्सहवै-
ष्णवैः । निर्जला सा प्रकर्तव्या या च शुक्ले मलिम्लुचे २९ जलपानेन वा कुर्याद्दुग्धाहारेण नान्यथा । रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवादि-
त्रसंयुतम् ३० प्रथमे प्रहरे पूजा नारिकेलार्घमुत्तमम् । द्वितीये श्रीफलैश्चैव तृतीये बीजपूरकैः ३१ चतुर्थे पूजयेत्पूगैर्नारिंगैश्च विशेषतः।
प्रथमे प्रहरे पुण्यमग्निष्टोमस्य जायते ३२ द्वितीये वाजपेयस्य तृतीये हयमेधजम् । चतुर्थे राजसूयस्य जाग्रतो जायते फलम् ३३ ना-
तःपरतरं पुण्यं नातःपरतरा मखाः । नातःपरतरा विद्या नातःपरतरं तपः ३४ पृथिव्यां यानि तीर्थानि क्षेत्राण्यायतनानि च । तत्स्ना-
तानि च दृष्टानि येनाकारि हरेर्व्रतम् ३५ एवं जागरणं कुर्याद्यावत्सूर्योदयो भवेत् । सूर्योदये शुभे तीर्थे गत्वा स्नानं समाचरेत् ३६ स्नात्वैवा
गत्य भावेन पूजयेद्देवमीश्वरम् । पूर्वोदितेन विधिना भोजयेद्ब्राह्मणान् शुभान् ३७ कुंभादिकं च यत्सर्वं प्रतिमां केशवस्य च । पूजयित्वा
विधानेन ब्राह्मणाय समर्पयेत् ३८ एवंविधं व्रतं यो वै कुरुते भुवि मानवः । सफलं जायते तस्य व्रतं मुक्तिफलप्रदम् ३९ एतत्ते सर्वमा-
ख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयाऽनघ । मलिम्लुचस्य मासस्य शुक्लाया विधिमुत्तमम् ४० व्रतानि तेन चीर्णानि सर्वाणि नृपनंदन । पद्मिन्याः प्री-

वियुक्तो यः कुरुते व्रतमुत्तमम् ४१ कृष्णा या मलमासस्य विधिस्तस्यास्तु तादृशः । परमा सा तु विज्ञेया सर्वपापक्षयंकरी ४२ अत्र ते
कथयिष्यामि कथामेकां मनोरमाम् । नारदाय पुलस्त्येन विस्तरेण निवेदिताम् ४३ कार्तवीर्येण कारायां निक्षिप्तं वीक्ष्य रावणम् । वि-
मोचितं पुलस्त्येन याचयित्वा महीपतिम् ४४ तदाश्चर्यं तदा श्रुत्वा नारदो दिव्यदर्शनः । पप्रच्छ च यथाभक्त्या पुलस्त्यं मुनिपुंगवम्
४५ नारद उवाच । दशाननेन विजिताः सर्वे देवाः सवासवाः । कार्तवीर्येण विजितः कथं रणविशारदः ४६ नारदस्य वचः श्रुत्वा पुलस्त्यो
मुनिरब्रवीत् । शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कार्तवीर्यसमुद्भवम् ४७ पुरा त्रेतायुगे राजन्माहिष्मत्यां महत्तरः । हैहयानां कुले जातः कृतवीर्यो
महीपतिः ४८ सहस्रं प्रमदास्तस्य नृपस्य प्राणवल्लभाः । न तासां तनयं कश्चिल्लेभे राज्यधुरंधरम् ४९ यजन्देवान्पितॄन् सिद्धान्भिषकि
त्सान्वृहद्धरान् । तेषां वाक्याद्व्रतं कुर्वन्न लब्धस्तनयस्तदा ५० सुतं विना तदा राज्यं न सुखाय महीपतेः । क्षुधितस्य यथा भोगा न
भवन्ति सुखप्रदाः ५१ विचार्य चित्ते नृपतिस्तपस्तप्तुं मनोदधे । तपसैव सदा सिद्धिर्जायते मनसेप्सिता ५२ इत्युक्त्वा सहभार्यश्च चीर
वासा जटाधरः । तपस्तप्तुं गृहं न्यस्य स विचार्य सुमंत्रिणे ५३ निर्गतं नृपतिं वीक्ष्य पद्मिनी प्रमदोत्तमा । हरिश्चन्द्रस्य तनया इक्ष्वाकु
कुलसंभवा ५४ पतिव्रता प्रियं दृष्ट्वा तपस्तप्तुं कृतोद्यमम् । भूषणानि परित्यज्य चीरमेकं समाश्रयत् ५५ जगाम पतिना सार्द्धं पर्वते
गन्धमादने । गत्वा तत्र तपस्तेपे वर्षाणामयुतं नृपः ५६ न लेभे तनयं राज्ये ध्यायन्देवं गदाधरम् । अस्थिस्नायुमयं कांतं दृष्ट्वा सा प्रम
दोत्तमा ५७ अनुसूयां महासाध्वीं पप्रच्छ विनयान्विता । भर्तुः प्रतपतः साध्वि वर्षाणामयुतं गतम् ५८ तथापि न प्रसन्नो ऽभूत्के-

१ कृष्णा या एकादशी इत्यर्थः । २ रावण इत्यर्थः ।

कष्टनाशनः। व्रतं मम महाभागे कथयस्व यथातथम् ५९ येन प्रसन्नो भगवान्मम भक्त्या प्रजायते। येन मे जायते पुत्रश्चक्रवर्ती महत्तरः ६० श्रुत्वा तस्यास्तु वचनं पतिव्रतपरायणा। यं प्रव्रजंतं नृपतिं स्वयं प्रव्राज दीक्षितम् ६१ तदा प्रोवाच संहृष्टा पद्मिनीं पद्मलोचनाम्। स्नात्वा मलिम्लुचे सुभ्रु मासद्वादशसंमते ६२ त्रिंशद्दिनैश्च भवति मासः पूर्णः शुभानने। तन्मध्ये द्वादशीयुग्मं पद्मिनी परमा तथा ६३ उपोष्य तत्प्रकर्तव्यं विधिना जागरैः समम्। शीघ्रं प्रसन्नो भगवान्भविष्यति सुतप्रदः ६४ इत्युक्त्वा ऽकथयत्सर्वं मया पूर्वोदितं नृप। विधिं व्रतस्य विधिवत्प्रसन्ना कर्दमांगजा ६५ श्रुत्वा व्रतविधिं सर्वं यथोक्तमनुसूयया। चक्रे चार्वंगी तत्सर्वं पुत्रप्राप्तिमभीप्सती ६६ एकादश्यां निराहारा सदा जाता च निर्जला। जागरेण युता रात्रौ गीतनृत्यसमन्विता ६७ पूर्णे व्रते च वै शीघ्रं प्रसन्नः केशवः स्वयम्। बभाषे गरुडारूढो वरं वरय शोभने ६८ श्रुत्वा वाक्यं जगद्धातुः स्तुत्वा प्रीतया शुचिस्मिता। ययाचे ऽद्य वरं ब्रूहि मम भर्तुर्बृहत्तरम् ६९ पद्मिन्यास्तद्वचः श्रुत्वा कृष्णः प्रीतः प्रियंवदाम् त्वयाऽहं तोषितो भद्रे प्रत्युवाच जनार्दनः[1] ७० मलिम्लुचश्च मासोऽसौ नान्यो मे प्रीतिदायकः। तन्मध्यैकादशी रम्या मम प्रीतिविवर्द्धना ७१ सा त्वयोपोषिता सुभ्रु यथोक्तविधिना शुभे। तेन त्वया प्रसन्नोऽहं कृतोस्मि सुभगानने ७२ तव भर्तुः प्रदास्यामि वरं यन्मनसेप्सितम्। इत्युक्त्वा नृपतिं प्राह विष्णुर्विश्वार्तिनाशनः ७३ वरं वरय राजेंद्र यत्ते मनसि कांक्षितम्। संतोषितोहं प्रियया तव सिद्धिचिकीर्षया ७४ श्रुत्वा तद्वचनं विष्णोः प्रसन्नो नृपसत्तमः। वव्रे सुतं महाबाहुं सर्वलोकनमस्कृतम् ७५ न देवैर्मानुषैर्नागैर्दैत्यदानवराक्षसैः। जेतुं शक्यो जगन्नाथ विना त्वां मधुसूदन ७६ इत्युक्तो बाढमित्युक्त्वा तत्रैवांतरधीयत। नृपोपि सुप्रसन्नात्मा हृष्टः पुष्टः प्रियायुतः ७७ समायात्स्वपुरं रम्यं नरनारीम-

---

१ जनार्दनः प्रीतः सन्प्रियवदां (बृहद्रथपत्नीं) प्रत्युवाचेत्यन्वयः। त्वयाऽहं तोषितो भद्रे, इत्यस्यान्वयस्तूत्तरेण।

स्पितस्तत्र विचक्षण २५ तावत्तत्र समायात' कौंडिन्यो मुनिसत्तमः । दृष्ट्वा समागत हृष्टः सुमेधा द्विजसत्तमः २६ सभार्यः सहसोत्थाय
नमाम शिरसा सकृत् । धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि सफल जीवित मम २७ यहृष्टोसि महद्भाग्यादित्युवाच मुनीश्वरम् । दत्वा सुविष्टर
तस्मै पूजयामास त द्विजम् २८ भोजयित्वा विधानेन पप्रच्छ प्रमदोत्तमा । विद्धन्केन प्रकारेण दारिद्र्यस्य क्षयो भवेत् २९ विना दत्त
स्य लभ्येद्धन विद्यां कुटुंबिनीम् । मां मे भर्ता परित्यज्य गतुकामोऽद्य वर्तते ३० अन्यदेशे परॉल्लोकान्याचितु परपत्तने । रक्षितोऽस्ति
मया विद्धन्हेतुवाक्यैर्महत्तरैः ३१ नादत्त लभ्यते किंचिदित्युक्त्वा स निवारितः । मम भाग्यान्मुनींद्राद्य त्वमत्रैव समागतः ३२ त्वत्प्र
सादाद्दारिद्र्य मे शीघ्र नश्यत्यसशयम् । केनोपायेन विप्रेंद्र दारिद्र्य नश्यति ध्रुवम् ३३ कथयस्व कृपासिंधो व्रत तीर्थं तपादिक
म् । श्रुत्वा तस्या सुशीलाया भाषित मुनिपुगवः ३४ प्रोवाच प्रवर चित्ते विचार्य व्रतमुत्तमम् । सर्वपापोपशमन दुःखदारि
द्र्यनाशनम् ३५ परमा नाम विख्याता विष्णोस्तिथिरनुत्तमा । मलिम्लुचे तु या कृष्णा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ३६ तस्या उपोषण
कृत्वा धनधान्ययुतोभवेत् । विधिना जागरैः साक गीतवादित्रसंयुतम् ३७ धनदेन पुरा चीर्णं व्रतमेतत्सुशोभनम् । तदा हृष्टेन रुद्रेण
धनानामधिपः कृतः ३८ हरिश्चंद्रेण च कृत पुरा क्रीतसुतेन वै । पुनः प्राप्ता प्रिया तेन राज्य निहतकटकम् ३९ तस्मात्कुरु विशालाक्षि
व्रतमेतत्सुशोभनम् । विधिना विधियुक्तेन सम जागरणेन च ४० इत्युक्त्वा तद्विधिं सर्वं कथयामास वाडवः । प्रीत्या परमसतुष्टस्त-
तो भक्त्या प्रसादतः ४१ पुनः प्रोवाच तं विप्र पचरात्रिव्रत शुभम् । यस्यानुष्ठानमात्रेण भुक्तिर्मुक्तिश्च प्राप्यते ४२ परमा प्रस
प्रातः कृत्या पूर्वाह्णिक विधिम । कुर्यात्सनियमान् शक्त्या पंचरात्रिव्रतादराद् ४३ प्रातः स्नात्वा निराहारो यस्तिष्ठेद्दिनपचकम् स गच्छे

द्वैष्णवं स्थानं पितृमातृप्रियासमम् ४४ एकाशनस्तु यो भूयाद्दिनानां पंचकं नरः । सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ४५ स्नात्वा यो
भोजयेद्विप्रं दिनानां पंचकं नरः । भोजितं तेन विधिना सदेवासुरमानुषम् ४६ पूर्णकुंभं सुतोयेन यो ददाति द्विजातये । दत्तं
तेनैव सकलं ब्रह्मांडं सचराचरम् ४७ तिलपात्रं तु यो दद्याद्ब्राह्मणाय विपश्चिते । तिलसंख्या वसेत्स्वर्गे स नरो नाकमण्डले ४८
घृतपात्रं तु यो दद्यात्स्नात्वा पंचदिनं नरः । स भुक्त्वा विपुलान्भोगान् सूर्यलोके महीयते ४९ ब्रह्मचर्येण यस्तिष्ठेद्दिनानां
पंचकं नरः । स स्वर्गे भुंजते भोगान्स्वर्वेश्याभिः समं मुदा ५० एवंविधं व्रतं साध्वि कुरु त्वं पतिना शुभे । धनधान्ययुता भूत्वा
स्वर्गं यास्यसि सुव्रते ५१ इत्युक्ता सा व्रतं चक्रे कौंडिन्येन यथोदितम् । भर्त्रा समं भावयुता स्नात्वा मासि मलिम्लुचे ५२ पं-
चरात्रव्रते पूर्णे परायाः प्रियसंयुता । सा ऽपश्यद्राजभवनादायांतं नृपनंदनम् ५३ दत्त्वा नवीनं भवनं भव्यवस्तुसमन्वितम् । वासया-
मास विधिना विधिना प्रेरितः स्वयम् ५४ दत्त्वा ग्रामं वृत्तिकरं ब्राह्मणाय सुमेधसे । प्रसन्नस्तपसा राजा तं स्तुत्वा स्वगृहं ययौ ५५
मलिम्लुचस्य मासस्य परायाः परमादरात् । कृष्णा ह्युपोषणात्सद्यः पंचरात्रव्रतेन च ५६ सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसौख्यसमन्वितः । भु-
क्त्वा भोगान्प्रियासार्द्धमंते विष्णुपुरं ययौ ५७ ये करिष्यंति मनुजाः परमाव्रतमुत्तमम् । पंचरात्रभवं पुण्यं मया वक्तुं न शक्यते ५८
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा । धेनुमुख्यानि दानानि तेन चीर्णानि सर्वथा ५९ गयाश्राद्धं कृतं तेन पितरः परितोषि-
ताः । व्रतानि तेन चीर्णानि व्रतखंडोदितानि वै ६० द्विपदां ब्राह्मणः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् । देवानां वासवः श्रेष्ठस्तथा मासो

१ अत्र षष्ठ्यर्थां प्रथमा । कृष्णैकादश्या उपोषणादित्यर्थः ।

तियुक्तो यः कुरुते व्रतमुत्तमम् ४१ कृष्णा या मलमासस्य विधिस्तस्यास्तु तादृशः । परमा सा तु विज्ञेया सर्वपापक्षयंकरी ४२ अत्र ते
कथयिष्यामि कथामेकां मनोरमाम् । नारदाय पुलस्त्येन विस्तरेण निवेदिताम् ४३ कार्तवीर्येण कारायां निक्षिप्तं वीक्ष्य रावणम् । वि
मोचितं पुलस्त्येन याचयित्वा महीपतिम् ४४ तदाश्चर्यं तदा श्रुत्वा नारदो दिव्यदर्शनः । पप्रच्छ च यथाभक्त्या पुलस्त्यं मुनिपुंगवम्
४५ नारद उवाच । दशाननेन विजिताः सर्वे देवाः सवासवाः । कार्तवीर्येण विजितः कथ रणविशारदः ४६ नारदस्य वच श्रुत्वा पुलस्त्यो
मुनिरब्रवीत् । शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कार्तवीर्यसमुद्भवम् ४७ पुरा त्रेतायुगे राजन्माहिष्मत्यां नृपोत्तरः । हैहयानां कुले जातः कृतवीर्यो
महीपतिः ४८ सहस्रं प्रमदास्तस्य नृपस्य प्राणवल्लभाः । न तासां तनय कश्चिल्लेभे राज्यधुरंधरम् ४९ यजन्देवान्पितॄन् सिद्धान्प्रचिकि
त्सान्बृहत्तरान् । तेषां वाक्याद्व्रतं कुर्वन लब्धस्तनयस्तदा ५० सुत विना तदा राज्य न सुखाय महीपतेः । क्षुधितस्य यथा भोगा न
भवति सुखप्रदाः ५१ विचार्य चित्ते नृपतिस्तपस्तप्तुं मनोदधे । तपसैव सदा सिद्धिर्जायते मनसेप्सिता ५२ इत्युक्त्वा सहभार्यश्च चीर
वासा जटाधरः । तपस्तप्तु गृह न्यस्य स विचार्य सुमन्त्रिणे ५३ निर्गतं नृपतिं वीक्ष्य पद्मिनी प्रमदोत्तमा । हरिश्चन्द्रस्य तनया इक्ष्वाकु
कुलसंभवा ५४ पतिव्रता प्रियं दृष्ट्वा तपस्तप्तुं कृतोद्यमम् । भूषणानि परित्यज्य चीरमेकं[1] समाश्रयत् ५५ जगाम पतिना सार्धं पर्वते
गंधमादने । गत्वा तत्र तपस्तेपे वर्षाणामयुतं नृपः ५६ न लेभे तनय राज्ये ध्यायन्देवं गदाधरम् । अस्थिस्नायुमय कायं दृष्ट्वा सा प्रम
दोत्तमा ५७ अनुसूयां महासाध्वीं पप्रच्छ विनयान्विता । भर्तुः प्रतपतः साध्वि वर्षाणामयुतं गतम् ५८ तथापि न प्रसन्नो ऽभूत्के-

१ कृष्णा या पद्मनयी इत्यर्थः । २ रावण इत्यर्थः ।

कष्टनाशनः । व्रतं मम महाभागे कथयस्व यथातथम् ५९ येन प्रसन्नो भगवान्मम भक्त्या प्रजायते । येन मे जायते पुत्रश्चक्रवर्ती मह
त्वा तस्यास्तु वचनं पतिव्रतपरायणा । यं प्रव्रजंतं नृपतिं स्वयं प्रव्राज दीक्षितम् ६१ तदा प्रोवाच संहृष्टा पद्मिनीं पद्मलोचनाम् । स्नात्वा मलि-
म्लुचे सुभ्रु मासद्वादशसंमते ६२ त्रिशद्दिनैश्च भवति मासः पूर्णः शुभानने । तन्मध्ये द्वादशीयुग्मं पद्मिनी परमा तथा ६३ उपोष्य तत्प्रक-
र्तव्यं विधिना जागरैः समम् । शीघ्रं प्रसन्नो भगवान्भविष्यति सुतप्रदः ६४ इत्युक्त्वा ऽकथयत्सर्वं मया पूर्वोदितं नृप । विधिं व्रतस्य विधिवत्प्रस-
न्ना कर्दमांगजा ६५ श्रुत्वा व्रतविधिं सर्वं यथोक्तमनुसूयया । चक्रे चार्वंगी तत्सर्वं पुत्रप्राप्तिमभीप्सती ६६ एकादश्यां निराहारा सदा जाता च नि-
र्जला । जागरेण युता रात्रौ गीतनृत्यसमन्विता ६७ पूर्णे व्रते च वै शीघ्रं प्रसन्नः केशवः स्वयम् । बभाषे गरुडारूढो वरं वरय शोभने ६८ श्रुत्वा वा-
क्यं जगद्धातुः स्तुत्वा प्रीतया शुचिस्मिता । ययाचे ऽद्य वरं ब्रूहि मम भर्तुर्बृहत्तरम् ६९ पद्मिन्यास्तद्वचः श्रुत्वा कृष्णः प्रीतः प्रियंवदाम् त्वया ऽहं
तोषितो भद्रे प्रत्युवाच जनार्दनः[1] ७० मलिम्लुचश्च मासो ऽसौ नान्यो मे प्रीतिदायकः । तन्मध्यैकादशी रम्या मम प्रीतिविवर्द्धना ७१ सा त्व-
योपोषिता सुभ्रु यथोक्तविधिना शुभे । तेन त्वया प्रसन्नो ऽहं कृतोस्मि सुभगानने ७२ तव भर्तुः प्रदास्यामि वरं यन्मनसेप्सितम् । इत्युक्त्वा
नृपतिं प्राह विष्णुर्विश्वार्तिनाशनः ७३ वरं वरय राजेंद्र यत्ते मनसि कांक्षितम् । संतोषितोहं प्रियया तव सिद्धिचिकीर्षया ७४ श्रुत्वा तद्वचनं वि-
ष्णोः प्रसन्नो नृपसत्तमः । वव्रे सुतं महाबाहुं सर्वलोकनमस्कृतम् ७५ न देवैर्मानुषैर्नागैर्दैत्यदानवराक्षसैः । जेतुं शक्यो जगन्नाथ विना त्वां म-
धुसूदन ७६ इत्युक्तो बाढमित्युक्त्वा तत्रैवांतरधीयत । नृपोपि सुप्रसन्नात्मा हृष्टः पुष्टः प्रियायुतः ७७ समायात्स्वपुरं रम्यं नरनारीम-

१ जनार्दनः प्रीतः सन्प्रियंवदां (बृहद्रथपत्नीं) प्रत्युवाचेत्यन्वयः । त्वया ऽहं तोषितो भद्रे, इत्यस्यान्वयस्तूत्तरेण ।

स्थितस्तत्र विचक्षणः २५ तावत्तत्र समायात कौण्डिन्यो मुनिसत्तमः । दृष्ट्वा समागतं हृष्टः सुमेधा द्विजसत्तमः २६ सभार्यः सहसोत्थाय
नमाम शिरसा सकृत् । धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवितं मम २७ यद्दृष्टोसि महद्भाग्यादित्युवाच मुनीश्वरम् । दत्वा सुविष्टर
तस्मै पूजयामास तं द्विजम् २८ भोजयित्वा विधानेन पप्रच्छ प्रमदोत्तमा । विद्वन्केन प्रकारेण दारिद्र्यस्य क्षयो भवेत् २९ विना दत्त
कथ लभ्येद्धन विद्या कुटुम्बिनीम् । मां मे भर्ता परित्यज्य गन्तुकामोऽद्य वर्तते ३० अन्यदेशे परॉल्लोकान्याचितु परपत्तने । रक्षितोऽस्ति
मया विद्वन्हेतुवाक्यैर्महत्तरैः ३१ नादत्तं लभ्यते किञ्चिदित्युक्त्वा स निवारितः । मम भाग्यान्मुनीन्द्राद्य त्वमत्रैव समागतः ३२ त्वत्प्र
सादाद्दारिद्र्यं मे शीघ्रं नश्यत्यसंशयम् । केनोपायेन विप्रेन्द्र दारिद्र्यं नश्यति ध्रुवम् ३३ कथयस्व कृपासिंधो व्रत तीर्थं तपादिक
म् । श्रुत्वा तस्याः सुशीलाया भाषित मुनिपुङ्गवः ३४ प्रोवाच प्रवर चित्ते विचार्य व्रतमुत्तमम् । सर्वपापोपशमनं दुःखदारि
द्र्यनाशनम् ३५ परमा नाम विख्याता विष्णोस्तिथिरनुत्तमा । मलिम्लुचे तु या कृष्णा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ३६ तस्या उपोषण
कृत्वा धनधान्ययुतोभवेत् । विधिना जागरैः साकं गीतवादित्रसंयुतम् ३७ धनदेन पुरा चीर्णं व्रतमेतत्सुशोभनम् । तदा तुष्टेन रुद्रेण
धनानामधिप कृतः ३८ हरिश्चन्द्रेण च कृत पुरा क्रीतसुतेन वै । पुनः प्राप्ता प्रिया तेन राज्यं निहतकण्टकम् ३९ तस्मात्कुरु विशालाक्षि
व्रतमेतत्सुशोभनम् । विधिना विधियुक्तेन समं जागरणेन च ४० इत्युक्त्वा तद्विधिं सर्वं कथयामास बान्धव । प्रीत्या परमसन्तुष्टस्त
तो भक्त्या प्रसादतः ४१ पुनः प्रोवाच तं विप्र पञ्चरात्रिव्रतं शुभम् । यस्यानुष्ठानमात्रेण भुक्तिर्मुक्तिश्च प्राप्यते ४२ परमा द्युस
प्रातः कृत्वा पूर्वाह्णिक विधिम् । कुर्यात्सुनियमान् शक्त्या पंचरात्रिप्रसावराव् ४३ प्रातः स्नात्वा निराहारो यस्तिष्ठेद्दिनपंचकम् स गच्छे

द्वैष्णवं स्थानं पितृमातृप्रियासमम् ४४ एकाशनस्तु या भूयाद्दिनानां पंचकं नरः । सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ४५ स्नात्वा यो
भोजयेद्विप्रं दिनानां पंचकं नरः । भोजितं तेन विधिना सदेवासुरमानुषम् ४६ पूर्णकुंभं सुतोयेन यो ददाति द्विजातये । दत्तं
तेनैव सकलं ब्रह्मांड सचराचरम् ४७ तिलपात्रं तु यो दद्याद्ब्राह्मणाय विपश्चिते । तिलसंख्या वसेत्स्वर्गे स नरो नाकमण्डले ४८
घृतपात्रं तु यो दद्यात्स्नात्वा पंचदिनं नरः । स भुक्त्वा विपुलान्भोगान् सूर्यलोके महीयते ४९ ब्रह्मचर्येण यस्तिष्ठेद्दिनानां
पंचकं नरः । स स्वर्गे भुंजते भोगान्स्वर्वेश्याभिः समं मुदा ५० एवंविधं व्रतं साध्वि कुरु त्वं पतिना शुभे । धनधान्ययुता भूत्वा
स्वर्गे यास्यसि सुव्रते ५१ इत्युक्ता सा व्रतं चक्रे कौंडिन्येन यथोदितम् । भर्त्रा समं भावयुता स्नात्वा मासि मलिम्लुचे ५२ पं-
चरात्रव्रते पूर्णे परायाः प्रियसंयुता । सा ऽपश्यद्राजभवनादायांतं नृपनंदनम् ५३ दत्त्वा नवीनं भवनं भव्यवस्तुसमन्वितम् । वासया-
मास विधिना विधिना प्रेरितः स्वयम् ५४ दत्त्वा ग्रामं वृत्तिकरं ब्राह्मणाय सुमेधसे । प्रसन्नस्तपसा राजा तं स्तुत्वा स्वगृहं ययौ ५५
मलिम्लुचस्य मासस्य परायाः परमादरात् । कृष्णा[१] ह्युपोषणात्सद्यः पंचरात्रव्रतेन च ५६ सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसौख्यसमन्वितः । भु-
क्त्वा भोगान्प्रियासार्द्धमंते विष्णुपुरं ययौ ५७ ये करिष्यंति मनुजाः परमाव्रतमुत्तमम् । पंचरात्रभवं पुण्यं मया वक्तुं न शक्यते ५८
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा । धेनुमुख्यानि दानानि तेन चीर्णानि सर्वथा ५९ गयाश्राद्धं कृतं तेन पितरः परितोषि-
ताः । व्रतानि तेन चीर्णानि व्रतखंडोदितानि वै ६० द्विपदां ब्राह्मणः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् । देवानां वासवः श्रेष्ठस्तथा मासो

१ अत्र षष्ठ्यर्थां प्रथमा । कृष्णैकादश्या उपोषणादित्यर्थः ।

मलिम्लुचः ६१ मलिम्लुचे पचरात्र महापापहर स्मृतम् । पञ्चरात्रे च परमा पद्मिनी पापशोषिणी ६२ साप्यशक्तैः प्रकर्तव्या यथाशक्त्या विचक्षणैः । मानुषं जनुरासाद्य न स्नातो यैर्मलिम्लुचः ६३ ते जन्मघातिनो नून नोपोष्य हरिवासरे । चतुरशीतिलक्षाणि भ्रमतो योनिसंकटे ६४ प्राप्यते मानुषं जन्म दुर्लभं पुण्यसंचयैः । तस्मात्कार्यं प्रयत्नेन परमाया व्रत शुभम् ६५ श्रीकृष्ण उवाच । एतत्ते सर्वमाख्यात यत्पृष्टोऽहं त्वया ऽनघ । मलिम्लुचस्य मासस्य परमाया व्रत त्विदम् ६६ तत्सर्वं ते समाख्यातं कुरुष्वावहितो नृप । ६७ श्रुत्वैतद्यदुपतिनोदित महात्मा तच्चक्रे व्रतमनुजै प्रियासमेतः । भुक्त्वाऽसौ दिवि भुवि दुर्लभांश्च भोगाञ्जीतो ऽसौ सुरवरमंदिर सुहृष्टः ६८ येप्येव भुवि मनुजा मलिम्लुचस्य सुस्नाताः शुभविधिना समाचरंति । ते भुक्त्वा दिवि विभव सुरेंद्रतुल्य गच्छेयुस्त्रिभुवनवंदितस्य गेहम् ६९ ॥ इत्यधिककृष्णैकादश्याः परमानाम्न्याः माहात्म्यं समाप्तम् ॥ ॥ ॥ अथ द्वादशीव्रतानि लिख्यते ॥ ॥ तत्र चैत्रशुक्लद्वादश्यां दमनोत्सवः ॥ द्वादश्यां चैत्रमासस्य शुक्लायां दमनोत्सवः । बौधायनादिभिः प्रोक्तः कर्तव्यः प्रतिवत्सरम्—इति रामार्चनचंद्रिकायाम् ॥ ऊर्जे व्रत मधौ दोला श्रावणे तंतुपूजनम् । चैत्रे च दमनारोपमकुर्वाणो व्रजत्यघः ॥ इदं शुक्रास्तादावपि कार्यम् ॥ उपाकर्मोत्सर्जनं च पवित्र दमनार्पणम् । ईशानस्य बलिं विष्णोः शयन परिवर्तनम् । कुर्यान्मलिम्लुचे गुरौ मूढेऽब्दगार्ग्येण उच्यते ॥ इति चैत्रद्वादशी ॥ ॥ वैशाखशुक्लद्वादश्यां योगविशेषो हेमाद्रौ— पचाननस्थौ गुरुभूमिपुत्रौ मेषे रविः स्याद्यदि शुक्लपक्षे । पाशाभिधाना करभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योग ॥ अत्र दानादिक कुर्याद्गोभूवस्त्रहिरण्यकैः । नरः पापात्प्रमुच्येत माधवस्य तु पूजनात् । पंचाननः सिंहराशिः पाशाभिधा नाम तिथिर्द्वादशी, करभो हस्तः ॥ इति वैशाखद्वादशी ॥ आषाढशुक्लद्वादश्यामनुराधायोगरहितायां पारणं कु-